इस किताब में ग़लतियों को ठीक किया गया है और
कुछ जगहों पर ज़रूरी वज़ाहत की गई है।

मुन्तख़ब अहादीस
Muntakhab Ahadees

तालीफ़
हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी (रह०)

तर्तीब व तर्जुमा
हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द कान्धलवी

प्रकाशन : 2009 ई०

प्रकाशकः

ATEQAD PUBLISHING HOUSE Pvt. Ltd.
3095, Sir Syed Ahmed Road, Darya Ganj, New Delhi 2
Ph.: 011-42797863, 23266879 Fax: 23256661
Website : www.ateqad.com e-mail:info@ateqad.com

Printed by: **Classic Printers**

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

कलिमा तैयिबा

नमाज़

इ़ल्म व ज़िक्र

मुक़द्दमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ وَّدَعَا بِدَعْوَتِهِمْ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ اَمَّا بَعْدُ !

यह एक हक़ीकत है जिस को बिला किसी तौरिया व तमल्लुक़ के कहा जाता है कि इस वक़्त आलमे इस्लाम की वसीतरीन, क़वीतरीन और मुफ़ीद तरीन दावत बलीग़ी ज़माअत की दावत है, जिसका मर्कज़, मर्कज़े तबलीग़ निज़ामुद्दीन देहली है,[1] जिस का दायरा-ए-अमल व असर सिर्फ़ बर्रेसग़ीर नहीं और सिर्फ़ एशिया भी हीं, मुतअद्दिद बर्रे आज़म और मुमालिके इस्लामिया व ग़ैरइस्लामिया हैं।

दावतों और तहरीकों और इन्क़लाबी व इस्लाही कोशिशों की तारीख़ बतलाती कि जब किसी दावत व तहरीक पर कुछ ज़माना गुज़र जाता है, या उसका दायरा अमल वसीअ़ से वसीअ़तर हो जाता है (और ख़ास तौर पर जब उसके ज़रीया नुफ़ूज़ ़ असर और क़यादत के मानाफ़ेअ़ नज़र आने लगते हैं) तो उस दावत व तहरीक बहुत-सी ऐसी ख़ामियाँ, ग़लत मक़ासिद और असल मक़सद से तग़ाफ़ुल शामिल हो जाता है, जो उस दावत की इफ़ादियत व तासीर को कम या बिल्कुल मअ़दूम कर ता है। लेकिन यह तबलीग़ी दावत अभी तक (जहाँ तक राक़िम के इल्म व मुशाहिदा का तअ़ल्लुक़ है) बड़े पैमाने पर इन आज़माइशों से महफ़ूज़ है। इस में सार व क़ुर्बानी का जज़्बा, रज़ा—ए—इलाही की तलब और हुसूले सवाब का शौक़, स्लाम और मुसलमानों का इहतराम व एतराफ़, तवाज़ुअ़ व इन्किसारे नफ़्स, फ़राइज़ की अदायगी का इहतिमाम और उस में तरक़्क़ी का शौक, यादे इलाही और ज़िक्रे दावन्दी की मशग़ूलियत, ग़ैरमुफ़ीद और ग़ैर ज़रूरी मशाग़िल व आमाल से इम्कानी हद तक एहतराज़ और हुसूले मक़सद व रज़ा—ए—इलाही के लिए तवील-से-तवील फ़र अख़्तियार करना और मशक़्क़त बर्दाशत करना शमिल और मामूल बिहि है।

---

1. इस इज़्हार व इस्बात में दूसरी मुफ़ीद व ज़रूरी दावतों और तहरीकों, हक़ाइक़ और ज़रूरीयाते ज़माने से आगाही और वक़्त के फ़ित्नों से मुक़ाबले की सलाहियत पैदा करने वाली मसाई और तन्ज़ीमों की नफ़ी या तहक़ीर मक़सूद नहीं है। तबलीग़ी दावत व तहरीक की वुस्अ़त व इफ़ादियत का ईजाबी अन्दाज में इज़्हार व इक़रार है।

जमाअ़त की यह खुसूसीयत और इम्तियाज़ दाई-ए अव्वल के इख़्लास इनाबत इलल्लाह, उस की दुआओं, जिद्द-व जुहद व क़ुर्बानी और सब से बढ़ कर अल्लाह तआ़ला की रज़ा व क़ुबूलियत के बाद उन उसूल व ज़वाबित का भी नतीजा है, जो शुरू से उसके दाई-ए-अव्वल (ह़ज़रत मौलाना इलयास काँधलवी रह़मतुल्लाह अ़लैह) ने इसके लिए ज़रूरी क़रार दिए और जिन की हमेशा तलक़ीन व तबलीग़ की गई वह कलिमा—ए—तैयिबा के मानी व ताक़ाज़ों पर ग़ौर, फ़राइज़ व इबादात के फ़ज़ाइल का इल्म, इल्म व ज़िक्र की फ़ज़ीलत का इस्तिह़ज़ार, ज़िक्रे ख़ुदावन्दी मे मशग़ूलियत, इकरामे मुस्लिम और मुसलमान के हक़ की शनासाई व अदायगी, हर अ़मल में तस्ह़ीहे नीयत व इख़्लास, तर्केमा लायानी अल्लाह के रास्ते में निकलने और सफ़र करने के फ़ज़ाइल व तर्ग़ीबात का इस्तिह़ज़ार और शौक़—यह वह अ़नासिर और ख़साइस थे, जिन्होंने इस दावत को एक सियासी, माद्दी तहरीक और इस्तिहसाले फ़वाइद, हुसूले जाह व मन्सब का ज़रिया बनने से महफ़ूज़ फ़रमा दिया और वह एक ख़ालिस दीनी दावत और हुसूले रज़ा—ए—इलाही का ज़रीया रही ।

यह उसूल व अ़नासिर जो इस दावत व जमाअ़त के लिए ज़रूरी क़रार दिये गये, किताब व सुन्नत से माख़ूज़ हैं, और वह रज़ा—ए—इलाही के हुसूल व दीन की हिफ़ाज़त के लिए एक पासबान व मुहाफ़िज़ का दर्जा रखते हैं, इन सब के मआख़ज़ किताबे इलाही और सुन्नत व अहादीसे नब्वी हैं।

ज़रूरत थी कि एक मुस्तक़िल व अ़लैहिदा किताब में इन आयात व अहादीस व मआख़ज़ को जमा कर दिया जाता, ख़ुदा का शुक्र है कि इस दावत इललख़ैर के दाई -ए-सानी मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साहब (ख़ल्फ़े रशीद दाई-ए-अव्वल हज़रत मौलाना मुह़म्मद इलयास साहब रह़मतुल्लाह अ़लैह) ने जिन की नज़र कुतुबे हदीस पर बहुत वसीअ़ और गहरी थी इन उसूलों, ज़वाबित व इहतियातों के मआख़ज़ को एक किताब में जमा कर दिया, और इस में पूरे इस्तीआ़ब व इस्तिक़सा से काम लिया, यहाँ तक कि यह किताब उन उसूलों व ज़वाबित और हिदायात के मआख़ज़ का मजमूआ़ नहीं बल्कि मौसूअ़ः[1] बन गई जिस में बिला इन्तिख़ाब व इख़्तिसार उन सब का अ़ला इख़्तिलाफ़िद्दरजात ज़िक्र कर दिया गया है, यह भी तक़दीर और

(1) जदीद अ़रबी में दायरतुलमआ़रिफ़ को मौसूअ़ः भी कहते हैं जिस में हर चीज़ का तआ़रुफ़ और तशरीह होती है।

तौफ़ीक़े इलाही की बात है कि अब यह किताब उन के हफ़ीदे[1] सईद अज़ीज़ुलक़द्र मौलवी सअ़्द साहब 'अतालल्लाहु बक़ाअहु व वफ़्फ़क़हु लिअकसर मिन ज़ालिक' की तवज्जुह व इहतिमाम से शाय हो रही है, और इस का इफ़ादा आ़म हो रहा है। अल्लाह तआ़ला इन के अ़मल व ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाए और ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए । وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ۔

अबुल हसन अ़ली नदवी
दाइरा शाह इलमुल्लाह
रायबरेली 20 ज़ीक़ादः 1418 हि०

(1) नबीरा यानी फ़रज़न्दे दुख़्तर

अ़र्ज़े मुतर्जिम

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۔

[آل عمران : ١٦٤]

तर्जुमा :

ह़क़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान फ़रमाया है जब कि उनही में से, उनमें एक ऐसा (अ़ज़ीमुश्शान) रसूल भेजा कि (इन्सानों में से होने की वजह से उनके आ़ली सिफ़ात से लोग बेतकल्लुफ़ फ़ायदा उठाते हैं) वह रसूल उन को अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं (आयाते क़ुरआनिया के ज़रिये उनको दावत देते हैं, नसीहत करते हैं) उनके अख़लाक़ बनाते और सवाँरते हैं, और अल्लाह तआ़ला की किताब और अपनी सुन्नत और तरीक़े की तालीम देते हैं, बिलाशुबहा इन रसूल की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल यह लोग खुली गुमराही में मुब्तला थे। (आले इमरान)

दर्जबाला आयत के ज़ैल में और इस मौज़ूअ़ पर ह़जरत मौलाना सैयद सुलैमान नदवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने "ह़ज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाह अ़लैह और उनकी दीनी दावत" के मुक़द्दमे में तहरीर फ़रमाया है कि रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम को कारे नुबुव्वत के यह फ़राइज़ अ़ता हुए हैं, तिलावते क़ुरआने करीम और अहादीसे सहीहा के नुसूस से यह साबित है कि ख़ातिमुन्नबीयीन ﷺ की उम्मत अपने नबी के इत्तिबाअ़ में उममे आ़लम की तरफ़ मबऊस है। हक़ तआ़ला शानुहू का इर्शाद है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۔

(آل عمران : ١١٠)

तर्जुमा :

"ऐ मुसलमानो! तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए ज़ाहिर की गई, अच्छे कामों को बताते हो और बुरे कामों से रोकते हो"।

उम्मते मुस्लिमा फ़राइज़े नुबुव्वत में से दावत ख़ैर और अ़म्र बिल्ममारूफ़ और नही अ़निलमुन्कर में नबी की जानशीन है। इसलिए रसूले करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम को कारे नुबुव्वत के जो फ़राइज़ अ़ता हुए हैं, तिलावते आयात के ज़रीये दावत, तजकियः और तालीमे किताब व हिकमत, यह आ़माल उम्मते मुस्लिमः के भी ज़िम्मे आ गये, चुनाँचे रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी उम्मत को दावत, तालीम व तअ़ल्लुम, ज़िक्र व इबादत पर जान व माल ख़र्च करने वाला बनाया। इन आ़माल को दूसरे अशग़ाल पर तरजीह की गई और हर हाल में इन आमाल की मश्क़ कराई गई इन आ़माल में इन्हिमाक के साथ तकालीफ़ और शदाइद पर सब्र सिखाया गया; दूसरों को नफ़ा पहुँचने के लिऐ अपना जान व माल लगाने वाला बनाया गया और "वजाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क जिहादिः" "और अल्लाह तआ़ला के दीन के लिए मेहनत और कोशिश किया करो जैसा मेहनत करने का हक़ है", की तामील में नबियों वाले मिज़ाज पर रियाज़त व मुजाहिदा और क़ुर्बानी व ईसार के वह नक़्शे तैयार हुए जिन में उम्मत का आ़ला तरीन मजमूअः वुजूद में आया, जिस दौर में नबी-ए-करीम ﷺ वाले यह आ़माल मजमूई तौर पर उमूमे उम्मत में ज़िन्दा रहे उस दौर के लिये ख़ैरुलक़ुरून की शहादत दी गई।

फिर क़रनन बाद क़र्निन ख़वास ने यानी अकाबिरे उम्मत ने इन नब्वी फ़राइज़ की अदायगी में पूरी तवज्जुह और कोशिश मबज़ूल फ़रमाई और उन्हीं के मुजाहिदात का नूर है, जिससे काशाना-ए-इस्लाम में रौशनी है।

इस दौर में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने हजरत मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाह अ़लैह के दिल में दीन के मिटने पर सोज़ व फ़िक्र व बेचैनी और उम्मत के लिए दर्द-कुढ़न और ग़म इस दर्जे में भर दिया था, जो उनके वक़्त के अकाबिर की नज़र में अपनी मिसाल आप था। वह हर वक़्त جَمِيعُ مَا جَاءَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ नबी-ए- करीम ﷺ जो तरीक़े अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की तरफ़ से लाये हैं उन सब को सारे आ़लम में ज़िन्दा करने के लिए मुज़्तरिब रहते थे और वह इस बात के पूरे जज़्म के साथ दाई थे कि इह्या-ए- दीन के लिए जिद्द व जुहद में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा

ज़िन्दा हो। ऐसे दाई तैयार हों जो अपने इल्म व अ़मल, फ़िक्र व नज़र तरीक़े दावत और ज़ौक़ व हाल में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और ख़ुसूसन मुहम्मद ﷺ से ख़ास मुनास्बत रखते हों। सिहते ईमान और ज़ाहिरी अ़मले सालेह के साथ उन के बातिनी अहवाल भी मिनहाजे नुबुव्वत पर हों, मुहब्बते इलाही, ख़शिय्यते इलाही, तअ़ल्लुक़ मअ़ल्लाह की कैफ़ियत हो, अख़्लाक़ व आ़दात व शमाइल में इत्तिबाअ़् सुनने नब्वी का इहतमाम हो। हुब्बु लिल्लाह, बुग्ज़ु लिल्लाह, राफ़त व रहमत बिलमुस्लिमीन और शफ़क़त अ़लल्ख़ल्क़ उनकी दावत का मुहर्रिक हो, और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बार-बार दुहराए हुए उसूल के मुताबिक़ सिवाए अज्र इलाही की तलब के कोई मक़सूद न हो, अल्लाह तआ़ला की राह में जान व माल बेक़ीमत करने का शौक़ उन्हें खींचे-खींचे लिये फिरता हो और जाह व मन्सब, माल व दौलत, इज़्ज़त व शुहरत नाम व नुमूद और ज़ाती आराम व आसाइश का कोइ ख़्याल राह में मोनअ़् न हो, उनका बैठना, उठना, बोलना, चालना ग़रज़ उन की जिन्दगी की हर जुंबिश व हरकत उसी एक सम्त में सिमट कर रह जाये।

जिद्द व जुहद में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा ज़िन्दा करने और ज़िन्दग़ी के तमाम शुअ़्बों को अल्लाह जल्ल ल शानुहू के अवामिर और नबी-ए-करीम ﷺ के तरीक़े पर लाने और काम करने वालों में यह सिफ़ात पैदा करने के लिए छः नम्बर मुक़र्रर किये गए, उस वक़्त के अहले हक़ उ़लमा व मशाइख़ ने ताईद फ़रमाई, उन के फ़र्ज़न्दे रशीद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने अपनी दाईयाना व मुजाहिदाना जिन्दग़ी इस काम को इसी नहज पर बढ़ाने और इन सिफ़ात के हामिल मजमा को तैयार करने की कोशिश में खपा दी, इन आ़ली सिफ़ात के बारे में हदीस, सीरत और तारीख़ की मुअ़्तबर कुतुब से रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबा-ए-कराम رضی اللہ عنہم की ज़िन्दगी के वाक़िआत नमूने के तौर पर **"हयातुस्सहाबा"** की तीन जिल्दों में जमा किए। यह किताब उन की हयात ही में बहम्दुल्लिाह शाय हो गई।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने इन सिफ़ात (छः नम्बरों) के बारे में मुन्तख़ब अहादीसे पाक का मजमूआ़ भी तैयार कर लिया था, लेकिन उनकी तर्तीब व तकमील के आख़िरी मराहिल से क़बल ही वह इस आ़लमे फ़ानी से आ़लमे जाविदानी की तरफ़ रिहलत फ़रमा गये। انا لله وانا اليه راجعون मुतअ़दिद्द ख़ुद्दाम व रूफ़क़ा से हज़रत रहमतुल्लाह ने इस मजमूए की तैयारी का ज़िक्र फ़रमाया और इस पर हज़रत रहमतुल्लाह अ़लैह, अल्लाह जल्ल ल शानुहू के शुक्र का और अपनी ख़ुशी

का इज़्हार फ़रमाते रहे। अल्लाह तआ़ला ही जानता है कि उन के दिल में क्या-क्या अ़ज़ाइम थे और उस के हर-हर रंग को वह किस तरह उजागर कर के दिलनशीन करते, अल्लाह तआ़ला के यहाँ इसी तरह मुक़द्दर था, अब वह 'मुन्तख़ब अहादीस' का मजमूआ़ हिन्दी तर्जुमे के साथ पेश किया जा रहा है।

इस किताब के तर्जुमे में आसान, आम फ़हम ज़बान इख़्तियार करने की कोशिश की गई है। हदीस के मफ़्हूम की वज़ाहत के लिए बाज़ मक़ामात पर क़ौसैन की इबारत और फ़ायदे को इख़्तिसार के साथ तहरीर करने की सई की गई है। चूँकि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह को अपनी किताब के मुसव्विदः पर नज़रे सानी का मौक़ा नहीं मिला था इसलिए इसमें काफ़ी मेहनत करनी पड़ी जिसमें मतने हदीस की दुरुस्तगी, रिवायते हदीस की जिरह व तअ़्दीले हदीस की तस्हीह व तहसीन, व तज़ईफ़, शरह ग़रीबुलहदीस वग़ैरह भी शामिल है।

इस तमाम काम में बक़द्रे इस्तिताअ़त एहतियात को मलहूज़ रख गया है और उलमा-ए-कराम की एक जमाअ़त ने इस काम में भरपूर इयानत फ़रमाई है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू उनको बेहतरीन जज़ाये ख़ैर अ़ता फ़रमाये, बशरी लग़ज़िशें मुम्किन हैं हज़राते उलमा से दरख़्वास्त है कि जो चीज़ इस्लाह के लिए ज़रूरी ख़्याल फ़रमायें उससे मुत्तलअ़् फ़रमाएँ।

यह मजमूआ़ जिस मक़सद के लिए हज़रत जी रहमतुल्लाह अ़लैह ने मुरत्तब फ़रमाया था और उसकी अहमियत को जिस तरह हज़रत मौलाना सैय्यद अ़बुल हसन अ़ली नदवी रहमतुल्लाह ने वाज़ेह फ़रमाया उस का तक़ाज़ा यह है कि इसको हर क़िस्म की तर्मीम और इख़्तिसार से महफ़ूज़ रखा जाए।

हक तआ़ला जल्ल ल शानुहू ने जिन आ़ली उलूम की तबलीग़ व इशाअ़त के लिए हज़रात अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलातु वत्तस्लीम को ज़ारिया बनाया उन उलूम से पूरा फ़ायदा उठाने के लिए ज़रूरी है कि उस इल्म के मुताबिक यक़ीन बनाया जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के आ़ली फ़रमान को पढ़ते और सुनते वक़्त अपने आप को कुछ न जानने वाला समझा जाए। यानी इन्सानी मुशाहिदा पर से यक़ीन हटाया जाए और ग़ैब की ख़बरों पर यक़ीन लाया जाए। जो कुछ पढ़ा और सुना जाए उसे दिल से सच्चा माना जाए। जब क़ुरआने करीम पढ़ने या सुनने बैठा जाए तो यूँ समझा जाए अल्लाह तआ़ला मुझसे मुख़ातब हैं, और जब हदीस शरीफ़

पढ़ने या सुनने बैठा जाए तो यूँ समझा जाए कि रसूलुल्लाह ﷺ मुझसे मुख़ातब हैं, कलाम को पढ़ते और सुनते वक़्त साहिबे कलाम की अ़ज़मत जितनी तारी होगी और उस कलाम की तरफ़ जितनी तवज्जोह होगी उसी क़दर कलाम का असर ज़्यादा होगा। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَإِذَا سَمِعُوا مَآ أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرٰى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ﴾

तर्जुमा :

और जब यह लोग इस किताब को सुनते हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ पर नाज़िल हुई है तो (क़ुरआन करीम के तअस्सुर से) आप उनकी आँखों को आँसूओं से बहता हुआ देखते हैं, इसकी वजह यह है कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया।

दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَبَشِّرْ عِبَادِ ○ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ط اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ○﴾ (الزمر: ۱۷،۱۸)

तर्जुमा :

आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो इस कलामे इलाही को कान लगा कर सुनते हैं फिर उसकी अच्छी बातों पर अ़मल करते हैं यही लोग हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने हिदायत दी है और यही अ़क़्ल वाले हैं। (ज़ुमर)

एक हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : اِذَا قَضَى اللّٰهُ الْاَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِاَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهٖ، كَاَنَّهٗ سِلْسِلَةٌ عَلٰى صَفْوَانٍ فَاِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ، قَالُوْا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (رواه البخاری)

हज़रत अबूहुरैरा رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला आसमान में कोई हुक्म नाफ़िज़ फ़रमाते हैं तो फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के इस हुक्म के रोअ़ब व हैबत की वजह से काँप उठते हैं और अपने परों को हिलाने लगते हैं और फ़रिश्तों को अल्लाह तआ़ला का इर्शाद इस तरह सुनाई देता

है जैसे चिकने पत्थर पर ज़ंजीर मारने की आवाज़ होती है, फिर जब उनसे घबराहट दूर कर दी जाती है तो एक दूसरे से दरयाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे परवदिगार ने क्या हुक्म दिया? वह कहते हैं कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया और वाक़ई वह आ़लीशान है, सब से बड़ा है (यूँ जब फ़रिश्तों पर हुक्म वाज़ेह हो जाता है तो वह उसकी तामील में लग जाते हैं।)

एक दूसरी हदीस में इर्शाद है :

عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : اَنَّهٗ كَانَ اِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ اَعَادَهَا ثَلَاثًا حَتّٰى تُفْهَمَ (رواه البخاری)

हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी-ए-अकरम ﷺ जब कोई अहम बात इर्शाद फ़रमाते तो उस को तीन मर्तबा दोहराते ताकि उसको समझ लिया जाए। इसलिए मुनासिब है कि हदीसे पाक को तीन मर्तबा पढ़ा जाए या सुनाया जाए। ध्यान, मुहब्बत और अदब के साथ पढ़ने और सुनने की मश्क़ हो। बातें न की जाएँ। बावुज़ू दो ज़ानू बैठने की कोशिश हो, सहारा न लगाया जाए। नफ़्स के मुजाहिदे के साथ उस इल्म में मशगूल हों। मक़सद यह है कि दिल क़ुरआन व हदीस से असर लेने लग जाए। अल्लाह तआ़ला और उन के रसूल ﷺ के वादों का यक़ीन पैदा होकर दीन की ऐसी तलब पैदा हो कि हर अ़मल में रसूलुल्लाह ﷺ का तरीक़ा और मसायल उलमा हज़रात से मालूम कर के अ़मल करने वाले बनते चले जाएँ।

अब इस किताब की इब्तिदा उस ख़ुत्बे के इब्तिदाई हिस्से से की जाती है जो हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाह अ़लैह ने अपनी किताब "امانی الاحبار شرح معانی الآثار" के लिए तहरीर फ़रमाया था।

मुहम्मद सअ़द कान्धलवी
मदरसा काशिफ़ुल उलूम
बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, नई दिल्ली

8/जमादियुलऊला 1421 हि०
मुताबिक़ 7/ सितम्बर 2000 ई०

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ الْاِنْسَانَ لِیُفِیْضَ عَلَیْهِ النِّعَمَ الَّتِیْ لَا یُفْنِیْهَا مُرُوْرُ الزَّمَانِ مِنْ خَزَائِنِهِ الَّتِیْ لَا تَنْقُصُهَا الْعَطَایَا وَلَا تَبْلُغُهَا الْاَذْهَانُ وَاَوْدَعَ فِیْهِ الْجَوَاهِرَ الْمَکْنُوْنَةَ الَّتِیْ بِاتِّصَافِهَا یَسْتَفِیْدُ مِنْ خَزَائِنِ الرَّحْمٰنِ وَیَفُوْزُبِهَا اَبَدَ الْآبَادِ فِیْ دَارِ الْجِنَانِ ۔ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ الَّذِیْ اُعْطِیَ بِشَفَاعَةِ الْمُذْنِبِیْنَ وَاُرْسِلَ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ وَاصْطَفَاهُ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی بِالسِّیَادَةِ وَالرِّسَالَةِ قَبْلَ خَلْقِ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ وَاجْتَبَاهُ لِتَشْرِیْحِ مَا عِنْدَهُ مِنَ الْعَطَایَا وَالنِّعَمِ فِیْ خَزَائِنِهِ الَّتِیْ لَا تُعَدُّ وَلَا تُحْصٰی وَکَشَفَ مِنْ ذَاتِهِ الْعُلْیَّةِ عَلَیْهِ مَالَمْ یَکْشِفْ عَلٰی اَحَدٍ وَمِنْ صِفَاتِهِ الْجَلِیْلَةِ الَّتِیْ لَمْ یَطَّلِعْ عَلَیْهَا اَحَدٌ لَا مَلَكٌ مُقَرَّبٌ وَلَانَبِیٌّ مُرْسَلٌ وَشَرَحَ صَدْرَهُ الْمُبَارَكَ لِاِدْرَاكِ مَااُوْدِعَ فِی الْاِنْسَانِ مِنَ الْاِسْتِعْدَادَاتِ الَّتِیْ بِهَا یَتَقَرَّبُ الْعِبَادُ اِلَی اللّٰهِ تَعَالٰی حَقَّ التَّقَرُّبِ وَیَسْتَعِیْنُهُ فِیْ اُمُوْرِ دُنْیَاهُ وَآخِرَتِهِ وَعَلَّمَهُ طُرُقَ تَصْحِیْحِ الْاَعْمَالِ الَّتِیْ تَصْدُرُ مِنَ الْاِنْسَانِ فِیْ کُلِّ حِیْنٍ وَآنٍ فَبِصِحَّتِهَا یَنَالُ الْفَوْزَ فِی الدَّارَیْنِ وَبِفَسَادِهَا الْحِرْمَانَ وَالْخُسْرَانَ وَرَضِیَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عَنِ الصَّحَابَةِ الْکِرَامِ الَّذِیْنَ اَخَذُوْا عَنِ النَّبِیِّ الْاَطْهَرِ الْاَکْرَمِ ﷺ الْعُلُوْمَ الَّتِیْ صَدَرَتْ مِنْ مِشْکٰوةِ نُبُوَّتِهِ فِیْ کُلِّ حِیْنٍ اَکْثَرَ مِنْ اَوْرَاقِ الْاَشْجَارِ وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ فَاَخَذُوا الْعُلُوْمَ بِاَسْرِهَا وَکَمَالِهَا فَوَعَوْهَا وَحَفِظُوْهَا حَقَّ الْوَعْیِ وَالْحِفْظِ وَصَحِبُوا النَّبِیَّ ﷺ فِی السَّفَرِ وَالْحَضَرِ وَشَهِدُوْا مَعَهُ الدَّعْوَةَ وَالْجِهَادَ وَالْعِبَادَاتِ وَالْمُعَامَلَاتِ وَالْمُعَاشَرَاتِ فَتَعَلَّمُوا الْاَعْمَالَ عَلٰی طَرِیْقَتِهِ بِالْمُصَاحَبَةِ فَهَنِیْئًا لَهُمْ حَیْثُ اَخَذُوا الْعُلُوْمَ عَنْهُ بِالْمُشَافَهَةِ الْعَمَلِ بِهَا بِلَا وَاسِطَةٍ ثُمَّ لَمْ یَقْتَصِرُوْا عَلٰی نُفُوْسِهِمُ الْقُدْسِیَّةِ بَلْ قَامُوْا وَبَلَّغُوا کُلَّ مَاوَعَوْهُ وَحَفِظُوْهُ مِنَ الْعُلُوْمِ وَالْاَعْمَالِ حَتّٰی مَلَأُوا الْعَالَمَ بِالْعُلُوْمِ الرَّبَّانِیَّةِ وَالْاَعْمَالِ الرُّوْحَانِیَّةِ الْمُصْطَفَوِیَّةِ فَصَارَ الْعَالَمُ دَارَالْعِلْمِ وَالْعُلَمَاءِ وَالْاِنْسَانُ مَنْبَعَ النُّوْرِ وَالْهِدَایَةِ وَمَصْدَرَ الْعِبَادَةِ وَالْخِلَافَةِ۔

तर्जुमा :

तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली के लिए हैं, जिसने इन्सान को पैदा किया ताकि इन्सान पर अपनी वह नेमतें जो ज़माने के गुजरने से ख़त्म नहीं होती; लुटाये। वह नेमतें ऐसे ख़ज़ानों में हैं। जो कि अ़ता करने से घटते नहीं और जिन तक इन्सान के ज़ेहनों की रसाई नहीं। अल्लाह तआ़ला ने इन्सान के अन्दर सलाहियतों के ऐसे जौहर छिपा रखे हैं जिन को बरूयेकार लाकर इन्सान, रहमान के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठा सकता है। और वह उन्हीं सलाहियतों से हमेशा हमेशा की जन्नत में रहने की सआ़दत भी हासिल कर सकता है।

अल्लाह की रहमत व दुरूद व सलाम हो मुहम्मद ﷺ पर, जो तमाम नबियों और रसूलों के सरदार हैं, जिन को गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करने का एजाज़ दिया गया है, जिनको तमाम जहाँ वालों के लिए रहमत बना कर भेजा गया; जिन को अल्लाह तआ़ला ने लौहे महफ़ूज़ और क़लम बनाने से पहले तमाम नबियों और रसूलों की सरदारी और बन्दों तक अपना पैग़ाम पहुँचाने का शर्फ़ अ़ता करने के लिए चुना और जिन का इन्तिख़ाब अल्लाह तआ़ला ने इसलिए किया वह अल्लाह तआ़ला के लामहदूद ख़ज़ानों में जो नेमतें हैं, उनकी तफ़सील ब्यान करें और उनको अपनी ज़ाते आ़ली के वह उलूम व मआ़रिफ़ अता किये, जो अब तक किसी पर नहीं खोले थे और अपनी जलीलुलक़द्र सिफ़ात उन पर मुनकशिफ़ फ़रमाये जिनको कोई नहीं जानता था; न कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता न कोई नबी मुरसल, और उनके सीने मुबारक को उन सलाहियतों के इदराक के लिए खोल दिया जो अल्लाह तआ़ला ने इन्सान में वदीअ़त फ़रमाई हैं जिन फ़ितरी सलाहियतों से बन्दे अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब हासिल करते हैं उन सलाहियतों से बन्दे अपनी दुनिया व आख़िरत के उमूर में मदद हासिल करते हैं। और अल्लाह तआ़ला ने आप ﷺ को इन्सान से हर लम्हे सादिर होने वाले आ़माल की दुरस्तगी के तरीक़ों का इल्म दिया क्योंकि दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का मदार आ़माल की दुरस्तगी पर है। जैसे उनकी ख़राबी दोनों जहाँ में महरूमी व ख़सारा का बाइस हैं।

अल्लाह तआ़ला सहाबा–ए–कराम ؓ (अल्लाह उन से राज़ी हो) जिन्होंने नबी–ए–अतहर व अकरम से उन उलूम को पूरा और मुकम्मल दर्जे में हासिल किया जिन उ़लूम की तादाद दरख़्तों के पत्तों और बारिश के क़तरों से ज़्यादा है और जिन का ज़ुहूर चिराग़े नुबुव्वत से हर वक़्त होता था फिर उन्होंने उन उलूम को ऐसा

याद किया और महफ़ूज़ रखा जैसा कि याद करने और महफ़ूज़ रखने का हक़ है, वह सफ़र व हज़र में रसूलुल्लाह ﷺ की सोहबत में रहे और उनके साथ दावत व जिहाद और इबादात, मामलात, मुआशरत के मौक़े में शरीक रहे फिर उन आमाल को रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े पर आप के साथ रह कर सीखा।

सहाबा–ए–कराम رضی اللہ عنہم की जमाअत को मुबारक हो जिन्होंने बग़ैर किसी वास्ते के आप ﷺ से बिलमुशाफ़ा उलूम और उन पर अमल सीखा फिर उन्होनें उन उलूम को सिर्फ़ अपने नुफ़ूसे क़ुदसिया तक महदूद नहीं रखा बल्कि जो उलूम व मआरिफ़ उनके दिलों में महफ़ूज़ थे और जिन आमाल को वह करने वाले थे और दूसरों तक पहुँचाने और सारे आलम को उलूमे रब्बानीया और आमाले रूहानिया मुस्तफ़वीया से भर दिया। चुनाँचे उसके नतीजे में सारा आलम इल्म, और अहले इल्म का गहवारा बन गया और इन्सान नूर व हिदायत का सरचश्मा बन गये और इबादत व ख़िलाफ़त की बुनयाद पर आ गये।

कलिमा तैयिबा

ईमान

'ईमान' लुग़त में किसी की बात को किसी के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम है और दीन की ख़ास इस्तिलाह में रसूल की ख़बर को बग़ैर मुशाहदा के महज़ रसूल के एतिमाद पर यक़ीनी तौर से मान लेने का नाम *'ईमान'* है।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ﴾ [الانبياء: ٢٥]

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : 'और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसके पास हम ने यह वह्य न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, इसलिए मेरी ही इबादत करो।' (अम्बिया : 25)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ﴾ [الانفال: ٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : 'ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह तआ़ला का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआ़ला की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे आयतें उनके ईमान

को क़वी तर कर देती हैं और वे अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं।'
(अन्फ़ाल : 2)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿فَاَمَّا الَّذِیْنَ آمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَیُدْخِلُهُمْ فِیْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ لا وَّیَهْدِیْهِمْ اِلَیْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِیْمًا﴾ [النساء: ۱۷۵]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान लाए और अच्छी तरह अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा कर लिया, तो अल्लाह तआला अनक़रीब ऐसे लोगों को अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेंगे और उन्हें अपने तक पहुंचने का सीधा रास्ता दिखाएंगे (जहां उन्हें रहनुमाई की ज़रूरत पेश आएगी, उनकी दस्तगीरी फ़रमाएंगे)।' (निसा : 175)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِیْنَ آمَنُوْا فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَیَوْمَ یَقُوْمُ الْاَشْهَادُ﴾ [المؤمن: ۵۱]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'बेशक हम अपने रसूलों और ईमान वालों की दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं और क़ियामत के दिन भी मदद करेंगे, जिस दिन आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते गवाही देने खड़े होंगे।
(मोमिन : 51)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿اَلَّذِیْنَ آمَنُوْا وَلَمْ یَلْبِسُوْٓا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ﴾ [الانعام: ۸۲]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : 'जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान में शिर्क की मिलावट नहीं की, अम्न इन्ही के लिए है और यही लोग हिदायत पर हैं।' (अन्आम : 82)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَالَّذِیْنَ آمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ﴾ [البقرة: ۱۶۵]

अल्लाह तआला का इर्शाद है: 'और ईमान वालों को तो अल्लाह तआला ही से ज़्यादा मुहब्बत होती है।' (बक़रः 165)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾
[الانعام: ۱۶۲]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि बेशक मेरी नमाज़ और मेरी हर इबादत, मेरा जीना और मरना, सब कुछ अल्लाह तआला ही के लिए है जो सारे जहां के पालने वाले हैं।

(अन्आम : 162)

नबी करीम ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اَلْاِيْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ شُعْبَةً، فَاَفْضَلُهَا قَوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَدْنَاهَا اِمَاطَةُ الْاَذٰى عَنِ الطَّرِيْقِ، وَالْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِيْمَانِ۔

رواه مسلم، باب بيان عدد شعب الايمان...، رقم: ١٥٣

1. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाख़ें हैं। उनमें सबसे अफ़ज़ल शाख़ *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* का कहना है और अदना शाख़ तकलीफ़ देने वाली चीज़ों का रास्ते से हटाना है और हया ईमान की एक (अहम) शाख़ है। (मुस्लिम)

﴿ 2 ﴾ عَنْ اَبِىْ بَكْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَبِلَ مِنِّى الْكَلِمَةَ الَّتِىْ عَرَضْتُ عَلٰى عَمِّىْ فَرَدَّهَا عَلَىَّ فَهِىَ لَهُ نَجَاةٌ۔

رواه احمد ٦/١

2. हज़रत अबू बक्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस कलिमा को क़ुबूल कर ले जिस को मैंने अपने चचा (अबू तालिब) पर (उनके इन्तिक़ाल के वक़्त) पेश किया था और उन्होंने उसे रद्द कर दिया था, वह कलिमा उस शख़्स के लिए नजात (का ज़रिया) है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 3 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : جَدِّدُوْا اِيْمَانَكُمْ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَكَيْفَ نُجَدِّدُ اِيْمَانَنَا؟ قَالَ: اَكْثِرُوْا مِنْ قَوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ۔

رواه احمد والطبرانى واسناد احمد حسن، الترغيب ٤١٥/٢

3. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः 'अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो।' अर्ज़ किया गया : ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ !

हम अपने ईमान को किस तरह ताज़ा करें? इर्शाद फ़रमाया: *ला इला-ह इल्लल्लाह* को कसरत से कहते रहा करो । (मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿4﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَفْضَلُ الدُّعَاءِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ. رواه الترمذى وقال:هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، رقم: ٣٣٨٣

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﵁ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : 'तमाम अज़कार में सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र *ला इला-ह इल्लल्लाह* है और तमाम दुआओं में सबसे अफ़ज़ल दुआ *अलहम्दु लिल्लाह* है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : *ला इला-ह इल्लल्लाह* सबसे अफ़ज़ल इसलिए है कि सारे दीन का दार-व-मदार ही इस पर है। इसके बग़ैर न ईमान सही होता है और न कोई मुसलमान बनता है। *अल-हम्दु लिल्लाह* को अफ़ज़ल दुआ इसलिए फ़रमाया गया कि करीम की तारीफ़ का मतलब सवाल ही होता है और दुआ अल्लाह तआला से सवाल करने का नाम है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿5﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَاقَالَ عَبْدٌ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ قَطُّ مُخْلِصًا اِلَّا فُتِحَتْ لَهُ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى تُفْضِيَ اِلَى الْعَرْشِ مَااجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ. رواه الترمذى وقال:هذا حديث حسن غريب،باب دعاء ام سلمة رضى الله عنها، رقم: ٣٥٩٠

5. हज़रत अबू हुरैरह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, (जब) कोई बन्दा दिल के इख़्लास के साथ *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहता है, तो इस कलिमा के लिए यक़ीनी तौर पर आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, यहां तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुंचता है, यानी फ़ौरन क़ुबूल होता है, बशर्तेकि वह कलिमा कहने वाला कबीरा गुनाहों से बचता हो।' (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इख़्लास के साथ कहना यह है कि इसमें रिया और निफ़ाक़ न हो। कबीरा गुनाहों से बचने की शर्त जल्द क़ुबूल होने के लिए है और अगर कबीरा गुनाहें के साथ भी कहा जाए तो नफ़ा और सवाब से उस वक़्त भी ख़ाली नहीं। (मिरक़ात)

﴿6﴾ عَنْ يَعْلَى بْنِ شَدَّادٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي شَدَّادٌ وَعُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَاضِرٌ يُصَدِّقُهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: هَلْ فِيكُمْ غَرِيبٌ يَعْنِي أَهْلَ الْكِتَابِ؟ قُلْنَا لَا يَا رَسُولَ اللهِ! فَأَمَرَ بِغَلْقِ الْبَابِ وَقَالَ: اِرْفَعُوا أَيْدِيَكُمْ وَقُولُوا لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ فَرَفَعْنَا أَيْدِيَنَا سَاعَةً، ثُمَّ وَضَعَ ﷺ يَدَهُ ثُمَّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ بَعَثْتَنِي بِهٰذِهِ الْكَلِمَةِ وَأَمَرْتَنِي بِهَا وَوَعَدْتَنِي عَلَيْهَا الْجَنَّةَ وَإِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ، ثُمَّ قَالَ: أَلَا أَبْشِرُوا فَإِنَّ اللهَ قَدْ غَفَرَ لَكُمْ. رواه احمد والطبراني والبزار ورجاله موثقون،مجمع الزوائد ١٦٤/١

6. हज़रत याला बिन शद्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद हज़रत शद्दाद ﷺ ने यह वाक़िया ब्यान फ़रमाया और हज़रत उबादा ﷺ जो कि उस वक़्त मौजूद थे, इस वाक़िया की तस्दीक़ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम लोग नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कोई अजनबी (ग़ैर मुस्लिम) तो मजमा में नहीं? हमने अ़र्ज़ किया, कोई नहीं। इर्शाद फ़रमाया : दरवाज़ा बन्द कर दो। उसके बाद इर्शाद फ़रमाया : हाथ उठाओ और कहो **ला इला-ह इल्लल्लाह**। हमने थोड़ी देर हाथ उठाये रखे (और कलिमा तैयिबा पढ़ा), फिर आप ﷺ ने अपना हाथ नीचे कर लिया। फिर फ़रमाया : *'अल-हम्दु लिल्लाह,* ऐ अल्लाह! आपने मुझे यह कलिमा देकर भेजा है और इस (कलिमा की तब्लीग़) का मुझे हुक्म फ़रमाया है और इस कलिमा पर जन्नत का वादा फ़रमाया है और आप वादा ख़िलाफ़ नहीं हैं। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने हम से फ़रमाया : ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी। (मुस्नद अहमद, तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿7﴾ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ثُمَّ مَاتَ عَلَى ذٰلِكَ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ، قُلْتُ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ، قُلْتُ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ عَلٰى رَغْمِ أَنْفِ أَبِي ذَرٍّ. رواه البخاري باب الثياب البيض، رقم ٥٨٢٧

7. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा **ला इला-ह इल्लल्लाह** कहे और फिर उसी पर उसकी मौत आ जाए तो वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। मैंने अ़र्ज़ किया : अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (हाँ) अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो। फ़िर मैंने अ़र्ज़ कियाः अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः अगरचे उसने ज़िना किया

हो, अगरचे उसने चोरी की हो। मैंने अ़र्ज़ किया : अगरचे उसने ज़िना किया हो अगरचे उसने चोरी की हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगरचे उसने ज़िना किया हो, अगरचे उसने चोरी की हो, अबूज़र के अलर्रग़म वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : अलर्रग़म अ़रबी ज़ुबान का एक ख़ास मुहावरा है। उसका मतलब यह है कि अगर तुम्हें यह काम नागवार भी हो और तुम उसका न होना भी चाहते हो, तब भी यह हो कर रहेगा। हज़रत अबूज़र رضي الله عنه को हैरत थी कि इतने बड़े-बड़े गुनाहों के बावजूद जन्नत में कैसे दाख़िल होगा, जबकि अद्ल का तक़ाज़ा यही है कि गुनाहों पर सज़ा दी जाए, लिहाज़ा नबी करीम ﷺ ने उनकी हैरत दूर करने के लिए फ़रमाया, ख़्वाह अबूज़र को कितना ही नागवार गुज़रे, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। अब अगर उसने गुनाह भी किए होंगे तो ईमान के तक़ाज़े से वह तौबा- इस्तग़फ़ार करके गुनाह माफ़ करा लेगा या अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़रमा कर बग़ैर किसी अ़ज़ाब के ही या गुनाहों की सज़ा देने के बाद बहरहाल जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमाएंगे ।

उलमा ने लिखा है कि इस हदीस शरीफ़ में कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहने से मुराद पूरे दीन व तौहीद पर ईमान लाना है और उसको अख़्तियार करना है। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿8﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَدْرُسُ الْإِسْلَامُ كَمَا يَدْرُسُ وَشْيُ الثَّوْبِ حَتّٰى لَا يُدْرٰى مَا صِيَامٌ وَلَا صَدَقَةٌ وَلَا نُسُكٌ وَيُسْرٰى عَلٰى كِتَابِ اللهِ فِىْ لَيْلَةٍ فَلَا يَبْقٰى فِى الْاَرْضِ مِنْهُ آيَةٌ وَيَبْقٰى طَوَائِفُ مِنَ النَّاسِ الشَّيْخُ الْكَبِيْرُ وَالْعَجُوْزُ الْكَبِيْرَةُ يَقُوْلُوْنَ اَدْرَكْنَا آبَاءَنَا عَلٰى هٰذِهِ الْكَلِمَةِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ فَنَحْنُ نَقُوْلُهَا۔ قَالَ صِلَةُ بْنُ زُفَرَ لِحُذَيْفَةَ: فَمَا تُغْنِىْ عَنْهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَهُمْ لَا يَدْرُوْنَ مَاصِيَامٌ وَلَا صَدَقَةٌ وَلَا نُسُكٌ؟ فَاَعْرَضَ عَنْهُ حُذَيْفَةُ فَرَدَّدَهَا عَلَيْهِ ثَلٰثًا، كُلُّ ذٰلِكَ يُعْرِضُ عَنْهُ حُذَيْفَةُ ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَيْهِ فِى الثَّالِثَةِ فَقَالَ: يَا صِلَةُ تُنَجِّيْهِمْ مِنَ النَّارِ۔ رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ٤٧٣/٤

8. हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस तरह कपड़े के नक़्श व निगार घिस जाते हैं और मांद पड़ जाते हैं, उसी तरह इस्लाम भी एक ज़माने में मांद पड़ जाएगा, यहां तक कि किसी शख़्स को यह इल्म तक न

रहेगा कि रोज़ा क्या चीज़ है और सदक़ा व हज क्या चीज़? एक शब आएगी कि क़ुरआन सीनों से उठा लिया जाएगा और ज़मीन पर उसकी एक आयत भी बाक़ी न रहेगी। अलग-अलग तौर पर कुछ बूढ़े मर्द और कुछ बूढ़ी औरतें रह जाएंगी जो यह कहेंगी कि हमने अपने बुज़ुर्गों से यह कलिमा *ला इला-ह इल्लल्लाह* सुना था, इसलिए हम भी यह कलिमा पढ़ लेते हैं। हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ के शागिर्द सिला ने पूछा: जब उन्हें रोज़ा, सदक़ा और हज का भी इल्म न होगा तो भला सिर्फ़ यह कलिमा उन्हें क्या फ़ायदा देगा? हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ ने उसका कोई जवाब न दिया। उन्होंने तीन बार यही सवाल दुहराया, हर बार हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ एराज़ करते रहे, उनके तीसरी मर्तबा (इसरार) के बाद फ़रमाया : सिला! यह कलिमा ही उनको दोज़ख़ से नजात दिलाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 9 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ قَالَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ نَفَعَتْہُ یَوْمًا مِنْ دَھْرِہٖ یُصِیْبُہٗ قَبْلَ ذٰلِکَ مَا اَصَابَہٗ۔

رواه البزار والطبرانی ورواته رواة الصحیح، الترغیب ٢/٤١٤

9. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहा, उसको यह कलिमा एक-न-एक दिन ज़रूर फ़ायदा देगा, (नजात दिलाएगा), अगरचे उसको कुछ-न-कुछ सज़ा पहले भुगतना पड़े। (बज़्ज़ार, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 10 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُکُمْ بِوَصِیَّۃِ نُوْحٍ ابْنَہٗ؟ قَالُوا: بَلٰی، قَالَ: اَوْصٰی نُوْحٌ ابْنَہٗ فَقَالَ لِابْنِہٖ: یَا بُنَیَّ اِنِّیْ اُوْصِیْکَ بِاثْنَتَیْنِ وَاَنْھَاکَ عَنِ اثْنَتَیْنِ. اُوْصِیْکَ بِقَوْلِ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ، فَاِنَّھَا لَوْ وُضِعَتْ فِیْ کِفَّۃِ الْمِیْزَانِ وَوُضِعَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ فِیْ کِفَّۃٍ لَرَجَحَتْ بِھِنَّ، وَلَوْ کَانَتْ حَلْقَۃً لَقَصَمَتْھُنَّ حَتّٰی تَخْلُصَ اِلَی اللّٰہِ، وَبِقَوْلِ، سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَ بِحَمْدِہٖ، فَاِنَّھَا عِبَادَۃُ الْخَلْقِ، وَبِھَا تُقْطَعُ اَرْزَاقُھُمْ، وَاَنْھَاکَ عَنِ اثْنَتَیْنِ، الشِّرْکِ وَالْکِبْرِ، فَاِنَّھُمَا یَحْجُبَانِ عَنِ اللّٰہِ۔ (الحدیث) رواہ

البزار وفیه محمد بن اسحاق وهو مدلس وهو ثقة و رجاله رجال الصحیح، مجمع الزوائد ١/٩٢

10. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वह वसीयत न बताऊं जो (हज़रत) नूह ﷺ ने अपने बेटे को की थी? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : ज़रूर बताइए। इर्शाद फ़रमाया : (हज़रत)

नूह عليه السلام ने अपने बेटे को वसीयत में फ़रमायाः मेरे बेटे! तुम को दो काम करने की वसीयत करता हूं और दो कामों से रोकता हूं। एक तो मैं तुम्हें *ला इला-ह इल्लल्लाह* के कहने का हुक्म देता हूं, क्योंकि अगर यह कलिमा एक पलड़े में रख दिया जाए और तमाम आसमान व ज़मीन को एक पलड़े में रख दिया जाए तो कलिमा वाला पलड़ा झुक जाएगा और अगर तमाम आसमान व ज़मीन का एक घेरा हो जाए, तो भी यह कलिमा इस घेरे को तोड़ कर अल्लाह तआला तक पहुंच कर रहेगा। दूसरी चीज़ जिसका हुक्म देता हूं वह *'सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीमि व बिहम्दिहि'* का पढ़ना है, क्योंकि यह तमाम मख़्लूक़ की इबादत है और इसी की बरकत से मख़लूक़ात को रोज़ी दी जाती है। और मैं तुम को दो बातों से रोकता हूं शिर्क से और तकब्बुर से, क्योंकि ये दोनों बुराइयां बन्दे को अल्लाह से दूर कर देती हैं।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِنِّيْ لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا رَجُلٌ يَحْضُرُهُ الْمَوْتُ اِلَّا وَجَدَتْ رُوْحُهُ لَهَا رَوْحًا حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ جَسَدِهٖ وَكَانَتْ لَهُ نُوْرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه ابو يعلى ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٣/٦٧

11. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं, जिसे ऐसा शख़्स पढ़े जिसकी मौत का वक़्त क़रीब हो तो उसकी रूह जिस्म से निकलते वक़्त इस कलिमा की बदौलत ज़रूर राहत पाएगी और वह कलिमा उसके लिए क़ियामत के दिन नूर होगा। (वह कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* है)

(अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 12 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَزِنُ شَعِيْرَةً ثُمَّ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَزِنُ بُرَّةً ثُمَّ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَكَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مَا يَزِنُ مِنَ الْخَيْرِ ذَرَّةً.

(وهو جزء من الحديث) رواه البخاري، باب قول الله تعالى: لما خلقت بيدي، رقم: ٧٤١٠

12. हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः हर वह शख़्स जहन्नम से निकलेगा जिसने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में एक जौ के वज़न के बराबर भी भलाई होगी यानी ईमान होगा, फिर वह शख़्स

जहन्नम से निकलेगा जिस ने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में गंदुम के दाने के बराबर भी ख़ैर होगी, यानी ईमान होगा, फिर हर वह शख़्स जहन्नम से निकलेगा जिसने *ला इला-ह इल्लल्लाह* कहा होगा और उसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ख़ैर होगी। (बुख़ारी)

﴿ 13 ﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْاَسْوَدِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَبْقٰى عَلٰى ظَهْرِ الْاَرْضِ بَيْتُ مَدَرٍ وَلَا وَبَرٍ اِلَّا اَدْخَلَهُ اللّٰهُ كَلِمَةَ الْاِسْلَامِ بِعِزِّ عَزِيْزٍ اَوْ ذُلِّ ذَلِيْلٍ اِمَّا يُعِزُّهُمُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فَيَجْعَلُهُمْ مِنْ اَهْلِهَا اَوْيُذِلُّهُمْ فَيَدِيْنُوْنَ لَهَا. رواه احمد ٤/٦

13. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ज़मीन की सतह पर किसी शहर, गांव, सेहरा का कोई घर या ख़ेमा ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा, जहां अल्लाह तआ़ला इस्लाम के कलिमा को दाख़िल न फ़रमा दें। मानने वाले को कलिमा वाला बना कर इज़्ज़त देंगे, न मानने वाले को ज़लील फ़रमाएंगे, फिर वे मुसलमानों के मातहत बनकर रहेंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 14 ﴾ عَنِ ابْنِ شِمَاسَةَ الْمَهْرِىِّ قَالَ: حَضَرْنَا عَمْرَوبْنَ الْعَاصِ وَهُوَ فِىْ سِيَاقَةِ الْمَوْتِ يَبْكِىْ طَوِيْلًا وَحَوَّلَ وَجْهَهُ اِلَى الْجِدَارِ، فَجَعَلَ ابْنُهُ يَقُوْلُ: يَا اَبَتَاهُ! اَمَا بَشَّرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِكَذَا؟ اَمَا بَشَّرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِكَذَا قَالَ فَاَقْبَلَ بِوَجْهِهٖ وَقَالَ: اِنَّ اَفْضَلَ مَا نُعِدُّ شَهَادَةُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًارَسُوْلُ اللّٰهِ، اِنِّى قَدْ كُنْتُ عَلٰى اَطْبَاقٍ ثَلٰثٍ، لَقَدْ رَاَيْتُنِىْ وَمَا اَحَدٌ اَشَدَّ بُغْضًا لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مِنِّىْ، وَلَا اَحَبَّ اِلَىَّ اَنْ اَكُوْنَ قَدِاسْتَمْكَنْتُ مِنْهُ فَقَتَلْتُهُ مِنْهُ، فَلَوْمُتُّ عَلٰى تِلْكَ الْحَالِ لَكُنْتُ مِنْ اَهْلِ النَّارِ، فَلَمَّا جَعَلَ اللّٰهُ الْاِسْلَامَ فِىْ قَلْبِىْ اَتَيْتُ النَّبِىَّ ﷺ فَقُلْتُ: اُبْسُطْ يَمِيْنَكَ فَلْاُ بَايِعْكَ فَبَسَطَ يَمِيْنَهُ، قَالَ: فَقَبَضْتُ يَدِىْ قَالَ: مَالَكَ يَاعَمْرُو؟ قَالَ قُلْتُ: اَرَدْتُ اَنْ اَشْتَرِطَ قَالَ: تَشْتَرِطُ بِمَاذَا؟ قُلْتُ: اَنْ يُغْفَرَلِىْ قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ يَا عَمْرُو اَنَّ الْاِسْلَامَ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ؟ وَاَنَّ الْهِجْرَةَ تَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهَا؟ وَاَنَّ الْحَجَّ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ؟ وَمَا كَانَ اَحَدٌ اَحَبَّ اِلَىَّ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَلَا اَجَلَّ فِىْ عَيْنَىَّ مِنْهُ، وَمَا كُنْتُ اُطِيْقُ اَنْ اَمْلَاَعَيْنَىَّ مِنْهُ اِجْلَالًا لَهُ وَلَوْ سُئِلْتُ اَنْ اَصِفَهُ مَا اَطَقْتُ لِاَنِّىْ لَمْ اَكُنْ اَمْلَاُ عَيْنَىَّ مِنْهُ وَلَوْ مُتُّ عَلٰى تِلْكَ الْحَالِ لَرَجَوْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ ثُمَّ وَلِيْنَا اَشْيَاءَ مَا اَدْرِىْ مَا حَالِىْ فِيْهَا فَاِذَا اَنَا مُتُّ فَلَا تَصْحَبْنِىْ نَائِحَةٌ وَلَا نَارٌ فَاِذَا دَفَنْتُمُوْنِىْ فَسُنُّوا عَلَىَّ التُّرَابَ سَنًّا ثُمَّ اَقِيْمُوا حَوْلَ قَبْرِىْ

قَدْرَ مَاتُنْحَرُ جَزُوْرٌ وَيُقْسَمُ لَحْمُهَا حَتّٰى اَسْتَأْنِسَ بِكُمْ،وَاَنْظُرَ مَاذَا اُرَاجِعُ بِهٖ رُسُلَ رَبِّىْ۔

رواہ مسلم،باب کون الإسلام یہدم ما قبلہ......،رقم ۳۲۱

14. हज़रत इब्ने शिमासा महरी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि हम हज़रत अम्र बिन आस ؓ के पास उनके आख़िरी वक़्त में मौजूद थे। वह ज़ार-व-क़तार रो रहे थे और दीवार की तरफ़ अपना रुख़ किए हुए थे। उनके साहिबज़ादे उनको तसल्ली देने के लिए कहने लगे, अब्बा जान! क्या नबी करीम ﷺ ने आप को फ़्लां बशारत नहीं दी थी? क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने आप को फ़्लां बशारत नहीं दी थी? यानी आपको तो नबी करीम ﷺ ने बड़ी-बड़ी बशारतें दी हैं। यह सुनकर उन्होंने (दीवार की तरफ़ से) अपना रुख़ बदला और फ़रमाया, सबसे अफ़ज़ल चीज़ जो हम ने (आख़िरत के लिए) तैयार की है वह इस बात की शहादत है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। मेरी ज़िन्दगी के तीन दौर गुज़रे हैं। एक दौर तो वह था जबकि रसूलुल्लाह ﷺ से बुग्ज़ रखने वाला मुझसे ज़्यादा कोई और शख़्स न था और जबकि मेरी सबसे बड़ी तमन्ना यह थी कि किसी तरह आप पर मेरा क़ाबू चल जाए तो मैं आप को मार डालूं। यह तो मेरी ज़िन्दगी का सबसे बदतर दौर था, (ख़ुदा न ख़्वास्ता) मैं इस हाल पर मर जाता तो यक़ीनन दौज़ख़ी होता। इसके बाद जब अल्लाह तआ़ला ने मेरे दिल में इस्लाम का हक़ होना डाल दिया तो मैं आप के पास आया और मैंने अ़र्ज़ किया, अपना मुबारक हाथ बढ़ाइए ताकि मैं आप से बैअ़त करूं। आप ﷺ ने अपना हाथ मुबारक बढ़ा दिया। मैंने अपना हाथ पीछे खींच लिया। आपने फ़रमाया, अम्र यह क्या? मैंने अ़र्ज़ किया, मैं कुछ शर्त लगाना चाहता हूं। फ़रमाया : क्या शर्त लगाना चाहते हो? मैंने कहा, यह कि मेरे सब गुनाह माफ़ हो जाएं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अम्र! क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि इस्लाम तो कुफ़्र की ज़िन्दगी के गुनाहों का तमाम क़िस्सा ही पाक कर देता है; और हिजरत भी पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर देती है; और हज भी पिछले सब गुनाह ख़त्म कर देता है। यह दौर वह था जबकि आपसे ज़्यादा प्यारा, आपसे ज़्यादा बुज़ुर्ग व बरतर मेरी नज़र में कोई और न था। आपकी अ़ज़मत की वजह से मेरी यह ताब न थी कि कभी आप को नज़र भर कर देख सकता, अगर मुझसे आपकी सूरत मुबारक पूछी जाए तो मैं कुछ नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने कभी पूरी तरह आपको देखा ही नहीं। काश! अगर मैं इस हाल पर मर जाता तो उम्मीद है कि जन्नती होता। फिर हम कुछ चीज़ों के मुतवल्ली और ज़िम्मेदार बने और नहीं कह सकते कि हमारा हाल उन चीज़ों में क्या रहा (यह मेरी ज़िन्दगी का तीसरा दौर था)। अच्छा देखो, जब

मेरी वफ़ात हो जाए तो मेरे (जनाज़े के) साथ कोई वावेला और शोर व शग़ब करने वाली औरत न जाने पाए, न (ज़माना जाहिलियत की तरह) आग मेरे जनाज़े के साथ हो। जब मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी क़ब्र पर अच्छी तरह मिट्टी डालना और जब (फ़ारिग़ हो जाओ) तो मेरी क़ब्र के पास इतनी देर ठहरना जितनी देर में ऊंट ज़बह करके उसका गोश्त तक़सीम किया जाता है, ताकि तुम्हारी वजह से मेरा दिल लगा रहे और मुझे मालूम हो जाए कि मैं अपने रब के भेजे हुए फ़रिश्तों के सवालात के जवाबात क्या देता हूं। (मुस्लिम)

﴿ 15 ﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : يَا ابْنَ الْخَطَّابِ! اِذْهَبْ فَنَادِ فِي النَّاسِ اِنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ اِلاَّ الْمُؤْمِنُوْنَ. رواه مسلم، باب غلظ تحريم الغلول......، رقم: ٣٠٩

15. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ख़त्ताब के बेटे! जाओ, लोगों में यह एलान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ ईमान वाले ही दाख़िल होंगे। (मुस्लिम)

﴿ 16 ﴾ عَنْ اَبِيْ لَيْلٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : وَيْحَكَ يَا اَبَا سُفْيَانَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَاَسْلِمُوا تَسْلَمُوا. (وهو بعض الحديث) رواه الطبراني وفيه حرب بن الحسن الطحان وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٢٥٠/٦

16. हज़रत अबू लैला ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने (अबू सुफ़यान से) इर्शाद फ़रमाया : अबू सुफ़यान! तुम्हारी हालत पर अफ़सोस है। मैं तो तुम्हारे पास दुनिया व आख़िरत (की भलाई) ले कर आया हूं। तुम इस्लाम क़ुबूल कर लो, सलामती में आ जाओगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ شُفِّعْتُ، فَقُلْتُ: يَا رَبِّ! اَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ خَرْدَلَةٌ فَيَدْخُلُوْنَ، ثُمَّ اَقُوْلُ اَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهِ اَدْنٰى شَيْءٍ.

رواه البخاري، باب كلام الرب تعالى يوم القيامة ......، رقم: ٧٥٠٩

17. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब क़ियामत का दिन होगा तो मुझे शफ़ाअत की इजाज़त दी जाएगी ; मैं अ़र्ज़ करूंगा: ऐ मेरे रब! जन्नत में हर उस शख़्स को दाख़िल फ़रमा दीजिए, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी (ईमान) हो, (अल्लाह तआ़ला मेरी इस

शफ़ाअ़त को क़ुबूल फ़रमा लेंगे) और वे लोग जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। फिर मैं अ़र्ज़ करूंगा, जन्नत में हर उस शख़्स को दाख़िल फ़रमा दीजिए, जिसके दिल में ज़रा-सा भी (ईमान) हो। (बुख़ारी)

﴿18﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِنِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: یَدْخُلُ اَھْلُ الْجَنَّۃِ الْجَنَّۃَ وَاَھْلُ النَّارِ النَّارَ ثُمَّ یَقُوْلُ اللّٰہُ تَعَالٰی: اَخْرِجُوْا مَنْ کَانَ فِیْ قَلْبِہٖ مِثْقَالُ حَبَّۃٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ اِیْمَانٍ فَیُخْرَجُوْنَ مِنْھَا قَدِاسْوَدُّوْا، فَیُلْقَوْنَ فِیْ نَھْرِ الْحَیَاۃِ فَیَنْبُتُوْنَ کَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّۃُ فِیْ جَانِبِ السَّیْلِ، اَلَمْ تَرَ اَنَّھَا تَخْرُجُ صَفْرَاءَ مُلْتَوِیَۃً؟

رواہ البخاری، باب تفاضل اھل الایمان فی الاعمال، رقم: ٢٢

18. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में दाख़िल हो चुके होंगे, तो अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगें : जिसके दिल में राई के दाना के बराबर भी ईमान हो, उसे भी दोज़ख़ से निकाल लो, चुनांचे उन लोगों को भी निकाल लिया जाएगा। उनकी हालत यह होगी कि वह जल कर स्याह फ़ाम हो गए होंगे। उसके बाद उनको नहरे हयात में डाला जाएगा तो वह उस तरह (फ़ौरी तौर पर तर व ताज़ा होकर) निकल आएंगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (पानी और खाद मिलने की वजह से फ़ौरी) उग आता है। कभी तुम ने ग़ौर किया है कि वह कैसा ज़र्द बल खाया हुआ निकलता है? (बुख़ारी)

﴿19﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ سَالَہٗ رَجُلٌ فَقَالَ: یَارَسُوْلَ اللّٰہِ! مَا الْاِیْمَانُ؟ قَالَ: اِذَا سَرَّتْکَ حَسَنَتُکَ وَسَاءَتْکَ سَیِّئَتُکَ فَاَنْتَ مُؤْمِنٌ.

(الحدیث) رواہ الحاکم و صححہ، ووافقہ الذھبی ١٣/١، ١٤

19. हज़रत अबू उमामा ﷛ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम को अपने अच्छे अ़मल से ख़ुशी हो और अपने बुरे काम पर रंज हो, तो तुम मोमिन हो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿20﴾ عَنِ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: ذَاقَ طَعْمَ الْاِیْمَانِ مَنْ رَضِیَ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلًا.

رواہ مسلم، باب الدلیل علی ان من رضی باللہ ربا ....، رقم: ١٥١

20. हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ईमान का मज़ा उसने चखा (और ईमान की लज़्ज़त उसे मिली) जो अल्लाह तआ़ला को रब, इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर राज़ी हो जाए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला की बन्दगी और इस्लाम के मुताबिक़ अ़मल और हज़रत मुहम्मद ﷺ की इताअ़त, अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ और इस्लाम की मुहब्बत के साथ हो जिसको यह बात नसीब हो गई, यक़ीनन ईमानी लज़्ज़त में भी उसका हिस्सा हो गया।

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلٰثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ: اَنْ يَكُوْنَ اللهُ وَرَسُوْلُهُ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَاَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ اِلَّا لِلّٰهِ، وَاَنْ يَكْرَهَ اَنْ يَعُوْدَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ اَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ.

رواه البخاري، باب حلاوة الايمان، رقم:١٦

21. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान की हलावत उसी को नसीब होगी, जिसमें तीन बातें पाई जाएंगी। एक यह कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की मुहब्बत उसके दिल में सबसे ज़्यादा हो। दूसरे यह कि जिस शख़्स से भी मुहब्बत हो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही के लिए हो। तीसरे यह कि ईमान के बाद कुफ़्र की तरफ़ पलटने से उसको इतनी नफ़रत और ऐसी अज़ीयत हो, जैसी कि आग में डाले जाने से होती है । (बुख़ारी)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ لِلّٰهِ، وَاَبْغَضَ لِلّٰهِ، وَاَعْطٰى لِلّٰهِ، وَمَنَعَ لِلّٰهِ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ الْاِيْمَانَ.

رواه ابو داؤد، باب الدليل على زيادة الايمان و نقصانه، رقم: ٤٦٨١

22. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला ही के लिए किसी से मुहब्बत की और उसी के लिए दुश्मनी की और (जिसको दिया) अल्लाह तआ़ला ही के लिए दिया और (जिसको नहीं दिया) अल्लाह तआ़ला ही के लिए नहीं दिया तो उसने ईमान की तकमील कर ली।

(अबूदाऊद)

﴿ 23 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ لِأَبِيْ ذَرٍّ: يَا أَبَا ذَرٍّ! أَيُّ عُرَى الْإِيْمَانِ أَوْثَقُ؟ قَالَ: اللهُ عَزَّ وَجَلَّ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: الْمُوَالَاةُ فِي اللهِ وَالْحُبُّ فِي اللهِ وَالْبُغْضُ فِي اللهِ. رواه البيهقي في شعب الإيمان ٧٠/٧

23. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अबूज़र ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : बताओ ईमान की कौन-सी कड़ी ज़्यादा मज़बूत है? हज़रत अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है (लिहाज़ा आप ﷺ ही इर्शाद फ़रमाएं) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के लिए बाहमी तअ़ल्लुक़ व तआ़वुन हो और अल्लाह तआ़ला के लिए किसी से मुहब्बत हो और अल्लाह तआ़ला ही के लिए किसी से बुग्ज़ व अ़दावत हो। (बैहक़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि ईमानी शोबों में सबसे ज़्यादा जानदार और पायदार शोबा यह है कि बन्दे का दुनिया में जिस के साथ जो बर्ताव हो, ख़्वाह तअ़ल्लुक़ क़ायम करने का हो या तअ़ल्लुक़ तोड़ने का, मुहब्बत का हो या अ़दावत का, वह अपने नफ़्स के तक़ाज़े से न हो, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए हो और उन्हीं के हुक्म के मातहत हो।

﴿ 24 ﴾ عَنْ أَنَسِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: طُوْبٰى لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَرَآنِيْ مَرَّةً وَطُوْبٰى لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَلَمْ يَرَنِيْ سَبْعَ مِرَارٍ. رواه احمد ١٥٥/٣

24. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मुझे देखा और मुझ पर ईमान लाया, उसको तो एक बार मुबारकबाद और जिसने मुझे नहीं देखा और फिर मुझ पर ईमान लाया, उसको सातबार मुबारकबाद। (मुस्नद अहमद)

﴿ 25 ﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ يَزِيْدَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: ذَكَرُوْا عِنْدَ عَبْدِاللهِ أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ وَإِيْمَانَهُمْ قَالَ: فَقَالَ عَبْدُاللهِ إِنَّ أَمْرَ مُحَمَّدٍ ﷺ كَانَ بَيِّنًا لِمَنْ رَآهُ وَالَّذِيْ لَا إِلٰهَ غَيْرُهُ مَا آمَنَ مُؤْمِنٌ أَفْضَلَ مِنْ إِيْمَانٍ بِغَيْبٍ ثُمَّ قَرَأَ: "الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ إِلٰى قَوْلِهِ تَعَالٰى يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ". رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢٦٠/٢

25. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत

अ़ब्दुल्लाह ﷺ के सामने कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा और उनके ईमान का तज़किरा छेड़ दिया। उस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ की सदाक़त, हर उस शख़्स के सामने, जिसने आप को देखा था बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह थी। उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि सबसे अफ़ज़ल ईमान उस शख़्स का है जिसका ईमान बिन देखे हो। फिर उसके सुबूत में उन्होंने ये आयत पढ़ी: الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ तक। तर्जुमा : 'यह किताब है इसमें कोई शक व शुबहा नहीं, मुत्तक़ियों के लिए हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं।' (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : وَدِدْتُ اَنِّى لَقِيْتُ اِخْوَانِىْ، قَالَ فَقَالَ اَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوَ لَيْسَ نَحْنُ اِخْوَانَكَ قَالَ اَنْتُمْ اَصْحَابِىْ وَلٰكِنْ اِخْوَانِىَ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِىْ وَلَمْ يَرَوْنِىْ. رواه احمد ١٥٥/٣

26. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तमन्ना है कि मैं अपने भाइयों से मिलता। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया: क्या हम आप के भाई नहीं हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम तो मेरे सहाबा हो और मेरे भाई वे लोग हैं, जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِىْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْجُهَنِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اِذْ طَلَعَ رَاكِبَانِ، فَلَمَّا رَآهُمَا قَالَ: كِنْدِيَّانِ مَذْحِجِيَّانِ حَتّٰى اَتَيَاهُ، فَاِذَا رِجَالٌ مِنْ مَذْحِجٍ، قَالَ فَدَنَا اِلَيْهِ اَحَدُهُمَا لِيُبَايِعَهُ، قَالَ فَلَمَّا اَخَذَ بِيَدِهٖ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَرَاَيْتَ مَنْ رَآكَ فَآمَنَ بِكَ وَصَدَّقَكَ وَاتَّبَعَكَ مَاذَا لَهُ؟ قَالَ: طُوْبٰى لَهُ، قَالَ فَمَسَحَ عَلٰى يَدِهٖ فَانْصَرَفَ، ثُمَّ اَقْبَلَ الْآخَرُ حَتّٰى اَخَذَ بِيَدِهٖ لِيُبَايِعَهُ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَرَاَيْتَ مَنْ آمَنَ بِكَ وَ صَدَّقَكَ وَاتَّبَعَكَ وَلَمْ يَرَكَ قَالَ: طُوْبٰى لَهُ ثُمَّ طُوْبٰى لَهُ ثُمَّ طُوْبٰى لَهُ، قَالَ فَمَسَحَ عَلٰى يَدِهٖ فَانْصَرَفَ.

رواه احمد ١٥٢/٤

27. हज़रत अबू अ़ब्दुर्रहमान जुह्नी ﷺ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास बैठे थे कि दो सवार (सामने से आते) नज़र आए। जब आप ﷺ ने इन्हें देखा तो फ़रमाया : ये दोनों क़बीला किन्दा और क़बीला मज़हिज के लोग मालूम होते हैं। यहां तक कि जब वे रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे तो उनके साथ उनके क़बीला के और आदमी भी थे। रावी कहते हैं कि उनमें एक शख़्स बैअ़त के लिए आप ﷺ के क़रीब आए। जब उन्होंने आप का दस्ते मुबारक हाथ में लिया तो अ़र्ज़

किया : या रसूलुल्लाह! जिसने आप की ज़ियारत की, आप पर ईमान लाया और आपकी तस्दीक़ की और आपका इत्तेबाअ़ भी किया, फ़रमाइए उसको क्या मिलेगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको मुबारकबाद हो। यह सुनकर (बरकत लेने के लिए) उन्होंने आप के दस्ते मुबारक पर हाथ फेरा और बैअ़त करके चले गए। फिर दूसरे शख़्स आगे बढ़े, उन्होंने ने भी बैअ़त के लिए आपका दस्ते मुबारक अपने हाथ में लिया और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जो आप को देखे बग़ैर ईमान लाए, आप की तस्दीक़ करे और आपका इत्तबाअ़ करे, फ़रमाइये उसको क्या मिलेगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। उन्होंने भी आप के दस्ते मुबारक पर हाथ फेरा और बैअ़त करके चले गए। (मुस्नद अहमद)

﴿28﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ : ثَلَاثَۃٌ لَھُمْ اَجْرَانِ: رَجُلٌ مِنْ اَھْلِ الْکِتَابِ آمَنَ بِنَبِیِّہٖ وَآمَنَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ، وَالْعَبْدُ الْمَمْلُوْکُ اِذَا اَدّٰی حَقَّ اللّٰہِ تَعَالٰی وَحَقَّ مَوَالِیْہِ، وَرَجُلٌ کَانَتْ عِنْدَہٗ اَمَۃٌ فَاَدَّبَھَا فَاَحْسَنَ تَاْدِیْبَھَا وَعَلَّمَھَا فَاَحْسَنَ تَعْلِیْمَھَا ثُمَّ اَعْتَقَھَا فَتَزَوَّجَھَا فَلَہٗ اَجْرَانِ. رواہ البخاری، باب تعلیم الرجل امتہ واھلہ، رقم: ٩٧

28. हज़रत अबू मूसा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जिनके लिए दोहरा सवाब है, एक वह शख़्स, जो अह्ले किताब में से हो (यहूदी हो या ईसाई) अपने नबी पर ईमान लाए फिर (मुहम्मद ﷺ) पर भी ईमान लाए। दूसरा, वह गुलाम जो अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ भी अदा करे और अपने आक़ाओं के हुक़ूक़ भी अदा करे। तीसरा, वह शख़्स जिसकी कोई बांदी हो और उसने उसकी ख़ूब अच्छी तरबियत की हो और उसे ख़ूब अच्छी तालीम दी हो, फिर उसे आज़ाद करके उससे शादी कर ली हो, तो उसके लिए दोहरा अज्र है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मकसद यह है कि उन लोगों के आ़मालनामे में हर अ़मल का सवाब दूसरों के अ़मल के मुक़ाबले में दोहरा लिखा जाएगा। मसलन, अगर कोई दूसरा शख़्स नमाज़ पढ़े, तो उसे दस गुना सवाब मिलेगा और यही अ़मल उन तीनों में से कोई करे तो उसे बीस गुना सवाब मिलेगा। (मज़ाहिरे हक़)

﴿29﴾ عَنْ اَوْسَطَ رَحِمَہُ اللّٰہُ قَالَ: خَطَبَنَا اَبُوْ بَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ فَقَالَ: قَامَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ مَقَامِیْ ھٰذَا عَامَ الْاَوَّلِ، وَبَکٰی اَبُوْبَکْرٍ، فَقَالَ اَبُوْ بَکْرٍ: سَلُوا اللّٰہَ الْمُعَافَاۃَ اَوْ قَالَ الْعَافِیَۃَ فَلَمْ یُؤْتَ اَحَدٌ قَطُّ بَعْدَ الْیَقِیْنِ اَفْضَلَ مِنَ الْعَافِیَۃِ اَوِ الْمُعَافَاۃِ. رواہ احمد ١/٣

29. हज़रत औसत रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र ﷺ ने हमारे सामने ब्यान करते हुए फ़रमाया : एक साल पहले रसूलुल्लाह ﷺ मेरे खड़े होने की इसी जगह (ख़ुत्बा के लिए) खड़े हुए थे। यह कहकर हज़रत अबूबक्र ﷺ रो पड़े। फिर फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से (अपने लिए) आ़फ़ियत मांगा करो, क्योंकि ईमान व यक़ीन के बाद आ़फ़ियत से बढ़कर किसी को कोई नेमत नहीं दी गई। (मुस्नद अहमद)

﴿ 30 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَوَّلُ صَلَاحِ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بِالْيَقِيْنِ وَالزُّهْدِ وَاَوَّلُ فَسَادِهَا بِالْبُخْلِ وَالْاَمَلِ. رواه البيهقى ٧/٤٢٧

30. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन शुऐब अपने बाप-दादा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस उम्मत की इस्लाह की इब्तिदा यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती की वजह से हुई है और इसकी बरबादी की इब्तिदा बुख़्ल और लम्बी उम्मीदों की वजह से होगी। (बैहक़ी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ :قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب فى التوكل على الله، رقم: ٢٣٤٤

31. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर इस तरह तवक्कुल करने लगो जैसा कि तवक्कुल का हक़ है, तो तुम्हें इस तरह रोज़ी दी जाए, जिस तरह परिन्दों को रोज़ी दी जाती है। वह सुबह ख़ाली पेट निकलते हैं और शाम भरे पेट वापस आते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَخْبَرَهُ اَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ، فَلَمَّا قَفَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَفَلَ مَعَهُ فَاَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِيْ وَادٍ كَثِيْرِ الْعِضَاهِ، فَنَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ يَسْتَظِلُّوْنَ بِالشَّجَرِ، فَنَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ وَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ، وَنِمْنَا نَوْمَةً فَاِذَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدْعُوْنَا وَاِذَا عِنْدَهُ اَعْرَابِيٌّ، فَقَالَ اِنَّ هٰذَا اخْتَرَطَ عَلَيَّ سَيْفِيْ وَاَنَا نَائِمٌ، فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِيْ يَدِهٖ صَلْتًا، فَقَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّيْ؟ فَقُلْتُ: اللهُ، ثَلَاثًا، وَلَمْ يُعَاقِبْهُ وَجَلَسَ. رواه البخارى، باب من علق سيفه بالشجر...، رقم: ٢٩١٠

32. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ के साथ उस ग़ज़्वा में शरीक थे, जो नज्द की तरफ़ हुआ था। जब रसूलुल्लाह ﷺ ग़ज़्वा से वापस हुए, तो यह भी आप के साथ वापस हुए, (वापसी में यह वाक़िआ पेश आया कि) सहाबा किराम ﷺ दोपहर के वक़्त एक ऐसे जंगल में पहुंचे जहां कीकर के दरख़्त ज़्यादा थे। रसूलुल्लाह ﷺ वहां आराम करने के लिए ठहर गए। सहाबा दरख़्तों के साए की तलाश में इधर-उधर फैल गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने भी कीकर के दरख़्त के नीचे आराम फ़रमाने के लिए क़ियाम किया और दरख़्त पर अपनी तलवार लटका दी और हम भी थोड़ी देर के लिए (दरख़्तों के साए में) सो गए। अचानक (हमने सुना कि) रसूलुल्लाह ﷺ हमें आवाज़ दे रहे हैं। (जब हम वहां पहुंचे) तो आपके पास एक देहाती काफ़िर मौजूद था। आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं सो रहा था, इसने मेरी तलवार मुझ पर सौंत ली। फिर मेरी आंख खुल गई तो मैंने देखा कि मेरी नंगी तलवार उसके हाथ में है। उसने मुझसे कहा : तुझको मुझसे कौन बचाएगा? मैंने तीन मर्तबा कहा : अल्लाह। आप ﷺ ने उस देहाती को कोई सज़ा नहीं दी और उठकर बैठ गए। (बुख़ारी)

﴿ 33 ﴾ عَنْ صَالِحِ بْنِ مِسْمَارٍ وَجَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ رَحِمَهُمَا اللهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِلْحَارِثِ بْنِ مَالِكٍ: مَاأَنْتَ يَا حَارِثَ بْنَ مَالِكٍ؟ قَالَ: مُؤْمِنٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: مُؤْمِنٌ حَقًّا؟ قَالَ: مُؤْمِنٌ حَقًّا. قَالَ فَاِنَّ لِكُلِّ حَقٍّ حَقِيْقَةً، فَمَاحَقِيْقَةُ ذٰلِكَ؟ قَالَ: عَزَفْتُ نَفْسِيْ مِنَ الدُّنْيَا، وَاَسْهَرْتُ لَيْلِيْ، وَاَظْمَأْتُ نَهَارِيْ، وَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ اِلٰى عَرْشِ رَبِّيْ حِيْنَ يُجَاءُ بِهٖ وَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ اِلٰى اَهْلِ الْجَنَّةِ يَتَزَاوَرُوْنَ فِيْهَا، وَكَاَنِّيْ اَسْمَعُ عُوَاءَ اَهْلِ النَّارِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مُؤْمِنٌ نَوَّرَ قَلْبَهُ.

رواه عبد الرزاق فی مصنفه، باب الايمان والاسلام ١٢٩/١١

33. हज़रत सालिह बिन मिस्मार और हज़रत जाफ़र बिन बुरक़ान रह० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत हारिस बिन मालिक ﷺ से पूछा : हारिस! तुम किस हाल में हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : (अल्लाह के फ़ज़्ल से) मैं ईमान की हालत में हूं। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या सच्चे मोमिन हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया, सच्चा मोमिन हूं। आपने फ़रमाया (सोच कर कहो।) हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है? यानी तुमने किस बात की वजह से यह तय कर लिया कि मैं सच्चा मोमिन हूं। अ़र्ज़ किया : (मेरी बात की हक़ीक़त यह है) कि मैंने अपना दिल दुनिया से हटा लिया है, रात को जागता हूं, दिन को प्यासा रहता हूं यानी रोज़ा रखता हूं और जिस वक़्त मेरे रब का अ़र्श लाया जाएगा, उस मंज़र को गोया मैं देख

हा हूं। जन्नत वालों की आपस की मुलाक़ातों का मंज़र मेरी आंखों के सामने रहता ; और गोया कि (मैं अपने कानों से) दोज़ख़ियों की चीख़ व पुकार को सुन रहा हूं, यानी जन्नत और दोज़ख़ का तसव्वुर हर वक़्त रहता है। आप ﷺ ने (उनकी इस ़फ़्तगू को सुनकर) इर्शाद फ़रमायाः (हारिस) ऐसे मोमिन हैं जिनका दिल ईमान के नूर से रौशन हो चुका है। (मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴿ 34 ﴾ عَنْ مَاعِزٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ سُئِلَ اَىُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ؟ قَالَ : اِيْمَانٌ بِاللهِ وَحْدَهُ، ثُمَّ الْجِهَادُ، ثُمَّ حَجَّةٌ بَرَّةٌ، تَفْضُلُ سَائِرَ الْعَمَلِ كَمَا بَيْنَ مَطْلَعِ الشَّمْسِ اِلٰى مَغْرِبِهَا. رواه احمد ٤/٣٤٢

34. हज़रत माइज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया ़ आमाल में से कौनसा अ़मल सबसे अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः (आमाल में सबसे अफ़ज़ल अ़मल) अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाना है, जो अकेले फिर जिहाद करना, फिर मक़्बूल हज। इन आ़माल और बाक़ी आ़माल में फ़ज़ीलत ़ इतना फ़र्क़ है जितना कि मश्रिक़ व मग़रिब के दर्मियान फ़ासले का फ़र्क़ है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ذَكَرَ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَوْمًا عِنْدَهُ الدُّنْيَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : اَلَا تَسْمَعُوْنَ؟ اِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْاِيْمَانِ، اِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْاِيْمَانِ يَعْنِي: التَّقَحُّلَ. رواه ابو داؤد، باب النهى عن كثير من الارفاه رقم: ٤١٦١

. हज़रत अबू उमामा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने एक दिन आप के सामने दुनिया का ज़िक्र किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, ध्यान दो। यक़ीनन सादगी ईमान का हिस्सा है, यक़ीनन सादगी ईमान का ़सा है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इससे मुराद तकल्लुफ़ात और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ों को छोड़ना है।

﴿ 36 ﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: فَاَىُّ الْاِيْمَانِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: الْهِجْرَةُ، قَالَ: فَمَا الْهِجْرَةُ؟ قَالَ: تَهْجُرُ السُّوْءَ. (وهو بعض الحديث) رواه احمد ٤/١١٤

36. हज़रत अम्र बिन अ़-ब-सा ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : कौन-सा ईमान अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : वह ईमान जिसके

साथ हिजरत हो। उन्होंने दरयाफ़्त किया : हिजरत किया है? इर्शाद फ़रमाया, हिजरत यह है कि तुम बुराई को छोड़ दो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 37 ﴾ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ الثَّقَفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قُلْ لِي فِي الْإِسْلَامِ قَوْلًا لَا اَسْاَلُ عَنْهُ اَحَدًا بَعْدَكَ، وَفِي حَدِيْثِ اَبِي اُسَامَةَ: غَيْرَكَ، قَالَ: قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ. رواه مسلم، باب جامع اوصاف الاسلام، رقم: ١٥٩

37. हज़रत सुफ़ियान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझको इस्लाम की कोई ऐसी (जामेअ़) बात बता दीजिए कि आपके बताने के बाद फिर इस सिलसिले में मुझे किसी दूसरे से पूछने की ज़रूरत बाक़ी न रहे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम यह कहो कि मैं अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाया, फिर इस बात पर क़ायम रहो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी अव्वल तो दिल से अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़तों पर ईमान लाओ, फिर अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ के हुक्मों पर अ़मल करो और यह ईमान व अ़मल वक़्ती न हो, बल्कि पुख़्तगी के साथ उस पर क़ायम रहो। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 38 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الْاِيْمَانَ لَيَخْلَقُ فِي جَوْفِ اَحَدِكُمْ كَمَا يَخْلَقُ الثَّوْبُ الْخَلِقُ فَاسْئَلُوا اللهَ اَنْ يُّجَدِّدَ الْاِيْمَانَ فِي قُلُوْبِكُمْ. رواه الحاكم وقال هذا حديث لم يخرج في الصحيحين ورواته مصريون ثقات،وقد احتج مسلم في الصحيح، ووافقه الذهبي ٤/١

38. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान तुम्हारे दिलों में उसी तरह पुराना (और कमज़ोर) हो जाता है, जिस तरह कपड़ा पुराना हो जाता है। लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ किया करो कि वह तुम्हारे दिलों में ईमान को ताज़ा रखें।(मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ لِي عَنْ اُمَّتِي مَا وَسْوَسَتْ بِهِ صُدُوْرُهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ اَوْتَكَلَّمْ.

رواه البخاري، باب الخطاو النسيان في العتاقة ...،رقم: ٢٥٢٨

39. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के (उन) वस्वसों को माफ़ फ़रमा दिया है (जो ईमान

और यक़ीन के खिलाफ़ या गुनाह के बारे में उनके दिल में बग़ैर अख़्तियार के आयें) जब तक कि वह उन वस्वसों के मुताबिक़ अ़मल न कर लें या उनको ज़ुबान पर न लाएं। (बुख़ारी)

﴿ 40 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ نَاسٌ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ فَسَاَلُوْهُ: اِنَّا نَجِدُ فِیْ اَنْفُسِنَا مَا یَتَعَاظَمُ اَحَدُنَا اَنْ یَتَکَلَّمَ بِهٖ قَالَ: اَوَقَدْ وَجَدْ تُمُوْهُ؟ قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: ذٰلِكَ صَرِیْحُ الْاِیْمَانِ. رواہ مسلم، باب بیان الوسوسة فی الایمان ......، رقم: ٣٤٠

40. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं, चन्द सहाबा ؓ रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : हमारे दिलों में बाज़ ऐसे ख़्यालात आते हैं कि उनको ज़ुबान पर लाना हम बहुत बुरा समझते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या वाक़ई तुम उन ख़्यालात को ज़ुबान पर लाना बुरा समझते हो? अ़र्ज़ किया : जी हां! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यही तो ईमान है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी जब ये वस्वसे व ख़्यालात तुम्हें इतने परेशान करते हैं कि उन पर यक़ीन रखना तो दूर की बात, उनको ज़ुबान पर लाना भी तुम्हें गवारा नहीं, तो यही तो ईमानी कमाल की निशानी है। (नव्वी)

﴿ 41 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ: قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَکْثِرُوا مِنْ شَهَادَةِ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَبْلَ اَنْ یُّحَالَ بَیْنَکُمْ وَبَیْنَهَا. رواہ ابو یعلی باسناد جید قوی، الترغیب ٤١٦/٢

41. हज़रत अबू हुरैरह ؓ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि *'ला इला-ह इल्लाह'* की गवाही कसरत से देते रहा करो, इससे पहले कि ऐसा वक़्त आए कि तुम इस कलिमा को (मौत या बीमारी वग़ैरह की वजह से) न कह सको। (अबू याला, तर्ग़ीब)

﴿ 42 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ یَعْلَمُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواہ مسلم، باب الدلیل علی ان من مات ......، رقم: ١٣٦

42. हज़रत उस्मान ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह यक़ीन के साथ जानता हो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴿ 43 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ یَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ حَقٌّ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواہ ابو یعلی فی مسندہ ١٥٩/١

43. हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसकी मौत इस हाल में आए कि वह इस बात का यक़ीन करता हो वि अल्लाह तआ़ला (का वुजूद) हक़ है, वह जन्नत में जाएगा। (अबू याला)

﴿ 44 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : قَالَ اللهُ تَعَالٰى: اِنِّيْ اَنَا اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنَا مَنْ اَقَرَّ لِيْ بِالتَّوْحِيْدِ دَخَلَ حِصْنِيْ وَمَنْ دَخَلَ حِصْنِيْ اَمِنَ مِنْ عَذَابِيْ.

رواه الشيرازي وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢٤٣/٢

44. हज़रत अ़ली ﷺ से नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नही जिसने मेरी तौहीद का इक़रार किया, वह मेरे क़िले में दाख़िल हुआ, और जो मेरे क़िले में दाख़िल हुआ, वह मेरे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ हुआ। (शीराज़ी, जामेअ् सग़ीर)

﴿ 45 ﴾ عَنْ مَكْحُوْلٍ رَحِمَهُ اللهُ يُحَدِّثُ قَالَ: جَاءَ شَيْخٌ كَبِيْرٌ هَرِمٌ قَدْ سَقَطَ حَاجِبَاهُ عَلٰى عَيْنَيْهِ فَقَالَ : يَا رَسُوْلَ اللهِ ! رَجُلٌ غَدَرَ وَفَجَرَ وَلَمْ يَدَعْ حَاجَةً وَلَا دَاجَةً اِلَّا اقْتَطَفَهَا بِيَمِيْنِهِ، لَوْ قُسِمَتْ خَطِيْئَتُهُ بَيْنَ اَهْلِ الْاَرْضِ لَاَوْبَقَتْهُمْ، فَهَلْ لَهُ مِنْ تَوْبَةٍ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَسْلَمْتَ؟ فَقَالَ: اَمَّا اَنَا فَاَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : فَاِنَّ اللهَ غَافِرٌ لَكَ مَا كُنْتَ كَذٰلِكَ وَمُبَدِّلٌ سَيِّئَاتِكَ حَسَنَاتٍ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ ! وَغَدَرَاتِيْ وَفَجَرَاتِيْ؟ فَقَالَ: وَغَدَرَاتُكَ وَفَجَرَاتُكَ، فَوَلَّى الرَّجُلُ يُكَبِّرُ وَيُهَلِّلُ.

التفسير لابن كثير ٣٤٠/٣

45. हज़रत मकहूल रह० फ़रमाते हैं कि एक बहुत बूढ़ा शख़्स जिसकी दोनों भवें उसकी आखों पर आ पड़ी थीं, उसने आकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक ऐस ़ादमी जिसने बहुत बदअ़हदी, बदकारी की और अपनी जायज़-नाजायज़ हर ख़्वाहिश पूरी की और उसके गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि अगर तमाम ज़मीन वालों में तकसीम कर दिए जाएं तो वे सबको हलाक कर दें तो क्या उसके लिए तौबा की गुंजाइश है. रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम मुसलमान हो चुके हो? उसने अ़र्ज़ किया, जी हां! मैं कलिमा शहादत—

'अश्हदु अल्लाह-इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन्न-न मुम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह' का इक़रार करता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तक तुम इस कलिमा के इक़रार पर रहोगे अल्लाह तआ़ला

तुम्हारी तमाम बदअ़ह्दियां और बदकारियां माफ़ फ़रमाते रहेंगे और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदलते रहेंगे। उस बूढ़े ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मेरी तमाम बदकारियां और बदअ़ह्दियां माफ़? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, तुम्हारी तमाम बदअ़ह्दियां और बदकारियां माफ़ हैं। यह सुनकर वह बड़े मियां *अल्लाहु अकबर,* ला इला-ह इल्लल्लाह कहते हुए पीठ फेर कर (ख़ुशी-ख़ुशी) वापस चले गए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿ 46 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰهَ سَيُخَلِّصُ رَجُلاً مِّنْ اُمَّتِيْ عَلٰى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَنْشُرُ عَلَيْهِ تِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ سِجِلاًّ، كُلُّ سِجِلٍّ مِثْلُ مَدِّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَتُنْكِرُ مِنْ هٰذَا شَيْئًا؟ اَظَلَمَكَ كَتَبَتِي الْحَافِظُوْنَ؟ يَقُوْلُ: لَا، يَارَبِّ! فَيَقُوْلُ: اَفَلَكَ عُذْرٌ؟ فَيَقُوْلُ: لَا، يَارَبِّ! فَيَقُوْلُ: بَلٰى، اِنَّ لَكَ عِنْدَنَا حَسَنَةً فَاِنَّهُ لَا ظُلْمَ عَلَيْكَ الْيَوْمَ، فَيُخْرَجُ بِطَاقَةٌ فِيْهَا اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، فَيَقُوْلُ: اُحْضُرْ وَزْنَكَ، فَيَقُوْلُ: يَارَبِّ! مَا هٰذِهِ الْبِطَاقَةُ مَعَ هٰذِهِ السِّجِلَّاتِ؟ فَقَالَ: فَاِنَّكَ لَا تُظْلَمُ قَالَ: فَتُوْضَعُ السِّجِلَّاتُ فِيْ كِفَّةٍ وَالْبِطَاقَةُ فِيْ كِفَّةٍ فَطَاشَتِ السِّجِلَّاتُ وَثَقُلَتِ الْبِطَاقَةُ، وَلَا يَثْقُلُ مَعَ اسْمِ اللّٰهِ شَيْءٌ

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء فيمن يموت......، رقم: ٢٦٣٩

46. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ؓ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला मेरी उम्मत में से एक शख़्स को मुंतख़ब फ़रमा कर सारी मख़्लूक़ को रू-ब-रू बुलाएंगे और उसके सामने आ़माल के निन्यान्वे दफ़्तर खोलेंगे। हर दफ़्तर हद्दे निगाह तक फैला हुआ होगा। इसके बाद उससे सवाल किया जाएगा कि इन आ़मालनामों में से तू किसी चीज़ का इंकार करता है? क्या मेरे उन फ़रिश्तों ने, जो आ़माल लिखने पर तैनात थे, तुझ पर कुछ जुल्म किया है (कि कोई गुनाह बग़ैर किए हुए लिख लिया हो या करने से ज़्यादा लिख दिया हो)? वह अ़र्ज़ करेगा : नहीं (न इंकार की गुंजाइश है, न फ़रिश्तों ने जुल्म किया) फिर इर्शाद होगा : तेरे पास इन बदआ़मालियों का कोई उ़ज़्र है? वह अ़र्ज़ करेगाः कोई उ़ज़्र भी नहीं। इर्शाद होगा : अच्छा तेरी एक नेकी हमारे पास है, आज तुझ पर कोई जुल्म नहीं। फिर काग़ज़ का एक पुरज़ा निकाला जाएगा जिसमें *'अश्हदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह'* लिखा हुआ होगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : जा, उसको तुलवा ले। वह

अ़र्ज़ करेगा : इतने दफ़्तरों के मुक़ाबले में यह पुरज़ा क्या काम देगा? इर्शाद होगा : तुझ पर ज़ुल्म नहीं होगा। फिर उन सब दफ़्तरों को एक पलड़े में रख दिया जाएगा और काग़ज़ का वह पुरज़ा दूसरे पलड़े में, तो इस पुरज़े के वज़न के मुक़ाबले में दफ़्तरों वाला पलड़ा उड़ने लगेगा। (सच्ची बात यह है कि) अल्लाह तआ़ला के नाम के मुक़ाबले में कोई चीज़ वज़न ही नहीं रखती। (तिर्मिज़ी)

﴿ 47 ﴾ عَنْ اَبِیْ عَمْرَةَ الْاَنْصَارِیِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ اَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنِّی رَسُوْلُ اللهِ لَا یَلْقَی اللهَ عَبْدٌ مُؤْمِنٌ بِهَا اِلَّا حَجَبَتْهُ عَنِ النَّارِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ، وَفِی رِوَایَةٍ: لَا یَلْقَی اللهَ بِهِمَا اَحَدٌ یَوْمَ الْقِیَامَةِ اِلَّا اُدْخِلَ الْجَنَّةَ عَلٰی مَا کَانَ فِیْهِ.

رواه احمد و الطبرانی فی الکبیر و الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٦٥/١

47. हज़रत अबू अ़मरा अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा यह गवाही दे कि "अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं" को लेकर अल्लाह तआ़ला से (क़ियामत के दिन) इस हाल में मिले कि वह उस पर (दिल से) यक़ीन रखता हो, तो यह कलिमा-ए- शहादत ज़रूर उसके लिए दोज़ख़ की आग से आड़ बन जाएगा। एक रिवायत में है कि जो शख़्स इन दोनों बातों (अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत) का इक़रार लेकर अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के दिन मिलेगा वह जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, ख़्वाह उसके (आ़मालनामा में) कितने ही गुनाह हों। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : शारेहीने हदीस व दीगर अहादीसे मुबारका की रौशनी में इस हदीस और इस-जैसी अहादीस का मतलब यह बतलाते हैं कि जो शहादतैन यानी अल्लाह तआ़ला की वहदानियत और रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत का इक़रार ले कर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पहुंचेगा और उसके आमालनामा में गुनाह हुए तो भी अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमा देंगे। या तो अपने फ़ज़्ल से माफ़ फ़रमा कर या गुनाहों की सज़ा देकर। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿ 48 ﴾ عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا یَشْهَدُ اَحَدٌ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنِّی رَسُوْلُ اللهِ فَیَدْخُلَ النَّارَ، اَوْ تَطْعَمَهُ.

(وهو بعض الحديث) رواه مسلم، باب الدليل على ان من مات ......،رقم: ١٤٩

48. हज़रत इतबान बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐसा नहीं हो सकता कि कोई शख़्स इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआला का रसूल हूं, फिर वह जहन्नम में दाख़िल हो या दोज़ख़ की आग उसको खाए) (मुस्लिम)

﴿ 49 ﴾ عَنْ اَبِیْ قَتَادَةَ عَنْ اَبِیْهِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ شَهِدَ اَنْ لآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ فَذَلَّ بِهَا لِسَانُهُ وَاطْمَاَنَّ بِهَا قَلْبُهُ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ.

رواہ البیھقی فی شعب الایمان ۱/۴۱

49. हज़रत अबू क़तादा ﷺ अपने वालिद से नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जिस शख़्स ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआला का रसूल हूं और उसकी ज़बान इस कलिमा (तैयिबा को कसरत) से (कहने की वजह से) मानूस हो गई हो और दिल को इस कलिमा (के कहने) से इत्मीनान मिलता हो, तो ऐसे शख़्स को जहन्नम की आग नहीं खाएगी। (बैहक़ी)

﴿ 50 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ نَفْسٍ تَمُوْتُ وَهِیَ تَشْهَدُ اَنْ لآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنِّی رَسُوْلُ اللهِ یَرْجِعُ ذٰلِكَ اِلٰی قَلْبِ مُوْقِنٍ اِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهَا.

رواہ احمد ۵/۲۲۹

50. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की भी इस हाल में मौत आए कि वह पक्के दिल से गवाही देता हो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह तआला का रसूल हूं, अल्लाह तआला उसकी ज़रूर मग़्फ़िरत फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 51 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَمُعَاذٌ رَدِیْفُهُ عَلَی الرَّحْلِ قَالَ: یَا مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ! قَالَ: لَبَّیْكَ یَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَیْكَ، قَالَ یَا مُعَاذُ! قَالَ: لَبَّیْكَ یَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَعْدَیْكَ ثَلَاثًا قَالَ: مَامِنْ اَحَدٍ یَشْهَدُ اَنْ لآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ، صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ اِلَّا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَی النَّارِ. قَالَ یَا رَسُوْلَ اللهِ اَفَلَا اُخْبِرُ بِهِ النَّاسَ فَیَسْتَبْشِرُوا؟ قَالَ: اِذًا یَتَّكِلُوا، وَاَخْبَرَ بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَاَثُّمًا.

رواہ البخاری، باب من خص بالعلم قوما....، رقم: ۱۲۸

51. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ (रज़ि0) से, जबकि वह आप के साथ एक ही कजावे पर सवार थे, फ़रमायाः मुआज़ बिन जबल! उन्होंने अ़र्ज़ किया :- (अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूं)। रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर फ़रमाया, मुआ़ज़, उन्होंने अ़र्ज़ कियाः—————— (अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूं) रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर फ़रमाया, मुआ़ज़! उन्होंने अ़र्ज़ किया—————— (अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं हाज़िर हूं)। तीन बार ऐसा हुआ। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सच्चे दिल से शहादत दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ पर ऐसे शख़्स को हराम कर दिया है। हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने (यह ख़ुशख़बरी सुनकर) अ़र्ज़ किया : क्या मैं लोगों को इसकी ख़बर न कर दूं ताकि वे ख़ुश हो जाएं? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर वे उसी पर भरोसा करके बैठ जाएंगे (अ़मल करना छोड़ देंगे)। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं : हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने आख़िरकार इस ख़ौफ़ से कि (हदीस छुपाने का) गुनाह न हो अपने आख़िरी वक़्त में हदीस लोगों से ब्यान कर दी। (बुख़ारी)

फ़ायदा : जिन हदीसों में सिर्फ़—————— *'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'* के इक़रार पर दोज़ख़ की आग का हराम होना मज़्कूर है। शारिहीन ने उन-जैसी अहादीस के दो मतलब ब्यान किए हैं। एक तो यह कि दोज़ख़ के अबदी अ़ज़ाब से नजात मुराद है, यानी कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की तरह हमेशा उनको दोज़ख़ में नहीं रखा जाएगा, गो बुरे आ़माल की सज़ा के लिए कुछ वक़्त दोज़ख़ में डाला जाए। दूसरा मतलब यह है कि *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* की शहादत पूरे इस्लाम को अपने अन्दर समेटे हुए है, जिसने सच्चे दिल से और सोच-समझ कर यह शहादत दी, उसकी ज़िन्दगी मुकम्मल तौर पर दीने इस्लाम के मुताबिक़ होगी। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 52 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ خَالِصًا مِّنْ قِبَلِ نَفْسِهٖ.

(وهو بعض الحديث) رواه البخاری، باب صفة الجنة والنار، رقم: ٦٥٧٠

52. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः मेरी शफ़ाअ़त का सबसे ज़्यादा नफ़ा उठाने वाला वह शख़्स होगा जो अपने दिल के

खुलूस के साथ -------- *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* कहे। (बुख़ारी)

﴿ 53 ﴾ عَنْ رِفَاعَةَ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اَشْهَدُ عِنْدَ اللهِ لَا يَمُوْتُ عَبْدٌ يَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاَنِّي رَسُوْلُ اللهِ صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ، ثُمَّ يُسَدِّدُ اِلَّا سَلَكَ فِي الْجَنَّةِ. (الحديث) رواه احمد ١٦/٤

53. हज़रत रिफ़ाअः जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अल्लाह तआला के यहां इस बात की गवाही देता हूं कि जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह सच्चे दिल से शहादत देता हो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं (यानी हज़रत मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआला का रसूल हूं, फिर अपने आमाल को दुरुस्त रखता हो, वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 54 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : اِنِّي لَاَعْلَمُ كَلِمَةً لَا يَقُوْلُهَا عَبْدٌ حَقًّا مِنْ قَلْبِهِ فَيَمُوْتُ عَلٰى ذٰلِكَ اِلَّا حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٧٢/١

54. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं जिसे कोई बन्दा भी दिल से हक़ समझ कर कहे और इसी हालत पर उसकी मौत आए तो अल्लाह तआला उस पर ज़रूर जहन्नम की आग हराम फ़रमा देंगे, वह कलिमा *ला इला-ह इल्लल्लाह* है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عَيَاضٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَفَعَهُ قَالَ: اِنَّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ كَلِمَةٌ، عَلَى اللهِ كَرِيْمَةٌ، لَهَا عِنْدَ اللهِ مَكَانٌ، وَهِيَ كَلِمَةٌ مَنْ قَالَهَا صَادِقًا اَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ وَمَنْ قَالَهَا كَاذِبًا حَقَنَتْ دَمَهُ وَاَحْرَزَتْ مَالَهُ وَلَقِيَ اللهَ غَدًا فَحَاسَبَهُ.

رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١٧٤/١

55. हज़रत अयाज़ अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* अल्लाह तआला के यहां बड़ी इज़्ज़त वाला क़ीमती कलिमा है। इसे अल्लाह तआला के यहां बड़ा रुत्बा व मक़ाम हासिल है। जो शख़्स इसे सच्चे दिल से कहेगा अल्लाह तआला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे और जो इसे झूठे दिल से कहेगा, तो यह कलिमा (दुनिया में तो) उसकी जान

व माल की हिफ़ाज़त का ज़रिया बन जाएगा, लेकिन कल क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआला उससे बाज़पुर्स फ़रमाएंगे।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : झूठे दिल से कलिमा कहने पर जान व माल की हिफ़ाज़त होगी, क्योंकि यह शख़्स ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान है, लिहाज़ा मुक़ाबला करने वाले काफ़िर की तरह न उसे क़त्ल किया जाएगा और न ही उसका माल लिया जाएगा।

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ شَهِدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ يُصَدِّقُ قَلْبُهُ لِسَانَهُ دَخَلَ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ. رواه ابو يعلى ٦٨/١

56. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* की गवाही इस तरह दी कि उसका दिल उसकी ज़बान की तस्दीक़ करता हो, तो वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए। (मुस्नद अबू याला)

﴿ 57 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَبْشِرُوْا وَبَشِّرُوْا مَنْ وَرَاءَكُمْ اَنَّهُ مَنْ شَهِدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ صَادِقًا بِهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

رواه احمد والطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٥٩/١

57. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः ख़ुशख़बरी लो और दूसरों को भी ख़ुशख़बरी दे दो कि जो सच्चे दिल से *ला इला-ह इल्लल्लाह* का इक़रार करे, वह जन्नत में दाख़िल होगा।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 58 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ شَهِدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ مُخْلِصًا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

مجمع البحرين في زوائد المعجمين ٦/١ ٥ قال المحقق: صحيح لجميع طرقه

58. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः जो शख़्स इख़्लास के साथ इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मज्मउलबहरैन)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَرَاَيْتُ فِيْ عَارِضَتَي الْجَنَّةِ مَكْتُوْبًا ثَلَاثَةَ اَسْطُرٍ بِالذَّهَبِ: السَّطْرُ الْاَوَّلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ، وَالسَّطْرُ الثَّانِي مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا اَكَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَّفْنَا خَسِرْنَا، وَالسَّطْرُ الثَّالِثُ اُمَّةٌ مُذْنِبَةٌ وَرَبٌّ غَفُوْرٌ. رواه الرافعي وابن النجار وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٦٤٥/١

59. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैंने जन्नत के दोनों तरफ़ तीन सतरें सोने के पानी से लिखी हुई देखीं। पहली सतर ---------------*'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'*। दूसरी सतर "जो हमने आगे भेज दिया यानी सदक़ा वग़ैरह कर दिया, उसका सवाब हमें मिल गया और जो दुनिया में हमने खा पी लिया उसका हमने नफ़ा उठा लिया और जो कुछ हम छोड़ आए, उसमें हमें नुक़सान हुआ"। तीसरी सतर "उम्मत गुनहगार है और रब बख़्शने वाला है।" (राफ़ई, इब्नुन्नज्जार)

﴿ 60 ﴾ عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَنْ يُّوَافِيَ عَبْدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ يَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللهِ اِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

رواه البخاري، باب العمل الذي يبتغى به وجه الله تعالى، رقم٦٤٢٣

60. हज़रत इतबान बिन मालिक अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ियामत के दिन *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* को इस तरह से कहता हुआ आए कि इस कलिमा के ज़रिए अल्लाह तआला ही की रज़ामन्दी चाहता हो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग को ज़रूर हराम फ़रमा देंगे। (बुख़ारी)

﴿ 61 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ فَارَقَ الدُّنْيَا عَلَى الْاِخْلَاصِ لِلّٰهِ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاِقَامِ الصَّلَاةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، فَارَقَهَا وَاللهُ عَنْهُ رَاضٍ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٣٣٢/٢

61. हज़रत अनस ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जो शख़्स दुनिया से इस हाल में रुख़्सत हुआ कि वह अल्लाह तआला के लिए मुख़लिस था, जो अकेले हैं, जिनका कोई शरीक नहीं है और (अपनी ज़िन्दगी में) नमाज़ क़ायम करता रहा, (और अगर साहिबे माल था, तो) ज़कात देता रहा, तो वह शख़्स इस हाल में रुख़्सत हुआ कि अल्लाह तआला उससे राज़ी थे। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के लिए मुख़लिस होने से मुराद यह है कि दिल से फ़रमांबरदारी अख़्तियार की हो ।

﴾ 62 ﴿ عَنْ اَبِىْ ذَرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَدْ اَفْلَحَ مَنْ اَخْلَصَ قَلْبَهٗ لِلْاِيْمَانِ وَجَعَلَ قَلْبَهٗ سَلِيْمًا وَلِسَانَهٗ صَادِقًا وَنَفْسَهٗ مُطْمَئِنَّةً وَخَلِيْقَتَهٗ مُسْتَقِيْمَةً وَجَعَلَ اُذُنَهٗ مُسْتَمِعَةً وَعَيْنَهٗ نَاظِرَةً. (الحديث) رواه احمد ١٤٧/٥

62. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः यक़ीनन वह शख़्स कामयाब हो गया जिसने अपने दिल को ईमान के लिए ख़ालिस कर लिया और अपने दिल को (कुफ़्र व शिर्क) से पाक कर लिया, अपनी ज़ुबान को सच्चा रखा, अपने नफ़्स को मुतमइन बनाया (कि उसको अल्लाह की याद से और उसकी मरज़ीयात पर चलने से इत्मीनान मिलता हो), अपनी तबीयत को दुरुस्त रखा (कि वह बुराई की तरफ़ न चलती हो), अपने कान को हक़ सुनने वाला बनाया और अपनी आंख को (ईमान की निगाह से) देखने वाला बनाया। (मुस्नद अहमद)

﴾ 63 ﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِىَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَقِيَهٗ يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ.

رواه مسلم، باب الدليل على من مات ......رقم، ٢٧٠

63. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि उसके साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि वह उसके साथ किसी को शरीक ठहराता हो, वह दोज़ख़ में दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴾ 64 ﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا فَقَدْ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ. عمل اليوم والليلة للنسائى، رقم: ١١٢٩

64. हज़रत उ़बादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आई कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर दी। (अ़-म-लुल यौम वल्लैलः)

﴾ 65 ﴿ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ وَهُوَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا فَقَدْ حَلَّتْ لَهُ مَغْفِرَتُهُ.

رواه الطبراني فى الكبير واسناده لا باس به، مجمع الزوائد ١٦٤/١

65. हज़रत नव्वास बिन समआन ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसकी मौत इस हाल में आई कि उसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो, तो यक़ीनन उसके लिए मग़फ़िरत ज़रूरी हो गई। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 66 ﴿ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَا مُعَاذُ! هَلْ سَمِعْتَ مُنْذُ اللَّيْلَةِ حِسًّا؟ قُلْتُ: لَا قَالَ: إِنَّهُ أَتَانِيْ آتٍ مِنْ رَبِّيْ، فَبَشَّرَنِيْ أَنَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِيْ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَفَلَا أَخْرُجُ إِلَى النَّاسِ فَأُبَشِّرُهُمْ، قَالَ: دَعْهُمْ فَلْيَسْتَبِقُوا الصِّرَاطَ.

رواه الطبراني فى الكبير ٥٩/٢٠

66. हज़रत मुआज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने रात कोई आहट सुनी? मैंने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से एक फ़रिश्ता आया। उसने मुझे यह ख़ुशख़बरी दी कि मेरी उम्मत में से जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, वह जन्नत में दाख़िल होगा। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मैं लोगों के पास जाकर यह ख़ुशख़बरी न सुना दूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन्हें अपने हाल पर रहने दो, ताकि (आमाल के) रास्ते में एक दूसरे से आगे बढ़ते रहें। (तबरानी)

﴾ 67 ﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَا مُعَاذُ! أَتَدْرِيْ مَا حَقُّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ؟ قَالَ قُلْتُ: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّ حَقَّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوا اللهَ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا. (الحديث) رواه مسلم،باب الدليل على ان من مات ......، رقم: ١٤٤

67. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुआज़! तुम जानते हो कि बन्दों पर अल्लाह तआला का क्या हक़ है? और अल्लाह तआला पर बन्दों का क्या हक़ है? मैंने अ़र्ज़ किया : अल्लाह तआला और उनके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दों पर अल्लाह

तआला का हक़ यह है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न करें और अल्लाह तआला पर बन्दों का हक़ यह है कि जो बन्दा उसके साथ किसी को शरीक न करे, उसे अज़ाब न दे। (मुस्लिम)

﴿ 68 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ لَقِيَ اللهَ لاَ يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَّلَا يَقْتُلُ نَفْسًا لَقِيَ اللهَ وَهُوَ خَفِيْفُ الظَّهْرِ.

رواه الطبرانی فی الکبیر وفی اسناده ابن لهیعة، مجمع الزوائد ١/١٦٧

68. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला से इस हाल में मिले कि उसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो और न किसी को क़त्ल किया हो तो वह अल्लाह तआला के दरबार में (इन दो गुनाहों का बोझ न होने की वजह से) हलका- फुल्का हाज़िर होगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 69 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا وَلَمْ يَتَنَدَّ بِدَمٍ حَرَامٍ اُدْخِلَ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ.

رواه الطبرانی فی الکبیر و رجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/١٦٥

69. हज़रत जरीर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो और किसी के नाहक़ ख़ून में हाथ न रंगे हों, तो वह जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहेगा दाख़िल कर दिया जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

ग़ैब की बातों पर ईमान

अल्लाह तआ़ला पर और तमाम ग़ैबी उमूर पर ईमान लाना और हज़रत मुहम्मद ﷺ की हर ख़बर को मुशाहदा के बग़ैर महज़ उनके एतिमाद पर यक़ीनी तौर पर मान लेना और उनकी ख़बर के मुक़ाबले में फ़ानी लज़्ज़तों, इन्सानी मुशाहदों और माद्दी तजुर्बों को छोड़ देना।

अल्लाह तआ़ला, उसकी सिफ़ाते आ़लिया, उसके रसूल और तक़दीर पर ईमान

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾

[البقرة: ١٧٧]

(जब यहूद व नसारा ने कहा कि हमारा और मुसलमानों का क़िबला एक है तो हम अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ कैसे हो सकते हैं? तो इस ख़्याल की तरदीद में

अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया) कोई यही नेकी (व कमाल) नहीं कि तुम अपने मुंह मश्रिक़ की तरफ़ करो या मग़रिब की तरफ़, बल्कि नेकी तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला (की ज़ात व सिफ़ात) पर यक़ीन रखे और (इसी तरह) आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, तमाम आसमानी किताबों और नबियों पर यक़ीन रखे और माल की मुहब्बत और अपनी हाजत के बावजूद, रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, सवाल करने वालों और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में माल दे और नमाज़ की पाबन्दी करे और ज़कात भी अदा करे और इन अ़क़ीदों और आमाल के साथ, उनके ये अख़्लाक़ भी हों कि जब वे किसी जायज़ काम का अ़हद कर लें तो इस अ़हद को पूरा करें। और वे तंगदस्ती में, बीमारी में और लड़ाई के सख़्त वक़्त में मुस्तक़िल मिज़ाज रहने वाले हों। यही वे लोग हैं जो सच्चे हैं; और यही वे लोग हैं जिनको मुत्तक़ी कहा जा सकता है। (बक़रः 177)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ﴾ (فاطر: ٣)

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : लोगो! अल्लाह तआ़ला के उन एहसानात को याद करो जो अल्लाह तआ़ला ने तुम पर किए हैं। ज़रा सोचो तो सही, अल्लाह तआ़ला के अलावा भी कोई ख़ालिक़ है जो तुम को आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता हो, उसके सिवा कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर तुम कहां चले जा रहे हो? (फ़ातिर : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ﴾ [الانعام: ١٠١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : वह आसमानों और ज़मीन को बग़ैर नमूने के पैदा करने वाले हैं, उनकी कोई औलाद कहां हो सकती है, जबकि उनकी कोई बीवी ही नहीं और अल्लाह तआ़ला ही ने हर चीज़ को पैदा किया है और वही हर चीज़ को जानते हैं। (अन्आ़म : 101)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ﴾

[الواقعة: ٥٨، ٥٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा यह तो बताओ कि जो मनी तुम औरतों के रिहम में पहुंचाते हो, क्या तुम उससे इंसान बनाते हो या हम बनाने वाले हैं? (वाक़िअः 58-59)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ○ ءَ اَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴾

[الواقعة: ٦٣، ٦٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा फिर यह तो बताओ कि ज़मीन में जो बीज तुम डालते हो उसे तुम उगाते हो, या हम उसके उगाने वाले हैं? (वाक़िअः 63-64)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِىْ تَشْرَبُوْنَ ○ ءَ اَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ○ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْ لَا تَشْكُرُوْنَ ○ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِىْ تُوْرُوْنَ ○ ءَ اَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴾ [الواقعة: ٦٨-٧٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो पानी तुम पीते हो, उसको बादलों से तुम ने बरसाया, या हम उसके बरसाने वाले हैं। अगर हम चाहें तो उस पानी को कड़वा कर दें। तुम क्यों शुक्र नहीं करते? अच्छा फिर यह तो बताओ कि जिस आग को तुम सुलगाते हो, उसके ख़ास दरख़्त को (और इसी तरह जिन ज़रियों से यह आग पैदा होती है, उनको) तुमने पैदा किया या हम उसके पैदा करने वाले हैं। (वाक़िअः 68-72)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اِنَّ اللّٰهَ فٰلِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ○ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ○ وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِىْ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ○ وَهُوَ الَّذِىْ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَىْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴾ [الانعام: ٩٥-٩٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआला बीज और गुठली को फाड़ने वाले हैं। वही जानदार को बेजान से निकालते हैं और वही बेजान को जानदार से निकालते हैं। वही तो अल्लाह हैं, जिनकी ऐसी क़ुदरत है, फिर तुम अल्लाह तआला को छोड़कर कहां उसके ग़ैर की तरफ़ चले जा रहे हो? वही अल्लाह सुबह को रात से निकालने वाले हैं और उसने रात को आराम के लिए बनाया और उसने सूरज और चांद की रफ़्तार को हिसाब से रखा, और उनकी रफ़्तार का हिसाब ऐसी ज़ात की तरफ़ से मुक़र्रर है जो बड़ी क़ुदरत और बड़े इल्म वाले हैं और उसने तुम्हारे फ़ायदे के लिए सितारे बनाए हैं, ताकि तुम उनके ज़रिए से रात के अंधेरों में, ख़ुश्की और दरिया में रास्ता मालूम कर सको और हमने ये निशानियां ख़ूब खोल-खोल कर ब्यान कर दीं उन लोगों के लिए, जो भले और बुरे की समझ रखते हैं।

और अल्लाह तआला वही हैं जिन्होंने तुम को अस्ल के एतिबार से एक ही इंसान से पैदा किया, फिर कुछ अ़र्सा के लिए तुम्हारा ठिकाना ज़मीन है, फिर तुम्हें क़ब्र के हवाले कर दिया जाता है। बेशक हमने ये दलीलें भी खोल कर ब्यान कर दीं उन लोगों के लिए जो सूझ-बूझ रखते हैं।

और वही अल्लाह तआला हैं जिन्होंने आसमान से पानी उतारा और एक ही पानी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नबातात को ज़मीन से निकाला। फिर हमने उससे सब्ज़ खेती निकाली, फिर उस खेती से हम ऐसे दाने निकालते हैं जो ऊपर तले होते हैं और खजूर की शाखों में से ऐसे गुच्छे निकालते हैं जो फल के बोझ की वजह से झुके हुए होते हैं और फिर उसी एक पानी से अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए, जिनके फल रंग, सूरत, ज़ाइक़ा में एक दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और बाज़ एक दूसरे से नहीं भी मिलते। ज़रा हर एक फल में ग़ौर तो करो, जब वह फल लाता है कि बिल्कुल कच्चा और बदमज़ा और फिर उसके पकने में भी ग़ौर करो कि उस वक़्त तमाम सिफ़ात में कामिल होता है। बेशक यक़ीन वालों के लिए उन चीज़ों में बड़ी निशानियां हैं। (अन्आम : 95-99)

وَقَالَ تَعَالَىٰ : ﴿فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾ [الجاثية:٣٦،٣٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तमाम ख़ूबियां अल्लाह तआला ही के लिए

हैं जो आसमानों के रब हैं और ज़मीनों के भी रब हैं और तमाम जहानों के रब हैं। और आसमानों और ज़मीन में हर क़िस्म की बड़ाई उन्हीं के लिए है। वही ज़बरदस्त और हिकमत वाले हैं। (जासियः 36-37)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ [اٰل عمران:٢٦/٢٧]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप यूं कहा कीजिए कि ऐ अल्लाह, ऐ तमाम सलतनत के मालिक, आप मुल्क का जितना हिस्सा जिसको देना चाहें दे देते हैं और जिससे चाहें छीन लेते हैं और आप जिसको चाहें इज़्ज़त अ़ता करें और जिसको चाहें ज़लील कर दें, हर क़िस्म की भलाई आप ही के एख़्तियार में है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर हैं। आप रात को दिन में दाख़िल करते हैं और आप ही दिन को रात में दाख़िल करते हैं, यानी आप बाज़ मौसमों में रात के कुछ हिस्से को दिन में दाख़िल कर देते हैं, जिससे दिन बड़ा होने लगता है और बाज़ मौसमों में दिन के हिस्से को रात में दाख़िल कर देते हैं जिससे रात बड़ी हो जाती है और आप जानदार चीज़ को बेजान से निकालते हैं और बेजान चीज़ को जानदार से निकालते हैं और आप जिसको चाहें बेशुमार रिज़्क़ अ़ता फ़रमाते हैं। (आले इमरान : 26.27)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ○ وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ﴾

[الانعام: ٥٩، ٦٠]

अल्लाह का इर्शाद है : और ग़ैब के तमाम ख़ज़ाने अल्लाह तआला ही के पास हैं, उन ख़ज़ानों को अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता, और वह

ख़ुश्की और तरी की तमाम चीज़ों को जानते हैं, और दरख़्त से कोई पत्ता गिरने वाला ऐसा नहीं जिसको वह न जानते हों, और ज़मीन की तारीकियों में जो कोई बीज भी पड़ता है, वह उसको जानते हैं और हर तर और ख़ुश्क चीज़ पहले से अल्लाह तआ़ला के यहां लौहे महफ़ूज़ में लिखी जा चुकी है और वह अल्लाह तआ़ला ही हैं जो रात में तुमको सुला देते हैं और जो कुछ तुम दिन में कर चुके हो उसको जानते हैं फिर (अल्लाह तआ़ला ही) तुमको नींद से जगा देते हैं, ताकि ज़िन्दगी की मुक़र्ररः मुद्दत पूरी की जाए। आख़िरकार तुम सबको उन्हीं की तरफ़ वापस जाना है, वह तुम को उन आ़माल की हक़ीक़त से आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे।

(अन्आ़म : 59-60)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ﴾ [الانعام:١٤]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे कहिए, क्या में अल्लाह ताआ़ला के सिवा किसी और को अपना मददगार बना लूं जो आसमानों और ज़मीन के ख़ालिक़ हैं, और वही सबको खिलाते हैं और उन्हें कोई नहीं खिलाता (कि वह ज़ात उन हाजतों से पाक है)। (अन्आमः 14)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ﴾ [الحجر: ٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं, मगर फिर हम हिकमत से हर चीज़ को एक मुऐयन मिक़दार से उतारते रहते हैं। (हजर : 21)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا﴾ [النساء: ١٣٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : क्या ये लोग काफ़िरों के पास इज़्ज़त तलाश करते हैं, तो याद रखें कि इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में है। (निसा : 139)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ [العنكبوت: ٦٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और कितने ही जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी जमा करके नहीं रखते। अल्लाह तआ़ला ही उनको भी उनके मिक़दार की रोज़ी पहुंचाते हैं और तुम्हें भी, और वही सबकी सुनते हैं और सबको जानते हैं। (अंकबूत : 60)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ﴾

[الانعام: ٤٦]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे फ़रमाइये कि ज़रा यह तो बताओ, अगर तुम्हारी बदअ़मली पर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सुनने और देखने की सलाहियत तुम से छीन लें और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दें (कि फिर किसी बात को समझ न सको) तो क्या अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई और ज़ात इस कायनात में है जो तुम को ये चीज़ें दोबारा लौटा दे। आप देखिए तो हम किस तरह मुख़्तलिफ़ पहलुओं से निशानियां ब्यान करते हैं, फिर भी ये लोग बे-रुख़ी करते हैं। (अन्आ़म : 46)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ﴾

[القصص: ٧٢،٧١]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप उनसे पूछिए, भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात ही रहने दें, तो अल्लाह तआ़ला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रौशनी ले आए, क्या तुम सुनते नहीं? आप उनसे यह भी पूछिए कि यह तो बताओ, अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक दिन ही रहने दें तो अल्लाह तआ़ला के सिवा वह कौन-सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए, ताकि तुम उसमें आराम करो। क्या तुम देखते नहीं? (क़सस : 71-72)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَأْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ﴾ [الشورى: ٣٢-٣٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और उसकी क़ुदरत की निशानियों में से समुन्दर में पहाड़-जैसे जहाज़ हैं, अगर वे चाहें तो हवा को ठहरा दें और वे जहाज़ समुन्दर की सतह पर खड़े के खड़े रह जाएं। बेशक इसमें क़ुदरत पर दलालत के लिए हर साबिर व शाकिर मोमिन के लिए निशानियां हैं। या अगर वे चाहें तो हवा चलाकर उन जहाज़ों के सवारों को उनके बुरे आ़माल की वजह से तबाह कर दें और बहुत-सों से तो दरगुज़र ही फ़रमा देते हैं। (शूरा : 32-34)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ﴾ [سبا:١٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हमने दाऊद عليه السلام को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी। चुनांचे हमने पहाड़ों को हुक्म दिया था कि दाऊद عليه السلام के साथ मिल कर तस्बीह किया करो। और यही हुक्म परिंदों को दिया था। और हमने उनके लिए लोहे को मोम की तरह नर्म कर दिया था।(सबा :10)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ قف فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ق وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ﴾ [القصص:٨١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : हमने क़ारून की शरारतों की वजह से उसको अपने महल समेत ज़मीन में धंसा दिया। फिर उसकी मदद के लिए कोई जमाअ़त भी खड़ी नहीं हुई जो अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से उसको बचा लेती और न वह अपने आप को ख़ुद ही बचा सका। (क़सस : 81)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاَوْحَيْنَا اِلٰى مُوْسٰى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ﴾ [الشعراء: ٦٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : फिर हमने मूसा को हूक्म दि या कि अपनी लाठी क्रो दरिया पर मारे। चुनांचे लकड़ी मारते ही दरीया फ़ट गया (और वह

फट कर कई हिस्से हो गया गोया कई सड़कें खुल गईं) और हर हिस्सा इतना बड़ा था जैसे बड़ा पहाड़।

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍۢ بِالْبَصَرِ﴾ [القمر: ٥٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हमारा हुक्म तो बस एक मर्तबा कह देने से पलक झपकने की तरह पूरा हो जाता है। (क़मर : 50)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ﴾ [الاعراف:٥٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : उसी का काम है पैदा करना और उसी का हुक्म चलता है। (आराफ़ : 54)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ﴾ [اعراف: ٥٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (हर नबी ने आकर अपनी क़ौम को एक ही पैग़ाम दिया कि अल्लाह तआ़ला ही की इबादत करो) उनके सिवा कोई ज़ात भी इबादत के लायक़ नहीं। (आराफ़ : 59)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ﴾ [لقمان:٢٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (उस ज़ात पाक की ख़ूबियां इस कसरत से हैं कि) अगर जितने दरख़्त ज़मीन भर में हैं उनसे क़लम तैयार किए जाएं और ये जो समुन्दर हैं उनको और इनके अलावा मज़ीद सात समुन्दरों को उन क़लमों के लिए बतौर स्याही के इस्तेमाल किया जाए और फिर उन क़लमों और स्याही से अल्लाह तआ़ला के कमालात लिखने शुरू किए जाएं, तो सब क़लम और स्याही ख़त्म हो जाएं लेकिन अल्लाह तआ़ला के कमालों का ब्यान पूरा न होगा। बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त और हिकमत वाले हैं। (लुक़मान : 27)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ﴾ [التوبة:٥١]

अल्लाह तआ़ला ने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि हमें जो चीज़ भी पेश आएगी वह अल्लाह तआ़ला के हुक्म से ही पेश

आएगी। वही हमारे आक़ा और मौला हैं (लिहाज़ा इस मुसीबत में भी हमारे लिए कोई बेहतरी होगी) और मुसलमानों को चाहिए कि सिर्फ़ अल्लाह तआला पर भरोसा करें। (तौबा : 51)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ﴾

[يونس: ١٠٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अगर अल्लाह तआला तुमको कोई तकलीफ़ पहुंचाएं तो उनके सिवा उसको दूर करने वाला कोई नहीं है और अगर वह तुम को कोई राहत पहुंचाना चाहें तो उनके फ़ज़्ल को कोई फेरने वाला नहीं, बल्कि वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं पहुंचाते हैं। वह बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले और निहायत मेहरबान हैं । (यूनुस : 107)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ جِبْرِيْلَ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: حَدِّثْنِيْ مَا الْاِيْمَانُ؟ قَالَ: الْاِيْمَانُ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّيْنَ وَتُؤْمِنَ بِالْمَوْتِ وَبِالْحَيَاةِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَتُؤْمِنَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّارِ وَالْحِسَابِ وَالْمِيْزَانِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ كُلِّهٖ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ قَالَ: فَاِذَا فَعَلْتُ ذٰلِكَ فَقَدْ آمَنْتُ؟ قَالَ: اِذَا فَعَلْتَ ذٰلِكَ فَقَدْ آمَنْتَ

(وهو قطعة من حديث طويل). رواه احمد ١/٣١٩

70. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, मुझे बताइए ईमान क्या है? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान (की तफ़्सील) यह है कि तुम अल्लाह तआला, आख़िरत के दिन, फ़रिश्तों, अल्लाह तआला की किताबों और नबियों पर ईमान लाओ। मरने और मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने पर ईमान लाओ। जन्नत, दोज़ख़, हिसाब और आमाल के तराज़ू पर ईमान लाओ। अच्छी और बुरी तक़दीर पर ईमान लाओ। हज़रत जिबरील ﷺ ने अर्ज़ किया : जब मैं इन तमाम बातों पर ईमान ले आया तो (क्या) मैं ईमान वाला हो गया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम इन चीज़ों पर ईमान

ले आए तो तुम ईमान वाले बन गए। (मुस्नद अहमद)

﴿ 71 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْاِيْمَانُ اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهٖ، وَبِلِقَائِهٖ، وَرُسُلِهٖ ، وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ.

(الحديث) رواه البخاری، باب سؤال جبريل عليه السلام النبی ﷺ......،رقم:٥٠

71. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमया : ईमान यह है कि तुम अल्लाह तआला को, उसके फ़रिश्तों को और (आख़िरत में) अल्लाह तआला से मिलने को और उसके रसूलों को हक़ जानो और हक़ मानो (और मरने के बाद दोबारा) उठाए जाने को हक़ जानो, हक़ मानो। (बुख़ारी)

﴿ 72 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، قِيْلَ لَهٗ اُدْخُلْ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ شِئْتَ.

رواه احمد وفی اسناده شهر بن حوشب وقدوثق،مجمع الزوائد١/١٨٢

72. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की मौत इस हाल में आए कि वह अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो, उससे कहा जाएगा कि तुम जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहो, दाख़िल हो जाओ। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اِنَّ لِلشَّيْطَانِ لَمَّةً بِابْنِ آدَمَ وَلِلْمَلَكِ لَمَّةً، فَاَمَّا لَمَّةُ الشَّيْطَانِ فَاِيْعَادٌ بِالشَّرِّ وَتَكْذِيْبٌ بِالْحَقِّ، وَاَمَّا لَمَّةُ الْمَلَكِ فَاِيْعَادٌ بِالْخَيْرِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْحَقِّ، فَمَنْ وَجَدَ ذٰلِكَ فَلْيَعْلَمْ اَنَّهٗ مِنَ اللّٰهِ فَلْيَحْمَدِ اللّٰهَ، وَمَنْ وَجَدَ الْاُخْرٰى فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ثُمَّ قَرَاَ: ﴿اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ﴾ الآية.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ومن سورة البقرة،رقم:٢٩٨٨

73. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान के दिल में एक ख़्याल तो शैतान की तरफ़ से आता है और एक ख़्याल फ़रिश्ते की तरफ़ से आता है। शैतान की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है कि वह बुराई पर और हक़ को झुठलाने पर उभारता है। फ़रिश्ते की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है कि वह नेकी और हक़ की तस्दीक़ पर उभारता है।

लिहाज़ा जो शख़्स अपने अन्दर नेकी और हक़ की तस्दीक़ का ख़्याल पाए, उसको समझना चाहिए कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से (हिदायत) है और उस पर उसको शुक्र करना चाहिए और जो शख़्स अपने अन्दर दूसरी कैफ़ियत (शैतानी ख़्याल) पाए तो उसको चाहिए कि शैतान मरदूद से अल्लाह तआला की पनाह मांगे। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमाई जिस का तर्जुमा यह है *"शैतान तुम्हें फ़क़्र से डराता है और गुनाह के लिए उकसाता है"*।(तिर्मिज़ी)

﴿74﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَجِلُّوا اللّٰهَ يَغْفِرْ لَكُمْ.

رواه احمد ١٩٩/٥

74. हज़रत अबुद्दर्दा رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की अज़्मत दिल में बैठाओ, वह तुम्हें बख़्श देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿75﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا رَوٰى عَنِ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اَنَّهُ قَالَ: يَاعِبَادِیْ! اِنِّی حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلٰى نَفْسِیْ، وَجَعَلْتُهُ بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا، فَلَا تَظَالَمُوا، يَا عِبَادِیْ! كُلُّكُمْ ضَالٌّ اِلَّا مَنْ هَدَيْتُهُ، فَاسْتَهْدُوْنِیْ اَهْدِكُمْ، يَا عِبَادِیْ! كُلُّكُمْ جَائِعٌ اِلَّا مَنْ اَطْعَمْتُهُ، فَاسْتَطْعِمُوْنِیْ اُطْعِمْكُمْ، يَا عِبَادِیْ! كُلُّكُمْ عَارٍ اِلَّا مَنْ كَسَوْتُهُ، فَاسْتَكْسُوْنِیْ اَكْسُكُمْ، يَا عِبَادِیْ اِنَّكُمْ تُخْطِئُوْنَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَاَنَا اَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا، فَاسْتَغْفِرُوْنِیْ اَغْفِرْ لَكُمْ، يَا عِبَادِیْ! اِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضَرِّیْ فَتَضُرُّوْنِیْ، وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِی فَتَنْفَعُوْنِیْ، يَا عِبَادِیْ! لَوْ اَنَّ اَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَاِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوا عَلٰى اَتْقٰى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ، مَازَادَ ذٰلِكَ فِیْ مُلْكِیْ شَيْئًا، يَا عِبَادِیْ! لَوْ اَنَّ اَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَاِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوا عَلٰى اَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْكِیْ شَيْئًا، يَا عِبَادِیْ! لَوْ اَنَّ اَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَاِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، قَامُوا فِیْ صَعِيْدٍ وَاحِدٍ فَسَاَلُوْنِیْ، فَاَعْطَيْتُ كُلَّ اِنْسَانٍ مَسْاَلَتَهُ، مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِمَّا عِنْدِیْ اِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ اِذَا اُدْخِلَ الْبَحْرَ، يَا عِبَادِیْ! اِنَّمَا هِیَ اَعْمَالُكُمْ اُحْصِيْهَا لَكُمْ، ثُمَّ اُوَفِّيْكُمْ اِيَّاهَا، فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدِ اللّٰهَ، وَمَنْ وَجَدَ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلَا يَلُوْمَنَّ اِلَّا نَفْسَهُ.

رواه مسلم، باب تحريم الظلم، رقم: ٦٥٧٢

75. हज़रत अबूज़र رضي الله عنه नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बन्दो! मैंने अपने पर ज़ुल्म हराम क़रार दिया है और इसे तुम्हारे दर्मियान भी हराम किया है, लिहाज़ा तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म मत करो।

मेरे बंन्दो! तुम सब गुमराह हो, सिवाए उसके जिसे मैं हिदायत दूं, लिहाज़ा मुझसे हिदायत मांगो, मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। मेरे बन्दो! तुम सब भूखे हो सिवाए उसके कि जिसको मैं खिलाऊं, लिहाज़ा तुम मुझसे खाना मांगो, मैं तुम्हें खिलाऊंगा। मेरे बन्दो! तुम सब बरहना हो सिवाए उसके जिसको मैं पहनाऊं, लिहाज़ा तुम मुझसे लिबास मांगो, मैं तुम्हें पहनाऊंगा। मेरे बन्दो! तुम रात दिन गुनाह करते हो और मैं तमाम गुनाहों को माफ़ करता हूं लिहाज़ा मुझ से बख़्शिश तलब करो, मैं तुम्हें बख़्श दूंगा। मेरे बन्दो! तुम मुझे नुक़सान पहुंचाना चाहो तो हरगिज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और तुम मुझे नफ़ा पहुंचाना चाहो तो हरगिज़ नफ़ा नहीं पहुंचा सकते। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब उस शख़्स की तरह हो जाएं जिसके दिल में तुममें से सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला का डर है, तो यह बात मेरी बादशाहत में कोई इज़ाफ़ा नहीं कर सकती। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब उस शख़्स की तरह हो जाएं, जो तुममें से सबसे ज़्यादा फ़ाजिर व फ़ासिक़ है, तो यह चीज़ मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं कर सकती। मेरे बन्दो! अगर तुम्हारे अगले पिछले, इंसान और जिन्नात, सब एक खुले मैदान में जमा होकर मुझ से सवाल करें, और मैं हर एक को उसके सवाल के मुताबिक़ अता कर दूं तो उससे मेरे ख़ज़ानों में इतनी ही कमी होगी जितनी कभी सूई को समुन्दर में डाल कर निकालने से समुन्दर के पानी में होती है, (और यह कमी कोई कमी नहीं। इसी तरह अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में भी सब को देने से कुछ कमी नहीं आती) मेरे बन्दो! तुम्हारे आमाल ही हैं जिनको मैं तुम्हारे लिए महफ़ूज़ कर रहा हूं, फिर तुम्हें उनका पूरा-पूरा बदला दूंगा। लिहाज़ा जो शख़्स (अल्लाह की तौफ़ीक़ से) नेक अमल करे, तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआला की तारीफ़ करे, और जिस शख़्स से कोई गुनाह सरज़द हो जाए वह अपने ही नफ़्स को मलामत करे (क्योंकि इससे गुनाह का सरज़द होना नफ़्स ही के तक़ाज़े से हुआ)। (मुस्लिम)

﴾ 76 ﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ فِیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ فَقَالَ: اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ لَا یَنَامُ وَلَایَنْبَغِیْ لَهٗ اَنْ یَنَامَ، یَخْفِضُ الْقِسْطَ وَیَرْفَعُهٗ، یُرْفَعُ اِلَیْهِ عَمَلُ اللَّیْلِ قَبْلَ عَمَلِ النَّهَارِ، وَعَمَلُ النَّهَارِ قَبْلَ عَمَلِ اللَّیْلِ، حِجَابُهُ النُّوْرُلَوْ كَشَفَهٗ لَاَحْرَقَتْ سُبُحَاتُ وَجْهِهٖ مَا انْتَهٰی اِلَیْهِ بَصَرُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ

رواه مسلم، باب في قوله عليه السلام: ان الله لاينام......، رقم:٤٤٥

76. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने एक मौक़े पर हमें पांच बातें इर्शाद फ़रमाईं : 1. अल्लाह तआ़ला न सोते हैं और सोना उनकी शान के मुनासिब हैं। 2. रोज़ी को कम और कुशादा फ़रमाते हैं, 3. उनके पास रात के आ़माल दिन से पहले, 4. और दिन के आ़माल रात से पहले पहुंच जाते हैं, 5. (उनके और मख़्लूक़ के दर्मियान) परदा उनका नूर है। अगर वे यह पर्दा उठा दें तो जहां तक मख़्लूक़ की नज़र जाए उनकी ज़ात के अनवार सबको जला डालें।

(मुस्लिम)

﴿ 77 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ خَلَقَ اِسْرَافِيْلَ مُنْذُ يَوْمَ خَلَقَهُ صَافًّا قَدَمَيْهِ لَا يَرْفَعُ بَصَرَهُ، بَيْنَهُ وَبَيْنَ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى سَبْعُوْنَ نُوْرًا، مَا مِنْهَا مِنْ نُوْرٍ يَدْنُوْمِنْهُ اِلَّا احْتَرَقَ. مصابيح السنة للبغوى وعده من الحسان ٣١/٤

77. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने जब से इसराफ़ील ﷺ को पैदा फ़रमाया है वह दोनों पांव बराबर किए खड़े हैं नज़र ऊपर नहीं उठाते। उनके और परवरदिगार के दर्मियान नूर के सत्तर पर्दे हैं, हर पर्दा ऐसा है कि अगर इसराफ़ील उसके क़रीब भी जाएं तो जलकर राख हो जाएं। (मसाबीहुस्सुन्न : 31/4)

﴿ 78 ﴾ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ اَوْفٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِجِبْرِيْلَ: هَلْ رَاَيْتَ رَبَّكَ؟ فَانْتَفَضَ جِبْرِيْلُ وَقَالَ: يَامُحَمَّدُ! اِنَّ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُ سَبْعِيْنَ حِجَابًا مِنْ نُوْرٍ لَوْ دَنَوْتُ مِنْ بَعْضِهَا لَا حْتَرَقْتُ. مصابيح السنة للبغوى وعده من الحسان ٣٠/٤

78. हज़रत जुरारह बिन औफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जिबरील ﷺ से पूछा : क्या तुमने अपने रब को देखा है? यह सुनकर जिबरील कांप उठे और अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद ﷺ! मेरे और उनके दर्मियान तो नूर के सत्तर पर्दे हैं, अगर मैं किसी एक के नज़दीक भी पहुंच जाऊं तो जल जाऊं।

(मसाबीहुस्सुन्नः)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اَنْفِقْ اُنْفِقْ عَلَيْكَ، وَقَالَ: يَدُ اللهِ مَلْاٰى لَا يَغِيْضُهَا نَفَقَةٌ، سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَقَالَ: اَرَاَيْتُمْ مَا اَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَاءَ وَالْاَرْضَ فَاِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِيْ يَدِهٖ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ، وَبِيَدِهِ الْمِيْزَانُ يَخْفِضُ وَ يَرْفَعُ. رواه البخارى، باب قوله وكان عرشه على الماء، رقم: ٤٦٨٤

79. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम खर्च करो, मैं तुम्हें दूंगा। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का इर्शाद है : अल्लाह तआला का हाथ यानी उसका ख़ज़ाना भरा हुआ है। रात और दिन का मुसलसल ख़र्च इस ख़ज़ाने को कम नहीं करता। क्या तुम नहीं देखते कि जब से अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और (इससे भी पहले जबकि) उनका अ़र्श पानी पर था कितना ख़र्च किया है (इसके बावजूद) उनके ख़ज़ाने में कुछ कमी नहीं हुई, तक़दीर के अच्छे बुरे फ़ैसलों का तराज़ू उन्हीं के हाथ में है। (बुख़ारी)

﴿ 80 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: يَقْبِضُ اللهُ الْاَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَ يَطْوِی السَّمَاءَ بِيَمِيْنِهٖ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَنَا الْمَلِكُ، اَيْنَ مُلُوْكُ الْاَرْضِ؟

رواه البخاری، باب قول الله تعالٰی ملك الناس، رقم: ۷۳۸۲

80. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला क़ियामत के दिन ज़मीन को अपने क़ब्ज़े में लेंगे और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेटेंगे, फिर फ़रमाएंगे कि मैं ही बादशाह हूं, कहां हैं ज़मीन के बादशाह? (बुख़ारी)

﴿ 81 ﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنِّیْ اَرٰی مَا لَا تَرَوْنَ وَاَسْمَعُ مَالَا تَسْمَعُوْنَ، اَطَّتِ السَّمَاءُ وَحُقَّ لَهَا اَنْ تَئِطَّ مَا فِيْهَا مَوْضِعُ اَرْبَعِ اَصَابِعَ اِلَّا وَمَلَكٌ وَاضِعٌ جَبْهَتَهٗ لِلّٰهِ سَاجِدًا، وَاللهِ لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَااَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيْلًا وَّلَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا، وَمَا تَلَذَّذْتُمْ بِالنِّسَاءِ عَلَى الْفُرُشِ، وَلَخَرَجْتُمْ اِلَى الصُّعُدَاتِ تَجْاَرُوْنَ اِلَى اللهِ، لَوَدِدْتُ اَنِّیْ كُنْتُ شَجَرَةً تُعْضَدُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء فی قول النبی ﷺ لو تعلمون ......،رقم: ۲۳۱۲

81. हज़रत अबूज़र ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं वे चीज़ें देखता हूं, जो तुम नहीं देखते और वे बातें सुनता हूं जो तुम नहीं सुनते। आसमान (अ़ज़मते इलाही के बोझ से) चरचराता है (जैसे कि चारपाई वग़ैरह वज़न से बोलने लगती है) और आसमान का हक़ है कि वह बोले (कि अ़ज़मत का बोझ बहुत होता है) इसमें चार उंगलियों के बराबर भी कोई जगह खाली नहीं है, जहां कोई-न-कोई फ़रिश्ता अपनी पेशानी सज्दा में अल्लाह तआला के सामने न रखे हुए हो। अल्लाह की क़सम! अगर तुम वह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते

और ज़्यादा रोते; और बिस्तरों पर अपनी बीवियों से लुत्फ़ अन्दोज़ न होते और अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करते हुए वीरानों में निकल जाते। काश मैं एक दरख़्त होता (जो जड़) से काट दिया जाता। (तिर्मिज़ी)

﴿ 82 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ لِلّٰهِ تِسْعَةً وَتِسْعِیْنَ اِسْمًا مِائَةً غَیْرَ وَاحِدَةٍ مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْغَفَّارُ الْقَهَّارُ الْوَهَّابُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِیْمُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ الْحَلِیْمُ الْعَظِیْمُ الْغَفُوْرُ الشَّكُوْرُ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ الْحَفِیْظُ الْمُقِیْتُ الْحَسِیْبُ الْجَلِیْلُ الْكَرِیْمُ الرَّقِیْبُ الْمُجِیْبُ الْوَاسِعُ الْحَكِیْمُ الْوَدُوْدُ الْمَجِیْدُ الْبَاعِثُ الشَّهِیْدُ الْحَقُّ الْوَكِیْلُ الْقَوِیُّ الْمَتِیْنُ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ الْمُحْصِیْ الْمُبْدِئُ الْمُعِیْدُ الْمُحْیِیْ الْمُمِیْتُ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الْوَاجِدُ الْمَاجِدُ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ الْمُقَدِّمُ الْمُؤَخِّرُ الْاَوَّلُ الْاٰخِرُ الظَّاهِرُ الْبَاطِنُ الْوَالِیْ الْمُتَعَالِیْ الْبَرُّ التَّوَّابُ الْمُنْتَقِمُ الْعَفُوُّ الرَّؤُوْفُ مَالِكُ الْمُلْكِ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ الْمُقْسِطُ الْجَامِعُ الْغَنِیُّ الْمُغْنِیْ الْمَانِعُ الضَّارُّ النَّافِعُ النُّوْرُ الْهَادِیْ الْبَدِیْعُ الْبَاقِیْ الْوَارِثُ الرَّشِیْدُ الصَّبُوْرُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث غریب، باب حدیث فی اسماء اللّٰه...... رقم: ٣٥٠٧

82. हज़रत अबू हुरैरह ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के निन्नान्वे नाम हैं, एक कम सौ। जिसने उनको ख़ूब अच्छी तरह याद किया वह जन्नत में दाख़िल होगा।

वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई मालिक व माबूद नहीं (उसके निन्यान्वे सिफ़ाती नाम ये हैं) **अर-रहमान** 'बेहद रहम करने वाला', **अर-रहीम** 'निहायत मेहरबान', **अल-मलिक** 'हक़ीक़ी बादशाह', **अल-क़ुद्दूस** 'हर ऐब से पाक', **अस्सलाम** 'हर आफ़त से सलामत रखने वाला', **अल-मुअ्मिन** 'अम्न व ईमान अ़ता फ़रमाने वाला', **अल-मुहैमिन** 'पूरी निगहबानी फ़रमाने वाला', **अल-अ़ज़ीज़** 'सब पर ग़ालिब', **अल-जब्बार** 'ख़राबी का दुरुस्त करने वाला', **अल-मुतकब्बिर** 'बहुत बड़ाई वाला', **अल-ख़ालिक़** 'पैदा फ़रमाने वाला', **अल-बारी** 'ठीक-ठीक बनाने वाला', **अल-मुसव्विर** 'सूरत बनाने वाला', **अल-ग़फ़्फ़ार** 'गुनाहों का बहुत बख़्शने वाला', **अल-क़ह्हार** 'सबको

अपने क़ाबू में रखने वाला', **अल-वह्हाब** 'सब कुछ अ़ता करने वाला', **अर-रज़्ज़ाक़** 'बहुत ज़्यादा रोज़ी देने वाला', **अल-फ़त्ताह** 'सबके लिए रहमत के दरवाज़े खोलने वाला', **अल-अ़लीम** 'सब कुछ जानने वाला', **अल-क़ाबिज़** 'तंगी करने वाला', **अल-बासित** 'फ़राख़ी करने वाला', **अल-ख़ाफ़िज़** 'पस्त करने वाला', **अर-राफ़ेअ़** 'बुलन्द करने वाला', **अल-मुइज़्ज़** 'इज़्ज़त देने वाला', **अल-मुज़िल्ल** 'ज़िल्लत देने वाला', **अस्समीअ़** 'सब कुछ सुनने वाला', **अल-बसीर** 'सब कुछ देखने वाला', **अल-हकम** 'अटल फ़ैसले वाला', **अल-अ़द्ल** 'सरापा अद्ल व इंसाफ़', **अल-लतीफ़** 'भेदों का जानने वाला', **अल-ख़बीर** 'हर बात से बाख़बर', **अल-हलीम** 'निहायत बुर्दबार', **अल-अ़ज़ीम** 'बड़ी अ़ज़मत वाला', **अल-ग़फ़ूर** 'बहुत बख़्शने वाला', **अश-शकूर** 'क़द्रदान' (थोड़े पर बहुत देने वाला) **अल-अ़लीम** 'बुलन्द मर्तबा वाला', **अल-कबीर** 'बहुत बड़ा', **अल-हफ़ीज़** 'हिफ़ाज़त करने वाला', **अल-मुक़ीत** 'सबको ज़िन्दगी का सामान अ़ता करने वाला', **अल-हसीब** 'सबके लिए काफ़ी हो जाने वाला', **अल-जलील** 'बड़ी बुज़ुर्गी वाला', **अल-करीम** 'बे मांगे अ़ता फ़रमाने वाला', **अर-रक़ीब** 'निगरां', **अल-मुजीब** 'क़ुबूल फ़रमाने वाला', **अल-वासेअ़** 'वुस्अ़त रखने वाला', **अल-हकीम** 'बड़ी हिकमतों वाला', **अल-वदूद** 'अपने बन्दों को चाहने वाला', **अल-मजीद** 'इज़्ज़त व शराफ़त वाला', **अल-बाईसु** 'ज़िन्दा करके क़ब्रों से उठाने वाला', **अश-शहीद** 'ऐसा हाज़िर जो सब कुछ देखता है और जानता है', **अल-हक़्क़** 'अपनी सारी सिफ़ात के साथ मौजूद', **अल-वकील** 'काम बनाने वाला', **अल-क़वी** 'बड़ी ताक़त व कुव्वत वाला', **अल-मतीन** 'बहुत मज़बूत', **अल-वली** 'सरपरस्त व मददगार', **अल-हमीद** 'तारीफ़ का मुस्तहिक़', **अल-मुह्सी** 'सब मख़्लूक़ात के बारे में पूरी मालूमात रखने वाला', **अल-मुब्दी** 'पहली बार पैदा करने वाला', **अल-मुईद** 'दोबारा पैदा करने वाला', **अल-मुह्यी** 'ज़िन्दगी बख़्शने वाला' **अल-मुमीत** 'मौत देने वाला', **अल-हैय्य** 'हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहने वाला', **अल-क़ैय्यूम** 'सबको क़ायम रखने और संभालने वाला', **अल-वाजिद** 'सब कुछ अपने पास रखने वाला यानी हर चीज़ उसके ख़ज़ाने में है', **अल-माजिद** 'बड़ाई वाला', **अल-वाहिद** 'एक', **अल-अहद** 'अकेला', **अस्समद** 'सबसे बेनियाज़ और सब उसके मुहताज', **अल-क़ादिर** 'बहुत ज़्यादा क़ुदरत वाला', **अल-मुक़्तदिर** 'सब पर कामिल इक़्तिदार रखने वाला', **अल-मुक़द्दम**

'आगे कर देने वाला', **अल-मुअख़्ख़र** 'पीछे कर देने वाला', **अल-अव्वल** 'सबसे पहले', **अल-आख़िर** 'सबके बाद यानी जब कोई न था, कुछ न था, जब भी वह मौजूद था और जब कोई न रहेगा कुछ न रहेगा वह उस वक़्त और उसके बाद भी मौजूद रहेगा', **अज़्-ज़ाहिर** 'बिल्कुल ज़ाहिर' यानी दलाइल के एतेबार से उसका वुजूद बिल्कुल ज़ाहिर है, **अल-बातिन** 'निगाहों से ओझल', **अल-वाली** 'हर चीज़ का ज़िम्मेदार', **अल-मु त आ़ली** 'मख़्लूक़ की सिफ़ात से बरतर', **अल-बर्र** 'बड़ा मुहसिन', **अत्तव्वाब** 'तौबा की तौफ़ीक़ देने वाला और तौबा क़ुबूल करने वाला', **अल-मुंतक़िम** 'मुजरिमों से बदला लेने वाला', **अल-अफ़ुव्व** 'बहुत माफ़ी देने वाला', **अर-रऊफ़** 'बहुत शफ़क़त रखने वाला', **मालिकुल मुल्क** 'सारे जहान का मालिक', **ज़ुल-जलालि वल इकराम** 'अ़ज़मत व जलाल और इनआ़म व इकराम वाला', **अल-मुक़्सित** 'हक़दार का हक़ अदा करने वाला', **अल-जामेअ़्** 'सारी मख़्लूक़ को क़ियामत के दिन यक्जा करने वाला', **अल-ग़नी** 'ख़ुद बेनियाज़, जिसको किसी से कोई हाजत नहीं', **अल-मुग़्नी** 'अपनी अ़ता के ज़रिए बन्दों को बेनियाज़ कर देने वाला', **अल-मानेअ़्** 'रोक देने वाला' **अज़्ज़ार्र** (अपनी हिकमत और मशीयत के तहत) 'ज़रर पहुंचाने वाला', **अन-नाफ़ेअ़्** 'नफ़ा पहुंचाने वाला', **अन-नूर** 'सरापा नूर और नूर बख़्शने वाला', **अल-हादी** 'सीधा रास्ता दिखाने और उस पर चलाने वाला, **अल-बदीअ़्** 'बिला नमूना बनाने वाला', **अल-बाक़ी** 'हमेशा रहने वाला' (जिसको कभी फ़ना नहीं) **अलवारिस** 'सबके फ़ना हो जाने के बाद बाक़ी रहने वाला', **अर-रशीद** 'साहिबे रुश्द व हिकमत (जिस का हर फ़ेल और फ़ैसला दुरुस्त है) **अस्सबूर** बहुत बरदाश्त करने वाला (कि बन्दों की बड़ी-से-बड़ी नाफ़रमानियां देखता है और फ़ौरन अ़ज़ाब भेजकर उनको तहस नहस नहीं कर देता)। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के बहुत से नाम हैं जो क़ुरआन करीम या दीगर रिवायात में मज़्कूर हैं, जिनमें से निन्नान्वे नाम इस हदीस में हैं। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 83 ﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ الْمُشْرِكِيْنَ قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَامُحَمَّدُ! اُنْسُبْ لَنَا رَبَّكَ، فَاَنْزَلَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ﴾. (رواه احمد ٥/١٣٤)

83. हज़रत उबई बिन काब ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुश्रिकीन ने नबी करीम ﷺ से कहा : ऐ मुहम्मद! हमें अपने परवरदिगार का नसब तो बतलाइए, इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह सूरः (सूरा इख़्लास) नाज़िल फ़रमाई जिसका तर्जुमा यह है : *'आप कह दीजिए कि वह यानी अल्लाह तआ़ला एक है, अल्लाह तआ़ला बेनियाज़ है, उसकी औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न कोई उसके बराबर का है।* (मुस्नद अहमद)

﴿ 84 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: (قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ): كَذَّبَنِى ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ، وَشَتَمَنِىْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ،اَمَّا تَكْذِيْبُهُ اِيَّاىَ اَنْ يَقُوْلَ: اِنِّى لَنْ اُعِيْدَهُ كَمَا بَدَاْتُهُ، وَاَمَّا شَتْمُهُ اِيَّاىَ اَنْ يَقُوْلَ: اتَّخَذَاللهُ وَلَدًا، وَاَنَا الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ اَلِدْ وَلَمْ اُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لِىْ كُفُوًا اَحَدٌ. رواه البخارى، باب قوله الله الصمد، رقم: ٤٩٧٥

84. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़ल फ़रमाते हैं : आदम के बेटे ने मुझे झुठलाया, हालांकि यह उसके लिए मुनासिब नहीं था और मुझे बुरा भला कहा, हालांकि उसे इसका हक़ नहीं था। उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह कहता है मैं उसे दोबारा ज़िन्दा नहीं कर सकता जैसा कि मैंने पहली मर्तबा पैदा किया था। और उसका बुरा भला कहना यह है कि वह कहता है मैंने किसी को अपना बेटा बना लिया है, हालांकि मैं बेनियाज़ हूं, न मेरी कोई औलाद है, न मैं किसी की औलाद हूं और न कोई मेरे बराबर का है। (बुख़ारी)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَزَالُ النَّاسُ يَتَسَاءَلُوْنَ حَتّٰى يُقَالَ: هٰذَا خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ فَمَنْ خَلَقَ اللهَ؟ فَاِذَا قَالُوا ذٰلِكَ فَقُوْلُوا: اَللهُ اَحَدٌ اَللهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا اَحَدٌ، ثُمَّ لْيَتْفُلْ عَنْ يَسَارِهٖ ثَلَاثًا وَلْيَسْتَعِذْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ. رواه ابو داؤد، مشكوٰة المصابيح،رقم: ٧٥

85. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोग हमेशा (अल्लाह तआ़ला की ज़ात के बारे में) एक दूसरे से पूछते रहेंगे, यहां तक कि यह कहा जाएगा कि अल्लाह तआ़ला ने सारी मख़्लूक़ को पैदा किया है, (लेकिन) अल्लाह तआ़ला को किसने पैदा किया? (नऊज़ुबिल्लाह) जब लोग यह बात कहें तो तुम ये कलिमात कहो : *अल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद। लम यलिद। वलम यूलद। वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद०* तर्जुमा : अल्लाह

तआ़ला एक हैं, अल्लाह तआ़ला किसी के मुहताज नहीं, सब उनके मुहताज हैं, न अल्लाह तआ़ला की कोई औलाद है, न वह किसी की औलाद हैं और न कोई अल्लाह तआ़ला का हमसर है। फिर अपने बाएं जानिब तीन मर्तबा थुत्कार दे और अल्लाह तआ़ला से शैतान मरदूद की पनाह मांगे। (अबूदाऊद, मिशकातुल मसाबीह)

﴿ 86 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: قَالَ اللهُ تَعَالٰى: يُؤْذِيْنِى ابْنُ آدَمَ، يَسُبُّ الدَّهْرَ وَاَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِى الْاَمْرُ، اُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ.

رواه البخاری، باب قول اللّٰه تعالٰی یریدون ان یبدلوا کلام اللّٰه، رقم: ۷٤۹۱

86. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे क़ुदसी अपने रब का यह मुबारक इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : आदम का बेटा मुझे तकलीफ़ देना चाहता है ज़माने को बुरा-भला कहता है, हालांकि ज़माना (कुछ नहीं वह) तो ही हूं, मेरे ही हाथ में (ज़माने की) तमाम मामलात हैं, मैं जिस तरह चाहता हूं रात और दिन को गर्दिश देता हूं। (बुख़ारी)

﴿ 87 ﴾ عَنْ اَبِىْ مُوْسٰى الْاَشْعَرِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: مَا اَحَدٌ اَصْبَرَ عَلٰى اَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ، يَدَّعُوْنَ لَهُ الْوَلَدَ ثُمَّ يُعَافِيْهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ.

رواه البخاری، باب قول اللّٰه تعالٰی ان اللّٰه هو الرزاق......، رقم: ۷۳۷۸

87. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तकलीफ़देह बात सुनकर अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा बरदाश्त करने वाला कोई नहीं है। मुश्रिकीन उसके लिए बेटा साबित करते हैं और फिर भी वह उन्हें आफ़ियत देता है और रोज़ी अ़ता करता है। (बुख़ारी)

﴿ 88 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِىْ كِتَابِهٖ فَهُوَ عِنْدَهٗ فَوْقَ الْعَرْشِ: اِنَّ رَحْمَتِىْ تَغْلِبُ غَضَبِىْ.

رواه مسلم، باب فی سعة رحمة اللّٰه تعالٰی......، رقم: ٦٩٦٩

88. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो लौहे महफ़ूज़ में यह लिख दिया *"मेरी रहमत मेरे ग़ुस्सा से बढ़ी हुई है"*। यह तहरीर उनके सामने अ़र्श पर मौजूद है। (मुस्लिम)

﴾ 89 ﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللّٰهِ مِنَ الْعُقُوْبَةِ، مَا طَمِعَ بِجَنَّتِهِ اَحَدٌ، وَلَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ مَا عِنْدَ اللّٰهِ مِنَ الرَّحْمَةِ، مَا قَنِطَ مِنْ جَنَّتِهِ اَحَدٌ.

رواہ مسلم، باب فی سعة رحمة الله تعالیٰ ......، رقم: ٦٩٧٩

89. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मोमिन को उस सज़ा का सही इल्म हो जाए, जो अल्लाह तआला के यहां नाफ़रमानों के लिए है तो उसकी जन्नत की कोई उम्मीद न रखे और अगर काफ़िर को अल्लाह तआला की रहमत का सही इल्म हो जाए, जो अल्लाह तआला के यहां है, तो उसकी जन्नत से कोई नाउम्मीद न हो। (मुस्लिम)

﴾ 90 ﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ لِلّٰهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ، اَنْزَلَ مِنْهَا رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالْبَهَائِمِ وَالْهَوَامِّ، فَبِهَا يَتَعَاطَفُوْنَ، وَ بِهَا يَتَرَاحَمُوْنَ، وَبِهَا تَعْطِفُ الْوَحْشُ عَلٰى وَلَدِهَا، وَاَخَّرَ اللّٰهُ تِسْعًا وَتِسْعِيْنَ رَحْمَةً، يَرْحَمُ بِهَا عِبَادَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواہ مسلم، باب فی سعة رحمة الله تعالیٰ ......، رقم: ٦٩٧٤

وَفِيْ رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: فَاِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ اَكْمَلَهَا بِهٰذِهِ الرَّحْمَةِ. (رقم: ٦٩٧٧)

90. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के यहां सौ रहमतें हैं। उसने उनमें से एक रहमत जिन्न व इन्स, जानवर और कीड़े-मकोड़ों के दरम्यान उतारी है। उसी एक हिस्से की वजह से वह एक दूसरे पर नर्मी और रहम करते हैं, उसी की वजह से वहशी जानवर अपने बच्चे पर शफ़क़त करते हैं। और अल्लाह तआला ने निन्नान्वे रहमतों को क़ियामत के दिन के लिए रखा है कि उनके ज़रिए अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएंगे। एक रिवायत में है कि जब क़ियामत का दिन होगा, तो अल्लाह तआला अपनी इन निन्नान्वे रहमतों को इस दुन्यवी रहमत के साथ मिलाकर मुकम्मल फ़रमाएंगे (फिर सौ की सौ रहमतों के ज़रिए अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएंगे)। (मुस्लिम)

﴾ 91 ﴿ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: قُدِمَ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ بِسَبْيٍ، فَاِذَا امْرَاَةٌ مِنَ السَّبْيِ، تَبْتَغِيْ، اِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ، اَخَذَتْهُ فَاَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَاَرْضَعَتْهُ، فَقَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَتَرَوْنَ هٰذِهِ الْمَرْاَةَ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟ قُلْنَا: لَا وَ اللّٰهِ! وَهِيَ تَقْدِرُ عَلٰى اَنْ لَا تَطْرَحَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَللّٰهُ اَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هٰذِهِ بِوَلَدِهَا.

رواہ مسلم، باب فی سعة رحمة الله تعالیٰ ......، رقم: ٦٩٧٨

91. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम के पास कुछ क़ैदी लाए गए। उनमें एक औरत पर नज़र पड़ी जो अपना बच्चा तलाश करती फिर रही थी। जब उसे बच्चा मिला, उसने उसे उठाकर अपने पेट से लगाया और दूध पिलाया। नबी करीम ﷺ ने हमसे मुख़ातब होकर फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़्याल है, यह औरत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है? हमने अर्ज़ किया : अल्लाह की क़सम, नहीं! ख़ुसूसन जबकि उसे बच्चे को आग में न डालने की क़ुदरत भी है (कोई मजबूरी नहीं)। इस पर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह औरत अपने बच्चे पर जितना रहम व प्यार करती है अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर इससे कहीं ज़्यादा रहम व प्यार करते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 92 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فِیْ صَلٰوةٍ وَقُمْنَا مَعَهُ، فَقَالَ اَعْرَابِیٌّ وَهُوَ فِی الصَّلٰوةِ: اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِی وَمُحَمَّدًا وَلَا تَرْحَمْ مَعَنَا اَحَدًا فَلَمَّا سَلَّمَ النَّبِیُّ ﷺ قَالَ لِلْاَعْرَابِیِّ: لَقَدْ حَجَّرْتَ وَاسِعًا یُرِیْدُ رَحْمَةَ اللّٰهِ.

رواه البخاری، باب رحمة الناس والبهائم، رقم: ٦٠١٠

92. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा) नबी करीम ﷺ नमाज़ के लिए खड़े हुए। हम भी आप के साथ खड़े हो गए। एक देहात के रहने वाले (नौ मुस्लिम) ने नमाज़ में ही कहा : ऐ अल्लाह! (सिर्फ़) मुझ पर और मुहम्मद ﷺ पर रहम कर, हमारे साथ किसी और पर रहम न कर। जब आपने सलाम फेरा तो उस देहात के रहने वाले से फ़रमाया : तुमने बड़ी वसीअ़ चीज़ को तंग कर दिया (घबराओ नहीं! रहमत तो इतनी है कि सब पर छा जाए, फिर भी तंग न हो, तो तुम ही उसे तंग समझ रहे हो)। (बुख़ारी)

﴿ 93 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِیَدِهٖ لَا یَسْمَعُ بِیْ اَحَدٌ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ یَهُوْدِیٌّ وَلَا نَصْرَانِیٌّ، ثُمَّ یَمُوْتُ وَلَمْ یُؤْمِنْ بِالَّذِیْ اُرْسِلْتُ بِهٖ، اِلَّا کَانَ مِنْ اَصْحَابِ النَّارِ.

رواه مسلم، باب وجوب الإيمان ......، رقم: ٣٨٦

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, इस उम्मत में कोई शख़्स यहूदी या ईसाई ऐसा नहीं जो मेरी (नुबुव्वत की) ख़बर सुने, फिर इस दीन पर ईमान न लाए जिसको देकर मुझे भेजा गया है, और (इसी हाल पर) मर जाए तो यक़ीनन वह दोज़ख़ियों में होगा। (मुस्लिम)

﴿ 94 ﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَاقَالَ: جَاءَ تْ مَلَائِكَةٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ نَائِمٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: اِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هٰذَا مَثَلاً، قَالَ: فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلاً، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا وَجَعَلَ فِيْهَا مَاْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا، فَمَنْ اَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ وَاَكَلَ مِنَ الْمَاْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَاْكُلْ مِنَ الْمَاْدُبَةِ، فَقَالُوا: اَوِّلُوْهَا لَهُ يَفْقَهْهَا، فَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّهُ نَائِمٌ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: اِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: فَالدَّارُ: الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي: مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ اَطَاعَ مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ اَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ فَرْقٌ بَيْنَ النَّاسِ.

رواه البخاری، باب الإقتداء بسنن رسول الله ﷺ رقم: ٧٢٨١

94. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﵁ फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते नबी करीम ﷺ के पास उस वक़्त आए, जबकि आप सो रहे थे। फ़रिश्तों ने आपस में कहा : आप सोए हुए हैं। किसी फ़रिश्ते ने कहा : आंखें सो रही हैं लेकिन दिल तो जाग रहा है। फिर आपस में कहने लगे : तुम्हारे इन साथी (मुहम्मद ﷺ) के बारे में एक मिसाल है, उनको उनके सामने ब्यान करो। दूसरे फ़रिश्तों ने कहा : वह तो सो रहे हैं (लिहाज़ा ब्यान करने से क्या फ़ायदा?) उनमें से बाज़ ने कहा : बेशक आंखें सो रही हैं, लेकिन दिल तो जाग रहा है। फिर फ़रिश्ते एक दूसरे से कहने लगे : उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने मकान बनाया और उसमें दावत का इंतज़ाम किया। फिर लोगों को बुलाने के लिए आदमी भेजा। जिसने इस बुलाने वाले की बात मान, ली वह मकान में दाख़िल होगा और खाना भी खाएगा और जिसने इस बुलाने वाले की बात न मानी वह न मकान में दाख़िल होगा और न ही खाना खाएगा। यह सुनकर फ़रिश्तों ने आपस में कहा : इस मिसाल की वज़ाहत करो, ताकि यह समझ लें। बाज़ ने कहा : यह तो सो रहे हैं (वज़ाहत करने से क्या फ़ायदा?) दूसरों ने कहा : आंखें सो रही हैं मगर दिल तो बेदार है। फिर कहने लगे : वह मकान जन्नत है (जिसे अल्लाह तआला ने बनाया और उसमें मुख़्तलिफ़ नेमतें रखकर दावत का इंतज़ाम किया) और (उस जन्नत की तरफ़) बुलाने वाले हज़रत मुहम्मद ﷺ हैं। जिसने मुहम्मद ﷺ की इताअ़त की, उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की (लिहाज़ा वह जन्नत में दाख़िल होगा और वहां की नेमतें हासिल करेगा) और जिसने मुहम्मद ﷺ की नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी की (लिहाज़ा वह जन्नत की नेमतों से महरूम रहेगा) मुहम्मद ﷺ ने लोगों की दो क़िस्में बना दीं, (मानने वाले

और न मानने वाले)। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हज़राते अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम की यह खुसूसियत है कि उनकी नींद आम इंसानों की नींद से मुख़्तलिफ़ होती है। आ़म इंसान नींद की हालत में बिल्कुल बेख़बर होते हैं, जबकि अम्बिया नींद की हालत में भी बिल्कुल बेख़बर नहीं होते। उनकी नींद का तअ़ल्लुक़ सिर्फ आंखों से होता है, दिल नींद की हालत में भी अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से जुड़ा रहता है। (बज़्लुल मजहूद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ : اِنَّمَا مَثَلِیْ وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِیَ اللهُ بِهٖ كَمَثَلِ رَجُلٍ اَتٰی قَوْمًا فَقَالَ: یَا قَوْمِیْ اِنِّیْ رَاَیْتُ الْجَیْشَ بِعَیْنَیَّ، وَاِنِّیْ اَنَا النَّذِیْرُ الْعُرْیَانُ، فَالنَّجَاءَ، فَاَطَاعَهٗ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهٖ فَاَدْلَجُوْا فَانْطَلَقُوْا عَلٰی مَهْلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَاَصْبَحُوْا مَكَانَهُمْ، فَصَبَّحَهُمُ الْجَیْشُ فَاَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ، فَذٰلِكَ مَثَلُ مَنْ اَطَاعَنِیْ فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهٖ، وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِیْ وَكَذَّبَ بِمَا جِئْتُ بِهٖ مِنَ الْحَقِّ.

رواه البخاری باب الإقتداء بسنن رسول الله ﷺ،رقم:۷۲۸۳

95\. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी और इस दीन की मिसाल जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे देकर भेजा है, उस शख़्स की-सी है जो अपनी क़ौम के पास आया और कहा मेरी क़ौम! मैंने अपनी आंखों से दुश्मन का लश्कर देखा है और मैं एक सच्चा डराने वाला हूं, लिहाज़ा नजात की फ़िक्र करो। इस पर उसकी क़ौम के कुछ लोगों ने तो उसका कहना माना और आहिस्ता-आहिस्ता रात में ही चल पड़े और दुश्मन से नजात पा ली। कुछ लोगों ने उसको झूठा समझा और सुबह तक अपने घरों में रहे। दुश्मन का लश्कर सुबह होते ही उन पर टूट पड़ा और उनको तबाह व बरबाद कर डाला। यही मिसाल उस शख़्स की है जिसने मेरी बात मान ली और मेरे लाए हुए दीन की पैरवी की (वह नजात पा गया) और यही मिसाल उस शख़्स की है जिसने मेरी बात न मानी और इस दीन को झुठला दिया, जिसको मैं लेकर आया हूं (वह हलाक हो गया)। (बुख़ारी)

फ़ायदा : चूंकि अरबों में सुबह सवेरे हमला करने का रिवाज था, इस वजह से दुश्मन के हमले से महफ़ूज़ रहने के लिए रातों रात सफ़र किया जाता था।

﴿ 96 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ

فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّىْ مَرَرْتُ بِاَخٍ لِّىْ مِنْ قُرَيْظَةَ فَكَتَبَ لِىْ جَوَامِعَ مِنَ التَّوْرَاةِ، أَلَا أَعْرِضُهَا عَلَيْكَ؟ قَالَ: فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ عَبْدُ اللهِ يَعْنِىْ ابْنَ ثَابِتٍ، فَقُلْتُ لَهُ: اَلَا تَرَى مَا بِوَجْهِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ عُمَرُ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ: رَضِيْنَا بِاللهِ تَعَالىٰ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلاً، قَالَ: فَسُرِّىَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ: وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ، لَوْ اَصْبَحَ فِيْكُمْ مُوْسىٰ ثُمَّ اتَّبَعْتُمُوْهُ وَتَرَكْتُمُوْنِىْ لَضَلَلْتُمْ، اِنَّكُمْ حَظِّىْ مِنَ الْاُمَمِ وَاَنَا حَظُّكُمْ مِنَ النَّبِيِّيْنَ. رواه احمد ٤/٢٦٥

96. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साबित ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरा अपने एक भाई के पास से गुज़र हुआ, जो कि क़बीला बनी क़ुरैज़ा में से है। उसने (मेरे फ़ायदे की ग़रज़ से) तौरात से कुछ जामेअ् बातें लिख कर दी हैं, इजाज़त हो तो आप के सामने पेश कर दूं? हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ के चेहरा मुबारक का रंग बदल गया। मैंने कहा : उमर! क्या आप रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरा मुबारक पर ग़ुस्से के आसार नहीं देख रहे? हज़रत उमर ﷺ को फ़ौरन अपनी ग़लती का एहसास हुआ और अ़र्ज़ किया "رَضِيْنَا بِاللهِ تَعَالىٰ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلاً" (हम अल्लाह तआ़ला को रब, इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानकर राज़ी हो चुके हैं।) ये कलिमे सुनकर आप ﷺ के चेहरे से ग़ुस्से का असर ज़ाइल हुआ और इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, अगर मूसा (अ़लैहिस्सलाम) तुम में मौजूद होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी इत्तबा करते, तो यक़ीनन गुमराह हो जाते। उम्मतों में से तुम मेरे हिस्से में आए हो और नबियों में से मैं तुम्हारे हिस्से में आया हूं (लिहाज़ा तुम्हारी कामयाबी मेरी ही इत्तबा में है)। (मुस्नद अहमद)

﴿ 97 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: كُلُّ اُمَّتِىْ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ اَبىٰ، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَمَنْ يَّاْبىٰ؟ قَالَ: مَنْ اَطَاعَنِىْ دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِىْ فَقَدْ اَبىٰ. رواه البخارى، باب الإقتداء بسنن رسول الله ﷺ، رقم: ٧٢٨٠

97. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी सारी उम्मत जन्नत में जाएगी सिवाए उन लोगों के जो इन्कार कर दें। सहाबा ﷺ ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! (जन्नत में जाने से) कौन इन्कार कर सकता है? आप ﷺ ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया : जिसने मेरी इताअ़त की वह जन्नत में

दाख़िल हुआ और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, यक़ीनन उसने जन्नत में जाने से इन्कार कर दिया। (बुख़ारी)

﴿ 98 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بِنْ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتّٰى يَكُوْنَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئْتُ بِهٖ.

رواه البغوی فی شرح السنة ١/٢١٣، قال النووی: حدیث صحیح، رویناه فی کتاب الحجة باسناد صحیح، جامع العلوم والحکم ص ٣٦٤

98. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी नफ़्सानी चाहतें इस दीन की ताबेअ़् न हो जाएं, जिसको मैं लेकर आया हूं। (शरहुस्सुन्नः)

﴿ 99 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بُنَيَّ اِنْ قَدَرْتَ اَنْ تُصْبِحَ وَتُمْسِيَ لَيْسَ فِيْ قَلْبِكَ غِشٌّ لِاَحَدٍ فَافْعَلْ، ثُمَّ قَالَ لِيْ: يَا بُنَيَّ وَذٰلِكَ مِنْ سُنَّتِيْ، وَمَنْ اَحْيَا سُنَّتِيْ فَقَدْ اَحَبَّنِيْ وَمَنْ اَحَبَّنِيْ كَانَ مَعِيْ فِي الْجَنَّةِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ما جاء فی الاخذ بالسنة ...، رقم: ٢٦٧٨

99. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इर्शाद फ़रमाया : मेरे बेटे! अगर तुम सुबह व शाम (हर वक़्त) अपने दिल की यह कैफ़ियत बना सकते हो कि तुम्हारे दिल में किसी के बारे में ज़रा-भी खोट न हो, तो ज़रूर ऐसा करो। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे बेटे! यह बात मेरी सुन्नत में से है और जिसने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की, वह मेरे साथ जन्नत में होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿100﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: جَاءَ ثَلَاثَةُ رَهْطٍ اِلٰى بُيُوْتِ اَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْأَلُوْنَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمَّا اُخْبِرُوا كَاَنَّهُمْ تَقَالُّوْهَا فَقَالُوا: وَاَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَدْ غَفَرَ اللهُ لَهُ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَاَخَّرَ، فَقَالَ اَحَدُهُمْ: اَمَّا اَنَا فَاَنَا اُصَلِّي اللَّيْلَ اَبَدًا، وَقَالَ آخَرُ: اَنَا اَصُوْمُ الدَّهْرَ وَلَا اُفْطِرُ، وَقَالَ آخَرُ: اَنَا اَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا اَتَزَوَّجُ اَبَدًا، فَجَاءَ اِلَيْهِمْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: اَنْتُمُ الَّذِيْنَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا؟ اَمَا وَاللهِ اِنِّيْ لَاَخْشَاكُمْ لِلّٰهِ وَاَتْقَاكُمْ لَهُ، لٰكِنِّيْ اَصُوْمُ وَاُفْطِرُ، وَاُصَلِّيْ وَاَرْقُدُ، وَاَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ، فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ.

رواه البخاری، باب الترغیب فی النکاح، رقم: ٥٠٦٣

100. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ की इबादत के बारे में पूछने के लिए तीन शख़्स अज़वाजे मुतह्हरात के पास आए। जब उन लोगों को रसूलुल्लाह ﷺ की इबादत का हाल बताया गया तो उन्होंने आपनी इबादत को थोड़ा समझा और कहा : हमारा रसूलुल्लाह ﷺ से क्या मुक़ाबला? अल्लाह तआ़ला ने आपकी अगली पिछली लग़ज़िशें (अगर हों भी, तो) माफ़ फ़रमा दी हैं। उनमें से एक ने कहा : मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ा करूंगा। दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोज़ा रखा करूंगा और कभी नाग़ा नहीं करूंगा। तीसरे ने कहा, मैं औरतों से दूर रहूंगा, कभी निकाह नहीं करूंगा (उनमें आपस में यह गुफ़्तगू हो रही थी कि) रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : क्या तुम लोगों ने ये बातें कही हैं? ग़ौर से सुनो, अल्लाह तआ़ला की क़सम! मैं तुम में सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला हूं और तुम में सबसे ज़्यादा तक़्वा अख़्तियार करने वाला हूं, लेकिन मैं रोज़ा रखता हूं और नहीं भी रखता; नमाज़ पढ़ता हूं और सोता भी हूं; और औरतों से निकाह भी करता हूं (यही मेरा तरीक़ा है, लिहाज़ा) जिसने मेरे तरीक़े से एराज़ किया वह मुझसे नहीं है। (बुख़ारी)

﴿101﴾ عَنْ اَبِی هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِیْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِیْ فَلَهٗ اَجْرُ شَهِيْدٍ.

رواه الطبرانی باسناد لا باس به،الترغيب ١/ ٨٠

101. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जिसने मेरे तरीक़े को मेरी उम्मत के बिगाड़ के वक़्त मज़बूती से थामे रखा उसे शहीद का सवाब मिलेगा। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿102﴾ عَنْ مَالِكِ بْنِ اَنَسٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهٗ بَلَغَهٗ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: تَرَكْتُ فِيْكُمْ اَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا كِتَابُ اللهِ وَسُنَّةُ نَبِيِّهٖ.

رواه الإمام مالك فی الموطاء النهی عن القول فی القدر ص ٧٠٢

102. हज़रत मालिक बिन अनस रह० फ़रमाते हैं कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हारे पास दो चीज़ें छोड़ी हैं, जब तक तुम उनको मज़बूती से पकड़े रहोगे, हरगिज़ गुमराह नहीं होगे। वह अल्लाह तआ़ला की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿103﴾ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَعَظَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَوْمًا بَعْدَ

صَلٰوةِ الْغَدَاةِ مَوْعِظَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُوْنُ وَوَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوْبُ، فَقَالَ رَجُلٌ: اِنَّ هٰذِهٖ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَبِمَاذَا تَعْهَدُ اِلَيْنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: اُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللهِ، وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَاِنْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ، فَاِنَّهٗ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ يَرَ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا، وَاِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْاُمُوْرِ، فَاِنَّهَا ضَلَالَةٌ فَمَنْ اَدْرَكَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، عَضُّوْا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ.

رواه الترمذی، وقال: هذاحديث حسن صحيح،باب ماجاء فی الاخذ بالسنة الجامع الترمذی ۵۲/۲ طبع فاروقی کتب خانه،ملتان

103. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद ऐसे असर दर्द भरे अन्दाज़ में नसीहत फ़रमाई कि आंखों से आंसू जारी हो गए और दिलों में ख़ौफ़ पैदा हो गया। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : यह तो रुख़्सत होने वाले की नसीहत मालूम होती है, फिर आप हमें किस चीज़ की वसीयत फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला से डरते रहने की और (अमीर की बात) सुनने और मानने की वसीयत करता हूं, अगरचे वह अमीर हब्शी गुलाम हो। तुम में जो मेरे बाद ज़िन्दा रहेगा वह बहुत इख़्तिलाफ़ात देखेगा। तुम दीन में नई-नई बातें पैदा करने से बचो, क्योंकि हर नई बात गुमराही है। लिहाज़ा तुम ऐसा ज़माना पाओ तो मेरी और हिदायतयाफ़्ता ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की सुन्नत को मज़बूती से थामे रखना। (तिर्मिज़ी)

﴿104﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ رَاٰى خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ فِيْ يَدِ رَجُلٍ، فَنَزَعَهٗ فَطَرَحَهٗ وَقَالَ: يَعْمِدُ اَحَدُكُمْ اِلٰى جَمْرَةٍ مِنْ نَارٍ فَيَجْعَلُهَا فِيْ يَدِهٖ فَقِيْلَ لِلرَّجُلِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خُذْ خَاتَمَكَ انْتَفِعْ بِهٖ،قَالَ: لَا، وَاللهِ! لَا آخُذُهٗ اَبَدًا، وَقَدْ طَرَحَهٗ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ.

رواه مسلم، باب تحريم خاتم الذهب ......،رقم: ۵٤۷۲

104. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो आपने उसे उतार कर फेंक दिया और फ़रमाया : (कितनी ताज्जुब की बात है कि) तुममें से कोई शख़्स आग के अंगारे को अपने हाथ में रखना चाहता है, यानी जो शख़्स अपने हाथों में सोने की कोई चीज़ पहनेगा, उसका हाथ दोज़ख़ में चला जाएगा। रसूलुल्लाह ﷺ के तशरीफ़ ले जाने के बाद उस शख़्स से कहा गया : अपनी अंगूठी ले लो (और) इस (को बेचकर या हदिया

करके इस) से फ़ायदा उठा लो! उसने जवाब दिया : अल्लाह की क़सम! नहीं, जिस चीज़ को रसूलुल्लाह ﷺ ने फेंक दिया हो, मैं उसको कभी नहीं उठाऊंगा। (मुस्लिम)

﴿105﴾ قَالَتْ زَيْنَبُ: دَخَلْتُ عَلٰى اُمِّ حَبِيْبَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِيْنَ تُوُفِّيَ اَبُوْهَا اَبُوْ سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ فَدَعَتْ اُمُّ حَبِيْبَةَ بِطِيْبٍ فِيْهِ صُفْرَةٌ خَلُوْقٌ اَوْغَيْرُهُ فَدَهَنَتْ مِنْهُ جَارِيَةً ثُمَّ مَسَّتْ بِعَارِضَيْهَا ثُمَّ قَالَتْ: وَاللهِ مَالِيْ بِالطِّيْبِ مِنْ حَاجَةٍ غَيْرَ اَنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَحِلُّ لِامْرَاَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ اَنْ تُحِدَّ عَلٰى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ اِلَّا عَلٰى زَوْجٍ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَعَشْرًا. رواه البخاري، باب تحد المتوفى عنها اربعة اشهر وعشرا، رقم:٥٣٣٤

105. हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ब्यान फ़रमाती हैं कि मैं नबी करीम ﷺ की अहलिया मुहतरमा हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास उस वक़्त गई जब उनके वालिद हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ؓ का इंतिक़ाल हुआ था। हज़रत उम्मे हबीबा ؓ ने ख़ुशबू मंगवाई, जिसमें ख़लूक़ या किसी और चीज़ की मिलावट की वजह से ज़र्दी थी, उसमें से कुछ ख़ुश्बू लौंडी को लगाई, फिर उसे अपने रुख़्सारों पर मल लिया, इसके बाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! मुझे ख़ुश्बू के इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत न थी। बात सिर्फ़ यह है कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है कि जो औरत अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो, उसके लिए जायज़ नहीं कि वह तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग मनाए, सिवाए शौहर के (कि उसका सोग) चार महीने दस दिन है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ख़लूक़ एक क़िस्म की मुरक्कब ख़ुश्बू का नाम है, जिसके अज्ज़ा में अक्सर हिस्सा ज़ाफ़रान का होता है।

﴿106﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا سَاَلَ النَّبِيَّ ﷺ: مَتَى السَّاعَةُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: مَا اَعْدَدْتَ لَهَا؟ قَالَ: مَا اَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيْرِ صَلٰوةٍ وَلَا صَوْمٍ وَلَا صَدَقَةٍ، وَلٰكِنِّيْ اُحِبُّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ، قَالَ: اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ.

رواه البخاري، باب علامة الحب في الله ......، رقم: ٦١٧١

106. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से पूछा, क़ियामत कब आएगी? आपने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के लिए तुमने क्या तैयार कर रखा है? उसने अर्ज़ किया : मैंने क़ियामत के लिए न तो ज़्यादा (नफ़्ली) नमाज़ें, न ज़्यादा (नफ़्ली) रोज़े तैयार किए हैं और न ज़्यादा सदक़ा। हां, एक बात है कि अल्लाह तआला और उनके रसूल से मुहब्बत रखता हूं। आप ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : तो फिर (क़ियामत में) तुम उन्हीं के साथ होगे जिनसे तुमने (दुनिया में) मुहब्बत रखी। (बुख़ारी)

﴿107﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِيْ، وَإِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَهْلِيْ وَمَالِيْ، وَ إِنَّكَ لَأَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ وَلَدِيْ، وَإِنِّيْ لَأَكُوْنُ فِي الْبَيْتِ فَأَذْكُرُكَ فَمَا أَصْبِرُ حَتَّى آتِيَ فَأَنْظُرَ إِلَيْكَ، وَإِذَا ذَكَرْتُ مَوْتِيْ وَمَوْتَكَ، عَرَفْتُ أَنَّكَ إِذَا دَخَلْتَ الْجَنَّةَ رُفِعْتَ مَعَ النَّبِيِّيْنَ، وَإِنِّيْ إِذَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ خَشِيْتُ أَنْ لَا أَرَاكَ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ شَيْئًا حَتَّى نَزَلَ جِبْرِيْلُ بِهٰذِهِ الْآيَةِ: ﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ج وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيْقًا﴾ رواه الطبراني في الصغير والاوسط ورجاله رجال الصحيح غير عبدالله بن عمران العابدى وهو ثقه، مجمع الزوائد ٧/٣

107. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक सहाबी रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं; अपनी बीवी से भी ज़्यादा महबूब हैं; और अपनी औलाद से भी ज़्यादा महबूब हैं। मैं अपने घर में होता हूं और आप का ख़्याल आ जाता है तो सब्र नहीं आता जब तक कि हाज़िर होकर ज़ियारत न कर लूं। मुझे यह ख़बर है कि इस दुनिया से तो आपको और मुझे रुख़्सत होना है। इसके बाद आप तो अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) के दर्जे पर चले जाएंगे और (मुझे अव्वल तो यह मालूम नहीं कि मैं जन्नत में पहुंचूंगा भी या नहीं)। अगर मैं जन्नत में पहुंच भी गया तो (चूंकि मेरा दर्जा आपसे बहुत नीचे होगा, इसलिए) मुझे अन्देशा है कि मैं वहां आप की ज़ियारत न कर सकूंगा, तो मुझे कैसे सब्र आएगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी बात सुनकर कुछ जवाब न दिया, यहां तक कि ये आयत नाज़िल हुई। तर्जुमा : और जो शख़्स अल्लाह व रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे अशख़ास भी उन हज़रात के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया है, यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सुलहा और ये हज़रात बहुत अच्छे रफ़ीक़ हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿108﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِيْ إِلَيَّ حُبًّا، نَاسٌ يَكُوْنُوْنَ بَعْدِيْ، يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ رَآنِيْ بِأَهْلِهِ وَمَالِهِ. رواه مسلم، باب فيمن يود رؤية النبي ﷺ .....رقم: ٧١٤٥

108. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: मेरी उम्मत में मुझसे ज़्यादा मुहब्बत रखने वाले लोगों में से वे (भी) हैं जो मेरे बाद

आएंगे, उनकी यह आरज़ू होगी कि काश! वह अपना घर बार और माल सब क़ुरबान करके किसी तरह मुझ को देख लेते। (मुस्लिम)

﴾109﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: فُضِّلْتُ عَلَى الْاَنْبِيَاءِ بِسِتٍّ: اُعْطِيْتُ جَوَامِعَ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَاُحِلَّتْ لِیَ الْمَغَانِمُ، وَجُعِلَتْ لِیَ الْاَرْضُ طَهُوْرًا وَمَسْجِدًا، وَاُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَافَّةً، وَخُتِمَ بِیَ النَّبِيُّوْنَ.

رواه مسلم، باب المساجد و مواضع الصلوة،رقم:١١٦٧

109. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे छः चीज़ों के ज़रिए दीगर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर फ़ज़ीलत दी गई है: 1. मुझे जामेअ् कलिमात अ़ता किए गए, 2. रोअ़्ब के ज़रिए मेरी मदद की गई (अल्लाह तआ़ला दुश्मनों के दिल में मेरा रौब और ख़ौफ़ पैदा फ़रमा देते हैं) 3. माले ग़नीमत मेरे लिए हलाल बना दिया गया (पिछली उम्मतों में माले ग़नीमत को आग आकर जला देती थी) 4. सारी ज़मीन को मेरे लिए मस्जिद यानी नमाज़ पढ़ने की जगह बना दी गई (पिछली उम्मतों में इबादत सिर्फ़ मख़सूस जगहों में अदा हो सकती थी) और सारी ज़मीन की (मिट्टी को) मेरे लिए पाक बना दिया गया (तयम्मुम के ज़रिए भी पाकी हासिल की जा सकती है) 5. सारी मख़्लूक़ के लिए मुझे नबी बना कर भेजा गया (मुझ से पहले अम्बिया को ख़ास तौर पर उनकी अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था) 6. नुबुव्वत और रिसालत का सिलसिला मुझ पर ख़त्म किया गया, यानी अब मेरे बाद कोई नबी और रसूल नहीं आएगा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अल्लाह के रसूल ﷺ का इर्शाद, *'मुझे जामेअ् कलिमे अ़ता किए गए हैं'* इसका मतलब यह है कि थोड़े-से लफ़्ज़ों पर मुश्तमिल छोटे जुम्लों में बहुत से मानी मौजूद होते हैं।

﴾110﴿ عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ. (الحديث) رواه الحاكم

وقال: هذاحديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢/٤١٨

110. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ से रिवायत है : फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बिलाशुब्हा मैं अल्लाह तआ़ला का बन्दा और आख़िरी नबी हूं। (मुस्तदरक अहमद)

﴿111﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : اِنَّ مَثَلِىْ وَمَثَلَ الْاَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِىْ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنٰى بَيْتًا فَاَحْسَنَهُ وَاَجْمَلَهُ اِلَّا مَوْضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوْفُوْنَ بِهٖ وَيَعْجَبُوْنَ لَهٗ وَيَقُوْلُوْنَ: هَلَّا وُضِعَتْ هٰذِهِ اللَّبِنَةُ؟ قَالَ: فَاَنَا اللَّبِنَةُ، وَاَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ.

رواه البخارى، باب خاتم النبيين، رقم: ٣٥٣٥

111. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरी और मुझसे पहले अम्बिया ﷺ की मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने घर बनाया हो और उसमें हर तरह का हुस्न और ख़ूबसूरती पैदा की हो लेकिन घर के किसी कोने में एक ईंट की जगह छोड़ दी हो। अब लोग मकान के चारों तरफ़ घूमते हैं, मकान की ख़ुशनुमाई को पसन्द करते हैं, लेकिन यह भी कहते जाते हैं कि यहां पर एक ईंट क्यों न रखी गई, तो मैं ही वह ईंट हूं और में आख़िरी नबी हूं। (बुख़ारी)

﴿112﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمًا، فَقَالَ: يَا غُلَامُ! اِنِّىْ اُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ: اِحْفَظِ اللهَ يَحْفَظْكَ، اِحْفَظِ اللهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ، اِذَا سَاَلْتَ فَاسْاَلِ اللهَ، وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللهِ، وَاعْلَمْ اَنَّ الْاُمَّةَ لَوِاجْتَمَعَتْ عَلٰى اَنْ يَّنْفَعُوْكَ بِشَىْءٍ لَمْ يَنْفَعُوْكَ اِلَّا بِشَىْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ لَكَ، وَاِنِ اجْتَمَعُوْا عَلٰى اَنْ يَضُرُّوْكَ بِشَىْءٍ لَمْ يَضُرُّوْكَ اِلَّا بِشَىْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللهُ عَلَيْكَ، رُفِعَتِ الْاَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ.

رواه الترمذى وقال:هذا حديث حسن صحيح،باب حديث حنظلة ......،رقم: ٢٥١٦

112. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन (सवारी पर) नबी करीम ﷺ के पीछे बैठा हुआ था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बच्चे! मैं तुम्हें चन्द (अहम) बातें सिखाता हूं। अल्लाह तआ़ला (के अहकाम) की हिफ़ाज़त करो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे। अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ का ख़्याल रखो, उनको अपने सामने पाओगे (उनकी मदद तुम्हारे साथ रहेगी); जब मांगो तो अल्लाह तआ़ला से मांगो, जब मदद लो तो अल्लाह तआ़ला से (ही) लो, और यह बात जान लो कि अगर सारी उम्मत जमा होकर तुम्हें कुछ नफ़ा पहुंचाना चाहे तो वह तुम्हें इतना ही नफ़ा पहुंचा सकती है जितना कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए (तक़दीर में) लिख दिया है, और अगर सब मिल कर नुक़सान पहुंचाना चाहे तो इतना ही नुक़सान पहुंचा सकते हैं जितना कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी (तक़दीर में) लिख दिया है। (तक़दीर के) क़लमों (से सब कुछ लिखवा कर उन) को उठा लिया गया है और (तक़दीर के)

कागज़ात की स्याही ख़ुश्क हो चुकी है। यानी तक़दीरी फ़ैसलों में ज़र्रा बराबर भी तब्दीली मुमकिन नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴾113﴿ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لِكُلِّ شَيْءٍ حَقِيْقَةٌ وَمَا بَلَغَ عَبْدٌ حَقِيْقَةَ الْاِيْمَانِ حَتّٰى يَعْلَمَ اَنَّ مَا اَصَابَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَهُ وَمَا اَخْطَأَهُ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَهُ.

رواه احمد والطبراني ورجاله ثقات، ورواه الطبراني في الاوسط، مجمع الزوائد٧/٤٠٤

113. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है। कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पहुंच सकता, जब तक कि उसका पुख़्ता यक़ीन यह न हो कि जो हालात उसको पेश आए हैं वह आने ही थे, और जो हालात उस पर नहीं आए वे आ ही नहीं सकते थे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : इंसान जिन हालात से भी दो चार हो इस बात का यक़ीन होना चाहिए कि जो कुछ भी पेश आया वह अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़द्दर था और मालूम नहीं कि इसमें मेरे लिए क्या चीज़ छुपी हुई हो। तक़दीर पर यक़ीन इंसान के ईमान की हिफ़ाज़त और वस्वसों से इत्मीनान का ज़रिया है।

﴾114﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَتَبَ اللّٰهُ مَقَادِيْرَ الْخَلَائِقِ قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِخَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ، قَالَ: وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ. رواه مسلم، باب حجاج آدم وموسى صلى الله عليهما وسلم، رقم: ٦٧٤٨

114. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान बनाने से पच्चास हज़ार साल पहले तमाम मख़्लूक़ात की तक़दीरें लिख दीं, उस वक़्त अल्लाह तआला का अर्श पानी पर था। (मुस्लिम)

﴾115﴿ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ فَرَغَ اِلٰى كُلِّ عَبْدٍ مِنْ خَلْقِهِ خَمْسٍ: مِنْ اَجَلِهِ وَعَمَلِهِ وَمَضْجَعِهِ وَاَثَرِهِ وَرِزْقِهِ. رواه احمد ٥/١٩٧

115. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला हर बन्दे की पांच बातें लिख कर फ़ारिग़ हो चुके हैं। उसकी मौत का वक़्त, उसका रिज़्क़, उसकी उम्र, बदबख़्त है या नेकबख़्त। (मुस्नद अहमद)

﴿116﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ الْمَرْءُ حَتّٰى يُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ. رواه احمد ٢/١٨١

116. हज़रत उम्रू बिन शुऐब अपने बाप दादा के हवाले से रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि हर अच्छी बुरी तक़दीर पर ईमान न रखे। (मुस्नद अहमद)

﴿117﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى يُؤْمِنَ بِأَرْبَعٍ: يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنِّي رَسُوْلُ اللّٰهِ بَعَثَنِي بِالْحَقِّ، وَيُؤْمِنُ بِالْمَوْتِ، وَيُؤْمِنُ بِالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَيُؤْمِنُ بِالْقَدْرِ. رواه الترمذي، باب ماجاء ان الإيمان بالقدر ......، رقم ٢١٤٥

117. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई बन्दा मोमिन नहीं हो सकता, जब तक चार चीज़ों पर ईमान न ले आए। 1. इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं और मैं (मुहम्मद ﷺ) अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं, उन्होंने मुझे हक़ देकर भेजा है, 2. मरने पर ईमाान लाए, 3. मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर ईमान लाए, 4. तक़दीर पर ईमान लाए। (तिर्मिज़ी)

﴿118﴾ عَنْ أَبِي حَفْصَةَ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: قَالَ عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ لِابْنِهِ: يَا بُنَيَّ! إِنَّكَ لَنْ تَجِدَ طَعْمَ حَقِيْقَةِ الْإِيْمَانِ حَتّٰى تَعْلَمَ أَنَّ مَا أَصَابَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَمَا أَخْطَأَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَكَ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ تَعَالٰى الْقَلَمَ فَقَالَ لَهُ: اُكْتُبْ، فَقَالَ: رَبِّ وَمَاذَا أَكْتُبُ؟ قَالَ: اُكْتُبْ مَقَادِيْرَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰى تَقُوْمَ السَّاعَةُ، يَا بُنَيَّ! إِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ مَاتَ عَلٰى غَيْرِ هٰذَا فَلَيْسَ مِنِّي.

رواه ابوداؤد باب في القدر، رقم: ٤٧٠٠

118. हज़रत अबू हफ़्सा रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत फ़रमाते हैं कि हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ ने अपने बेटे से कहा : मेरे बेटे! तुम को हक़ीक़ी ईमान की लज़्ज़त हरगिज़ हासिल नहीं हो सकती, जब तक कि तुम इसका यक़ीन न कर लो कि जो कुछ तुम्हें पेश आया है तुम इससे किसी तरह छूट नहीं सकते थे और जो तुम्हें पेश नहीं आया वह आ ही नहीं सकता था। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने सबसे पहले बनाई वह क़लम है, फिर

उसको हुक्म दिया : लिख। उसने अ़र्ज़ किया : परवरदिगार! क्या लिखूं? इर्शाद हुआ : क़ियामत तक जिस चीज़ के लिए जो कुछ मुक़द्दर हो चुका है वह सब लिख। हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ ने कहा : मेरे बेटे! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स इस यक़ीन के अलावा किसी दूसरे यक़ीन पर मरेगा उसका मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ :وَكَّلَ اللهُ بِالرَّحِمِ مَلَكًا فَيَقُوْلُ: اَىْ رَبِّ نُطْفَةٌ، اَىْ رَبِّ عَلَقَةٌ، اَىْ رَبِّ مُضْغَةٌ، فَاِذَا اَرَادَ اللهُ اَنْ يَّقْضِىَ خَلْقَهَا، قَالَ: اَىْ رَبِّ ذَكَرٌ اَمْ اُنْثٰى؟ اَشَقِىٌّ اَمْ سَعِيْدٌ؟ فَمَا الرِّزْقُ؟ فَمَا الْاَجَلُ؟ فَيُكْتَبُ كَذٰلِكَ فِى بَطْنِ اُمِّهٖ.

رواه البخاری، کتاب القدر،رقم:٦٥٩٥

119. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने बच्चादानी पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा रखा है। वह ाह अ़र्ज़ करता रहता है, ऐ मेरे रब! अब यह नुत्फ़ा है। ऐ मेरे रब! अब यह जमा हुआ खून है। ऐ मेरे रब! अब यह गोश्त का लोथड़ा है, (अल्लाह तआ़ला के सब कुछ ।ानने के बावजूद फ़रिश्ता अल्लाह तआ़ला को बच्चे की मुख़्तलिफ़ शक्लें बताता रहता है), फिर जब अल्लाह तआ़ला उसको पैदा करना चाहते हैं, तो फ़रिश्ता पूछता है, इसके मुतअ़ल्लिक़ क्या लिखूं? लड़का या लड़की? बदबख़्त या नेकबख़्त? रोज़ी ा होगी? उम्र कितनी होगी? चुनांचे सारी तफसीलात उसी वक़्त लिख ली जाती हैं जब वह मां के पेट में होता है। (बुख़ारी)

﴿120﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ عِظَمَ الْجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ الْبَلَاءِ، وَاِنَّ اللهَ اِذَا اَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ رَضِىَ فَلَهُ الرِّضَا وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ.

رواه الترمذی وقال:هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء فی الصبر علی البلاء،رقم: ٢٣٩٦

120. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ि तनी आज़माइश सख़्त होती है, उसका बदला भी उतना ही बड़ा मिलता है और अल्लाह ताआ़ला जब किसी क़ौम से मुहब्बत करते हैं तो उसको आज़माइश में डालते हैं फिर जो उस आज़माइश पर राज़ी रहा अल्लाह तआ़ला भी उससे राज़ी हो जाते हैं और जो नाराज़ हुआ अल्लाह तआ़ला भी उससे नाराज़ हो जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿121﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ ع

الطَّاعُوْنِ فَاَخْبَرَ نِیْ اَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلٰى مَنْ يَّشَاءُ، وَاَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ، لَيْسَ مِنْ اَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُوْنُ فَيَمْكُثُ فِی بَلَدِهٖ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ اَنَّهُ لَا يُصِيْبُهُ اِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ اِلَّا كَانَ لَهُ مِثْلُ اَجْرِ شَهِيْدٍ. رواه البخاري، كتاب احاديث الانبياء،رقم: ٣٤٧٤

121. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, जो कि रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतरमा हैं, फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ताऊन के बारे में पूछा। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह अल्लाह तआला का एक अ़ज़ाब है, जिस पर चाहें नाज़िल फ़रमाएं, (लेकिन) उसी को अल्लाह तआला ने मोमिनीन के लिए रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स के इलाक़े में ताऊन की वबा फैल जाए और वह अपने इलाक़े में सब्र के साथ सवाब की उम्मीद पर ठहरा रहे और इसका यक़ीन रखे कि वही होगा जो अल्लाह तआला ने मुक़द्दर कर दिया है, (फिर तक़दीरी तौर पर वबा में मुब्तला हो जाए और उसकी मौत वाक़ेअ़ हो जाए) तो उसे शहीद के बराबर सवाब मिलेगा।

फ़ायदा : हुक्म यह है कि ताऊन के इलाक़े से न भागा जाए इसी वजह से हदीस शरीफ़ में सवाब की उम्मीद पर ठहरने को कहा गया है। (बुख़ारी)

﴿122﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَاَنَا ابْنُ ثَمَانِ سِنِيْنَ خَدَمْتُهُ عَشْرَ سِنِيْنَ فَمَا لَامَنِیْ عَلٰى شَیْءٍ قَطُّ اُتِیَ فِيْهِ عَلٰى يَدَیَّ فَاِنْ لَامَنِیْ لَائِمٌ مِنْ اَهْلِهٖ قَالَ: دَعُوْهُ فَاِنَّهُ لَوْ قُضِیَ شَیْءٌ كَانَ. مصابيح السنة للبغوي وعده من الحسان ٤/٥٧

122. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने आठ साल की उम्र में नबी करीम ﷺ की ख़िदमत शुरू की और दस साल तक ख़िदमत की। (इस अ़र्सा में) जब कभी मेरे हाथ से कोई नुक़सान हुआ तो आप ने मुझे कभी इस बात पर मलामत नहीं फ़रमाई। अगर आप के घरवालों में से कभी किसी ने कुछ कहा भी तो आप ने फ़रमा दिया, रहने दो (कुछ न कहो) क्योंकि अगर किसी नुक़सान का होना मुक़द्दर होता है तो वह होकर रहता है। (मसाबीहुस्सुन्नः)

﴿123﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كُلُّ شَیْءٍ بِقَدَرٍ، حَتّٰى الْعَجْزُ وَالْكَيْسُ. رواه مسلم،باب كل شيء بقدر،رقم: ٦٧٥

123. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सब कुछ तक़दीर में लिखा जा चुका है, यहां तक कि (इंसान का) नासमझ और नाकारा होना, होशियार और क़ाबिल होना भी तक़दीर ही से है (मुस्लिम)

﴾124﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ الْقَوِىُّ خَيْرٌ وَاَحَبُّ اِلَى اللهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيْفِ، وَفِىْ كُلٍّ خَيْرٌ، اِحْرِصْ عَلٰى مَا يَنْفَعُكَ وَاسْتَعِنْ بِاللهِ، وَلَا تَعْجِزْ، وَاِنْ اَصَابَكَ شَيْءٌ فَلا تَقُلْ: لَوْ اَنِّىْ فَعَلْتُ كَانَ كَذَا وَكَذَا، وَلٰكِنْ قُلْ: قَدَرُ اللهِ، وَمَا شَاءَ فَعَلَ، فَاِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ. رواه مسلم، باب الإيمان بالقدر......، رقم: ٦٧٧٤

124. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताक़तवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर और अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा महबूब है और यूं हर मोमिन में भलाई है। (याद रखो) जो चीज़ तुम को नफ़ा दे उसकी हिर्स करो और उसमें अल्लाह तआ़ला की ज़ात से मदद तलब किया करो और हिम्मत न हारो और अगर तुम्हें कोई नुक़सान पहुंच जाए, तो यह न कहो, अगर मैं ऐसा कर लेता तो ऐसा और ऐसा हो जाता, अलबत्ता यह कहो कि अल्लाह तआ़ला की तक़दीर यूं ही थी और उन्होंने जो चाहा किया, क्योंकि "अगर" (का लफ़्ज़) शैतान के काम का दरवाज़ा खोल देता है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इंसान का यूं कहना *"अगर मैं ऐसा कर लेता तो ऐसा और ऐसा हो जाता"* उस वक़्त मना है जब कि उसका इस्तेमाल किसी ऐसे जुम्ले में हो जिसका मक़सद तक़दीर के साथ मुक़ाबला हो और अपनी तदबीर पर ही एतमाद हो और यह अ़क़ीदा हो कि तक़दीर कोई चीज़ नहीं क्योंकि इस सूरत में शैतान को तक़दीर पर यक़ीन हटाने का मौक़ा मिल जाता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾125﴿ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا وَاِنَّ الرُّوْحَ الْاَمِيْنَ نَفَثَ فِىْ رُوْعِى اَنَّهُ لَيْسَ مِنْ نَفْسٍ تَمُوْتُ حَتّٰى تَسْتَوْفِىَ رِزْقَهَا، فَاتَّقُوا اللهَ وَاَجْمِلُوْا فِي الطَّلَبِ وَلَايَحْمِلَنَّكُمْ اِسْتِبْطَاءُ الرِّزْقِ اَنْ تَطْلُبُوْا بِمَعَاصِى اللهِ فَاِنَّهُ لَا يُدْرَكُ مَا عِنْدَ اللهِ اِلَّا بِطَاعَتِهِ.

(وهو طرف من الحديث) شرح السنة للبغوي ٣٠٥/١٤، قال المحشي: رجاله ثقات وهو مرسل

125. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील ﷺ ने (अल्लाह तआ़ला के हुक्म से) मेरे दिल में यह बात डाली है कि जब तक कोई शख़्स अपना (मुक़द्दर का) रिज़्क़ पूरा नहीं कर लेता वह हरग़िज़ मर नहीं सकता, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और रिज़्क़ हासिल करने में साफ़ सुथरे तरीक़े अख़्तियार करो, ऐसा न हो कि रिज़्क़ की ताख़ीर तुमको रिज़्क़ की तलाश में

अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी पर आमादा कर दे, क्योंकि तुम्हारा रिज़्क़ अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में है और जो चीज़ उनके क़ब्ज़े में हो, वह सिर्फ़ उनकी फ़रमांबरदारी ही से हासिल की जा सकती है। (शरहुस्सुन्नः)

﴿126﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَضٰى بَيْنَ رَجُلَيْنِ فَقَالَ الْمَقْضِيُّ عَلَيْهِ لَمَّا اَدْبَرَ: حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِنَّ اللهَ تَعَالٰى يَلُوْمُ عَلَى الْعَجْزِ وَلٰكِنْ عَلَيْكَ بِالْكَيْسِ فَاِذَا غَلَبَكَ اَمْرٌ فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ.

رواه ابوداؤد، باب الرجل يحلف على حقه،رقم: ٣٦٢٧

126. हज़रत औ़फ़ बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दो शख़्सों के दर्मियान फ़ैसला किया। जिसके ख़िलाफ़ फ़ैसला हुआ था जब वह वापस जाने लगा तो उसने (अफ़सोस के साथ) حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل (अल्लाह तआ़ला ही मेरे लिए काफ़ी हैं और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं) कहा। यह सुनकर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला मुनासिब तदबीर न करने पर मलामत करते हैं, इसलिए हमेशा पहले अपने मामलात में समझदारी से काम लिया करो फिर उसके बाद भी अगर हालात नामुवाफ़िक़ हो जाएं तो حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل पढ़ो (और इससे अपनी दिली तसल्ली कर लिया करो कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात ही मेरे लिए काफ़ी है और वही इन हालात में भी मेरे काम बनाएंगे)। (अबूदाऊद)

मौत के बाद पेश आने वाले हालात पर ईमान

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ﴾ [الحج: ٢،١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : लोगो! अपने रब से डरो, यक़ीनन क़ियामत का ज़लज़ला बड़ा हौलनाक होगा। जिस दिन तुम इस ज़लज़ला को देखोगे तो यह हाल होगा कि तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने दूध पीते बच्चे को दहशत की वजह से भूल जाएंगी और तमाम हामिला औरतें अपना हमल गिरा देंगी और लोग नशे की-सी हालत में दिखाई देंगे, हालांकि वे नशे में नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह तआला का अ़ज़ाब है ही बहुत सख़्त (जिसकी वजह से वह मदहोश नज़र आएंगे)। (हज : 1-2)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ۗ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ ۢ بِبَنِيْهِ ۝ وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۝ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝ كَلَّا﴾ [المعارج: ١٠-١٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : उस दिन यानी क़ियामत के दिन कोई दोस्त

किसी दोस्त को नहीं पूछेगा बावजूद इसके कि एक दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, यानी एक दूसरे को देख रहे होंगे। उस रोज़ मुज्रिम इस बात की तमन्ना करेगा कि अज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों को, बीवी को, भाई को और ख़ानदान को जिन में वह रहता था और तमाम अह्ले ज़मीन को अपने फ़िद्‌या में दे दे और यह फ़िद्‌या देकर अपने आपको छुड़ा ले। यह हरगिज़ नहीं होगा। (मआरिज : 10-15)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ط اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ○ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ج وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ﴾ (ابراهيم: ٤٢، ٤٣)

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो कुछ ये ज़ालिम लोग कर रहे हैं उनसे अल्लाह तआला को (फ़ौरी पकड़ न करने की वजह से) बे-ख़बर हरगिज़ न समझो, क्योंकि उनको अल्लाह तआला ने सिर्फ़ उस दिन तक के लिए मोहलत दे रखी है जिस दिन हैबत से उनकी आँखें फटी की फटी रह जाएंगी और वे हिसाब की जगह की तरफ़ सर उठाए हुए दौड़े जा रहे होंगे और आंखों की ऐसी टकटकी बंधेगी कि आंख झपकेगी नहीं और उनके दिल बिल्कुल बदहवास होंगे। (इब्राहीम : 42-43)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ ج فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ﴾ [الاعراف: ٨، ٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और उस दिन आमाल का वज़न एक हक़ीक़त है। फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा, तो वही कामयाब होगा और जिनका ईमान व आमाल का पल्ला हल्का होगा तो यही लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान किया, इसलिए कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (आराफ़ : 8-9)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ج

وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ط اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۝ الَّذِىْ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ج لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ﴾ [فاطر:٣٣-٣٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (अच्छे अ़मल करने वालों के लिए) जन्नत में हमेशा रहने के बाग़ होंगे, जिसमें वे लोग दाख़िल होंगे और उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उनका लिबास रेशम का होगा और वे उन बाग़ों में दाख़िल होकर कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला का लाख-लाख शुक्र है जिसने हमेशा-हमेशा के लिए हर क़िस्म का रंज व ग़म दूर किया। बेशक हमारे रब बड़े बख़्शने वाले और बड़े क़द्रदां हैं जिन्होंने हमें हमेशा रहने के मक़ाम में दाख़िल किया जहां न हमको कोई तकलीफ़ पहुंचती है, न ही किसी क़िस्म की थकावट पहुंचती है। (फ़ातिर : 33-35)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ۝ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ يَلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ قف وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۝ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۝ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ج وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾ [الدخان:٥١-٥٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआ़ला से डरने वाले पुर अम्न मक़ाम में होंगे, यानी बाग़ों और नहरों में। वे लोग बारीक और मोटा रेशम पहने हुए एक दूसरे के आमने-सामने बैठे होंगे। ये सब बातें इसी तरह होंगी। और हम उनका निकाह, गोरी और बड़ी आंखों वाली हूरों से कर देंगे। वहां इत्मीनान से हर क़िस्म के मेवे मंगवा रहे होंगे। वहां सिवाए उस मौत के जो दुनिया में आ चुकी थी, दोबारा मौत का ज़ाइक़ा भी न चखेंगे और अल्लाह तआ़ला उन डरने वालों को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेंगे। ये सब कुछ उनको आप के रब के फ़ज़्ल से मिला। बड़ी कामयाबी यही है। (दुख़ान : 51-57)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ

مُسْتَطِيْرًا ○ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ○ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ○ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ○ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ○ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ○ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ○ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ○ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ○ قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ○ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ○ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ○ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ○ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ○ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَحُلُّوْآ اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ○ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا﴾ [الدهر: ٥-٢٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक नेक लोग ऐसे प्यालों में शराब पीएंगे जिस में काफ़ूर मिला हुआ होगा। वे एक चश्मा है जिससे अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे पिएंगे और इस चश्मे को, वह ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे बहा कर ले जाएंगे। ये वह लोग हैं जो ज़रूरी आ़माल को ख़ुलूस से पूरा करते हैं और वे ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती का असर कम व बेश हर किसी पर होगा और वह अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में, ग़रीब, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं और वे यूं कहते हैं कि हम तो तुम को महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी के लिए खाना खिलाते हैं। हम तुम से न किसी बदले के ख़्वाहिशमंद हैं और न 'शुक्रिया' के, और हम अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ करते हैं जो दिन निहायत तल्ख़ और निहायत सख़्त होगा। तो अल्लाह तआ़ला उनको इस इताअ़त और इख़्लास की बरकत से उस दिन की सख़्ती से बचा लेंगे और उनको ताज़गी और ख़ुशी अ़ता फ़रमाएंगे और उन लोगों को उनकी दीन में पुख़्तगी के बदले में जन्नत और रेशमी लिबास अ़ता फ़रमाएंगे। वे वहां इस हालत में होंगे कि जन्नत में तख़्त पर तकिये लगाए बैठे होंगे और जन्नत में न धूप की तपिश पाएंगे और न सख़्त सर्दी (बल्कि फ़रहतबख़्श मोतदिल मौसम होगा) और जन्नत के दरख़्तों के साए उन लोगों पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके अख़्तियार में कर दिए जाएंगे यानी

हर वक़्त बिला मशक़्क़त फल ले सकेंगे और उन पर चांदी के बरतन और शीशे के प्यालों का दौर चल रहा होगा और शीशे भी चांदी के होंगे यानी साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे, जिनको भरनेवालों ने मुनासिब अन्दाज़ से भरा होगा और उनको वहां ऐसी शराब भी पिलाई जाएगी, जिसमें ख़ुश्क अदरक की मिलावट होगी, जिसके चश्मे का नाम जन्नत में *सलसबील* मशहूर होगा और उनके पास ये चीज़ें लेकर ऐसे लड़के आना जाना करेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे और वह लड़के इस क़द्र हसीन होंगे कि तुम उनको बिखरे हुए मोती समझोगे और जब तुम वहां देखोगे तो बकसरत नेमतें और बड़ी-बड़ी सल्तनत देखोगे। और उन अह्ले जन्नत पर सब्ज़ रंग के बारीक और मोटे रेशम के लिबास होंगे और उनको चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। उन्हें उनके रब ख़ुद निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएंगे। अह्ले जन्नत से कहा जाएगा कि ये सब नेमतें तुम्हारे नेक आमाल का सिला हैं और तुम्हारी मेहनत व कोशिश मक़बूल हुई। (दह्र : 5-22)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ○ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ○ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ○ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ○ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ○ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ○ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ○ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ○ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ○ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ○ عُرُبًا اَتْرَابًا ○ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ○ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ○ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ﴾

[الواقعة:٢٧-٤٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और दाहिने हाथ वाले, क्या ही अच्छे हैं दाहिने वाले (मुराद वे लोग हैं जिनको आमालनामा दाएं हाथ में दिया जाएगा और उनके लिए जन्नत का फ़ैसला होगा)। वे लोग ऐसे बाग़ात में होंगे जिनमें बग़ैर कांटे की बैरियां होंगी और उस बाग़ के दरख़्तों में तह-ब-तह केले लगे होंगे, और उन बाग़ों में साए फैले होंगे और बहता हुआ पानी होगा और कसरत से मेवे होंगे, जिनकी न कभी फ़सल ख़त्म होगी और न उनके खाने में कोई रोक-टोक होगी और उन बाग़ों में ऊंचे-ऊंचे बिछौने होंगे। हमने वहां की औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है कि वे हमेशा कुंवारी रहेंगी, ख़ाविन्दों की महबूबा और अह्ले जन्नत की हम उम्र होंगी। ये सब नेमतें दाहिने वालों के लिए हैं और उनकी एक बड़ी जमाअत तो पहले लोगों में से होगी और एक बड़ी जमाअत पिछले लोगों में से होगी। (वाक़िअः 27-40)

फ़ायदा : पहले लोगों से मुराद पिछली उम्मतों के लोग और पिछले लोगों से मुराद इस उम्मत के लोग हैं। (ब्यानुल क़ुरआन)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَكُمْ فِيْهَا مَاتَشْتَهِىْ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ○ نُزُلاً مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ﴾ [حم السجدة:٣١،٣٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जन्नत में तुम्हारे लिए हर वह चीज़ मौजूद होगी जिसका तुम्हारा दिल चाहेगा और जो तुम वहां मांगोगे, मिलेगा। यह सब कुछ उस ज़ात की तरफ़ से मेहमानी के तौर पर होगा, जो बहुत बख़्शने वाले, निहायत मेहरबान हैं। (हामीम सज्दा : 31-32)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ○ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ○ هٰذَا فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ○ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ﴾ [ص:٥٥-٥٨]

अल्लाह ताआ़ला का इर्शाद है : और बेशक सरकशों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है, यानी दोज़ख़ जिसमें वे गिरेंगे। वह कैसी बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप (मौजूद) है, ये लोग उसको चखें और इसके अलावा और भी इस क़िस्म की मुख़्तलिफ़ नागवार चीज़ें हैं (उसको भी चखें)। (साद : 55-58)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ○ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِىْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ○ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِىْ مِنَ اللَّهَبِ ○ اِنَّهَا تَرْمِىْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ○ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ﴾ [المرسلات: ٢٩-٣٣]

अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ियों से फ़रमाएंगे, चलो उस अ़ज़ाब की तरफ़, जिसको तुम झुठलाते थे। तुम धुएं के ऐसे साए की तरफ़ चलो, जो बुलन्द हो कर फट कर तीन हिस्सों में हो जाएगा, जिसमें न साया है, न वह आग की तपिश से बचाता है। वह आग ऐसे अंगारे बरसाएगी जैसे बड़े महल, गोया वह काले ऊंट हों, यानी जब वे अंगारे ऊपर को उठेंगे तो महलनुमा मालूम होंगे और जब नीचे आ गिरेंगे, तो ऊंट के मिस्ल मालूम होंगे। (मुरसलात : 29-33)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ط ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ط يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ﴾ [الزمر:١٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : उन दोज़ख़ियों को आग ऊपर से भी घेरे में लिए हुए होगी और नीचे से भी घेरे हुए होगी। यही वह अ़ज़ाब है जिससे अल्लाह तआला अपने बन्दों को डराते हैं। ऐ मेरे बन्दो! मुझ से डरते रहो।

(ज़ुमर : 16)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۝ طَعَامُ الْاَثِيْمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ۝ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ۝ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ﴾

[الدخان:٤٣-٥٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक दोज़ख़ में बड़े गुनाहगारों के लिए ज़क़्क़ूम का दरख़्त ख़ुराक है और वह सूरत में काले तेल की तलछट की तरह होगा जो पेट में ऐसा जोश मारेगा जैसे खौलता हुआ गरम पानी और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इस मुज्रिम को पकड़ो और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों बीच धकेल दो और उसके सर पर तकलीफ़ देने वाला गरम पानी छोड़ दो (और तमस्सख़ुर करते हुए कहा जाएगा) ले चख ले। तू बड़ा बाइज़्ज़त व मुकर्रम है, यानी तू दुनिया में बड़ा इज़्ज़त वाला समझा जाता था, इसलिए मेरे हुक्मों पर चलने में शरम महसूस करता था, अब यह तेरी ताज़ीम हो रही है) और ये तमाम वही चीज़ हैं जिसमें तुम शक करके इन्कार कर देते थे।

(दुख़ान : 43-50)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مِنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ﴾

[ابراهيم:١٦،١٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (और सरकश शख़्स) अब उसके आगे दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पिलाया जाएगा जिसको (सख़्त प्यास की वजह से) घूंट-घूंट कर पिएगा (लेकिन सख़्त गर्म होने की वजह से) आसानी के साथ हलक़ से नीचे न उतार सकेगा और उसको हर तरफ़ से मौत आती मालूम होगी और वह किसी तरह मरेगा नहीं (बल्कि इसी तरह सिसकता रहेगा) और इस अ़ज़ाब के अलावा और भी सख़्त अ़ज़ाब होता रहेगा।

(इब्राहीम : 16-17)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿127﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَدْ شِبْتَ قَالَ: شَيَّبَتْنِيْ هُوْدٌ وَالْوَاقِعَةُ وَالْمُرْسَلَاتُ وَعَمَّ يَتَسَاءَ لُوْنَ وَاِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ومن سورة الواقعة، رقم:٣٢٩٧

127. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर बुढ़ापा आ गया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे सूरः हूद, सूरः वाक़िआः, सूरः मुरसलात, सूरः अ़म-म य-त-साअलून और सूरः इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : बूढ़ा इसलिए कर दिया कि इन सूरतों में क़ियामत और आख़िरत और मुज्रिमों पर अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का बड़ा हौलनाक ब्यान है।

﴿128﴾ عَنْ خَالِدِ بْنِ عُمَيْرٍ الْعَدَوِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَنَا عُتْبَةُ بْنُ غَزْوَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، فَحَمِدَاللهَ وَاَثْنٰى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: اَمَّا بَعْدُ، فَاِنَّ الدُّنْيَا قَدْ آذَنَتْ بِصُرْمٍ، وَ وَلَّتْ حَذَّاءَ، وَلَمْ يَبْقَ مِنْهَا اِلَّا صُبَابَةٌ كَصُبَابَةِ الْاِنَاءِ يَتَصَابُّهَا صَاحِبُهَا، وَاِنَّكُمْ مُنْتَقِلُوْنَ مِنْهَا اِلٰى دَارٍ لَازَوَالَ لَهَا، فَانْتَقِلُوا بِخَيْرِ مَا بِحَضْرَتِكُمْ ، فَاِنَّهُ قَدْ ذُكِرَ لَنَا اَنَّ الْحَجَرَ يُلْقٰى مِنْ شَفَةِ جَهَنَّمَ فَيَهْوِىْ فِيْهَا سَبْعِيْنَ عَامًا، لَا يُدْرِكُ لَهَا قَعْرًا ، وَوَاللهِ لَتُمْلَاَنَّ، اَفَعَجِبْتُمْ ؟ وَلَقَدْ ذُكِرَ لَنَا اَنَّ مَا بَيْنَ مِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيْعِ الْجَنَّةِ مَسِيْرَةُ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً، وَلَيَاْتِيَنَّ عَلَيْهَا يَوْمٌ وَهُوَ كَظِيْظٌ مِنَ الزِّحَامِ،وَلَقَدْ رَاَيْتُنِىْ سَابِعَ سَبْعَةٍ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، مَالَنَا طَعَامٌ اِلَّا وَرَقُ الشَّجَرِ، حَتّٰى قَرِحَتْ اَشْدَاقُنَا فَالْتَقَطْتُ بُرْدَةً فَشَقَقْتُهَا بَيْنِىْ وَ بَيْنَ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ، فَاتَّزَرْتُ بِنِصْفِهَا، وَاتَّزَرَ سَعْدٌ بِنِصْفِهَا، فَمَا اَصْبَحَ الْيَوْمَ مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَصْبَحَ اَمِيْرًا عَلٰى مِصْرٍ مِنَ الْاَمْصَارِ، وَاِنِّىْ اَعُوْذُ بِاللهِ اَنْ اَكُوْنَ فِىْ نَفْسِىْ عَظِيْمًا وَعِنْدَ اللهِ صَغِيْرًا، وَاِنَّهَا لَمْ تَكُنْ نُبُوَّةٌ قَطُّ اِلَّا تَنَاسَخَتْ،حَتّٰى تَكُوْنَ آخِرُعَاقِبَتِهَا مُلْكًا، فَسَتَخْبُرُوْنَ وَتُجَرِّبُوْنَ الْاُمَرَاءَ بَعْدَنَا.

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن و جنة للكافر،رقم:٧٤٣٥

128. हज़रत ख़ालिद बिन उमैर अ़दवी ﷺ रिवायत करते हैं कि हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान ﷺ ने हम लोगों से ब्यान किया। पहले उन्होंने अल्लाह तआ़ला की हम्द व

सना ब्यान की, फिर फ़रमाया : बिला शुब्हा दुनिया ने अपने ख़त्म होने का एलान कर दिया और पीठ फेरकर तेज़ी से जा रही हैं और दुनिया में से थोड़ा-सा हिस्सा बाक़ी रह गया है, जैसा कि बर्तन में पीने की चीज़ थोड़ी-सी रह जाती है और आदमी उसे चूस लेता है। तुम दुनिया से मुंतक़िल होकर ऐसे घर की तरफ़ जाओगे जो कभी ख़त्म नहीं होगा, इसलिए जो सबसे अच्छी चीज़ (नेक आमाल) तुम्हारे पास हैं उसे लेकर तुम इस घर की तरफ़ जाओ। हमें यह बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जाएगा जो सत्तर साल तक जहन्नम में गिरता रहेगा, लेकिन फिर भी गहराई तक नहीं पहुंच सकेगा। अल्लाह तआला की क़सम! यह जहन्नम भी एक दिन इंसानों से भर जाएगी, क्या तुम्हें इस बात पर हैरत है? और हमें यह भी बताया गया है कि जन्नत के दरवाज़े दो पाटों के दर्मियान चालीस साल का फ़ासला है, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा कि जन्नतियों के हुजूम की वजह से इतना चौड़ा दरवाज़ा भी भरा हुआ होगा। मैंने वह ज़माना भी देखा है कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सात आदमी थे, मैं भी उनमें शामिल था। हमें खाने को सिर्फ़ दरख़्त के पत्ते मिलते थे जिन्हें मुसलसल खाने की वजह से हमारे जबड़े भी ज़ख़्मी हो गए थे। मुझे एक चादर मिल गई तो मैंने उसके दो टुकड़े किए, आधे की मैंने लुंगी बना ली और आधे की साद बिन मालिक ने लुंगी बना ली। आज हम में से हर एक किसी न किसी शहर का गवर्नर बना हुआ है। मैं इस बात से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूं कि मैं अपनी निगाह में तो बड़ा बनूं और अल्लाह तआला की निगाह में छोटा रहूं। नुबुव्वत का तरीक़ा ख़त्म होता जा रहा है और इसकी जगह बादशाहत ने ले ली है। हमारे बाद तुम दूसरे गवर्नरों का तजुर्बा कर लोगे। (मुस्लिम)

﴿129﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ كُلَّمَا كَانَ لَيْلَتُهَا مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ يَخْرُجُ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ إِلَى الْبَقِيْعِ فَيَقُوْلُ: اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِيْنَ، وَأَتَاكُمْ مَاتُوْعَدُوْنَ غَدًامُؤَجَّلُوْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اغْفِرْ لِأَهْلِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ.

رواه مسلم، باب ما يقال عند دخول القبور ......، رقم: ٢٢٥٥

129. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि जब भी रसूलुल्लाह ﷺ की मेरे हां बारी होती और रात को तशरीफ़ लाते तो आप ﷺ रात के आख़िरी हिस्से में बक़ीअ् (कब्रिस्तान) तशरीफ़ ले जाते और इर्शाद फ़रमाते :

तर्जुमा : ऐ मुसलमान बस्ती वालो! अस्सलामु अलैकुम, तुम पर वह कल आ गई,

जिसमें तुम्हें मरने की ख़बर दी गई थी और इंशाअल्लाह हम भी तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! बक़ीअ् वालों की मग्फ़िरत फ़रमा दीजिए। (मुस्लिम)

﴿130﴾ عَنْ مُسْتَوْرِدِ بْنِ شَدَّادٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : وَ اللهِ مَا الدُّنْيَا فِيْ الْآخِرَةِ إِلَّا مِثْلُ مَا يَجْعَلُ اَحَدُكُمْ إِصْبَعَهُ هٰذِهٖ فِي الْيَمِّ، فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ بِمَ تَرْجِعُ؟

رواه مسلم، باب فناء الدنيا......، رقم: ٧١٩٧

130. हज़रत मुसतौरिद बिन शद्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की क़सम! दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है, जैसे तुम में से कोई शख़्स अपनी उंगली दरिया में डालकर निकाले, फिर देखे कि पानी की कितनी मिक़्दार उंगली पर लगी हुई है, यानी जिस तरह उंगली पर लगा हुआ पानी दरिया के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है, ऐसे ही दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी है। (मुस्लिम)

﴿131﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ، وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنّٰى عَلَى اللهِ.

رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن، باب حديث الكيس من دان نفسه......، رقم: ٢٤٥٩

131. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : समझदार आदमी वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करता रहे और मौत के बाद के लिए अ़मल करे और नासमझ आदमी वह है जो नफ़्स की ख़्वाहिशों पर चले और अल्लाह तआ़ला से उम्मीदें रखे (कि अल्लाह तआ़ला बड़े माफ़ फ़रमाने वाले हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴿132﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَاشِرَ عَشْرَةٍ فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ! مَنْ اَكْيَسُ النَّاسِ، وَاَحْزَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: اَكْثَرُهُمْ ذِكْرًا لِلْمَوْتِ، وَاَكْثَرُهُمْ اِسْتِعْدَادًا لِلْمَوْتِ قَبْلَ نُزُوْلِ الْمَوْتِ، اُولٰئِكَ هُمُ الْاَكْيَاسُ، ذَهَبُوْا بِشَرَفِ الدُّنْيَا وَكَرَامَةِ الْآخِرَةِ.

رواه ابن ماجه با ختصار، رواه الطبراني في الصغير واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٥٦

132. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैं दस आदमियों की एक जमाअ़त के साथ हाज़िर हुआ। अंसार में से एक साहिब ने खड़े होकर अ़र्ज़

किया : अल्लाह के नबी ﷺ! लोगों में सबसे ज़्यादा समझदार और मुहतात आदमी कौन है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सबसे ज़्यादा मौत को याद करने वाला हो और मौत के आने से पहले सबसे ज़्यादा मौत की तैयारी करने वाला हो (जो लोग ऐसा करें वही समझदार हैं)। यही लोग हैं जिन्होंने दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की इज़्ज़त हासिल कर ली। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿133﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ ﷺ خَطًّا مُرَبَّعًا، وَخَطَّ خَطًّا فِي الْوَسَطِ خَارِجًا مِنْهُ، وَخَطَّ خُطَطًا صِغَارًا اِلٰى هٰذَا الَّذِيْ فِي الْوَسَطِ مِنْ جَانِبِهِ الَّذِيْ فِي الْوَسَطِ، فَقَالَ: هٰذَا الْاِنْسَانُ، وَهٰذَا اَجَلُهُ مُحِيْطٌ بِهٖ. اَوْ قَدْ اَحَاطَ بِهٖ. وَهٰذَا الَّذِيْ هُوَ خَارِجٌ اَمَلُهُ، وَهٰذِهِ الْخُطَطُ الصِّغَارُ الْاَعْرَاضُ، فَاِنْ اَخْطَاَهُ هٰذَا نَهَشَهُ هٰذَا، وَاِنْ اَخْطَاَهُ هٰذَا نَهَشَهُ هٰذَا.

رواه البخاري، باب في الامل وطوله، رقم: ٦٤١٧

133. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने मुरब्बअ़ (चार लकीरों वाली) शक्ल बनाई। फिर इस मुरब्बअ़ शक्ल में एक दूसरी लकीर खींची, जो इस मुरब्बअ़ से बाहर निकल गई। फिर उस मुरब्बअ़ शक्ल के अन्दर छोटी-छोटी लकीरें बनाईं जिसकी सूरत उलमा ने मुख़्तलिफ़ लिखी हैं जिनमें से एक यह है।
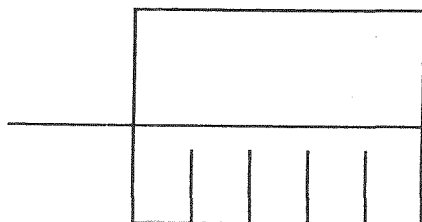
इसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दर्मियानी लकीर तो आदमी है और जो (मुरब्बअ़ यानी चतुर्भुज वाली लकीर है) उसको चारों तरफ़ से घेर रही है वह उसकी मौत है कि आदमी उससे निकल ही नहीं सकता, जो लकीर बाहर निकल रही है वे उसकी उम्मीदें हैं कि वे उसकी ज़िन्दगी से भी आगे हैं और ये छोटी-छोटी लकीरें उसकी बीमारियां और हादसे हैं। हर छोटी लकीर एक आफ़त है अगर एक से बच जाए तो दूसरी पकड़ लेती है और अगर उससे जान छूट जाए तो कोई दूसरी आफ़त आ पकड़ती है।

(बुख़ारी)

﴾134﴿ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : اثْنَتَانِ يَكْرَهُهُمَا ابْنُ آدَمَ الْمَوْتُ، وَالْمَوْتُ خَيْرٌ مِنَ الْفِتْنَةِ وَيَكْرَهُ قِلَّةَ الْمَالِ، وَقِلَّةُ الْمَالِ اَقَلُّ لِلْحِسَابِ.

رواه احمد با سنادين ورجال احدهما رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٤٥٣

134. हज़रत महमूद बिन लबीद ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि दो चीज़ें ऐसी हैं जिनको आदमी पसन्द नहीं करता। (पहली चीज़) मौत है, हालांकि मौत उसके लिए फ़ित्ना से बेहतर है यानी मरने की वजह से आदमी दीन को नुक़सान पहुंचाने वाले फ़ित्नों से महफ़ूज़ हो जाता है और (दूसरी चीज़) माल का कम होना है, जिसको आदमी पसन्द नहीं करता, हालांकि माल की कमी आख़िरत के हिसाब को बहुत कम करने वाली है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾135﴿ عَنْ اَبِيْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ يَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ وَآمَنَ بِالْبَعْثِ وَالْحِسَابِ دَخَلَ الْجَنَّةَ.

ذكر الحافظ ابن كثير هذا الحديث بطوله في البداية والنهاية ٥/٣٠٤

135. हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि वह इस बात की गवाही देता हो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, (और इस हाल में मिले कि) मरने के बाद दोबारा उठाए जाने और हिसाब व किताब के होने पर ईमान लाया हो वह जन्नत में दाख़िल होगा। (अलबिदायः वन्निहायः)

﴾136﴿ عَنْ اُمِّ الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ لِاَبِي الدَّرْدَاءِ: اَلَا تَبْتَغِيْ لِاَضْيَافِكَ مَا يَبْتَغِي الرِّجَالُ لِاَضْيَافِهِمْ فَقَالَ: اِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: اِنَّ اَمَامَكُمْ عَقَبَةً كَؤُوْدًا لَا يُجَاوِزُهَا الْمُثْقِلُوْنَ فَاُحِبُّ اَنْ اَتَخَفَّفَ لِتِلْكَ الْعَقَبَةِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٧/٣٠٩

136. हज़रत उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने अबुद्दर्दा से अ़र्ज़ किया कि आप और लोगों की तरह अपने मेहमानों की मेहमाननवाज़ी करने के लिए माल क्यों नहीं कमाते? उन्होंने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि तुम्हारे सामने एक मुश्किल घाटी है उसपर ज़्यादा बोझ वाले आसानी से न गुज़र सकेंगे, इसलिए मैं चाहता हूं कि उस घाटी से गुज़रने के लिए हल्का-फुल्का रहूं। (बैहक़ी)

﴾137﴿ عَنْ هَانِئٍ مَوْلٰى عُثْمَانَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ قَالَ: كَانَ عُثْمَانُ اِذَا وَقَفَ عَلٰى قَبْرٍ بَكٰى حَتّٰى يَبُلَّ لِحْيَتَهُ، فَقِيْلَ لَهُ تُذْكَرُ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَلا تَبْكِيْ وَتَبْكِيْ مِنْ هٰذَا؟ فَقَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْقَبْرَ اَوَّلُ مَنْزِلٍ مِنْ مَنَازِلِ الْآخِرَةِ فَاِنْ نَجَا مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ اَيْسَرُ مِنْهُ، وَاِنْ لَمْ يَنْجُ مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ اَشَدُّ مِنْهُ قَالَ: وَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَارَاَيْتُ مَنْظَرًا قَطُّ اِلَّا وَالْقَبْرُ اَفْظَعُ مِنْهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في فظاعة القبر......، رقم: ٢٣٠٨

37. हज़रत उस्मान ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत हानी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान ﷺ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो बहुत रोते, यहां तक कि आसुंओं से अपनी दाढ़ी को तर कर देते। उनसे अ़र्ज़ किया गया (यह क्या बात है) कि आप जन्नत व दोज़ख़ के तज़्किरे पर नहीं रोते और क़ब्र को देखकर इस क़दर रोते हैं? आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है : क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, अगर बन्दा इससे नजात पा गया तो आगे की मंज़िलें इससे ज़्यादा आसान हैं, और अगर इस मंज़िल से नजात न पा सका तो बाद की मंज़िलें उससे ज़्यादा सख़्त हैं, (नीज़) रसूलुल्लाह ﷺ ने यह इर्शाद फ़रमाया : मैंने कोई मंज़र क़ब्र के मंज़र से ज़्यादा ख़ौफ़नाक नहीं देखा। (तिर्मिज़ी)

﴾138﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ وَقَفَ عَلَيْهِ فَقَالَ: اِسْتَغْفِرُوْا لِاَخِيْكُمْ وَاسْاَلُوا لَهُ بِالتَّثْبِيْتِ فَاِنَّهُ الْآنَ يُسْاَلُ.

رواه ابو داؤد، باب الاستغفار عند القبر......، رقم: ٣٢٢١

138. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब मैयित के दफ़न से फ़ारिग़ हो जाते, तो क़ब्र के पास खड़े होते और इर्शाद फ़रमाते कि अपने भाई के लिए अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करो, और यह मांगो कि अल्लाह तआ़ला उसको (सवालों के जवाब देने में) साबित क़दम रखें, क्योंकि इस वक़्त उससे पूछ-गछ हो रही है। (अबूदाऊद)

﴾139﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مُصَلَّاهُ فَرَآى نَاسًا كَاَنَّهُمْ يَكْتَشِرُوْنَ قَالَ: اَمَا اِنَّكُمْ لَوْ اَكْثَرْتُمْ ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ لَشَغَلَكُمْ عَمَّا اَرَى الْمَوْتِ فَاَكْثِرُوا مِنْ ذِكْرِ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ، فَاِنَّهُ لَمْ يَاْتِ عَلَى الْقَبْرِ يَوْمٌ اِلَّا تَكَلَّمَ فَيَقُوْلُ: اَنَا بَيْتُ الْغُرْبَةِ، وَاَنَا بَيْتُ الْوَحْدَةِ وَاَنَا بَيْتُ التُّرَابِ وَاَنَا بَيْتُ الدُّوْدِ، فَاِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ

قَالَ لَهُ الْقَبْرُ: مَرْحَبًا وَاَهْلاً، اَمَّا اَنْ كُنْتَ لَاَحَبَّ مَنْ يَمْشِيْ عَلٰى ظَهْرِىْ اِلَىَّ فَاِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَصِرْتَ اِلَىَّ فَسَتَرٰى صَنِيْعِىْ بِكَ،قَالَ: فَيَتَّسِعُ لَهُ مَدَّ بَصَرِهٖ وَيُفْتَحُ لَهُ بَابٌ اِلَى الْجَنَّةِ، وَاِذَا دُفِنَ الْعَبْدُ الْفَاجِرُ اَوِ الْكَافِرُ قَالَ لَهُ الْقَبْرُ لَا مَرْحَبًا وَلَا اَهْلاً اَمَّا اَنْ كُنْتَ لَاَبْغَضَ مَنْ يَمْشِيْ عَلٰى ظَهْرِىْ اِلَىَّ فَاِذْ وُلِّيْتُكَ الْيَوْمَ وَ صِرْتَ اِلَىَّ فَسَتَرٰى صَنِيْعِىْ بِكَ، قَالَ: فَيَلْتَئِمُ عَلَيْهِ حَتّٰى يَلْتَقِىَ عَلَيْهِ وَتَخْتَلِفَ اَضْلَاعُهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِاَصَابِعِهٖ فَاَدْخَلَ بَعْضَهَا فِىْ جَوْفِ بَعْضٍ قَالَ: وَيُقَيِّضُ اللّٰهُ لَهُ سَبْعِيْنَ تِنِّيْنًا لَوْ اَنَّ وَاحِدًا مِنْهَا نَفَخَ فِى الْاَرْضِ مَا اَنْبَتَتْ شَيْئًا مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا، فَيَنْهَسْنَهُ وَيَخْدِشْنَهُ حَتّٰى يُفْضٰى بِهٖ اِلَى الْحِسَابِ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ ،اَوْ حُفْرَةٌ مِنْ حُفَرِ النَّارِ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب حديث اكثروا ذكر هاذم اللذات،رقم: ٢٤٦٠

139. हज़रत अबू सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने देखा कि बाज़ लोगों के दांत हंसी की वजह से खिल रहे थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम लज़्ज़तों के तोड़ने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, तो तुम्हारी यह हालत न हो जो मैं देख रहा हूं, लिहाज़ा लज़्ज़तें ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह यह आवाज़ न देती हो कि मैं परदेस का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं, मैं कीड़ों का घर हूं। जब मोमिन बन्दा दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उससे कहती है, तुम्हारा आना मुबारक है, बहुत अच्छा किया जो तुम आ गए। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे मुझे तुम उन सब में ज़्यादा पसन्द थे। आज जब तुम मेरे सुपुर्द किए गए हो और मेरे पास आए हो तो मेरे बेहतरीन सुलूक को भी देखोगे। इसके बाद क़ब्र जहां तक मुर्दे की नज़र पहुंच सके वहां तक कुशादा हो जाती है और इसके लिए एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ़ खोल दिया जाता है और जब कोई गुनहगार या काफ़िर क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है तेरा आना नामुबारक है, बहुत बुरा किया जो तू आया। जितने लोग मेरी पीठ पर चलते थे उन सब में तुझ ही से मुझे ज़्यादा नफ़रत थी। आज जब तू मेरे हवाले हुआ और मेरे पास आया है तो मेरे बुरे सुलूक को भी देख लेगा। इसके बाद क़ब्र उसे इस तरह दबाती है कि पसलियां आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ में डालकर बताया कि इस तरह एक जानिब की पसलियां दूसरी जानिब में घुस जाती हैं और अल्लाह तआ़ला उस पर सत्तर अज़दहे ऐसे मुसल्लत कर देते हैं कि अगर ए

भी उनमें से ज़मीन पर फुंकार मारे तो उसके (ज़हरीले) असर से क़ियामत तक ज़मीन पर घास उगना बन्द हो जाए, वह उसको क़ियामत तक काटते और डसते रहेंगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ब्र जन्नत का एक बाग़ है या जहन्नम का एक गढ़ा है। (तिर्मिज़ी)

﴿140﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ جَنَازَةِ رَجُلٍ مِنَ الْاَنْصَارِ فَانْتَهَيْنَا اِلَى الْقَبْرِ وَلَمَّا يُلْحَدْ فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَجَلَسْنَا حَوْلَهُ كَاَنَّمَا عَلٰى رُؤُوْسِنَا الطَّيْرُ وَفِيْ يَدِهٖ عُوْدٌ يَنْكُتُ بِهٖ فِي الْاَرْضِ، فَرَفَعَ رَاْسَهُ فَقَالَ: اِسْتَعِيْذُوْا بِاللهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مَرَّتَيْنِ اَوْثَلَاثًا قَالَ: وَيَاْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَنْ رَبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ: رَبِّيَ اللهُ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَادِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ: دِيْنِيَ الْاِسْلَامُ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَاهٰذَا الرَّجُلُ الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ قَالَ فَيَقُوْلُ: هُوَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَيَقُوْلَانِ: وَمَا يُدْرِيْكَ؟ فَيَقُوْلُ: قَرَاْتُ كِتَابَ اللهِ فَآمَنْتُ بِهٖ وَصَدَّقْتُ قَالَ: فَيُنَادِيْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ قَدْصَدَقَ عَبْدِيْ فَافْرِشُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَاَلْبِسُوْهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوْا لَهُ بَابًا اِلَى الْجَنَّةِ قَالَ: فَيَاْتِيْهِ مِنْ رَوْحِهَا وَطِيْبِهَا قَالَ وَيُفْتَحُ لَهُ فِيْهَا مَدَّ بَصَرِهٖ قَالَ: وَاِنَّ الْكَافِرَ، فَذَكَرَ مَوْتَهُ قَالَ: وَتُعَادُ رُوْحُهُ فِيْ جَسَدِهٖ وَيَاْتِيْهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَنْ رَبُّكَ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَادِيْنُكَ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيَقُوْلَانِ لَهُ: مَا هٰذَا الرَّجُلُ الَّذِيْ بُعِثَ فِيْكُمْ؟ فَيَقُوْلُ: هَاهْ هَاهْ لَا اَدْرِيْ، فَيُنَادِيْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ كَذَبَ فَافْرِشُوْهُ مِنَ النَّارِ وَاَلْبِسُوْهُ مِنَ النَّارِ وَافْتَحُوْا لَهُ بَابًا اِلَى النَّارِ قَالَ: فَيَاْتِيْهِ مِنْ حَرِّهَا وَسَمُوْمِهَا قَالَ: وَيُضَيَّقُ عَلَيْهِ قَبْرُهُ حَتّٰى تَخْتَلِفَ فِيْهِ اَضْلَاعُهُ.

رواه ابو داؤد، باب المسألة في القبر...، رقم: ٤٧٥٣

140. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ से रिवायत है कि हम लोग नबी करीम ﷺ के साथ एक अंसारी सहाबी के जनाज़े में (क़ब्रिस्तान) गए। जब हम क़ब्र के पास पहुंचे जो कि अभी खोदी नहीं गई थी, नबी करीम ﷺ (वहां क़ब्र की तैयारी के इंतिज़ार में) तशरीफ़ फ़रमा हुए और आप के इर्द-गिर्द हम भी इस तरह मुतवज्जह होकर बैठ गए गोया कि हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हों। आप के हाथ में लकड़ी थी जिससे ज़मीन को कुरेद रहे थे (जो किसी गहरी सोच के वक़्त होता है) फिर आप ﷺ ने अपना सर मुबारक उठाया और दो या तीन मर्तबा फ़रमाया : "अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगो" फिर इर्शाद फ़रमाया : (अल्लाह का मोमिन बन्दा इस दुनिया से मुंतक़िल होकर आ़लमे बरज़ख़ में पहुंचता है, यानी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है,

तो) उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बैठाते हैं, फिर उससे पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है? वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। फिर पूछते हैं, तुम्हारा दीन क्या है? वह कहता है मेरा दीन इस्लाम है। फिर पूछते हैं कि यह आदमी जो तुम में (नबी बनाकर) भेजे गए थे, यानी हज़रत मुहम्मद ﷺ उनके बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है? वह कहता है वह अल्लाह तआला के रसूल हैं। फ़रिश्ते कहते हैं कि तुम्हें यह बात किसने बताई यानी तुम्हें उनके रसूल होने का इल्म किस ज़रिए से हुआ? वह कहता है कि मैंने अल्लाह तआला की किताब पढ़ी, उस पर ईमान लाया, और उसको सच माना, उसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (मोमिन बन्दा फ़रिश्तों के मज़्कूरा बाला सवालों के जवाब जब इस तरह ठीक-ठीक दे देता है तो एक मुनादी आसमान से निदा देता है, यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से आसमान से एलान कराया जाता है कि मेरे बन्दे ने सच कहा, लिहाज़ा उसके लिए जन्नत का बिस्तर बिछा दो, उसे जन्नत का लिबास पहना दो, और उसके लिए जन्नत में एक दरवाज़ा खोल दो, चुनांचे वह दरवाज़ा खोल दिया जाता है) और उससे जन्नत की खुशगवार हवाएं और ख़ुशबुएं आती रहती हैं, और क़ब्र उसके लिए हद्दे निगाह तक खोल दी जाती है (यह हाल तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मरने वाले मोमिन का ब्यान फ़रमाया) इसके बाद आपने काफ़िर की मौत का ज़िक्र किया और इर्शाद फ़रमाया : मरने के बाद उसकी रूह उसके जिस्म में लौटाई जाती है और उसके पास (भी) दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बिठाते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। फिर फ़रिश्ते उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या था? वह कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। फिर फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि यह आदमी जो तुम्हारे अन्दर (नबी की हैसियत से) भेजा गया था, तुम्हारा उसके बारे में क्या ख़्याल था? वह फिर भी यही कहता है : हाय अफ़सोस! मैं कुछ नहीं जानता। (इस सवाल व जवाब के बाद) आसमान से एक पुकारने वाला अल्लाह तआला की तरफ़ से पुकारता है, उसने झूठ कहा। फिर (अल्लाह तआला की तरफ़ से) एक मुनादी आवाज़ लगाता है कि उसके लिए आग का बिस्तर बिछा दो और उसे आग का लिबास पहना दो और उसके लिए दोज़ख़ का एक दरवाज़ा खोल दो (चुनांचे यह सब कुछ कर दिया जाता है)। रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं : (दोज़ख़ के उस दरवाज़े से) दोज़ख़ की गर्मी और जलाने-झुलसाने वाली हवाएं उसके पास आती रहती हैं और क़ब्र उस पर इतनी तंग कर दी जाती है कि जिसकी वजह से उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : फ़रिश्तों का काफ़िरों को यूं कहना कि उसने झूठ कहा, इसका मतलब यह है कि काफ़िर का फ़रिश्तों के सवाल के जवाब में अपने अनजान होने को ज़ाहिर करना झूठ है, क्योंकि हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की तौहीद, उसके रसूल और दीने इस्लाम का मुन्किर था।

﴿141﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا وُضِعَ فِيْ قَبْرِهٖ وَتَوَلّٰى عَنْهُ اَصْحَابُهُ، وَاِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ، اَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهٖ فَيَقُوْلَانِ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُلِ لِمُحَمَّدٍ ﷺ؟ فَاَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُوْلُ: اَشْهَدُ اَنَّهٗ عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ، فَيُقَالُ لَهٗ: اُنْظُرْ اِلٰى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ قَدْ اَبْدَلَكَ اللّٰهُ بِهٖ مَقْعَدًا مِنَ الْجَنَّةِ، فَيَرَاهُمَا جَمِيْعًا وَاَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهٗ: مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُلِ؟ فَيَقُوْلُ: لَا اَدْرِيْ، كُنْتُ اَقُوْلُ مَا يَقُوْلُهُ النَّاسُ، فَيُقَالُ: لَا دَرَيْتَ وَلَا تَلَيْتَ، وَيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيْدٍ ضَرْبَةً فَيَصِيْحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيْهِ غَيْرَ الثَّقَلَيْنِ.

رواه البخاري، باب ماجاء في عذاب القبر، رقم: ١٣٧٤

141. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब अपनी क़ब्र में रख दिया जाता है, और उसके साथी यानी उसके जनाज़े के साथ आने वाले वापस चल देते हैं और (अभी वह इतने क़रीब होते हैं कि) उनकी जूतियों की आवाज़ वह सुन रहा होता है, इतने में उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, वे उसको बिठाते हैं। फिर उससे पूछते हैं : तुम उस शख़्स, यानी मुहम्मद ﷺ के बारे में क्या कहते थे? जो मोमिन होता है, वह कहता है कि मैं गवाही देता हूं कि वह अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। (यह जवाब सुनकर) उससे कहा जाता है कि (ईमान न लाने की वजह से) दोज़ख़ में जो तुम्हारी जगह होती उसको देख लो, अब अल्लाह तआला ने उसके बदले तुम्हें जन्नत में जगह दी है (दोज़ख़ और जन्नत के दोनों मक़ाम उसके सामने कर दिए जाते हैं।) चुनांचे वह दोनों को एक साथ देखता है और जो मुनाफ़िक़ और काफ़िर होता है तो उसी तरह (मरने के बाद) उससे भी (रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में) पूछा जाता है कि उस शख़्स के बारे में तुम क्या कहते थे? वह मुनाफ़िक़ और काफ़िर कहता है कि मैं उनके बारे में ख़ुद तो कुछ जानता नहीं, दूसरे लोग जो कहा करते थे वही मैं भी कहता था (उसके इस जवाब पर) उसको कहा जाता है कि तूने न तो ख़ुद जाना और न ही (जानने वालों की) पैरवी की। (फिर सज़ा के तौर पर) लोहे के हथौड़ों से उसको मारा जाता है,

जिससे वह इस तरह चीख़ता है कि इंसान व जिन्नात के अलावा उसके आस पास की हर चीज़ उसका चीख़ना सुनती है। (बुख़ारी)

﴿142﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى لَا يُقَالَ فِي الْاَرْضِ: اَللّٰهُ اللّٰهُ وَفِيْ رِوَايَةٍ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ عَلٰى اَحَدٍ يَقُوْلُ: اللّٰهُ، اللّٰهُ

رواه مسلم،باب ذهاب الإيمان آخر الزمان،رقم:٣٧٥،٣٧٦

142. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आएगी, जब तक कि (ऐसा बुरा वक़्त न आ जाए कि) दुनिया में अल्लाह-अल्लाह बिल्कुल न कहा जाए। एक और हदीस में इस तरह है कि किसी ऐसे शख़्स के होते हुए क़ियामत क़ायम नहीं होगी जो अल्लाह-अल्लाह कहता हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि क़ियामत उस वक़्त आएगी, जबकि दुनिया अल्लाह तआला की याद से बिल्कुल ही ख़ाली हो जाएगी।

इस हदीस का यह मतलब भी ब्यान किया गया है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि दुनिया में ऐसा शख़्स मौजूद हो जो यह कहता हो, लोगो! अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह तआला की बन्दगी करो। (मिरकात)

﴿143﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ اِلَّا عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ.

رواه مسلم، باب قرب الساعة،رقم:٧٤٠٢

143. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत बदतरीन आदमियों पर ही क़ायम होगी। (मुस्लिम)

﴿144﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَخْرُجُ الدَّجَّالُ فِيْ اُمَّتِيْ فَيَمْكُثُ اَرْبَعِيْنَ: لَا اَدْرِيْ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا، اَوْ اَرْبَعِيْنَ شَهْرًا، اَوْ اَرْبَعِيْنَ عَامًا، فَيَبْعَثُ اللهُ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ كَاَنَّهُ عُرْوَةُ بْنُ مَسْعُوْدٍ، فَيَطْلُبُهُ فَيُهْلِكُهُ ثُمَّ يَمْكُثُ النَّاسُ سَبْعَ سِنِيْنَ، لَيْسَ بَيْنَ اثْنَيْنِ عَدَاوَةٌ، ثُمَّ يُرْسِلُ اللهُ رِيْحًا بَارِدَةً مِنْ قِبَلِ الشَّامِ، فَلَا يَبْقٰى عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَدٌ فِيْ قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ خَيْرٍ اَوْ اِيْمَانٍ اِلَّا قَبَضَتْهُ، حَتّٰى لَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ دَخَلَ فِيْ كَبِدِ جَبَلٍ لَدَخَلَتْهُ عَلَيْهِ، حَتّٰى تَقْبِضَهُ قَالَ: فَيَبْقٰى شِرَارُ النَّاسِ فِيْ

خِفَّةِ الطَّيْرِ وَاَحْلَامِ السِّبَاعِ لَا يَعْرِفُوْنَ مَعْرُوْفًا وَلَا يُنْكِرُوْنَ مُنْكَرًا، فَيَتَمَثَّلُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ فَيَقُوْلُ: اَلَا تَسْتَجِيْبُوْنَ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: فَمَا تَاْمُرُنَا؟ فَيَاْمُرُهُمْ بِعِبَادَةِ الْاَوْثَانِ،وَهُمْ فِيْ ذٰلِكَ دَارٌّ رِزْقُهُمْ، حَسَنٌ عَيْشُهُمْ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ، فَلَا يَسْمَعُهُ اَحَدٌ اِلَّا اَصْغٰى لِيْتًا وَرَفَعَ لِيْتًا، قَالَ: وَاَوَّلُ مَنْ يَسْمَعُهُ رَجُلٌ يَلُوْطُ حَوْضَ اِبِلِهٖ قَالَ: فَيَصْعَقُ،وَيَصْعَقُ النَّاسُ،ثُمَّ يُرْسِلُ اللّٰهُ مَطَرًا كَاَنَّهُ الطَّلُّ فَتَنْبُتُ مِنْهُ اَجْسَادُ النَّاسِ، ثُمَّ يُنْفَخُ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُوْنَ، ثُمَّ يُقَالُ: اَخْرِجُوا بَعْثَ النَّارِ، فَيُقَالُ: مِنْ كَمْ؟ فَيُقَالُ: مِنْ كُلِّ اَلْفٍ، تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَّتِسْعِيْنَ قَالَ: فَذٰلِكَ يَوْمَ يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا، وَذٰلِكَ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ.

رواه مسلم،باب فى خروج الدجال......،رقم: ٧٣٨١

وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَشَقَّ ذٰلِكَ عَلَى النَّاسِ حَتّٰى تَغَيَّرَتْ وُجُوْهُهُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِنْ يَاْجُوْجَ وَمَاجُوْجَ تِسْعُمِائَةٍ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعِيْنَ وَمِنْكُمْ وَاحِدٌ

(الحديث) رواه البخارى، باب قوله: وترى الناس سكارى،رقم: ٤٧٤١

144. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत से पहले) दज्जाल निकलेगा और वह चालीस तक ठहरेगा। इस हदीस को रिवायत करने वाले सहाबी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह ﷺ का मतलब चालीस से चालीस दिन थे, या चालीस महीने, या चालीस साल। आगे हदीस ब्यान करते हैं कि फिर अल्लाह तआ़ला (हज़रत) ईसा बिन मरयम عليه السلام को (दुनिया में) भेजेंगे, गोया कि वह उरवः बिन मस्ऊद हैं, यानी उनकी शक्ल व सूरत हज़रत उरवः बिन मस्ऊद ﷺ से मिलती जुलती होगी। वह दज्जाल को तलाश करेंगे (और उसका तआ़क़ुब करेंगे और उसको पकड़ कर) उसका ख़ात्मा कर देंगे। फिर सात साल तक लोग ऐसे रहेंगे कि दो आदमियों के दरम्यान (भी) आपस में दुश्मनी नहीं होगी। फिर अल्लाह तआ़ला (मुल्के) शाम की तरफ़ से एक (ख़ास क़िस्म की) ठंडी हवा चलाएंगे, जिसका यह असर होगा कि रू-ए-ज़मीन पर कोई ऐसा शख़्स बाक़ी नहीं रहेगा जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो, (बहरहाल उस हवा से तमाम अह्ले ईमान ख़त्म हो जाएंगे) यहां तक कि अगर तुम में से कोई शख़्स किसी पहाड़ के अन्दर (भी) चला जाएगा तो यह हवा वहीं पहुंच कर उसका ख़ात्मा कर देगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि उसके बाद सिर्फ़ बुरे लोग ही दुनिया में रह जाएंगे (जिनके दिल ईमान से बिल्कुल ख़ाली होंगे) उनमें परिन्दों वाली तेज़ी और फुर्ती होगी, यानी जिस तरह परिन्दे उड़ने

में फुर्तीले होते हैं उसी तरह ये लोग अपनी ग़लत ख़्वाहिशात के पूरा करने में फुर्ती दिखाएंगे और (दूसरों पर जुल्म व ज़्यादती करने में) दरिन्दों वाली आदतें होंगी, भलाई को भला नहीं समझेंगे और बुराई को बुरा न जानेंगे। शैतान एक शकल बनाकर उनके सामने आएगा और उनसे कहेगा : क्या तुम मेरा हुक्म नहीं मानोगे? वे कहेंगे तुम हम को क्या हुक्म देते हो? यानी जो तुम कहो वह हम करें, तो शैतान उन्हें बुतों की परस्तिश का हुक्म देगा (और वे उसकी तकमील करेंगे) और उस वक़्त उन पर रोज़ी की फ़रावानी होगी, और उनकी ज़िन्दगी (बज़ाहिर) बड़ी अच्छी (ऐश व निशात वाली) होगी। फिर सूर फूंका जाएगा, जो कोई उस सूर की आवाज़ को सुनेगा (उस आवाज़ की दहशत और ख़ौफ़ से बेहोश हो जाएगा और उसकी वजह से उसका सर जिस्म पर सीधा क़ायम न रह सकेगा, बल्कि) उसकी गर्दन इधर-उधर ढलक जाएगी। सबसे पहले जो शख़्स सूर की आवाज़ सुनेगा (और जिस पर सबसे पहले उसका असर पड़ेगा) वह एक आदमी होगा जो अपने ऊंट के हौज़ को मिट्टी से दुरुस्त कर रहा होगा, वह बेहोश और बेजान होकर गिर जाएगा यानी मर जाएगा और दूसरे सब लोग भी इसी तरह बेजान होकर गिर जाएंगे। फिर अल्लाह तआला (हल्की-सी) बारिश बरसाएंगे ऐसी जैसे कि शबनम, उसके असर से इंसानों के जिस्मों में जान पड़ जाएगी। फिर दूसरी मर्तबा सूर फूंका जाएगा तो एकदम सबके सब खड़े हो जाएंगे (और चारों तरफ़) देखने लगेंगे। फिर कहा जाएगा कि लोगो! अपने रब की तरफ़ चलो (और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि) इन्हें (हिसाब के मैदान में) खड़ा करो, (क्योंकि) इनसे पूछ-ताछ होगी (और इनके आमाल का हिसाब-किताब होगा) फिर हुक्म होगा कि उनमें से दोज़ख़ियों के गिरोह को निकालो। अर्ज़ किया जाएगा कि कितने में से कितने? हुक्म होगा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे। रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ये वह दिन होगा जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा यानी उस रोज़ की सख़्ती और लम्बाई का तक़ाज़ा यही होगा कि वह बच्चों को बूढ़ा कर दे, अगरचे हक़ीक़त में बच्चे बूढ़े न हों और यही वह दिन होगा जिस में पिंडली खोली जाएगी यानी जिस दिन अल्लाह तआला ख़ास क़िस्म का ज़ुहूर फ़रमाएंगे। (मुस्लिम)

एक और रिवायत में इस तरह है कि जब सहाबा किराम ﵃ ने सुना कि हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे जहन्नम में जाएंगे तो इस बात से वे इतने परेशान हुए कि चेहरों के रंग बदल गए। उस पर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बात यह है कि नौ सौ निन्नान्वे जो जहन्नम में जाएंगे वे याजूज-माजूज (और उनकी तरह कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन) में से होंगे, और एक हज़ार में से एक (जो जन्नत

में जाएगा) वह तुम में से (और तुम्हारा तरीक़ा अख़्तियार करने वालों में से) होगा। (बुख़ारी)

﴿145﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : كَيْفَ اَنْعَمُ وَصَاحِبُ الْقَرْنِ قَدِ الْتَقَمَ الْقَرْنَ وَاسْتَمَعَ الْاُذُنَ مَتٰى يُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ فَيَنْفُخُ فَكَاَنَّ ذٰلِكَ ثَقُلَ عَلٰى اَصْحَابِ النَّبِىِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُمْ: قُوْلُوْا: حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ، عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في شان الصور، رقم: ٢٤٣١

145. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं कैसे खुश और चैन से रह सकता हूं हालांकि सूर वाले फ़रिश्ते ने सूर को मुंह में ले लिया है, और उसने कान लगा रखा है कि कब उसको सूर के फूंक देने का हुक्म हो और वह फूंक दे। सहाबा ﷺ ने इस बात को भारी महसूस किया तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : حسبنا الله ونعم الوكيل على الله توكلنا कहते रहा करो। तर्जुमा : *अल्लाह तआला हमारे लिए काफ़ी हैं और वह बेहतरीन काम बनाने वाले हैं, अल्लाह तआला ही पर हमने भरोसा किया।* (तिर्मिज़ी)

﴿146﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: تُدْنَى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ، حَتّٰى تَكُوْنَ مِنْهُ كَمِقْدَارِ مِيْلٍ فَيَكُوْنُ النَّاسُ عَلٰى قَدْرِ اَعْمَالِهِمْ فِى الْعَرَقِ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ اِلٰى كَعْبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ اِلٰى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ اِلٰى حَقْوَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُ الْعَرَقُ اِلْجَامًا قَالَ: وَاَشَارَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِيَدِهِ اِلٰى فِيْهِ.

رواه مسلم، باب في صفة يوم القيامة، رقم: ٧٢٠٦

146. हज़रत मिक़्दाद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ से क़रीब कर दिया जाएगा, यहां तक कि उनसे सिर्फ़ एक मील की मुसाफ़त के बक़द्र रह जाएगा और (उसकी गर्मी से) लोग अपने आमाल के बक़द्र पसीने में होंगे, यानी जिसके आमाल जितने बुरे होंगे उसी क़द्र उसको पसीना ज़्यादा आएगा। बाज़ वे होंगे, जिनका पसीना उनके टख़्नों तक होगा और बाज़ का पसीना उनके घुटनों तक होगा और बाज़ का उनके कमर तक होगा और बाज़ वे होंगे, जिनका पसीना उनके मुंह तक पहुंच रहा होगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मुंह की तरफ़ हाथ से इशारा किया (कि उनका पसीना यहां तक पहुंच रहा होगा)। (मुस्लिम)

﴿147﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثَلَاثَةَ اَصْنَافٍ: صِنْفًا مُشَاةً وَصِنْفًا رُكْبَانًا وَصِنْفًا عَلٰى وُجُوْهِهِمْ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَكَيْفَ يَمْشُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ؟ قَالَ: اِنَّ الَّذِىْ اَمْشَاهُمْ عَلٰى اَقْدَامِهِمْ قَادِرٌ عَلٰى اَنْ يُمَشِّيَهُمْ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ، اَمَا اِنَّهُمْ يَتَّقُوْنَ بِوُجُوْهِهِمْ كُلَّ حَدَبٍ وَشَوْكَةٍ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن،باب ومن سورة بنی اسرآئیل،رقم: ۳۱۴۲

147. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोग तीन क़िस्मों में उठाए जाएंगे। पैदल चलने वाले, सवार, मुंह के बल चलने वाले। अ़र्ज़ किया गयाः या रसूलुल्लाह! मुंह के बल किस तरह चल सकेंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस अल्लाह ने उन्हें पावं के बल चलाया है, वह उनको मुंह के बल चलाने पर भी यक़ीनन क़ुदरत रखते हैं। अच्छी तरह समझ लो! ये लोग अपने मुंह के ज़रिए ही ज़मीन के हर टीले और हर कांटे से बचेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿148﴾ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تُرْجُمَانٌ، فَيَنْظُرُ اَيْمَنَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى اِلَّا مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهِ، وَيَنْظُرُ اَشْاَمَ مِنْهُ فَلَا يَرٰى اِلَّا مَا قَدَّمَ، وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلَا يَرٰى اِلَّا النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ، فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ.

رواه البخاری، باب کلام الرب تعالی......،رقم:۷۵۱۲

148. हज़रत अ़दी बिन हातिम ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) तुम में से हर शख़्स से अल्लाह तआ़ला इस तरह कलाम फ़रमाएंगे कि दर्मियान में कोई तरजुमान नहीं होगा, (उस वक़्त बन्दा बेबसी से इधर-उधर देखेगा)। जब अपनी दाहिनी जानिब देखेगा, तो अपने आ़माल के सिवा कुछ नज़र न आएगा, जब अपनी बाएं जानिब देखेगा तो अपने आ़माल के अलावा कुछ नज़र न आएगा। और जब अपने सामने अेखेगा तो आग के अलावा कुछ नजर न आयेगा। लिहाज़ा दोज़ख़ की आग से बचो अगरचे ख़ुश्क खजूर के टुकड़े (को सदक़ा करने) के ज़रिए ही से हो। (बुख़ारी)

﴿149﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ فِىْ بَعْضِ صَلَاتِهِ: اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِىْ حِسَابًا يَسِيْرًا فَلَمَّا انْصَرَفَ قُلْتُ: يَا نَبِىَّ اللّٰهِ! مَا الْحِسَابُ الْيَسِيْرُ؟ قَالَ: اَنْ يُنْظَرَ فِىْ كِتَابِهِ فَيُتَجَاوَزَ عَنْهُ اِنَّهُ مَنْ نُوْقِشَ الْحِسَابَ يَوْمَئِذٍ يَاعَائِشَةُ هَلَكَ.

(الحدیث) رواه احمد ۶/۴۸

149. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने कुछ नमाज़ों में रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना : 'अल्लाहुम-म हासिब्नी हिसाबैंयसीरा' (ऐ अल्लाह! मेरा हिसाब आसान फ़रमा दीजिए) मैंने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह के नबी! आसान हिसाब का क्या मतलब है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दे के आमालनामे पर नज़र डाली जाए फिर उससे दरगुज़र कर दिया जाए, क्योंकि ऐ आइशा! उस दिन जिसके हिसाब में पूछ-ताछ की जाएगी वह तो हलाक हो जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿150﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ اَتٰی رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: اَخْبِرْنِیْ مَنْ یَّقْوٰی عَلَی الْقِیَامِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ الَّذِیْ قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ﴿یَوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ فَقَالَ: یُخَفَّفُ عَلَی الْمُؤْمِنِ حَتّٰی یَکُوْنَ عَلَیْهِ کَالصَّلٰوةِ الْمَکْتُوْبَةِ.

رواه البیهقی فی کتاب البعث والنشور،مشکوة المصابیح،رقم:٥٥٦٢

150. हज़रत अबू सईद खुदरी ؓ से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : मुझे बताइये कि क़ियामत के दिन (जो कि पचास हज़ार साल के बराबर होगा) किसे खड़ा रहने की ताक़त होगी, जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है। ''يوم يقوم الناس لرب العالمين'' तर्जुमा : *'जिस दिन सब लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे।'* रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के लिए यह खड़ा होना इतना आसान कर दिया जाएगा कि वह दिन उसके लिए फ़र्ज़ नमाज़ की अदाइगी के बक़द्र रह जाएगा। (बैहक़ी, मिश्कात)

﴿151﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْاَشْجَعِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَتَانِي آتٍ مِنْ عِنْدِ رَبِّی فَخَيَّرَنِي بَيْنَ اَنْ يُدْخِلَ نِصْفَ اُمَّتِي الْجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ،فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ وَهِيَ لِمَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا.

رواه الترمذي، باب منه حديث تخيير النبي ﷺ،......رقم: ٢٤٤١

151. हज़रत औ़फ़ बिन मालिक अशजई ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : *अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और उसने मुझे (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से) दो बातों में से एक का अख़्तियार दिया, या तो अल्लाह तआ़ला मेरी आधी उम्मत को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दें या (सब के लिए) मुझे शफ़ाअ़त करने का हक़ दे दें, तो मैंने शफ़ाअ़त के हक़ को अख़्तियार*

कर लिया, (ताकि सारे ही मुसलमान उससे फ़ायदा उठा सकें, कोई महरूम न रहे)। चुनांचे मेरी शफ़ाअ़त हर उस शख़्स के लिए होगी, जो इस हाल में मरे कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न करता हो। (तिर्मिज़ी)

﴿152﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: شَفَاعَتِي لِاَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ اُمَّتِي. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب،باب منه حديث شفاعتى......،رقم:٢٤٣٥

152. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : गुनाह कबीरा करने वालों के हक़ में मेरी शफ़ाअ़त सिर्फ़ उम्मत के लोगों के लिए मख़्सूस होगी (दूसरी उम्मतों के लोगों के लिए नहीं होगी)। (तिर्मिज़ी)

﴿153﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ مَاجَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ، فَيَاْتُوْنَ آدَمَ فَيَقُوْلُوْنَ : اِشْفَعْ لَنَا اِلٰى رَبِّكَ،فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِاِبْرَاهِيْمَ فَاِنَّهُ خَلِيْلُ الرَّحْمٰنِ، فَيَاْتُوْنَ اِبْرَاهِيْمَ فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُوْسٰى فَاِنَّهُ كَلِيْمُ اللهِ، فَيَاْتُوْنَ مُوْسٰى فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا،وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِعِيْسٰى فَاِنَّهُ رُوْحُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ، فَيَاْتُوْنَ عِيْسٰى فَيَقُوْلُ: لَسْتُ لَهَا، وَلٰكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُحَمَّدٍ ﷺ فَيَاْتُوْنِي فَاَقُوْلُ: اَنَا لَهَا، فَاَسْتَاْذِنُ عَلٰى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي وَيُلْهِمُنِي مَحَامِدَ اَحْمَدُهُ بِهَا لَا تَحْضُرُنِي الْآنَ، فَاَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ،وَاَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا،فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَاَقُوْلُ: يَارَبِّ! اُمَّتِي اُمَّتِي، فَيُقَالُ: اِنْطَلِقْ فَاَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ شَعِيْرَةٍ مِنْ اِيْمَانٍ، فَاَنْطَلِقُ فَاَفْعَلُ ثُمَّ اَعُوْدُ فَاَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ اَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَامُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَاَقُوْلُ: يَارَبِّ ! اُمَّتِي اُمَّتِي، فَيُقَالُ: اِنْطَلِقْ فَاَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ اَوْ خَرْدَلَةٍ مِنْ اِيْمَانٍ، فَاَنْطَلِقُ فَاَفْعَلُ ثُمَّ اَعُوْدُ فَاَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ اَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَاْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ، وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَاَقُوْلُ: يَا رَبِّ اُمَّتِي اُمَّتِي، فَيَقُوْلُ: اِنْطَلِقْ فَاَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ اَدْنٰى اَدْنٰى اَدْنٰى مِثْقَالِ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ اِيْمَانٍ فَاَخْرِجْهُ مِنَ النَّارِ مِنَ النَّارِ مِنَ النَّارِ،فَاَنْطَلِقُ فَاَفْعَلُ،ثُمَّ اَعُوْدُ الرَّابِعَةَ فَاَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ،ثُمَّ اَخِرُّ لَهُ سَاجِدًا فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَاْسَكَ، وَقُلْ يُسْمَعْ، وَسَلْ تُعْطَه، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَاَقُوْلُ: يَارَبِّ! اِئْذَنْ لِي فِيْمَنْ قَالَ:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، فَيَقُوْلُ: وَعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ وَكِبْرِيَائِیْ وَعَظَمَتِیْ لَاُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ. رواه البخاری،باب كلام الرب تعالٰی...... ،رقم: ٧٥١٠

(وَفِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) عَنْ اَبِي سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى: شَفَعَتِ الْمَلَائِكَةُ وَشَفَعَ النَّبِيُّوْنَ وَشَفَعَ الْمُؤْمِنُوْنَ، وَلَمْ يَبْقَ اِلَّا اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ،فَيَقْبِضُ قَبْضَةً مِنَ النَّارِ فَيُخْرِجُ مِنْهَا قَوْمًا لَمْ يَعْمَلُوا خَيْرًا قَطُّ، قَدْ عَادُوا حُمَمًا فَيُلْقِيْهِمْ فِي نَهْرٍ فِي اَفْوَاهِ الْجَنَّةِ يُقَالُ لَهُ نَهْرُ الْحَيَاةِ، فَيَخْرُجُوْنَ كَمَا تَخْرُجُ الْحَبَّةُ فِيْ حَمِيْلِ السَّيْلِ قَالَ: فَيَخْرُجُوْنَ كَاللُّؤْلُؤِ فِيْ رِقَابِهِمُ الْخَوَاتِمُ،يَعْرِفُهُمْ اَهْلُ الْجَنَّةِ، هٰؤُلَاءِ عُتَقَاءُ اللّٰهِ الَّذِيْنَ اَدْخَلَهُمُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ عَمَلٍ عَمِلُوْهُ وَلَا خَيْرٍ قَدَّمُوْهُ، ثُمَّ يَقُوْلُ: اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ فَمَا رَاَيْتُمُوْهُ فَهُوَ لَكُمْ، فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا اَعْطَيْتَنَا مَالَمْ تُعْطِ اَحَدًا مِنَ الْعَالَمِيْنَ، فَيَقُوْلُ: لَكُمْ عِنْدِيْ اَفْضَلُ مِنْ هٰذَا، فَيَقُوْلُوْنَ: يَارَبَّنَا! اَیُّ شَيْءٍ اَفْضَلُ مِنْ هٰذَا؟ فَيَقُوْلُ: رِضَائِیْ فَلَا اَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ اَبَدًا. رواه مسلم، باب معرفة طريق الرؤية،رقم: ٤٥٤

153. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब क़ियामत का दिन होगा तो (परेशानी की वजह से) लोग एक दूसरे के पास भागे-भागे फिरेंगे। चुनांचे (हज़रत) आदम عليه السلام के पास जाएंगे और उनसे अ़र्ज़ करेंगे---आप अपने रब से हमारी शफ़ाअ़त कर दीजिए। वह फ़रमाएंगे, मैं इसका अह्ल नहीं, तुम इब्राहीम عليه السلام के पास जाओ, वह अल्लाह तआ़ला के दोस्त हैं। यह उनके पास जाएंगे। वह फ़रमाएंगे, मैं इसका अह्ल नहीं, तुम मूसा عليه السلام के पास जाओ वह कलीमुल्लाह यानी अल्लाह तआ़ला से बातें करने वाले हैं। यह उनके पास जाएंगे। वह भी फ़रमाएंगे मैं इसका अह्ल नहीं, लेकिन तुम ईसा عليه السلام के पास जाओ वे रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं। ये उनके पास जाएंगे। वह भी फ़रमाएंगे मैं इसका अह्ल नहीं अलबत्ता तुम हज़रत मुहम्मद ﷺ के पास जाओ। चुनांचे वे लोग मेरे पास आएंगे। मैं कहूंगा : (बहुत अच्छा) शफ़ाअ़त का हक़ मुझे हासिल है। उसके बाद मैं अपने रब से इजाज़त मांगूंगा। मुझे इजाज़त मिल जाएगी और अल्लाह तआ़ला मेरे दिल में अपनी ऐसी तारीफ़ें डालेंगे जो इस वक़्त मुझे नहीं आतीं। मैं उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करूंगा और सज्दे में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ! सर उठाओ, कहो। तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअ़त करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अ़र्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, यानी मेरी उम्मत को बख़्श दीजिए। मुझसे कहा जाएगा जाओ, जिसके दिल में जौ के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी जहन्नम से निकाल लो। मैं

जाऊंगा और हुक्म की तामील करूंगा। वापस आकर फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करूंगा और सज्दा में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअ़त करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अ़र्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत। (मुझसे) कहा जाएगा---- जाओ, जिसके दिल में एक ज़र्रा या एक राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे भी निकाल लो। मैं जाऊंगा और हुक्म की तामील करूंगा। वापस आकर फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करूंगा और सज्दे में गिर जाऊंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअ़त करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अ़र्ज़ करूंगा : या रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत। (मुझसे) कहा जाएगा जाओ जिसके दिल में एक राई के दाने से भी कम से कमतर ईमान हो उसे भी निकाल लो। मैं जाऊंगा और हुक्म की तामील करके चौथी मर्तबा फिर वापस आऊंगा और फिर उन्हीं कलिमात के साथ अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करूंगा। इर्शाद होगा : मुहम्मद ﷺ सिर उठाओ। कहो, तुम्हारी बात मानी जाएगी। मांगो, मिलेगा; शफ़ाअ़त करो, क़ुबूल की जाएगी। मैं अ़र्ज़ करूंगा : मेरे रब! मुझे उनके निकालने की भी इजाज़त दे दीजिए जिन्होंने कलिमा *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* पढ़ा हो। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे : मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मेरे बुलन्द मर्तबे की क़सम! मेरी बड़ाई की क़सम और मेरी बुज़ुर्गी की क़सम! जिन्होंने यह कलिमा पढ़ लिया है उन्हें तो मैं ज़रूर जहन्नम से (खुद) निकाल लूंगा। (बुख़ारी)

हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ की हदीस में इस तरह है कि (चौथी मर्तबा आप ﷺ की बात के जवाब में) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे : फ़रिश्ते भी शफ़ाअ़त कर चुके, अम्बिया ﷺ भी शफ़ाअ़त कर चुके और मोमिनीन भी शफ़ाअ़त कर चुके, अब अरहमुर्राहिमीन के अलावा और कोई बाक़ी नहीं रहा। चुनांचे अल्लाह तआ़ला मुट्ठी भर कर ऐसे लोगों को दोज़ख़ से निकाल लेंगे, जिन्होंने पहले कभी कोई ख़ैर का काम न किया होगा। वे लोग दोज़ख़ में (जल कर) कोयला हो चुके होंगे। जन्नत के दरवाज़ों के सामने एक नहर है, जिसे नहरे हयात कहा जाता है। अल्लाह तआ़ला उसमें उन लोगों को डाल देंगे। वे उसमें से (फ़ौरी तौर पर तर व ताज़ा होकर) निकल आएंगे जैसे दाना सैलाब के कूड़े में (पानी और खाद मिलने की वजह से फ़ौरी) उग आता है और ये लोग मोती की तरह साफ़ सुथरे और चमकदार हो जाएंगे। उनकी गरदनों में सोने के पट्टे पड़े होंगे जिनसे जन्नती उनको पहचानेंगे कि ये लोग

(जहन्नम की आग से) अल्लाह तआ़ला के आज़ाद करदा हैं। उन्हें अल्लाह तआ़ला ने बग़ैर किसी नेक अ़मल किए हुए जन्नत में दाख़िल कर दिया है। फिर अल्लाह तआ़ला (उनसे) फ़रमाएंगे– जन्नत में दाख़िल हो जाओ, जो कुछ तुमने (ज़न्नत में) देखा वह सब तुम्हारा है। वे कहेंगे, हमारे रब! आपने हमें वह कुछ अ़ता फ़रमाया, जो दुनिया में किसी को नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे : मेरे पास तुम्हारे लिए इससे अफ़ज़ल नेमत है। वे अ़र्ज़ करेंगे, हमारे रब! इससे अफ़ज़ल क्या नेमत होगी? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : मेरी रज़ा। इसके बाद अब मैं तुम से कभी नाराज़ नहीं हूंगा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में हज़रत ईसा عليه السلام को रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह इस वजह से कहा गया है कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के हुक्म कलिमा 'कुन' से इस तरह हुई है कि जिबरील عليه السلام ने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उनकी मां के गरेबान में फूंका, जिससे वह एक रूह और जानदार चीज़ बन गए। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿154﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ ﷺ فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُسَمَّوْنَ الْجَهَنَّمِيِّيْنَ.

رواه البخاري، باب صفة الجنة والنار، رقم:٦٥٦٦

154. हज़रत इमरान बिन हुसैन رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों की एक जमाअ़त जिनका लक़ब जहन्मी होगा हज़रत मुहम्मद ﷺ की शफ़ाअ़त पर दोज़ख़ से निकलकर जन्नत में दाख़िल होंगे। (बुख़ारी)

﴿155﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ مِنْ اُمَّتِيْ مَنْ يَشْفَعُ لِلْفِئَامِ مِنَ النَّاسِ، مِنْهُمْ مَنْ يَّشْفَعُ لِلْقَبِيْلَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَّشْفَعُ لِلْعُصْبَةِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَّشْفَعُ لِلرَّجُلِ حَتّٰى يَدْخُلُوا الْجَنَّةَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب منه دخول سبعين الفا......،رقم: ٢٤٤٠

155. हज़रत अबू सईद رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में कुछ लोग वे होंगे जो क़ौमों की शफ़ाअ़त करेंगे, यानी उनका मक़ाम यह होगा कि अल्लाह उनको क़ौमों की शफ़ाअ़त की इजाज़त देंगे। कुछ वे होंगे, जो

क़बीले की शफ़ाअ़त करेंगे, कुछ वे होंगे जो उस्बा की शफ़ाअ़त करेंगे और कुछ वे होंगे जो एक आदमी की शफ़ाअ़त कर सकेंगे (अल्लाह तआ़ला उन सब की सिफ़ारिशों को क़ुबूल फ़रमाएंगे), यहां तक कि वे सब जन्नत में पहुंच जाएंगे।

(तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : दस से चालीस तक की तादाद वाली जमाअ़त को उस्बा कहते हैं।

﴿156﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ وَاَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا (فِىْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ)قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : وَتُرْسَلُ الْاَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَتَقُوْمَانِ جَنْبَتَيِ الصِّرَاطِ يَمِيْنًا وَشِمَالًا، فَيَمُرُّ اَوَّلُكُمْ كَالْبَرْقِ قَالَ قُلْتُ: بِاَبِى اَنْتَ وَاُمِّىْ اَىُّ شَىْءٍ كَمَرِّ الْبَرْقِ؟ قَالَ: اَلَمْ تَرَوْا اِلَى الْبَرْقِ كَيْفَ يَمُرُّ وَيَرْجِعُ فِى طَرْفَةِ عَيْنٍ؟ ثُمَّ كَمَرِّ الرِّيْحِ، ثُمَّ كَمَرِّ الطَّيْرِ وَشَدِّ الرِّجَالِ، تَجْرِىْ بِهِمْ اَعْمَالُهُمْ، وَنَبِيُّكُمْ قَائِمٌ عَلَى الصِّرَاطِ يَقُوْلُ: رَبِّ سَلِّمْ سَلِّمْ، حَتّٰى تَعْجِزَ اَعْمَالُ الْعِبَادِ، حَتّٰى يَجِىْءَ الرَّجُلُ فَلَا يَسْتَطِيْعُ السَّيْرَ اِلَّا زَحْفًا قَالَ: وَفِىْ حَافَّتَيِ الصِّرَاطِ كَلَالِيْبُ مُعَلَّقَةٌ مَامُوْرَةٌ تَاْخُذُ مَنْ اُمِرَتْ بِهٖ فَمَخْدُوْشٌ نَاجٍ وَمَكْدُوْسٌ فِى النَّارِ وَالَّذِىْ نَفْسُ اَبِىْ هُرَيْرَةَ بِيَدِهٖ اِنَّ قَعْرَ جَهَنَّمَ لَسَبْعِيْنَ خَرِيْفًا.

رواه مسلم،باب ادنى اهل الجنة منزلة فيها،رقم:٤٨٢

156. हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अमानत की सिफ़त और सिलारहमी (रिश्ते जोड़ने) को (एक शक्ल देकर) छोड़ दिया जाएगा। ये दोनों चीज़ें पुलसिरात के दाएं-बाएं खड़ी हो जाएंगी (ताकि अपनी रियायत करने वालों की सिफ़ारिश और न रियायत करने वालों की शिकायत करें)। तुम्हारा पहला क़ाफ़िला पुलसिरात से बिजली की तरह तेज़ी के साथ गुज़र जाएगा। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने अ़र्ज़ किया : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान, बिजली की तरह तेज़ गुज़रने का क्या मतलब हुआ? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने बिजली को नहीं देखा कि वह किस तरह पल भर में गुज़र कर लौट भी आती है। इसके बाद गुज़रने वाले हवा की तरह तेज़ी से गुज़रेंगे, फिर तेज़ परिन्दों की तरह, फिर जवां मर्दों के दौड़ने की रफ़्तार से। ग़रज़ हर शख़्स की रफ़्तार उसके आ़माल के मुताबिक़ होगी और तुम्हारे नबी ﷺ पुलसिरात पर खड़े होकर कह रहे होंगे, ऐ मेरे रब! इनको सलामती से गुज़ार दीजिए इनको सलामती से गुज़ार दीजिए, यहां तक कि ऐसे लोग भी होंगे जो अपने आ़माल की कमज़ोरी की वजह से पुलसिरात पर घिसट कर ही चल सकेंगे। पुलसिरात के

..नों तरफ़ लोहे के आंकड़े लटके हुए होंगे। जिसके बारे में हुक्म दिया जाएगा, वे उसको पकड़ लेंगे। कुछ लोगों को उन आंकड़ों की वजह से सिर्फ़ ख़राश आएगी। तो नजात पा जाएंगे और कुछ जहन्नम में धकेल दिए जाएंगे। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में अबू हुरैरह की जान है, ...लाशुबहा जहन्नम की गहराई सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर है। (मुस्लिम)

﴿157﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: بَيْنَمَا اَنَا اَسِيْرُ فِي الْجَنَّةِ اِذَا اَنَا بِنَهَرٍ حَافَّتَاهُ قِبَابُ الدُّرِّ الْمُجَوَّفِ، قُلْتُ: مَا هٰذَا يَا جِبْرِيْلُ؟ قَالَ: هٰذَا الْكَوْثَرُ الَّذِيْ اَعْطَاكَ رَبُّكَ، فَاِذَا طِيْنُهُ مِسْكٌ اَذْفَرُ. رواه البخاري، باب في الحوض، رقم: ٦٥٨١

..7. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में चलने के दौरान मेरा गुज़र एक नहर पर हुआ, उसके दोनों ...निब खोखले मोतियों से तैयार किए हुए गुंबद बने हुए थे। मैंने जिबरील ﷺ से ...छा यह क्या है? जिबरील ﷺ ने कहा कि यह नहर कौसर है, जो आप के रब ने आप को अता फ़रमाई है। मैंने देखा कि उसकी मिट्टी (जो उसकी तह में थी) वह ...हायत महकने वाली मुश्क थी। (बुख़ारी)

﴿158﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: حَوْضِيْ مَسِيْرَةُ شَهْرٍ، وَزَوَايَاهُ سَوَاءٌ، وَمَاؤُهُ اَبْيَضُ مِنَ الْوَرِقِ، وَرِيْحُهُ اَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ، وَكِيْزَانُهُ كَنُجُوْمِ السَّمَاءِ، فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَا يَظْمَأُ بَعْدَهُ اَبَدًا.

رواه مسلم، باب اثبات حوض نبينا ......رقم: ٥٩٧١

158. हज़रत अ़बदुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे हौज़ की मुसाफ़त एक महीने की है और उसके दोनों कोने बिल्कुल बराबर हैं, यानी उसकी लम्बाई-चौड़ाई बराबर है। उसका पानी चांदी से ज़्यादा सफ़ेद है और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से भी अच्छी है और उसके कूज़े आसमान के तारों की तरह (बेशुमार) हैं। जो उसका पानी पी लेगा, उसको कभी प्यास नहीं लगेगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : *"हौज़ की मुसाफ़त एक महीने की है"* इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने जो हौज़े कौसर रसूलुल्लाह ﷺ को अ़ता फ़रमाया है वह इस क़दर तवील व अ़रीज़ है कि उसकी एक जानिब से दूसरी जानिब तक एक महीने की मुसाफ़त है।

﴾159﴿ عَنْ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوْضًا وَاِنَّهُمْ يَتَبَاهَوْنَ اَيُّهُمْ اَكْثَرُ وَارِدَةً وَاِنِّيْ اَرْجُوْ اَنْ اَكُوْنَ اَكْثَرَهُمْ وَارِدَةً.

رواه الترمذی وقال: هذاحديث حسن غريب،باب ماجاء فی صفة الحوض،رقم: ٢٤٤٣

159. हज़रत समुरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (आख़िरत में) हर नबी का एक हौज़ है और अम्बिया आपस में इस बात पर फ़ख़्र करेंगे कि उनमें से किसके पास पीने वाले ज़्यादा आते हैं। मैं उम्मीद रखता हूं कि सबसे ज़्यादा पीने के लिए लोग मेरे पास आएंगे (और मेरे हौज़ से सैराब होंगे)।
(तिर्मिज़ी)

﴾160﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ شَهِدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ وَاَنَّ عِيْسٰى عَبْدُ اللهِ وَرَسُوْلُهُ وَكَلِمَتُهُ اَلْقَاهَا اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِنْهُ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، اَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ عَلٰى مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ. زَادَ جُنَادَةُ: مِنْ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةِ اَيِّهَا شَاءَ.

رواه البخاری،باب قوله تعالٰی يأهل الكتاب ......،رقم: ٣٤٣٥

160. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जिस शख़्स ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेले हैं, उनका कोई शरीक नहीं, और यह कि हज़रत मुहम्मद ﷺ उनके बन्दे और रसूल हैं, और हज़रत ईसा ﷺ (भी) अल्लाह तआला के बन्दे और उनके रसूल हैं, और उनका कलिमा है (कि उनकी पैदाइश बग़ैर बाप के सिर्फ अल्लाह तआला के हुक्म कलिमा *'कुन'* से हुई) और अल्लाह तआला की तरफ़ से वह एक रूह यानी जान हैं (जिस जान को हज़रत जिबरील ﷺ की फूंक के ज़रिए हज़रत मरयम अलै० के बतन तक पहुंचाया गया। हज़रत जिबरील ﷺ ने हज़रत मरयम अलै० के गरेबान में फूंका था) और यह कि जन्नत बरहक़ है, दोज़ख़ बरहक़ है (जो इन सब की गवाही दे) ख़्वाह उसका अमल कैसा ही हो, अल्लाह तआला उसे जन्नत में ज़रूर दाख़िल फ़रमाएंगे। हज़रत जुनादा रज़ि० ने ये अल्फ़ाज़ भी नक़ल किए हैं : वह जन्नत के आठ दरवाज़ों में से जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। (बुख़ारी)

﴾161﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ: اَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ مَالَا عَيْنٌ رَاَتْ، وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ، فَاقْرَءُ وا

اِنْ شِئْتُمْ ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ﴾

رواه البخاری،باب ماجاء فی صفة الجنة ......،رقم:٣٢٤٤

61. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हदीसे क़ुदसी ब्यान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी नेमतें तैयार कर रखी हैं, जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल में कभी उनका ख़्याल गुज़रा। अगर तुम चाहो तो क़ुरआन की ये आयत पढ़ोः "فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ" तर्जुमा : *कोई आदमी भी उन नेमतों को नहीं जानता जो उन बन्दों के लिए छुपा कर रखी गई हैं, जिनमें उनकी आंखों के लिए ठंडक का सामान है।* (बुख़ारी)

﴿162﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا.

رواه البخاری،باب ماجاء فی صفة الجنة ......،رقم: ٣٢٥٠

62. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में एक कूड़े की जगह यानी कम-से-कम जगह भी दुनिया और जो कुछ उसमें है, उससे बेहतर (और ज़्यादा क़ीमती) है। (बुख़ारी)

﴿163﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَلَقَابُ قَوْسِ اَحَدِكُمْ اَوْ مَوْضِعُ قَدَمٍ مِنَ الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَافِيْهَا، وَلَوْ اَنَّ امْرَاَةً مِنْ نِسَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اِطَّلَعَتْ اِلَى الْاَرْضِ لَاَضَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا، وَلَمَلَاَتْ مَابَيْنَهُمَا رِيْحًا، وَلَنَصِيْفُهَا يَعْنِي الْخِمَارَ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَ مَا فِيْهَا.

رواه البخاری،باب صفة الجنة والنار،رقم:٦٥٦٨

163. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में तुम्हारी एक कमान के बराबर जगह या एक क़दम के बराबर जगह दुनिया और जो कुछ उसमें है उससे बहतर है और अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत (जन्नत से) ज़मीन की तरफ झांके तो जन्नत से लेकर ज़मीन तक (की जगह को) रौशन कर दे और ख़ुश्बू से भर दे और उसका दुपट्टा भी दुनिया और दुनिया में जो कुछ है, उससे बेहतर है। (बुख़ारी)

﴿164﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةً،

يَسِيْرُ الرَّاكِبُ فِيْ ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ،لَايَقْطَعُهَا، وَاقْرَءُوْا اِنْ شِئْتُمْ ﴿وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ﴾

رواه البخاری، باب قوله وظل ممدود،رقم:٤٨٨١

164. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में एक दरख़्त ऐसा है कि सवार उसके साए में सौ साल चल कर भी उसको पार न कर सके और तुम चाहो तो ये आयत पढ़ो "وظِلٍّ ممدودٍ" *'और (जन्नत लम्बे सायों में (होंगे)।'* (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اَهْلَ الْجَنَّةِ يَاْكُلُوْنَ فِيْهَا وَيَشْرَبُوْنَ، وَلَا يَتْفِلُوْنَ وَلَا يَبُوْلُوْنَ، وَلَا يَتَغَوَّطُوْنَ وَلَا يَمْتَخِطُوْنَ قَالُوا: فَمَا بَالُ الطَّعَامِ؟ قَالَ: جُشَاءٌ وَرَشْحٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ، يُلْهَمُونَ التَّسْبِيْحَ وَالتَّحْمِيْدَ، كَمَا يُلْهَمُونَ النَّفَسَ.

رواه مسلم، باب فی صفات الجنة واهلها،رقم:٧١٥٢

165. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमा हुए सुना : जन्नती जन्नत में खाएंगे और पिएंगे, (लेकिन) न तो थूक आएगा, न पेशाब-पाखाना होगा और न नाक की सफ़ाई की ज़रूरत होगी। सहाबा ﷺ ने अ किया : खाने का क्या होगा? यानी हज़्म कैसे होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया डकार आएगी और पसीना मुश्क के पसीने की तरह होगा यानी ग़िज़ा का जो अस निकलना होगा वह डकार और पसीना के ज़रिए निकल जाया करेगा और जन्नति की ज़बान पर अल्लाह तआला की हम्द व तस्बीह इस तरह जारी होगी, जिस तरह उनका सांस जारी होगा। (मुस्लि

﴿166﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ وَاَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُنَادِيْ مُنَادٍ: اِنَّ لَكُمْ اَنْ تَصِحُّوا فَلَا تَسْقَمُوا اَبَدًا، وَاِنَّ لَكُمْ اَنْ تَحْيَوا فَلَا تَمُوْتُوْا اَبَدًا، وَاِنَّ لَكُمْ اَنْ تَشِبُّوا فَلَا تَهْرَمُوْا اَبَدًا، وَاِنَّ لَكُمْ اَنْ تَنْعَمُوا فَلَا تَبْاَسُوْا اَبَدًا فَذٰلِكَ قَوْلُهُ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَنُوْدُوْآ اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ﴾

رواه مسلم، باب فی دوام نعیم اهل الجنة ......، رقم: ٧١٥٧

166. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर् फ़रमाया : एक पुकारने वाला जन्नतियों को पुकारेगा कि तुम्हारे लिए सेहत है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिए ज़िन्दगी है, कभी मौत न आएगी, तुम्हारे लिए जवानी है, कभी बुढ़ापा नहीं आएगा और तुम्हारे लिए ख़ुशहाली है, कभी कोई परेशानी न होग। यह हदीस इस आयत की तफ़्सीर है, जिसमें अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

"وَنُوْدُوْآ اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُم تَعْمَلُوْنَ" तर्जुमा: *'और उनसे पुकार कर कहा जाएगा यह जन्नत तुमको तुम्हारे आमाल के बदले दी गई है।'* (मुस्लिम)

﴿167﴾ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِذَا دَخَلَ اَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ، قَالَ يَقُوْلُ اللهُ تَعَالٰى: تُرِيْدُوْنَ شَيْئًا اَزِيْدُكُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: اَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوْهَنَا؟ اَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ؟ قَالَ: فَيَكْشِفُ الْحِجَابَ، فَمَا اُعْطُوا شَيْئًا اَحَبَّ اِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ اِلٰى رَبِّهِمْ عَزَّوَجَلَّ.

رواه مسلم، باب اثبات رؤية المؤمنين فى الآخرة ......،رقم:٤٤٩

167. हज़रत सुहैब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे, तो अल्लाह तआला उनसे इर्शाद फ़रमाएंगे : क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम को मज़ीद एक चीज़ अता करूं यानी तुमको जो कुछ अब तक अता हुआ है उस पर मजीद एक ख़ास चीज़ इनायत करूं? वे कहेंगे : क्या आपने हमारे चेहरे रौशन नहीं कर दिए और क्या आपने हमें दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया? (अब इसके अलावा और क्या चीज़ हो सकती है जिसकी हम ख़्वाहिश करें, बन्दों के इस जवाब के बाद) फिर अल्लाह तआला पर्दा हटा देंगे (जिसके बाद वह अल्लाह तआला का दीदार करेंगे) अब उनका हाल यह होगा कि जो कुछ अब तक इन्हें मिला था, उन सबसे ज़्यादा महबूब उनके लिए अपने रब के दीदार की नेमत होगी। (मुस्लिम)

﴿168﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : لَا تَغْبِطُوا فَاجِرًا بِنِعْمَةٍ، اِنَّكَ لَا تَدْرِىْ مَا هُوَ لَاقٍ بَعْدَ مَوْتِهٖ، اِنَّ لَهٗ عِنْدَ اللهِ قَاتِلًا لَا يَمُوْتُ.

رواه الطبرانى فى الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٦٤٣

168. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम किसी गुनहगार को नेमतों में देखकर उस पर रश्क न करो, तुम्हें मालूम नहीं मौत के बाद उसके साथ क्या होने वाला है? अल्लाह तआला के यहां उसके लिए एक ऐसा क़ातिल है, जिसको कभी मौत नहीं आएगी (क़ातिल से मुराद दोज़ख़ की आग है, जिसमें वह रहेगा)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿169﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: نَارُكُمْ جُزْءٌ مِنْ سَبْعِيْنَ جُزْءًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ قِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اِنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً، قَالَ: فُضِّلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وَسِتِّيْنَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا.

رواه البخارى، باب صفة النار وانها مخلوقة، رقم: ٣٢٦٥

169. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी इस दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! यही (दुनिया की आग) काफ़ी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ की आग दुनिया की आग के मुक़ाबले में उनहत्तर दर्जा बढ़ा दी गई है। हर दर्जे की हरारत दुनिया की आग की हरारत के बराबर है। (बुख़ारी)

﴿170﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : يُؤْتَى بِاَنْعَمِ اَهْلِ الدُّنْيَا، مِنْ اَهْلِ النَّارِ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْغَةً: ثُمَّ يُقَالُ: يَا ابْنَ آدَمَ! هَلْ رَاَيْتَ خَيْرًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّبِكَ نَعِيْمٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ! وَيُؤْتَى بِاَشَدِّ النَّاسِ بُؤْسًا فِي الدُّنْيَا مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ، فَيُصْبَغُ صَبْغَةً فِي الْجَنَّةِ، فَيُقَالُ لَهُ: يَا ابْنَ آدَمَ! هَلْ رَاَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ؟ هَلْ مَرَّبِكَ شِدَّةٌ قَطُّ؟ فَيَقُوْلُ: لَا، وَاللهِ يَارَبِّ! مَامَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ، وَلَا رَاَيْتُ شِدَّةً قَطُّ.

رواه مسلم، باب صبغ انعم اهل الدنيا فى النار، رقم: ٧٠٨٨

170. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन दोज़ख़ियों में से एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा, जिसने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी निहायत ऐश व आराम के साथ गुज़ारी होगी, उसको दोज़ख़ की आग में एक ग़ोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा, आदम के बेटे! तूने कभी कोई अच्छी हालत देखी है, और क्या कभी ऐश व आराम का कोई दौर तुझ पर गुज़रा है? वह अल्लाह की क़सम खा कर कहेगा, कभी नहीं मेरे रब! उसी तरह एक शख़्स जन्नतियों में से ऐसा लाया जाएगा जिसकी ज़िन्दगी सबसे ज़्यादा तकलीफ़ में गुज़री होगी, उसको जन्नत में एक ग़ोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा : आदम के बेटे! क्या तूने कभी कोई दुख देखा है, क्या कोई दौर तुझ पर तकलीफ़ का गुज़रा है? वह अल्लाह की क़सम खा कर कहेगा, कभी नहीं मेरे रब! कभी कोई तकलीफ़ मुझ पर नहीं गुज़री और मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं देखी। (मुस्लिम)

﴿171﴾ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنْهُمْ مَنْ تَاْخُذُهُ النَّارُ اِلَى كَعْبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَاْخُذُهُ النَّارُ اِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَاْخُذُهُ النَّارُ اِلَى حُجْزَتِهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ تَاْخُذُهُ النَّارُ اِلَى تَرْقُوَتِهِ.

رواه مسلم، باب جهنم، رقم: ٧١٧٠

171. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : कुछ दोज़ख़ियों को आग उनके टख़नों तक पकड़ेगी और कुछ को उनके घुटनों तक पकड़ेगी और कुछ को उनकी कमर तक पकड़ेगी और कुछ को उनकी हंसुली (गर्दन के नीचे की हड्डी) तक पकड़ेगी। (मुस्लिम)

﴿172﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَرَاَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ ﴿اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ﴾ (البقرة:١٣٢) قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَوْ اَنَّ قَطْرَةً مِنَ الزَّقُّوْمِ قُطِرَتْ فِىْ دَارِ الدُّنْيَا لَاَفْسَدَتْ عَلٰى اَهْلِ الدُّنْيَا مَعَايِشَهُمْ، فَكَيْفَ بِمَنْ يَكُوْنُ طَعَامُهٗ.

رواه الترمذى وقال:هذا حديث حسن صحيح،باب ماجاء فى صفة شراب اهل النار، رقم:٢٥٨٥

172. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ये आयत तिलावत फ़रमाई: "اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ" तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला से डरा करो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और (कामिल) इस्लाम ही पर जान देना। (अल्लाह तआ़ला से और उनके अ़ज़ाब से डरने के बारे में) आप ﷺ ने ब्यान फ़रमाया *'ज़क़्क़ूम'* का अगर एक क़तरा दुनिया में टपक जाए तो दुनिया में बसने वालों के सामाने ज़िन्दगी को ख़राब कर दे, तो क्या हाल उस शख़्स का होगा, जिसका खाना ज़क़्क़ूम होगा? (ज़क़्क़ूम जहन्नम में पैदा होने वला एक दरख़्त है) (तिर्मिज़ी)

﴿173﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَمَّا خَلَقَ اللّٰهُ الْجَنَّةَ قَالَ لِجِبْرِيْلَ: اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا، فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَىْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَا يَسْمَعُ بِهَا اَحَدٌ اِلَّا دَخَلَهَا ثُمَّ حَفَّهَا بِالْمَكَارِهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَىْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَقَدْ خَشِيْتُ اَنْ لَا يَدْخُلَهَا اَحَدٌ، قَالَ: فَلَمَّا خَلَقَ اللّٰهُ تَعَالٰى النَّارَ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا، فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَىْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ! لَا يَسْمَعُ بِهَا اَحَدٌ فَيَدْخُلَهَا، فَحَفَّهَا بِالشَّهَوَاتِ، ثُمَّ قَالَ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ فَانْظُرْ اِلَيْهَا فَذَهَبَ فَنَظَرَ اِلَيْهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: اَىْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ وَجَلَالِكَ! لَقَدْ خَشِيْتُ اَنْ لَا يَبْقٰى اَحَدٌ اِلَّا دَخَلَهَا.

رواه ابو داؤد،باب فى خلق الجنة والنار: ٤٧٤٤

173. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को पैदा किया, तो जिबरील ﷺ से फ़रमाया :

जाओ, जन्नत को देखो, उन्होंने जाकर देखा। फिर अल्लाह तआला से आकर अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! जो कोई भी इस जन्नत का हा सुनेगा, वह उसमें ज़रूर पहुंचेगा, यानी पहुंचने की पूरी कोशिश करेगा फिर अल्ल तआला ने उसको नागवारियों से घेर दिया, यानी शरई अहकाम की पाबंदी लगा दी, जिन पर अमल करना नफ़्स को नागवार है। फिर फ़रमाया : जिबरील अब जाव देखो। चुनांचे उन्होंने जाकर देखा, फिर आकर अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! अब तो मुझे यह डर है कि इसमें कोई भी न जा सकेगा। फिर ज अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को पैदा किया तो जिबरील ﷺ से फ़रमाया : जिबरी जाओ जहन्नम को देखो। उन्होंने जाकर देखा, फिर अल्लाह तआला से आकर अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आपकी इज़्ज़त की क़सम! जो कोई भी उसका हाल सुनेगा, उस दाख़िल होने से बचेगा, यानी बचने की पूरी कोशिश करेगा। इसके बाद अल्लाह तआला ने दोज़ख़ को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से घेर दिया, फिर फ़रमाया : जिबरी ﷺ अब जाकर देखो उन्होंने जाकर देखा। फिर आकर अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब! आप की इज़्ज़त की क़सम, आपके बुलन्द मर्तबे की क़सम! अब तो मुझे यह डर है कि कोई भी जहन्नम में दाख़िल होने से न बच सकेगा। (अबूदाऊद)

तामीले अवामिर में कामयाबी का यक़ीन

अल्लाह तआला की ज़ाते आली से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह तआला के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने में दुनिया व आख़िरत की तमाम कामयाबियों का यक़ीन करना।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا﴾

[الاحزاب:٣٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए इस बात की गुंजाइश नहीं कि जब अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ किसी काम का हुक्म दे दें तो फिर उनको अपने काम में कोई अख़्तियार बाक़ी रहे, यानी इसकी गुंजाइश नहीं रहती कि वह काम करें या न करें, बल्कि अमल करना ही ज़रूरी है और जो शख़्स अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ की नाफ़रमानी करेगा, तो वह यक़ीनन खुली हुई गुमराही में मुब्तला होगा। (अहज़ाब : 36)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللهِ﴾ [النساء:٦٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हमने हर एक रसूल को इसी मक़सद के लिए भेजा कि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से उनकी इताअ़त की जाए।
(निसा : 64)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا﴾ [الحشر:٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जो कुछ तुम्हें रसूल दें वह ले लो और जिस चीज़ से रोकें रुक जाया करो जो हुक्म भी दें उसको मान लो।
(हश्र : 7)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا﴾ [الاحزاب:٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ात में अच्छा नमूना है, ख़ास तौर से उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआ़ला और क़ियामत की उम्मीद रखता है और अल्लाह तआ़ला को बहुत याद करता है।
(अहज़ाब : 21)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ﴾ [النور:٦٣]

अल्लाह का इर्शाद है : जो लोग अल्लाह तआ़ला के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि उन पर कोई आफ़त आ जाए या उनपर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल हो। (मोमिनून : 63)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [النحل:٩٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो शख़्स कोई नेक काम करे मर्द हो या औरत, बशर्तेकि ईमान वाला हो, तो हम उसे ज़रूर अच्छी ज़िन्दगी बसर कराएंगे। (यह दुनिया में होगा और आख़िरत में) उनके अच्छे कामों के बदले में उनको अज्र देंगे। (नह्ल : 97)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا﴾ [الاحزاب:٧١]

अल्लाह का इर्शाद है : और जिसने अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल की बात मानी, उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (अहज़ाब : 71)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ [ال عمران:٣١]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करते हो तो तुम मेरी फ़रमांबरदारी करो, अल्लाह तआ़ला तुमसे मुहब्बत करेंगे और तुम्हारे सब गुनाह बख़्श देंगे और अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाले मेहरबान हैं। (आले इमरान : 31)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا﴾ [مريم:٩٦]

अल्लाह का इर्शाद है : बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अ़मल किए, अल्लाह तआ़ला उनके लिए मख़्लूक़ के दिल में मुहब्बत पैदा कर देंगे। (मरयम : 96)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا﴾ [طٰه:١١٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा, उसको उसके अ़मल का पूरा बदला मिलेगा और उसको न किसी ज़्यादती का ख़ौफ़ होगा और न ही हक़तल्फ़ी का, यानी न यह होगा कि गुनाह किए बग़ैर लिख दिया जाए और न ही कोई नेकी कम लिखकर हक़तल्फ़ी की जाएगी। (ताहा : 112)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ☆ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ﴾ [الطلاق:٢،٣]

अल्लाह का इर्शाद है : और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है, तो अल्लाह तआ़ला हर मुश्किल से ख़लासी की कोई-न-कोई सूरत पैदा कर देते

हैं और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाते हैं जहां से उसको ख़्याल भी नहीं होता। (तलाक़ : 2-3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۖ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ﴾ [الانعام:٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी ही ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया, जिनको हमने दुनिया में ऐसी क़ुव्वत दी थी कि तुम को वह क़ूव्वत नहीं दी (जिस्मानी क़ुव्वत, माल की फ़रावानी, बड़े ख़ानदान वाला होना, इज़्ज़त का मिलना, उम्र का दराज़ होना, हुकूमती ताक़त का होना वग़ैरह-वग़ैरह) और हमने उन पर ख़ूब बारिशें बरसाईं, हमने उनके खेत और बाग़ों के नीचे से नहरें जारी कीं फिर (बावजूद उस क़ुव्वत व सामान के) हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और उनके बाद उनकी जगह दूसरी जमाअ़तों को पैदा कर दिया। (अन्आ़म : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا﴾ [الكهف:٤٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : माल और औलाद तो दुनिया की ज़िन्दगी की (फ़ना होने वाली) रौनक़ हैं और अच्छे आ़माल जो हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं, वह आपके रब के यहां यानी आख़िरत में सवाब के एतबार से भी हज़ारों दर्जा बेहतर हैं, यानी अच्छे आ़माल पर जो उम्मीदें वाबस्ता होती हैं वे आख़िरत में पूरी होंगी और उम्मीद से भी ज़्यादा सवाब मिलेगा। इसके बरअ़क्स माल व अस्बाब से उम्मीदें पूरी नहीं होतीं। (कहफ़ : 46)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [النحل:٩٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया में है, वह एक दिन ख़त्म हो जाएगा और जो अ़मल तुम अल्लाह तआ़ला के पास भेज दोगे वह हमेशा बाक़ी रहेगा। (नह्ल : 96)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ﴾ [القصص:٦٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो कुछ तुम को दुनिया में दिया गया है, वह तो सिर्फ़ दुनिया की चन्द दिनों की ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान और यहां की (फ़ना होने वाली) रौनक़ है और जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते? (क़सस : 60)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿174﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: بَادِرُوا بِالْاَعْمَالِ سَبْعًا، هَلْ تَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا فَقْرًا مُنْسِيًا، اَوْ غِنًى مُطْغِيًا، اَوْمَرَضًا مُفْسِدًا، اَوْهَرَمًا مُفْنِدًا، اَوْ مَوْتًا مُجْهِزًا اَوِ الدَّجَّالَ فَشَرُّ غَائِبٍ يُنْتَظَرُ اَوِ السَّاعَةَ؟ فَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ.

رواه الترمذی وقال:هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی المبادرة بالعمل،رقم:٢٣٠٦
الجامع الصحيح وهو سنن الترمذی طبع دارالباز

174. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात ज़ों से पहले नेक आमाल में जल्दी करो। क्या तुम्हें ऐसी तंगदस्ती का इंतज़ार है जो सब कुछ भुला दे, या ऐसी मालदारी का जो सरकश बना दे, या ऐसी बीमारी का नाकारा कर दे, या ऐसे बुढ़ापे का जो अक़्ल खो दे, या ऐसी मौत का जो अचानक जाए (कि बाज़ वक़्त तौबा करने का मौक़ा भी नहीं मिलता) या दज्जाल का, जो आने वाली छुपी हुई बुराइयों में बदतरीन बुराई है, या क़ियामत का? क़ियामत तो ी सख़्त और बड़ी कड़वी चीज़ है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि इंसान को इन सात चीज़ों में से किसी चीज़ के आने से पहले नेक आमाल के ज़रिए अपनी आख़िरत की तैयारी कर लेनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि इन रुकावटों में से कोई रुकावट आ जाए और इंसान आमाले सालिहा से महरूम हो जाए।

﴿175﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلَاثَةٌ: فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى وَاحِدٌ، يَتْبَعُهُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَى عَمَلُهُ.

رواه مسلم، كتاب الزهد: ٧٤٢٤

175. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैय्यत के साथ तीन चीज़ें जाती हैं। दो चीज़ें वापस आ जाती हैं और एक साथ रह जाती है। घरवाले, माल और अ़मल साथ जाते हैं, फिर घर वाले और माल वापस आ जाते हैं और अ़मल साथ रह जाता है। (मुस्लिम)

﴿176﴾ عَنْ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَطَبَ يَوْمًا فَقَالَ فِيْ خُطْبَتِهِ: اَلَا اِنَّ الدُّنْيَا عَرَضٌ حَاضِرٌ يَاْكُلُ مِنْهَا الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ اَلَا وَاِنَّ الْآخِرَةَ اَجَلٌ صَادِقٌ يَقْضِيْ فِيْهَا مَلِكٌ قَادِرٌ، اَلَا وَاِنَّ الْخَيْرَ كُلَّهُ بِحَذَافِيْرِهِ فِي الْجَنَّةِ، اَلَا وَاِنَّ الشَّرَّ كُلَّهُ بِحَذَافِيْرِهِ فِي النَّارِ اَلَا فَاعْمَلُوْا وَاَنْتُمْ مِنَ اللّٰهِ عَلٰى حَذَرٍ، وَاعْلَمُوْا اَنَّكُمْ مَعْرُوْضُوْنَ عَلٰى اَعْمَالِكُمْ، فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهُ، وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهُ.

مسند الشافعي ١/١٤٨

176. हज़रत उम्रू ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन ख़ुत्बा दिया जिसमें इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, दुनिया एक आ़रज़ी और वक़्ती सौदा है (और उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं है, इसलिए) उसमें हर अच्छे बुरे का हिस्सा है और सब उससे खाते हैं। बिलाशुबहा आख़िरत मुक़र्ररा वक़्त पर आने वाली सच्ची हक़ीक़त है और उसमें क़ुदरत रखने वाला बादशाह फ़ैसला करेगा। ग़ौर से सुनो, सारी भलाइयां और उसकी तमाम क़िस्में जन्नत में हैं और हर क़िस्म की बुराई और उसकी तमाम क़िस्में जहन्नम में हैं। अच्छी तरह समझ लो, जो कुछ करो अल्लाह तआ़ला से डरते हुए करो और समझ लो, तुम अपने-अपने आ़माल के साथ अल्लाह तआ़ला के दरबार में पेश किए जाओगे। जिस शख़्स ने ज़र्रा बराबर कोई नेकी की होगी वह उसको भी देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसको भी देख लेगा। (मुस्नद, शाफ़ई)

﴿177﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا اَسْلَمَ الْعَبْدُ فَحَسُنَ اِسْلَامُهُ يُكَفِّرُ اللّٰهُ عَنْهُ كُلَّ سَيِّئَةٍ كَانَ زَلَفَهَا وَكَانَ بَعْدَ ذٰلِكَ الْقِصَاصُ: الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا اِلٰى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ وَالسَّيِّئَةُ بِمِثْلِهَا اِلَّا اَنْ يَّتَجَاوَزَ اللّٰهُ عَنْهَا.

رواه البخاري، باب حسن إسلام المرء، رقم: ٤١

177. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब बन्दा इस्लाम क़ुबूल कर लेता है और इस्लाम का हुस्न उसकी ज़िन्दगी में आ जाता है तो जो बुराइयां उसने पहले की होती हैं, अल्लाह तआला इस्लाम की बरकत से उन सबको माफ़ फ़रमा देते हैं। इसके बाद उसकी नेकियों और बुराइयों का हिसाब यह रहता है कि एक नेकी पर दस गुना से सात सौ गुना तक सवाब दिया जाता है और बुराई करने पर वह उसी एक बुराई की सज़ा का मुस्तहिक़ होता है। हां, अलबत्ता अल्लाह तआला उससे भी दरगुज़र फ़रमा दें तो दूसरी बात है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ज़िन्दगी में इस्लाम के हुस्न का आना यह है कि दिल ईमान के नूर से रौशन हो और जिस्म अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी से आरास्ता हो।

﴿178﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ، وَتُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِىَ الزَّكَاةَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا.

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم،باب بيان الايمان والإسلام......،رقم:٩٣

178. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है क़ि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम (के अरकान में से) यह है कि (दिल व ज़बान से) तुम यह शहादत अदा करो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं (कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं) और यह कि मुहम्मद ﷺ उनके रसूल हैं और नमाज़ अदा करो, ज़कात अदा करो, माहे रमज़ान के रोज़े रखो और अगर तुम हज की ताक़त रखते हो, तो हज करो। (मुस्लिम)

﴿179﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ لَا تُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَتُقِيْمَ الصَّلٰوةَ وَتُؤْتِىَ الزَّكَاةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ، وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتَسْلِيْمُكَ عَلٰى اَهْلِكَ فَمَنِ انْتَقَصَ شَيْئًا مِنْهُنَّ فَهُوَ سَهْمٌ مِنَ الْاِسْلَامِ يَدَعُهُ، وَمَنْ تَرَكَهُنَّ كُلَّهُنَّ فَقَدْ وَلَّى الْاِسْلَامَ ظَهْرَهُ.

رواه الحاكم في المستدرك ٢١/١ وقال: هذا الحديث مثل الاول في الاستقامة

179. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो और उनके साथ किसी को

शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, हज करो, नेकी का हुक्म करो, बुराई से रोको, और अपने घर वालों को सलाम करो। जिस शख़्स ने उनमें से किसी चीज़ में कुछ कमी की तो वह इस्लाम के एक हिस्से को छोड़ रहा है और जिसने उन सब को बिल्कुल ही छोड़ दिया, उसने इस्लाम से मुंह फेर लिया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾180﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْإِسْلَامُ ثَمَانِيَةُ أَسْهُمٍ، الْإِسْلَامُ سَهْمٌ وَالصَّلٰوةُ سَهْمٌ وَالزَّكَاةُ سَهْمٌ وَحَجُّ الْبَيْتِ سَهْمٌ وَالصِّيَامُ سَهْمٌ وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ سَهْمٌ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ سَهْمٌ وَالْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ سَهْمٌ وَقَدْ خَابَ مَنْ لَا سَهْمَ لَهُ.

رواه البزار وفيه يزيد بن عطاء وثقه احمد وغيره وضعفه جماعة وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ١/١٩١

180. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम के आठ हिस्से (अहम) हैं। ईमान एक हिस्सा है, नमाज़ पढ़ना एक हिस्सा है, ज़कात देना एक हिस्सा है, हज करना एक हिस्सा है, अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना एक हिस्सा है, रमज़ान के रोज़े रखना एक हिस्सा है, नेकी का हुक्म करना एक हिस्सा है, बुराई से रोकना एक हिस्सा है। बिलाशुबहा वह शख़्स नाकाम है, जिसका (इस्लाम के इन अहम हिस्सों में से किसी में भी) कोई हिस्सा नहीं। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾181﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْإِسْلَامُ أَنْ تُسْلِمَ وَجْهَكَ لِلّٰهِ وَتَشْهَدَ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ وَتُقِيْمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ.

(الحديث) رواه احمد ١/٣١٩

181. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम अपने आप को (अक़ाइद और आमाल में) अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दो और (दिल व ज़बान से) तुम यह शहादत अदा करो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं (कोई ज़ात इबादत व बन्दगी के लायक़ नहीं) मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो। (मुस्नद अहमद)

﴾182﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: دُلَّنِيْ عَلٰى عَمَلٍ إِذَا عَمِلْتُهُ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، قَالَ: تَعْبُدُ اللهَ لَا تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيْمُ الصَّلَاةَ الْمَكْتُوْبَةَ، وَتُؤَدِّي

الزَّكَاةَ الْمَفْرُوْضَةَ، وَتَصُوْمُ رَمَضَانَ،قَالَ:وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ! لَا اَزِيْدُ عَلٰی هٰذَا،فَلَمَّا وَلّٰی قَالَ النَّبِیُّ ﷺ : مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يَنْظُرَ اِلٰی رَجُلٍ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَلْيَنْظُرْ اِلٰی هٰذَا.

رواه البخاری،باب وجوب الزكاة، رقم:١٣٩٧

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि देहात के रहने वाले एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जिसके करने से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की इबादत किया करो, किसी को उनका शरीक न ठहराओ, फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा करो, फ़र्ज़ ज़कात अदा किया करो और रमज़ान के रोज़े रखा करो। उन साहब ने अ़र्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! (जो आ़माल आप ने फ़रमाए हैं, वैसे ही करूंगा) उनमें कोई इज़ाफ़ा नहीं करूंगा। फिर जब वह साहब चले गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी जन्नती को देखना चाहता हो वह उनको देख ले। (बुख़ारी)

﴿183﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلٰی رَسُوْلِ اللهِ ﷺ مِنْ اَهْلِ نَجْدٍ ثَائِرَ الرَّأْسِ نَسْمَعُ دَوِیَّ صَوْتِهٖ وَلَا نَفْقَهُ مَا يَقُوْلُ حَتّٰی دَنَا فَاِذَا هُوَ يَسْاَلُ عَنِ الْاِسْلَامِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِی الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ، فَقَالَ: هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَصِيَامُ رَمَضَانَ، قَالَ: هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهٗ؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ: وَذَكَرَ لَهٗ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الزَّكَاةَ، قَالَ:هَلْ عَلَیَّ غَيْرُهَا؟ قَالَ: لَا، اِلَّا اَنْ تَطَوَّعَ، قَالَ: فَاَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُوْلُ: وَاللهِ لَا اَزِيْدُ عَلٰی هٰذَا وَلَا اَنْقُصُ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَفْلَحَ اِنْ صَدَقَ.

رواه البخاری، باب الزكاة من الاسلام، رقم:٤٦

183. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि अह्ले नज्द में एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उनके सर के बाल बिखरे हुए थे। हम उनकी आवाज़ की गुंगुनाहट तो सुन रहे थे (लेकिन फ़ासले पर होने की वजह से) उनकी बात हमें समझ में नहीं आ रही थी, यहां तक कि वे रसूलुल्लाह ﷺ के क़रीब पहुंच गए, तो हमें समझ में आया कि वह आप से इस्लाम (के आ़माल) के बारे में दरयाफ़्त कर रहे हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने (उनके जवाब में) इर्शाद फ़रमाया : दिन रात में पांच (फ़र्ज़) नमाज़ें हैं। उन साहब ने अ़र्ज़ किया : क्या इन नमाज़ों के अलावा भी कोई नमाज़ मेरे ऊपर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! लेकिन अगर तुम नफ़्ल पढ़ना चाहो तो पढ़ सकते हो। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ान

के रोज़े फ़र्ज़ हैं। उन्होंने अ़र्ज़ किया : क्या उन रोज़ों के अलावा भी कोई रोज़ा मुझ पर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! मगर नफ़्ल रोज़ा रखना चाहो तो रख सकते हो। (इसके बाद) रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़कात का ज़िक्र फ़रमाया। इस पर भी उन्होंने अ़र्ज़ किया : क्या ज़कात के अलावा भी कोई सदक़ा मुझ पर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं! मगर नफ़्ली सदक़ा देना चाहो तो दे सकते हो। इसके बाद वह साहब यह कहते हुए चले गए : अल्लाह की क़सम! मैं इन आ़माल में न तो ज़्यादती करूंगा और न ही कमी करूंगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर इस शख़्स ने सच कहा, तो कामयाब हो गया। (बुख़ारी)

﴿184﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ اَصْحَابِهِ: بَايِعُوْنِيْ عَلٰى اَلَّا تُشْرِكُوْا بِاللهِ شَيْئًا، وَلَا تَسْرِقُوْا، وَلَا تَزْنُوْا، وَلَا تَقْتُلُوْا اَوْلَادَكُمْ، وَلَا تَاْتُوْا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُوْنَهُ بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَاَرْجُلِكُمْ، وَلَا تَعْصُوْا فِيْ مَعْرُوْفٍ، فَمَنْ وَفٰى مِنْكُمْ فَاَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ اَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا فَعُوْقِبَ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ اَصَابَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا ثُمَّ سَتَرَهُ اللهُ فَهُوَ اِلَى اللهِ، اِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ، وَاِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ، فَبَايَعْنَاهُ عَلٰى ذٰلِكَ. رواه البخاري، كتاب الايمان،رقم:١٨

184. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा की एक जमाअ़त से, जो आप के गिर्द बैठी थी, मुख़ातब होकर फ़रमाया : मुझसे इस पर बैअ़त करो कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करोगे, चोरी नहीं करोगे, ज़िना नहीं करोगे, (फ़क़्र के डर से) अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगे, जान-बूझ कर किसी पर बुहतान नहीं लगाओगे और शरई हुक्मों में नाफ़रमानी नहीं करोगे। जो कोई तुममें से इस अ़हद को पूरा करेगा, उसका अज्र अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मा है और जो शख़्स (शिर्क के अलावा) उनमें से किसी गुनाह में मुब्तला हो जाए और फिर दुनिया में उसको इस गुनाह की सज़ा भी मिल जाए (जैसे हद वग़ैरह जारी हो जाए) तो वह सज़ा उसके गुनाह के लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगी और अगर अल्लाह तआ़ला ने उनमें से किसी गुनाह पर पर्दापोशी फ़रमाई (और दुनिया में उसे सज़ा न मिली) तो उसका मामला अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर है, चाहें (वह अपने फ़ज़्ल व करम से) आख़िरत में भी दरगुज़र फ़रमाएं और चाहें तो अ़ज़ाब दें। (हज़रत उबादा ﷺ फ़रमाते हैं) कि हमने इन बातों पर आप ﷺ से बैअ़त की। (बुख़ारी)

﴿185﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَوْصَانِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِعَشْرِ كَلِمَاتٍ قَالَ: لَا

تُشْرِكْ بِاللهِ وَاِنْ قُتِلْتَ وَحُرِقْتَ، وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَيْكَ وَاِنْ اَمَرَاكَ اَنْ تَخْرُجَ مِنْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ، وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلَاةً مَكْتُوْبَةً مُتَعَمِّدًا، فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللهِ، وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَاِنَّهُ رَاْسُ كُلِّ فَاحِشَةٍ، وَاِيَّاكَ وَالْمَعْصِيَةَ فَاِنَّ بِالْمَعْصِيَةِ حَلَّ سَخَطُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ، وَاِيَّاكَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَاِنْ هَلَكَ النَّاسُ،وَاِذَا اَصَابَ النَّاسَ مَوْتٌ وَاَنْتَ فِيْهِمْ فَاثْبُتْ، وَاَنْفِقْ عَلٰى عِيَالِكَ مِنْ طَوْلِكَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْهُمْ عَصَاكَ اَدَبًا وَاَخِفْهُمْ فِى اللهِ. رواه احمد ٥/٢٣٨

185. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे दस बातों की सीयत फ़रमाई—1. अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करना अगरचे तुम्हें क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए। 2. वालिदैन की नाफ़रमानी न करना अगरचे वह तुम्हें इस बात का हुक्म दें कि बीवी को छोड़ दो और सारा माल र्च कर दो। 3. फ़र्ज़ नमाज़ जान-बूझ कर न छोड़ना, क्योंकि जो शख़्स नमाज़ जान-बूझ कर छोड़ देता है वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी से निकल जाता है 4. राब न पीना, क्योंकि यह हर बुराई की जड़ है। 5. अल्लाह तआला की नाफ़रमानी न करना, क्योंकि नाफ़रमानी की वजह से अल्लाह की नाराज़गी उतरती है। 6. मैदाने जंग से न भागना, अगरचे तुम्हारे साथी हलाक हो जाएं। 7. जब लोगों में मौत (वबा की सूरत में) आम हो जाए (जैसे ताऊन वग़ैरह) और तुम उनमें मौजूद हो तो वहां से न भागना। 8. घर वालों पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ ख़र्च करना, 9. (तरबीयत के लिए) उन पर से लकड़ी न हटाना। 10. उनको अल्लाह तआला से डराते रहना। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में वालिदैन की इताअत के बारे में जो इर्शाद फ़रमाया है वह इताअत के आला दर्जा का ब्यान है। जैसे इसी हदीस शरीफ़ में यह फ़रमान कि *"अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करना, अगरचे तुम्हें क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए"* आला दर्जे की बात है, क्योंकि ऐसी सूरत में ज़बान से कलिमा-ए-कुफ़्र कह देने की गुंजाइश है जबकि दिल ईमान पर मुतमइन हो। (मिरकात)

﴿186﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَاَقَامَ الصَّلَاةَ، وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ اَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، جَاهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ اَوْ جَلَسَ فِىْ اَرْضِهِ الَّتِىْ وُلِدَ فِيْهَا فَقَالُوا: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَفَلَا نُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ؟ قَالَ: اِنَّ فِى الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ اَعَدَّهَا اللهُ لِلْمُجَاهِدِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ، مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ

وَالْاَرْضِ، فَاِذَا سَاَلْتُمُ اللهَ فَاسْاَلُوْهُ الْفِرْدَوْسَ فَاِنَّهٗ اَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَاَعْلَى الْجَنَّةِ وَفَوْقَهٗ عَرْشُ الرَّحْمٰنِ وَمِنْهُ تَفَجَّرُ اَنْهَارُ الْجَنَّةِ. رواه البخاري، باب درجات المجاهدين في سبيل الله، رقم: ٢٧٩٠

186. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला पर और उनके रसूल पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम करे और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे, तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे होगा कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएं, ख़्वाह उसने अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद किया हो या उसी सरज़मीन पर रह रहा हो, जहां उसकी पैदाइश हुई यानी जिहाद न किया हो। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या लोगों को यह ख़ुशख़बरी न सुना दें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (नहीं) क्योंकि जन्नत में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह तआला ने अपने रास्ते में जिहाद पर जाने वालों के लिए तैयार कर रखे हैं जिनमें से हर दो दर्जे के दर्मियान इतना फ़ासला है, जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान फ़ासला है। जब तुम अल्लाह तआला से जन्नत मांगो तो जन्नतुल फ़िरदौस मांगा करो, क्योंकि वह जन्नत का सबसे बेहतरीन और सबसे आला मक़ाम है और उसके ऊपर रहमान का अ़र्श है और इसी से जन्नत की नहरें फूटती हैं। (बुख़ारी)

﴿187﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَمْسٌ مَنْ جَاءَ بِهِنَّ مَعَ اِيْمَانٍ دَخَلَ الْجَنَّةَ مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ عَلٰى وُضُوْئِهِنَّ وَرُكُوْعِهِنَّ وَسُجُوْدِهِنَّ وَمَوَاقِيْتِهِنَّ وَصَامَ رَمَضَانَ وَحَجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَآتَى الزَّكَاةَ طَيِّبَةً بِهَا نَفْسُهٗ وَاَدَّى الْاَمَانَةَ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَمَا اَدَاءُ الْاَمَانَةِ؟ قَالَ الْغُسْلُ مِنَ الْجَنَابَةِ اِنَّ اللهَ لَمْ يَاْمَنِ ابْنَ آدَمَ عَلٰى شَيْءٍ مِنْ دِيْنِهٖ غَيْرَهَا. رواه الطبراني باسناد جيد، الترغيب ١/٢٤١

187. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ईमान के साथ पांच अ़मल करता हुआ (अल्लाह तआला की बारगाह में) आएगा, वह जन्नत में दाख़िल होगा—1. पांच नमाज़ों को उनके वक़्त पर एहतमाम से इस तरह पढ़े कि उनका वुज़ू और रुकूअ़-सज्दा सही तौर पर करे, 2. रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखे, 3. अगर हज की ताक़त हो तो हज करे, 4. ख़ुशदिली से ज़कात दे और 5. अमानत अदा करे। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! अमानत के अदा करने का क्या मतलब है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जनाबत का गुस्ल करना, क्योंकि अल्लाह तआला ने आदम के बेटे के दीनी आ़माल में से किसी अ़मल पर एतमाद नहीं फ़रमाया, सिवाए गुस्ले जनाबत के (क्योंकि गुस्ल जनाबत ऐसा छुपा

हुआ अ़मल है कि उसके करने पर अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ ही उसे आमादा कर सकता है)। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿188﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَنَا زَعِيْمٌ لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَاَسْلَمَ وَهَاجَرَ بِبَيْتٍ فِيْ رَبَضِ الْجَنَّةِ، وَبَيْتٍ فِيْ وَسَطِ الْجَنَّةِ، وَاَنَا زَعِيْمٌ لِمَنْ آمَنَ بِيْ وَاَسْلَمَ وَجَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِبَيْتٍ فِيْ رَبَضِ الْجَنَّةِ، وَبَيْتٍ فِيْ وَسَطِ الْجَنَّةِ وَبَيْتٍ فِيْ اَعْلٰى غُرَفِ الْجَنَّةِ، فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ لَمْ يَدَعْ لِلْخَيْرِ مَطْلَبًا وَلَا مِنَ الشَّرِّ مَهْرَبًا يَمُوْتُ حَيْثُ شَاءَ اَنْ يَمُوْتَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٠/٤٨٠

188. हज़रत फ़ज़ाला बिन उ़बैद अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ईमान लाए, फ़रमांबरदारी अख़्तियार करे और हिजरत करे, एक घर जन्नत के मुज़ाफ़ात में, एक घर जन्नत के दर्मियान में दिलाने का ज़िम्मेदार हूं और मैं उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ईमान लाए, फ़रमांबरदारी अख़्तियार करे और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करे, एक घर जन्नत के मुज़ाफ़ात में, एक घर जन्नत के दर्मियान में और एक घर जन्नत के बालाख़ानों में दिलाने का ज़िम्मेदार हूं। जिस शख़्स ने ऐसा किया, उसने हर क़िस्म की भलाई को हासिल कर लिया और हर क़िस्म की बुराई से बच गया अब उसकी मौत चाहे जैसे आए (वह जन्नत का मुस्तहिक़ हो गया)। (इब्ने हब्बान)

﴿189﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا يُصَلِّي الْخَمْسَ وَيَصُوْمُ رَمَضَانَ غُفِرَ لَهٗ.

(الحديث) رواه احمد ٥/٢٣٢

189. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि वह उनके साथ किसी को शरीक न करता हो, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ता हो और रमज़ान के रोज़े रखता हो उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी। (मुस्नद अहमद)

﴿190﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَاَدّٰى زَكَاةَ مَالِهٖ طَيِّبًا بِهَا نَفْسُهٗ مُحْتَسِبًا وَسَمِعَ وَاَطَاعَ فَلَهُ الْجَنَّةُ.

(الحديث) رواه احمد ٢/٣٦١

190. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो

शख़्स अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिले कि उसने अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो, अपने माल की ज़कात ख़ुशदिली के साथ सवाब की नीयत से अदा की हो और (मुसलमानों के) इमाम की बात को सुनकर उसे माना हो, तो उसके लिए जन्नत है। (मुस्नद अहमद)

﴿191﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ. رواه الترمذی وقال: حديث فضالة حديث حسن صحيح، باب ماجاء فی فضل من مات مرابطا، رقم: ١٦٢١

191. हज़रत फ़ज़ाला बिन उ़बैद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स से जिहाद करे, यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ चलने की कोशिश करे। (तिर्मिज़ी)

﴿192﴾ عَنْ عُتْبَةَ بْنِ عَبْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ اَنَّ رَجُلًا يَخِرُّ عَلٰى وَجْهِهٖ مِنْ يَوْمِ وُلِدَ اِلٰى يَوْمِ يَمُوْتُ فِىْ مَرْضَاةِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ لَحَقَّرَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه احمد والطبرانی فی الكبير وفيه: بقية وهو مدلس ولكنه صرح بالتحديث وبقية رجاله وثقوا،مجمع الزوائد١/٢١٠

192. हज़रत उ़त्बा बिन अ़ब्द ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स अपनी पैदाइश के दिन से मौत के दिन तक अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए मुंह के बल (सज्दा में) पड़ा रहे, तो क़ियामत के दिन वह अपने इस अ़मल को भी कम समझेगा। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿193﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَصْلَتَانِ مَنْ كَانَتَا فِيْهِ كَتَبَهُ اللهُ شَاكِرًا صَابِرًا، وَمَنْ لَمْ تَكُوْنَا فِيْهِ لَمْ يَكْتُبْهُ اللهُ شَاكِرًا وَلَا صَابِرًا: مَنْ نَظَرَ فِىْ دِيْنِهٖ اِلٰى مَنْ هُوَفَوْقَهُ فَاقْتَدٰى بِهٖ، وَمَنْ نَظَرَ فِىْ دُنْيَاهُ اِلٰى مَنْ هُوَ دُوْنَهُ فَحَمِدَ اللهَ عَلٰى مَا فَضَّلَهُ بِهٖ عَلَيْهِ، كَتَبَهُ اللهُ شَاكِرًا وَصَابِرًا وَمَنْ نَظَرَ فِىْ دِيْنِهٖ اِلٰى مَنْ هُوَدُوْنَهُ وَنَظَرَ فِىْ دُنْيَاهُ اِلٰى مَنْ هُوَفَوْقَهُ فَاَسِفَ عَلٰى مَافَاتَهُ مِنْهُ، لَمْ يَكْتُبْهُ اللهُ شَاكِرًا وَلَاصَابِرًا. رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب،باب انظروا الى من هو اسفل منكم،رقم: ٢٥١٢

193. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स में दो आदतें हों, अल्लाह तआ़ला उसको

शाकिरीन और साबिरीन की जमाअ़त में शुमार करते हैं और जिसमें ये दो आदतें न पाई जाएं तो अल्लाह तआ़ला उसको शुक्र और सब्र करने वालों में नहीं लिखते। जो शख़्स दीन में अपने से बेहतर को देखे और उसकी पैरवी करे और दुनिया के बारे में अपने से कम दर्जा के लोगों को देखे और उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे कि (अल्लाह तआ़ला ने महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से) उसको उन लोगों से बेहतर हालत में रखा है, तो अल्लाह तआ़ला उसको शुक्र और सब्र करने वालों में लिख देते हैं और जो शख़्स दीन के बारे में अपने से कम तर लोगों को देखे और दुनिया के बारे में अपने से ऊंचे लोगों को देखे और दुनिया के कम मिलने पर अफ़सोस करे तो अल्लाह तआ़ला न उसको सब्र करने वालों में शुमार फ़रमाएंगे, न शुक्रगुज़ारों में शुमार फ़रमाएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿194﴾ عَنْ اَبِی هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ. رواه مسلم،باب الدنيا سجن للمؤمن......،رقم:٧٤١٧

194. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : एक मोमिन के लिए जन्नत में जो नेमतें तैयार हैं इस लिहाज़ से यह दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जो हमेशा का अ़ज़ाब है उस लिहाज़ से दुनिया उसके लिए जन्नत है। (मिरक़ात)

﴿195﴾ عَنْ اَبِی هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا اتُّخِذَ الْفَیْءُ دُوَلًا، وَالْاَمَانَةُ مَغْنَمًا، وَالزَّكَاةُ مَغْرَمًا، وَتُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّيْنِ، وَاَطَاعَ الرَّجُلُ امْرَاَتَهُ وَعَقَّ اُمَّهُ، وَاَدْنٰى صَدِيْقَهُ وَاَقْصٰى اَبَاهُ وَظَهَرَتِ الْاَصْوَاتُ فِی الْمَسَاجِدِ، وَسَادَ الْقَبِيْلَةَ فَاسِقُهُمْ، وَكَانَ زَعِيْمُ الْقَوْمِ اَرْذَلَهُمْ، وَاُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّهِ وَظَهَرَتِ الْقَيْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ، وَشُرِبَتِ الْخُمُوْرُ، وَلَعَنَ آخِرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا فَلْيَرْتَقِبُوْا عِنْدَ ذٰلِكَ رِيْحًا حَمْرَاءَ وَزَلْزَلَةً وَخَسْفًا وَمَسْخًا وَ قَذْفًا، وَآيَاتٍ تَتَابَعُ كَنِظَامٍ قُطِعَ سِلْكُهُ فَتَتَابَعَ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فى علامة حلول المسخ والخسف،رقم:٢٢١١

195. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब ग़नीमत के माल को अपनी ज़ाती दौलत समझा जाने लगे, अमानत को ग़नीमत का माल समझा जाने लगे, यानी अमानत को अदा करने के बजाए ख़ुद उसको

इस्तेमाल कर लिया जाए, ज़कात को तावान समझा जाने लगे यानी ख़ुशी से देने के बजाए नागवारी से दी जाए। इल्म, दीन के लिए नहीं बल्कि दुनिया के लिए हासिल किया जाने लगे, आदमी बीवी की फ़रमांबरदारी और मां की नाफ़रमानी करने लगे, दोस्त को क़रीब और बाप को दूर करे, मस्जिदों में खुल्लम खुल्ला शोर मचाया जाने लगे, क़ौम की सरदारी फ़ासिक़ करने लगे, क़ौम का सरबराह क़ौम का सब से ज़लील आदमी बन जाए, आदमी का इकराम उसके शर से बचने के लिए किया जाने लगे, गाने वाली औरतों का और साज़ व बाजे का रिवाज हो जाए, शराब आम पी जाने लगे और उम्मत के बाद वाले लोग अपने से पहले लोगों को बुरा कहने लगें, उस वक़्त सुर्ख़ आंधी, ज़लज़ले, ज़मीन में धंस जाने, आदमियों की सूरत बिगड़ जाने और आसमान से पत्थरों के बरसने का इंतज़ार करना चाहिए। ऐसे ही मुसलसल आफ़ात के आने का इंतज़ार करो, जिस तरह किसी हार का धागा टूट जाए और उसके मोती पै-दर-पै जल्दी-जल्दी गिरने लगें। (तिर्मिज़ी)

﴿196﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مَثَلَ الَّذِیْ یَعْمَلُ السَّیِّئَاتِ، ثُمَّ یَعْمَلُ الْحَسَنَاتِ، کَمَثَلِ رَجُلٍ کَانَتْ عَلَیْهِ دِرْعٌ ضَیِّقَةٌ قَدْ خَنَقَتْهُ، ثُمَّ عَمِلَ حَسَنَةً فَانْفَکَّتْ حَلْقَةٌ ثُمَّ عَمِلَ حَسَنَةً اُخْرٰی فَانْفَکَّتْ حَلْقَةٌ اُخْرٰی، حَتّٰی یَخْرُجَ اِلَی الْاَرْضِ. رواه احمد ٤/١٤٥

196. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स गुनाह करता है, फिर नेक आमाल करता रहता है उसकी मिसाल उस शख़्स की-सी है जिस पर एक तंग ज़िरह हो जिसने उसका गला घोंट रखा हो। फिर वह कोई नेकी करे जिसकी वजह से उस ज़िरह की एक कड़ी खुल जाए, फिर दूसरा कोई नेक अमल करे जिसकी वजह से दूसरी कड़ी खुल जाए (उसी तरह नेकियां करता रहे और कड़ियां खुलती रहें) यहां तक कि पूरी ज़िरह खुलकर ज़मीन पर आ पड़े। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मुराद यह है कि गुनहगार गुनाहों में बंधा हुआ होता है और परेशान रहता है, नेकियां करने की वजह से गुनाहों का बंधन खुल जाता है और परेशानी दूर हो जाती है।

﴿197﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ قَالَ: مَاظَهَرَ الْغُلُوْلُ فِیْ قَوْمٍ قَطُّ اِلَّا اُلْقِیَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبُ وَلَا فَشَی الزِّنَا فِیْ قَوْمٍ قَطُّ اِلَّا کَثُرَ فِیْهِمُ الْمَوْتُ وَلَا نَقَصَ قَوْمٌ

الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِلَّا قُطِعَ عَنْهُمُ الرِّزْقُ وَلَا حَكَمَ قَوْمٌ بِغَيْرِ الْحَقِّ اِلَّا فَشَى فِيْهِمُ الدَّمُ وَلَا خَتَرَقَوْمٌ بِالْعَهْدِ اِلَّا سُلِّطَ عَلَيْهِمُ الْعَدُوُّ.

رواه الا مام مالك فى الموطا،باب ماجاء فى الغلول ص٤٧٦

197. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जब किसी क़ौम में ग़नीमत के माल के अन्दर ख़ियानत खुल्लम खुल्ला होने लगे, तो उनके दिलों में दुश्मन का रौब डाल दिया जाता है। जब किसी क़ौम में ज़िना आम तौर से होने लगे तो उसमें मौतों की कसरत हो जाती है। जब कोई क़ौम नाप तौल में कमी करने लगे, तो उसका रिज़्क़ उठा लिया जाता है, यानी उसके रिज़्क़ में बरकत ख़त्म कर दी जाती है। जब कोई क़ौम फ़ैसलों के करने में नाइन्साफ़ी करती है, तो उनमें ख़ूंरेज़ी फैल जाती है। जब कोई क़ौम अ़हद को तोड़ने लगे, तो उस पर उसके दुश्मन मुसल्लत कर दिए जाते हैं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿198﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَجُلًا يَقُوْلُ: اِنَّ الظَّالِمَ لَا يَضُرُّ اِلَّا نَفْسَهُ فَقَالَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ: بَلٰى وَاللّٰهِ حَتَّى الْحُبَارٰى لَتَمُوْتُ فِىْ وَكْرِهَا هَزْلًا لِظُلْمِ الظَّالِمِ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٦/٥٤

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक साहब को यह कहते हुए सुना कि ज़ालिम आदमी सिर्फ़ अपना ही नुक़सान करता है। इस पर हज़रत अबू हुरैरह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपना तो नुक़सान करता ही है। अल्लाह तआ़ला की क़सम! ज़ालिम के ज़ुल्म से सुर्ख़ाब (परिन्दा) भी अपने घोंसले में सूख-सूख कर मर जाता है। (बैहक़ी)

फ़ायदा : ज़ुल्म का नुक़सान ख़ुद ज़ालिम की ज़ात तक महदूद नहीं रहता इसके ज़ुल्म की नुहूसत से क़िस्म-क़िस्म की मुसीबतें नाज़िल होती रहती हैं। बारिशें बन्द हो जाती हैं, परिन्दों को भी जंगल में कहीं दाना नसीब नहीं होता, बिलआख़िर वे भूख से अपने घोंसलों में मर जाते हैं।

﴿199﴾ عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَعْنِىْ مِمَّا يُكْثِرُ اَنْ يَقُوْلَ لِاَصْحَابِهِ: هَلْ رَاٰى اَحَدٌ مِنْكُمْ مِنْ رُؤْيَا؟ قَالَ: فَيَقُصُّ عَلَيْهِ مَا شَاءَ اللّٰهُ اَنْ يَقُصَّ، وَاِنَّهُ قَالَ ذَاتَ غَدَاةٍ اِنَّهُ اَتَانِى اللَّيْلَةَ آتِيَانِ، وَاِنَّهُمَا ابْتَعَثَانِىْ وَاِنَّهُمَا قَالَا لِىْ: انْطَلِقْ، وَاِنِّى انْطَلَقْتُ مَعَهُمَا، وَاِنَّا اَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ وَاِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِصَخْرَةٍ وَاِذَا هُوَ

يَهْوِيْ بِالصَّخْرَةِ لِرَاْسِهٖ فَيَثْلَغُ رَاْسَهٗ فَيَتَدَهْدَهُ الْحَجَرُ هَاهُنَا، فَيَتْبَعُ الْحَجَرَ فَيَاْخُذُهٗ فَلَا
يَرْجِعُ اِلَيْهِ حَتّٰى يَصِحَّ رَاْسُهٗ كَمَا كَانَ، ثُمَّ يَعُوْدُ عَلَيْهِ فَيَفْعَلُ بِهٖ مِثْلَ مَافَعَلَ الْمَرَّةَ الْاُوْلٰى،
قَالَ: قُلْتُ سُبْحَانَ اللهِ، مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، فَانطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ
مُسْتَلْقٍ لِقَفَاهُ وَاِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِكَلُّوْبٍ مِنْ حَدِيْدٍ، وَاِذَا هُوَ يَاْتِيْ اَحَدَ شِقَّيْ وَجْهِهٖ
فَيُشَرْشِرُ شِدْقَهٗ اِلٰى قَفَاهُ، وَمَنْخِرَهٗ اِلٰى قَفَاهُ، وَعَيْنَهٗ اِلٰى قَفَاهُ، قَالَ وَرُبَّمَا قَالَ اَبُوْ رَجَاءٍ:
فَيَشُقُّ۔ قَالَ: ثُمَّ يَتَحَوَّلُ اِلَى الْجَانِبِ الْآخَرِ فَيَفْعَلُ بِهٖ مِثْلَ مَافَعَلَ بِالْجَانِبِ الْاَوَّلِ، فَمَا
يَفْرُغُ مِنْ ذٰلِكَ الْجَانِبِ حَتّٰى يَصِحَّ ذٰلِكَ الْجَانِبُ كَمَا كَانَ ثُمَّ يَعُوْدُ عَلَيْهِ فَيَفْعَلُ مِثْلَ مَا
فَعَلَ الْمَرَّةَ الْاُوْلٰى، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: سُبْحَانَ اللهِ، مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ،
فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى مِثْلِ التَّنُّوْرِ، قَالَ وَاَحْسِبُ اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ: فَاِذَا فِيْهِ لَغَطٌ وَاَصْوَاتٌ،
قَالَ: فَاطَّلَعْنَا فِيْهِ فَاِذَا فِيْهِ رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ، وَاِذَا هُمْ يَاْتِيْهِمْ لَهَبٌ مِنْ اَسْفَلَ مِنْهُمْ، فَاِذَا
اَتَاهُمْ ذٰلِكَ اللَّهَبُ ضَوْضَوْا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَاهٰؤُلَاءِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، قَالَ:
فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى نَهَرٍ، حَسِبْتُ اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ: اَحْمَرَ مِثْلِ الدَّمِ،وَاِذَا فِي النَّهَرِ رَجُلٌ
سَابِحٌ يَسْبَحُ، وَاِذَا عَلٰى شَطِّ النَّهَرِ رَجُلٌ قَدْ جَمَعَ عِنْدَهٗ حِجَارَةً كَثِيْرَةً، وَاِذَا ذٰلِكَ السَّابِحُ
سَبَحَ مَاسَبَحَ، ثُمَّ يَاْتِيْ ذٰلِكَ الَّذِيْ قَدْ جَمَعَ عِنْدَهُ الْحِجَارَةَ فَيَفْغَرُ لَهٗ فَاهُ فَيُلْقِمُهٗ حَجَرًا
فَيَنْطَلِقُ يَسْبَحُ، ثُمَّ يَرْجِعُ اِلَيْهِ، كُلَّمَا رَجَعَ اِلَيْهِ فَغَرَ لَهٗ فَاهُ فَاَلْقَمَهٗ حَجَرًا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا:
مَا هٰذَانِ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَجُلٍ كَرِيْهِ الْمَرْآةِ
كَاَكْرَهِ مَا اَنْتَ رَاءٍ رَجُلًا مَرْآةً، فَاِذَا عِنْدَهٗ نَارٌ يَحُشُّهَا وَيَسْعٰى حَوْلَهَا، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا:
مَا هٰذَا؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا فَاَتَيْنَا عَلٰى رَوْضَةٍ مُعْتَمَّةٍ فِيْهَا مِنْ كُلِّ لَوْنِ
الرَّبِيْعِ، وَاِذَا بَيْنَ ظَهْرَيِ الرَّوْضَةِ رَجُلٌ طَوِيْلٌ لَا اَكَادُ اَرٰى رَاْسَهٗ طُوْلًا فِي السَّمَاءِ، وَاِذَا
حَوْلَ الرَّجُلِ مِنْ اَكْثَرِ وِلْدَانٍ رَاَيْتُهُمْ قَطُّ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: مَا هٰذَا؟ مَاهٰؤُلَاءِ؟ قَالَ: قَالَا
لِيْ: اِنْطَلِقْ اِنْطَلِقْ، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَانْتَهَيْنَا اِلٰى رَوْضَةٍ عَظِيْمَةٍ لَمْ اَرَ رَوْضَةً قَطُّ اَعْظَمَ مِنْهَا
وَلَا اَحْسَنَ، قَالَ: قَالَا لِيْ: اِرْقَ، فَارْتَقَيْتُ فِيْهَا، قَالَ: فَارْتَقَيْنَا فِيْهَا فَانْتَهَيْنَا اِلٰى مَدِيْنَةٍ
مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ، فَاَتَيْنَا بَابَ الْمَدِيْنَةِ فَاسْتَفْتَحْنَا فَفُتِحَ لَنَا فَدَخَلْنَاهَا فَتَلَقَّانَا
فِيْهَا رِجَالٌ شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ كَاَحْسَنِ مَا اَنْتَ رَاءٍ، وَشَطْرٌ كَاَقْبَحِ مَا اَنْتَ رَاءٍ، قَالَ: قَالَا
لَهُمْ: اِذْهَبُوْا فَقَعُوْا فِيْ ذٰلِكَ النَّهَرِ، قَالَ: وَاِذَا نَهَرٌ مُعْتَرِضٌ يَجْرِيْ كَاَنَّ مَاءَهُ الْمَحْضُ
مِنَ الْبَيَاضِ، فَذَهَبُوْا فَوَقَعُوْا فِيْهِ، ثُمَّ رَجَعُوْا اِلَيْنَا قَدْ ذَهَبَ ذٰلِكَ السُّوْءُ عَنْهُمْ فَصَارُوْا فِيْ

اَحْسَنِ صُوْرَةٍ، قَالَ: قَالَا لِيْ: هٰذِهٖ جَنَّةُ عَدْنٍ وَهٰذَاكَ مَنْزِلُكَ، قَالَ: فَسَمَا بَصَرِيْ صُعُدًا فَاِذَا قَصْرٌ مِثْلُ الرَّبَابَةِ الْبَيْضَاءِ، قَالَ: قَالَا لِيْ: هٰذَاكَ مَنْزِلُكَ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: بَارَكَ اللهُ فِيْكُمَا، ذَرَانِيْ فَاَدْخُلَهٗ، قَالَا اَمَّا الْآنَ فَلَا وَاَنْتَ دَاخِلُهٗ، قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: فَاِنِّيْ قَدْرَاَيْتُ مُنْذُ اللَّيْلَةِ عَجَبًا، فَمَاهٰذَا الَّذِيْ رَاَيْتُ؟ قَالَ: قَالَا لِيْ: اَمَا اِنَّا سَنُخْبِرُكَ، اَمَّا الرَّجُلُ الْاَوَّلُ الَّذِيْ اَتَيْتَ عَلَيْهِ يُثْلَغُ رَاْسُهٗ بِالْحَجَرِ فَاِنَّهُ الرَّجُلُ يَاْخُذُ الْقُرْآنَ فَيَرْفِضُهٗ وَيَنَامُ عَنِ الصَّلٰوةِ الْمَكْتُوْبَةِ، وَاَمَّا الَّذِيْ اَتَيْتَ عَلَيْهِ يُشَرْشَرُ شِدْقُهٗ اِلٰى قَفَاهُ وَمَنْخِرُهٗ اِلٰى قَفَاهُ وَعَيْنُهٗ اِلٰى قَفَاهُ فَاِنَّهُ الرَّجُلُ يَغْدُوْمِنْ بَيْتِهٖ فَيَكْذِبُ الْكَذْبَةَ تَبْلُغُ الْآفَاقَ، وَاَمَّا الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ الْعُرَاةُ الَّذِيْنَ فِيْ مِثْلِ بِنَاءِ التَّنُّوْرِ فَهُمُ الزُّنَاةُ وَالزَّوَانِيْ، وَاَمَّا الرَّجُلُ الَّذِيْ اَتَيْتَ عَلَيْهِ يَسْبَحُ فِي النَّهَرِ وَيُلْقَمُ الْحِجَارَةَ فَاِنَّهٗ آكِلُ الرِّبَا، وَاَمَّا الرَّجُلُ الْكَرِيْهُ الْمَرْآةِ الَّذِيْ عِنْدَ النَّارِ يَحُشُّهَا وَيَسْعٰى حَوْلَهَا فَاِنَّهٗ مَالِكٌ خَازِنُ جَهَنَّمَ، وَاَمَّا الرَّجُلُ الطَّوِيْلُ الَّذِيْ فِي الرَّوْضَةِ فَاِنَّهٗ اِبْرَاهِيْمُ عليه السلام وَاَمَّا الْوِلْدَانُ الَّذِيْنَ حَوْلَهٗ فَكُلُّ مَوْلُوْدٍ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ. قَالَ: فَقَالَ بَعْضُ الْمُسْلِمِيْنَ: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَاَوْلَادُ الْمُشْرِكِيْنَ؟فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَاَوْلَادُ الْمُشْرِكِيْنَ، وَاَمَّا الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَانُوْا شَطْرًا مِنْهُمْ حَسَنٌ وَشَطْرًا مِنْهُمْ قَبِيْحٌ فَاِنَّهُمْ قَوْمٌ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا تَجَاوَزَاللهُ عَنْهُمْ.

رواه البخاری، باب تعبير الرؤيابعد صلاة الصبح،رقم: ٧٠٤٧

199. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ अक्सर अपने सहाबा से पूछा करते थे कि तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? जो कोई ख़्वाब ब्यान करता (तो आप उसकी ताबीर इर्शाद फ़रमाते)। एक सुबह रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रात को मैंने ख़्वाब देखा है कि दो फ़रिश्ते मेरे पास आए और मुझे उठाकर कहा, हमारे साथ चलिए। मैं उनके साथ चल दिया। एक शख़्स पर हमारा गुज़र हुआ जो लेटा हुआ है और दूसरा उसके पास पत्थर उठाए हुए खड़ा है और वह लेटे हुए शख़्स के सर पर ज़ोर से पत्थर मारता है जिसकी वजह से उसका सर कुचल जाता है और पत्थर लुढ़क कर दूसरी तरफ़ चला जाता है। यह जाकर पत्थर उठाकर लाता है, उसके वापस आने से पहले उसका सर बिल्कुल सही जैसे पहले था वैसा ही हो जाता है। फिर यह उसी तरह पत्थर मारता है और वही कुछ होता है जो पहले हुआ था। मैंने उन दोनों से ताज्जुब से कहा, *'सुब्हानल्लाह'* ये दोनों शख़्स कौन हैं? (और यह क्या मामला हो रहा है?) उन्होंने कहा आगे चलिए। हम आगे चले, हमारा गुज़र एक शख़्स पर हुआ जो चित लेटा हुआ है और एक शख़्स उसके पास ज़ंबूर

(लोहे की कीलें निकालने वाला आला) लिए खड़ा है, जो लेटे हुए शख़्स के चेहरे के एक जानिब आकर उसका जबड़ा, नथूना, और आंख गुद्दी तक चीरता चला जाता है। फिर दूसरी जानिब भी उसी तरह करता है, अभी यह दूसरी जानिब से फ़ारिग़ नहीं होता कि पहली जानिब बिल्कुल अच्छी हो जाती है, वह उसी तरह करता रहता है। मैंने उन दोनों से कहा, *'सुब्हानल्लाह'* ये दोनों कौन हैं? उन्होंने कहा चलिए, आगे चलिए। हम आगे चले तो एक तन्नूर के पास पहुंचे, जिसमें बड़ा शोर व गुल हो रहा है। हमने उसमें झांक कर देखा तो उसमें बहुत से मर्द व औरत नंगे हैं, उनके नीचे से आग का एक शोला आता है, जब वह उनको अपनी लपट में लेता है तो वे चींख़ने लगते हैं। मैंने उन दोनों से पूछा, ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा, चलिए आगे चलिए। हम आगे चले, एक नहर पर पहुंचे, जो ख़ून की तरह सुर्ख़ थी और उसमें एक शख़्स तैर रहा था और नहर के किनारे दूसरा शख़्स था, जिसमें बहुत से पत्थर जमा कर रखे थे, जब तैरने वाला शख़्स तैरते हुए उस शख़्स के पास आता है जिसने पत्थर जमा किए हुए हैं, तो यह शख़्स अपना मुंह खोल देता है तो किनारे वाला शख़्स उसके मुंह में पत्थर डाल देता है (जिसकी वजह से वह दूर) चला जाता है। और फिर तैर कर वापस उसी शख़्स के पास आता है तो अपना मुंह खोल देता है और किनारे वाला शख़्स उसके मुंह में पत्थर डाल देता है। मैंने उन दोनों से पूछा, यह दोनों शख़्स कौन हैं? उन दोनों ने कहा, आगे चलिए। फिर हम आगे चले तो जितने बदसूरत आदमी तुमने देखे होंगे उन सबसे ज़्यादा बदसूरत आदमी के पास से हम गुज़रे, उसके पास आग जल रही थी जिसको वह भड़का रहा था और उसके चारों तरफ़ दौड़ रहा था। मैंने उनसे पूछा, ये शख़्स कौन है? उन्होंने कहा, आगे चलिए। फिर हम एक ऐसे बाग़ में पहुंचे जो हरा-भरा था और उसमें मौसमे बहार के तमाम फूल थे। उस बाग़ के दर्मियान एक बहुत लम्बे साहब नज़र आए। उनके बहुत ज़्यादा लम्बे होने की वजह से मेरे लिए उनके सर को देखना मुश्किल था, उनके चारों तरफ़ बहुत सारे बच्चे थे। इतने ज़्यादा बच्चे मैंने कभी नहीं देखे। मैंने पूछा, यह कौन है? और ये बच्चे कौन हैं? उन्होंने मुझसे कहा, आगे चलिए, आगे चलिए। फिर हम चले और एक बड़े बाग़ में पहुंचे, मैंने इतना बड़ा ख़ूबसूरत बाग़ कभी नहीं देखा। उन्होंने मुझसे कहा, इसके ऊपर चढ़िए। हम उस पर चढ़े और ऐसे शहर के क़रीब पहुंचे जो इस तरह बना हुआ था कि उसकी एक ईंट सोने की थी और एक ईंट चांदी की थी। हम शहर के दरवाज़े के पास पहुंचे और उसे खुलवाया। वह हमारे लिए खोल दिया गया। हम उसमें ऐसे लोगों से मिले जिन के जिस्म का आधा हिस्सा इतना ख़ूबसूरत था कि तुमने इतना

ख़ूबसूरत न देखा होगा और आधा हिस्सा इतना बदसूरत था कि इतना बदसूरत तुमने न देखा होगा। उन दोनों फ़रिश्तों ने उन लोगों से कहा कि जाओ उस नहर में कूद जाओ। मैंने देखा सामने एक चौड़ी नहर बह रही है जिसका पानी दूध-जैसा सफ़ेद है। वे लोग उसमें कूद गए, फिर जब वह हमारे पास वापस आए तो उनकी बदसूरती ख़त्म हो चुकी थी और वह बहुत ख़ूबसरूत हो चुके थे। दोनों फ़रिश्तों ने मुझसे कहा, यह जन्नते अ़द्न है और यह आपका घर है। मेरी नज़र ऊपर उठी, तो मैंने सफ़ेद बादल की तरह एक महल देखा उन्होंने कहा यही आपका घर है। मैंने उनसे कहा *बारकल्लाह फ़ीकुमा* (अल्लाह तआ़ला तुम दोनों में बरकत दें) मुझे छोड़ो, मैं उसके अन्दर जाऊं। उन्होंने कहा, अभी नहीं लेकिन बाद में तशरीफ़ लें जाएंगे। मैंने उनसे पूछा, आज रात मैंने अजीब चीज़ें देखी हैं, ये क्या हैं? उन्होंने मुझ से कहा: अब हम आप को बताते हैं। पहला शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे और उसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था यह वह है जो क़ुरआन सीखता है और उसको छोड़ देता है (न पढ़ता है, न अ़मल करता है) और फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ कर सो जाता है। (दूसरा) वह शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे और उसके जबड़े, नथुने और आंख को गुद्दी तक चीरा जा रहा था, यह वह है जो सुबह घर से निकलकर झूठ बोलता है और वह झूठ दुनिया में फैल जाता है। (तीसरा) वे नंगे मर्द और औरतें, जिन्हें आपने तन्नूर में जलते हुए देखा था ज़िनाकार मर्द और औरतें हैं। (चौथे) वह शख़्स जिसके पास से आप गुज़रे जो नहर में तैर रहा था उसके मुंह में पत्थर डाला जा रहा था सूदख़ोर है। (पांचवां) वह बदसूरत आदमी जिसके पास से आप गुज़रे जो आग जला रहा था और उसके चारों तरफ़ दौड़ रहा था जहन्नम का दारोग़ा है जिसका नाम मालिक है। (छठे) वह साहब जो बाग़ में थे, हज़रत इब्राहीम अलैहि० हैं और वे बच्चे जो उनके चारों तरफ़ थे, ये वह हैं जो बचपन ही मे फ़ितरत (इस्लाम) पर मर गए। उस पर किसी सहाबी ने पूछा, या रसूलुल्लाह! मुश्रिकीन के बच्चों का क्या होगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुश्रिकीन के बच्चे भी (वही) थे। और वे लोग जिनका आधा जिस्म ख़ूबसूरत और आधा जिस्म बदसूरत था, ये वह लोग थे जिन्होंने अच्छे अ़मल के साथ बुरे अ़मल किए, अल्लाह तआ़ला ने उनके गुनाह माफ़ कर दिए। (बुख़ारी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ وَاَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنِّيْ لَاَعْرِفُ اُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَيْنَ الْاُمَمِ، قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ تَعْرِفُ اُمَّتَكَ؟ قَالَ: اَعْرِفُهُمْ يُؤْتَوْنَ كُتُبَهُمْ بِاَيْمَانِهِمْ وَاَعْرِفُهُمْ بِسِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ وَاَعْرِفُهُمْ بِنُوْرِهِمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ.

رواه احمد ١٩٩/٥

200. हज़रत अबूज़र और हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सारी उम्मतों में से अपनी उम्मत को क़ियामत के दिन पहचान लूंगा, सहाबा किराम ﷺ ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! आप अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? आप ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उन्हें उनके आमालनामे दाएं हाथ में दिए जाने की वजह से पहचानूंगा और उन्हें उनके चेहरों के नूर की वजह से पहचानूंगा जो सज्दों की कसरत की वजह से उन पर नुमायां होगा और उन्हें उनके एक (ख़ास) नूर की वजह से पहचानूंगा, जो उनके आगे-आगे दौड़ रहा होगा। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : यह नूर हर मोमिन के ईमान की रोशनी होगी। हर एक की ईमानी क़ुव्वत के बक़द्र उसे रौशनी मिलेगी (कश्फ़ुर्रहमान)

नमाज़

अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़ों पर पूरा करने में सबसे अहम और बुनयादी अ़मल नमाज़ है।

फ़र्ज़ नमाज़ें

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ﴾ [العنكبوت:٤٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती रहती है। (अंकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ (البقرة:٢٧٧)

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, ख़ास तौर से नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात अदा की तो, उनके रब के पास उनका सवाब महफ़ूज़ है और न उनको किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (बक़रः 277)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿قُلْ لِّعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَیُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰھُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَۃً مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا بَیْعٌ فِیْہِ وَلَا خِلٰلٌ﴾ [ابرٰھیم: ۳۱]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबंदी रखें और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से कुछ ख़ुफ़िया और एलानिया ख़ैरात भी किया करें, उस दिन के आने से पहले-पहले कि जिस दिन न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी (कि कोई चीज़ देकर नेक आ़माल ख़रीद लिए जाएं) और न उस दिन कोई दोस्ती काम आएगी (कि कोई दोस्त तुम्हें नेक आ़माल दे दे)। (इब्राहीम : 31)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ق رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ﴾

[ابرٰھیم: ٤٠]

हज़रत इब्राहीम عليه السلام ने दुआ फ़रमाई : ऐ मेरे रब! मुझको और मेरी औलाद को नमाज़ का ख़ास एहतमाम करने वाला बना दीजिए। ऐ हमारे रब! और मेरी यह दुआ क़ुबूल कर लीजिए। (इब्राहीम : 40)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِدُلُوْکِ الشَّمْسِ اِلٰی غَسَقِ الَّیْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ط اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ کَانَ مَشْھُوْدًا﴾ [بنی اسرائیل:۷۸]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : सूरज के ज़वाल से लेकर रात के अंधेरे होने तक नमाज़ें अदा किया कीजिए, यानी ज़ुह्र, अ़स्र, मग़्रिब, इशा और फ़ज्र की नमाज़ भी अदा किया कीजिए। बेशक फ़ज्र की नमाज़ (आ़माल लिखने वाले) फ़रिश्तों के हाज़िर होने का वक़्त है। (बनी इस्राईल : 78)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَالَّذِیْنَ ھُمْ عَلٰی صَلَوٰتِھِمْ یُحَافِظُوْنَ﴾ [المؤمنون:۹]

(अल्लाह तआ़ला ने कामयाब ईमान वालों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई कि) वे अपनी फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबंदी करते हैं। (मोमिनून : 9)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوۃِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَۃِ فَاسْعَوْا اِلٰی ذِکْرِ اللہِ وَذَرُوا الْبَیْعَ ط ذٰلِکُمْ خَیْرٌ لَّکُمْ اِنْ کُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴾ [الجمعۃ:۹]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब जुमा के दिन जुमा की नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो तुम अल्लाह तआ़ला की याद यानी ख़ुत्बा और नमाज़ की तरफ़ फ़ौरन चल दिया करो और ख़रीद व फ़रोख़्त (और उसी तरह दूसरे मशाग़िल) छोड़ दिया करो। यह बात तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम्हें कुछ समझ हो। (जुमुअ: 9)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلٰى خَمْسٍ: شَهَادَةِ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ، وَاِقَامِ الصَّلَاةِ، وَاِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالْحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ.

رواه البخاري،باب دعاؤكم ايمانكم......،رقم:٨

1. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद पांच स्तूनों पर क़ायम की गई है : *'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'* की गवाही देना यानी इस हक़ीक़त की गवाही देना कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं; नमाज़ क़ायम करना; ज़कात अदा करना; हज करना और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखना। (बुख़ारी)

﴿ 2 ﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ رَحِمَهُ اللهُ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنْ اَجْمَعَ الْمَالَ، وَاَكُوْنَ مِنَ التَّاجِرِيْنَ، وَلٰكِنْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنْ: سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ، وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ.

رواه البغوي في شرح السنه، مشكاة المصابيح،رقم:٥٢٠٦

2. हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे यह हुक्म नहीं दिया गया कि मैं माल जमा करूं और ताजिर बनूं, बल्कि मुझे यह हुक्म दिया गया है कि आप अपने रब की तस्बीह और तारीफ़ करते रहें, नमाज़ पढ़ने वालों में शामिल रहें और अपने रब की इबादत में मशगूल रहें, यहां तक कि आप को मौत आ जाए। (शरहुस्सुन्नः, मिशकातुल मसाबीह)

﴿ 3 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي سُؤَالِ جِبْرَئِيْلَ إِيَّاهُ عَنِ الْإِسْلَامِ فَقَالَ: الْإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ، وَأَنْ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَتَحُجَّ الْبَيْتَ، وَتَعْتَمِرَ، وَتَغْتَسِلَ مِنَ الْجَنَابَةِ، وَأَنْ تُتِمَّ الْوُضُوْءَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ قَالَ: فَإِذَا فَعَلْتُ ذٰلِكَ فَأَنَا مُسْلِمٌ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: صَدَقْتَ.

رواه ابن خزيمة ١/٤

3. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से जिबरील ؑ ने (जबकि वह एक अजनबी शख़्स की शक्ल में हाज़िर हुए थे) इस्लाम के बारे में सवाल किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम यह है कि तुम (दिल व ज़बान से) इस बात की शहादत अदा करो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। नमाज़ पढ़ो, ज़कात अदा करो, हज और उमरा करो, जनाबत से पाक होने के लिए गुस्ल करो, वुज़ू को पूरा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। हज़रत जिबरील ؑ ने पूछा : जब मैं ये सारे आ़माल कर लूं तो क्या मैं मुसलमान हो जाऊंगा? इर्शाद फ़रमाया : हां। हज़रत जिबरील ؑ ने अर्ज़ किया, आपने सच फ़रमाया। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿ 4 ﴾ عَنْ قُرَّةَ بْنِ دَعْمُوْصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَلْفَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقُلْنَا: يَارَسُوْلَ اللهِ! مَا تَعْهَدُ إِلَيْنَا؟ قَالَ: أَعْهَدُ إِلَيْكُمْ أَنْ تُقِيْمُوا الصَّلَاةَ وَتُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَتَحُجُّوا الْبَيْتَ الْحَرَامَ وَتَصُوْمُوا رَمَضَانَ فَإِنَّ فِيْهِ لَيْلَةً خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ وَتُحَرِّمُوا دَمَ الْمُسْلِمِ وَمَالَهُ وَالْمُعَاهِدَ إِلَّا بِحَقِّهِ وَتَعْتَصِمُوا بِاللهِ وَالطَّاعَةِ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٣٤٢

4. हज़रत क़ुर्रः बिन दामूस ﷺ फ़रमाते हैं कि हमारी मुलाक़ात नबी करीम, से हज्जतुल विदाअ़ में हुई। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप हमें किन चीज़ों की वसीयत फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुमको इस बात की वसीयत करता हूं कि नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, बैतुल्लाह का हज करो और रमज़ान के रोज़े रखो, इसमें एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। मुसलमान और ज़िम्मी (जिससे मुआ़हिदा किया हुआ हो) के क़त्ल करने को और उनके माल लेने को हराम समझो, अलबत्ता किसी जुर्म के इरतकाब पर अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ उनको सज़ा दी जाएगी और तुम्हें वसीयत करता हूं कि तुम अल्लाह तआ़ला को और उसकी फ़रमांबरदारी को मज़बूती से पकड़े रहो, यानी

हिम्मत के साथ दीन के कामों में अल्लाह तआ़ला के ग़ैर की ख़ुशनूदी और नाराज़गी की परवाह किए बग़ैर लगे रहो। (बैहक़ी)

﴿ 5 ﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ:قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ الصَّلَاةُ وَمِفْتَاحُ الصَّلَاةِ الطُّهُوْرُ . رواه احمد ٣/ ٣٤٠

5. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत की कुंजी नमाज़ है और नमाज़ की कुंजी वुज़ू है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 6 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : جُعِلَ قُرَّةُ عَيْنِىْ فِى الصَّلَاةِ.

(وهو بعض الحديث)رواه النسائى، باب حب النساء،رقم: ٣٣٩١

6. हज़रत अनस रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में रखी गई है। (नसाई)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلصَّلَاةُ عَمُوْدُ الدِّيْنِ .

رواه ابو نعيم فى الحلية وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/ ١٢٠

7. हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ दीन का सुतून है। (हिलयतुल औलिया, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 8 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ آخِرُ كَلَامِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : اَلصَّلَاةَ الصَّلَاةَ، اتَّقُوا اللهَ فِيْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ . رواه ابو داؤد، باب فى حق المملوك،رقم: ٥١٥٦

8. हज़रत अली रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने आख़िरी वसीयत यह इर्शाद फ़रमाई : नमाज़, नमाज़। अपने गुलामों और मातहतों के बारे में अल्लाह तआ़ला से डरो यानी उनके हुक़ूक़ अदा करो। (अबूदाऊद)

﴿ 9 ﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اَقْبَلَ مِنْ خَيْبَرَ، وَمَعَهُ غُلَامَانِ، فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُوْلَ اللهِ ! اَخْدِمْنَا، قَالَ: خُذْ اَيَّهُمَا شِئْتَ، قَالَ: خِرْلِىْ قَالَ: خُذْ هٰذَا وَلَا تَضْرِبْهُ، فَاِنِّىْ قَدْ رَاَيْتُهُ يُصَلِّى مَقْفَلَنَا مِنْ خَيْبَرَ، وَاِنِّىْ قَدْ نُهِيْتُ عَنْ ضَرْبِ اَهْلِ الصَّلٰوةِ.

(وهو بعض الحديث)رواه احمد والطبرانى، مجمع الزوائد ٤/ ٤٣٣

9. हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ख़ैबर से वापस तशरीफ़ लाए, आप ﷺ के साथ दो गुलाम थे। हज़रत अ़ली रज़ि॰ ने अर्ज़ किया : या

रसूलुल्लाह! हमें ख़िदमत के लिए कोई ख़ादिम दे दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन दोनों में से जो सा चाहो ले लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया : आप ही पसन्द फ़रमा दें। नबी करीम ﷺ ने उनमें से एक की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया : उसको ले लो, लेकिन उसको मारना नहीं, क्योंकि ख़ैबर से वापसी पर मैंने उसको नमाज़ पढ़ते देखा है और मुझे नमाज़ियों को मारने से मना किया गया है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 10 ﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: خَمْسُ صَلَوَاتٍ افْتَرَضَهُنَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ، مَنْ اَحْسَنَ وُضُوْءَ هُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَاَتَمَّ رُكُوْعَهُنَّ وَخُشُوْعَهُنَّ، كَانَ لَهُ عَلَى اللهِ عَهْدٌ اَنْ يَغْفِرَلَهُ، وَمَنْ لَّمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهُ عَلَى اللهِ عَهْدٌ، اِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُ، وَاِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ. رواه ابو داؤد، باب المحافظة على الصلوات، رقم: ٤٢٥

10. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला ने पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं। जो शख़्स उन नमाज़ों के लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है, उन्हें मुस्तहब वक़्त में अदा करता है, रुकूअ़ (सज्दा) इत्मीनान के साथ करता है और ख़ुशूअ़ से पढ़ता है तो अल्लाह तआ़ला का वादा है कि उसकी ज़रूर मग्फ़िरत फ़रमाएंगे और जो शख़्स उन नमाज़ों को वक़्त पर अदा नहीं करता और न ही ख़ुशूअ़ से पढ़ता है, तो उससे मग्फ़िरत का कोई वादा नहीं, चाहे मग्फ़िरत फ़रमाएं, चाहे अ़ज़ाब दें। (अबूदाऊद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ حَنْظَلَةَ الْاُسَيْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ حَافَظَ عَلَى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ عَلٰى وُضُوْءِ هَا وَمَوَاقِيْتِهَا وَرُكُوْعِهَا وَسُجُوْدِهَا يَرَاهَا حَقًّا لِلّٰهِ عَلَيْهِ حُرِّمَ عَلَى النَّارِ. رواه احمد ٤/٢٦٧

11. हज़रत हंज़ला उसैदी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स पांचों नमाज़ों की इस तरह पाबंदी करे कि वुज़ू और औक़ात का एहतमाम करे, रुकूअ़ और सज्दा अच्छी तरह करे और इस तरह नमाज़ पढ़ने को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अपने ज़िम्मा ज़रूर समझे तो उस आदमी को जहन्नम की आग पर हराम कर दिया जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 12 ﴾ عَنْ اَبِىْ قَتَادَةَ بْنِ رِبْعِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اِنِّىْ فَرَضْتُ عَلٰى اُمَّتِكَ خَمْسَ صَلَوَاتٍ، وَعَهِدْتُ عِنْدِىْ عَهْدًا، اَنَّهُ مَنْ جَاءَ

يُحَافِظْ عَلَيْهِنَّ لِوَقْتِهِنَّ اَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَمْ يُحَافِظْ عَلَيْهِنَّ فَلَا عَهْدَ لَهُ عِنْدِيْ.

رواه ابو داؤد، باب المحافظة على الصلوات،رقم: ٤٣٠

12. हज़रत अबू क़तादा बिन रिबई ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैंने तुम्हारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं और इस बात की मैंने ज़िम्मेदारी ले ली है कि जो शख़्स (मेरे पास) इस हाल में आएगा, उसने इन पांच नमाज़ों को उनके वक़्त पर अदा करने का एहतमाम किया होगा, उसको जन्नत में दाख़िल करूंगा और जिस शख़्स ने नमाज़ों का एहतमाम नहीं किया होगा, तो मुझ पर उसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं (चाहे माफ़ कर दूं या सज़ा दूं)। (अबूदाऊद)

﴿ 13 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ عَلِمَ اَنَّ الصَّلَاةَ حَقٌّ وَاجِبٌ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رواه عبدالله بن احمد فى زياداته و ابو يعلى الا انه قال: حَقٌّ مَكْتُوْبٌ وَاجِبٌ. والبزار بنحوه، ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١٥/٢

13. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझे, वह जन्नत में दाख़िल होगा।

(मुस्नद अहमद, अबू याला, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 14 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ قُرْطٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : اَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الصَّلَاةُ فَاِنْ صَلُحَتْ صَلُحَ سَائِرُ عَمَلِهِ، وَاِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهِ. رواه الطبرانى فى الاوسط ولا باس باسناده انشاء الله، الترغيب ٢٤٥/١

14. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्तिन ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। अगर नमाज़ अच्छी हुई तो बाक़ी आमाल भी अच्छे होंगे और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो बाक़ी आ़माल भी ख़राब होंगे। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 15 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: اِنَّ فُلَانًا يُصَلِّيْ فَاِذَا اَصْبَحَ سَرَقَ قَالَ: سَيَنْهَاهُ مَا يَقُوْلُ. رواه البزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٥٣١/٢

15. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से अ़र्ज़ किया : फ़्लां शख़्स (रात में) नमाज़ पढ़ता है, फिर सुबह होते ही चोरी करता है। नबी करीम

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी नमाज़ उसको इस बुरे काम से अनक़रीब ही रोक देगी। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 16 ﴾ عَنْ سَلْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الْمُسْلِمَ اِذَا تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ صَلَّى الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ، تَحَاتَّتْ خَطَايَاهُ كَمَا يَتَحَاتُّ هٰذَا الْوَرَقُ، وَقَالَ: ﴿وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ اللَّيْلِ ط اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ط ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ﴾ [هود:١١٤](وهو جزء من الحديث) رواه احمد ٥/٤٣٧

16. हज़रत सलमान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मुसलमान अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर पांचों नमाज़ें पढ़ता है, तो उसके गुनाह ऐसे ही गिर जाते हैं जैसे ये पत्ते गिर रहे हैं। फिर आप ﷺ ने क़ुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा इस तरह है। तर्जुमा : *ऐ मुहम्मद! आप दिन के दोनों किनारों और रात के कुछ हिस्सों में नमाज़ की पाबंदी किया कीजिए। बेशक नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं। ये बातें, मुकम्मल नसीहत है उन लोगों के लिए जो नसीहत क़ुबूल करने वाले हैं।* (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक दो किनारों से मुराद दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में सुबह की नमाज़ और दूसरे हिस्से में ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ें मुराद हैं। रात के कुछ हिस्सों में नमाज़ पढ़ने से मुराद मग़रिब और इशा की नमाज़ों का पढ़ना है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمُعَةُ اِلَى الْجُمُعَةِ، وَرَمَضَانُ اِلٰى رَمَضَانَ، مُكَفِّرَاتٌ مَا بَيْنَهُنَّ اِذَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ. رواه مسلم، باب الصلوات الخمس......،رقم: ٥٥٢

17. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पांचों नमाज़ें, जुमा की नमाज़ पिछले जुमा तक और रमज़ान के रोज़े पिछले रमज़ान तक दर्मियानी औक़ात के तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा हैं, जबकि उन आमाल को करने वाला कबीरा गुनाहों से बचे। (मुस्लिम)

﴿ 18 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى هٰؤُلَاءِ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ.

(الحديث) رواه ابن خزيمة في صحيحه، ٢/١٨٠

18. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इन पांच फ़र्ज़ नमाज़ों को पाबंदी से पढ़ता है वह अल्लाह तआ़ला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता। (इब्ने ख़ुज़ैमा).

﴿ 19 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلَاةَ يَوْمًا، فَقَالَ: مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَبُرْهَانًا، وَنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ يَكُن لَهُ نُوْرٌ وَلَا بُرْهَانٌ، وَلَا نَجَاةٌ، وَكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ.

رواه احمد والطبرانی فی الکبیر والا وسط، ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ۲/۲۱

19. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि एक दिन नबी करीम ﷺ ने नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़ का इहतिमाम करता है, तो नमाज़ उसके लिए क़ियामत के दिन अ़ज़ाब से बचने का ज़रिया होगी। जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम नहीं करता उसके लिए क़ियामत के दिन न नूर होगा, न (उसके पूरे ईमानदार होने की) कोई दलील होगी, न अ़ज़ाब से बचने का कोई ज़रिया होगा और वह क़ियामत के दिन फ़िरऔ़न, हामान और उबई बिन ख़लफ़ के साथ होगा। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ اَبِيْ مَالِكٍ الْاَشْجَعِيِّ عَنْ اَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ اِذَا اَسْلَمَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَّمُوْهُ الصَّلَاةَ. رواه الطبرانی فی الکبیر ۸/۳۸۰ وفی الحاشية: قال فی المجمع ۱/۲۹۳: رواه الطبرانی والبزار ورجاله رجال الصحيح

20. हज़रत अबू मालिक अशजई ﷺ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में जब कोई शख़्स मुसलमान होता, तो (सहाबा किराम ﷺ) सबसे पहले उसे नमाज़ सिखाते। (तबरानी)

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ الدُّعَاءِ اَسْمَعُ؟ قَالَ: جَوْفُ اللَّيْلِ الْآخِرُ، وَدُبُرَ الصَّلَوَاتِ الْمَكْتُوْبَاتِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن، باب حديث ينزل ربنا كل ليلة......، رقم: ۳٤۹۹

21. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : या रसूलुल्लाह! कौन-से वक़्त की दुआ़ ज़्यादा क़ुबूल होती है? इर्शाद फ़रमाया : रात के आख़िरी हिस्से में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। (तिर्मिज़ी)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهَا، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَرَاَيْتَ لَوْ اَنَّ رَجُلًا كَانَ يَعْتَمِلُ فَكَانَ بَيْنَ مَنْزِلِهِ وَمُعْتَمَلِهِ خَمْسَةُ اَنْهَارٍ، فَاِذَا اَتٰى مُعْتَمَلَهُ عَمِلَ فِيْهِ مَاشَاءَ اللّٰهُ فَاَصَابَهُ الْوَسَخُ اَوِالْعَرَقُ فَكُلَّمَا مَرَّ بِنَهرٍ اغْتَسَلَ مَاكَانَ ذٰلِكَ يُبْقِىْ مِنْ دَرَنِهِ، فَكَذٰلِكَ الصَّلَاةُ كُلَّمَا عَمِلَ خَطِيْئَةً فَدَعَا وَاسْتَغْفَرَ غُفِرَ لَهُ مَاكَانَ قَبْلَهَا . رواه البزار والطبرانى فى الاوسط والكبير وزادفيه ثُمَّ صَلّٰى صَلَاةً اِسْتَغْفَرَ غَفَرَ اللّٰهُ لَهُ مَاكَانَ قَبْلَهَا و فيه: عبدالله بن قريظ ذكره ابن حيان فى الثقات، بقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/ ٣٢

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : पांचों नमाज़ें दर्मियानी औक़ात के लिए कफ़्फ़ारा हैं, यानी एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो सग़ीरा गुनाह हो जाते हैं, वह नमाज़ की बरकत से माफ़ हो जाते हैं। उसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक शख़्स का कोई कारख़ाना है, जिसमें वह कुछ कारोबार करता है उसके कारख़ाने और मकान के दर्मियान पांच नहरें पड़ती हैं। जब वह कारख़ाने में काम करता है तो उसके बदन पर मैल लग जाता है या उसे पसीना आ जाता है। फिर घर जाते हुए हर नहर पर ग़ुस्ल करता हुआ जाता है। इस (बार-बार ग़ुस्ल करने से) उसके जिस्म पर मैल नहीं रहता। यही हाल नमाज़ का है कि जब भी कोई गुनाह कर लेता है तो दुआ इस्तग़फ़ार करने से अल्लाह तआ़ला नमाज़ से पहले के तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 23 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اُمِرْنَا اَنْ نُسَبِّحَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ وَنَحْمَدَهُ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ وَنُكَبِّرَهُ اَرْبَعًا وَّثَلَاثِيْنَ قَالَ: فَرَاٰى رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فِى الْمَنَامِ، فَقَالَ: اَمَرَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَنْ تُسَبِّحُوا فِىْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ وَتَحْمَدُوا اللّٰهَ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ وَتُكَبِّرُوا اَرْبَعًا وَثَلَاثِيْنَ ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْعَلُوا خَمْسًا وَّعِشْرِيْنَ وَاجْعَلُوا التَّهْلِيْلَ مَعَهُنَّ فَغَدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَحَدَّثَهُ فَقَالَ: افْعَلُوا.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث صحيح، باب منه ماجاء فى التسبيح والتكبير والتحميد عند المنام، رقم: ٣٤١٣، الجامع الصحيح وهوسنن الترمذى، طبع دار الكتب العلمية

23. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि हमें (नबी करीम ﷺ की तरफ़

से) हुक्म दिया गया था कि हम हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल-हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाहु अकबर 34 मर्तबा पढ़ें। एक अंसारी सहाबी ؓ ने ख़्वाब में देखा कोई साहब कहते हैं : क्या तुमको रसूलुल्लाह ﷺ ने हुक्म फ़रमाया है कि हर नमाज़ के बाद सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा, अल-हम्दु लिल्लाह 33 मर्तबा, अल्लाहु अक्बर 34 मर्तबा पढ़ो? उन्होंने कहा, जी हां! उन साहब ने कहा : हर कलिमा को 25 मर्तबा कर लो और इन कलिमात के साथ (25 मर्तबा) *ला इला-ह इल्लल्लाह* इज़ाफ़ा कर लो। चुनांचे सुबह को नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़्वाब ब्यान किया। आप ﷺ ने फ़रमाया, ऐसा ही कर लो, यानी उसकी इजाज़त फ़रमा दी। (तिर्मिज़ी)

﴿24﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِيْنَ اَتَوا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَقَالُوا: قَدْ ذَهَبَ اَهْلُ الدُّثُوْرِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلٰى وَالنَّعِيْمِ الْمُقِيْمِ فَقَالَ: وَمَاذَاكَ؟ قَالُوا: يُصَلُّوْنَ كَمَا نُصَلِّیْ، وَيَصُوْمُوْنَ كَمَا نَصُوْمُ، وَيَتَصَدَّقُوْنَ وَلَا نَتَصَدَّقُ، وَيُعْتِقُوْنَ وَلَا نُعْتِقُ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَفَلَا اُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُوْنَ بِهٖ مَنْ سَبَقَكُمْ، وَتَسْبِقُوْنَ بِهٖ مَنْ بَعْدَكُمْ؟ وَلَا يَكُوْنُ اَحَدٌ اَفْضَلَ مِنْكُمْ اِلَّا مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ. قَالُوْا: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: تُسَبِّحُوْنَ وَتُكَبِّرُوْنَ وَتَحْمَدُوْنَ فِیْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ، ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ مَرَّةً، قَالَ اَبُوْ صَالِحٍ: فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: سَمِعَ اِخْوَانُنَا اَهْلُ الْاَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا، فَفَعَلُوا مِثْلَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ.

رواه مسلم، باب استحباب الذكر بعد الصلاة......، رقم: ١٣٤٧

24. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में एक मर्तबा फुक़रा मुहाजिरीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : मालदार बुलन्द दर्जे और हमेशा रहने वाली नेमतें ले गए। आप ﷺ ने पूछा : वह कैसे? उन्होंने अर्ज़ किया : जैसे हम नमाज़ पढ़ते हैं, वह नमाज़ पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़ा रखते हैं वह रोज़ा रखते हैं (लेकिन) वह सदक़ा देते हैं हम नहीं दे सकते और वह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं कर सकते। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखा दूं कि जिसकी वजह से तुम अपने से आगे बढ़ने वालों के दर्जों को हासिल कर लो और अपने से कम दर्जे वालों से आगे बढ़ते रहो और कोई तुम से उस वक़्त तक अफ़ज़ल न हो, जब तक कि यह अमल न कर ले। उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बता दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर नमाज़ के बाद

'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' 33- 33 मर्तबा पढ़ लिए करो। (चुनांचे उन्होंने उस पर अ़मल शुरू कर दिया, लेकिन मालदारों को भी रसूलुल्लाह ﷺ का यह फ़रमान पहुंच गया, तो वे भी इसपर अ़मल करने लगे) फ़ुक़रा मुहाजिरीन ने दोबारा हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि हमारे मालदार भाइयों ने भी यह सुन लिया और वह भी यही करने लगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह तो अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसे चाहें अ़ता फ़रमा देते हैं। (मुस्लिम)

﴿25﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: مَنْ سَبَّحَ اللهَ فِی دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ ،وَحَمِدَ اللهَ ثَلَاثًاوَّثَلَاثِيْنَ وَكَبَّرَاللهَ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ ، فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَّتِسْعُوْنَ، وَقَالَ: تَمَامَ الْمِائَةِ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه مسلم باب استحباب الذكر بعد الصلاة، وبيان صفته، رقم: ١٣٥٢

25. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हर नमाज़ के बाद سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'* 33 मर्तबा, الحمد لله *'अलहम्दु लिल्लाह'* 33 मर्तबा, الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* 33 मर्तबा पढ़े, ये कुल 99 मर्तबा हुआ, और सौ की गिनती पूरी करते हुए एक मर्तबा *'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०'* पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, अगरचे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

(मुस्लिम)

﴿26﴾ عَنِ الْفَضْلِ بْنِ الْحَسَنِ الضَّمْرِيِّ اَنَّ اُمَّ الْحَكَمِ اَوْضُبَاعَةَ ابْنَتَیِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَتْهُ عَنْ اِحْدَاهُمَا اَنَّهَا قَالَتْ: اَصَابَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَبْيًا فَذَهَبْتُ اَنَا وَاُخْتِیْ وَفَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَشَكَوْنَا اِلَيْهِ مَا نَحْنُ فِيْهِ وَسَاَلْنَاهُ اَنْ يَاْمُرَلَنَا بِشَیْءٍ مِنَ السَّبْیِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَبَقَكُنَّ يَتَامٰی بَدْرٍ، وَلٰكِنْ سَاَدُلُّكُنَّ عَلٰی مَا هُوَ خَيْرٌ لَّكُنَّ مِنْ ذٰلِكَ، تُكَبِّرْنَ اللهَ عَلٰی اِثْرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَكْبِيْرَةً وَّثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَسْبِيْحَةً وَّثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَحْمِيْدَةً وَّلَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

رواه ابو داؤد، باب فی مواضع قسم الخمس ......، رقم: ٢٩٨٧

26. हज़रत फ़ज़्ल बिन हसन ज़मरी से रिवायत है कि ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब

की दो साहिबज़ादियों में से हज़रत उम्मे हकम या हज़रत ज़ुबाआ ﵂ ने यह वाक़िआ ब्यान किया कि नबी करीम ﷺ के पास कुछ क़ैदी आए। मैं और मेरी बहन और नबी करीम ﷺ की बेटी हज़रत फ़ातिमा हम तीनों आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अपनी मुश्किलों का ज़िक्र करके कुछ क़ैदी ख़िदमत के लिए मांगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ख़ादिम के देने में तो बद्र के यतीम तुम से पहले हैं, अलबत्ता मैं तुम्हें ख़ादिम से बेहतर चीज़ बताता हूं। हर नमाज़ के बाद ये तीनों कलिमे 'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' 33- 33 मर्तबा और एक मर्तबा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु व वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०' पढ़ लिया करो। (अबूदाऊद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مُعَقِّبَاتٌ لَا يَخِيْبُ قَائِلُهُنَّ اَوْ فَاعِلُهُنَّ: ثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَسْبِيْحَةً، وَثَلَاثًا وَّثَلَاثِيْنَ تَحْمِيْدَةً، وَاَرْبَعًا وَّثَلَاثِيْنَ تَكْبِيْرَةً فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ. رواه مسلم، باب استحباب الذكر بعد الصلاة...... رقم: ١٣٥٠

27. हज़रत काब बिन उजरा ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ के बाद पढ़े जाने वाले चन्द कलिमे ऐसे हैं जिनका पढ़ने वाला कभी महरूम नहीं होता। वे कलिमे हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'*, 33 मर्तबा الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* और 34 मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* हैं। (मुस्लिम)

﴿ 28 ﴾ عَنِ السَّائِبِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَمَّا زَوَّجَهُ فَاطِمَةَ بَعَثَ مَعَهُ بِخَمِيْلَةٍ، وَوِسَادَةٍ مِنْ اَدَمٍ حَشْوُهَا لِيْفٌ، وَرَحَيَيْنِ وَسِقَاءٍ، وَجَرَّتَيْنِ، فَقَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِفَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ذَاتَ يَوْمٍ: وَاللهِ لَقَدْ سَنَوْتُ حَتّٰى لَقَدِ اشْتَكَيْتُ صَدْرِيْ، قَالَ: وَقَدْ جَاءَ اللهُ اَبَاكِ بِسَبْيٍ فَاذْهَبِيْ فَاسْتَخْدِمِيْهِ، فَقَالَتْ: وَاَنَا وَاللهِ قَدْ طَحَنْتُ حَتّٰى مَجِلَتْ يَدَايَ، فَاَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ، فَقَالَ: مَا جَاءَ بِكِ اَيْ بُنَيَّةُ؟ قَالَتْ: جِئْتُ لِاُسَلِّمَ عَلَيْكَ وَاسْتَحْيَتْ اَنْ تَسْاَلَهُ وَرَجَعَتْ فَقَالَ: مَا فَعَلْتِ، قَالَتْ: اِسْتَحْيَيْتُ اَنْ اَسْاَلَهُ، فَاَتَيْنَاهُ جَمِيْعًا، فَقَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! لَقَدْ سَنَوْتُ حَتّٰى اشْتَكَيْتُ صَدْرِيْ، وَقَالَتْ فَاطِمَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: قَدْ طَحَنْتُ حَتّٰى مَجِلَتْ يَدَايَ، وَقَدْ جَاءَكَ اللهُ بِسَبْيٍ وَسَعَةٍ فَاَخْدِمْنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَاللهِ لَا اُعْطِيْكُمَا وَاَدَعُ اَهْلَ الصُّفَّةِ تَطْوٰى بُطُوْنُهُمْ لَا اَجِدُ مَا اُنْفِقُ عَلَيْهِمْ، وَلٰكِنِّيْ اَبِيْعُهُمْ وَاُنْفِقُ عَلَيْهِمْ اَثْمَانَهُمْ، فَرَجَعَا فَاَتَاهُمَا النَّبِيُّ ﷺ،

وَقَدْ دَخَلَا فِىْ قَطِيْفَتِهِمَا اِذَا غَطَّيَا رُؤُوْسَهُمَا تَكَشَّفَتْ اَقْدَامُهُمَا وَاِذَا غَطَّيَا اَقْدَامَهُمَا تَكَشَّفَتْ رُؤُوْسُهُمَا فَثَارَا، فَقَالَ: مَكَانَكُمَا ثُمَّ قَالَ: اَلَا اُخْبِرُكُمَا بِخَيْرٍ مِمَّا سَاَلْتُمَانِى؟ قَالَا: بَلٰى، فَقَالَ: كَلِمَاتٍ عَلَّمَنِيْهِنَّ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ: تُسَبِّحَانِ فِى دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا، وَتَحْمَدَانِ عَشْرًا، وَتُكَبِّرَانِ عَشْرًا، وَاِذَا اَوَيْتُمَا اِلٰى فِرَاشِكُمَا فَسَبِّحَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ، وَاحْمَدَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ، وَكَبِّرَا اَرْبَعًا وَثَلَاثِيْنَ قَالَ: فَوَاللّٰهِ مَا تَرَكْتُهُنَّ مُنْذُ عَلَّمَنِيْهِنَّ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: فَقَالَ لَهُ ابْنُ الْكَوَّاءِ: وَلَا لَيْلَةَ صِفِّيْنَ، فَقَالَ: قَاتَلَكُمُ اللّٰهُ يَا اَهْلَ الْعِرَاقِ نَعَمْ، وَلَا لَيْلَةَ صِفِّيْنَ.

رواه احمد ١/٦ ١٠٦

28. हज़रत साइब ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने जब उनकी शादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से की, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ एक चादर, एक चमड़े का तकिया, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, दो चक्कियां, एक मश्कीज़ा और दो मटके भेजे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाते हैं मैंने एक दिन हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से कहा : अल्लाह की क़सम! कुंए से डोल खींचते-खींचते मेरे सीने में दर्द हो गया, तुम्हारे वालिद के पास कुछ क़ैदी अल्लाह तआ़ला ने भेजे हैं उनकी ख़िदमत में जाकर एक ख़ादिम मांग लो। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा : मेरे हाथों में भी चक्की चलाते-चलाते गट्टे पड़ गए। चुनांचे वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में गईं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : प्यारी बेटी! कैसे आना हुआ? हज़रत फ़ातिमा ने अ़र्ज़ किया : सलाम करने आई हूं और शर्म की वजह से अपनी ज़रूरत न बता सकीं, तो यूं ही वापस आ गईं। मैंने उनसे पूछा : क्या हुआ? उन्होंने कहा : मैं तो शर्म की वजह से ख़ादिम न मांग सकी। फिर हम दोनों इकट्ठे नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कुंए से पानी खींचते-खींचते मेरे सीने में तकलीफ़ हो गई और हज़रत फ़ातिमा ने अ़र्ज़ किया : चक्की चला-चला कर मेरे हाथों में गट्टे पड़ गए। अल्लाह तआ़ला ने आप के पास क़ैदी भेजे हैं और कुछ वुस्अ़त अ़ता फ़रमाई है, इसलिए हमें भी एक ख़ादिम दे दीजिए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! सुफ़्फ़ा वाले भूख की वजह से ऐसे हाल में हैं कि उनके पेटों पर बल पड़े हुए हैं, उन पर ख़र्च करने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है, इसलिए ये गुलाम बेचकर उनकी रक़म को सुफ़्फ़ा वालों पर ख़र्च करूंगा। यह सुनकर हम दोनों वापस आ गए। रात को हम दोनों छोटे से कम्बल में लेटे हुए थे कि जब उससे सर ढांकते तो पैर खुल जाते और जब पैरों को ढांकते तो सर खुल

जाता। अचानक रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ ले आए, हम दोनों जल्दी से उठने लगे, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी जगह लेटे रहो और फ़रमाया : तुमने मुझसे जो ख़ादिम मांगा है क्या तुम्हें उससे बेहतर चीज़ न बता दूं? हमने अ़र्ज़ किया : ज़रूर बतलाइए। इर्शाद फ़रमाया : ये चन्द कलिमे मुझे जिबरील عليه السلام ने सिखलाए हैं। तुम दोनों हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा *सुब्हानल्लाह,* दस मर्तबा *अल्हम्दुलिल्लाह,* दस मर्तबा *अल्लाहु अकबर* कह लिया करो और जब बिस्तर पर लेटो तो 33 मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह',* 33 मर्तबा الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* और 34 मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* कहा करो। हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! जब से मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने ये कलिमे सिखाए हैं, मैंने उनका पढ़ना कभी न छोड़ा। इब्ने कवा रहमतुल्लाह अ़लैह ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه से पूछा, (क्या आपने) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई वाली रात में भी उन कलिमे को पढ़ना न छोड़ा? फ़रमाया : इराक़ वालो! तुम पर अल्लाह की मार हो, सिफ़्फ़ीन की लड़ाई वाली रात को भी मैंने ये कलिमे नहीं छोड़े। (मुस्नद अहमद)

﴿ 29 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خَصْلَتَانِ لَا يُحْصِيْهِمَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ اِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ، هُمَا يَسِيْرٌ، وَمَنْ يَعْمَلُ بِهِمَا قَلِيْلٌ: يُسَبِّحُ اللهَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا، وَيَحْمَدُهُ عَشْرًا، وَيُكَبِّرُ عَشْرًا قَالَ: فَاَنَا رَاَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، يَعْقِدُهَا بِيَدِهِ قَالَ: فَقَالَ: خَمْسُوْنَ وَمِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَاَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ فِي الْمِيْزَانِ، وَاِذَا اَوَى اِلٰى فِرَاشِهِ سَبَّحَ وَحَمِدَ وَكَبَّرَ مِائَةً، فَتِلْكَ مِائَةٌ بِاللِّسَانِ، وَاَلْفٌ فِي الْمِيْزَانِ، فَاَيُّكُمْ يَعْمَلُ فِي الْيَوْمِ الْوَاحِدِ اَلْفَيْنِ وَخَمْسَمِائَةِ سَيِّئَةٍ، قَالَ: كَيْفَ لَا يُحْصِيْهِمَا؟ قَالَ: يَاْتِي اَحَدَكُمُ الشَّيْطَانُ، وَهُوَ فِي صَلَاةٍ، فَيَقُوْلُ: اذْكُرْ كَذَا، اُذْكُرْ كَذَا، حَتّٰى شَغَلَهُ وَلَعَلَّهُ اَنْ لَا يَعْقِلَ، وَيَاْتِيْهِ فِيْ مَضْجَعِهِ فَلَا يَزَالُ يُنَوِّمُهُ حَتّٰى يَنَامَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: حديث صحيح ٢٥٤/٥

29. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्रू رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदतें ऐसी हैं जो मुसलमान भी उनकी पाबंदी करे, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। वे दोनों आदतें आसान हैं, लेकिन उनपर अ़मल करने वाले बहुत कम हैं। एक यह कि हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा سبحان الله *'सुब्हानल्लाह',* दस मर्तबा الحمد لله *'अलहम्दु लिल्लाह',* दस मर्तबा الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* पढ़े। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं : मैंने नबी करीम ﷺ को देखा कि अपने हाथ

की उंगलियों पर शुमार फ़रमा रहे थे कि ये (तीनों कलिमे दस-दस मर्तबा पांच नमाज़ों के बाद) पढ़ने में एक सौ पचास हुए, लेकिन आमाल के तराज़ू में (दस गुना हो जाने की वजह से) पन्द्रह सौ होंगे। दूसरी आदत यह कि जब सोने के लिए बिस्तर पर आए तो *'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर'* सौ मर्तबा पढ़े (इस तौर पर कि سبحان الله *'सुब्हानल्लाह'* 33 मर्तबा, الحمد لله *'अल-हम्दु लिल्लाह'* 33 मर्तबा, الله اكبر *'अल्लाहु अकबर'* 34 मर्तबा पढ़ लिया करे) ये पढ़ने में सौ कलिमे हो गए जिनका सवाब एक हज़ार नेकियां हो गई (अब उनकी और दिन भर की नमाज़ों के बाद की कुल मीज़ान दो हज़ार पांच सौ नेकियां हो गई)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दिन में दो हज़ार पांच सौ गुनाह कौन करता होगा? यानी इतने गुनाह नहीं होते और दो हज़ार पांच सौ नेकियां लिख दी जाती हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ ने पूछा : या रसूलुल्लाह! यह क्या बात है कि इन आदतों पर अ़मल करने वाले आदमी कम हैं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (यह इस वजह से है कि) शैतान नमाज़ में आकर कहता है कि फ़्लां ज़रूरत और फ़्लां बात याद कर, यहां तक कि उसको उन्हीं ख़्यालों में मशगूल कर देता है, ताकि इन कलिमों के पढ़ने का ध्यान न रहे और शैतान बिस्तर पर आकर सुलाता रहता है, यहां तक कि उन कलिमों को पढ़े बग़ैर ही सो जाता है। (इब्ने हब्बान)

﴾30﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ اَخَذَ بِيَدِهٖ وَقَالَ: يَا مُعَاذُ! وَاللهِ اِنِّيْ لَاُحِبُّكَ، فَقَالَ: اُوْصِيْكَ يَا مُعَاذُ! لَا تَدَعَنَّ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ تَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔ رواه ابو داؤد، باب في الاستغفار، رقم: ١٥٢٢

30. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनका हाथ पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : मुआ़ज़! अल्लाह की क़सम! मुझे तुमसे मुहब्बत है। फिर फ़रमाया : मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि किसी भी नमाज़ के बाद ये पढ़ना न छोड़ना : *'अल्लाहुम-म अइन्नी अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादतिक'* तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मेरी मदद फ़रमाइए कि मैं आपका ज़िक्र करूं और आपका शुक्र अदा करूं और आपकी अच्छी इबादत करूं। (अबूदाऊद)

﴾31﴿ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ آيَةَ الْكُرْسِيِّ

فِیْ دُبُرِ کُلِّ صَلَاۃٍ مَکْتُوْبَۃٍ، لَمْ یَمْنَعْہُ مِنْ دُخُوْلِ الْجَنَّۃِ اِلَّا اَنْ یَمُوْتَ. رواہ النسائی فی عمل الیوم واللیلۃ، رقم: ۱۰۰، وفی روایۃ: وَقُلْ ھُوَ اللہُ اَحَدٌ

رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط باسانید واحدھا جید، مجمع الزوائد ۱۰/۱۲۸

31. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करे, उसको जन्नत में जाने से सिर्फ़ उसकी मौत ही रोके हुए है। एक रिवायत में आयतुल कुर्सी के साथ सूरः *क़ुल हुवल्लाहु अहद०* पढ़ने का भी ज़िक्र है।

(अ़मलुलयौम वल्लैलः तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 32 ﴾ عَنْ حَسَنِ بْنِ عَلِیٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْھُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ آیَۃَ الْکُرْسِیِّ فِیْ دُبُرِ الصَّلَاۃِ الْمَکْتُوْبَۃِ کَانَ فِیْ ذِمَّۃِ اللہِ اِلَی الصَّلَاۃِ الْاُخْرٰی.

رواہ الطبرانی واسنادہ حسن، مجمع الزوائد ۱۰/۱۲۸

32. हज़रत हसन बिन अ़ली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ के बाद "आयतुल कुर्सी" पढ़ लेता है, वह दूसरी नमाज़ तक अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 33 ﴾ عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: مَا صَلَّیْتُ خَلْفَ نَبِیِّکُمْ ﷺ اِلَّا سَمِعْتُہٗ یَقُوْلُ حِیْنَ یَنْصَرِفُ: اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ خَطَایَایَ وَذُنُوْبِیْ کُلَّھَا، اَللّٰھُمَّ وَانْعَشْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَاھْدِنِیْ بِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ، لَا یَھْدِیْ لِصَالِحِھَا، وَلَا یَصْرِفُ سَیِّئَھَا اِلَّا اَنْتَ.

رواہ الطبرانی فی الصغیر والاوسط واسنادہ جید، مجمع الزوائد ۱۰/۱۴۵

33. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने जब भी तुम्हारे नबी ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी, उन्हें नमाज़ से फ़ारिग़ होकर यही दुआ़ मांगते हुए सुना :

तर्जुमाः या अल्लाह! मेरी तमाम ग़लतियां और गुनाह माफ़ फ़रमाइए। या अल्लाह! मुझे बुलन्दी अ़ता फ़रमाइए, मेरी कमी को दूर फ़रमाइए और मुझे अच्छे आ़माल और अच्छे अख़्लाक़ की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाइए, इसलिए कि अच्छे आ़माल और अच्छे अख़्लाक़ की हिदायत आप के अलावा और कोई नहीं दे सकता और बुरे कामों और बुरे अख़्लाक़ को आपके सिवा और कोई दूर नहीं कर सकता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 34 ﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: مَنْ صَلَّی الْبَرْدَیْنِ دَخَلَ الْجَنَّۃَ.

رواہ البخاری، باب فضل صلوۃ الفجر، رقم: ٥٧٤

34. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो ठंढी नमाज़ें पढ़ता है, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : दो ठंढी नमाज़ों से मुराद फ़ज्र और अस्र की नमाज़ है। फ़ज्र ठंडे वक़्त के इख़्तिताम पर और अ़स्र ठंढक की इब्तिदा पर अदा की जाती है। उन दोनों नमाज़ों का ख़ास तौर पर इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि फ़ज्र की नमाज़ नींद के ग़लबा की वजह से और अस्र की नमाज़ कारोबारी मशग़ूलियत की वजह से पढ़ना मुश्किल होता है, लिहाज़ा इन दो नमाज़ों का इहतिमाम करने वाला यक़ीनन बाक़ी तीन नमाज़ों का भी एहतिमाम करेगा। (मिरक़ात)

﴾ 35 ﴿ عَنْ رُوَیْبَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: لَنْ یَلِجَ النَّارَ اَحَدٌ صَلّٰی قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِھَا، یَعْنِی الْفَجْرَ وَالْعَصْرَ.

رواہ مسلم، باب فضل صلاتی الصبح والعصر ......، رقم: ١٤٣٦

35. हज़रत रुवैबा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सूरज निकलने से पहले और सूरज गुरूब होने से पहले नमाज़ पढ़ता है, यानी फ़ज्र और अ़स्र, वह जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा। (मुस्लिम)

﴾ 36 ﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ فِیْ دُبُرِ صَلَاۃِ الْفَجْرِ وَھُوَ ثَانٍ رِجْلَیْہِ قَبْلَ اَنْ یَّتَکَلَّمَ: لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ، لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ، عَشْرَ مَرَّاتٍ کُتِبَتْ لَہٗ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَمُحِیَ عَنْہُ عَشْرُ سَیِّئَاتٍ وَرُفِعَ لَہٗ عَشْرُ دَرَجَاتٍ وَکَانَ یَوْمَہٗ ذٰلِکَ فِیْ حِرْزٍ مِنْ کُلِّ مَکْرُوْہٍ وَ حَرْسٍ مِنَ الشَّیْطَانِ وَلَمْ یَنْبَغِ لِذَنْبٍ اَنْ یُدْرِکَہٗ فِیْ ذٰلِکَ الْیَوْمِ اِلَّا الشِّرْکَ بِاللّٰہِ

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن صحیح غریب، باب فی ثواب کلمۃ التوحید ......،

رقم: ٣٤٧٤ ورواہ النسائی فی عمل الیوم واللیلۃ، رقم: ١١٧ وذکر بِیَدِہِ الْخَیْرُ مکان یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ، وزادفیہ: وَکَانَ لَہٗ بِکُلِّ وَاحِدَۃٍ قَالَھَا عِتْقُ رَقَبَۃٍ، رقم: ١٢٧ورواہ النسائی ایضا فی عمل الیوم واللیلۃ، من حدیث معاذ، وزادفیہ: وَمَنْ قَالَھُنَّ حِیْنَ یَنْصَرِفُ مِنْ صَلَاۃِ الْعَصْرِ اُعْطِیَ مِثْلَ ذٰلِکَ فِیْ لَیْلَتِہٖ،

رقم:١٢٦

36. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो ाख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद (जिस तरह नमाज़ में बैठते हैं उसी तरह) दोज़ानू बैठे ुए बात करने से पहले दस मर्तबा (ये कलिमे) पढ़ता है और एक रिवायत में है कि अस्र की नमाज़ के बाद भी दस मर्तबा पढ़ लेता है, तो उसके लिए दस नेकियां लिख ो जाती हैं, दस गुनाह मिटा दिए जाते हैं, दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाते हैं, पूरे दिन हर नागवार और नापसन्दीदा चीज़ से महफ़ूज़ रहता है। ये कलिमे शैतान से बचाने े लिए पहरेदारी का काम देते हैं और उस दिन शिर्क के अलावा कोई गुनाह उसे लाक न कर सकेगा। एक रिवायत में यह भी है कि हर कलिमा पढ़ने पर उसको एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और अस्र की नमाज़ के बाद पढ़ने पर ो रात भर वही सवाब मिलता है, जो फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ने पर दिन भर मिलता है। (वह कलिमे ये हैं) **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू हुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०** ्क रिवायत में **'युह्यी व युमीतु'** की जगह **'बियदिहिल ख़ैर'** है। तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में अकेले हैं, ोई उनका शरीक नहीं, सारा मुल्क दुनिया व आख़िरत उन्हीं का है, उन्हीं के हाथ में तमामतर भलाई है और जितनी ख़ूबीयां हैं वह उन्हीं के लिए हैं, वही ज़िन्दा करते , वही मारते हैं, और वह हर चीज़ पर क़ादिर हैं। (तिर्मिज़ी, अ़मलुल यौम वल्लैल:)

﴿37﴾ عَنْ جُنْدُبٍ الْقَسْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى صَلَاةَ الصُّبْحِ فَهُوَ فِيْ ذِمَّةِ اللهِ، فَلَا يَطْلُبَنَّكُمُ اللهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ فَإِنَّهُ مَنْ يَطْلُبْهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ يُدْرِكْهُ، ثُمَّ يَكُبَّهُ عَلَى وَجْهِهِ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ. رواه مسلم، باب فضل صلاة العشاء ......، رقم: ١٤٩٤

7. हज़रत जुन्दुब क़सरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़ता है, वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आ जाता है लेहाज़ा उसे न सताओ) और इस बात का ख़्याल रखो कि अल्लाह तआ़ला अपनी हिफ़ाज़त में लिए हुए शख़्स को सताने की वजह से तुमसे किसी चीज़ का मुतालबा फ़रमा लें, क्योंकि जिस से अल्लाह तआ़ला अपनी हिफ़ाज़त में लिए हुए शख़्स के ..रे में मुतालबा फ़रमाएंगे, उसकी पकड़ फ़रमाएंगे, फिर उसे औंधे मुंह जहन्नम की आग में डाल देंगे। (मुस्लिम)

﴿38﴾ عَنْ مُسْلِمِ بْنِ الْحَارِثِ التَّمِيْمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ أَسَرَّ

اِلَيْهِ فَقَالَ: إِذَا انْصَرَفْتَ مِنْ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ فَقُلْ: اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ سَبْعَ مَرَّاتٍ فَاِنَّكَ اِذَا قُلْتَ ذٰلِكَ ثُمَّ مُتَّ فِيْ لَيْلَتِكَ كُتِبَ لَكَ جِوَارٌ مِنْهَا، وَاِذَا صَلَّيْتَ الصُّبْحَ فَقُلْ كَذٰلِكَ، فَاِنَّكَ اِنْ مُتَّ فِيْ يَوْمِكَ كُتِبَ لَكَ جِوَارٌ مِنْهَا.

رواه ابو داؤد، باب ما يقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٩

38. हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ चुपके से इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो सात मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करो 'अल्लाहुम-म अजिरनी मिनन्नार०' *"या अल्लाह मुझको दोज़ख़ से महफ़ूज़ रखिए"* जब तुम उसको पढ़ लोगे और फिर उसी रात तुम्हारी मौत आ जाए, तो दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहोगे और अगर इस दुआ को सात मर्तबा फ़ज्र की नमाज़ के बाद (भी) पढ़ लो और उसी दिन तुम्हारी मौत आ जाए तो दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहोगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने चुपके से इसलिए फ़रमाया ताकि सुनने वाले के दिल में बात की अहमियत रहे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اُمِّ فَرْوَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَيُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: الصَّلَاةُ فِيْ اَوَّلِ وَقْتِهَا.

رواه ابو داؤد، باب المحافظة على الصلوات، رقم: ٤٢٦

39. हज़रत उम्मे फ़रवा ﷺ फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि सबसे अफ़ज़ल अ़मल क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ना। (अबूदाऊद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا اَهْلَ الْقُرْآنِ! اَوْتِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ.

رواه ابو داؤد، باب استحباب الوتر، رقم: ١٤١٦

40. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कुरआन वालो! यानी मुसलमानो! वित्र पढ़ लिया करो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला वित्र हैं, वित्र पढ़ने को पसन्द फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : वित्र बेजोड़ अ़दद को कहते हैं। अल्लाह तआ़ला के वित्र होने का मतलब यह है कि उसके जोड़ का कोई नहीं। वित्र पढ़ने को पसन्द फ़रमाना भी इस वजह से है कि इस नमाज़ की रक्अ़तों की तादाद ताक़ है।

(मजमअ़ बहारुल अनवार)

﴿41﴾ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ حُذَافَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ اَمَدَّكُمْ بِصَلَاةٍ، وَهِيَ خَيْرٌ لَّكُمْ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ، وَهِيَ الْوِتْرُ، فَجَعَلَهَا لَكُمْ فِيْمَا بَيْنَ الْعِشَاءِ اِلٰى طُلُوْعِ الْفَجْرِ. رواه ابو داؤد، باب استحباب الوتر، رقم:١٤١٨

41. हज़रत ख़ारजा बिन हुज़ाफ़ा ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने एक और नमाज़ तुम्हें अ़ता फ़रमाई है जो तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर है, वह नमाज़ वित्र की नमाज़ है। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए उसका वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से फ़ज्र के तुलू होने तक मुक़र्रर फ़रमाया है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अरबों में सुर्ख़ ऊंट बहुत क़ीमती माल समझा जाता था।

﴿42﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اَوْصَانِيْ خَلِيْلِيْ ﷺ بِثَلَاثٍ: بِصَوْمِ ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَالْوِتْرِ قَبْلَ النَّوْمِ، وَرَكْعَتَيِ الْفَجْرِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٤٦٠

42. हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं, मुझे मेरे हबीब ﷺ ने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई : हर महीने तीन दिन के रोज़े रखना, सोने से पहले वित्र पढ़ना और फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नत अदा करना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : जिन्हें रात को उठने की आदत है उनके लिए उठ कर वित्र पढ़ना अफ़ज़ल है और अगर उठने की आदत नहीं तो सोने से पहले ही पढ़ लेने चाहिएं।

﴿43﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَا اَمَانَةَ لَهُ، وَلَا صَلَاةَ لِمَنْ لَا طُهُوْرَ لَهُ، وَلَا دِيْنَ لِمَنْ لَا صَلَاةَ لَهُ، اِنَّمَا مَوْضِعُ الصَّلَاةِ مِنَ الدِّيْنِ كَمَوْضِعِ الرَّأْسِ مِنَ الْجَسَدِ.

رواه الطبراني في الاوسط والصغير وقال: تفرد به الحسين بن الحكم الحِبَري، الترغيب ١/٢٤٦

43. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अमानतदार नहीं, वह कामिल ईमान वाला नहीं। जिसका वुज़ू नहीं, उसकी नमाज़ नहीं और जो नमाज़ न पढ़े उसका कोई दीन नहीं। नमाज़ का दर्जा दीन में ऐसा ही है, जैसे सर का दर्जा बदन में है, यानी जैसे सर के बग़ैर इंसान ज़िन्दा

नहीं रह सकता, उसी तरह नमाज़ के बग़ैर दीन बाक़ी नहीं रह सकता।

(तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 44 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَيْنَ الرَّجُلِ وَ بَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ.

رواه مسلم، باب بيان اطلاق اسم الكفر ......، رقم: ٢٤٧

44. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ का यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : नमाज़ का छोड़ना मुसलमान को कुफ़्र व शिर्क तक पहुंचाने वाला है। (मुस्लिम)

फ़ायदा: उलमा ने इस हदीस के कई मतलब ब्यान फ़रमाए हैं जिसमें से एक यह है कि बेनमाज़ी गुनाहों के करने पर बेबाक हो जाता है, जिसकी वजह से उसके कुफ़्र में दाख़िल होने का ख़तरा है। दूसरा यह है कि बेनमाज़ी के बुरे ख़ात्मे का अंदेशा है। (मिरक़ात)

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ:مَنْ تَرَكَ الصَّلَاةَ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ.

رواه البزار والطبراني في الكبير، وفيه: سهل بن محمود ذكره ابن ابي حاتم وقال: روى عنه احمد بن ابراهيم الدورقي وسعدان بن يزيد، قلت: وروى عنه محمد بن عبد الله المخرمي ولم يتكلم فيه احد، وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٢٦

45. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने नमाज़ छोड़ दी, वह अल्लाह तआ़ला से ऐसी हालत में मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उससे सख़्त नाराज़ होंगे। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 46 ﴾ عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ فَاتَتْهُ الصَّلَاةُ، فَكَاَنَّمَا وُتِرَ اَهْلَهُ وَمَالَهُ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤/٣٣٠

46. हज़रत नौफ़ल बिन मुआ़विया ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गई वह ऐसा है कि गोया उसके घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो। (इब्ने हब्बान)

﴿ 47 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مُرُوا اَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ اَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِيْنَ، وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ اَبْنَاءُ عَشْرٍ

سِنِيْنَ، وَفَرِّقُوا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ. رواه ابو داؤد، باب متى يؤمر الغلام بالصلاة، رقم: ٤٩٥

47. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन शुऐब ﷺ अपने बाप दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने बच्चों को सात साल की उम्र में नमाज़ का हुक्म किया करो। दस साल की उम्र में नमाज़ न पढ़ने की वजह से उन्हें मारो और इस उम्र में पहुंच कर (बहन-भाई को) अलाहिदा-अलाहिदा बिस्तरों पर सुलाओ। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मार ऐसी हो कि जिससे कोई जिस्मानी नुक़सान न पहुंचे नीज़ चेहरे पर न मारें।

बाजमाअ़त नमाज़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ﴾

[البقرة: ٤٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो, यानी जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ो।

(बक़र: 43)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 48 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُلَهُ مَدٰى صَوْتِهٖ، وَيَشْهَدُ لَهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَيَابِسٍ، وَشَاهِدُ الصَّلَاةِ يُكْتَبُ لَهٗ خَمْسٌ وَعِشْرُوْنَ صَلَاةً، وَيُكَفَّرُ عَنْهُ مَا بَيْنَهُمَا.

رواه ابوداؤد، باب رفع الصوت بالاذان، رقم: ٥١٥

48. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुअज़्ज़िन के गुनाह वहां तक माफ़ कर दिए जाते हैं, जहां तक उसकी आवाज़ पहुंचती है (यानी अगर इतनी मुसाफ़त तक की जगह उसके गुनाहों से भर जाए, तो भी वे सब गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं)। जानदार व बेजान, जो मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनते हैं, वे सब क़ियामत के दिन उसके लिए गवाही देंगे। मुअज़्ज़िन की

आवाज़ पर नमाज़ में आने वाले के लिए पचीस नमाज़ों का सवाब लिख दिया जाता है और एक नमाज़ से पिछली नमाज़ तक के दर्मियानी वक़्तों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक पचीस नमाज़ों का सवाब मुअज़्ज़िन के लिए है और उसकी एक अज़ान से पिछली अज़ान तक के दमियानी गुनाहों की माफ़ी हो जाती है। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 49 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يُغْفَرُ لِلْمُؤَذِّنِ مُنْتَهٰى اَذَانِهٖ، وَيَسْتَغْفِرُ لَهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَّيَابِسٍ سَمِعَ صَوْتَهٗ. رواه احمد والطبرانى فى الكبير والبزار الا انه قال: وَيُجِيْبُهٗ كُلُّ رَطْبٍ وَّيَابِسٍ ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٨١

49. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहां-जहां तक पहुंचती है, वहां तक उसकी मग्फ़िरत कर दी जाती है, हर जानदार और बेजान, जो उसकी अज़ान को सुनते हैं उसके लिए मग़फ़िरत की दुआ करते हैं। एक रिवायत में है कि हर जानदार और बेजान उसकी अज़ान का जवाब देते हैं। (मुस्नद अहमद, तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 50 ﴾ عَنْ اَبِىْ صَعْصَعَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ اَبُوْ سَعِيْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ : اِذَا كُنْتَ فِى الْبَوَادِىْ فَارْفَعْ صَوْتَكَ بِالنِّدَاءِ فَاِنِّىْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَسْمَعُ صَوْتَهٗ شَجَرٌ، وَلَا مَدَرٌ، وَلَا حَجَرٌ، وَلَا جِنٌّ، وَلَا اِنْسٌ اِلَّا شَهِدَ لَهٗ. رواه ابن خزيمه ١/٢٠٣

50. हज़रत अबू सअ़्सअः ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सईद ﷺ ने (मुझसे) फ़रमाया : जब तुम जंगलों में हुआ करो तो बुलन्द आवाज़ से अज़ान दिया करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुअज़्ज़िन की आवाज़ को जो दरख़्त, मिट्टी के ढेले, पत्थर, जिन्न और इंसान सुनते हैं, वे सब क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन के लिए गवाही देंगे। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿ 51 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ نَبِىَّ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ، وَالْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهٗ بِمَدِّ صَوْتِهٖ، وَيُصَدِّقُهٗ مَنْ سَمِعَهٗ مِنْ رَطْبٍ وَّ يَابِسٍ،وَلَهٗ مِثْلُ اَجْرِ مَنْ صَلّٰى مَعَهٗ. رواه النسائى، باب رفع الصوت بالاذان، رقم: ٦٤٧

51. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआला अगली सफ़ वालों पर रहमत भेजते हैं, फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं और मुअज़्ज़िन के उतने ही ज़्यादा गुनाह माफ़ किए जाते हैं, जितनी हद तक वह अपनी आवाज़ बुलन्द करे, जो जानदार व बेजान उसकी अज़ान को सुनते हैं उसकी तस्दीक़ करते हैं और मुअज़्ज़िन को उन तमाम नमाज़ियों के बराबर अज्र मिलता है, जिन्होंने उसके साथ नमाज़ पढ़ी।

(नसाई)

फ़ायदा : बाज़ उलमा ने हदीस शरीफ़ के दूसरे जुम्ले का यह मतलब भी ब्यान फ़रमाया है कि मुअज़्ज़िन के वे गुनाह जो अज़ान देने की जगह से अज़ान की आवाज़ पहुंचने की जगह तक के दर्मियानी इलाक़े मे हुए हों, सब माफ़ कर दिए जाते हैं। एक मतलब यह भी ब्यान किया गया है कि मुअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुंचती है वहां तक के रहने वाले लोगों के गुनाहों को मुअज़्ज़िन की सिफ़ारिश की वजह से माफ़ कर दिया जाएगा। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 52 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلْمُؤَذِّنُوْنَ اَطْوَلُ النَّاسِ اَعْنَاقًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ...... رقم: ٨٥٢

52. हज़रत मुआविया ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुअज़्ज़िन क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा लम्बी गर्दन वाले होंगे।

(मुस्लिम)

फ़ायदा : उलमा ने इस हदीस के कई मानी ब्यान फ़रमाए हैं। एक यह कि चूंकि मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनकर लोग मस्जिद में नमाज़ पढ़ने जाते हैं लिहाज़ा नमाज़ी ताबेअ् और मुअज़्ज़िन अस्ल हुआ और अस्ल चूंकि सरदार होता है, इसलिए उसकी गर्दन लम्बी होगी, ताकि उसका सर नुमायां नज़र आए। दूसरा यह कि चूंकि मुअज़्ज़िन को बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा, इसलिए वह अपने ज़्यादा सवाब के शौक़ में गर्दन उठा-उठा कर देखेगा, इसलिए उसकी गर्दन लम्बी नज़र आएगी। तीसरा यह कि मुअज़्ज़िन की गर्दन बुलन्द होगी, इसलिए कि वह अपने आमाल पर नादिम न होगा, और जो नादिम होता है, उसकी गर्दन झुकी हुई होती है। चौथा यह कि गर्दन लम्बी होने से मुराद यह है कि मुअज़्ज़िन हश्र के मैदान में सबसे मुम्ताज़ नज़र आएगा। बाज़ उलमा के नज़दीक हदीस

शरीफ़ का तर्जुमा यह है कि क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन जन्नत की तरफ़ तेज़ी से जाएंगे। (नव्वी)

﴿ 53 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَذَّنَ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً، وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَكُتِبَ لَهُ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ بِتَاْذِيْنِهِ سِتُّوْنَ حَسَنَةً وَبِاِقَامَتِهِ ثَلَاثُوْنَ حَسَنَةً.

رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط البخاري ووافقه الذهبي ٢٠٥/١

53. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने बारह साल अज़ान दी, उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। उसके लिए हर अज़ान के बदले में साठ नेकियां लिखी जाती हैं और हर इक़ामत के बदले में तीस नेकियां लिखी जाती हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 54 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثَةٌ لَا يَهُوْلُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ، وَلَا يَنَالُهُمُ الْحِسَابُ، هُمْ عَلٰى كَثِيْبٍ مِنْ مِسْكٍ حَتّٰى يُفْرَغَ مِنْ حِسَابِ الْخَلَائِقِ: رَجُلٌ قَرَاَ الْقُرْآنَ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ، وَاَمَّ بِهِ قَوْمًا وَهُمْ رَاضُوْنَ بِهِ، وَدَاعٍ يَدْعُوْ اِلَى الصَّلَوَاتِ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ، وَعَبْدٌ اَحْسَنَ فِيْمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ رَبِّهِ وَفِيْمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ مَوَالِيْهِ.

رواه الترمذي باختصار، وقد رواه الطبراني في الاوسط والصغير،

وفيه: عبدالصمد بن عبد العزيز المقرى ذكره ابن حبان في الثقات، مجمع الزوائد ٨٥/٢

54. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं कि जिनको क़ियामत की सख़्त घबराहट का ख़ौफ़ नहीं होगा, न उनको हिसाब-किताब देना पड़ेगा। जब तक मख़्लूक़ अपने हिसाब व किताब से फ़ारिग हो, वे मुश्क के टीलों पर तफ़रीह करेंगे। एक वह शख़्स जिसने अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए कुरआन शरीफ़ पढ़ा और इस तरह इमामत की कि मुक़्तदी उससे राज़ी रहे। दूसरा वह शख़्स, जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता है। तीसरा वह शख़्स जो अपने रब से भी अच्छा मामला रखे और अपने मातहतों से भी अच्छा मामला रखे। (तिर्मिज़ी, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثَةٌ عَلٰى كُثْبَانِ الْمِسْكِ۔ اُرَاهُ قَالَ۔ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَغْبِطُهُمُ الْاَوَّلُوْنَ وَالْآخِرُوْنَ: رَجُلٌ يُنَادِيْ بِالصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، وَرَجُلٌ يَؤُمُّ قَوْمًا وَهُمْ بِهِ رَاضُوْنَ، وَعَبْدٌ اَدّٰى حَقَّ اللهِ وَحَقَّ مَوَالِيْهِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب احاديث في صفة الثلاثة الذين يحبهم الله، رقم: ٢٥٦٦

55. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन क़िस्म के लोग क़ियामत के दिन मुश्क के टीलों पर होंगे। उन पर अगले पिछले सब लोग रश्क करेंगे। एक वह शख़्स जो दिन रात की पांच नमाज़ों के लिए अज़ान दिया करता था। दूसरा वह शख़्स, जिसने लोगों की इमामत की और वे उससे राज़ी रहे। तीसरा वह ग़ुलाम, जो अल्लाह तआ़ला का भी हक़ अदा करे और अपने आक़ाओं का भी हक़ अदा करे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْإِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ، اَللّٰهُمَّ! اَرْشِدِ الْاَئِمَّةَ وَاغْفِرْ لِلْمُؤَذِّنِیْنَ.

رواه ابو داؤد باب ما يجب على المؤذن ......، رقم: ٥١٧

56. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इमाम ज़िम्मेदार है और मुअज़्ज़िन पर भरोसा किया जाता है। ऐ अल्लाह! इमामों की रहनुमाई फ़रमा और मुअज़्ज़िनों की मग्फ़िरत फ़रमा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इमाम के ज़िम्मेदार होने का मतलब यह है कि इमाम पर अपनी नमाज़ के अलावा मुक़्तदियों की नमाज़ों की भी ज़िम्मेदारी है, इसलिए जितना हो सके इमाम को ज़ाहिरी और बातिनी तौर से अच्छी नमाज़ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इसी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने ह़दीस में उनके लिए दुआ़ भी फ़रमाई है। मुअज़्ज़िन पर भरोसा किए जाने का मतलब यह है कि लोगों ने नमाज़ रोज़े के औक़ात के बारे में उस पर एतमाद किया है, लिहाज़ा मुअज़्ज़िन को चाहिए कि वह सही वक़्त पर अज़ान दे और चूंकि मुअज़्ज़िन से बाज़ मर्तबा अज़ान के औक़ात में ग़लती हो जाती है, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने मग्फ़िरत की दुआ़ की है। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿ 57 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ الشَّیْطَانَ اِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصَّلَاةِ، ذَهَبَ حَتّٰی یَكُوْنَ مَكَانَ الرَّوْحَاءِ قَالَ سُلَیْمَانُ رَحِمَهُ اللّٰهُ: فَسَاَلْتُهُ عَنِ الرَّوْحَاءِ؟ فَقَالَ: هِیَ مِنَ الْمَدِیْنَةِ سِتَّةٌ وَّثَلَاثُوْنَ مِیْلًا.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ......، رقم: ٨٥٤

57. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : शैतान जब नमाज़ के लिए अज़ान सुनता है, तो मक़ामे रौहा तक दूर चला

जाता है। हज़रत सुलैमान रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं मैंने हज़रत जाबिर ﷺ से मक़ामे रौहा के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया कि मदीना से छत्तीस मील दूर है। (मुस्लिम)

﴿ 58 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلَاةِ أَدْبَرَ الشَّيْطَانُ لَهُ ضُرَاطٌ حَتَّى لَا يَسْمَعَ التَّأْذِيْنَ، فَإِذَا قُضِيَ التَّأْذِيْنُ أَقْبَلَ، حَتَّى إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ أَدْبَرَ، حَتَّى إِذَا قُضِيَ التَّثْوِيْبُ أَقْبَلَ، حَتَّى يَخْطُرَ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهِ يَقُوْلُ لَهُ: اُذْكُرْ كَذَا، وَاذْكُرْ كَذَا، لِمَالَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ مِنْ قَبْلُ، حَتَّى يَظَلَّ الرَّجُلُ مَا يَدْرِيْ كَمْ صَلَّى.

رواه مسلم، باب فضل الاذان ......، رقم: ٨٥٩

58. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब नमाज़ के लिए अज़ान दी जाती है तो शैतान ऊंची आवाज़ में हवा ख़ारिज करता हुआ पीठ फेर कर भाग जाता है, ताकि अज़ान न सुने। फिर जब अज़ान ख़त्म हो जाती है तो वापस आ जाता है। जब इक़ामत कही जाती है तो फिर भाग जाता है और इक़ामत पूरी होने के बाद फिर वापस आ जाता है, ताकि नमाज़ी के दिल में वस्वसा डाले। चुनांचे नमाज़ी से कहता है यह बात याद कर और यह बात याद कर। ऐसी-ऐसी बातें याद दिलाता है जो बातें नमाज़ी को नमाज़ से पहले याद न थीं, यहां तक कि नमाज़ी को यह भी ख़्याल नहीं रहता कि कितनी रकअतें हुईं। (मुस्लिम)

﴿ 59 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَافِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوْا.

(وهو جزء من الحديث) رواه البخاري، باب الاستهام في الاذان، رقم: ٦١٥

59. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को अज़ान और पहली सफ़ का सवाब मालूम हो जाता और उन्हें अज़ान और पहली सफ़ क़ुरआअंदाज़ी के बग़ैर हासिल न होती, तो वह क़ुरआअंदाज़ी करते। (बुख़ारी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا كَانَ الرَّجُلُ بِأَرْضٍ قِيٍّ فَحَانَتِ الصَّلَاةُ فَلْيَتَوَضَّأْ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ مَاءً فَلْيَتَيَمَّمْ، فَإِنْ أَقَامَ صَلَّى مَعَهُ مَلَكَاهُ، وَإِنْ أَذَّنَ وَأَقَامَ صَلَّى خَلْفَهُ مِنْ جُنُوْدِ اللهِ مَالَا يُرٰى طَرَفَاهُ. رواه عبدالرزاق في مصنفه ١/ ٥١٠

60. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स जंगल में हो और नमाज़ का वक़्त हो जाए तो वुज़ू करे, पानी न मिले तो तयम्मुम करे। फिर जब वह इक़ामत कह कर नमाज़ पढ़ता है, तो उसके दोनों (लिखने वाले) फ़रिश्ते उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं और अगर अज़ान देता है, फिर इक़ामत कहकर नमाज़ पढ़ता है तो उसके पीछे अल्लाह तआ़ला के लशकरों की यानी फ़रिश्तों की इतनी बड़ी तादाद नमाज़ पढ़ती है कि जिनके दोनों किनारे देखे नहीं जा सकते। (मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक)

﴿ 61 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَعْجَبُ رَبُّكَ عَزَّوَجَلَّ مِنْ رَاعِي غَنَمٍ فِيْ رَأْسِ شَظِيَّةٍ بِجَبَلٍ يُؤَذِّنُ لِلصَّلَاةِ وَيُصَلِّيْ، فَيَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اُنْظُرُوْا اِلَى عَبْدِيْ هٰذَا يُؤَذِّنُ وَيُقِيْمُ لِلصَّلَاةِ يَخَافُ مِنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ وَاَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ.

رواه ابوداؤد، باب الاذان فى السفر، رقم: ١٢٠٣

61. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम्हारे रब उस बकरी चराने वाले से बेहद ख़ुश होते हैं जो किसी पहाड़ की चोटी पर अज़ान कहता है और नमाज़ पढ़ता है। अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं : मेरे इस बन्दे को देखो, अज़ान कहकर नमाज़ पढ़ रहा है, सब मेरे डर की वजह से कर रहा है, मैंने अपने बन्दे की मग़फ़िरत कर दी और जन्नत का दाख़िला तय कर दिया। (अबूदाऊद)

﴿ 62 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثِنْتَانِ لَا تُرَدَّانِ اَوْقَلَّمَا تُرَدَّانِ: الدُّعَاءُ عِنْدَ النِّدَاءِ، وَعِنْدَ الْبَأْسِ حِيْنَ يُلْحِمُ بَعْضُهُ بَعْضًا.

رواه ابو داؤد، باب الدعاء عند اللقاء، رقم: ٢٥٤٠

62. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो वक़्तों की दुआ़एं रद्द नहीं की जातीं। एक अज़ान के वक़्त, दूसरे उस वक़्त जब घमासान की लड़ाई शुरू हो जाए। (अबूदाऊद)

﴿ 63 ﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ: وَاَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، رَضِيْتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا، غُفِرَلَهٗ ذَنْبُهٗ.

رواه مسلم، باب استحباب القول مثل قول المؤذن لمن سمعه ......، رقم: ٨٥١

63. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनने के वक़्त यह कहा : "व अना अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाहिरब्बौं-व बि-मुहम्मदिन रसूलन व बिल इस्लामि दीना०' तो उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। तर्जुमा : मैं भी शहादत देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, और यह शहादत देता हूं कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के बन्दे और रसूल हैं, और मैं अल्लाह तआ़ला को रब मानने पर, मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर और इस्लाम को दीन मानने पर राज़ी हूं। (मुस्लिम)

﴿ 64 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، فَقَامَ بِلَالٌ یُنَادِیْ فَلَمَّا سَكَتَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَالَ مِثْلَ هٰذَا یَقِیْنًا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه هكذا ووافقه الذهبى ١/٢٠٤

64. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। हज़रत बिलाल ﷺ अज़ान देने खड़े हुए। जब अज़ान दे चुके तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यक़ीन के साथ उन-जैसे कलिमात कहता है जो मुअज़्ज़िन ने अज़ान में कहे, वह जन्नत में दाख़िल होगा। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : इस रिवायत से मालूम होता है कि अज़ान का जवाब देने वाला वही अल्फ़ाज़ दोहराए जो मुअज़्ज़िन ने कहे। अलबत्ता हज़रत उमर ﷺ की रिवायत से मालूम होता है कि *'हैय्य-य अलस्सलाह'* और 'हैय्य-य अ़लल फ़लाह' के जवाब में 'ला हौ-ल वला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह' कहा जाए। (मुस्लिम)

﴿ 65 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَجُلًا قَالَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ الْمُؤَذِّنِیْنَ یَفْضُلُوْنَنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: قُلْ كَمَا یَقُوْلُوْنَ فَاِذَا انْتَهَیْتَ فَسَلْ تُعْطَهْ.

رواه ابوداؤد، باب ما يقول اذا سمع المؤذن، رقم: ٥٢٤

65. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! अज़ान कहने वाले हम से अज्र व सवाब में बढ़े हुए हैं (क्या कोई ऐसा अ़मल है कि हमें भी अज़ान देने वाली फ़ज़ीलत मिल जाए?) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वही कलिमे कहा करो, जो मुअज़्ज़िन कहते हैं, फिर जब तुम अज़ान का

जवाब दे चुको, तो दुआ मांगो (जो मांगोगे) वह दिया जाएगा। (अबूदाऊद)

﴿ 66 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ، فَقُوْلُوا مِثْلَ مَا يَقُوْلُ، ثُمَّ صَلُّوا عَلَيَّ، فَاِنَّهُ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا، ثُمَّ سَلُوا اللهَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ، فَاِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لَا تَنْبَغِيْ اِلَّا لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللهِ، وَاَرْجُوْ اَنْ اَكُوْنَ اَنَا هُوَ، فَمَنْ سَاَلَ لِيَ الْوَسِيْلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ.

رواه مسلم، باب استحباب القول مثل قول المؤذن لمن سمعه ......،رقم:٨٤٩

66. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो, तो उसी तरह कहो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है, फिर मुझ पर दरूद भेजो। जो शख़्स मुझ पर एक बार दरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला उसपर उसके बदले दस रहमतें भेजते हैं, फिर मेरे लिए अल्लाह तआ़ला से वसीले की दुआ़ करो, क्योंकि वसीला जन्नत में एक (ख़ास) मक़ाम है जो अल्लाह तआ़ला के बन्दे में से एक बन्दे के लिए मख़्सूस है और मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं ही हूं। जो शख़्स मेरे लिए वसीला की दुआ़ मांगेगा वह मेरी शफ़ाअ़त का हक़दार होगा। (मुस्लिम)

﴿ 67 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ: اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِي وَعَدْتَّهُ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه البخاري، باب الدعاء عند النداء، رقم: ٦١٤ ورواه البيهقي في سننه الكبرى، وزادفي آخره: **اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ** ١/٤١٠

67. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अज़ान सुनने के वक़्त अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करे : 'अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद-दअ़्व तित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म-द-निल वसी-ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वब-अस-हु मक़ामम महमू-द-निल-लज़ी व अ़त्तहू इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द०' तो क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! इस पूरी दावत और (अज़ान के बाद) अदा की जाने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसीला अ़ता फ़रमा दीजिए और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा

ोजिए और उनको उस मक़ामे महमूद पर पहुंचा दीजिए, जिसका आपने उनसे वादा फ़रमाया है, बेशक आप वादाख़िलाफ़ी नहीं करते। (बुख़ारी, बैहक़ी)

﴿ 68 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُنَادِي الْمُنَادِي: اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلَاةِ النَّافِعَةِ، صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَارْضَ عَنْهُ رِضًا لَا تَسْخَطُ بَعْدَهُ، اسْتَجَابَ اللهُ لَهُ دَعْوَتَهُ. رواه احمد ٣/٣٣٧

68. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो ाख़्स अज़ान सुनकर यह दुआ मांगे : 'अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद-दावतित्ताम्मति वस्सलातिल नाफ़िअ़ति सल्लि अला मुहम्मद वर-ज़ अ़न्हु रिज़न ला तस्ख़तु ादहू' अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएंगे। तर्जुमा : ऐ अल्लाह! ऐ उस ुकम्मल दावत (अज़ान) देने वाली नमाज़ के रब! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, और आप उनसे ऐसा राज़ी हो जाएं कि उसके बाद कभी नाराज़ ा हों। (मुस्नद अहमद)

﴿ 69 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الدُّعَاءُ لَا يُرَدُّ بَيْنَ الْاَذَانِ وَالْاِقَامَةِ قَالُوْا: فَمَاذَا نَقُوْلُ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: سَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب في العفو والعافية، رقم:٣٥٩٤

ـ9. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अज़ान और इक़ामत के दर्मियानी वक़्त में दुआ रद्द नहीं होती, यानी क़ुबूल होती है। सहाबा किराम ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हम क्या दुआ मांगें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से दुनिया व आख़िरत की आ़फ़ियत मांगा करो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 70 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ فُتِحَتْ اَبْوَابُ السَّمَاءِ وَاسْتُجِيْبَ الدُّعَاءُ. رواه احمد ٣/٣٤٢

70. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब ामाज़ के लिए इक़ामत कही जाती है, तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दुआ क़ुबूल की जाती है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 71 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّاَ فَاَحْسَنَ وُضُوْءَهُ، ثُمَّ خَرَجَ عَامِدًا

إِلَى الصَّلَاةِ فَإِنَّهُ فِي صَلَاةٍ مَا كَانَ يَعْمِدُ إِلَى الصَّلَاةِ، وَإِنَّهُ يُكْتَبُ لَهُ بِإِحْدَى خُطْوَتَيْهِ حَسَنَةٌ، وَيُمْحَى عَنْهُ بِالْأُخْرَى سَيِّئَةٌ، فَإِذَا سَمِعَ أَحَدُكُمُ الْإِقَامَةَ فَلَا يَسْعَ، فَإِنَّ أَعْظَمَكُمْ أَجْرًا أَبْعَدُكُمْ دَارًا قَالُوا: لِمَ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: مِنْ أَجْلِ كَثْرَةِ الْخُطَا.

رواه الامام مالك فى الموطا، جامع الوضوء ص ٢٢

71. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद की तरफ़ जाता है, तो जब तक वह इस इरादे पर क़ायम रहता है उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। उसके एक क़दम पर एक नेकी लिखी जाती है और दूसरे क़दम पर उसकी एक बुराई मिटा दी जाती है। जब तुम में कोई इक़ामत सुने, तो दौड़ कर न चले और तुममें से जिसका घर मस्जिद से जितना ज़्यादा दूर होगा, उतना ही उसका सवाब ज़्यादा होगा। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ के शागिर्दों ने यह सुनकर पूछा कि अबू हुरैरह! घर दूर होने की वजह से सवाब ज़्यादा क्यों होगा? फ़रमाया : इसलिए कि क़दम ज़्यादा होंगे। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿ 72 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فِي بَيْتِهِ، ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ كَانَ فِي صَلَاةٍ حَتَّى يَرْجِعَ فَلَا يَقُلْ هٰكَذَا، وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١/٢٠٦

72. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स अपने घर से वुज़ू करके मस्जिद आता है तो घर वापस आने तक उसे नमाज़ का सवाब मिलता रहता है। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथों की उंगलियां एक दूसरे में दाख़िल कीं और इर्शाद फ़रमाया : उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जैसे नमाज़ की हालत में दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में डालना दुरुस्त नहीं और बिला वजह ऐसा करना पसन्दीदा अ़मल नहीं इसी तरह जो घर से वुज़ू करके नमाज़ के इरादे से मस्जिद आए उसके लिए यह भी मुनासिब नहीं क्योंकि नमाज़ का सवाब हासिल करने की वजह से यह शख़्स भी गोया नमाज़ के हुक्म में होता है, जैसा के दीगर रिवायतों में उसकी वज़ाहत है।

﴿ 73 ﴾ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ:

سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ، لَمْ يَرْفَعْ قَدَمَهُ الْيُمْنٰى إِلَّا كَتَبَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ حَسَنَةً، وَلَمْ يَضَعْ قَدَمَهُ الْيُسْرٰى إِلَّا حَطَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ عَنْهُ سَيِّئَةً، فَلْيُقَرِّبْ أَحَدُكُمْ أَوْلِيُبَعِّدْ، فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ فَصَلّٰى فِيْ جَمَاعَةٍ غُفِرَ لَهُ فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ وَقَدْ صَلَّوْا بَعْضًا وَبَقِيَ بَعْضٌ صَلّٰى مَا أَدْرَكَ وَأَتَمَّ مَا بَقِيَ، كَانَ كَذٰلِكَ، فَإِنْ أَتَى الْمَسْجِدَ وَقَدْ صَلَّوْا فَأَتَمَّ الصَّلَاةَ، كَانَ كَذٰلِكَ.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في الهدى في المشي الى الصلاة، رقم: ٥٦٣

73. हज़रत सईद बिन मुसैय्यब रहमतुल्लाह अ़लैह एक अंसारी सहाबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया : मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुममें से कोई शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके नमाज़ के लिए निकलता है तो हर दाएं क़दम के उठाने पर अल्लाह तआ़ला उसके लिए एक नेकी लिख देते हैं और हर बाएं क़दम के रखने पर उसका एक गुनाह माफ़ कर देते हैं। (अब उसे इख़्तियार है) कि छोटे-छोटे क़दम रखे या लम्बे-लम्बे क़दम रखे। अगर यह शख़्स मस्जिद आकर जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ लेता है, तो उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। अगर मस्जिद आकर देखता है कि जमाअ़त हो रही है और लोग नमाज़ का कुछ हिस्सा पढ़ चुके हैं और कुछ बाक़ी हैं तो उसे जितनी नमाज़ मिल जाती है उसे (जमाअ़त के साथ) पढ़ लेता है और बाक़ी नमाज़ ख़ुद मुकम्मल कर लेता है, तो उस पर भी मग़्फ़िरत कर दी जाती है और अगर यह शख़्स मस्जिद आकर देखता है कि लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं और यह अपनी नमाज़ पढ़ लेता है, तो उस पर भी मग़्फ़िरत कर दी जाती हैं। (अबूदाऊद)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ مُتَطَهِّرًا إِلَى صَلَاةٍ مَكْتُوْبَةٍ فَأَجْرُهُ كَأَجْرِ الْحَاجِّ الْمُحْرِمِ، وَمَنْ خَرَجَ إِلَى تَسْبِيْحِ الضُّحٰى لَا يُنْصِبُهُ إِلَّا إِيَّاهُ فَأَجْرُهُ كَأَجْرِ الْمُعْتَمِرِ، وَصَلَاةٌ عَلٰى إِثْرِ صَلَاةٍ لَا لَغْوَ بَيْنَهُمَا كِتَابٌ فِيْ عِلِّيِّيْنَ.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في فضل المشي الى الصلوة، رقم: ٥٥٧

74. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर से अच्छी तरह वुज़ू करके फ़र्ज़ नमाज़ के इरादे से निकलता है उसे एहराम बांध कर हज पर जाने वाले की तरह सवाब मिलता है और जो शख़्स सिर्फ़ चाश्त की नमाज़ पढ़ने के लिए मशक़्क़त उठा कर अपनी जगह से निकलता है उसे उमरा करने वाले की तरह सवाब मिलता है। एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ इस

तरह पढ़ना कि दर्मियान में कोई फ़ुज़ूल काम और बेफ़ायदा बात न हो, यह अ़मल ऊंचे दर्जे में लिखा जाता है। (अबूदाऊद)

﴾ 75 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَتَوَضَّأُ اَحَدُكُمْ فَيُحْسِنُ وُضُوْءَهُ وَيُسْبِغُهُ، ثُمَّ يَأْتِی الْمَسْجِدَ لَا يُرِيْدُ اِلَّا الصَّلَاةَ فِيْهِ اِلَّا تَبَشْبَشَ اللهُ اِلَيْهِ كَمَا يَتَبَشْبَشُ اَهْلُ الْغَائِبِ بِطَلْعَتِهِ. رواه ابن خزيمه فی صحيحه ۲/ ۳۷٤

75. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है और वुज़ू को कमाल दर्जे तक पहुंचा देता है, फिर सिर्फ़ नमाज़ ही के इरादे से मस्जिद में आता है तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे किसी दूर गए रिश्तेदार के अचानक आने से उसके घर वाले ख़ुश होते हैं। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴾ 76 ﴿ عَنْ سَلْمَانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ فِیْ بَيْتِهِ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ اَتَی الْمَسْجِدَ، فَهُوَ زَائِرُ اللهِ، وَحَقٌّ عَلَی الْمَزُوْرِ اَنْ يُكْرِمَ الزَّائِرَ.

رواه الطبرانی فی الكبير واحد اسناديه رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ۲/ ۱٤۹

76. हज़रत सलमान ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने घर में अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद आता है, वह अल्लाह तआ़ला का मेहमान है (अल्लाह तआ़ला उसके मेज़बान हैं) और मेज़बान के ज़िम्मे है कि मेहमान का इकराम करे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 77 ﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَلَتِ الْبِقَاعُ حَوْلَ الْمَسْجِدِ، فَاَرَادَ بَنُوْ سَلِمَةَ اَنْ يَنْتَقِلُوا اِلٰی قُرْبِ الْمَسْجِدِ، فَبَلَغَ ذٰلِكَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَقَالَ لَهُمْ: اِنَّهُ بَلَغَنِیْ اَنَّكُمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَنْتَقِلُوا قُرْبَ الْمَسْجِدِ، قَالُوا: نَعَمْ، يَارَسُوْلَ اللهِ! قَدْ اَرَدْنَا ذٰلِكَ فَقَالَ: يَابَنِیْ سَلِمَةَ! دِيَارَكُمْ! تُكْتَبْ آثَارُكُمْ، دِيَارَكُمْ! تُكْتَبْ آثَارُكُمْ.

رواه مسلم، باب فضل كثرة الخطا الی المساجد، رقم: ۱۵۱۹

77. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नब्वी के इर्द-गिर्द कुछ ज़मीन ख़ाली पड़ी थी। बनू सलिमा (जो मदीना मुनव्वरा में एक क़बीला था उनके मकान मस्जिद से दूर थे, उन्हों) ने इरादा किया कि मस्जिद के क़रीब ही कहीं मुंतक़िल हो जाएं। यह बात नबी करीम ﷺ तक पहुंची तो नबी करीम ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : मुझे यह ख़बर मिली है कि तुम लोग मस्जिद के क़रीब मुंतक़िल

होना चाहते हो। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! बेशक हम यही चाह रहे हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनू सलिमा वहीं रहो! तुम्हारे (मस्जिद तक आने के) सब क़दम लिखे जाते हैं, वहीं रहो! तुम्हारे (मस्जिद तक आने के) सब क़दम लिखे जाते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 78 ﴾ عَنْ اَبِی هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مِنْ حِیْنَ یَخْرُجُ اَحَدُکُمْ مِنْ مَنْزِلِهٖ اِلٰی مَسْجِدِیْ فَرِجْلٌ تَکْتُبُ لَهٗ حَسَنَةً، وَرِجْلٌ تَحُطُّ عَنْهُ سَیِّئَةً حَتّٰی یَرْجِعَ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٥٠٣/٤

78. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स अपने घर से मेरी मस्जिद के लिए निकलता है, तो उसके घर वापस होने तक हर क़दम पर एक नेकी लिखी जाती है और हर दूसरे क़दम पर एक बुराई मिटाई जाती है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَبِی هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: کُلُّ سُلَامٰی مِنَ النَّاسِ عَلَیْهِ صَدَقَةٌ کُلَّ یَوْمٍ تَطْلُعُ فِیْهِ الشَّمْسُ. قَالَ: تَعْدِلُ بَیْنَ الْاِثْنَیْنِ صَدَقَةٌ، وَتُعِیْنُ الرَّجُلَ فِیْ دَابَّتِهٖ فَتَحْمِلُهٗ عَلَیْهَا، اَوْتَرْفَعُ لَهٗ عَلَیْهَا مَتَاعَهٗ، صَدَقَةٌ، قَالَ: وَالْکَلِمَةُ الطَّیِّبَةُ صَدَقَةٌ، وَکُلُّ خُطْوَةٍ تَمْشِیْهَا اِلَی الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ، وَتُمِیْطُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ صَدَقَةٌ.

رواه مسلم، باب بيان ان اسم الصدقة يقع على كل نوع من المعروف ......،رقم: ٢٣٣٥

79. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर इंसान के ज़िम्मे है कि हर दिन जिस में सूरज निकलता है अपने बदन के हर जोड़ की तरफ़ से (उसकी सलामती के शुकराने में) एक सदक़ा अदा करे। तुम्हारा दो आदमियों के दर्मियान इंसाफ़ कर देना सदक़ा है। किसी आदमी को उसकी सवारी पर बिठाने में या उसका सामान उठा कर उस पर रखवाने में उसकी मदद करना सदक़ा है। अच्छी बात कहना सदक़ा है। हर वह क़दम जो नमाज़ के लिए उठाओ सदक़ा है और रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ को हटा दो, यह भी सदक़ा है। (मुस्लिम)

﴿ 80 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ: قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ لَیُضِیْءُ لِلَّذِیْنَ یَتَخَلَّلُوْنَ اِلَی الْمَسَاجِدِ فِی الظُّلَمِ بِنُوْرٍ سَاطِعٍ یَوْمَ الْقِیَامَةِ.

رواه الطبراني في الاوسط و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٤٨/٢

80. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो अंधेरों में मस्जिदों की तरफ़ जाते हैं (चारों तरफ़) फैलने वाले नूर से मुनव्वर फ़रमाएंगे। (तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद)

﴿ 81 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْمَشَّاءُ وْنَ اِلَی الْمَسَاجِدِ فِی الظُّلَمِ، اُولٰئِكَ الْخَوَّاضُوْنَ فِیْ رَحْمَةِ اللّٰهِ. رواه ابن ماجه وفی

اسناده اسماعیل بن رافع تکلم فیه الناس، وقال الترمذی: ضعفه بعض اهل العلم وسمعت محمدا یعنی البخاری یقول هو ثقة مقارب الحدیث الترغیب ۲۱۲/۱

81. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अंधेरों में ज़्यादा से ज़्यादा मस्जिदों में जाने वाले लोग अल्लाह तआ़ला की रहमत में ग़ोता लगाने वाले हैं। (इब्ने माजा, तर्ग़ीब)

﴿ 82 ﴾ عَنْ بُرَیْدَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: بَشِّرِ الْمَشَّائِیْنَ فِی الظُّلَمِ اِلَی الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ یَوْمَ الْقِیَامَةِ.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء فی المشی الی الصلوة فی الظلم، رقم: ۵٦١

82. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग अंधेरों में ज़्यादा-से-ज़्यादा मस्जिद को जाते रहते हैं, उनको क़ियामत के दिन पूरे-पूरे नूर की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। (अबूदाऊद)

﴿ 83 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلاَ اَدُلُّكُمْ عَلٰی شَیْءٍ یُکَفِّرُ الْخَطَایَا، وَیَزِیْدُ فِی الْحَسَنَاتِ؟ قَالُوا: بَلٰی، یَارَسُوْلَ اللّٰهِ، قَالَ: اِسْبَاغُ الْوُضُوْءِ۔ اَوِ الطُّهُوْرِ۔ فِی الْمَکَارِهِ وَکَثْرَةُ الْخُطَا اِلٰی هٰذَا الْمَسْجِدِ وَالصَّلاَةُ بَعْدَ الصَّلاَةِ، وَمَا مِنْ اَحَدٍ یَخْرُجُ مِنْ بَیْتِهٖ مُتَطَهِّرًا حَتّٰی یَاْتِیَ الْمَسْجِدَ فَیُصَلِّیَ مَعَ الْمُسْلِمِیْنَ، اَوْ مَعَ الْاِمَامِ، ثُمَّ یَنْتَظِرُ الصَّلاَةَ الَّتِیْ بَعْدَهَا، اِلَّا قَالَتِ الْمَلاَئِکَةُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ، اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ.

(الحدیث) رواه بن حبان، قال المحقق: اسناده صحیح ۱۲۷/۲

83. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें ऐसी चीज़ न बतलाऊं जिसके ज़रिए अल्लाह तआ़ला गुनाहों को माफ़ फ़रमाते हैं और नेकियों में इज़ाफ़ा फ़रमाते हैं? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। फ़रमाया : तबीयत की नागवारी के बावजूद (मसलन सर्दी के मौसम में) अच्छी तरह वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ कसरत से

क़दम उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहना। जो शख़्स भी अपने घर से वुज़ू करके मस्जिद में आए और मुसलमानों के साथ जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़े फिर उसके बाद वाली नमाज़ के इंतज़ार में बैठ जाए तो फ़रिश्ते उसके लिए दुआ़ करते रहते हैं, या अल्लाह! उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, या अल्लाह! उस पर रहम फ़रमा दीजिए। (इब्ने हब्बान)

﴾ 84 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَا يَمْحُوْ اللّٰهُ بِهِ الْخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ؟ قَالُوْا: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: اِسْبَاغُ الْوُضُوْءِ عَلَى الْمَكَارِهِ، وَكَثْرَةُ الْخُطَا اِلَى الْمَسَاجِدِ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذٰلِكُمُ الرِّبَاطُ.

رواه مسلم، باب فضل اسباغ الوضوء على المكاره، رقم:٥٨٧

84. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल न बतलाऊं जिनकी वजह से अल्लाह तआ़ला गुनाहों को मिटाते हैं और दर्जे बुलन्द फ़रमाते हैं? सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बतलाइए। इर्शाद फ़रमाया : नागवारी व मशक़्क़त के बावजूद कामिल वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ कसरत से क़दम उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहना, यही हक़ीक़ी रिबात है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : ''रिबात'' के मशहूर मानी ''इस्लामी सरहद पर दुश्मन से हिफ़ाज़त के लिए पड़ाव डालने'' के हैं जो बड़ा अ़ज़ीमुश्शान अ़मल है। इस हदीस शरीफ़ में नबी करीम ﷺ ने इन आ़माल को रिबात ग़ालिबन इस लिहाज़ से फ़रमाया कि जैसे सरहद पर पड़ाव डाल कर हिफ़ाज़त की जाती है उसी तरह उन आ़माल के ज़रिए नफ़्स व शैतान के हमलों से अपनी हिफ़ाज़त की जाती है। (मिरक़ात)

﴾ 85 ﴿ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: اِذَا تَطَهَّرَ الرَّجُلُ ثُمَّ اَتَى الْمَسْجِدَ يَرْعَى الصَّلَاةَ كَتَبَ لَهُ كَاتِبَاهُ. (اَوْ كَاتِبُهُ.) بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوْهَا اِلَى الْمَسْجِدِ عَشْرَ حَسَنَاتٍ، وَالْقَاعِدُ يَرْعَى الصَّلَاةَ كَالْقَانِتِ، وَيُكْتَبُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ مِنْ حِيْنَ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْهِ.

رواه احمد ١٥٧/٤

85. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर मस्जिद आकर नमाज़ के

इंतज़ार में रहता है, तो उसके आ़माल लिखने वाले फ़रिश्ते हर उस क़दम के बदले में जो उसने मस्जिद की तरफ़ उठाया, दस नेकियां लिखते हैं और नमाज़ के इंतज़ा में बैठने वाला इबादत करने वाले की तरह है और घर से निकलने के वक़्त से लेक. घर वापस लौटने तक नमाज़ पढ़ने वालों में शुमार किया जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 86 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ (قَالَ اللهُ تَعَالٰى): يَا مُحَمَّدُ! قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَبِّ، قَالَ: فِيْمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الْاَعْلٰى؟ قُلْتُ: فِى الْكَفَّارَاتِ، قَالَ: مَا هُنَّ؟ قُلْتُ: مَشْيُ الْاَقْدَامِ اِلَى الْجَمَاعَاتِ، وَالْجُلُوْسُ فِي الْمَسَاجِدِ بَعْدَ الصَّلٰوةِ، وَاِسْبَاغُ الْوُضُوْءِ فِي الْمَكْرُوْهَاتِ، قَالَ: ثُمَّ فِيْمَ؟ قُلْتُ: اِطْعَامُ الطَّعَامِ، وَلِيْنُ الْكَلَامِ، وَالصَّلَاةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ، قَالَ: سَلْ،قُلْتُ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ، وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ، وَاَنْ تَغْفِرَلِيْ وَتَرْحَمَنِيْ، وَاِذَا اَرَدْتَ فِتْنَةً فِيْ قَوْمٍ فَتَوَفَّنِيْ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ، وَاَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ اِلٰى حُبِّكَ، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّهَا حَقٌّ فَادْرُسُوْهَا ثُمَّ تَعَلَّمُوْهَا.

(وهو بعض الحديث) رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ومن سورة ص، رقم:٣٢٣٥

86. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने (रसूलुल्लाह ﷺ को ख़्वाब में) इर्शाद फ़रमाया : ऐ मुहम्मद! मैंने अ़ किया: ऐ मेरे रब, मैं हाज़िर हूं। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मुक़र्रब फ़रिश्ते कौन-से आ़माल के अफ़ज़ल होने में आपस में बहस कर रहे हैं? मैंने अ़र्ज़ किया उन आ़माल के बारे में जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाते हैं। इर्शाद हुआ : व० आ़माल क्या हैं? मैंने अ़र्ज़ किया : जमाअ़त की नमाज़ों के लिए चल कर जाना, एक नमाज़ के बाद से दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में बैठे रहना और नागवारी के बावजू (मसलन सर्दी के मौसम में) अच्छी तरह वुज़ू करना। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : और कौन-से- आ़माल के अफ़ज़ल होने में आपस में बहस कर रहे हैं? मैं अ़र्ज़ किया : खाना खिलाना, नर्म बात करना और रात को जब लोग सो रहे हों नमाज़ पढ़ना। फिर अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मांगो, मैंने यह दुआ़ मांगी 'अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क फ़ेलल ख़ैराति व तर्कल मुंकराति व हुब्ब मसाकीन व अन तग़्फ़ि-र ली व तर्हम्नी व इज़ा अरद-त फ़ित-न-तन फ़ी क़ौमिन फ़-त-वफ़्फ़नी ग़ै-र मफ़्तून व असअलु-क हुब्ब-क व हुब-ब मैंय्युहिब्बु-क व हुब-ब अ़-मलिन युक़र्रिबु इला हुब्बि-क' तर्जुमा : "या अल्लाह! मैं आप से

नेकियों के करने, बुराइयों के छोड़ने और मिस्कीनों की मुहब्बत का सवाल करता हूं और इस बात का कि आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए, मुझ पर रहम फ़रमा दीजिए और जब आप किसी क़ौम को आज़माइश में डालने और अ़ज़ाब में मुब्तला करने का फ़ैसला फ़रमाएं, तो मुझे आज़माए बग़ैर अपने पास बुला लीजिए। या अल्लाह! मैं आप से सवाल करता हूं आप की मुहब्बत का और उस शख़्स की मुहब्बत का जो आप से मुहब्बत रखता हो और उस अ़मल की मुहब्बत का जो आप की मुहब्बत से मुझे क़रीब कर दे।" नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दुआ़ हक़ है, लिहाज़ा इसे सीखने के लिए बार-बार पढ़ो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 87 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَحَدُكُمْ فِيْ صَلَاةٍ مَا دَامَتِ الصَّلَاةُ تَحْبِسُهُ، وَالْمَلَائِكَةُ تَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، مَالَمْ يَقُمْ مِنْ صَلَاتِهِ اَوْ يُحْدِثْ.

رواه البخاري، باب اذا قال: احد كم آمين ......، رقم:٣٢٢٩

87. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से वह शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ का सवाब पाता रहता है जब तक वह नमाज़ के इंतज़ार में रहता है। फ़रिश्ते उसके लिए यह दुआ़ करते रहते हैं : या अल्लाह! इसकी मग़्फ़िरत फ़रमाइए और इस पर रहम फ़रमाइए। (नमाज़ पढ़ने के बाद भी) जब तक नमाज़ की जगह बावुज़ू बैठा रहता है, फ़रिश्ते उसके लिए यही दुआ करते रहते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 88 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مُنْتَظِرُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، كَفَارِسٍ اشْتَدَّ بِهِ فَرَسُهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، عَلٰى كَشْحِهِ وَهُوَ فِي الرِّبَاطِ الْاَكْبَرِ.

رواه احمد والطبراني في الاوسط، واسناد احمد صالح، الترغيب ١/٢٨٤

88. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इंतज़ार में रहने वाला उस शहसवार की तरह है, जिसका घोड़ा उसे अल्लाह तआ़ला के रास्ते में तेज़ी से ले कर दौड़े। नमाज़ का इंतज़ार करने वाला (नफ़्स व शैतान के ख़िलाफ़) सबसे बड़े मोर्चे पर है। (मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 89 ﴾ عَنْ عِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَسْتَغْفِرُ لِلصَّفِّ الْمُقَدَّمِ، ثَلَاثًا، وَلِلثَّانِيْ مَرَّةً.

رواه ابن ماجه، باب فضل الصف المقدم، رقم:٩٩٦

89. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ पहली सफ़

वालों के लिए तीन मर्तबा दूसरी सफ़ वालों के लिए एक मर्तबा मग्फ़िरत की दुआ फ़रमाते थे। (इब्ने माजा)

﴿ 90 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى الصَّفِّ الْاَوَّلِ، قَالُوا: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ، وَعَلَى الثَّانِيْ؟ قَالَ: وَعَلَى الثَّانِي، وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سَوُّوا صُفُوْفَكُمْ وَحَاذُوا بَيْنَ مَنَاكِبِكُمْ، وَلِيْنُوا فِيْ اَيْدِيْ اِخْوَانِكُمْ، وَسُدُّوا الْخَلَلَ، فَاِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ فِيْمَا بَيْنَكُمْ بِمَنْزِلَةِ الْحَذَفِ. يَعْنِيْ. اَوْلَادَ الضَّانِ الصِّغَارَ.

رواه احمد والطبراني في الكبير و رجال احمد موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٥٢

90. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पहली सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ़ करते हैं। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पहली सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ़ करते हैं। सहाबा रज़ि० ने (दोबारा) अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दूसरी सफ़ वालों के लिए भी यह फ़ज़ीलत है। रसूलुल्लाह ﷺ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया : अपनी सफ़ों को सीधा रखा करो, कांधों को कांधों की सीध में रखा करो, सफ़ों को सीधा रखने में अपने भाइयों के लिए नर्म बन जाया करो और सफ़ों के दर्मियानी ख़ला को पुर किया करो, इसलिए कि शैतान (सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर) तुम्हारे दर्मियान भेड़ के बच्चों की तरह घुस जाता है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : भाइयों के लिए नर्म बन जाने का मतलब यह है कि अगर कोई सफ़ सीधी करने के लिए तुम पर हाथ रखकर आगे पीछे होने को कहे, तो उसकी बात मान लिया करो।

﴿ 91 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خَيْرُ صُفُوْفِ الرِّجَالِ اَوَّلُهَا، وَشَرُّهَا آخِرُهَا، وَخَيْرُ صُفُوْفِ النِّسَاءِ آخِرُهَا، وَشَرُّهَا اَوَّلُهَا.

رواه مسلم، باب تسوية الصفوف......، رقم:٩٨٥

91. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मर्दों

की सफ़ों में सबसे ज़्यादा सवाब पहली सफ़ का है और सबसे कम सवाब आख़िरी सफ़ का है। औरतों की सफ़ों में सबसे ज़्यादा सवाब आख़िरी सफ़ का है और सबसे कम सवाब पहली सफ़ का है। (मुस्लिम)

﴿ 92 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَتَخَلَّلُ الصَّفَّ مِنْ نَاحِيَةٍ إِلٰى نَاحِيَةٍ، يَمْسَحُ صُدُوْرَنَا وَمَنَاكِبَنَا وَيَقُوْلُ: لَا تَخْتَلِفُوا فَتَخْتَلِفَ قُلُوْبُكُمْ وَكَانَ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الصُّفُوْفِ الْأُوَلِ.

رواه ابوداؤد، باب تسوية الصفوف، رقم:٦٦٤

92. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ सफ़ में एक किनारे से दूसरे किनारे तक तशरीफ़ लाते, हमारे सीनों और कांधों पर हाथ मुबारक फेर कर सफ़ों को सीधा फ़रमाते और इर्शाद फ़रमाते : (सफ़ों में) आगे पीछे न रहो, अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे दिलों में एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा और फ़रमाया करते : अल्लाह तआला अगली सफ़ वालों पर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं और उनके लिए फ़रिश्ते मग्फ़िरत की दुआ करते हैं। (अबूदाऊद)

﴿ 93 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ يَلُوْنَ الصُّفُوْفَ الْأُوَلَ، وَمَا مِنْ خُطْوَةٍ أَحَبُّ إِلَى اللهِ مِنْ خُطْوَةٍ يَمْشِيْهَا يَصِلُ بِهَا صَفًّا. رواه ابوداؤد، باب فى الصلوة تقام......،رقم:٥٤٣

93. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला अगली सफ़ों से क़रीब सफ़ वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते उनके लिए दुआ करते हैं। अल्लाह तआला को उस क़दम से ज़्यादा कोई क़दम महबूब नहीं, जिसको इंसान सफ़ की खाली जगह को पुर करने के लिए उठाता है। (अबूदाऊद)

﴿ 94 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلٰى مَيَامِنِ الصُّفُوْفِ. رواه ابوداؤد، باب من يستحب ان يلى الامام فى الصف......، رقم:٦٧٦

94. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला सफ़ों के दाएं जानिब खड़े होने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और फ़रिश्ते उनके लिए मग्फ़िरत की दुआ करते हैं। (अबूदाऊद)

﴿ 95 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَمَّرَ جَانِبَ الْمَسْجِدِ الْاَيْسَرِ لِقِلَّةِ اَهْلِهِ فَلَهُ اَجْرَانِ.

رواه الطبراني في الكبير، وفيه: بقية، وهو مدلس و قد عنعنه، ولكنه ثقة، مجمع الزوائد ٢/٢٥٧

95. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मस्जिद में सफ़ की बाएं जानिब इसलिए खड़ा होता है कि वहां लोग कम खड़े हैं तो उसे दो अज्र मिलते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : सहाबा किराम रज़ि० को जब मालूम हुआ कि सफ़ के दाएं हिस्से की फ़ज़ीलत बाएं के मुक़ाबले में ज़्यादा है, तो सबको शौक़ हुआ कि उसी तरफ़ खड़े हों जिसकी वजह से बांए तरफ़ की जगह ख़ाली रहने लगी। इस मौक़ा पर नबी करीम ﷺ ने बाएं जानिब खड़े होने की फ़ज़ीलत भी इर्शाद फ़रमाई।

﴿ 96 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ الصُّفُوْفَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٢١٤

96. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला सफ़ों की ख़ाली जगहें पुर करने वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और फ़रिश्ते उनके लिए इस्तग़फ़ार करते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 97 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَصِلُ عَبْدٌ صَفًّا اِلَّا رَفَعَهُ اللهُ بِهِ دَرَجَةً، وَذَرَّتْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ مِنَ الْبِرِّ.

(وهو بعض الحديث) رواه الطبراني في الاوسط ولا باس باسناده، الترغيب ١/٣٢٢

97. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी सफ़ को मिलाता है, अल्लाह तआला उसकी वजह से उसका एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं और फ़रिश्ते उस पर रहमतों को बिखेर देते हैं। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 98 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: خِيَارُكُمْ اَلْيَنُكُمْ مَنَاكِبَ فِي الصَّلٰوةِ، وَمَا مِنْ خَطْوَةٍ اَعْظَمُ اَجْرًا مِنْ خَطْوَةٍ مَشَاهَا رَجُلٌ اِلٰى فُرْجَةٍ

فِي الصَّفِّ فَسَدَّهَا. رواه البزار باسناد حسن، وابن حبان في صحيحه،

كلاهما بالشطر الاول، ورواه بتمامه الطبراني في الاوسط، الترغيب ٣٢٢/١

98. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें बेहतरीन लोग वे हैं जो नमाज़ में अपने मूंढे नर्म रखते हैं। सबसे ज़्यादा सवाब दिलाने वाला वह क़दम है जिसको इंसान सफ़ की ख़ाली जगह को पुर करने के लिए उठाता है। (बज़्ज़ार, इब्ने हब्बान, तबरानी, तर्ग़ीब)

फ़ायदा : नमाज़ में अपने मूंढे नर्म रखने का मतलब यह है कि जब कोई सफ़ में दाख़िल होना चाहे तो दाएं-बाएं के नमाज़ी के लिए अपने मूंढों को नर्म कर दें, ताकि आने वाला सफ़ में दाख़िल हो जाए।

﴿ 99 ﴾ عَنْ اَبِيْ جُحَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ سَدَّ فُرْجَةً فِي الصَّفِّ غُفِرَلَهُ. رواه البزار واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٥١

99. हज़रत अबू जुहैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सफ़ में ख़ाली जगह को पुर किया उसकी मग्फ़िरत कर दी जाती है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿100﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ وَصَلَ صَفًّا وَصَلَهُ اللهُ وَمَنْ قَطَعَ صَفًّا قَطَعَهُ اللهُ. (وهو بعض الحديث) رواه ابو داؤد، باب تسوية الصفوف، رقم:٦٦٦

100. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सफ़ को मिलाता है अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से मिला देते हैं और जो शख़्स सफ़ को तोड़ता है अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर कर देते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : सफ़ तोड़ने का मतलब यह है कि सफ़ के दर्मियान ऐसी जगह पर कोई सामान रख दे कि सफ़ पूरी न हो सके या सफ़ में ख़ाली जगह देखकर भी उसे पुर न करे। (मिरक़ात)

﴿101﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: سَوُّوا صُفُوْفَكُمْ فَاِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوْفِ مِنْ اِقَامَةِ الصَّلٰوةِ. رواه البخاري، باب اقامة الصف من تمام الصلاة، رقم:٧٢٣

101. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी सफ़ों को सीधा किया करो, क्योंकि नमाज़ को अच्छी तरह अदा करने में सफ़ों

को सीधा करना शामिल है। (बुख़ारी)

﴿102﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ فَأَسْبَغَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ مَشَى إِلَى الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ، فَصَلَّاهَا مَعَ النَّاسِ، أَوْمَعَ الْجَمَاعَةِ، أَوْفِي الْمَسْجِدِ، غَفَرَاللهُ لَهُ ذُنُوْبَهُ.

رواه مسلم باب فضل الوضوء والصلوة عقبه، رقم:٥٤٩

102. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स कामिल वुज़ू करता है, फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए चल कर जाता है और नमाज़ जमाअ़त के साथ मस्जिद में अदा करता है, तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (मुस्लिम)

﴿103﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى لَيَعْجَبُ مِنَ الصَّلَاةِ فِي الْجَمْعِ.

رواه احمد واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٦٣/٢

103. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने पर ख़ुश होते हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿104﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ صَلَاةِ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ عَلٰى صَلَاتِهِ وَحْدَهُ بِضْعٌ وَّعِشْرُوْنَ دَرَجَةً. رواه احمد ٣٧٦/١

104. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से बीस दर्जे से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। (मुस्नद अहमद)

﴿105﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلَاةُ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ تُضَعَّفُ عَلٰى صَلَاتِهِ فِيْ بَيْتِهِ وَفِيْ سُوْقِهِ خَمْسًا وَّعِشْرِيْنَ ضِعْفًا.

(الحديث) رواه البخاري، باب فضل صلوة الجماعة، رقم:٦٤٧

105. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना अपने घर और बाज़ार में नमाज़ पढ़ने से पचीस

दर्जे ज़्यादा सवाब रखता है। (बुख़ारी)

﴾106﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَّعِشْرِيْنَ دَرَجَةً. رواه مسلم، باب فضل صلوة الجماعة ......، رقم:١٤٧٧

106. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त की नमाज़ अकेले की नमाज़ से अज्र व सवाब में सत्ताईस दर्जे ज़्यादा है। (मुस्लिम)

﴾107﴿ عَنْ قُبَاثِ بْنِ اَشْيَمَ اللَّيْثِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلَاةُ الرَّجُلَيْنِ يَؤُمُّ اَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلَاةِ اَرْبَعَةٍ تَتْرٰى، وَصَلَاةُ اَرْبَعَةٍ يَؤُمُّ اَحَدُهُمْ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ صَلَاةِ ثَمَانِيَةٍ تَتْرٰى، وَصَلَاةُ ثَمَانِيَةٍ يَؤُمُّ اَحَدُهُمْ اَزْكٰى عِنْدَ اللهِ مِنْ مِائَةٍ تَتْرٰى. رواه البزار والطبرانى فى الكبير ورجال الطبرانى موثقون، مجمع الزوائد ١٦٣/٢

107. हज़रत कुबास बिन अशयम लैसी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ कि एक इमाम हो एक मुक़्तदी, अल्लाह तआ़ला के नज़दीक चार आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है। उसी तरह चार आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ आठ आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है और आठ आदमियों की जमाअ़त की नमाज़ सौ आदमियों की अलाहिदा-अलाहिदा नमाज़ से ज़्यादा पसन्दीदा है। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾108﴿ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ صَلَاةَ الرَّجُلِ مَعَ الرَّجُلِ اَزْكٰى مِنْ صَلَاتِهٖ وَحْدَهٗ، وَصَلَاتَهٗ مَعَ الرَّجُلَيْنِ اَزْكٰى مِنْ صَلَاتِهٖ مَعَ الرَّجُلِ، وَمَا كَثُرَ فَهُوَ اَحَبُّ اِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ. (وهو بعض الحديث) رواه ابو داؤد، باب فى فضل صلوة الجماعة، رقم: ٥٥٤ سنن ابى داؤد طبع دار الباز للنشر والتوزيع

108. हज़रत उबई बिन काब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक आदमी का दूसरे के साथ जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना उसके अकेले नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है और तीन आदमियों का जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना दो आदमियों के जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है। इसी तरह जमाअ़त की नमाज़ में मज्मा जितना ज़्यादा होगा, उतना ही अल्लाह तआ़ला को

ज़्यादा महबूब है। (अबूदाऊद)

﴿109﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلصَّلَاةُ فِي جَمَاعَةٍ تَعْدِلُ خَمْسًا وَّعِشْرِيْنَ صَلَاةً، فَاِذَا صَلَّاهَا فِيْ فَلَاةٍ فَاَتَمَّ رُكُوْعَهَا وَسُجُوْدَهَا بَلَغَتْ خَمْسِيْنَ صَلَاةً. رواه ابو داؤد، باب ماجاء فى فضل المشى الى الصلوة، رقم: ٥٦٠

109. हज़रत अबू सईद खुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने का सवाब पचीस नमाज़ों के बराबर होता है और जब कोई शख़्स जंगल ब्याबान में नमाज़ पढ़ता है और उसका रुकूअ़, सज्दा भी पूरा करता है, यानी तस्बीहात को इत्मीनान से पढ़ता है तो उस नमाज़ का सवाब पचास नमाज़ों के बराबर पहुंच जाता है। (अबूदाऊद)

﴿110﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ ثَلَاثَةٍ فِيْ قَرْيَةٍ وَلَا بَدْوٍ لَاتُقَامُ فِيْهِمُ الصَّلَاةُ اِلَّا قَدِاسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ، فَعَلَيْكَ بِالْجَمَاعَةِ، فَاِنَّمَا يَاْكُلُ الذِّئْبُ الْقَاصِيَةَ. رواه ابوداؤد، باب التشديد فى ترك الجماعة، رقم: ٥٤٧

110. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस गांव या जंगल में तीन आदमी हों और वहां जमाअ़त से नमाज़ न होती हो, तो उन पर शैतान पूरी तरह ग़ालिब आ जाता है, इसलिए जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझो। भेड़िया अकेली बकरी को खा जाता है (और आदमियों का भेड़िया शैतान है)। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ ﷺ وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ اسْتَاْذَنَ اَزْوَاجَهُ فِيْ اَنْ يُمَرَّضَ فِيْ بَيْتِيْ فَاَذِنَّ لَهُ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلَاهُ فِي الْاَرْضِ. رواه البخارى، باب الغسل والوضوء فى المخضب ......، رقم: ١٩٨

111. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब नबी करीम ﷺ बीमार हुए और आपकी तकलीफ़ बढ़ गई, तो आप ﷺ ने दूसरी बीवियों से इस बात की इजाज़त ली कि आप की तीमारदारी मेरे घर में की जाए। उन्होंने आप ﷺ को इस बात की इजाज़त दे दी। (फिर जब नमाज़ का वक़्त हुआ तो) रसूलुल्लाह ﷺ दो आदमियों का सहारा लेकर (मस्जिद जाने के लिए इस तरह) निकले कि (कमज़ोरी की वजह से) आप ﷺ के पांव ज़मीन पर घिसट रहे थे। (बुख़ारी)

﴾112﴿ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا صَلّٰى بِالنَّاسِ يَخِرُّ رِجَالٌ مِنْ قَامَتِهِمْ فِي الصَّلَاةِ مِنَ الْخَصَاصَةِ وَهُمْ اَصْحَابُ الصُّفَّةِ حَتّٰى تَقُوْلَ الْاَعْرَابُ: هٰؤُلَاءِ مَجَانِيْنُ اَوْ مَجَانُوْنَ، فَاِذَا صَلّٰى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ انْصَرَفَ اِلَيْهِمْ، فَقَالَ: لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَالَكُمْ عِنْدَ اللهِ لَاَحْبَبْتُمْ اَنْ تَزْدَادُوْا فَاقَةً وَحَاجَةً قَالَ فَضَالَةُ: وَاَنَا يَوْمَئِذٍ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في معيشة اصحاب النبي ﷺ، رقم:٢٣٦٧

112. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब नामज़ पढ़ाते तो सफ़ में खड़े बाज़ अस्हाबे सुफ़्फ़ा भूख की शिद्दत की वजह से गिर जाते, यहां तक कि बाहर के देहाती लोग उनको देखते तो यूं समझते कि यह दीवाने हैं। रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : अगर तुम्हें वह सवाब मालूम हो जाए जो तुम्हारे लिए अल्लाह तआ़ला के यहां है, तो तुम इससे भी ज़्यादा तंगदस्ती और फ़ाक़े में रहना पसन्द करो। हज़रत फ़ज़ाला रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं उस दिन आप ﷺ के साथ था। (तिर्मिज़ी)

﴾113﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَكَاَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ، وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَكَاَنَّمَا صَلَّى اللَّيْلَ كُلَّهُ. رواه مسلم، باب فضل صلاة العشاء والصبح في جماعة، رقم:١٤٩١

113. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इशा की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़े, गोया उसने आधी रात इबादत की और जो फ़ज्र की नमाज़ भी जमाअ़त के साथ पढ़ ले, गोया उसने पूरी रात इबादत की। (मुस्लिम)

﴾114﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اَثْقَلَ صَلَاةٍ عَلَى الْمُنَافِقِيْنَ صَلَاةُ الْعِشَاءِ وَصَلَاةُ الْفَجْرِ.

(الحديث) رواه مسلم، باب فضل صلاة الجماعة ......، رقم: ١٤٨٢

114. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुनाफ़िक़ीन पर सबसे ज़्यादा भा॰ इशा और फ़ज्र की नमाज़ है। (मुस्लिम)

﴾115﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِيْ

التَّهْجِيْرِ لَاسْتَبَقُوْا اِلَيْهِ، وَلَوْ يَعْلَمُوْنَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لَاَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا.

(وهو طرف من الحديث) رواه البخاري، باب الاستهام في الاذان، رقم:٦١٥

115. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को ज़ुह्र की नमाज़ के लिए दोपहर की गर्मी में चल कर मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत मालूम हो जाती, तो वह ज़ुह्र की नमाज़ के लिए दौड़ते हुए जाते और अगर इन्हें इशा और फ़ज्र की नमाज़ों की फ़ज़ीलत मालूम हो जाती, तो वे उन नमाज़ों के लिए मस्जिद जाते, चाहें उन्हे (किसी बीमारी की वजह से) घिसट कर ही जाना पड़ता। (बुख़ारी)

﴿116﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِيْ جَمَاعَةٍ فَهُوَ فِيْ ذِمَّةِ اللهِ فَمَنْ اَخْفَرَ ذِمَّةَ اللهِ كَبَّهُ اللهُ فِي النَّارِ لِوَجْهِهٖ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢٩/٢

116. हज़रत अबू बकरः ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में होता है, जो अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में आए हुए शख़्स को सताएगा, अल्लाह तआ़ला उसे औंधे मुंह जहन्नम में फेंक देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿117﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى لِلّٰهِ اَرْبَعِيْنَ يَوْمًا فِيْ جَمَاعَةٍ يُدْرِكُ التَّكْبِيْرَةَ الْاُوْلٰى كُتِبَتْ لَهٗ بَرَاءَتَانِ: بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ، وَبَرَاءَةٌ مِنَ النِّفَاقِ.

رواه الترمذي، باب ما جاء في فضل التكبيرة الاولى، رقم:٢٤١ قال الحافظ المنذري: رواه الترمذي وقال: لااعلم احدا رفعه الا ما روى مسلم بن قتيبة عن طعمة بن عمرو وقال المملي رحمه الله: ومسلم وطعمة وبقية رواته ثقات، الترغيب ٢٦٣/١

117. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स चालीस दिन इख़्लास से तकबीरे ऊला के साथ जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है, तो उसको दो परवाने मिलते हैं। एक परवाना जहन्नम से बरी होने का, दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का। (तिर्मिज़ी)

﴿118﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ آمُرَ فِتْيَتِيْ فَيَجْمَعُ حُزَمًا مِنْ حَطَبٍ ثُمَّ آتِيْ قَوْمًا يُصَلُّوْنَ فِيْ بُيُوْتِهِمْ لَيْسَتْ بِهِمْ عِلَّةٌ فَاُحَرِّقَهَا عَلَيْهِمْ.

رواه ابوداؤد، باب التشديد في ترك الجماعة، رقم:٥٤٩

118. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरा दिल चाहता है कि चन्द जवानों से कहूं कि बहुत सारा ईंधन इक्ट्ठा करके लाएं फिर मैं उन लोगों के पास जाऊं जो बग़ैर किसी उज़्र के घरों में नमाज़ पढ़ लेते हैं और उनके घरों को जला दूं। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ اَتَی الْجُمُعَةَ فَاسْتَمَعَ وَاَنْصَتَ، غُفِرَلَهُ مَا بَیْنَهُ وَبَیْنَ الْجُمُعَةِ، وَزِیَادَةُ ثَلَاثَةِ اَیَّامٍ، وَمَنْ مَسَّ الْحَصَی فَقَدْ لَغَا. رواه مسلم، باب فضل من استمع وانصت فى الخطبة،رقم:١٩٨٨

119. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर जुमा की नमाज़ के लिए आता है, ख़ूब ध्यान से खुत्बा सुनता है और खुत्बा के दौरान ख़ामोश रहता है, तो उस जुमा से गुज़िशता जुमा तक और मज़ीद तीन दिन के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। जिस शख़्स ने कंकरियों को हाथ लगाया यानी दौराने खुत्बा उनसे खेलता रहा (या हाथ, चटाई, कपड़े वग़ैरह से खेलता रहा), तो उसने फ़ुज़ूल काम किया (और उसकी वजह से जुमा का ख़ास सवाब ज़ाय कर दिया)। (मुस्लिम)

﴿120﴾ عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ مَنِ اغْتَسَلَ یَوْمَ الْجُمُعَةِ، وَمَسَّ مِنْ طِیْبٍ اِنْ كَانَ عِنْدَهُ، وَلَبِسَ مِنْ اَحْسَنِ ثِیَابِهِ ثُمَّ خَرَجَ حَتّٰی یَاْتِیَ الْمَسْجِدَ فَیَرْكَعَ اِنْ بَدَا لَهُ وَلَمْ یُؤْذِ اَحَدًا، ثُمَّ اَنْصَتَ اِذَا خَرَجَ اِمَامُهُ حَتّٰی یُصَلِّیَ كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا بَیْنَهَا وَبَیْنَ الْجُمُعَةِ الْاُخْرٰی. رواه احمد ٥/٤٢٠

120. हज़रत अबू ऐय्यूब अंसारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करता है, अगर ख़ुश्बू हो तो उसे भी इस्तेमाल करता है, अच्छे कपड़े पहनता है, उसके बाद मस्जिद जाता है। फिर मस्जिद आकर अगर मौक़ा हो तो नफ़्ल नमाज़ पढ़ लेता है और किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाता, यानी लोगों की गरदनों के ऊपर से फलांगता हुआ नहीं जाता, फिर जब इमाम खुत्बा देने के लिए आता है उस वक़्त से नमाज़ होने तक ख़ामोश रहता है, यानी कोई बात-चीत नहीं करता, तो ये आमाल उस जुमा से गुज़िश्ता जुमा तक के गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया हो जाते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿121﴾ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: لَا یَغْتَسِلُ رَجُلٌ یَوْمَ

الْجُمُعَةِ وَيَتَطَهَّرُ مَا اسْتَطَاعَ مِنَ الطُّهْرِ، وَيَدَّهِنُ مِنْ دُهْنِهِ أَوْ يَمَسُّ مِنْ طِيْبِ بَيْتِهِ، ثُمَّ يَخْرُجُ فَلا يُفَرِّقُ بَيْنَ اثْنَيْنِ، ثُمَّ يُصَلِّيْ مَا كُتِبَ لَهُ، ثُمَّ يُنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الْإِمَامُ إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرٰى. رواه البخاري، باب الدهن للجمعة، رقم:٨٨٣

121. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमा के दिन गुस्ल करता है, जितना हो सके पाकी का एहतमाम करता है और अपना तेल लगाता है या अपने घर से ख़ुश्बू इस्तेमाल करता है, फिर मस्जिद जाता है। मस्जिद पहुंचकर जो दो आदमी पहले से साथ बैठे हों उनके दर्मियान में नहीं बैठता और जितनी तौफ़ीक़ हो जुमा से पहले नमाज़ पढ़ता है। फिर जब इमाम ख़ुत्बा देता है उसको तवज्जह और ख़ामोशी से सुनता है तो उस जुमा से गुज़िश्ता जुमा तक के गुनाहों को माफ़ कर दिया जाता है। (बुख़ारी)

﴿122﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِيْ جُمُعَةٍ مِنَ الْجُمَعِ: مَعَاشِرَ الْمُسْلِمِيْنَ! إِنَّ هٰذَا يَوْمٌ جَعَلَهُ اللهُ لَكُمْ عِيْدًا فَاغْتَسِلُوْا وَعَلَيْكُمْ بِالسِّوَاكِ.

رواه الطبراني في الاوسط والصغير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣٨٨/٢

122. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मर्तबा जुमा के दिन इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानो! अल्लाह तआला ने इस दिन को तुम्हारे लिए ईद का दिन बनाया है, लिहाज़ा इस दिन गुस्ल किया करो और मिस्वाक का एहतमाम किया करो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿123﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْغُسْلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ لَيَسُلُّ الْخَطَايَا مِنْ أُصُوْلِ الشَّعْرِ اسْتِلَالًا. رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٧٧/٢، طبع مؤسسة المعارف بيروت

123. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा के दिन का गुस्ल गुनाहों को बालों की जड़ों तक से निकाल देता है।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿124﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَقَفَتِ الْمَلَائِكَةُ عَلٰى بَابِ الْمَسْجِدِ يَكْتُبُوْنَ الْأَوَّلَ فَالْأَوَّلَ، وَمَثَلُ الْمُهَجِّرِ كَمَثَلِ الَّذِيْ يُهْدِيْ بَدَنَةً، ثُمَّ كَالَّذِيْ يُهْدِيْ بَقَرَةً، ثُمَّ كَبْشًا، ثُمَّ دَجَاجَةً، ثُمَّ بَيْضَةً، فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ طَوَوْا صُحُفَهُمْ وَيَسْتَمِعُوْنَ الذِّكْرَ. رواه البخاري، باب الاستماع الى الخطبة يوم الجمعة، رقم:٩٢٩

124. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जुमा का दिन होता है, फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं। पहले आने वाले का नाम पहले, उसके बाद आने वाले का नाम उसके बाद लिखते हैं (उसी तरह आने वालों के नाम उनके आने की तर्तीब से लिखते रहते हैं)। जो जुमा की नमाज़ के लिए सवेरे जाता है, उसे ऊंट सदक़ा करने का सवाब मिलता है। उसके बाद आने वाले को गाय सदक़ा करने का सवाब मिलता है। उसके बाद आने वाले को मेंढा, उसके बाद वाले को मुर्ग़ी, उसके बाद वाले को अंडा सदक़ा करने का सवाब मिलता है। जब इमाम ख़ुत्बा देने के लिए आता है तो फ़रिश्ते अपने वे रजिस्टर जिनमें आने वालों के नाम लिखे गए हैं लपेट देते हैं और ख़ुत्बा सुनने में मशग़ूल हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴾125﴿ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ اَبِيْ مَرْيَمَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَحِقَنِيْ عَبَايَةُ بْنُ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ رَحِمَهُ اللهُ، وَاَنَا مَاشٍ اِلَى الْجُمُعَةِ فَقَالَ: اَبْشِرْ، فَاِنَّ خُطَاكَ هٰذِهٖ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، سَمِعْتُ اَبَاعَبْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَهُمَا حَرَامٌ عَلَى النَّارِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ماجاء فی فضل من اغبرت قدماه فی سبيل الله، رقم:١٦٣٢

125. हज़रत यज़ीद बिन अबी मरयम रह० फ़रमाते हैं कि मैं जुमा की नमाज़ के लिए पैदल जा रहा था कि हज़रत अ़बाया बिन रिफ़अः रह० मुझे मिल गए और फ़रमाने लगे तुम्हें ख़ुशख़बरी हो कि तुम्हारे ये क़दम अल्लाह तआ़ला के रास्ते में हैं। मैंने अबू अ़ब्स ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसके क़दम अल्लाह तआ़ला के रास्ते में गुबारआलूद हुए, तो वे क़दम दोज़ख़ की आग पर हराम हैं। (तिर्मिज़ी)

﴾126﴿ عَنْ اَوْسِ بْنِ اَوْسٍ الثَّقَفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ غَسَّلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاغْتَسَلَ ثُمَّ بَكَّرَ وَابْتَكَرَ وَمَشٰى، وَلَمْ يَرْكَبْ، وَدَنَا مِنَ الْاِمَامِ فَاسْتَمَعَ وَلَمْ يَلْغُ كَانَ لَهٗ بِكُلِّ خُطْوَةٍ عَمَلُ سَنَةٍ اَجْرُ صِيَامِهَا وَقِيَامِهَا.

رواه ابو داؤد، باب فی الغسل للجمعة، رقم:٣٤٥

126. हज़रत औस बिन औस सक़्फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स जुमा के दिन ख़ूब अच्छी तरह गुस्ल करता है,

बहुत सवेरे मस्जिद जाता है, पैदल जाता है सवारी पर सवार नहीं होता, इमाम से क़रीब होकर बैठता है और तवज्जह से ख़ुत्बा सुनता है, इस दौरान किसी क़िस्म की कोई बात नहीं करता, तो वह जुमा के लिए जितने क़दम चलकर आता है उसे हर-हर क़दम के बदले एक साल के रोज़ों का सवाब और एक साल की रातों की इबादत का सवाब मिलता है। (अबूदाऊद)

﴾127﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَسَّلَ وَاغْتَسَلَ، وَغَدَا وَابْتَكَرَ وَدَنَا، فَاقْتَرَبَ وَاسْتَمَعَ وَأَنْصَتَ كَانَ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوهَا أَجْرُ قِيَامِ سَنَةٍ وَصِيَامِهَا. رواه احمد ٢/٢٠٩

127. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमा के दिन अच्छी तरह ग़ुस्ल करता है, बहुत सवेरे जुमा के लिए जाता है, इमाम के बिल्कुल क़रीब बैठता है और ख़ुत्बा तवज्जह से सुनता है इस दौरान ख़ामोश रहता है तो वह जितने क़दम चलकर मस्जिद आता है उसे हर-हर क़दम के बदले साल भर की तहज्जुद और साल भर के रोज़ों का सवाब मिलता है। (मुस्नद अहमद)

﴾128﴿ عَنْ أَبِي لُبَابَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُنْذِرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ سَيِّدُ الْأَيَّامِ، وَأَعْظَمُهَا عِنْدَ اللهِ وَهُوَ أَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنْ يَوْمِ الْأَضْحٰى وَيَوْمِ الْفِطْرِ وَفِيهِ خَمْسُ خِلَالٍ: خَلَقَ اللهُ فِيهِ آدَمَ وَأَهْبَطَ اللهُ فِيهِ آدَمَ إِلَى الْأَرْضِ وَفِيهِ تَوَفَّى اللهُ آدَمَ وَفِيهِ سَاعَةٌ لَا يَسْأَلُ اللهَ فِيهَا الْعَبْدُ شَيْئًا إِلَّا أَعْطَاهُ، مَالَمْ يَسْأَلْ حَرَامًا وَفِيهِ تَقُومُ السَّاعَةُ مَامِنْ مَلَكٍ مُقَرَّبٍ وَلَا سَمَاءٍ وَلَا أَرْضٍ وَلَا رِيَاحٍ وَلَا جِبَالٍ وَلَا بَحْرٍ إِلَّا وَهُنَّ يُشْفِقْنَ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ. رواه ابن ماجه، باب فى فضل الجمعة، رقم: ١٠٨٤

128. हज़रत अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुंज़िर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा का दिन सारे दिनों का सरदार है। अल्लाह तआ़ला के यहां सारे दिनों में सबसे ज़्यादा अ़ज़मत वाला दिन यही है। यह दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र के दिन से भी ज़्यादा मर्तबे वाला है। इस दिन में पांच बातें हुईं। इस दिन अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम ﷺ को पैदा फ़रमाया; इसी दिन उनको ज़मीन पर उतारा; इसी दिन उनको मौत दी। इस दिन में एक घड़ी ऐसी है कि बन्दा उसमें जो चीज़ भी मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं, बशर्ते कि किसी हराम चीज़ का सवाल न करे और इस दिन

क़ियामत क़ायम होगी। तमाम मुक़र्रब फ़रिश्ते, आसमान, ज़मीन, हवाएं, पहाड़, समुन्दर सब जुमा के दिन से डरते हैं (इसलिए कि क़ियामत जुमा के दिन ही आएगी)। (इब्ने माजा)

﴾129﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَطْلُعُ الشَّمْسُ وَلَا تَغْرُبُ عَلٰی یَوْمٍ اَفْضَلَ مِنْ یَوْمِ الْجُمُعَةِ، وَمَامِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا وَهِیَ تَفْزَعُ یَوْمَ الْجُمُعَةِ اِلَّا هٰذَیْنِ الثَّقَلَیْنِ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحیح ٥/٧

129. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरज के तुलूअ़ व गुरूब वाले दिनों में कोई भी दिन जुमा के दिन से अफ़ज़ल नहीं, यानी जुमा का दिन तमाम दिनों से अफ़ज़ल है। इंसान व जिन्नात के अलावा तमाम जानदार जुमा के दिन से घबराते हैं (कि कहीं क़ियामत क़ाइम न हो जाए)। (इब्ने हब्बान)

﴾130﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ وَاَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ فِی الْجُمُعَةِ سَاعَةً لَایُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ یَسْاَلُ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ فِیْهَا اِلَّا اَعْطَاهُ اِیَّاهُ وَهِیَ بَعْدَ الْعَصْرِ. رواه احمد، الفتح الربانی ١٣/٦

130. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जुमा के दिन एक घड़ी ऐसी होती है कि मुसलमान बन्दा इसमें अल्लाह तआ़ला से जो मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको ज़रूर अ़ता फ़रमा देते हैं और वह घड़ी अ़स्र के बाद होती है। (मुस्नद अहमद, अल-फ़त्हुर्रब्बानी)

﴾131﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ یَقُوْلُ: هِیَ مَا بَیْنَ اَنْ یَجْلِسَ الْاِمَامُ اِلٰی اَنْ تُقْضَی الصَّلَاةُ.

رواه مسلم، باب فی الساعة التی فی یوم الجمعة، رقم:١٩٧٥

131. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को जुमा की घड़ी के बारे में इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वह घड़ी ख़ुत्बा शुरू होने से लेकर नमाज़ के ख़त्म होने तक का दर्मियानी वक़्त है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : जुमा के दिन क़ुबूलियत वाली घड़ी की तऐय्युन के बारे में और भी हदीसें हैं, लिहाज़ा इस पूरे दिन ज़्यादा से ज़्यादा दुआ़ और इबादत का एहतमाम करना चाहिए। (नव्वी)

सुनन व नवाफ़िल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا﴾ [بنی اسرائیل:٧٩]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से ख़िताब फ़रमाया : और रात के बाज़ हिस्से में बेदार हो कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करें, जो कि आपके लिए पांच नमाज़ों के अलावा एक ज़ाइद नमाज़ है। उम्मीद है कि इस तहज्जुद पढ़ने की वजह से आप के रब आपको मक़ामे महमूद में जगह देंगे।

(बनी इसराईल : 79)

फ़ायदा : क़ियामत में जब सब लोग परेशान होंगे, तो रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ारिश पर इस परेशानी से नजात मिलेगी और हिसाब-किताब शुरू होगा। इस सिफ़ारिश के हक़ को मक़ामे महमूद कहते हैं।

(ब्यानुल क़ुरआन)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا﴾ [الفرقان:٦٤]

(अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई कि) वे लोग अपने रब के सामने सज्दे में और खड़े हो कर रात गुज़ारते हैं।

(फ़ुरक़ान : 64)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ○ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [السجدة:١٦،١٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि वे लोग रातों को अपने बिस्तरों से उठ कर अपने रब को अ़ज़ाब के डर से और सवाब की उम्मीद से पुकारते रहते हैं (यानी नमाज़, ज़िक्र, दुआ़ में लगे रहते हैं) और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से ख़ैरात किया करते हैं। ऐसे लोगों के लिए आंखों की ठंढक का जो सामान ग़ैबी ख़ज़ाने में मौजूद है उसकी किसी शख़्स को भी ख़बर नहीं। यह उनको उन आ़माल का बदला मिलेगा, जो किया करते थे।

(सज्दा : 16-17)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ○ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ط اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ○ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ○ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ﴾ [الذريٰت:١٥-١٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे उनके रब ने उन्हें जो सवाब अता किया होगा वह उसे खुशी-खुशी ले रहे होंगे। वे लोग इससे पहले यानी दुनिया में नेकी करने वाले थे। वे लोग रात में बहुत ही कम सोया करते थे (यानी रात का अक्सर हिस्सा इबादत में मशग़ूल रहते थे) और शब के आख़िरी हिस्से में इस्तग़फ़ार किया करते थे।

(ज़ारियात : 15-18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ○ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا○ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا○ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا○ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا○ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا○ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا﴾ [المزمل:١-٧]

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब फ़रमाया : ऐ चादर ओढ़ने वाले! रात को तहज्जुद की नमाज़ में खड़े रहा करें, मगर कुछ देर आराम फ़रमा लें यानी आधी रात या आधी रात से कुछ कम या आधी रात से कुछ

ज़्यादा आराम फ़रमा लें। और (इस तहज्जुद की नमाज़ में) कुरआन मजीद को ठहर-ठहर कर पढ़ा कीजिए। (तहज्जुद के हुक्म की एक हिकमत यह है कि रात के उठने के मुजाहदे की वजह से तबीयत में भारी कलाम बर्दाश्त करने की इस्तेदाद ख़ूब कामिल हो जाए, क्योंकि) हम अंक़रीब आप पर एक भारी कलाम यानी कुरआन मजीद नाज़िल करने वाले हैं। (दूसरी हिकमत यह है कि) रात का उठना नफ़्स को ख़ूब कुचलता है और उस वक़्त बात ठीक निकलती है यानी क़िरअत, ज़िक्र और दुआ के अल्फ़ाज़ ख़ूब इत्मीनान से अदा होते हैं और उन आमाल में जी लगता है। (तीसरी हिक्मत यह है कि) आपको दिन में बहुत से मशाग़िल रहते हैं (जैसे तब्लीग़ी मशग़ला, लिहाज़ा रात का वक़्त तो यक्सूई के साथ अल्लाह की इबादत के लिए होना चाहिए)। (मुज़्ज़म्मिल : 1-8)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿132﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: مَا اَذِنَ اللهُ لِعَبْدٍ فِىْ شَىْءٍ اَفْضَلَ مِنْ رَكْعَتَيْنِ يُصَلِّيْهِمَا، وَاِنَّ الْبِرَّ لَيُذَرُّ عَلَى رَاْسِ الْعَبْدِ مَادَامَ فِىْ صَلَاتِهٖ وَمَا تَقَرَّبَ الْعِبَادُ اِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ بِمِثْلِ مَا خَرَجَ مِنْهُ. قَالَ اَبُو النَّضْرِ: يَعْنِي الْقُرْآنَ.

رواه الترمذى، باب ماتقرب العباد الى الله بمثل ما خرج منه، رقم: ٢٩١١

132. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला किसी बन्दे को दो रकअत नमाज़ की तौफ़ीक़ दे दें उससे बेहतर कोई चीज़ नहीं है। बन्दा जब तक नमाज़ में मशग़ूल रहता है भलाइयां उसके सर पर बिखेर दी जाती हैं और बन्दे अल्लाह तआला का क़ुर्ब उस चीज़ से बढ़कर किसी और चीज़ के ज़रिए हासिल नहीं कर सकते, जो ख़ुद अल्लाह तआला की ज़ात से निकली है, यानी क़ुरआन शरीफ़। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा क़ुर्ब क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत से हासिल होता है।

﴾133﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ بِقَبْرٍ فَقَالَ: مَنْ صَاحِبُ هٰذَا الْقَبْرِ؟ فَقَالُوا: فُلَانٌ فَقَالَ: رَكْعَتَانِ اَحَبُّ اِلٰى هٰذَا مِنْ بَقِيَّةِ دُنْيَاكُمْ.

رواه الطبرانی فی الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد۲/۵۱٦

133. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक क़ब्र के पास से गुज़रे। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : यह क़ब्र किस शख़्स की है? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : फ़्लां शख़्स की है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस क़ब्र वाले शख़्स के नज़दीक दो रकअ़तों का पढ़ना तुम्हारी दुनिया की बाक़ी तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसन्दीदा है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद का मक़सद यह है कि दो रकअ़त की क़ीमत दुनिया के साज़ व सामान से ज़्यादा है, इसका सही इल्म क़ब्र में पहुंचकर होगा।

﴾134﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ خَرَجَ زَمَنَ الشِّتَاءِ، وَالْوَرَقُ يَتَهَافَتُ فَاَخَذَ بِغُصْنَيْنِ مِنْ شَجَرَةٍ قَالَ: فَجَعَلَ ذٰلِكَ الْوَرَقُ يَتَهَافَتُ، قَالَ: فَقَالَ: يَا اَبَاذَرٍّ! قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ لَيُصَلِّی الصَّلَاةَ يُرِيْدُ بِهَا وَجْهَ اللهِ فَتَهَافَتُ عَنْهُ ذُنُوْبُهُ كَمَا يَتَهَافَتُ هٰذَا الْوَرَقُ عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ. رواه احمد ۱۷۹/۵

134. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम ﷺ सर्दी के मौसम में बाहर तशरीफ़ लाए, पत्ते दरख़्तों से गिर रहे थे। आप ﷺ ने एक दरख़्त की दो टहनियां हाथ में लीं, उनके पत्ते और भी गिरने लगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! मैंने अ़र्ज़ किया : लब्बैक या रसूलुल्लाह! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान बन्दा जब अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए नमाज़ पढ़ता है तो उससे उसके गुनाह ऐसे ही गिरते हैं जैसे ये पत्ते इस दरख़्त से गिर रहे हैं। (मुस्नद अहमद)

﴾135﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ صَابَرَ عَلٰى اثْنَتَیْ عَشْرَةَ رَكْعَةً بَنَى اللهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ بَيْتًا فِی الْجَنَّةِ، اَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الْفَجْرِ.

رواه النسائی، باب ثواب من صلى فی اليوم والليلة ثنتی عشرة ركعة ......، رقم:۱۷۹٦

135. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाती हैं : जो बारह रकअ़तें पढ़ने की पाबंदी करता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में महल बनाते हैं। चार रकअ़त ज़ुह्र से पहले, दो रकअ़त ज़ुह्र के बाद, दो रकअ़त मग़्रिब के बाद, दो रकअ़त इशा के बाद और दो रकअ़त फ़ज्र से पहले। (नसाई)

﴿136﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ عَلٰى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ اَشَدَّ مُعَاهَدَةً مِنْهُ عَلٰى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ.

رواه مسلم، باب استحباب ركعتي سنة الفجر ......، رقم:١٦٨٦

136. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ को नफ़्लों (और सुन्नतों) में से किसी नमाज़ का इतना ज़्यादा एहतमाम न था, जितना कि फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रकअ़त सुन्नत पढ़ने का एहतमाम था। (मुस्लिम)

﴿137﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ فِيْ شَاْنِ الرَّكْعَتَيْنِ عِنْدَ طُلُوْعِ الْفَجْرِ : لَهُمَا اَحَبُّ اِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا جَمِيْعًا.

رواه مسلم، استحباب ركعتي سنة الفجر ......، رقم:١٦٨٩

137. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नतों के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ये दो रकअ़तें मुझे सारी दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ اُمِّ حَبِيْبَةَ بِنْتِ اَبِيْ سُفْيَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى اَرْبَعِ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَاَرْبَعٍ بَعْدَهَا حَرَّمَهُ اللهُ تَعَالٰى عَلَى النَّارِ.

رواه النسائي، باب الاختلاف على اسماعيل بن ابي خالد، رقم:١٨١٧

138. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ज़ुह्र से पहले चार रकअ़तें और ज़ुह्र के बाद चार रकअ़तें पाबंदी से पढ़ता है, अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ की आग हराम फ़रमा देते हैं। (नसाई)

फ़ायदा : ज़ुह्र से पहले की चार रकअ़तें सुन्नते मुअक्किदा हैं और ज़ुह्र के बाद की चार रकअ़तों में दो रकअ़तें सुन्नते मुअक्किदा हैं और दो नफ़्ल हैं।

﴿139﴾ عَنْ اُمِّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَامِنْ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ

يُصَلِّيْ اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ بَعْدَ الظُّهْرِ فَتَمَسُّ وَجْهَهُ النَّارُ اَبَدًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ.

رواه النسائی، باب الاختلاف علی اسماعیل بن ابی خالد، رقم:١٨١٤

139. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मोमिन बन्दा भी ज़ुहृ के बाद चार रकअ़तें पढ़ता है उसे जहन्नम की आग इंशाअल्लाह कभी नहीं छूएगी। (नसाई)

﴾140﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ السَّائِبِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّيْ اَرْبَعًا بَعْدَ اَنْ تَزُوْلَ الشَّمْسُ قَبْلَ الظُّهْرِ وَقَالَ: اِنَّهَا سَاعَةٌ تُفْتَحُ فِيْهَا اَبْوَابُ السَّمَاءِ وَاُحِبُّ اَنْ يَصْعَدَ لِيْ فِيْهَا عَمَلٌ صَالِحٌ. رواه الترمذی وقال: حدیث عبداللّٰه بن السائب حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی الصلاۃ عند الزوال، رقم:٤٧٨ الجامع الصحیح وھو سنن الترمذی

140. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साइब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ज़ुहृ से पहले ज़वाल के बाद चार रकअ़त पढ़ते थे और आपने इर्शाद फ़रमाया : यह वह घड़ी है जिसमें आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, इसलिए मैं चाहता हूं कि इस घड़ी में मेरा कोई नेक अ़मल आसमान की तरफ़ जाए। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : ज़ुहृ से पहले की चार रकअ़त से मुराद चार रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा हैं और बाज़ उलमा के नज़दीक ज़वाल के बाद ये चार रकअ़तें ज़ुहृ की सुन्नते मुअक्कदा के अलावा हैं।

﴾141﴿ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَرْبَعٌ قَبْلَ الظُّهْرِ بَعْدَ الزَّوَالِ تُحْسَبُ بِمِثْلِهِنَّ مِنْ صَلَاةِ السَّحَرِ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: وَلَيْسَ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا وَهُوَ يُسَبِّحُ اللّٰهَ تِلْكَ السَّاعَةَ ثُمَّ قَرَاَ: ﴿يَتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ﴾ [النحل:٤٨] الآيَة كُلَّهَا رواه الترمذی وقال: هذا حدیث غریب، باب ومن سورة النحل، رقم:٣١٢٨

141. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ज़वाल के बाद ज़ुहृ से पहले की चार रकअ़तें तहज्जुद की चार रकअ़तों के बराबर हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस वक़्त हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करती है। फिर आयते करीमा तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा यह है : सायादार चीज़ें और उनके साये (ज़वाल के वक़्त) कभी एक तरफ़

को और कभी दूसरी तरफ़ को आजिज़ी के साथ अल्लाह तआ़ला को सज्दा करते हुए झुके जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿142﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رَحِمَ اللهُ امْرَأً صَلّٰى قَبْلَ الْعَصْرِ اَرْبَعًا. رواه ابو داؤد، باب الصلاة قبل العصر، رقم:١٢٧١

142. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर रहम फ़रमाएं, जो अस्र से पहले चार रकअ़त पढ़ता है। (अबूदाऊद)

﴿143﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رواه البخاري، باب تطوع قيام رمضان من الايمان، رقم:٣٧

143. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो रमज़ान की रात में अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में नमाज़ पढ़ता है, उसके पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿144﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ شَهْرَ رَمَضَانَ فَقَالَ: شَهْرٌ كَتَبَ اللهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ، وَسَنَنْتُ لَكُمْ قِيَامَهُ فَمَنْ صَامَهُ وَقَامَهُ اِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهُ. رواه ابن ماجه، باب ماجاء في قيام شهر رمضان، رقم:١٣٢٨

144. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (एक मर्तबा) रमज़ान के महीने का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : यह ऐसा महीना है कि जिसके रोज़ों को अल्लाह तआ़ला ने तुम पर फ़र्ज़ किया है और मैंने तुम्हारे लिए इसकी तरावीह को सुन्नत क़रार दिया है। जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में इस महीने के रोज़े रखता है और तरावीह पढ़ता है, वह गुनाहों से इस तरह पाक साफ़ हो जाता है जैसा कि अपनी मां से आज ही पैदा हुआ हो। (इब्ने माजा)

﴿145﴾ عَنْ اَبِيْ فَاطِمَةَ الْاَزْدِيِّ اَوِ الْاَسَدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا اَبَا فَاطِمَةَ! اِنْ اَرَدْتَ اَنْ تَلْقَانِيْ فَاَكْثِرِ السُّجُوْدَ. رواه احمد ٨٢٤/٣

145. हज़रत अबू फ़ातिमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : अबू फ़ातिमा! अगर तुम मुझसे (आख़िरत में) मिलना चाहते हो तो सज्दे ज़्यादा करो, यानी नमाज़ें कसरत से पढ़ा करो। (मुस्नद अहमद)

﴾146﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ اَوَّلَ مَا یُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مِنْ عَمَلِهٖ صَلَاتُهُ، فَاِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ اَفْلَحَ وَاَنْجَحَ، وَاِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ، فَاِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِیْضَتِهٖ شَیْءٌ قَالَ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ: انْظُرُوْا هَلْ لِعَبْدِیْ مِنْ تَطَوُّعٍ؟ فَیُکَمِّلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِیْضَةِ، ثُمَّ یَکُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهٖ عَلٰی ذٰلِكَ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء ان اول ما یحاسب به العبد یوم القیامة الصلاة ......، رقم:٤١٣

146. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन आदमी के आमाल में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। अगर नमाज़ अच्छी हुई तो वह शख़्स कामयाब और बामुराद होगा और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो वह नाकाम व नामुराद होगा। अगर फ़र्ज़ नमाज़ में कुछ कमी हुई तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे : देखो! क्या मेरे बन्दे के पास कुछ नफ़्लें भी हैं, जिनसे फ़र्ज़ों की कमी पूरी कर दी जाए। अगर नफ़्लें होंगी तो अल्लाह तआला उनसे फ़र्ज़ों की कमी पूरी फ़रमा देंगे। उसके बाद फिर इसी तरह बाक़ी आमाल रोज़ा, ज़कात वग़ैरह का हिसाब होगा, यानी फ़र्ज़ रोज़ों की कमी नफ़्ल रोज़ों से पूरी की जाएगी और ज़कात की कमी नफ़्ली सदक़ात से पूरी की जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴾147﴿ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اَغْبَطَ اَوْلِیَائِیْ عِنْدِیْ لَمُؤْمِنٌ خَفِیْفُ الْحَاذِ ذُوْحَظٍّ مِنَ الصَّلَاةِ، اَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهٖ وَاَطَاعَهُ فِی السِّرِّ وَكَانَ غَامِضًا فِی النَّاسِ لَا یُشَارُ اِلَیْهِ بِالْاَصَابِعِ، وَكَانَ رِزْقُهُ كَفَافًا فَصَبَرَ عَلٰی ذٰلِكَ ثُمَّ نَقَرَ بِاِصْبَعَیْهِ فَقَالَ: عُجِّلَتْ مَنِیَّتُهُ قَلَّتْ بَوَاكِیْهِ قَلَّ تُرَاثُهُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن، باب ماجاء فی الکفاف ......،رقم:٢٣٤٧

147. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे दोस्तों में मेरे नज़दीक ज़्यादा रश्क के क़ाबिल वह मोमिन है जो हल्का फुल्का हो, यानी दुनिया के साज़ व सामान और अह्ल व अयाल का ज़्यादा बोझ न हो, नमाज़ में उसको बड़ा हिस्सा मिला हो यानी नवाफ़िल कसरत से पढ़ता हो। अपने रब की इबादत अच्छी तरह करता हो, अल्लाह तआला की इताअत (जिस तरह ज़ाहिर में

करता हो उसी तरह) तन्हाई में भी करता हो, लोगों में गुमनाम हो, उसकी तरफ़ उंगलियों से इशारे न किए जाते हों, यानी लोगों में मशहूर न हो, रोज़ी सिर्फ़ गुज़ारे के क़ाबिल हो, जिस पर सब्र करके उम्र गुज़ार दे। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से चुटकी बजाई (जैसे किसी चीज़ के जल्द हो जाने पर चुटकी बजाते हैं) और इर्शाद फ़रमाया : उसे मौत जल्दी आ जाए, न उसपर रोने वालियां ज़्यादा हों और न मीरास ज़्यादा हो। (तिर्मिज़ी)

﴿148﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلْمَانَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ رَجُلًا مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ حَدَّثَهُ قَالَ: لَمَّا فَتَحْنَا خَيْبَرَ اَخْرَجُوا غَنَائِمَهُمْ مِنَ الْمَتَاعِ وَالسَّبْيِ فَجَعَلَ النَّاسُ يَتَبَاعُونَ غَنَائِمَهُمْ فَجَاءَ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! لَقَدْ رَبِحْتُ رِبْحًا مَارَبِحَ الْيَوْمَ مِثْلَهُ اَحَدٌ مِنْ اَهْلِ هٰذَا الْوَادِيْ قَالَ: وَيْحَكَ وَمَا رَبِحْتَ؟ قَالَ: مَازِلْتُ اَبِيْعُ وَ اَبْتَاعُ حَتّٰى رَبِحْتُ ثَلَاثَمِائَةِ اُوْقِيَّةٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَنَا اُنَبِّئُكَ بِخَيْرِ رَجُلٍ رَبِحَ، قَالَ: مَاهُوَ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الصَّلَاةِ.

رواه ابو داؤد، باب فى التجارة فى الغزو، رقم:٢٦٦٧ مختصر سنن ابى داؤد للمنذرى

148. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलमान रह० से रिवायत है कि एक सहाबी ﷺ ने मुझे बताया कि हम लोग जब ख़ैबर फ़तह कर चुके तो लोगों ने अपना माले ग़नीमत निकाला, जिसमें मुख़्तलिफ़ सामान और क़ैदी थे और ख़रीद व फ़रोख़्त शुरू हो गई (कि हर शख़्स अपनी ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदने लगा और दूसरी ज़ाइद चीज़ें फ़रोख़्त करने लगा)। इतने में एक सहाबी ﷺ ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे आज की इस तिजारत में इस क़द्र नफ़ा हुआ कि यहां तमाम लोगों में से किसी को भी इतना नफ़ा नहीं हुआ। रसूलुल्लाह ﷺ ने ताज्जुब से पूछा कि कितना कमाया? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैं सामान ख़रीदता रहा और बेचता रहा जिसमें तीन सौ औक़िया चांदी नफ़ा में बेची। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें बेहतरीन नफ़ा हासिल करने वाला शख़्स बताता हूं। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वह नफ़ा क्या है (जिसे उस आदमी ने हासिल किया)? इर्शाद फ़रमाया : फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रकअ़त नफ़्ल। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : एक औक़िया चालीस दिरहम और एक दिरहम तक़रीबन तीन ग्राम चांदी का होता है। इस तरह तक़रीबन तीन हज़ार तोला चांदी हुई।

﴿149﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَعقِدُ الشَّيْطَانُ عَلٰى قَافِيَةِ رَاْسِ اَحَدِكُمْ. اِذَا هُوَ نَامَ. ثَلَاثَ عُقَدٍ يَضْرِبُ مَكَانَ كُلِّ عُقْدَةٍ: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيْلٌ فَارْقُدْ فَاِنِ اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَاِنْ تَوَضَّاَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَاِنْ صَلّٰى انْحَلَّتْ عُقَدُهٗ، فَاَصْبَحَ نَشِيْطًا طَيِّبَ النَّفْسِ وَاِلَّا اَصْبَحَ خَبِيْثَ النَّفْسِ كَسْلَانَ. رواه ابوداؤد، باب قيام الليل،رقم:١٣٠٦ وفى رواية ابن ماجه: فَيُصْبِحُ نَشِيْطًا طَيِّبَ النَّفْسِ قَدْ اَصَابَ خَيْرًا وَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ، اَصْبَحَ كَسِلًا خَبِيْثَ النَّفْسِ لَمْ يُصِبْ خَيْرًا. باب ماجاء فى قيام الليل،رقم:١٣٢٩

149. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : [तु]ममें से जब कोई शख़्स सोता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है। हर गिरह पर यह फूंक देता है, "अभी रात बहुत पड़ी है, सोता रह"। अगर इंसान [बे]दार होकर अल्लाह तआला का नाम ले लेता है, तो एक गिरह खुल जाती है। अगर [वु]ज़ू कर लेता है तो दूसरी गिरह भी खुल जाती है, फिर अगर तहज्जुद पढ़ लेता है तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं। चुनांचे सुबह को चुस्त हश्शाश-बश्शाश होता है उसे [ब]हुत बड़ी ख़ैर मिल चुकी होती है और अगर तहज्जुद नहीं पढ़ता, तो सुस्त रहता है, तबीयत बोझल होती है और बहुत बड़ी ख़ैर से महरूम हो जाता है।

(अबूदाऊद, इब्ने माजा)

﴿150﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: رَجُلَانِ مِنْ اُمَّتِیْ يَقُوْمُ اَحَدُهُمَا مِنَ اللَّيْلِ فَيُعَالِجُ نَفْسَهٗ اِلَى الطُّهُوْرِ، وَعَلَيْهِ عُقَدٌ فَيَتَوَضَّاُ، فَاِذَا وَضَّاَ يَدَيْهِ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا وَضَّاَ وَجْهَهٗ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا مَسَحَ رَاْسَهٗ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا وَضَّاَ رِجْلَيْهِ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَيَقُوْلُ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ لِلَّذِيْنَ وَرَاءَ الْحِجَابِ: انْظُرُوْا اِلٰى عَبْدِیْ هٰذَا يُعَالِجُ نَفْسَهٗ مَاسَاَلَنِیْ عَبْدِیْ هٰذَا فَهُوَ لَهٗ. رواه احمد، الفتح الربانى ١/٣٠٤

[15]0. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह [इ]र्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी उम्मत के दो आदमियों में से एक रात को उठता है और तबीयत के न चाहते हुए अपने आपको इस हाल में वुज़ू पर आमादा करता है [कि] उस पर शैतान की तरफ़ से गिरहें लगी होती हैं। जब वुज़ू में अपने दोनों हाथ धोता है तो एक गिरह खुल जाती है, जब चेहरा धोता है तो दूसरी गिरह खुल जाती [है,] जब सर का मसह करता है तो एक और गिरह खुल जाती है, जब पांव धोता है [तो] एक और गिरह खुल जाती है। फिर अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, जो इंसानों की निगाहों से ओझल हैं, मेरे उस बन्दे को देखो कि वह किस तरह मशक़्क़त

उठा रहा है। मेरा यह बन्दा मुझसे जो मांगेगा वह उसे मिलेगा।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿151﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَعَارَّ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ، ثُمَّ قَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، اَوْ دَعَا اسْتُجِيْبَ، فَاِنْ تَوَضَّاَ وَصَلّٰى قُبِلَتْ صَلَاتُهُ.

رواه البخاري، باب فضل من تعارّ من الليل فصلّى، رقم: ١١٥٤

151. हज़रत उ़बादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसकी रात को आंख खुल जाए और फिर वह यह पढ़ ले : *'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला-शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० अलहम्दु लिल्लाह, सुब्हानल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर, ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह'* और उसके बाद 'अल्लाहुम-मग़्फ़िरली' (ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए) कहे या कोई और दुआ़ करे तो उसकी दुआ़ क़ुबूल की जाती है। फिर अगर वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने लग जाए तो उसकी नमाज़ क़ुबूल की जाती है। (बुख़ारी)

﴿152﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ، اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاءُكَ حَقٌّ وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْلِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ، وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ، اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. اَوْ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ، قال سفيان: وزاد عبد الكريم ابو امية: وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

رواه البخاري، باب التهجد بالليل، رقم: ١١٢٠

152. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को जब तहज्जुद के लिए उठते तो यह दुआ़ पढ़ते :

तर्जुमा : 'ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, आप ही आसमानों और ज़मीन के और जो मख़्लूक़ उनमें आबाद हैं, उनके संभालने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, ज़मीन व आसमान और उनकी तमाम मख़्लूक़ात पर हुकूमत सिर्फ़ आप ही की है। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं आप ज़मीन व आसमान के रौशन करने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं आप ज़मीन व आसमान के बादशाह हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, असल वुजूद आप ही का है, आप का वादा हक़ है (टल नहीं सकता) आप से मुलाक़ात ज़रूर होगी, आप का फ़रमान हक़ है, जन्नत का वुजूद हक़ है, जहन्नम का वुजूद हक़ है, सारे अम्बिया عليهم السلام बरहक़ हैं, मुहम्मद ﷺ बरहक़ (रसूल) हैं और क़ियामत ज़रूर आएगी। ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको आप के सुपुर्द कर दिया, मैंने आप को दिल से माना, मैंने आप ही पर भरोसा किया, आप ही की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, (न मानने वालों में से) जिससे झगड़ा किया आप ही की मदद से किया और आप ही की बारगाह में फ़रयाद लाया हूं, लिहाज़ा मेरे उन गुनाहों को माफ़ कर दीजिए जो अब से पहले किए और जो उसके बाद करूं और जो गुनाह मैंने छुपा कर किए और जो ऐलानिया किए। आप ही तौफ़ीक़ देकर दीनी आमाल में आगे बढ़ाने वाले हैं और आप ही तौफ़ीक़ छीन कर पीछे हटाने वाले हैं। आपके सिवा कोई माबूद नहीं है। भलाई करने की ताक़त और बुराई से बचने की क़ुव्वत सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है। (बुख़ारी)

﴿153﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ، شَهْرُ اللهِ الْمُحَرَّمُ، وَاَفْضَلُ الصَّلٰوةِ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ، صَلٰوةُ اللَّيْلِ.

رواه مسلم، باب فضل صوم المحرم، رقم:٢٧٥٥

153. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ानुल मुबारक के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़े माहे मुहर्रम के हैं और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ रात की है। (मुस्लिम)

﴿154﴾ عَنْ اِيَاسِ بْنِ مُعَاوِيَةَ الْمُزَنِيِّ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا بُدَّ مِنْ صَلٰوةٍ بِلَيْلٍ وَلَوْ حَلْبَ شَاةٍ، وَمَا كَانَ بَعْدَ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ فَهُوَ مِنَ اللَّيْلِ.

رواه الطبرانی فی الکبیر وفیه: محمد بن اسحاق وهو مدلس وبقیة رجاله ثقات، مجمع الزوائد٢/٥٢١، وهو ثقة، ١٠/٩٢

154. हज़रत इयास बिन मुआविया मुज़नी रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो, अगरचे इतनी थोड़ी देर ही के लिए हो जितनी देर में बकरी का दूध दूहा जाता है और जो नमाज़ भी इशा के बाद पढ़ी जाए, वह तहज्जुद में शामिल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : सो कर उठने के बाद जो नफ़्ल नमाज़ पढ़ी जाए, उसे तहज्जुद कहते हैं।

बाज़ उलमा के नज़दीक इशा के बाद सोने से पहले जो नफ़्ल पढ़ लिए जाएं, वह भी तहज्जुद है। (आलाउस्सुनन)

﴿155﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ صَلٰوةِ اللَّيْلِ عَلٰى صَلٰوةِ النَّهَارِ كَفَضْلِ صَدَقَةِ السِّرِّ عَلٰى صَدَقَةِ الْعَلَانِيَةِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٥١٩

155. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रात की नफ़्ल नमाज़ दिन की नफ़्ल नमाज़ से ऐसी ही अफ़ज़ल है जैसा कि छुप कर दिया हुआ सदक़ा ऐलानिया सदक़ा से अफ़ज़ल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿156﴾ عَنْ اَبِي اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَاِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِيْنَ قَبْلَكُمْ، وَهُوَ قُرْبَةٌ لَكُمْ اِلٰى رَبِّكُمْ، وَمَكْفَرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الْاِثْمِ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط البخاري ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٣٠٨

156. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो। वह तुम से पहले के नेक लोगों का तरीक़ा रहा है, उससे तुम्हें अपने रब का क़ुर्ब हासिल होगा, गुनाह माफ़ होंगे और गुनाहों से बचे रहोगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿157﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللهُ، وَيَضْحَكُ اِلَيْهِمْ، وَيَسْتَبْشِرُ بِهِمُ الَّذِيْ اِذَا انْكَشَفَتْ فِئَةٌ، قَاتَلَ وَرَاءَهَا بِنَفْسِهِ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، فَاِمَّا اَنْ يُقْتَلَ، وَاِمَّا اَنْ يَنْصُرَهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ وَيَكْفِيَهُ، فَيَقُوْلُ: انْظُرُوا اِلٰى عَبْدِيْ هٰذَا كَيْفَ صَبَرَلِيْ بِنَفْسِهِ؟ وَالَّذِيْ لَهُ امْرَاَةٌ حَسَنَةٌ، وَفِرَاشٌ لَيِّنٌ حَسَنٌ، فَيَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ فَيَقُوْلُ: يَذَرُ شَهْوَتَهُ، وَيَذْكُرُنِيْ، وَلَوْ شَاءَ رَقَدَ، وَالَّذِيْ اِذَا كَانَ فِيْ سَفَرٍ، وَكَانَ مَعَهُ رَكْبٌ فَسَهِرُوا ثُمَّ هَجَعُوا فَقَامَ مِنَ السَّحَرِ فِيْ ضَرَّاءَ وَسَرَّاءَ. رواه الطبراني في الكبير باسناد حسن، الترغيب ١/٤٣٤

157. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला मुहब्बत फ़रमाते हैं और उन्हें देखकर बेहद ख़ुश होते हैं। उनमें से एक वह शख़्स है, जो जिहाद में अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिए अकेला लड़ता रहे, जबकि उसके सब साथी मैदान छोड़ जाएं, फिर या तो वह शहीद हो जाए या अल्लाह तआ़ला उसकी मदद फ़रमाएं और उसे ग़लबा अता फ़रमाएं। अल्लाह तआ़ला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : मेरे उस बन्दे को देखो! मेरी ख़ुशनूदी के ख़ातिर किस तरह मैदान में जमा रहा। दूसरा वह शख़्स है जिसके पहलू में ख़ूबसूरत बीवी हो और बेहतरीन नर्म बिस्तर मौजूद हो और फिर वह (उन सबको छोड़कर) तहज्जुद में मशग़ूल हो जाए। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : देखो! अपनी चाहतों को छोड़ रहा है और मुझे याद कर रहा है, अगर चाहता तो सोता रहता। तीसरा वह शख़्स है, जो सफ़र में क़ाफ़िले के साथ हो और क़ाफ़िले वाले रात देर तक जाग कर सो चुके हों। यह अख़ीर शब में तबीयत चाहे न चाहे, हर हाल में तहज्जुद के लिए उठ खड़ा हो। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿158﴾ عَنْ اَبِیْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ فِی الْجَنَّةِ غُرَفًا يُرَى ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا، وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا، اَعَدَّهَا اللهُ لِمَنْ اَطْعَمَ الطَّعَامَ، وَاَفْشَى السَّلَامَ، وَصَلّٰى بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده قوى ٢/٢٦٢

158. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं, जिनमें अन्दर की चीज़ें बाहर से और बाहर की चीज़ें अन्दर से नज़र आती हैं। ये बालाख़ाने अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के लिए तैयार फ़रमाए हैं, जो लोगों को खाना खिलाते हैं, ख़ूब इस्लाम फैलाते हैं और रात को उस वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं जब लोग सो रहे होते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿159﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ جِبْرَئِيْلُ اِلَى النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ: عِشْ مَا شِئْتَ فَاِنَّكَ مَيِّتٌ، وَاعْمَلْ مَاشِئْتَ فَاِنَّكَ مَجْزِیٌّ بِهٖ، وَاَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَاِنَّكَ مُفَارِقُهٗ، وَاعْلَمْ اَنَّ شَرَفَ الْمُؤْمِنِ قِيَامُ اللَّيْلِ، وَعِزُّهُ اسْتِغْنَاؤُهٗ عَنِ النَّاسِ.

رواه الطبرانی فی الاوسط واسناده حسن، الترغيب ١/٤٣١

159. हज़रत सहल बिन साद ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत जिबरील ﷺ नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : मुहम्मद ﷺ! आप जितना भी ज़िन्दा रहें, एक दिन मौत आनी है। आप जो चाहें अ़मल करें उसका बदला आपको

दिया जाएगा। जिससे चाहें मोहब्बत करें आख़िर एक दिन उससे जुदा होना है। जान लीजिए कि मोमिन की बुज़ुर्गी तहज्जुद पढ़ने में है और मोमिन की इज़्ज़त लोगों से बेनियाज़ रहने में है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿160﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا عَبْدَ اللهِ لَا تَكُنْ مِثْلَ فُلَانٍ كَانَ يَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ فَتَرَكَ قِيَامَ اللَّيْلِ.

رواه البخاري، باب ما يكره من ترك قيام الليل لمن كان يقومه، رقم: ١١٥٢

160. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह! तुम फ़्लां की तरह मत हो जाना कि वह रात को तहज्जुद पढ़ा करता था, फिर तहज्जुद छोड़ दी। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि बिला किसी उ़ज़्र के अपने दीनी मामूल को छोड़ना अच्छी बात नहीं है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿161﴾ عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ رَبِيْعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى وَاِذَا صَلَّى اَحَدُكُمْ فَلْيَتَشَهَّدْ فِيْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ لِيُلْحِفْ فِي الْمَسْئَلَةِ ثُمَّ اِذَا دَعَا فَلْيَتَمَسْكَنْ وَلْيَتَبَاْسْ وَلْيَتَضَعَّفْ فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَذَاكَ الْخِدَاجُ اَوْ كَالْخِدَاجِ.

رواه احمد ٤/١٦٧

161. हज़रत मुत्तलिब बिन रबीया ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः रात की नमाज़ दो-दो रकअ़तें हैं, लिहाज़ा जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो हर दो रकअ़तों के अख़ीर में तशह्हुद पढ़े। फिर दुआ़ में इसरार करे, मस्कनत अख़्तियार करे, बेकसी और कमज़ोरी का इज़्हार करे। जिसने ऐसा न किया, उसकी नमाज़ अधूरी है। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : तशह्हुद के बाद दुआ़, नमाज़ में भी और सलाम के बाद भी मांगी जा सकती है।

﴿162﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ مَرَّ بِالنَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً وَهُوَ يُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ فِي الْمَدِيْنَةِ قَالَ: فَقُمْتُ اُصَلِّي وَرَاءَهُ يُخَيَّلُ اِلَيَّ اَنَّهُ لَا يَعْلَمُ، فَاسْتَفْتَحَ سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، فَقُلْتُ اِذَا جَاءَ مِائَةَ آيَةٍ رَكَعَ، فَجَاءَهَا فَلَمْ يَرْكَعْ، فَقُلْتُ اِذَا جَاءَ مِائَتَيْ آيَةٍ رَكَعَ، فَجَاءَهَا فَلَمْ يَرْكَعْ، فَقُلْتُ اِذَا خَتَمَهَا رَكَعَ، فَخَتَمَ فَلَمْ يَرْكَعْ، فَلَمَّا خَتَمَ قَالَ: اَللّٰهُمَّ!

لَكَ الْحَمْدُ، اَللّٰهُمَّ! لَكَ الْحَمْدُ، وِتْرًا ثُمَّ افْتَتَحَ آلَ عِمْرَانَ، فَقُلْتُ إِنْ خَتَمَهَا رَكَعَ، فَخَتَمَهَا وَلَمْ يَرْكَعْ، وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ! لَكَ الْحَمْدُ ثَلاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ افْتَتَحَ سُوْرَةَ الْمَائِدَةِ، فَقُلْتُ: إِذَا خَتَمَ رَكَعَ، فَخَتَمَهَا فَرَكَعَ، فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ، وَيُرَجِّعُ شَفَتَيْهِ فَأَعْلَمُ أَنَّهُ يَقُوْلُ غَيْرَ ذٰلِكَ، ثُمَّ سَجَدَ فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى، وَيُرَجِّعُ شَفَتَيْهِ فَأَعْلَمُ أَنَّهُ يَقُوْلُ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلا أَفْهَمُ غَيْرَهُ ثُمَّ افْتَتَحَ سُوْرَةَ الْأَنْعَامِ فَتَرَكْتُهُ وَذَهَبْتُ.

رواه عبد الرزاق في مصنفه ٢/١٤٧

162. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं नबी करीम ﷺ के पास से गुज़रा। आप ﷺ मदीना मुनव्वरा में मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं भी आप ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ने खड़ा हो गया और मुझे यह ख़्याल था कि आप ﷺ को यह मालूम नहीं कि मैं आपके पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूं। आप ﷺ ने सूरः बक़रः शुरू फ़रमाई। मैंने (अपने दिल में कहा) कि सौ आयतों पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे लेकिन जब आप ﷺ ने सौ आयतें पढ़ लीं और रुकूअ़ न फ़रमाया, तो मैंने सोचा कि दो सौ आयतों पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे, मगर दो सौ आयातें पर भी रुकूअ न फ़रमाया, तो मुझे ख़्याल हुआ कि सूरः के ख़त्म होने पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे। जब आपने सूरः ख़त्म फ़रमाई 'अल्लाहुम-म ल-कल हम्द, अल्लाहुम-म ल-कल हम्द' तीन मर्तबा पढ़ा। फिर सूरः आले इमरान शुरू फ़रमाई तो मैंने ख़्याल किया कि उसके ख़त्म होने पर तो रुकूअ़ फ़रमा ही लेंगे। नबी करीम ने यह सूरः ख़त्म फ़रमाई, लेकिन रुकूअ़ नहीं फ़रमाया और तीन मर्तबा 'अल्लाहुम-म ल-कल हम्द' पढ़ा। फिर सूरः माइदा शुरू फ़रमा दी। मैंने सोचा, सूरः माइदा के ख़त्म पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे। चुनांचे आप ﷺ ने सूरः माइदा के ख़त्म होने पर रुकूअ़ फ़रमाया, तो मैंने आप ﷺ को रुकूअ़ में 'सुब्हा-न रब्बियल अ़ज़ीम' पढ़ते सुना और आप अपने होंठों को हिला रहे थे (जिसकी वजह से) मैं समझा कि आप ﷺ उस के साथ कुछ और भी पढ़ रहे हैं। फिर आप ﷺ ने सज्दा फ़रमाया और मैंने आप ﷺ को सज्दा में 'सुब्हा-न रब्बियल आ़ला' पढ़ते सुना और आप अपने होंठों को हिला रहे थे (जिसकी वजह से) मैं समझा कि आप ﷺ उसके साथ कुछ और भी पढ़ रहे हैं, जिसको मैं नहीं समझ रहा था। फिर (दूसरी रकअ़त में) सूरः अन्आ़म शुरू फ़रमाई, तो मैं आप ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए छोड़कर चला आया (क्योंकि मैं मज़ीद रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ने की हिम्मत न कर सका)। (मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴾163﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ لَيْلَةَ حِيْنَ

فَرَغَ مِنْ صَلَاتِهِ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ تَهْدِيْ بِهَا قَلْبِيْ، وَتَجْمَعُ بِهَا اَمْرِيْ، وَتَلُمُّ بِهَا شَعْثِيْ، وَتُصْلِحُ بِهَا غَائِبِيْ، وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِيْ، وَتُزَكِّيْ بِهَا عَمَلِيْ، وَتُلْهِمُنِيْ بِهَا رُشْدِيْ، وَتَرُدُّ بِهَا اُلْفَتِيْ، وَتَعْصِمُنِيْ بِهَا مِنْ كُلِّ سُوْءٍ، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ اِيْمَانًا وَيَقِيْنًا لَيْسَ بَعْدَهُ كُفْرٌ، وَرَحْمَةً اَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الْفَوْزَ فِي الْقَضَاءِ وَنُزُلَ الشُّهَدَاءِ وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ، وَالنَّصْرَ عَلَى الْاَعْدَاءِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِيْ وَاِنْ قَصُرَ رَأْيِيْ وَضَعُفَ عَمَلِيْ اِفْتَقَرْتُ اِلٰى رَحْمَتِكَ، فَاَسْاَلُكَ يَا قَاضِيَ الْاُمُوْرِ، وَيَا شَافِيَ الصُّدُوْرِ، كَمَا تُجِيْرُ بَيْنَ الْبُحُوْرِ، اَنْ تُجِيْرَنِيْ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ، وَمِنْ دَعْوَةِ الثُّبُوْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْقُبُوْرِ. اَللّٰهُمَّ مَا قَصُرَ عَنْهُ رَأْيِيْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ نِيَّتِيْ، وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْاَلَتِيْ مِنْ خَيْرٍ وَعَدْتَهُ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ اَوْ خَيْرٍ اَنْتَ مُعْطِيْهِ اَحَدًا مِنْ عِبَادِكَ فَاِنِّيْ اَرْغَبُ اِلَيْكَ فِيْهِ وَاَسْاَلُكَهُ بِرَحْمَتِكَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ ذَا الْحَبْلِ الشَّدِيْدِ، وَالْاَمْرِ الرَّشِيْدِ، اَسْاَلُكَ الْاَمْنَ يَوْمَ الْوَعِيْدِ، وَالْجَنَّةَ يَوْمَ الْخُلُوْدِ مَعَ الْمُقَرَّبِيْنَ الشُّهُوْدِ، الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ، الْمُوْفِيْنَ بِالْعُهُوْدِ، اَنْتَ رَحِيْمٌ وَدُوْدٌ، وَاَنَّكَ تَفْعَلُ مَا تُرِيْدُ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِيْنَ مُهْتَدِيْنَ غَيْرَ ضَالِّيْنَ وَلَا مُضِلِّيْنَ سِلْمًا لِاَوْلِيَائِكَ وَعَدُوًّا لِاَعْدَائِكَ نُحِبُّ بِحُبِّكَ مَنْ اَحَبَّكَ وَنُعَادِيْ بِعَدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ، اَللّٰهُمَّ هٰذَا الدُّعَاءُ وَعَلَيْكَ الْاِجَابَةُ وَهٰذَا الْجُهْدُ وَعَلَيْكَ التُّكْلَانُ. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ نُوْرًا فِيْ قَلْبِيْ وَنُوْرًا فِيْ قَبْرِيْ وَنُوْرًا مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَنُوْرًا مِنْ خَلْفِيْ، وَنُوْرًا عَنْ يَمِيْنِيْ، وَنُوْرًا عَنْ شِمَالِيْ، وَنُوْرًا مِنْ فَوْقِيْ، وَنُوْرًا مِنْ تَحْتِيْ، وَنُوْرًا فِيْ سَمْعِيْ، وَنُوْرًا فِيْ بَصَرِيْ، وَنُوْرًا فِيْ شَعْرِيْ، وَنُوْرًا فِيْ بَشَرِيْ، وَنُوْرًا فِيْ لَحْمِيْ، وَنُوْرًا فِيْ دَمِيْ، وَنُوْرًا فِيْ عِظَامِيْ، اَللّٰهُمَّ اَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا وَاَعْطِنِيْ نُوْرًا وَاجْعَلْ لِيْ نُوْرًا، سُبْحَانَ الَّذِيْ تَعَطَّفَ الْعِزَّ وَقَالَ بِهٖ، سُبْحَانَ الَّذِيْ لَبِسَ الْمَجْدَ وَتَكَرَّمَ بِهٖ، سُبْحَانَ الَّذِيْ لَا يَنْبَغِي التَّسْبِيْحُ اِلَّا لَهٗ، سُبْحَانَ ذِي الْفَضْلِ وَالنِّعَمِ، سُبْحَانَ ذِي الْمَجْدِ وَالْكَرَمِ، سُبْحَانَ ذِي الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب،

باب منه دعاء: اللّٰهم انى اسئلك رحمة من عندك ......، رقم: ٣٤١٩

163. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रात तहज्जुद की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो मैंने आपको यह दुआ मांगते हुए सुना : तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं आप से आप की ख़ास रहमत मांगता हूं, जिससे आप मेरे दिल को हिदायत नसीब फ़रमा दीजिए और उसके ज़रिए मेरे काम को आसान फ़रमा दीजिए और मेरी परेशानहाली को इस रहमत के ज़रिए दूर फ़रमा दीजिए और मेरी ग़ैर

हाज़िरी के मामलों की निगहबानी फ़रमाइए और जो चीज़ें मेरे पास हैं उनको इस रहमत के ज़रिए बुलन्दी और इज़्ज़त नसीब फ़रमा दीजिए और मेरे अ़मल को उस रहमत के ज़रिए (शिर्क व रिया) से पाक फ़रमा दीजिए और मेरे दिल में उस रहमत के ज़रिए वही बात डाल दीजिए जो मेरे लिए सही और मुनासिब हो और जिस चीज़ से मुझे मुहब्बत हो, वह मुझे उस रहमत के ज़रिए अ़ता फ़रमा दीजिए और उस रहमत के ज़रिए मेरी हर बुराई से हिफ़ाज़त फ़रमा दीजिए। या अल्लाह! मुझे ऐसा ईमान और यक़ीन नसीब फ़रमा दीजिए जिसके बाद किसी क़िस्म का भी कुफ़्र न हो और मुझे अपनी वह रहमत अ़ता फ़रमाइए, जिसके तुफ़ैल मुझे दुनिया व आख़िरत में आपकी जानिब से इज़्ज़त व शरफ़ का मक़ाम हासिल हो जाए। या अल्लाह! मैं आपसे फ़ैसलों की दुरस्तगी, और आपके यहां शहीदों वाली मेहमानी, और ख़ुशनसीबों वाली ज़िन्दगी और दुश्मनों के मुक़ाबला में आपकी मदद का सवाल करता हूं। या अल्लाह! मैं आपके सामने अपनी हाजत पेश करता हूं अगरचे मेरी अक़्ल नाक़िस है और मेरा अ़मल कमज़ोर है, मैं आपकी रहमत का मुहताज हूं। ऐ काम बनाने वाले और दिलों को शिफ़ा देने वाले! जिस तरह आप अपनी क़ुदरत से (एक साथ बहने वाले) समुन्दरों को एक दूसरे से जुदा रखते हैं (कि खारा मीठे से अलग रहता है और मीठा खारे से अलग) उसी तरह मैं आप से सवाल करता हूं कि आप मुझे दोज़ख़ की आग से और उस अ़ज़ाब से जिसको देखकर आदमी वावैला करने (मौत की दुआ़ मांगने) लगे और क़ब्र के अ़ज़ाब से दूर रखिए। या अल्लाह! जिस भलाई तक मेरी अक़्ल न पहुंच सकी, और मेरा अ़मल उस भलाई के हासिल करने में कमज़ोर रहा, और मेरी नीयत भी उस तक न पहुंची, और मैंने आप से उस भलाई की दरख़्वास्त भी न की हो जिसका आपने अपनी मख़्लूक़ में किसी बन्दे से वादा फ़रमाया हो या कोई ऐसी भलाई हो कि उसको आप अपने बन्दों में किसी को देने वाले हों, ऐ तमाम जहानों के पालने वाले! मैं भी आपसे उस भलाई का ख़्वाहिशमंद हूं और उसको आपकी रहमत के वसीले से मांगता हूं। ऐ मज़बूत अ़हद वाले और नेक कामों के मालिक अल्लाह! मैं आपसे अ़ज़ाब के दिन अम्न का, और क़ियामत के दिन जन्नत में उन लोगों के साथ रहने का सवाल करता हूं जो आप के मुक़र्रब, और आपके दरबार में हाज़िर रहने वाले, रुकूअ़-सज्दे में पड़े रहने वाले और अ़हदों को पूरा करने वाले हैं। बेशक आप बड़े मेहरबान और बहुत मुहब्बत फ़रमाने वाले हैं और बिलाशुबहा आप जो चाहते हैं, करते हैं। या अल्लाह! हमें दूसरों को ख़ैर की राह दिखाने वाला और ख़ुद हिदायतयाफ़्ता बना दीजिए, ऐसा न कीजिए कि हम ख़ुद भी

गुमराह हों और दूसरों को भी गुमराह करने वाले हों। जो आप से मुहब्बत रखे, हम आपकी उस मुहब्बत की वजह से उससे मुहब्बत करें और जो आपका मुख़ालिफ़ हो हम आपकी उस दुश्मनी की वजह से उससे दुश्मनी करें। ऐ अल्लाह! यह दुआ करना मेरा काम है और क़ुबूल करना आपका काम है और यह मेरी कोशिश है और भरोसा आपकी ज़ात पर है। या अल्लाह! मेरे दिल में नूर डाल दीजिए, और मेरी क़ब्र को नूरानी कर दीजिए मेरे आगे नूर, मेरे पीछे नूर, मेरे दाएं नूर, मेरे बाएं नूर, मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर यानी मेरे हर तरफ़ आपका ही नूर हो, और मेरे कानों में नूर, मेरी आंखों में नूर, मेरे रुएं-रुएं में नूर, मेरी खाल में नूर, मेरे गोश्त में नूर, मेरे ख़ून में नूर, और मेरी हड्डी-हड्डी में नूर ही नूर कर दें। ऐ अल्लाह! मेरे नूर को बढ़ा दीजिए, मुझको नूर अता फ़रमा दीजिए और मेरे लिए नूर मुक़द्दर फ़रमा दीजिए। पाक है वह ज़ात, इज़्ज़त जिसकी चादर है और उसका फ़रमान इज़्ज़त वाला है, शराफ़त व बुज़ुर्गी जिसका लिबास है और उसकी बख़्शिश है। पाक है वह ज़ात कि हर ऐब से पाकी सिर्फ़ उसी की शायाने शान है। पाक है वह ज़ात जो बड़े फ़ज़्ल और नेमतों वाली है। पाक है वह ज़ात जो बड़े शरफ़ व करम वाली है और पाक है वह ज़ात जो बड़े जलाल व इकराम की मालिक है। (तिर्मिज़ी)

﴾164﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰی فِیْ لَیْلَةٍ بِمِائَةِ آیَةٍ لَمْ یُکْتَبْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ، وَمَنْ صَلّٰی فِیْ لَیْلَةٍ بِمِائَتَیْ آیَةٍ فَاِنَّهٗ یُکْتَبُ مِنَ الْقَانِتِیْنَ الْمُخْلِصِیْنَ. رواه الحاكم وقال: صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبی ١/٣٠٩

164. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी रात नमाज़ में सौ आयतें पढ़ लेता है, वह उस रात अल्लाह तआला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता और जो शख़्स किसी रात नमाज़ में दो सौ आयतें पढ़ लेता है, वह उस रात मुख़्लिस इबादतगुज़ारों में शुमार होता है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾165﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهٗ قَالَ: مَنْ قَامَ بِعَشْرِ آیَاتٍ لَمْ یُکْتَبْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ، وَمَنْ قَامَ بِمِائَةِ آیَةٍ کُتِبَ مِنَ الْقَانِتِیْنَ، وَمَنْ قَرَاَ بِاَلْفِ آیَةٍ کُتِبَ مِنَ الْمُقَنْطِرِیْنَ. رواه ابن خزيمة فی صحيحه ٢/١٨١

165. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स तहज्जुद में दस आयतें पढ़ लेता है वह उस रात

ग़ाफ़िलों में शुमार नहीं होता। जो सौ आयतें पढ़ लेता है, उसका शुमार इबादतगुज़ारों में होता है और जो हज़ार आयतें पढ़ लेता है वह उन लोगों में शुमार होता है, जिनको क़िन्तार बराबर सवाब मिलता है। (इब्ने खुज़ैमा)

﴾166﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَلْقِنْطَارُ اثْنَا عَشَرَ اَلْفَ اُوْقِیَةٍ، كُلُّ اُوْقِیَةٍ خَیْرٌ مِمَّا بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٣١١/٦

166. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़िन्तार बारह हज़ार औक़िया का होता है। हर औक़िया ज़मीन व आसमान के दर्मियान की तमाम चीज़ों से बेहतर है। (इब्ने हब्बान)

﴾167﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: رَحِمَ اللّٰهُ رَجُلًا قَامَ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلّٰی ثُمَّ اَیْقَظَ امْرَاَتَهٗ فَصَلَّتْ، فَاِنْ اَبَتْ نَضَحَ فِیْ وَجْهِهَا الْمَاءَ، وَرَحِمَ اللّٰهُ امْرَاَةً قَامَتْ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلَّتْ ثُمَّ اَیْقَظَتْ زَوْجَهَا فَصَلّٰی، فَاِنْ اَبٰی نَضَحَتْ فِیْ وَجْهِهِ الْمَاءَ. رواه النسائی، باب الترغیب فی قیام اللیل، رقم: ١٦١١

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहमत फ़रमाएं, जो रात को उठकर तहज्जुद पढ़े, फिर अपनी बीवी को भी जगाए और वह भी नमाज़ पढ़े और अगर (नींद के ग़लबे की वजह से) वह न उठी तो उसके मुंह पर पानी का हल्का-सा छींटा देकर जगा दे और उसी तरह अल्लाह तआला उस औरत पर रहमत फ़रमाएं, जो रात को उठकर तहज्जुद पढ़े, फिर अपने शौहर को जगाए और वह भी नमाज़ पढ़े और अगर वह न उठे तो उसके मुंह पर पानी का हल्का-सा छींट दे कर उठा दे। (नसाई)

फ़ायदा : इस हदीस का ताल्लुक़ उन मियां-बीवी से है जो तहज्जुद का शौक़ रखते हों और इस तरह उठाना उनके दर्मियान नागवारी का सबब न हो। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴾168﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ وَاَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا اَیْقَظَ الرَّجُلُ اَهْلَهٗ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلَّیَا اَوْصَلّٰی رَكْعَتَیْنِ جَمِیْعًا كُتِبَ فِی الذَّاكِرِیْنَ وَالذَّاكِرَاتِ. رواه ابو داؤد، باب قیام اللیل، رقم: ١٣٠٩

168. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी रात में अपने घर वालों को जगाता है और मियां-बीवी दोनों तहज्जुद की (कम-से-कम) दो रकअ़त पढ़ लेते हैं तो उन दोनों का शुमार कसरत से ज़िक्र करने वालों में हो जाता है। (अबूदाऊद)

﴿169﴾ عَنْ عَطَاءٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: اَخْبِرِيْنِي بِاَعْجَبِ مَارَاَيْتِ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَتْ: وَاَيُّ شَانِهِ لَمْ يَكُنْ عَجَبًا؟ اِنَّهُ اَتَانِي لَيْلَةً فَدَخَلَ مَعِيَ لِحَافِيْ ثُمَّ قَالَ: ذَرِيْنِي اَتَعَبَّدُ لِرَبِّيْ، فَقَامَ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي، فَبَكَىٰ حَتّٰى سَالَتْ دُمُوْعُهُ عَلَى صَدْرِهِ، ثُمَّ رَكَعَ فَبَكَى، ثُمَّ سَجَدَ فَبَكَى ثُمَّ رَفَعَ رَاْسَهُ فَبَكَى، فَلَمْ يَزَلْ كَذٰلِكَ حَتّٰى جَاءَ بِلَالٌ يُؤْذِنُهُ بِالصَّلَاةِ، فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَمَا يُبْكِيْكَ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَاتَاَخَّرَ؟ قَالَ: اَفَلَا اَكُوْنَ عَبْدًا شَكُوْرًا، وَلِمَ لَا اَفْعَلُ وَقَدْ اَنْزَلَ اللهُ عَلَيَّ هٰذِهِ اللَّيْلَةَ: ﴿اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ﴾ الآيات.

اخرجه ابن حبان فى صحيحه اقامة الحجة ص ١١٢

169. हज़रत अ़ता रह० फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह ﷺ की कोई अजीब बात जो आपने देखी हो, वह सुना दें। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ की कौन-सी बात अजीब न थी। एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरे साथ लिहाफ़ में लेट गए। फिर फ़रमाने लगे छोड़ो मैं तो अपने रब की इबादत करूंगा। यह फ़रमा कर बिस्तर से उठे, वुज़ू फ़रमाया, फिर नमाज़ के लिए खड़े हो गए और रोना शुरू कर दिया, यहां तक कि आंसू सीना मुबारक तक बहने लगे, फिर रुकूअ़ फ़रमाया, उसमें भी उसी तरह रोते रहे। फिर सज्दा फ़रमाया उसमें भी इसी तरह रोते रहे। फिर सज्दा से उठे और उसी तरह रोते रहे, यहां तक कि हज़रत बिलाल ﷺ ने आकर सुबह की नमाज़ के लिए आवाज़ दी। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप इतना क्यों रो रहे हैं जब कि आपके अगले पिछले गुनाह (अगर होते भी तो) अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिए हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तो क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं? और मैं ऐसा क्यों न करूं जबकि आज रात मुझ पर 'इन-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल अर्ज़ि व ख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल आयातिल्लि उलि अलबाब' से सूरः आले इमरान के ख़त्म तक की आयतें नाज़िल हुई हैं। (इब्ने हब्बान इक़ामतुल हुज्जः)

﴿170﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنِ امْرِىءٍ تَكُوْنُ لَهُ صَلٰوةٌ بِلَيْلٍ فَغَلَبَهُ عَلَيْهَا نَوْمٌ اِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ اَجْرَ صَلٰوتِهِ وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ.

رواه النسائى، باب من كان له صلاة بالليل......،رقم:١٧٨٥

170. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स तहज्जुद पढ़ने का आदी हो और नींद के ग़लबे की वजह से (किसी रात) आंख न खुली तो अल्लाह तआला उसके लिए तहज्जुद का सवाब लिख देते हैं और उसका सोना अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर एक इनाम है कि बग़ैर तहज्जुद पढ़े उसे (उस रात) तहज्जुद का सवाब मिल जाता है। (नसाई)

﴿171﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَتٰی فِرَاشَهُ وَهُوَ يَنْوِی اَنْ يَقُوْمَ، يُصَلِّی مِنَ اللَّيْلِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ حَتّٰی اَصْبَحَ، كُتِبَ لَهُ مَانَوٰی وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ. رواه النسائی، باب من اتی فراشه وهو ینوی القیام فنام، رقم:۱۷۸۸

171. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात को सोने के लिए बिस्तर पर आए और उसकी नीयत रात को तहज्जुद पढ़ने की थी, लेकिन वह ऐसा सोया कि सुबह ही जागा तो उसको उसकी नीयत पर तहज्जुद का सवाब मिलता है और उसका सोना अल्लाह तआला की तरफ़ से एक इनाम है। (नसाई)

﴿172﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ اَنَسٍ الْجُهَنِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَعَدَ فِی مُصَلَّاهُ حِينَ يَنْصَرِفُ مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ حَتّٰی يُسَبِّحَ رَكْعَتَیِ الضُّحٰی لَا يَقُوْلُ اِلَّا خَيْرًا غُفِرَ لَهُ خَطَايَاهُ، وَاِنْ كَانَتْ اَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ. رواه ابوداؤد، باب صلوة الضحی، رقم:۱۲۸۷

172. हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उसी जगह बैठा रहता है, ख़ैर के अलावा कोई बात नहीं करता, फिर दो रकअत इश्राक़ की नमाज़ पढ़ता है, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, चाहे वह समुन्दर के झाग से ज़्यादा ही हों। (अबूदाऊद)

﴿173﴾ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَلَّی الْغَدَاةَ ثُمَّ ذَكَرَ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ حَتّٰی تَطْلُعَ الشَّمْسُ، ثُمَّ صَلّٰی رَكْعَتَيْنِ اَوْ اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ لَمْ تَمَسَّ جِلْدَهُ النَّارُ. رواه البیهقی فی شعب الایمان۳/۴۲۰

173. हज़रत हसन बिन अली ﷺ से नबी करीम ﷺ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर सूरज निकलने तक अल्लाह तआला के

ज़िक्र में मश्ग़ूल रहता है फिर दो या चार रकअ़त (इश्राक़ की नमाज़) पढ़ता है तो उसकी खाल को (भी) दोज़ख़ की आग न छएगी। (बैहक़ी)

﴾174﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الْفَجْرَ فِي جَمَاعَةٍ ثُمَّ قَعَدَ يَذْكُرُ اللهَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ كَانَتْ لَهُ كَأَجْرِ حَجَّةٍ وَ عُمْرَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَامَّةٍ تَامَّةٍ تَامَّةٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما ذكر مما يستحب من الجلوس ......،رقم:٥٨٦

174. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ता है, फिर आफ़ताब निकलने तक अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहता है फिर दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ता है तो उसे हज और उमरा का सवाब मिलता है। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : कामिल हज और उमरे का सवाब, कामिल हज और उमरे का सवाब, कामिल हज और उमरे का सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

﴾175﴿ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ: ابْنَ آدَمَ لَاتَعْجِزَنَّ مِنْ اَرْبَعِ رَكَعَاتٍ مِنْ اَوَّلِ النَّهَارِ اَكْفِكَ آخِرَهُ.

رواه احمد و رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٤٩٢

175. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : आदम के बेटे! दिन के शुरू में चार रकअ़त पढ़ने से आजिज़ न बनो, मैं तुम्हारे दिन भर के काम बना दूंगा।(मुस्नद अहमद, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : यह फ़ज़ीलत इश्राक़ की नमाज़ की है और यह भी मुम्किन है कि इससे मुराद चाश्त की नमाज़ हो।

﴾176﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَعْثًا فَاَعْظَمُوا الْغَنِيْمَةَ، وَاَسْرَعُوا الْكَرَّةَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَارَسُوْلَ اللهِ، مَا رَاَيْنَا بَعْثًا قَطُّ اَسْرَعَ كَرَّةً وَلَا اَعْظَمَ غَنِيْمَةً مِنْ هٰذَا الْبَعْثِ! فَقَالَ: اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِاَسْرَعَ كَرَّةً مِنْهُ، وَاَعْظَمَ غَنِيْمَةً؟ رَجُلٌ تَوَضَّاَ فِي بَيْتِهِ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ عَمِدَ اِلَى الْمَسْجِدِ فَصَلَّى فِيْهِ الْغَدَاةَ، ثُمَّ عَقَّبَ بِصَلَاةِ الضَّحْوَةِ فَقَدْ اَسْرَعَ الْكَرَّةَ، وَاَعْظَمَ الْغَنِيْمَةَ.

رواه ابو يعلى ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد٢/٤٩١

176. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक लश्कर भेजा, जो बहुत ही जल्द ग़नीमत का सारा माल लेकर वापस लौट आया। एक सहाबी ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमने कोई ऐसा लश्कर नहीं देखा, जो इतनी जल्दी ग़नीमत का इतना सारा माल लेकर वापस लौट आया हो। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें इससे भी कम वक़्त में इस माल से बहुत ज़्यादा ग़नीमत कमाने वाला शख़्स न बताऊं? यह वह शख़्स है जो अपने घर से अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद जाता है, फ़ज्र की नमाज़ पढ़ता है, फिर (सूरज निकले के बाद) इश्राक़ की नमाज़ पढ़ता है तो यह बहुत थोड़े वक़्त में बहुत ज़्यादा नफ़ा कमाने वाला है।
(अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿177﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: يُصْبِحُ عَلٰى كُلِّ سُلَامٰى مِنْ اَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ، فَكُلُّ تَسْبِيْحَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَحْمِيْدَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَهْلِيْلَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَكْبِيْرَةٍ صَدَقَةٌ، وَاَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ صَدَقَةٌ، وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَيُجْزِئُ مِنْ ذٰلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحٰى. رواه مسلم، باب استحباب صلاة الضحى......رقم:١٦٧١

177. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से हर शख़्स के ज़िम्मे उसके जिस्म के एक-एक जोड़ की सलामती के शुक्राने में रोज़ाना सुबह को एक सदक़ा होता है। हर सुब्हानल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार अलहम्दु लिल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार ला इला-ह इल्लल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार अल्लाहु अकबर कहना सदक़ा है, भलाई का हुक्म करना सदक़ा है, बुराई से रोकना सदक़ा है और हर जोड़ के शुक्र की अदाइगी के लिए चाश्त के वक़्त दो रकअ़तें पढ़ना काफ़ी हो जाती हैं। (मुस्लिम)

﴿178﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: فِی الْاِنْسَانِ ثَلٰثُمِائَةٍ وَسِتُّوْنَ مَفْصِلًا، فَعَلَيْهِ اَنْ يَتَصَدَّقَ عَنْ كُلِّ مَفْصِلٍ مِنْهُ بِصَدَقَةٍ قَالُوا: وَمَنْ يُطِيْقُ ذٰلِكَ يَانَبِیَّ اللّٰهِ؟ قَالَ: اَلنُّخَاعَةُ فِی الْمَسْجِدِ تَدْفِنُهَا، وَالشَّیْءُ تُنَحِّيْهِ عَنِ الطَّرِيْقِ، فَاِنْ لَمْ تَجِدْ فَرَكْعَتَا الضُّحٰى تُجْزِئُكَ. رواه ابو داؤد، باب فی اماطة الاذی عن الطريق،رقم:٥٢٤٢

178. हज़रत बुरैदा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आदमी में तीन सौ साठ जोड़ हैं। उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि हर जोड़ की सलामती के शुक्राने में एक सदक़ा अदा किया करे। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया :

या रसूलुल्लाह! इतने सदक़े कौन अदा कर सकता है? इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद में अगर थूक पड़ा हो तो उसे दफ़न कर देना सदक़े का सवाब रखता है, रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ का हटा देना भी सदक़ा है। अगर इन अ़मलों का मौक़ा न मिले, तो चाश्त की दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना इन सब सदक़ों के बदले तुम्हारे लिए काफ़ी है। (अबूदाऊद)

﴿179﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى شُفْعَةِ الضُّحٰى غُفِرَتْ لَهُ ذُنُوْبُهُ، وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء فی صلوة الضحی، رقم:١٣٨٢

179. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो चाश्त की दो रकअ़त पढ़ने का एहतमाम करता है उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, अगरचे वे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (इब्ने माजा)

﴿180﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الضُّحٰى رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى اَرْبَعًا كُتِبَ مِنَ الْعَابِدِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى سِتًّا كُفِىَ ذٰلِكَ الْيَوْمَ، وَمَنْ صَلّٰى ثَمَانِيًا كَتَبَهُ اللهُ مِنَ الْقَانِتِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى ثِنْتَىْ عَشْرَةَ بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ، وَمَا مِنْ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ اِلَّا لِلّٰهِ مَنٌّ يَمُنُّ بِهٖ عَلٰى عِبَادِهٖ وَصَدَقَةٌ، وَمَا مَنَّ اللهُ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ عِبَادِهٖ اَفْضَلُ مِنْ اَنْ يُلْهِمَهُ ذِكْرَهُ.

رواه الطبرانی فی الکبیر وفیه: موسٰی بن یعقوب الزمعی، وثقه ابن معین وابن حبان، وضعفه ابن المدینی وغیره، وبقیة رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٤٩٤

180. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स चाश्त के दो नफ़्ल पढ़ता है, वह अल्लाह तआ़ला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता, जो चार नफ़्ल पढ़ता है वह इबादतगुज़ारों में लिखा जाता है, जो छः नफ़्ल पढ़ता है उसके उस दिन के कामों में मदद की जाती है, जो आठ नफ़्ल पढ़ता है, अल्लाह तआ़ला उसे फ़रमांबरदारों में लिख देते हैं और जो बारह नफ़्ल पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में महल बना देते हैं। हर दिन और रात में अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर सदक़ा और एहसान फ़रमाते हैं और अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दे पर सबसे बड़ा एहसान यह होता है कि उसे अपने

ज़िक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾181﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰی بَعْدَ الْمَغْرِبِ سِتَّ رَکَعَاتٍ لَمْ یَتَکَلَّمْ فِیْمَا بَیْنَهُنَّ بِسُوْءٍ عُدِلْنَ لَهُ بِعِبَادَةِ ثِنْتَیْ عَشَرَةَ سَنَةً.

رواه الترمذی وقال: حدیث ابی هریره حدیث غریب، باب ماجاء فی فضل التطوع ......، رقم: ٤٣٥

181. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मग़्रिब की नमाज़ के बाद छः रकअ़तें इस तरह पढ़ता है कि उनके दरमियान कोई फ़ुज़ूल बात नहीं करता तो उसे बारह साल की इबादत के बराबर सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मग़रिब के बाद दो रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा के अलावा चार रकअ़त नफ़्लें और पढ़ी जाएं तो छः हो जाएंगी। बाज़ उलमा के नज़दीक ये छः रकअ़तें, मग़्रिब की दो रकअ़त सुन्नत मुअक्कदा के अलावा हैं। (मिरक़ात, मज़ाहिरे हक़)

﴾182﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ لِبِلَالٍ عِنْدَ صَلٰوةِ الْفَجْرِ: یَا بِلَالُ، حَدِّثْنِیْ بِاَرْجٰی عَمَلٍ عَمِلْتَهٗ فِی الْاِسْلَامِ، فَاِنِّیْ سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَیْكَ بَیْنَ یَدَیَّ فِی الْجَنَّةِ قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلًا اَرْجٰی عِنْدِیْ اَنِّیْ لَمْ اَتَطَهَّرْ طُهُوْرًا فِیْ سَاعَةِ لَیْلٍ اَوْنَهَارٍ اِلَّا صَلَّیْتُ بِذٰلِكَ الطُّهُوْرِ مَا کُتِبَ لِیْ اَنْ اُصَلِّیَ.

رواه البخاری، باب فضل الطهور باللیل والنهار ......، رقم: ١١٤٩

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत बिलाल रज़ि० से फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त दरयाफ़्त फ़रमाया : बिलाल! इस्लाम लाने के बाद अपना वह अ़मल बताओ जिससे तुम्हें सवाब की सबसे ज़्यादा उम्मीद हो, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे-आगे तुम्हारे जूतों की आहट रात ख़्वाब में सुनी है। हज़रत बिलाल ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मुझे अपने आ़माल में सबसे ज़्यादा उम्मीद जिस अ़मल से है वह यह है कि मैंने रात या दिन में जब किसी वक़्त भी वुज़ू किया है तो उस वुज़ू से इतनी (तहिय्यतुल वुज़ू) ज़रूर पढ़ी है जितनी मुझे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस वक़्त तौफ़ीक़ मिली। (बुख़ारी)

सलातुत्तस्बीह

﴿183﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِلْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: يَاعَبَّاسُ! يَا عَمَّاهُ! اَلَا اُعْطِيْكَ؟ اَلَا اَمْنَحُكَ؟ اَلَا اَحْبُوْكَ؟ اَلَا اَفْعَلُ بِكَ عَشْرَ خِصَالٍ اِذَا اَنْتَ فَعَلْتَ ذٰلِكَ غَفَرَ اللهُ لَكَ ذَنْبَكَ اَوَّلَهُ وَآخِرَهُ قَدِيْمَهُ وَحَدِيْثَهُ خَطَاَهُ وَعَمْدَهُ، صَغِيْرَهُ وَكَبِيْرَهُ سِرَّهُ وَعَلَانِيَتَهُ. عَشْرَ خِصَالٍ. اَنْ تُصَلِّيَ اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ تَقْرَاُ فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَسُوْرَةً، فَاِذَا فَرَغْتَ مِنَ الْقِرَاءَ ةِ فِيْ اَوَّلِ رَكْعَةٍ وَاَنْتَ قَائِمٌ قُلْتَ: سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ خَمْسَ عَشْرَةَ مَرَّةً، ثُمَّ تَرْكَعُ فَتَقُوْلُهَا وَاَنْتَ رَاكِعٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ مِنَ الرُّكُوْعِ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَهْوِىْ سَاجِدًا فَتَقُوْلُهَا وَاَنْتَ سَاجِدٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ مِنَ السُّجُوْدِ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَسْجُدُ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا فَذٰلِكَ خَمْسٌ وَسَبْعُوْنَ، فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ تَفْعَلُ ذٰلِكَ فِيْ اَرْبَعِ رَكَعَاتٍ، اِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تُصَلِّيَهَا فِيْ كُلِّ يَوْمٍ مَرَّةً فَافْعَلْ، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ جُمُعَةٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ شَهْرٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ سَنَةٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ عُمُرِكَ مَرَّةً.

رواه ابوداؤد، باب صلوة التسبيح، رقم: ١٢٩٧

183. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियलाहु ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ब्बास ﷺ से फ़रमाया : अ़ब्बास! मेरे चचा! क्या मैं आपको एक अ़तीया न करूं? क्या एक हदिया न करूं? क्या एक तोहफ़ा पेश न करूं? क्या मैं आपको ऐसा अ़मल न बताऊं जब आप उसको करेंगे तो आपको दस फ़ायदे हासिल होंगे, यानी अल्लाह तआ़ला आपके अगले, पिछले, पुराने, नए, ग़लती से किए हुए, जान-बूझकर किए हुए, छोटे, बड़े, छुप कर किए हुए, खुल्लम खुल्ला किए हुए गुनाह सब ही माफ़ फ़रमा देंगे। वह अ़मल यह है कि आप चार रकअ़त (सलातुत्तस्बीह) पढ़ें और हर रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और दूसरी कोई सूरत पढ़ें। जब आप पहली रकअ़त में क़िरअत से फ़ारिग़ हो जाएं तो क़ियाम ही की हालत में रुकूअ़ से पहले सुब्हानल्लाह वलहम्दु लिल्लाह व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर पन्द्रह मर्तबा कहें। फिर रुकूअ़ करें और रुकूअ़ में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर रुकूअ़ से उठकर क़ौमा में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर सज्दे में चले जाएं और उसमें भी ये कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर सज्दे से उठकर जल्सा में यही कलिमे

दस मर्तबा कहें। फिर दूसरे सज्दे में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर दूसरे सज्दे के बाद भी खड़े होने से पहले बैठे-बैठे यही कलिमे दस मर्तबा कहें। चारों रकअ़त इसी तरह पढ़ें और इस तरतीब से हर रकअ़त में ये कलिमे पचहत्तर मर्तबा कहें। (मेरे चचा) अगर आपसे हो सके तो रोज़ाना यह नमाज़ एक मर्तबा पढ़ा करें। अगर रोज़ाना न पढ़ सकें तो हर जुमा के दिन पढ़ लिया करें। अगर आप यह भी न कर सकें तो साल में एक मर्तबा पढ़ लिया करें। अगर यह भी न हो सके तो ज़िन्दगी में एक मर्तबा ही पढ़ लें। (अबूदाऊद)

﴿184﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَجَّهَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ جَعْفَرَبْنَ اَبِيْ طَالِبٍ اِلٰى بِلَادِ الْحَبَشَةِ فَلَمَّا قَدِمَ اعْتَنَقَهُ، وَقَبَّلَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ثُمَّ قَالَ: اَلَا اَهَبُ لَكَ، اَلَا اُبَشِّرُكَ اَلَا اَمْنَحُكَ اَلَا اُتْحِفُكَ؟ قَالَ: نَعَمْ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ مَا تَقَدَّمَ۔

اخرجه الحاكم وقال: هذا اسناد صحيح لا غبار عليه ومما يستدل به على صحة هذا الحديث استعمال الائمة من اتباع التابعين الى عصرنا هذا اياه ومواظبتهم عليه وتعليمهم الناس منهم عبدالله بن المبارك رحمه الله، قال الذهبى: هذا اسناد صحيح لا غبار عليه ١/٣١٩

184. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ﷺ को हब्शा रवाना फ़रमाया। जब वह वहां से मदीना तय्यबा आए तो आप ﷺ ने उनको गले लगाया और पेशानी पर बोसा दिया, फिर इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक हदिया न दूं? क्या मैं तुम्हें एक ख़ुशख़बरी न सुनाऊं? क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा न दूं? उन्होंने अ़र्ज़ किया : ज़रूर, इर्शाद फ़रमाइए। फिर आप ﷺ ने सलातुत्तस्बीह की तफ़्सील ब्यान फ़रमाई।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿185﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَاعِدٌ اِذْ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلّٰى فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: عَجِلْتَ اَيُّهَا الْمُصَلِّي اِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللّٰهَ بِمَا هُوَ اَهْلُهُ وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ، قَالَ: ثُمَّ صَلّٰى رَجُلٌ آخَرُ بَعْدَ ذٰلِكَ فَحَمِدَ اللّٰهَ وَصَلّٰى عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: اَيُّهَا الْمُصَلِّي اُدْعُ تُجَبْ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب فى ايجاب الدعاء ......، رقم: ٣٤٧٦

185. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुए और नमाज़ पढ़ी। फिर यह

दुआ़ मांगी 'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वर्हम्नी' ('ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमाइए, मुझ पर रहम फ़रमाइए') रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ी से इर्शाद फ़रमाया : तुमने दुआ़ मांगने में जल्दी की, जब तुम नमाज़ पढ़कर बैठो तो पहले अल्लाह तआ़ला की शायाने शान तारीफ़ करो और मुझ पर दुरूद भेजो, फिर दुआ़ मांगो।

हज़रत फ़ज़ाला रज़ि॰ फ़रमाते हैं, फिर एक और साहब ने नमाज़ पढ़ी, उन्होंने अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ ब्यान की और नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजा। आप ﷺ ने उन साहब से इर्शाद फ़रमाया : अब तुम दुआ़ करो, क़ुबूल होगी। (तिर्मिज़ी)

﴿186﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ بِاَعْرَابِيٍّ، وَهُوَ يَدْعُوْ فِيْ صَلَاتِهٖ، وَهُوَ يَقُوْلُ: يَامَنْ لَا تَرَاهُ الْعُيُوْنُ، وَلَا تُخَالِطُهُ الظُّنُوْنُ، وَلَا يَصِفُهُ الْوَاصِفُوْنَ، وَلَا تُغَيِّرُهُ الْحَوَادِثُ، وَلَا يَخْشَى الدَّوَائِرَ، يَعْلَمُ مَثَاقِيْلَ الْجِبَالِ، وَمَكَايِيْلَ الْبِحَارِ، وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ، وَعَدَدَ وَرَقِ الْاَشْجَارِ، وَعَدَدَ مَا اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ، وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ، وَلَا تُوَارِيْ مِنْهُ سَمَاءٌ سَمَاءً، وَلَا اَرْضٌ اَرْضًا، وَلَا بَحْرٌ مَا فِيْ قَعْرِهٖ، وَلَا جَبَلٌ مَا فِيْ وَعْرِهٖ، اِجْعَلْ خَيْرَ عُمُرِيْ آخِرَهٗ، وَخَيْرَ عَمَلِيْ خَوَاتِيْمَهٗ، وَخَيْرَ اَيَّامِيْ يَوْمَ اَلْقَاكَ فِيْهِ، فَوَكَّلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِالْاَعْرَابِيِّ رَجُلًا فَقَالَ: اِذَا صَلّٰى فَائْتِنِيْ بِهٖ، فَلَمَّا صَلّٰى اَتَاهُ، وَقَدْ كَانَ اُهْدِيَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَهَبٌ مِنْ بَعْضِ الْمَعَادِنِ، فَلَمَّا اَتَاهُ الْاَعْرَابِيُّ وَهَبَ لَهُ الذَّهَبَ، وَقَالَ: مِمَّنْ اَنْتَ يَا اَعْرَابِيُّ؟ قَالَ: مِنْ بَنِيْ عَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ، هَلْ تَدْرِيْ لِمَ وَهَبْتُ لَكَ الذَّهَبَ؟ قَالَ: لِلرَّحِمِ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: اِنَّ لِلرَّحِمِ حَقًّا، وَلٰكِنْ وَهَبْتُ لَكَ الذَّهَبَ بِحُسْنِ ثَنَاءِكَ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ.

رواه الطبرانى فى الاوسط ورجاله رجال الصحيح غير عبدالله بن محمد بن ابى عبد الرحمن الاذرمى وهو ثقة، مجمع الزوائد. ٢٤٢/١

186. हज़रत अनस रज़ि॰ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ देहात के रहने वाले एक शख़्स के पास से गुज़रे, जो नमाज़ में यूं दुआ़ मांग रहे थे :

तर्जुमा: ऐ वह ज़ात, जिसको आंखें देख नहीं सकतीं और किसी का ख़्याल व गुमान उस तक पहुंच नहीं सकता और न ही तारीफ़ ब्यान करने वाले उसकी तारीफ़ ब्यान कर सकते हैं और न ज़माने की मुसीबतें उस पर असर अन्दाज़ हो सकती हैं और न उसे ज़माने की आफ़तों का कोई ख़ौफ़ है, (ऐ वह ज़ात,) जो पहाड़ों

के वज़न, दरियाओं के पैमाने, बारिशों के क़तरों की तादाद और दरख़्तों के पत्तों की तादाद को जानती है और (ऐ वह ज़ात, जो) उन तमाम चीज़ों को जानती है जिन पर रात का अंधेरा छा जाता है और जिन पर दिन रोशनी डालता है, न उससे एक आसमान दूसरे आसमान को छुपा सकता है और न एक ज़मीन दूसरी ज़मीन को और न समुन्दर उस चीज़ को छुपा सकते हैं जो उनकी तह में हैं और न कोई पहाड़ उन चीज़ों को छुपा सकता है जो उस की सख़्त चट्टानों में हैं, आप मेरी उम्र के आख़िरी हिस्से को सबसे बेहतरीन हिस्सा बना दीजिए और मेरे आख़िरी अ़मल को सबसे बेहतरीन अ़मल बना दीजिए और मेरा बेहतरीन दिन वह बना दीजिए, जिस दिन मेरी आपसे मुलाक़ात हो, यानी मौत का दिन।

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक साहब को मुक़र्रर फ़रमाया कि जब यह शख़्स नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं, तो उन्हें मेरे पास ले आना। चुनांचे वह नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक खान से कुछ सोना हदिया में आया हुआ था। आपने उन्हें वह सोना हदिया में दिया। फिर उन देहात के रहने वाले शख़्स से पूछा : तुम किस क़बीले के हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़बीला बनू आ़मिर से हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि यह सोना मैंने तुम्हें क्यों हदिया किया है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इस वजह से कि हमारी आपकी रिश्तादारी है। आपने इर्शाद फ़रमाया : रिश्तेदारी का भी हक़ होता है, लेकिन मैंने तुम्हें सोना इस वजह से हदिया किया कि तुमने बहुत अच्छे अंदाज़ में अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ की। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : नफ़्ल नमाज़ के हर रुक्न में इस तरह की दुआ़एं पढ़ी जा सकती हैं।

﴿187﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَامِنْ عَبْدٍ یُذْنِبُ ذَنْبًا فَیُحْسِنُ الطُّھُوْرَ ثُمَّ یَقُوْمُ فَیُصَلِّیْ رَکْعَتَیْنِ، ثُمَّ یَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ اِلَّا غَفَرَ اللّٰہُ لَہٗ، ثُمَّ قَرَاَ ھٰذِہِ الْاٰیَۃَ: ﴿وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَۃً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ﴾ اِلٰی آخِرِ الْاٰیَۃِ

[آل عمران:۱۳۵] رواہ ابو داؤد، باب فی الاستغفار، رقم:۱۵۲۱

187. हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स से कोई गुनाह हो जाए, फिर वह अच्छी तरह वुज़ू करे और उठकर दो रकअ़त पढ़े, फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी मांगे तो अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ फ़रमा देते हैं। उसके बाद आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई : तर्जुमा : और

वे बन्दे (जिनका हाल यह है) कि जब उनसे कोई गुनाह हो जाता है या कोई बुरा काम करके वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर बैठते हैं तो जल्द ही उन्हें अल्लाह तआ़ला याद आ जाते हैं, फिर वह अल्लाह तआ़ला से अपने गुनाहों की माफ़ी के तालिब होते हैं, और बात यह भी है कि सिवाए अल्लाह तआ़ला के कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है? और बुरे काम पर वे अड़ते नहीं, और वे यक़ीन रखते हैं (कि तौबा से गुनाह माफ़ हो जाते हैं)। (अबूदाऊद)

﴿188﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا اَذْنَبَ عَبْدٌ ذَنْبًا ثُمَّ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى بَرَازٍ مِنَ الْاَرْضِ فَصَلَّى فِيْهِ رَكْعَتَيْنِ، وَاسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْ ذٰلِكَ الذَّنْبِ إِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٤٠٣

188. हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अ़लैह रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जिस शख़्स से कोई गुनाह हुआ, फिर उसने अच्छी तरह वुज़ू किया और खुले मैदान में जाकर दो रकअ़त पढ़कर अल्लाह तआ़ला से उस गुनाह की माफ़ी चाही, तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रूर माफ़ फ़रमा देते हैं। (बैहक़ी)

﴿189﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا الْاِسْتِخَارَةَ فِي الْاُمُوْرِ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ، يَقُوْلُ: إِذَا هَمَّ اَحَدُكُمْ بِالْاَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيْضَةِ، ثُمَّ لْيَقُلْ: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ، وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ، اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ. اَوْ قَالَ: عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهِ. فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ. اَوْ قَالَ: فِيْ عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهِ. فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ، وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهِ، قَالَ: وَيُسَمِّيْ حَاجَتَهُ. رواه البخاري، باب ماجاء في التطوع مثنىٰ مثنىٰ، رقم:١١٦٢

189. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें अपने मामलों में इस्तिख़ारा करने का तरीक़ा ऐसे ही एहतमाम से सिखाते थे, जिस एहतमाम से हमें कुरआन मजीद की सूरः सिखाते थे। आप ﷺ फ़रमाते थे : जब तुममें से कोई शख़्स किसी काम का इरादा करे (और उसके नतीजे के बारे में

फ़िक्रमंद हो, तो उसको इस तरह इस्तिख़ारा करना चाहिए कि) वह पहले दो नफ़्ल नमाज़ पढ़े उसके बाद इस तरह दुआ करे :

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे आपके इल्म के ज़रिए ख़ैर चाहता हूं, आप की क़ुदरत के ज़रिए क़ुव्वत चाहता हूं और आप के बड़े फ़ज़्ल का आप से सवाल करता हूं, क्योंकि आप तो हर काम की क़ुदरत रखते हैं और मैं किसी भी काम की क़ुदरत नहीं रखता। आप सब कुछ जानते हैं और मैं कुछ नहीं जानता और आप ही तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब अच्छी तरह जानने वाले हैं। या अल्लाह! अगर आप के इल्म में यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया और अंजाम के लिहाज़ से मेरे लिए बेहतर हो तो उसको मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दीजिए और आसान भी फ़रमा दीजिए, फिर इसमें मेरे लिए बरकत भी दे दीजिए। अगर आप के इल्म में यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया और अंजाम के लिहाज़ से मेरे लिए बेहतर न हो, तो इस काम को मुझ से अलग रखिए और मुझे इससे रोक दीजिए और जहां भी जिस काम में भी मेरे लिए बेहतरी हो, वह मुझे नसीब फ़रमा दीजिए, फिर मुझे उस काम से राज़ी और मुतमइन कर दीजिए। (दुआ में दोनों जगह जब 'हाज़ल अम्र' पर पहुंचे तो अपनी ज़रूरत का ध्यान रखे, जिसके लिए इस्तिख़ारा कर रहा है)। (बुख़ारी)

﴿190﴾ عَنْ اَبِی بَکْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلٰی عَھْدِ النَّبِیِّ ﷺ فَخَرَجَ یَجُرُّ رِدَاءَہٗ حَتّٰی انْتَھٰی اِلَی الْمَسْجِدِ وَثَابَ النَّاسُ اِلَیْہِ فَصَلّٰی بِھِمْ رَکْعَتَیْنِ، فَانْجَلَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ: اِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آیَتَانِ مِنْ آیَاتِ اللّٰہِ وَاِنَّھُمَا لَا یَخْسِفَانِ لِمَوْتِ اَحَدٍ، وَاِذَا کَانَ ذٰلِکَ فَصَلُّوْا وَادْعُوْا حَتّٰی یَنْکَشِفَ مَابِکُمْ، وَذٰلِکَ اَنَّ ابْنًا لِلنَّبِیِّ ﷺ مَاتَ یُقَالُ لَہٗ: اِبْرَاھِیْمُ فَقَالَ النَّاسُ فِیْ ذٰلِکَ

رواہ البخاری، باب الصلاۃ فی کسوف القمر، رقم:١٠٦٣

190. हज़रत अबूबक्र: رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में सूर्य ग्रहण हुआ। आप अपनी चादर घसीटते हुए (तेज़ी से) मस्जिद में पहुंचे। सहाबा रज़ि० आपके पास जमा हो गए। आप ﷺ ने उन्हें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई और ग्रहण भी ख़त्म हो गया। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरज और चांद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियां हैं। किसी की मौत की वजह से ये ग्रहण नहीं होते (बल्कि ज़मीन व आसमान की दूसरी मख़्लूक़ों की तरह उन पर भी अल्लाह तआला का हुक्म चलता है और उनकी रोशनी व तारीकी अल्लाह तआला के हाथ

में है) इसलिए जब सूरज और चांद ग्रहण हों, तो उस वक़्त तक नमाज़ और दुआ में मशग़ूल रहो, जब तक उनका ग्रहण ख़त्म न हो जाए। चूंकि रसूलुल्लाह ﷺ के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की वफ़ात (इसी दिन) हुई थी और बाज़ लोग यह कहने लगे थे कि ग्रहण उनकी मौत की वजह से हुआ है, इसलिए यह बात रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाई। (बुख़ारी)

﴿191﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ الْمَازِنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِلَى الْمُصَلّٰى فَاسْتَسْقٰى، وَحَوَّلَ رِدَاءَهُ حِيْنَ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ.

رواه مسلم، باب كتاب صلاة الا ستسقاء، رقم: ٢٠٧٠

191. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़िनी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ बारिश की दुआ मांगने के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले गए, और आप ﷺ ने क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके अपनी चादर मुबारक को उल्टा (यह गोया नेक फ़ाल थी कि अल्लाह तआला हमारा हाल इस तरह बदल दें)। (मुस्लिम)

﴿192﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا حَزَبَهُ اَمْرٌ صَلّٰى.

رواه ابو داؤد، باب وقت قيام النبى ﷺ من الليل، رقم: ١٣١٩

192. हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه फ़रमाते हैं नबी करीम ﷺ का मामूले मुबारक था कि जब कोई अहम मामला पेश आता, तो आप फ़ौरन नमाज़ में मशग़ूल हो जाते। (अबूदाऊद)

﴿193﴾ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا دَخَلَ عَلٰى اَهْلِهِ بَعْضُ الضِّيْقِ فِي الرِّزْقِ اَمَرَ اَهْلَهُ بِالصَّلٰوةِ ثُمَّ قَرَاَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ ﴿وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ﴾

اتحاف السادة المتقين عن مصنف عبدالرزاق وعبد بن حميد ١١/٣

193. हज़रत मामर रहमतुल्लाह अलैह एक कुरैशी साहब से रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम ﷺ के घर वालों पर ख़र्च की कुछ तंगी होती तो आप ﷺ उनको नमाज़ का हुक्म फ़रमाते और फिर यह आयत तिलावत फ़रमाते :

तर्जुमा : अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए और ख़ुद भी नमाज़ के पाबंद रहिए। हम आपसे मआश नहीं चाहते, मआश तो आपको हम देंगे, और बेहतर अंजाम तो परहेज़गारी ही का है। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, इत्तिहाफ़ुस्सादः)

﴾194﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ اَبِیْ اَوْفٰی الْاَسْلَمِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَنْ کَانَتْ لَهٗ حَاجَةٌ اِلَی اللهِ اَوْ اِلٰی اَحَدٍ مِنْ خَلْقِهٖ فَلْیَتَوَضَّأْ وَلْیُصَلِّ رَکْعَتَیْنِ ثُمَّ لِیَقُلْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِیْمَةَ مِنْ کُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ کُلِّ اِثْمٍ، اَسْئَلُكَ اَلَّا تَدَعَ لِیْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِیَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَیْتَهَا لِیْ، ثُمَّ یَسْاَلُ اللهَ مِنْ اَمْرِ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ مَاشَاءَ فَاِنَّهٗ یُقَدَّرُ. رواه

ابن ماجه، باب ماجاء فی صلوٰة الحاجة، رقم:١٣٤٨ قال البوصیری: قلت: رواه الترمذی من طریق فائد به دون قوله. ثُمَّ یَسْاَلُ اللهَ مِنْ اَمْرِ الدُّنْیَا الی آخره ورواه الحاکم فی المستدرک باختصار وزاد بعد قوله: وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْعِصْمَةَ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ، وله شاهد من حدیث انس رواه الاصبهانی ورواه ابویعلی الموصلی فی مسنده من طریق فائد به ......، مصباح الزجاجة ٢٤٦/١

194. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा अस्लमी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को कोई भी ज़रूरत पेश आए जिसका ताल्लुक़ अल्लाह तआला से हो या मख़्लूक़ में किसी से हो तो उसको चाहिए कि वह वुज़ू करे, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े, फिर इस तरह दुआ करे: ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़े हिल्म वाले और बड़े करीम हैं। अल्लाह तआला हर ऐब से पाक हैं अर्शे अज़ीम के मालिक हैं। सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब हैं। या अल्लाह! मैं आपसे उन तमाम चीज़ों का सवाल करता हूं, जो आपकी रहमत को लाज़िम करने वाली हैं और जिन से आपकी मग़फ़िरत फ़रमाना यक़ीनी हो जाता है। मैं आपसे हर नेकी में से हिस्सा लेने का और हर गुनाह से महफ़ूज़ रहने का सवाल करता हूं। मैं आप से इस बात का भी सवाल करता हूं कि आप मेरा कोई गुनाह बाक़ी न छोड़िए जिसको आप बख़्श न दें और न कोई फ़िक्र जिसे आप दूर न फ़रमा दें और न ही कोई ज़रूरत बाक़ी छोड़िए जिसमें आपकी रज़ामंदी हो जिसे आप मेरे लिए पूरा न फ़रमा दें''। इस दुआ के बाद अल्लाह तआला से दुनिया व आख़िरत के बारे में जो चाहे मांगे उसे मिलेगा।

(इब्ने माजा)

﴾195﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ یَا رَسُوْلَ اللهِ: اِنِّیْ اُرِیْدُ اَنْ اَخْرُجَ اِلَی الْبَحْرَیْنِ فِیْ تِجَارَةٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلِّ رَکْعَتَیْنِ.

رواه الطبرانی فی الکبیر و رجاله موثقون، مجمع الزوائد ٥٧٢/٢

195. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बहरैन तिजारत के लिए जाना चाहता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (सफ़र से पहले) दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ लेना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿196﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِذَا دَخَلْتَ مَنْزِلَكَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ تَمْنَعَانِكَ مَدْخَلَ السُّوْءِ، وَاِذَا خَرَجْتَ مِنْ مَنْزِلِكَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ تَمْنَعَانِكَ مَخْرَجَ السُّوْءِ.

رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٥٧٢

196. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम घर में दाख़िल हो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लिया करो, ये दो रकअ़तें तुम्हें घर में दाख़िल होने के बाद की बुराई से बचा लेंगी। इसी तरह घर से निकलने से पहले दो रकअ़त पढ़ लिया करो। ये दो रकअ़तें तुम्हें घर से बाहर निकलने के बाद की बुराई से बचा लेंगी। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿197﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَهُ: كَيْفَ تَقْرَأُ فِي الصَّلَاةِ، فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ اُمَّ الْقُرْآنِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ مَا اَنْزَلَ اللهُ فِي التَّوْرَاةِ وَلَا فِي الْاِنْجِيْلِ وَلَا فِي الزَّبُوْرِ وَلَا فِي الْقُرْآنِ مِثْلَهَا وَاِنَّهَا لَسَبْعُ الْمَثَانِيْ.

رواه احمد، الفتح الرباني ١٨/٦٥

197. हज़रत उबई बिन काब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : तुम नमाज़ के शुरू में क्या पढ़ते हो? हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने सूरः फ़ातिहा पढ़ी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह तआ़ला ने न तौरात, न इंजील, न ज़बूर और न बाक़ी क़ुरआन में इस जैसी कोई सूरः उतारी है और यही वह (सूरः फ़ातिहा की) सात आयतें हैं जो हर नमाज़ की हर रकअ़त में दुहराई जाती हैं।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿198﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَعَالٰى: قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِيْ وَبَيْنَ عَبْدِيْ نِصْفَيْنِ، وَلِعَبْدِيْ مَا سَاَلَ، فَاِذَا قَالَ الْعَبْدُ: ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ قَالَ اللهُ تَعَالٰى: حَمِدَنِيْ عَبْدِيْ، وَاِذَا قَالَ: ﴿الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ﴾ قَالَ اللهُ تَعَالٰى: اَثْنٰى عَلَيَّ عَبْدِيْ، فَاِذَا قَالَ: ﴿مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ﴾ قَالَ: مَجَّدَنِيْ

عَبْدِیْ. وَقَالَ: مَرَّةً: فَوَّضَ اِلَیَّ عَبْدِیْ. فَاِذَا قَالَ: ﴿اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ﴾ قَالَ: هٰذَا بَیْنِیْ وَبَیْنَ عَبْدِیْ وَلِعَبْدِیْ مَا سَاَلَ، فَاِذَا قَالَ: ﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ﴾ قَالَ: هٰذَا لِعَبْدِیْ وَلِعَبْدِیْ مَاسَاَلَ۔

وهو جزء من الحديث، رواه مسلم، باب وجوب قراءة الفاتحة فی كل ركعة......، رقم:٨٧٨

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, मैंने सूरः फ़ातिहा को अपने और अपने बन्दे के दर्मियान आधा-आधा तक़सीम कर दिया है (पहली आधी सूरः का ताल्लुक़ मुझसे है और दूसरी आधी सूरः का ताल्लुक़ मेरे बन्दे से है) और मेरे बन्दे को वह मिलेगा जो वह मांगेगा। जब बन्दा कहता है **'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'** (सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब हैं) तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी ख़ूबी ब्यान की। जब बन्दा कहता है **'अर-रहमानिर्रहीम'** (जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं), तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : बन्दे ने मेरी तारीफ़ की। जब बन्दा कहता है **'मालिकियौमिद्दीन'** (जो जज़ा और सज़ा के दिन के मालिक हैं) तो अल्लाह इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी बड़ाई ब्यान की। जब बन्दा कहता है **'ईय्या-क नअ़बुदु व ईय्या-क नस्तीईन'** (हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद मांगते हैं) तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : ये मेरे और मेरे बन्दे के दरम्यान है यानी इबादत करना मेरे लिए है और मदद मांगना बन्दे की ज़रूरत है और मेरा बन्दा जो मांगेगा वह उसे दिया जाएगा। जब बन्दा कहता है **'इह्दिनस्सितरातल मुस्तक़ीम', सिरातल्लज़ी-न अन-अ़म-त अ़लैहिम ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिमव लज़्ज़ाल्लीन०'** (हमें सीधे रास्ते पर चला दीजिए, उन लोगों के रास्ते पर, जिन लोगों पर आपने फ़ज़्ल फ़रमाया है, उन पर न आपका ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न वह गुमराह हुए) तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : सूरः का यह हिस्सा ख़ालिस मेरे बन्दे के लिए है और मेरे बन्दे ने जो मांगा, वह उसे मिल गया। (मुस्लिम)

﴿199﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ الْاِمَامُ: ﴿غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ﴾ فَقُوْلُوْا: آمِیْنَ، فَاِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَلَهٗ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ.

رواه البخاری، باب جهر المأموم بالتامین، رقم:٧٨٢

199. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इमाम (सूरः फ़ातिहा के आख़िर में) **'ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम व लज़्ज़ाल्लीन०'**

कहे तो 'आमीन' कहो, इसलिए कि जिस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाए, यानी दोनों आमीन के वक़्त एक हों तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ (فِیْ حَدِیْثٍ طَوِیْلٍ): وَاِذَا قَالَ: غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ، فَقُوْلُوا آمِیْنَ، یُجِبْکُمُ اللّٰہُ.

رواہ مسلم، باب التشھد فی الصلاۃ،رقم:٩٠٤

200. हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷛ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब इमाम 'ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन०' कहे तो आमीन कहो, अल्लाह तआला तुम्हारी दुआ कुबूल फ़रमाएंगे। (मुस्लिम)

﴿201﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ : اَیُحِبُّ اَحَدُکُمْ اِذَا رَجَعَ اِلٰی اَھْلِہٖ اَنْ یَجِدَ فِیْہِ ثَلَاثَ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ؟ قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: فَثَلَاثُ آیَاتٍ یَقْرَأُ بِھِنَّ اَحَدُکُمْ فِیْ صَلَاتِہٖ، خَیْرٌ لَّہٗ مِنْ ثَلَاثِ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ.

رواہ مسلم، باب فضل قراءۃ القرآن......،رقم:١٨٧٢

201. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से किसी को यह पसन्द है कि जब वह घर जाए, तो वहां तीन हामिला ऊंटनियां मौजूद हों, जो बड़ी और मोटी हों? हमने अर्ज़ किया, यक़ीनन। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन तीन आयतें को तुममें से कोई शख़्स नमाज़ में पढ़ता है, वह तीन बड़ी और मोटी ऊंटनियों से बेहतर हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : चूंकि अरबों के नज़दीक ऊंट निहायत पसन्दीदा चीज़ थी ख़ास तौर से वह ऊंटनी जिसका कौहान ख़ूब गोश्त से भरा हो इसलिए आप ﷺ ने ऊंट की मिसाल दी और फ़रमाया कि कुरआन करीम का पढ़ना इस पसंदीदा माल से भी बेहतर है।

﴿202﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ رَکَعَ رَکْعَۃً اَوْ سَجَدَ سَجْدَۃً، رُفِعَ بِھَا دَرَجَۃً وَحُطَّ عَنْہُ بِھَا خَطِیْئَۃً.

رواہ کلہ احمد والبزار بنحوہ باسانید وبعضھا رجالہ رجال الصحیح ورواہ الطبرانی فی الاوسط، مجمع الزوائد٢/٥١٥

202. हज़रत अबूज़र ﷛ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स एक रुकूअ् करता है या एक सज्दा करता है, उसका एक दर्जा

बुलन्द कर दिया जाता है और उसकी एक ग़लती माफ़ कर दी जाती है।

(मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾203﴿ عَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعِ الزُّرَقِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي يَوْمًا وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ: سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، قَالَ رَجُلٌ: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: مَنِ الْمُتَكَلِّمُ؟ قَالَ: أَنَا، قَالَ: رَأَيْتُ بِضْعَةً وَّثَلاثِيْنَ مَلَكًا يَبْتَدِرُوْنَهَا، أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلُ. رواه البخاري، كتاب الاذان،رقم:٧٩٩

203. हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ् ज़ुरक़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप ﷺ ने रुकूअ् से सर उठाया तो फ़रमाया ''سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه'' (समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदः) इस पर एक शख़्स ने कहा ''رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ'' (रब्बना लकल हम्द। हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फ़ीः)। आप ﷺ ने जब नमाज़ ख़त्म फ़रमाई, तो दरयाफ़्त फ़रमाया, किसने ये कलिमात कहे थे? उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, मैंने। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैंने तीस से कुछ ज़ाइद फ़रिश्ते देखे, हर एक उन कलिमों का सवाब पहले लिखने में दूसरे से आगे बढ़ रहा था। (बुख़ारी)

﴾204﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَقُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ! رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رواه مسلم، باب التسميع والتحميد والتامين،رقم:٩١٣

204. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इमाम (रुकूअ् से उठते हुए) (समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदः) कहे, तो तुम (अल्लाहुम-म रब्बना लकल हम्द) कहो। जिसका यह कहना फ़रिश्तों के कहने के साथ मिल जाता है उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (मुस्लिम)

﴾205﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: أَقْرَبُ مَا يَكُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ، فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ. رواه مسلم، باب ما يقال في الركوع والسجود،رقم:١٠٨٣

205. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा नमाज़ के दौरान सज्दे की हालत में अपने रब के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है, लिहाज़ा (इस हालत में) ख़ूब दुआएं किया करो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नफ़्ल नमाज़ों के सज्दों में ख़ास तौर पर दुआओं का एहतमाम करना चाहिए।

﴾206﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَسْجُدُ لِلّٰهِ سَجْدَةً اِلَّا كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً، وَمَحَا عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً، وَرَفَعَ لَهُ بِهَا دَرَجَةً فَاسْتَكْثِرُوا مِنَ السُّجُوْدِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء فى كثرة السجود، رقم:١٤٢٤

206. हज़रत उबादा बिन सामित ﵁ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा भी अल्लाह तआ़ला के लिए सज्दा करता है, अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से ज़रूर एक नेकी लिख देते हैं, एक गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं और एक दर्जा बुलन्द कर देते हैं। लिहाज़ा ख़ूब कसरत से सज्दा किया करो, यानी नमाज़ पढ़ा करो। (इब्ने माजा)

﴾207﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اِذَا قَرَاَ ابْنُ آدَمَ السَّجْدَةَ فَسَجَدَ، اِعْتَزَلَ الشَّيْطَانُ يَبْكِيْ، يَقُوْلُ: يَاوَيْلِيْ! اُمِرَ ابْنُ آدَمَ بِالسُّجُوْدِ فَسَجَدَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَاُمِرْتُ بِالسُّجُوْدِ فَاَبَيْتُ فَلِيَ النَّارُ.

رواه مسلم، باب بيان اطلاق اسم الكفر......،رقم:٢٤٤

207. हज़रत अबू हुरैरह ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इब्ने आदम सज्दा की आयत तिलावत करके सज्दा कर लेता है, तो शैतान रोता हुआ एक तरफ़ हट जाता है और कहता है, हाए अफ़सोस! इब्ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया गया और उसने सज्दा किया तो वह जन्नत का मुस्तहिक़ हो गया और मुझे सज्दा करने का हुक्म दिया गया और मैंने सज्दे से इंकार किया तो मैं जहन्नम का मुस्तहिक़ हो गया। (मुस्लिम)

﴾208﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ): اِذَا فَرَغَ اللّٰهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ الْعِبَادِ، وَاَرَادَ اَنْ يُخْرِجَ بِرَحْمَتِهِ مَنْ اَرَادَ مِنْ اَهْلِ النَّارِ، اَمَرَ الْمَلَائِكَةَ اَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ كَانَ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا. مِمَّنْ اَرَادَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَنْ يَرْحَمَهُ. مِمَّنْ يَقُوْلُ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، فَيَعْرِفُوْنَهُمْ فِي النَّارِ، يَعْرِفُوْنَهُمْ بِاَثَرِ السُّجُوْدِ. تَاْكُلُ النَّارُ مِنِ ابْنِ آدَمَ اِلَّا اَثَرَ السُّجُوْدِ. حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَى النَّارِ اَنْ تَاْكُلَ اَثَرَ السُّجُوْدِ، فَيُخْرَجُوْنَ مِنَ النَّارِ.

رواه مسلم، باب معرفة طريق الرؤية، رقم:٤٥١

208. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला बन्दों के फ़ैसले से फ़ारिग़ हो जाएंगे और यह इरादा फ़रमाएंगे कि अपनी रहमत से जिनको चाहें दोज़ख़ से निकाल लें, तो फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाएंगे कि जिन लोगों ने दुनिया में शिर्क न किया हो और ला इला-ह इल्लल्लाह कहा हो, उन्हें दोज़ख़ की आग से निकाल लें। फ़रिश्ते उन लोगों क़ो सज्दे के निशानों की वजह से पहचान लेंगे। आग सज्दों के निशानों के अलावा तमाम जिस्म को जला देगी, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ की आग पर सज्दा के निशानों को जलाना हराम कर दिया है और ये लोग (जिनके बारे में फ़रिश्तों को हुक्म दिया गया था) जहन्नम की आग से निकाल लिए जाएंगे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : सज्दा के निशानों से मुराद वे सात आज़ा हैं, जिन पर इंसान सज्दा करता है पेशानी, नाक, दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों पैर। (नव्वी)

﴿209﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ. رواه مسلم، باب التشهد فی الصلاة،رقم:٩٠٣

209. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तशह्हुद इस तरह सिखाते थे, जिस तरह क़ुरआन करीम की कोई सूरः सिखाते थे। (मुस्लिम)

﴿210﴾ عَنْ خَفَّافِ بْنِ اِيْمَاءَ بْنِ رَحَضَةَ الْغِفَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا جَلَسَ فِي آخِرِ صَلَاتِهِ يُشِيْرُ بِاِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ، وَكَانَ الْمُشْرِكُوْنَ يَقُوْلُوْنَ يَسْحَرُ بِهَا، وَكَذَبُوْا وَلٰكِنَّهُ التَّوْحِيْدُ.

رواه احمد مطولا، والطبرانی فی الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٣٣٣

210. हज़रत ख़ुफ़्फ़ाफ़ बिन ईमा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम जब नमाज़ के आख़िर में यानी क़अ़्दा में बैठते, तो अपनी शहादत की उंगली मुबारक से इशारा फ़रमाते। मुश्रिकीन कहते थे यह इस इशारा से (اَلْعِيَاذُ بِاللهِ) जादू करते हैं, हालांकि वे झूठ बोलते थे बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ इससे तौहीद का इशारा फ़रमाते थे, यानी यह अल्लाह तआ़ला के एक होने का इशारा है। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿211﴾ عَنْ نَافِعٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: كَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اِذَا جَلَسَ فِي الصَّلَاةِ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلٰى رُكْبَتَيْهِ وَاَشَارَ بِاِصْبَعِهِ وَاَتْبَعَهَا بَصَرَهُ ثُمَّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَهِيَ اَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنَ الْحَدِيْدِ يَعْنِي السَّبَّابَةَ. رواه احمد ٢/١١٩

211. हज़रत नाफ़ेअ् रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ जब नमाज़ (के क़अ्दा) में बैठे, तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखे और (शहादत की) उंगली से इशारा फ़रमाया और निगाह उंगली पर रखी। फिर (नमाज़ के बाद) फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है यह (शहादत की उंगली) शैतान पर लोहे से ज़्यादा सख़्त है, यानी तशह्हुद की हालत में शहादत की उंगली से अल्लाह तआ़ला के एक होने का इशारा करना शैतान पर नेज़े वग़ैरह फेंकने से भी ज़्यादा सख़्त है। (मुस्नद अहमद)

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿ حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ق وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ﴾

[البقرة:٢٣٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तमाम नमाज़ों की और ख़ास तौर पर दर्मियान वाली नमाज़ यानी अ़स्र की पाबंदी किया करो और अल्लाह तआ़ला के सामने बाअदब और नियाज़मन्द होकर खड़े रहा करो। (बक़रः 238)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَاسْتَعِيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ﴾

[البقرة: ٤٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : सब्र और नमाज़ के ज़रिए से मदद लिया करो। बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है, मगर जिनके दिलों में ख़ुशूअ़ है, उन पर कुछ भी दुश्वार नहीं। (बक़रः 45)

फ़ायदा : सब्र यह है कि इंसान अपने आपको नफ़्सानी ख़्वाहिशात से रोके और अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकाम पूरे करे, नीज़ तकलीफ़ों को बरदाश्त करना भी सब्र है। (कशफ़ुर्रहमान)

आयत शरीफ़ा में दीन पर अ़मल करने के लिए सब्र और नमाज़ के ज़रिए से मदद का हुक्म दिया गया है। (फ़त्हुलमुलहिम)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ﴾

[المومنون: ۱، ۲]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : यक़ीनन वे ईमान वाले कामयाब हो गए, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ्-ख़ुज़ूअ् करने वाले हैं। (मूमिनून : 1)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿212﴾ عَنْ عُثْمَانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ امْرِیءٍ مُسْلِمٍ تَحْضُرُهُ صَلَاةٌ مَكْتُوْبَةٌ، فَيُحْسِنُ وُضُوْءَهَا وَخُشُوْعَهَا وَرُكُوْعَهَا، اِلَّا كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا قَبْلَهَا مِنَ الذُّنُوْبِ مَالَمْ يُؤْتِ كَبِيْرَةً، وَذٰلِكَ الدَّهْرَ كُلَّهُ.

رواه مسلم، باب فضل الوضوء......،صحيح مسلم ۲۰۶/۱ طبع داراحياء التراث العربی

212. हज़रत उ़स्मान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान भी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आने पर उसके लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर ख़ूब ख़ुशूअ् के साथ नमाज़ पढ़ता है, जिसमें रुकूअ् भी अच्छी तरह करता है तो जब तक कोई कबीरा गुनाह न करे, यह नमाज़ उसके लिए पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है और नमाज़ की यह फ़ज़ीलत उसको हमेशा हासिल होती रहेगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नमाज़ का ख़ुशूअ् यह है कि दिल में अल्लाह तआला की अ़ज़मत और ख़ौफ़ हो और आज़ा में सुकून हो। और ख़ुशूअ् में यह बात भी शामिल है कि क़ियाम की हालत में निगाह सज्दा की जगह पर, रुकूअ् में पैरों की उंगलियों की तरफ़, सज्दे में नाक पर और बैठने की हालत में गोद पर हो। (ब्यानुल क़ुरआन, शरह सुनन अबी दाऊद लिलऐनी)

﴿213﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدِ الْجُهَنِيِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ وُضُوْءَهُ، ثُمَّ صَلّٰی رَكْعَتَيْنِ لَا يَسْهُوْ فِيْهِمَا غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

رواه ابوداؤد، باب كراهية الوسوسة......،رقم: ۹۰۵

213. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि उसमें कुछ भूलता नहीं, यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह रहता है, तो उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿214﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَتَوَضَّأُ فَيُسْبِغُ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ يَقُوْمُ فِيْ صَلَاتِهِ فَيَعْلَمُ مَا يَقُوْلُ اِلَّا انْفَتَلَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ اُمُّهُ مِنَ الْخَطَايَا لَيْسَ عَلَيْهِ ذَنْبٌ. (الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح وله طرق

عن ابى اسحاق ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٢/٣٩٩

214. हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो मुसलमान भी कामिल वुज़ू करता है, फिर अपनी नमाज़ में इस तरह ध्यान से खड़ा होता है कि उसे मालूम हो कि वह क्या पढ़ रहा है, तो नमाज़ से इस हाल में फ़ारिग़ होता है कि उसपर कोई गुनाह नहीं होता जैसे उस दिन था, जिस दिन को उसकी मां ने जना था। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿215﴾ عَنْ حُمْرَانَ مَوْلَى عُثْمَانَ اَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَعَا بِوَضُوْءٍ فَتَوَضَّأَ، فَغَسَلَ كَفَّيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُمْنٰى اِلَى الْمِرْفَقِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُسْرٰى مِثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ مَسَحَ بِرَاْسِهِ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُمْنٰى اِلَى الْكَعْبَيْنِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ غَسَلَ الْيُسْرٰى مِثْلَ ذٰلِكَ ثُمَّ قَالَ: رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوْئِيْ هٰذَا، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوْئِيْ هٰذَا، ثُمَّ قَامَ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ، لَا يُحَدِّثُ فِيْهِمَا نَفْسَهُ، غُفِرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَكَانَ عُلَمَاؤُنَا يَقُوْلُوْنَ: هٰذَا الْوُضُوْءُ اَسْبَغُ مَا يَتَوَضَّأُ بِهِ اَحَدٌ لِلصَّلَاةِ. رواه مسلم، باب صفة الوضوء وكماله، رقم:٥٣٨

215. हज़रत हुमरान रहमतुल्लाह अ़लैह जो हज़रत उ़स्मान ﷺ के आज़ाद कर्दा गुलाम हैं, ब्यान करते हैं कि हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ ने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया और वुज़ू करना शुरू किया। पहले अपने हाथों को (गट्टों तक) तीन मर्तबा धोया, फिर कुल्ली की और नाक साफ़ की, फिर अपने चेहरे को तीन मर्तबा धोया, फिर अपने दाएं हाथ को कुहनी तक तीन मर्तबा धोया, फिर बाएं हाथ को भी इसी तरह तीन मर्तबा धोया, फिर सर का मसह किया, फिर दाएं पैर को टख़्नों तक तीन

मर्तबा धोया, फिर बाएं पैर को भी इसी तरह तीन मर्तबा धोया फिर फ़रमाया : जिस तरह मैंने वुज़ू किया है उसी तरह मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को वुज़ू करते देखा है। वुज़ू करने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था : जो शख़्स मेरे इस तरीक़े के मुताबिक़ वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त नमाज़ इस तरह पढ़ता है कि दिल में किसी चीज़ का ख़्याल नहीं लाता, तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। हज़रत इब्ने शिहाब रह० ने फ़रमाया : हमारे उलमा फ़रमाते हैं कि यह नमाज़ के लिए कामिलतरीन वुज़ू है। (मुस्लिम)

﴿216﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ قَامَ فَصَلّٰى رَكْعَتَيْنِ اَوْ اَرْبَعًا۔ شَكَّ سَهْلٌ۔ يُحْسِنُ فِيْهِمَا الرُّكُوْعَ وَالْخُشُوْعَ، ثُمَّ اسْتَغْفَرَ اللهَ غُفِرَلَهُ. رواه احمد واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٥٦٤

216. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त पढ़ता है, या चार रकअ़त, उनमें अच्छी तरह रुकूअ़ करता है ख़ुशूअ़ से भी पढ़ता है, फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तग़फ़ार करता है, तो उसकी मग़्फ़िरत हो जाती है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿217﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَامِنْ اَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُحْسِنُ الْوُضُوْءَ وَيُصَلِّيْ رَكْعَتَيْنِ يُقْبِلُ بِقَلْبِهٖ وَوَجْهِهٖ عَلَيْهِمَا اِلَّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ.

رواه ابو داؤد، باب كراهية الوسوسة......،رقم:٩٠٦

217. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स भी अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि दिल नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह रहे और आज़ा में भी सुकून हो, तो उसके लिए यक़ीनन जन्नत वाजिब हो जाती है। (अबूदाऊद)

﴿218﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ الصَّلَاةِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: طُوْلُ الْقُنُوْتِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٥/٥٤

218. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन-सी नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : जिस नमाज़ में क़ियाम लम्बा हो। (इब्ने हब्बान)

﴾219﴿ عَنْ مُغِيرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ فَقِيلَ لَهُ: غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، قَالَ: أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا؟

رواه البخاري، باب قوله: ليغفرلك الله ماتقدم من ذنبك ......، رقم:٤٨٣٦

219. हज़रत मुग़ीरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ (नमाज़ में इतना लम्बा) क़ियाम फ़रमाते कि आप ﷺ के पावं मुबारक पर वरम आ जाता। आप से अ़र्ज़ किया गया कि अल्लाह तआ़ला ने आपके अगले-पिछले गुनाह (अगर हों भी तो) माफ़ फ़रमा दिए (फिर आप इतनी मशक़्क़त क्यों उठाते हैं?) इर्शाद फ़रमाया : क्या (इस बात पर) मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं? (बुख़ारी)

﴾220﴿ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَنْصَرِفُ وَمَا كُتِبَ لَهُ إِلَّا عُشْرُ صَلَاتِهِ تُسْعُهَا ثُمُنُهَا سُبُعُهَا سُدُسُهَا خُمُسُهَا رُبُعُهَا ثُلُثُهَا نِصْفُهَا.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في نقصان الصلوة، رقم:٧٩٦

220. हज़रत अ़म्मार बिन यासिर رضي الله عنهما फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ होता है और उसके लिए सवाब का दसवां हिस्सा लिखा जाता है। इसी तरह बाज़ के लिए नवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथाई, तिहाई, आधा हिस्सा लिखा जाता है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ से मुराद यह है कि जिस क़दर नमाज़ की ज़ाहिरी शक्ल और अन्दरूनी कैफ़ियतें सुन्नत के मुताबिक़ होती हैं, उतना ही ज़्यादा अज्र व सवाब मिलता है। (बज़्लुलमज्हूद)

﴾221﴿ عَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: الصَّلَاةُ مَثْنَى مَثْنَى، تَشَهَّدٌ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ، وَتَضَرُّعٌ، وَتَخَشُّعٌ، وَتَسَاكُنٌ ثُمَّ تُقْنِعُ يَدَيْكَ يَقُولُ تَرْفَعُهُمَا إِلَى رَبِّكَ عَزَّ وَجَلَّ مُسْتَقْبِلًا بِبُطُونِهِمَا وَجْهَكَ تَقُولُ: يَارَبِّ يَا رَبِّ ثَلَاثًا فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ كَذٰلِكَ فَهِيَ خِدَاجٌ.

رواه احمد ١٦٧/٤

221. हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ की दो-दो रकअ़तें इस तरह पढ़ो कि दो रकअ़तों के आख़िर में तशह्हुद पढ़ो। नमाज़ में आजिज़ी, सुकून और मस्कनत का इज़्हार करो। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपने दोनों हाथों को दुआ़ के लिए अपने रब के सामने इस तरह उठाओ कि दोनों हाथों की हथेलियां तुम्हारे चेहरे की तरफ़ हों। फिर तीन बार या रब,

या रब कहकर दुआ करो। जिसने इस तरह न किया उसकी नमाज़ (अज्र व सवाब के लिहाज़ से) नाक़िस होगी। (मुस्नद अहमद)

﴾222﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : لَایَزَالُ اللهُ مُقْبِلًا عَلَی الْعَبْدِ فِیْ صَلَاتِهٖ مَالَمْ یَلْتَفِتْ، فَاِذَا صَرَفَ وَجْهَهٗ انْصَرَفَ عَنْهُ.

رواه النسائی، باب التشدید فی الالتفات فی الصلاۃ،رقم:۱۱۹٦

222. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला बन्दे की तरफ़ उस वक़्त तक तवज्जोह फ़रमाते हैं, जब तक वह नमाज़ में किसी और तरफ़ मुतवज्जह न हो। जब बन्दा अपनी तवज्जोह नमाज़ से हटा लेता है, तो अल्लाह तआला भी उससे अपनी तवज्जोह हटा लेते हैं। (नसाई)

﴾223﴿ عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الرَّجُلَ اِذَا قَامَ یُصَلِّی اَقْبَلَ اللهُ عَلَیْهِ بِوَجْهِهٖ حَتّٰی یَنْقَلِبَ اَوْ یُحْدِثَ حَدَثَ سُوْءٍ.

رواه ابن ماجه، باب المصلی یتنخم،رقم: ۱۰۲۳

223. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ पूरी तवज्जोह फ़रमाते हैं, यहां तक कि वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए या (नमाज़ में) कोई ऐसा अ़मल कर ले, जो नमाज़ के ख़ुशूअ़ के ख़िलाफ़ हो। (इब्ने माजा)

﴾224﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِذَا قَامَ اَحَدُكُمْ اِلَی الصَّلٰوةِ فَلَا یَمْسَحِ الْحَصٰی فَاِنَّ الرَّحْمَةَ تُوَاجِهُهٗ. رواه الترمذی وقال: حدیث ابی ذر حدیث حسن، باب ماجاء فی کراهیة مسح الحصی......، رقم: ۳۷۹

224. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें कोई शख़्स नमाज़ के लिए खड़ा हो तो नमाज़ की हालत में बिला ज़रूरत कंकरियों पर हाथ न फेरे, क्योंकि उस वक़्त अल्लाह तआला की ख़ास रहमत उसकी तरफ़ मुतवज्जह होती है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस्लाम के शुरू के दिनों में मस्जिदों के अन्दर सफ़ों की जगह कंकरियां बिछा दी जाती थीं। कभी कोई कंकरी खड़ी रह जाती जिसकी वजह से सज्दा करना मुश्किल हो जाता था। रसूलुल्लाह ﷺ ने बार-बार कंकरियां हटाने से इसलिए मना फ़रमाया है कि यह वक़्त अल्लाह तआला की

रहमत के मुतवज्जह होने का है। कंकरियां हटाने या इस क़िस्म के दूसरे काम में मुतवज्जह होने की वजह से रहमत से महरूमी न हो जाए।

﴿225﴾ عَنْ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا إِذَا كُنَّا فِي الصَّلٰوةِ وَرَفَعْنَا رُؤُوْسَنَا مِنَ السُّجُوْدِ أَنْ نَطْمَئِنَّ عَلَى الْأَرْضِ جُلُوْسًا وَلَا نَسْتَوْفِزَ عَلٰى أَطْرَافِ الْأَقْدَامِ.

رواه بتمامه هكذا الطبراني في الكبير واسناده حسن، وقد تكلم الازدي وابن حزم في بعض رجاله بما لا يقدح، مجمع الزوائد ٢/٣٢٥

225. हज़रत समुरा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें हुक्म फ़रमाया करते थे कि जब हम नमाज़ की हालत में सज्दा से सर उठाएं तो इत्मीनान से ज़मीन पर बैठें, पंजों के बल न बैठें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿226﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حِيْنَ حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ قَالَ: أُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اُعْبُدِ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ، وَاعْدُدْ نَفْسَكَ فِي الْمَوْتٰى، وَإِيَّاكَ وَدَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ فَإِنَّهَا تُسْتَجَابُ، وَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَشْهَدَ الصَّلَاتَيْنِ الْعِشَاءَ وَالصُّبْحَ وَلَوْ حَبْوًا فَلْيَفْعَلْ.

رواه الطبراني في الكبير والرجل الذي من النخع لم اجد من ذكره وقد ورد من وجه آخر وسماه جابرًا. وفي الحاشية: وله شواهد يتقوى به، مجمع الزوائد ٢/١٦٥

226. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ ने इंतिक़ाल के वक़्त फ़रमाया : मैं तुमसे एक हदीस ब्यान करता हूं, जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की ऐसी इबादत करो, गोया तुम उनको देख रहे हो और अगर यह कैफ़ियत नसीब न हो, तो फिर यह ध्यान रखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहे हैं। अपने आपको मुर्दों में शुमार किया करो (अपने आप को ज़िन्दों में न समझो कि फिर न किसी बात से ख़ुशी, न किसी बात से रंज), मज़्लूम की बद्दुआ़ से अपने आपको बचाते रहो, क्योंकि वह फ़ौरन क़ुबूल होती है। जो तुम में से इशा और फ़ज्र की जमाअ़त में शरीक होने के लिए ज़मीन पर घिसट कर भी जा सकता हो, तो उसे घिसट कर जमाअ़त में शरीक हो जाना चाहिए। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿227﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ كُنْتَ لَا تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ. (الحديث) رواه ابو محمد الابراهيمي في كتاب الصلوة وابن النجار عن ابن عمرو هو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/٦٩

227. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की तरह नमाज़ पढ़ा करो जो सबसे रुख़्सत होने वाला हो, यानी जिसको गुमान हो कि यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है और इस तरह नमाज़ पढ़ो, गोया तुम अल्लाह तआ़ला को देख रहे हो, अगर यह हालत पैदा न हो सके तो कम-से-कम यह कैफ़ियत ज़रूर हो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहे हैं।

(जामेअ़ सग़ीर)

﴾228﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ، فَيَرُدُّ عَلَيْنَا، فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ، سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا، فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فِي الصَّلَاةِ، فَتَرُدُّ عَلَيْنَا، فَقَالَ: إِنَّ فِي الصَّلَاةِ شُغْلًا.

رواه مسلم، باب تحريم الكلام في الصلاة ......، رقم: ١٢٠١

228. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि (इस्लाम के शुरू में) हम रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ की हालत में सलाम कर लिया करते थे और आप ﷺ हमें सलाम का जवाब दिया करते थे। जब हम नजाशी के पास से वापस आए तो हमने (पहली आ़दत के मुताबिक़) आप ﷺ को सलाम किया, आपने हमें जवाब न दिया। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! पहले हम आप को नमाज़ की हालत में सलाम करते थे, आप हमें जवाब देते थे (लेकिन इस मर्तबा आप ने जवाब न दिया)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ में सिर्फ़ नमाज़ ही की तरफ़ मशगूल रहना चाहिए।

(मुस्लिम)

﴾229﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ وَفِيْ صَدْرِهِ أَزِيْزٌ كَأَزِيْزِ الرَّحَى مِنَ الْبُكَاءِ ﷺ.

رواه ابو داؤد، باب البكاء في الصلاة، رقم: ٩٠٤

229. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। आप ﷺ के मुबारक सीने से रोने की आवाज़ (सांस रुकने की वजह से) ऐसी मुसलसल आ रही थी, जैसे चक्की की आवाज़ होती है। (अबूदाऊद)

﴾230﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرْفُوْعًا قَالَ: مَثَلُ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَمَثَلِ الْمِيْزَانِ مَنْ أَوْفَى اسْتَوْفَى.

رواه البيهقي هكذا ورواه غيره عن الحسن مرسلا وهو الصواب، الترغيب ١/٣٥١

230. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़र्ज़

नमाज़ की मिसाल तराज़ू की-सी है जो नमाज़ को पूरी तरह अदा करता है, उसे पूरा अज्र मिलता है। (बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿231﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ اَبِیْ دَهْرِشٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ مُرْسَلًا (قَالَ) لَا یَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْ عَبْدٍ عَمَلًا حَتّٰی یُحْضِرَ قَلْبَهٗ مَعَ بَدَنِهٖ. اتحاف السادة ٣/١١٢، قال المنذری: رواه محمد بن نصر المروزی فی کتاب الصلاة هکذا مرسلا ووصله ابو منصور الدیلمی فی مسند الفردوس من حدیث ابی ابن کعب والمرسل اصح، الترغیب ١/٣٤٦

231. हज़रत उस्मान बिन अबी दहरिश ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे के उसी अ़मल को क़ुबूल फ़रमाते हैं, जिसमें वह अपने बदन के साथ दिल को भी मुतवज्जह रखता है। (इत्तिहाफ़)

﴿232﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: الصَّلَاةُ ثَلَاثَةُ اَثْلَاثٍ: الطُّهُوْرُ ثُلُثٌ، وَالرُّكُوْعُ ثُلُثٌ، وَالسُّجُوْدُ ثُلُثٌ، فَمَنْ اَدَّاهَا بِحَقِّهَا قُبِلَتْ مِنْهُ، وَقُبِلَ مِنْهُ سَائِرُ عَمَلِهٖ، وَمَنْ رُدَّتْ عَلَیْهِ صَلَاتُهٗ رُدَّ عَلَیْهِ سَائِرُ عَمَلِهٖ. رواه البزار وقال: لا نعلمه مرفوعا الا عن المغیرة بن مسلم، قلت: والمغیرة ثقة واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٣٤٥

232. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ के तीन हिस्से हैं, यानी नमाज़ का पूरा सवाब इन तीनों हिस्सों के सही अदा करने पर मिलता है। पाकी हासिल करना तिहाई हिस्सा है, रुकूअ़ तिहाई हिस्सा है और सज्दा तिहाई हिस्सा है। जो शख़्स नमाज़ आदाब की रियायत के साथ पढ़ता है उसकी नमाज़ क़ुबूल की जाती है और उस के सारे आ़माल भी क़ुबूल किए जाते हैं। जिसकी नमाज़ (सही न पढ़ने की वजह से) क़ुबूल नहीं होती, उसके दूसरे आ़माल भी क़ुबूल नहीं होते। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿233﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: صَلّٰی بِنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ الْعَصْرَ فَبَصُرَ بِرَجُلٍ یُصَلِّیْ، فَقَالَ: یَافُلَانُ اتَّقِ اللّٰهَ، اَحْسِنْ صَلَاتَكَ اَتَرَوْنَ اَنِّیْ لَا اَرَاكُمْ، اِنِّیْ لَاَرٰی مِنْ خَلْفِیْ كَمَا اَرٰی مِنْ بَیْنِ یَدَیَّ، اَحْسِنُوْا صَلَاتَكُمْ وَاَتِمُّوْا رُكُوْعَكُمْ وَسُجُوْدَكُمْ.

رواه ابن خزیمة ١/٣٣٢

233. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें अ़स्र की नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद आप ﷺ ने एक साहब को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, तो उन्हें आवाज़

देकर फ़रमाया : फ़्लाने अल्लाह तआ़ला से डरो! नमाज़ को अच्छी तरह से पढ़ो। क्या तुम यह समझते हो कि मैं तुमको नहीं देखता? मैं अपने पीछे की चीज़ों को भी ऐसा ही देखता हूं जैसा कि अपने सामने की चीजों को देखता हूं। अपनी नमाज़ों को अच्छी तरह पढ़ा करो, रुकूअ़ और सज्दों को पूरे तौर पर अदा किया करो। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

फ़ायदा : नबी करीम का पीछे की चीज़ों को भी देखना आपके मोजिज़ों में से एक है।

﴿234﴾ عَنْ وَائِلِ بْنِ حِجْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا رَكَعَ فَرَّجَ اَصَابِعَهُ وَاِذَا سَجَدَ ضَمَّ اَصَابِعَهُ. رواه الطبرانى فى الكبير و اسناده حسن مجمع الزوائد ٢/٥ ١٢

234. हज़रत वाइल बिन हिज्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब रुकूअ़ फ़रमाते तो (हाथों की) उंगलियां खुली रखते और जब सज्दा फ़रमाते, तो उंगलियां मिला लेते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿235﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَنْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ يُتِمُّ رُكُوْعَهُ وَ سُجُوْدَهُ لَمْ يَسْاَلِ اللهَ تَعَالٰى شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ عَاجِلًا اَوْ آجِلًا.

اتحاف السادة المتقين عن الطبرانى فى الكبير ٢١/٣

235. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं : जो शख़्स दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि उसका रुकूअ़ और सज्दा पूरे तौर पर करता है (उसके बाद) अल्लाह तआ़ला से जो मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको फ़ौरन या (किसी मस्लहत की वजह से) कुछ देर के बाद ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं। (तबरानी, इत्तिहाफ़)

﴿236﴾ عَنْ اَبِىْ عَبْدِ اللهِ الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الَّذِىْ لَا يُتِمُّ رُكُوْعَهُ وَيَنْقُرُ فِىْ سُجُوْدِهٖ مَثَلُ الْجَائِعِ يَاْكُلُ التَّمْرَةَ وَالتَّمْرَتَيْنِ لَا تُغْنِيَانِ عَنْهُ شَيْئًا. رواه الطبرانى فى الكبير وابو يعلى و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٣٠٣/٢

236. हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो पूरे तरीक़े पर रुकूअ़ नहीं करता और सज्दा में भी ठोंगें मारता है, उस भूखे शख़्स की-सी है जो एक दो खुजूरें खाए, जिससे उसकी भूख दूर नहीं होती, इसी तरह ऐसी नमाज़ किसी काम नहीं आती।

(तबरानी, अबूयाला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿237﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اَوَّلُ شَیْءٍ یُرْفَعُ مِنْ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ الْخُشُوْعُ حَتّٰی لَا تَرٰی فِیْھَا خَاشِعًا.

رواہ الطبرانی فی الکبیر واسنادہ حسن، مجمع الزوائد ۲/۳۲۶

237. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस उम्मत में सबसे पहले ख़ुशूअ़ उठाया जाएगा, यहां तक कि तुम्हें उम्मत में एक भी ख़ुशूअ़ वाला न मिलेगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿238﴾ عَنْ اَبِیْ قَتَادَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَسْوَاُ النَّاسِ سَرِقَۃً الَّذِیْ یَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِہٖ قَالُوا: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! کَیْفَ یَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِہٖ؟ قَالَ: لَا یُتِمُّ رُکُوْعَھَا وَلَا سُجُوْدَھَا، اَوْ لَا یُقِیْمُ صُلْبَہٗ فِی الرُّکُوْعِ وَلَا فِی السُّجُوْدِ.

رواہ احمد والطبرانی فی الکبیر والاوسط ورجالہ رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۲/۳۰۰

238. हज़रत अबू क़तादा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है जो नमाज़ में चोरी कर लेता है। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! नमाज़ में से किस तरह चोरी कर लेता है? इर्शाद फ़रमाया : उसका रुकूअ़ और सज्दा अच्छी तरह नहीं करता।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿239﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: لَا یَنْظُرُ اللّٰہُ اِلٰی صَلَاۃِ رَجُلٍ لَایُقِیْمُ صُلْبَہٗ بَیْنَ رُکُوْعِہٖ وَسُجُوْدِہٖ. رواہ احمد، الفتح الربانی ۳/۲۶۷

239. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं जो रुकूअ़ और सज्दा के दर्मियान यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करे।(मुस्नद अहमद, फ़तहुर्रब्बानी)

﴿240﴾ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ عَنِ الْاِلْتِفَاتِ فِی الصَّلَاۃِ قَالَ: ھُوَاخْتِلَاسٌ یَخْتَلِسُہُ الشَّیْطٰنُ مِنْ صَلَاۃِ الرَّجُلِ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن غریب، باب ماذکر فی الالتفات فی الصلاۃ، رقم: ۵۹۰

240. हज़रत आ़इशा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कि नमाज़ में इधर-उधर देखना कैसा है? इर्शाद फ़रमाया : यह शैतान का आदमी की नमाज़ में से उचक लेना है। (तिर्मिज़ी)

﴿241﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيَنْتَهِيَنَّ اَقْوَامٌ يَرْفَعُوْنَ اَبْصَارَهُمْ اِلَى السَّمَاءِ فِي الصَّلَاةِ، اَوْلَا تَرْجِعُ اِلَيْهِمْ.

رواه مسلم، باب النهى عن رفع البصر......، رقم:٩٦٦

241. हज़रत जाबिर बिन समुरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग नमाज़ में आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर देखते हैं, वे बाज़ आ जाएं वरना उनकी निगाहें ऊपर ही रह जाएंगी। (मुस्लिम)

﴿242﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَرَدَّ، فَقَالَ: اِرْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ، فَرَجَعَ فَصَلّٰى كَمَا صَلّٰى، ثُمَّ جَاءَ فَصَلّٰى فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: اِرْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ، ثَلَاثًا، فَقَالَ: وَالَّذِيْ بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا اُحْسِنُ غَيْرَهُ، فَعَلِّمْنِيْ، فَقَالَ: اِذَا قُمْتَ اِلَى الصَّلَاةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا وَافْعَلْ ذٰلِكَ فِيْ صَلَاتِكَ كُلِّهَا.

رواه البخاري، باب وجوب القراءة للامام والماموم في الصلوات كلها......، رقم:٧٥٧

242. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए। एक और साहब भी मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ी, फिर (रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और) रसूलुल्लाह ﷺ को सलाम किया। आप ﷺ ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह गए और जैसे नमाज़ पहले पढ़ी थी, वैसी ही नमाज़ पढ़कर आए, फिर रसूलुल्लाह ﷺ को आकर सलाम किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जाओ नमाज़ पढ़ो, क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह तीन मर्तबा हुआ। उन साहब ने अ़र्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम, जिसने आप ﷺ को हक़ के साथ भेजा है मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता आप मुझे नमाज़ सिखाइए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हुआ करो तो तकबीर कहा करो, फिर क़ुरआन मजीद में से जो कुछ तुम पढ़ सको पढ़ो। फिर रुकूअ़ में जाओ तो इत्मीनान से रुकूअ़ करो, फिर रुकूअ़ से खड़े हो तो इत्मीनान से खड़े हो। फिर सज्दा में जाओ तो इत्मीनान से सज्दा करो फिर सज्दा से उठो तो इत्मीनान से बैठो, ये सब काम पूरी नमाज़ में करो। (बुख़ारी)

वुज़ू के फ़ज़ाइल

कुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ﴾

[المائدة:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब नमाज़ के लिए उठो तो पहले अपने मुंह को और कुहनियों तक अपने हाथों को धो लिया करो और अपने सरों का मसह कर लिया करो और अपने पावं भी टख़नों तक धो लिया करो। (माइदा : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ﴾ [التوبة:١٠٨]

और अल्लाह तआला ख़ूब पाक रहने वालों को पसन्द फ़रमाते हैं। (तौबा : 108)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿243﴾ عَنْ اَبِیْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِیْمَانِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ تَمْلَاُ الْمِیْزَانَ وَسُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ تَمْلَآنِ۔ اَوْتَمْلَاُ۔ مَابَیْنَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَالصَّلَاةُ نُوْرٌ، وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ، وَالصَّبْرُ ضِیَاءٌ، وَالْقُرْآنُ حُجَّةٌ لَّكَ اَوْ عَلَیْكَ۔

(الحدیث) رواہ مسلم، باب فضل الوضوء،رقم:٥٣٤

243. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया.: वुज़ू आधा ईमान है। अल-हम्दु लिल्लाह कहना (आमाल के) तराज़ू को सवाब से भर देता है। 'सुब्हानल्लाह वल हम्दु लिल्लाह' आसमान व ज़मीन के दर्मियान की ख़ाली जगह को सवाब से भर देते हैं। नमाज़ नूर है, सदक़ा दलील है, सब्र करना रौशनी है और क़ुरआन तुम्हारे हक़ में दलील है या तुम्हारे ख़िलाफ़ दलील है यानी अगर उसकी तिलावत की और उस पर अ़मल किया तो यह तुम्हारी निजात का ज़रिया होगा, वरना तुम्हारी पकड़ का ज़रिया होगा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में वुज़ू को आधा ईमान इसलिए फ़रमाया है कि ईमान से दिल के क़ुफ़्र व शिर्क की नापाकी दूर होती है और वुज़ू से आज़ा की नापाकी दूर होती है। नमाज़ के नूर होने का एक मतलब यह है कि नमाज़ गुनाह और बेहयाई से रोकती है जिस तरह नूर अंधेरे को दूर करता है। दूसरा मतलब यह है कि नमाज़ की वजह से नमाज़ी का चेहरा क़ियामत के दिन रौशन होगा और दुनिया में भी नमाज़ी के चेहरे पर तर व ताज़गी होगी। तीसरा मतलब यह है कि नमाज़ क़ब्र और क़ियामत के अंधेरों में रौशनी है। सदक़ा की दलील होने का मतलब यह है कि माल इंसान को महबूब होता है और जब वह अल्लाह तआ़ला के रास्ते में उसको ख़र्च करता है और सदक़ा करता है, तो यह सदक़ा करना उसके ईमान में सच्चा होने की अलामत और दलील है। सब्र के रौशनी होने का मतलब यह है कि सब्र करने वाला शख़्स यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करने वाला, नाफ़रमानी से रुकने वाला तकलीफ़ों को बरदाश्त करने वाला अपने अंदर हिदायत की रोशनी लिए हुए है। (नव्वी, मिरक़ात)

﴿244﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ خَلِيْلِی ﷺ يَقُوْلُ: تَبْلُغُ الْحِلْيَةُ مِنَ الْمُؤْمِنِ حَيْثُ يَبْلُغُ الْوَضُوْءُ.

رواه مسلم، باب تبلغ الحلية......، رقم:٥٨٦

244. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अपने हबीब ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मोमिन का ज़ेवर क़ियामत के दिन वहां तक पहुंचेगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है, यानी आज़ा के जिन हिस्सों तक वुज़ू का पानी पहुंचेगा वहां तक ज़ेवर पहनाया जाएगा। (मुस्लिम)

﴿245﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اُمَّتِیْ يُدْعَوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ غُرًّا مُحَجَّلِيْنَ مِنْ آثَارِ الْوُضُوْءِ، فَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يُطِيْلَ غُرَّتَهُ فَلْيَفْعَلْ.

رواه البخاری، باب فضل الوضوء والغر المحجلون......، رقم:١٣٦

245. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी उम्मत क़ियामत के दिन इस हाल में बुलाई जाएगी कि उनके हाथ पांव और चेहरे वुज़ू में धुलने की वजह से रौशन और चमकदार होंगे, लिहाज़ा जो शख़्स अपनी रौशनी को बढ़ाना चाहे, तो उसे चाहिए कि वह उसे बढ़ाए। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि वुज़ू इस एहतमाम से किया जाए कि आज़ाए वुज़ू में कोई जगह ख़ुश्क न रहे। (मज़ाहिरे हक़)

﴿246﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّا فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهٖ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ اَظْفَارِهٖ.

رواه مسلم، باب خروج الخطايا......، رقم:٥٧٨

246. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने वुज़ू किया और अच्छी तरह वुज़ू किया यानी सुन्नतों और आदाब व मुस्तहिब्बात का एहतमाम किया तो उसके गुनाह जिस्म से निकल जाते हैं, यहां तक कि उसके नाख़ूनों के नीचे से भी निकल जाते हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : उलमा की तहक़ीक़ यह है कि वुज़ू, नमाज़ वग़ैरह इबादात से सिर्फ़ गुनाहे सग़ीरा माफ़ होते हैं। कबीरा गुनाह बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते, इसलिए वुज़ू नमाज़ वग़ैरह इबादात के साथ तौबा व इस्तग़फ़ार का भी एहतमाम करना चाहिए। अलबत्ता अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से किसी के गुनाह

कबीरा भी माफ़ फ़रमा दें तो दूसरी बात है। (नव्वी)

﴿247﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يُسْبِغُ عَبْدٌ الْوُضُوْءَ اِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَاَخَّرَ.

رواه البزاورجاله موثقون والحديث حسن ان شاء الله، مجمع الزوائد ١/٢٤٥

247. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा कामिल वुज़ू करता है, यानी हर उज़्व को अच्छी तरह तीन मर्तबा धोता है, अल्लाह तआला उसके अगले पिछले सब गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿248﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْكُمْ مِنْ اَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبْلِغُ. اَوْ فَيُسْبِغُ. الْوُضُوْءَ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَشْهَدُ اَنْ لَّااِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ، يَدْخُلُ مِنْ اَيِّهَا شَاءَ. رواه مسلم، باب الذكر المستحب عقب الوضوء، رقم:٥٥٣، وفى رواية لمسلم عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: مَنْ تَوَضَّأَ فَقَالَ: اَشْهَدُ اَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّااللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (الحديث)، باب الذكر المستحب عقب الوضوء،رقم:٥٥٤، وفى رواية لا بن ماجه عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ثُمَّ قَالَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ......، باب مايقال بعد الوضوء، رقم: ٤٦٩، وفى رواية لابى داؤد عَنْ عُقْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ رَفَعَ نَظَرَهٗ اِلَى السَّمَاءِ باب ما يقول الرجل إذا توضأ، رقم: ١٧٠: وفى رواية للترمذى عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَنْ تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ قَالَ: اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ، وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

(الحديث) باب فى ما يقال بعد الوضوء ،رقم:٥٥

248. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स मुस्तहिब्बात और आदाब का एहतमाम करते हुए अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर (अश्हदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह) पढ़े, उसके लिए यक़ीनी तौर पर जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। हज़रत उक्बा बिन आ़मिर जुहनी ﷺ की रिवायत में (अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु

अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह) पढ़ने का ज़िक्र है। हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ की रिवायत में तीन मर्तबा इन कलिमों के पढ़ने का ज़िक्र किया गया है। एक दूसरी रिवायत में हज़रत उक़्बा रज़ि० से वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ निगाह उठा कर उन कलिमों का पढ़ना ज़िक्र किया गया है। एक और रिवायत में हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि० से ये कलिमे नक़ल किए गए हैं : 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-मज-अ़ल-नी मिनत्तव्वाबी न वज-अ़ल नी मिनल मु-त-तह्हिरीन०' तर्जुमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं, ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों और पाक साफ़ रहने वालों में से बना।

﴿249﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ کُتِبَ فِیْ رَقٍّ ثُمَّ طُبِعَ بِطَابِعٍ فَلَمْ یُکْسَرْ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ. (وھو جزء من الحدیث) رواہ الحاکم وقال ھذا حدیث صحیح علی شرط مسلم ولم یخرجاہ ووافقہ الذھبی ۱/۵٦٤

249. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स वुज़ू के बाद (सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु अ़लैक०) पढ़ता है तो उन कलिमों को एक काग़ज़ पर लिखकर उस पर मुहर लगा दी जाती है जो क़ियामत तक नहीं तोड़ी जाएगी, यानी उसके सवाब को आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा कर दिया जाएगा।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿250﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ وَاحِدَۃً فَتِلْکَ وَظِیْفَۃُ الْوُضُوْءِ الَّتِیْ لَا بُدَّ مِنْھَا، وَمَنْ تَوَضَّأَ اثْنَتَیْنِ فَلَہٗ کِفْلَانِ، وَمَنْ تَوَضَّأَ ثَلَاثًا فَذٰلِکَ وُضُوْئِیْ وَوُضُوْءُ الْاَنْبِیَاءِ قَبْلِیْ. رواہ احمد ۲/۹۸

250. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो वुज़ू में एक-एक मर्तबा उ़ज़्व को धोता है तो यह फ़र्ज़ के दर्जे में है और जो वुज़ू में दो-दो मर्तबा हर उ़ज़्व को धोता है तो उसे अज्र के दो हिस्से मिलते हैं और जो वुज़ू में तीन-तीन मर्तबा उ़ज़्व को धोता है तो यह मेरा और मुझसे पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का वुज़ू है। (मुस्नद अहमद)

﴿251﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ الصُّنَابِحِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا تَوَضَّأَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ فَتَمَضْمَضَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ فِيْهِ، فَاِذَا اسْتَنْثَرَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ اَنْفِهِ، فَاِذَا غَسَلَ وَجْهَهُ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ وَجْهِهِ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ اَشْفَارِ عَيْنَيْهِ، فَاِذَا غَسَلَ يَدَيْهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ يَدَيْهِ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ اَظْفَارِ يَدَيْهِ، فَاِذَا مَسَحَ بِرَاْسِهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رَاْسِهِ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ اُذُنَيْهِ، فَاِذَا غَسَلَ رِجْلَيْهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رِجْلَيْهِ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ اَظْفَارِ رِجْلَيْهِ، ثُمَّ كَانَ مَشْيُهُ اِلَى الْمَسْجِدِ وَصَلَاتُهُ نَافِلَةً لَهُ.

رواه النسائی، باب مسح الاذنین مع الراس......،رقم:۱۰۳

وَفِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ السُّلَمِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ،وَفِيْهِ مَكَانَ (ثُمَّ كَانَ مَشْيُهُ اِلَى الْمَسْجِدِ وَصَلَاتُهُ نَافِلَةً) فَاِنْ هُوَ قَامَ فَصَلّٰى، فَحَمِدَ اللّٰهَ وَاَثْنٰى عَلَيْهِ، وَمَجَّدَهُ بِالَّذِيْ هُوَ لَهُ اَهْلٌ، وَفَرَّغَ قَلْبَهُ لِلّٰهِ، اِلَّا انْصَرَفَ مِنْ خَطِيْئَتِهِ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ وَلَدَتْهُ اُمُّهُ.

رواہ مسلم، باب اسلام عمرو بن عبسة،رقم:۱۹۳۰

251. हज़रत अ़ब्दुल्लाह सुनाबिही ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मोमिन बन्दा वुज़ू करता है और इस दौरान कुल्ली करता है तो उसके मुंह के तमाम गुनाह धुल जाते हैं। जब वह नाक साफ़ करता है तो नाक के तमाम गुनाह धुल जाते हैं। जब चेहरा धोता है तो चेहरे के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि पलकों की जड़ों से निकल जाते हैं। जब हाथों को धोता है तो हाथों के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि हाथों के नाखूनों के नीचे से निकल जाते हैं। जब सर का मसह करता है तो सर के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि कानों से निकल जाते हैं और जब पांव धोता है तो पांव के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि पांव के नाख़ूनों के नीचे से निकल जाते हैं। फिर उसका मस्जिद की तरफ़ चल कर जाना और नमाज़ पढ़ना उसके लिए मज़ीद (फ़ज़ीलत का ज़रिया) होता है। (नसाई)

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अम्र बिन अ़बसा सुलमी ﷺ फ़रमाते हैं कि अगर वुज़ू के बाद खड़े होकर नमाज़ पढ़ता है, जिसमें अल्लाह तआ़ला की ऐसी हम्द व सना और बुज़ुर्गी ब्यान करता है जो उनकी शान के लायक़ है और अपने दिल को (तमाम फ़िक्रों से) ख़ाली करके अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह रहता है तो यह शख़्स नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपने गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि आज ही उसकी मां ने उसको जना हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : पहली रिवायत का बाज़ उलेमा ने यह मतलब ब्यान किया है कि वुज़ू से तमाम जिस्म के गुनाह माफ़ हो जाते हैं और नमाज़ पढ़ने से तमाम बातनी गुनाह भी माफ़ हो जाते हैं। (कशफ़ुल मग़ता)

﴾252﴿ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَيُّمَا رَجُلٍ قَامَ اِلٰى وُضُوْئِهٖ يُرِيْدُ الصَّلَاةَ، ثُمَّ غَسَلَ كَفَّيْهِ نَزَلَتْ خَطِيْئَتُهٗ مِنْ كَفَّيْهِ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ، فَاِذَا مَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ وَاسْتَنْثَرَ نَزَلَتْ خَطِيْئَتُهٗ مِنْ لِسَانِهٖ وَشَفَتَيْهِ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ، فَاِذَا غَسَلَ وَجْهَهٗ نَزَلَتْ خَطِيْئَتُهٗ مِنْ سَمْعِهٖ وَبَصَرِهٖ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ فَاِذَا غَسَلَ يَدَيْهِ اِلَى الْمِرْفَقَيْنِ وَرِجْلَيْهِ اِلَى الْكَعْبَيْنِ سَلِمَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ هُوَ لَهٗ وَمِنْ كُلِّ خَطِيْئَةٍ كَهَيْئَتِهٖ يَوْمَ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ، قَالَ: فَاِذَا قَامَ اِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ اللّٰهُ بِهَا دَرَجَتَهٗ وَاِنْ قَعَدَ قَعَدَ سَالِمًا. رواه احمد ٥/٢٦٣

2. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आदमी नमाज़ के इरादे से वुज़ू करने के लिए उठता है, फिर अपने दोनों हाथ गट्टों तक धोता है तो उसकी हथेलियों के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं फिर जब कुल्ली करता है, नाक में पानी डालता है और नाक साफ़ करता है, तो उसकी ज़ुबान और होंठों के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं। फिर जब अपने चेहरे को धोता है तो उसके कान और आंख के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं, फिर जब हाथों को कुहनियों तक और पैरों को टख़नों तक धोता है तो अपने हर गुनाह और ग़लती से इस तरह पाक साफ़ हो जाता है जैसे आज ही उसकी मां ने उसको जना हो। फिर जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उस नमाज़ की वजह से दर्जा बुलन्द कर देते हैं और अगर बैठा रहता है (नमाज़ में मश्ग़ूल नहीं होता) तो भी गुनाहों से पाक साफ़ हो कर बैठा रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴾253﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ عَلٰى طُهْرٍ كُتِبَ لَهٗ عَشْرُ حَسَنَاتٍ. رواه ابو داؤد، باب الرجل يجدد الوضوء......رقم: ٦٢

3. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाह अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाया करते थे : जो शख़्स वुज़ू होने के बावजूद ताज़ा वुज़ू करता है, उसको दस नेकियां मिलती हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : उलमा ने लिखा है कि वुज़ू के बावजूद नया वुज़ू करने की शर्त यह है कि

पहले वुज़ू से कोई इबादत कर ली हो। (बज़लुल मजहूद)

﴿254﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَوْلَا اَنْ اَشُقَّ عَلٰى اُمَّتِى لَاَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلٰوةٍ. رواه مسلم، باب السواك،رقم:٥٨٩

254. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अ मुझे यह ख़्याल न होता कि मेरी उम्मत मशक़्क़त में पड़ जाएगी, तो मैं उनको नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता। (मुस्लि

﴿255﴾ عَنْ اَبِىْ اَيُّوْبَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَرْبَعٌ مِنْ سُنَنِ الْمُرْسَلِيْنَ: اَلْحَيَاءُ وَالتَّعَطُّرُ وَالسِّوَاكُ وَالنِّكَاحُ. رواه الترمذى وقال: حديث ابى ايوب حديث حسن غريب، باب ماجاء فى فضل التزويج والحث عليه، رقم: ١٠٨٠

255. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : च चीज़ें पैग़म्बरों की सुन्नतों में से हैं। हया का होना, ख़ुश्बू लगाना, मिस्वाक करना और निकाह करना। (तिर्मिज़

﴿256﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ. عَشْرٌ مِنَ الْفِطْرَةِ: قَصُّ الشَّارِبِ، وَاِعْفَاءُ اللِّحْيَةِ، وَالسِّوَاكُ، وَاسْتِنْشَاقُ الْمَاءِ، وَقَصُّ الْاَظْفَارِ، وَغَسْلُ الْبَرَاجِمِ، وَنَتْفُ الْاِبِطِ، وَحَلْقُ الْعَانَةِ، وَانْتِقَاصُ الْمَاءِ قَالَ زَكَرِيَّا: قَالَ مُصْعَبٌ: وَنَسِيْتُ الْعَاشِرَةَ، اِلَّا اَنْ تَكُوْنَ الْمَضْمَضَةَ. رواه مسلم، باب خصال الفطرة،رقم:٦٠٤

256. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस चीज़ें अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नतों में से हैं। 1. मूछें काटन 2. दाढ़ी बढ़ाना, 3. मिस्वाक करना, 4. नाक में पानी डालकर साफ़ करना, 5. नाख़ू तराशना, 6. उंगलियों के जोड़ों को (और इसी तरह जिस्म में जहां-जहां मैल जमता है, मसलन कान और नाक के सुराख़ और बग़लों वग़ैरह का) एहतमाम से धोना, बग़ल के बाल उखेड़ना, 8. ज़ेरे नाफ़ बाल मूंडना 9. और पानी से इस्तिंजा करना। हदीस के रावी हज़रत मुसअब रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि दसवीं चीज़ मैं भूल गय मेरा गुमान है कि दसवीं चीज़ कुल्ली करना है। (मुस्लिम)

﴿257﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ. رواه النسائى، باب الترغيب فى السواك،رقم:٥

257. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मिस्वाक मुंह को साफ़ करने वाली है और अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी का ज़रिया है। (नसाई)

﴿258﴾ عَنْ اَبِی اُمَامَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَاجَاءَ نِیْ جِبْرِیْلُ عَلَیْهِ السَّلَامُ قَطُّ اِلَّا اَمَرَنِیْ بِالسِّوَاكِ، لَقَدْ خَشِیْتُ اَنْ اُحْفِیَ مُقَدَّمَ فِیَّ. رواه احمد ٥/٢٦٣

258. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी जिबरील अ़लैहिस्सलाम मेरे पास आए, मुझे मिस्वाक करने की ताकीद की, यहां तक कि मुझे अंदेशा होने लगा कि मिस्वाक ज़्यादा करने की वजह से मैं अपने मसूढ़ों को छील न डालूं। (मुस्नद अहमद)

﴿259﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ كَانَ لَا يَرْقُدُ مِنْ لَيْلٍ وَلَا نَهَارٍ فَيَسْتَيْقِظُ اِلَّا يَتَسَوَّكُ قَبْلَ اَنْ يَتَوَضَّا. رواه ابو داؤد، باب السواك لمن قام بالليل، رقم:٥٧

259. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ दिन या रात में जब भी सोकर उठते, तो वुज़ू करने से पहले मिस्वाक ज़रूर फ़रमाते। (अबूदाऊद)

﴿260﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا تَسَوَّكَ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّی قَامَ الْمَلَكُ خَلْفَهُ فَيَسْتَمِعُ لِقِرَاءَتِهِ فَيَدْنُوْ مِنْهُ۔ اَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا۔ حَتّٰى يَضَعَ فَاهُ عَلٰى فِيْهِ، فَمَا يَخْرُجُ مِنْ فِيْهِ شَیْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ اِلَّا صَارَ فِیْ جَوْفِ الْمَلَكِ، فَطَهِّرُوا اَفْوَاهَكُمْ لِلْقُرْآنِ. رواه البزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٢٦٥

260. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा मिस्वाक करके नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो फ़रिश्ता उसके पीछे खड़ा हो जाता है और उसकी तिलावत ख़ूब ध्यान से सुनता है, फिर उसके बहुत क़रीब आ जाता है, यहां तक कि उसके मुंह पर अपना मुंह रख देता है। क़ुरआन मजीद का जो भी लफ़्ज़ उस नमाज़ी के मुंह से निकलता है, सीधा फ़रिश्ते के पेट में पहुंचता है (और इस तरह यह फ़रिश्तों का महबूब बन जाता है) इसलिए तुम अपने मुंह क़ुरआन मजीद की तिलावत के लिए साफ़-सुथरे रखो, यानी मिस्वाक का एहतमाम करो। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾261﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رَكْعَتَانِ بِسِوَاكٍ أَفْضَلُ مِنْ سَبْعِيْنَ رَكْعَةً بِغَيْرِ سِوَاكٍ. رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٦٣

261. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मिस्वाक करके दो रकअ़तें पढ़ना बग़ैर मिस्वाक किए सत्तर रकअ़तें पढ़ने से अफ़ज़ल है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾262﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ لِيَتَهَجَّدَ، يَشُوْصُ فَاهُ بِالسِّوَاكِ. رواه مسلم، باب السواك، رقم: ٥٩٣

262. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब तहज्जुद के लिए उठते तो मिस्वाक से अपने मुंह को अच्छी तरह रगड़ कर साफ़ करते। (मुस्लिम)

﴾263﴿ عَنْ شُرَيْحٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، قُلْتُ: بِأَيِّ شَيْءٍ كَانَ يَبْدَأُ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ؟ قَالَتْ: بِالسِّوَاكِ. رواه مسلم، باب السواك، رقم: ٥٩٠

263. हज़रत शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैह फ़रमाते हैं मैंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पूछा कि नबी करीम ﷺ जब घर में तशरीफ़ लाते, तो सबसे पहले क्या काम करते? उन्होंने फ़रमाया : सबसे पहले आप मिस्वाक करते थे। (मुस्लिम)

﴾264﴿ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ لِشَيْءٍ مِنَ الصَّلَوَاتِ حَتّٰى يَسْتَاكَ.

رواه الطبراني في الكبير و رجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٦٦

264. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ अपने घर से किसी नमाज़ के लिए उस वक़्त तक नहीं निकलते थे, जब तक मिस्वाक न फ़रमा लेते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾265﴿ عَنْ أَبِي خَيْرَةَ الصُّبَاحِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ فِي الْوَفْدِ الَّذِيْنَ أَتَوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَزَوَّدَنَا الْأَرَاكَ نَسْتَاكُ بِهِ، فَقُلْنَا: يَارَسُوْلَ اللهِ عِنْدَنَا الْجَرِيْدُ، وَلٰكِنَّا نَقْبَلُ كَرَامَتَكَ وَعَطِيَّتَكَ. (الحديث) رواه الطبراني في الكبير و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٦٨

265. हज़रत अबू ख़ैरा सुबाही ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं उस वफ़्द में शामिल था जो

रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था। आप ﷺ ने हमें पीलू के दरख़्त की लकड़ियां मिस्वाक करने के लिए तोशा में दीं। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमारे पास (मिस्वाक के लिए) खजूर के दरख़्त की टहनियां मौजूद हैं, लेकिन हम आपके इस इकराम और अ़तिय्या को क़ुबूल करते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

मस्जिद के फ़ज़ाइल व आमाल

कुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ﴾

[التوبة:١٨]

अल्लाह तआला की मस्जिदों को आबाद करना उन्हीं लोगों का काम है, जो अल्लाह तआला पर, क़ियामत के दिन पर ईमान लाए और जिसने नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात दी और (अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल किया कि) सिवाए अल्लाह तआला के किसी और से न डरे। ऐसे लोगों के बारे में उम्मीद है कि ये लोग हिदायत पाने वालों में से होंगे, यानी अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत देने का वादा फ़रमाया है। (तौबा : 18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فِىْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ لا يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ رِجَالٌ لا لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ لا يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ﴾ [النور:٣٦،٣٧]

(अल्लाह तआला ने हिदायत वालों का हाल ब्यान फ़रमाया कि) वे ऐसे घरों में जाकर इबादत किया करते हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि उन घरों का अदब किया जाए और उनमें अल्लाह तआला का नाम

लिया जाए। उन घरों में ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह तआला की पाकी ब्यान करते हैं, जिन्हें अल्लाह तआला की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न किसी क़िस्म की ख़रीद ग़ाफ़िल करती है, न किसी क़िस्म की फ़रोख़्त, वे लोग ऐसे दिन यानी क़ियामत से डरते रहते हैं, जिस दिन बहुत से दिल पलट जाएंगे और बहुत-सी आंखें उलट जाएंगी।(नूर : 37-38)

फ़ायदा : उन घरों से मुराद मस्जिदें हैं और उनका अदब यह है कि उनमें जनाबत की हालत में दाख़िल न हुआ जाए, कोई नापाक चीज़ दाख़िल न की जाए, शोर न मचाया जाए, दुनिया के काम और दुनिया की बातें न की जाएं, बदबूदार चीज़ खा कर न जाया जाए।

(ब्यानुल क़ुरआन)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿266﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَحَبُّ الْبِلَادِ اِلَى اللهِ تَعَالٰى مَسَاجِدُهَا، وَاَبْغَضُ الْبِلَادِ اِلَى اللهِ اَسْوَاقُهَا.

رواہ مسلم، باب فضل الجلوس فی مصلاہ......رقم:١٥٢٨

266. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला को सब जगहों से ज़्यादा महबूब मस्जिद हैं और सबसे ज़्यादा नापसन्द जगहें बाज़ार हैं। (मुस्लिम)

﴿267﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اَلْمَسَاجِدُ بُيُوْتُ اللهِ فِي الْاَرْضِ تُضِيْءُ لِاَهْلِ السَّمَاءِ كَمَا تُضِيْءُ نُجُوْمُ السَّمَاءِ لِاَهْلِ الْاَرْضِ.

رواہ الطبرانی فی الکبیر ورجالہ موثقون، مجمع الزوائد٢/١١٠

267. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि मस्जिदें ज़मीन में अल्लाह तआला के घर हैं। ये आसमान वालों के लिए ऐसे चमकती हैं, जैसा कि ज़मीन वालों के लिए आसमान के सितारे चमकते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿268﴾ عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ:

مَنْ بَنٰى مَسْجِدًا يُذْكَرُ فِيْهِ اسْمُ اللهِ، بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤/٤٨٦

268. हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने कोई मस्जिद बनाई जिसमें अल्लाह तआ़ला का नाम लिया जाता हो तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में एक महल बना देते हैं।

(इब्ने हब्बान)

﴿269﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَدَا اِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ اَعَدَّ اللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا اَوْ رَاحَ.

رواه البخاري، باب فضل من غدا الى المسجد.....،رقم:٦٦٢

269. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम मस्जिद जाता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में मेहमानी का इंतज़ाम फ़रमाते हैं, जितनी मर्तबा सुबह या शाम मस्जिद जाता है, उतनी ही मर्तबा अल्लाह तआ़ला उसके लिए मेहमानी का इंतज़ाम फ़रमाते हैं।

(बुख़ारी)

﴿270﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْغُدُوُّ وَالرَّوَاحُ اِلَى الْمَسْجِدِ مِنَ الْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ.

رواه الطبراني في الكبير، وفيه: القاسم ابو عبد الرحمن ثقة وفيه اختلاف، مجمع الزوائد ٢/١٤٧

270. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुबह और शाम मस्जिद जाना अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने में दाख़िल है।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿271﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ كَانَ اِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ قَالَ: اَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ قَالَ: اَقَطْ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، فَاِذَا قَالَ ذٰلِكَ، قَالَ الشَّيْطَانُ: حُفِظَ مِنِّيْ سَائِرَ الْيَوْمِ.

رواه ابو داؤد، باب ما يقول الرجل عند دخوله المسجد، رقم:٤٦٦

271. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब मस्जिद में दाख़िल होते, तो यह दुआ पढ़ते (अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीमि व

बिवज्हिहिल करीमि व सुल्तानिहिल क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम०) ''मैं अ़ज़मत वाले अल्लाह की और उसकी करीम ज़ात की और उसकी न ख़त्म होने वाली बादशाहत की पनाह लेता हूं , शैतान मरदूद से'' जब यह दुआ़ पढ़ी जाती है, तो शैतान कहता है मुझसे (यह शख़्स) पूरे दिन के लिए महफ़ूज़ हो गया। (अबूदाऊद)

﴿272﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ اَلِفَ الْمَسْجِدَ اَلِفَہُ اللّٰہُ. رواہ الطبرانی فی الاوسط وفیہ: ابن لھیعة وفیہ کلام، مجمع الزوائد۲/۱۳۵

272. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मस्जिद से मुहब्बत रखता है, अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत फ़रमाते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿273﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: الْمَسْجِدُ بَیْتُ کُلِّ تَقِیٍّ، وَتَکَفَّلَ اللّٰہُ لِمَنْ کَانَ الْمَسْجِدُ بَیْتَہُ بِالرَّوْحِ وَالرَّحْمَةِ، وَالْجَوَازِ عَلَی الصِّرَاطِ اِلٰی رِضْوَانِ اللّٰہِ اِلَی الْجَنَّةِ. رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط والبزار وقال: اسنادہ حسن، قلت: ورجال البزار کلھم رجال الصحیح، مجمع الزوائد۲/۱۳۴

273. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है और अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मा लिया है कि जिसका घर मस्जिद हो, उसे राहत दूंगा; उस पर रहमत करूंगा; पुल सिरात का रास्ता आसान कर दूंगा, अपनी रज़ा नसीब करूंगा और उसे जन्नत अ़ता करूंगा। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿274﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ نَبِیَّ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الشَّیْطَانَ ذِئْبُ الْاِنْسَانِ، کَذِئْبِ الْغَنَمِ، یَاْخُذُ الشَّاةَ الْقَاصِیَةَ وَالنَّاحِیَةَ، فَاِیَّاکُمْ وَالشِّعَابَ، وَعَلَیْکُمْ بِالْجَمَاعَةِ وَالْعَامَّةِ وَالْمَسْجِدِ. رواہ احمد۵/۲۳۲

274. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : शैतान इंसान का भेड़िया है, बकरियों के भेड़िये की तरह कि वह हर ऐसी बकरी को पकड़ लेता है जो रेवड़ से दूर हो, अलग-थलग हो, इसलिए घाटियों में अलाहिदा ठहरने से बचो। इज्तिमाइय्यत को, आम लोगों में रहने को और मस्जिद को लाज़िम पकड़ो। (मुस्नद अहमद)

﴿275﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا رَاَیْتُمُ الرَّجُلَ یَعْتَادُ الْمَسْجِدَ فَاشْهَدُوا لَهٗ بِالْاِیْمَانِ، قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: ﴿اِنَّمَا یَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ﴾ رواه الترمذی و قال: هذا حدیث حسن غریب، باب ومن سورة التوبة،رقم:٣٠٩٣

275. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम किसी को बकसरत मस्जिद में आने वाला देखो तो उसके ईमानदार होने की गवाही दो। अल्लाह तआला का इर्शाद है तजुर्मा : 'मस्जिदों को वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं।' (तिर्मिज़ी)

﴿276﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا تَوَطَّنَ رَجُلٌ مُسْلِمٌ الْمَسَاجِدَ لِلصَّلَاةِ وَالذِّكْرِ، اِلَّا تَبَشْبَشَ اللّٰهُ لَهٗ كَمَا یَتَبَشْبَشُ اَهْلُ الْغَائِبِ بِغَائِبِهِمْ، اِذَا قَدِمَ عَلَیْهِمْ. رواه ابن ماجه، باب لزوم المساجد وانتظار الصلوة،رقم:٨٠٠

276. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान नमाज़ और अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए मस्जिद को अपना ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह तआला उससे ऐसे ख़ुश होते हैं, जैसे घर के लोग अपने किसी घर वाले के वापस आने पर ख़ुश होते हैं। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : मस्जिद को ठिकाना बना लेने से मुराद मस्जिद से ख़ुसूसी ताल्लुक़ और मस्जिदों में कसरत से आना है।

﴿277﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ كَانَ یُوَطِّنُ الْمَسَاجِدَ فَشَغَلَهٗ اَمْرٌ اَوْ عِلَّةٌ، ثُمَّ عَادَ اِلٰی مَا كَانَ، اِلَّا تَبَشْبَشَ اللّٰهُ اِلَیْهِ كَمَا یَتَبَشْبَشُ اَهْلُ الْغَائِبِ بِغَائِبِهِمْ اِذَا قَدِمَ. رواه ابن خزیمة ١/١٨٦

277. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मस्जिदों को ठिकाना बनाया हुआ था, यानी मस्जिद में कसरत से आता जाता था फिर वह किसी काम में मशग़ूल हो गया या बीमारी की वजह से रुक गया, फिर दोबारा मस्जिद को उसी तरह ठिकाना बना लिया, तो अल्लाह तआला उसे देखकर ऐसे ख़ुश होते हैं, जैसे कि घर के लोग अपने किसी घर वाले के वापस आने पर ख़ुश होते हैं। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿278﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ لِلْمَسَاجِدِ اَوْتَادًا،

الْمَلَائِكَةُ جُلَسَاؤُهُمْ، اِنْ غَابُوا يَفْتَقِدُونَهُمْ، وَاِنْ مَرِضُوا عَادُوهُمْ، وَاِنْ كَانُوا فِيْ حَاجَةٍ اَعَانُوهُمْ وَقَالَ ﷺ: جَلِيْسُ الْمَسْجِدِ عَلٰى ثَلَاثِ خِصَالٍ: اَخٍ مُسْتَفَادٍ، اَوْ كَلِمَةٍ مُحْكَمَةٍ، اَوْرَحْمَةٍ مُنْتَظَرَةٍ. رواه احمد ٢/٤١٨

278. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग कसरत से मस्जिदों में जमा रहते हैं वे मस्जिदों के खूंटे हैं। फ़रिश्ते उनके साथ बैठते हैं। अगर वे मस्जिदों में मौजूद न हों तो फ़रिश्ते उन्हें तलाश करते हैं। अगर वे बीमार हो जाएं तो फ़रिश्ते उनकी अ़यादत करते हैं। अगर वे किसी ज़रूरत के लिए जाएं तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। आप ﷺ ने ये भी इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद में बैठने वाला तीन फ़ायदों में से एक फ़ायदा हासिल करता है। किसी भाई से मुलाक़ात होती है जिससे कोई दीनी फ़ायदा हो जाता है या कोई हिकमत की बात सुनने को मिल जाती है या अल्लाह तआ़ला की रहमत मिल जाती है जिसका हर मुसलमान को इंतज़ार रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴿279﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : اَمَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِبِنَاءِ الْمَسَاجِدِ فِي الدُّوْرِ، وَاَنْ تُنَظَّفَ وَتُطَيَّبَ. رواه ابو داؤد، باب اتخاذ المساجد فى الدور، رقم ٤٥٥

279. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने महल्लों में मस्जिदों के बनाने का हुक्म फ़रमाया और इस बात का भी हुक्म फ़रमाया : मस्जिदों को साफ़ सुथरा रखा जाए और उनमें खुशबू बसाई जाए। (अबूदाऊद)

﴿280﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ امْرَاَةً كَانَتْ تَلْقُطُ الْقَذٰى مِنَ الْمَسْجِدِ فَتُوُفِّيَتْ فَلَمْ يُؤْذَنِ النَّبِيُّ ﷺ بِدَفْنِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : اِذَا مَاتَ لَكُمْ مَيِّتٌ فَآذِنُونِي، وَصَلّٰى عَلَيْهَا، وَقَالَ: اِنِّي رَاَيْتُهَا فِي الْجَنَّةِ لِمَا كَانَتْ تَلْقُطُ الْقَذٰى مِنَ الْمَسْجِدِ.

رواه الطبرانى فى الكبير و رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/١١٥

280. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि एक औरत मस्जिद से कूड़ा करकट उठाती थी। उसका इंतक़ाल हो गया। नबी करीम ﷺ को दफ़न करने की इत्तिला नहीं दी गई। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी का इंतक़ाल हो जाए तो मुझे उसकी इत्तिला दे दिया करो। आप ﷺ ने उस औरत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और इर्शाद फ़रमाया : मैंने उसे जन्नत में देखा, इसलिए कि वह मस्जिद से कूड़ा-करकट उठाती थी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

हिन्दी किताबें – एक नज़र में

किताब का नाम	लेखक, अनुवादक	क़ीमत
क़ुरआन मजीन 101 (मुतर्जिम) सब्ज़	मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ जालन्धरी	130/-
मौत की याद	मौलाना मुहम्मद ज़करिया	20/-
रसूलुल्लाह सल्ल० की नातें व सलाम	हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार साहब	20/-
ख़्वाब की शरअी हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
नेक बीवी	मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०	8/-
सुबह का सितारा	मुहम्मद नसीम अहमद	15/-
इस्लामी नाम	जनाब हसन दीन साहब	40/-
अमलियात व तावीज़ाते सुब्हानी	मसाहिब अली हनफ़ी चिश्ती	36/-
किताबुल हज (मसाइल व मुख़्तसर तरीक़ा)	मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी	40/-
शौहर के हुक़ूक़ और उसकी हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	14/-
वज़ाइफ़ व अमलियाते रहमानी यानी अमलियाते मुहब्बत	अशफ़ाक हसन ख़ाँ	36/-
मर्दों और औरतों के मख़्सूस मसाइल	अताउर्रहमान साहब	10/-
वादा ख़िलाफ़ी और उसकी राइज सूरतें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
अपनी फ़िक्र करें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
बीवी के हुक़ूक़ और उसकी शरअी हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	15/-
रजब का महीना	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	5/-
मुकम्मल नमाज़ मअ् छः नमाज़	मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी	6/-
मुसलमान ख़ाविन्द	मौलाना इदरीस अंसारी	20/-
दीन की हक़ीक़त तस्लीम व रज़ा	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	8/-
सलाम करने के आदाब	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	5/-
ज़बान की हिफ़ाज़त कीजिए	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
रोज़ा हमसे क्या मुतालिबा करता है?	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	7/-

इल्म व ज़िक्र

इल्म

अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह तआ़ला के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने की ग़रज़ से अल्लाह वाला इल्म हासिल करना, यानी इस बात की तहक़ीक़ करना कि अल्लाह तआ़ला मुझसे इस हाल में क्या चाहते हैं।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى ﴿كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ﴾ [البقرة ١٥١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जिस तरह (हमने काबा को क़िब्ला मुक़र्रर करके तुम पर अपनी नेमत को मुकम्मल किया, उसी तरह) हमने तुम लोगों में एक (अज़ीमुश्शान) रसूल भेजा, जो पाक करते हैं, तुमको क़ुरआन करीम की तालीम देते हैं, और इस क़ुरआन करीम की मुराद और अपनी सुन्नत और तरीक़े की (भी) तालीम देते हैं और तुमको ऐसी (मुफ़ीद) बातों की तालीम देते हैं, जिनकी तुमको ख़बर भी न थी। (बक़रः 151)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاَنْزَلَ اللهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ط وَكَانَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا﴾ [النساء:١١٣]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : अल्लाह तआ़ला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाईं और आपको वे बातें सिखाईं हैं, जो आप न जानते थे और आप पर अल्लाह तआ़ला का बड़ा फ़ज़्ल है। (निसा : 113)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا﴾ [طٰهٰ: ١١٤]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : और आप यह दुआ़ कीजिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म बढ़ा दीजिए। (ताहा : 114)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [النمل: ١٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और बिला शुब्हा हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अ़ता फ़रमाया और इस पर उन दोनों नबियों ने कहा कि सब तारीफ़ें उस अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत दी। (नमल : 115)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ﴾ [العنكبوت: ٤٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हम ये मिसालें लोागें के लिए ब्यान करते हैं, (लेकिन) अक़्ल से काम लेने वाले ही इल्म वाले हैं। (अंकबूत : 43)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾ [فاطر: ٢٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआ़ला से उनके वही बन्दे डरते हैं जो उनकी अ़ज़मत का इल्म रखते हैं। (फ़ातिर : 28)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾ [الزمر: ٩]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : आप कह दीजिए कि क्या इल्म वाले और बेइल्म बराबर हो सकते हैं? (ज़ुमर : 9)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ

﴿وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ﴾ [المجادلة:١١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब तुम से यह कहा जए कि मज्लिस में लोगों के बैठने के लिए गुंजाइश कर दो तो तुम आने वाले को जगह दे दिया करो, अल्लाह तआला तुमको जन्नत में खुली जगह देंगे। और जब किसी ज़रूरत की वजह से तुम्हें कहा जाए कि मज्लिस से उठ जाओ, तो उठ जाया करो, अल्लाह तआला (इस हुक्म को इसी तरह दूसरे हुक्मों को, मानने की वजह से) तुम में से ईमान वालों के, और जिन्हें इल्म (दीन) दिया गया है उनके दर्जे बुलन्द करेंगे और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह तआला उससे बाख़बर हैं। (मुजादलः 11)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴾ [البقرة ٤٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और सच में झुठ को न मिलाओ और जान-बूझ कर हक़ को यानी शरई हुक्मों को न छुपाओ। (बक़रः 42)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ﴾ [البقرة: ٤٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : क्या (ग़ज़ब है कि) तुम, लोगों को तो नेकी का हुक्म करते हो और अपनी ख़बर भी नहीं लेते, हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो (जिसका तक़ाज़ा यह था कि तुम इल्म पर अमल करते) तो फिर क्या तुम इतना भी नहीं समझते? (बक़रः 44)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ﴾ [هود: ٨٨]

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : (और मैं जिस तरह इन बातों की तुमको तालीम करता हूं, ख़ुद भी तो उसपर अमल करता हूं) और मैं यह नहीं चाहता कि जिस काम से तुम्हें मना करूं मैं ख़ुद उसे करूं। (हूद : 88)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ مَابَعَثَنِیَ اللّٰہُ مِنَ الْھُدٰی وَالْعِلْمِ کَمَثَلِ الْغَیْثِ الْکَثِیْرِ اَصَابَ اَرْضًا، فَکَانَ مِنْھَا نَقِیَّۃٌ، قَبِلَتِ الْمَاءَ، فَاَنْبَتَتِ الْکَلَا وَالْعُشْبَ الْکَثِیْرَ، وَکَانَتْ مِنْھَا اَجَادِبُ، اَمْسَکَتِ الْمَاءَ، فَنَفَعَ اللّٰہُ بِھَا النَّاسَ فَشَرِبُوْا وَسَقَوْا وَزَرَعُوْا، وَاَصَابَ مِنْھَا طَائِفَۃً اُخْرٰی، اِنَّمَا ھِیَ قِیْعَانٌ لَا تُمْسِکُ مَاءً وَلَا تُنْبِتُ کَلَاً، فَذٰلِکَ مَثَلُ مَنْ فَقُہَ فِیْ دِیْنِ اللّٰہِ وَ نَفَعَہُ مَا بَعَثَنِیَ اللّٰہُ بِہٖ فَعَلِمَ وَعَلَّمَ، وَ مَثَلُ مَنْ لَمْ یَرْفَعْ بِذٰلِکَ رَاْسًا وَلَمْ یَقْبَلْ ھُدَی اللّٰہِ الَّذِیْ اُرْسِلْتُ بِہٖ۔

رواہ البخاری، باب فضل من علم و علّم، رقم: ۷۹

1. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने मुझे जिस इल्म व हिदायत के साथ भेजा है उसकी मिसाल उस बारिश की तरह है जो किसी ज़मीन पर ख़ूब बरसे। (और जिस ज़मीन पर बारिश बरसी वह तीन तरह की थी।) 1. उसका एक टुकड़ा उम्दा था, जिसने पानी को अपने अंदर जज़्ब कर लिया, फिर ख़ूब घास और सब्ज़ा उगाया। 2. ज़मीन का एक (दूसरा) टुकड़ा सख़्त था (जिसने पानी को जज़्ब तो नहीं किया, लेकिन) उसके ऊपर पानी जमा हो गया, अल्लाह तआ़ला ने उससे भी लोगों को नफ़ा पहुंचाया। उन्होंने ख़ुद भी पिया, जानवरों को भी पिलाया और खेतों को भी सैराब किया 3. वह बारिश ज़मीन के ऐसे टुकड़ों पर भी बरसी जो चटयल मैदान ही थे, जिसने न पानी जमा किया और न ही घास उगाई।

(उसी तरह लोग भी तीन क़िस्म के होते हैं, पहली मिसाल) उस शख़्स की है जिसने दीन में समझ हासिल की और जिस हिदायत को दे कर अल्लाह तआ़ला ने मुझे भेजा है अल्लाह तआ़ला ने उसे उस हिदायत से नफ़ा पहुंचाया, उसने ख़ुद भी सीखा और दूसरों को भी सिखाया, (दूसरी मिसाल उस शख़्स की है जिसने ख़ुद तो फ़ायदा नहीं उठाया मगर दूसरे लोगों ने उससे फ़ायदा हासिल किया), (तीसरी मिसाल) उस शख़्स की है जिसने उसकी तरफ़ सर उठा कर भी न देखा और न अल्लाह तआ़ला की इस हिदायत को क़ुबूल किया जिसके साथ अल्लाह तआ़ला ने मुझे भेजा है। (बुख़ारी)

﴾ 2 ﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَ عَلَّمَهُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فی تعليم القرآن، رقم: ٢٩٠٧

2. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें सबसे बेहतर शख़्स वह है जो क़ुरआन शरीफ़ सीखे और सिखाए। (तिर्मिज़ी)

﴾ 3 ﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ الْاَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ وَ تَعَلَّمَهُ وَعَمِلَ بِهِ اُلْبِسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَاجًا مِنْ نُوْرٍ ضَوْؤُهُ مِثْلُ ضَوْءِ الشَّمْسِ، وَيُكْسٰى وَالِدَيْهِ حُلَّتَانِ لَا يَقُوْمُ بِهِمَا الدُّنْيَا، فَيَقُوْلَانِ بِمَا كُسِيْنَا هٰذَا؟ فَيُقَالُ بِاَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ.

رواه الحاكم و قال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٥٦٨/١

3. हज़रत बुरैदा अस्लमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़े, उसे सीखे और उस पर अ़मल करे, उसको क़ियामत के दिन ताज पहनाया जाएगा जो नूर का बना हुआ होगा, उसकी रौशनी सूरज की रौशनी की तरह होगी। उसके वालिदैन को ऐसे दो जोड़े पहनाए जाएंगे कि तमाम दुनिया उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। वे अ़र्ज़ करेंगे, ये जोड़े हमें किस वजह से पनाए गए? इर्शाद होगा : तुम्हारे बच्चे के क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने के बदले में। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾ 4 ﴿ عَنْ مُعَاذٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ، وَعَمِلَ بِمَا فِيْهِ اُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ضَوْئُهُ اَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ فِي بُيُوْتِ الدُّنْيَا، لَوْ كَانَتْ فِيْكُمْ فَمَا ظَنُّكُمْ بِالَّذِي عَمِلَ بِهٰذَا.

رواه ابوداؤد، باب فی ثواب قراءة القرآن، رقم: ١٤٥٣

4. हज़रत मुआ़ज़ जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़े और उस पर अ़मल करे, उसके वालिदैन को क़ियामत के दिन एक ताज पहनाया जाएगा जिसकी रौशनी सूरज की रौशनी से भी ज़्यादा होगी। फिर अगर वह सूरज तुम्हारें घरों में तुलू हो, (तो जितनी रौशनी वह फैलाएगा उस ताज की रोशनी उससे भी ज़्यादा होगी) तो तुम्हारा उस शख़्स के बारे में क्या गुमान है जो ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ पर अ़मल करने वाला हो, यानी जब वालिदैन के लिए यह इनाम है तो अ़मल करने वाले का इनाम उससे कहीं ज़्यादा होगा। (अबूदाऊद)

﴿ 5 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ فَقَدِ اسْتَدْرَجَ النُّبُوَّةَ بَيْنَ جَنْبَيْهِ غَيْرَ اَنَّهُ لَا يُوْحٰى اِلَيْهِ، لَا يَنْبَغِيْ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ اَنْ يَجِدَ مَعَ مَنْ وَجَدَ، وَلَا يَجْهَلَ مَعَ مَنْ جَهِلَ، وَفِيْ جَوْفِهٖ كَلَامُ اللهِ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد، الترغيب ٢/٣٥٢

5. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ा उसने उलूमे नुबुव्वत को अपने पसलियों के दर्मियान ले लिया, गो उसकी तरफ़ वह्य नहीं भेजी जाती। क़ुरआन के हाफ़िज़ के लिए मुनासिब नहीं कि ग़ुस्सा करने वालों के साथ ग़ुस्सा से पेश आए या जाहिलाना सूलुक करने वालों के साथ जिहालत का सुलूक करे, जबकि वह अपने अंदर अल्लाह तआ़ला का कलाम लिए हुए हैं। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴿ 6 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ: عِلْمٌ فِي الْقَلْبِ فَذَاكَ الْعِلْمُ النَّافِعُ، وَعِلْمٌ عَلَى اللِّسَانِ فَذَاكَ حُجَّةُ اللهِ عَلٰى ابْنِ آدَمَ.

رواه الحافظ ابوبكر الخطيب في تاريخه باسناد حسن، الترغيب ١/١٠٣

6. हज़रत जाबिर ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इल्म दो तरह का होता है। एक वह इल्म है जो दिल में उतर जाए, वही इल्म, नाफ़ेअ़ है और दूसरा वह इल्म है जो सिर्फ़ ज़बान पर हो यानी अ़मल और इख़्लास से ख़ाली हो तो वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इंसान के ख़िलाफ़ (उसके मुज्रिम होने की) दलील है, यानी यह इल्म इल्ज़ाम देगा कि जानने के बावजूद अ़मल क्यों नहीं किया। (तर्ग़ीब)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ: اَيُّكُمْ يُحِبُّ اَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ اِلٰى بُطْحَانَ اَوْ اِلَى الْعَقِيْقِ فَيَاْتِيَ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ، فِيْ غَيْرِ اِثْمٍ وَلَا قَطْعِ رَحِمٍ؟ فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! نُحِبُّ ذٰلِكَ قَالَ: اَفَلَا يَغْدُوْ اَحَدُكُمْ اِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمُ اَوْ يَقْرَاُ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ خَيْرٌ لَّهُ، مِنْ نَاقَتَيْنِ، وَ ثَلَاثٌ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ ثَلَاثٍ، وَاَرْبَعٌ خَيْرٌ لَّهُ مِنْ اَرْبَعٍ، وَمِنْ اَعْدَادِهِنَّ مِنَ الْاِبِلِ؟

رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن......رقم: ١٨٧٣

7. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए।

हम लोग सुफ़्फ़ा में बैठे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कौन शख़्स उसको पसन्द करता है कि रोज़ाना सुबह बाज़ारे बुतहान या अ़क़ीक़ में जाए और दो उम्दा ऊंटनियां बग़ैर किसी गुनाह (मसलन, चोरी वग़ैरह) और बग़ैर क़तारहमी के ले आए? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसको तो हम में से हर शख़्स पसन्द करेगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा सुबह के वक़्त मस्जिद में जाकर क़ुरआन की दो आयतों का सीखना या पढ़ना दो ऊंटनियों से, तीन आयतों का तीन ऊंटनियों से और चार का चार से अफ़ज़ल है और उनके बराबर ऊंटों से अफ़ज़ल है।

(मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस का मतलब यह है कि आयतों की तादाद ऊंटनियों और ऊंटों की तादाद से अफ़ज़ल है, मसलन एक आयत एक ऊंटनी, एक ऊंट दोनों से अफ़ज़ल है।

﴿ 8 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ، وَاِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللهُ يُعْطِي.

(الحديث) رواه البخارى، باب من يرد الله به خيرا ـ رقم: ٧١

8. हज़रत मुआ़विया رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमाते हैं। मैं तो सिर्फ़ तक़सीम करने वाला हूं, जबकि अल्लाह तआ़ला अ़ता करने वाले हैं। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के दूसरे जुमले का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ इल्म के तक़सीम करने वाले हैं और अल्लाह तआ़ला उस इल्म की समझ, उस में ग़ौर व फ़िक्र और उसके मुताबिक़ अ़मल की तौफ़ीक़ देने वाले हैं।

(मिरक़ात)

﴿ 9 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَمَّنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ عَلِّمْهُ الْكِتَابَ.

رواه البخارى، باب قول النبى ﷺ اللهم علمه الكتاب، رقم: ٧٥

9. हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे अपने सीने से लगाया और यह दुआ़ दी : या अल्लाह! इसे क़ुरआन का इल्म अ़ता फ़रमा दीजिए। (बुख़ारी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اَشْرَاطِ السَّاعَةِ اَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ، وَيَثْبُتَ الْجَهْلُ، وَيُشْرَبَ الْخَمْرُ، وَ يَظْهَرَ الزِّنَا۔

رواه البخاری،باب رفع العلم وظهور الجهل، رقم: ٨٠

10. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत की अलामतों में से यह है कि इल्म उठा लिया जाएगा, जिहालत आ जाएगी, शराब (खुल्लम खुल्ला) पी जाएगी और ज़िना फैल जाएगा। (बुख़ारी)

﴿ 11 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَيْنَا اَنَا نَائِمٌ اُتِيْتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتّٰى اِنِّيْ لَاَرَى الرِّيَّ يَخْرُجُ فِيْ اَظَافِيْرِيْ، ثُمَّ اَعْطَيْتُ فَضْلِيْ يَعْنِيْ عُمَرَ قَالُوْا: فَمَا اَوَّلْتَهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْعِلْمَ.

رواه البخاری، باب اللبن، رقم: ٧٠٠٦

11. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं एक मर्तबा सो रहा था कि (इसी हालत में) मुझे दूध का प्याला पेश किया गया। मैंने उससे इतना पिया कि मैं अपने नाख़ूनों तक से सैराबी (के आसार) निकलते हुए महसूस कर रहा था। फिर मैंने अपना बचा हुआ दूध उमर को दिया। सहाबा ﷺ ने दरयाफ़्त किया, आपने उसकी क्या ताबीर की? इर्शाद फ़रमाया : इल्म। यानी उमर ﷺ को रसूलुल्लाह ﷺ के उलूम में से भरपूर हिस्सा मिलेगा। (बुख़ारी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: لَنْ يَشْبَعَ الْمُؤْمِنُ مِنْ خَيْرٍ يَسْمَعُهُ، حَتّٰى يَكُوْنَ مُنْتَهَاهُ الْجَنَّةُ.

رواه الترمذی و قال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی فضل الفقه على العبادة،رقم: ٢٦٨٦

12. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन भलाई (यानी इल्म) से कभी सैर नहीं होता। वह इल्म की बातों को सुन कर सीखता रहता है (यहां तक कि उसे मौत आ जाती है) और जन्नत में दाख़िल हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 13 ﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا اَبَا ذَرٍّ! لَاَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ، خَيْرٌ لَّكَ مِنْ اَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ، وَ لَاَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ بَابًا مِنَ الْعِلْمِ، عُمِلَ بِهِ اَوْ لَمْ يُعْمَلْ، خَيْرٌ مِنْ اَنْ تُصَلِّيَ اَلْفَ رَكْعَةٍ.

رواه ابن ماجه، باب فضل من تعلم القرآن وعلمه، رقم: ٢١٩

13. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! अगर तुम सुबह जाकर एक आयत कलामुल्लाह शरीफ़ की सीख लो, तो नफ़्लों की सौ रकअ़त से अफ़ज़ल है और अगर एक बाब इल्म का सीख लो ख़्वाह वह उस वक़्त का अ़मल हो या न हो (मसलन तयम्मुम के मसाइल) तो हज़ार रकअ़त नफ़्ल पढ़ने से बेहतर है। (इब्ने माजा)

﴿ 14 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ جَاءَ مَسْجِدِیْ هٰذَا، لَمْ يَاْتِهِ اِلَّا لِخَيْرٍ يَتَعَلَّمُهُ اَوْ يُعَلِّمُهُ، فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ، وَمَنْ جَاءَ لِغَيْرِ ذٰلِكَ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ يَنْظُرُ اِلٰى مَتَاعِ غَيْرِهِ.

رواه ابن ماجه، باب فضل العلماء......رقم: ٢٢٧

14. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मेरी इस मस्जिद यानी मस्जिदे नब्वी में सिर्फ़ किसी ख़ैर की बात को सिखाने या सीखाने के लिए आए, तो वह (सवाब में) अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने वाले के दर्जे में है और जो उसके अलावा किसी और ग़रज़ से आए तो वह उस शख़्स की तरह है, जो दूसरे के साज़ व सामान को देख रहा हो (और ज़ाहिर है कि दूसरे की चीज़ों को देखने से अपना कोई फ़ायदा नहीं)। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में मज़्कूरा फ़ज़ीलत तमाम मस्जिद के लिए है क्योंकि मस्जिदें, मस्जिदे नब्वी की ताबेअ़ हैं। (इनजाहुल हाजः)

﴿ 15 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ يَقُوْلُ: خَيْرُكُمْ اَحَاسِنُكُمْ اَخْلَاقًا اِذَا فَقِهُوْا. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط مسلم ١/٢٩٤

15. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अबू क़ासिम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें सबसे बेहतर वे लोग हैं, जो तुममें सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं जब कि साथ-साथ उनमें दीन की समझ भी हो। (इब्ने हब्बान)

﴿ 16 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: النَّاسُ مَعَادِنُ كَمَعَادِنِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، فَخِيَارُهُمْ فِی الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِی الْاِسْلَامِ اِذَا فَقِهُوا.

(الحديث) رواه احمد ٢/٥٣٩

16. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : लोग खानों की तरह हैं जिस तरह सोने चांदी की खानें होती हैं। जो लोग इस्लाम लाने से पहले बेहतर रहे, वे लोग इस्लाम के ज़माने में भी बेहतर हैं, जबकि उनमें दीन की समझ हो। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में इंसानों को खानों के साथ तशबीह दी गई है। जिस तरह मुख़्तलिफ़ खानों में मुख़्तलिफ़ मादनियात होती हैं। बाज़ ज़्यादा क़ीमती, जैसे सोना चांदी, बाज़ कम क़ीमती जैसे चूना और कोयला। इसी तरह मुख़्तलिफ़ इंसानों में मुख़्तलिफ़ आदतें व सिफ़तें होती हैं, जिनकी वजह से बाज़ ऊंचे दर्जे के होते हैं और बाज़ कम दर्जे के होते हैं। फिर जिस तरह सोना चांदी जब तक खान में पड़ा रहता है उसकी क़ीमत वह नहीं होती जो खान से निकलने के बाद होती है इसी तरह जब तक आदमी कुफ़्र की ज़ुलमत में छुपा रहता है, ख़्वाह उसके अन्दर कितनी ही सख़ावत हो, कितनी ही शुजाअत हो, उसकी वह क़ीमत नहीं होती जो इस्लाम लाने के बाद दीन की समझ-बूझ हासिल कर लेने से होती है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَدَا اِلَی الْمَسْجِدِ لَا یُرِیْدُ اِلَّا اَنْ یَتَعَلَّمَ خَیْرًا، اَوْ یُعَلِّمَهُ، کَانَ لَهُ کَاَجْرِ حَاجٍّ تَامًّا حَجَّتَهُ.

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله موثقون کلهم، مجمع الزوائد ۱/۳۲۹

17. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ख़ैर की बात सीखने या सिखाने के लिए मस्जिद जाए, तो उसका सवाब उस हाजी के सवाब की तरह है जिसका हज कामिल हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 18 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: عَلِّمُوْا وَیَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا.

(الحدیث) رواه احمد ۱/۲۸۳

18. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को (दीन) सिखाओ, उन के साथ आसानी का बरताव करो और सख़्ती का बरताव न करो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ مَرَّ بِسُوْقِ الْمَدِیْنَةِ فَوَقَفَ عَلَیْهَا وَقَالَ: یَا اَهْلَ السُّوْقِ مَا اَعْجَزَکُمْ؟ قَالُوْا: وَمَا ذَاکَ یَا اَبَا هُرَیْرَةَ؟ قَالَ: ذَاکَ مِیْرَاثُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ یُقَسَّمُ، وَاَنْتُمْ هٰهُنَا، اَلَا تَذْهَبُوْنَ فَتَاْخُذُوْنَ نَصِیْبَکُمْ مِنْهُ؟ قَالُوْا: وَاَیْنَ هُوَ؟ قَالَ: فِی الْمَسْجِدِ،

فَخَرَجُوْا سِرَاعًا، وَوَقَفَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ لَهُمْ حَتّٰى رَجَعُوا، فَقَالَ لَهُمْ: مَا لَكُمْ؟ قَالُوا: يَا اَبَا هُرَيْرَةَ! فَقَدْ اَتَيْنَا الْمَسْجِدَ فَدَخَلْنَا فَلَمْ نَرَ فِيْهِ شَيْئًا يُقَسَّمُ! فَقَالَ لَهُمْ اَبُوْهُرَيْرَةَ: وَمَارَاَيْتُمْ فِي الْمَسْجِدِ اَحَدًا؟ قَالُوْا: بَلٰى! رَاَيْنَا قَوْمًا يُصَلُّوْنَ، وَقَوْمًا يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ، وَقَوْمًا يَتَذَاكَرُوْنَ الْحَلَالَ وَالْحَرَامَ، فَقَالَ لَهُمْ اَبُوْ هُرَيْرَةَ: وَيْحَكُمْ فَذَاكَ مِيْرَاثُ مُحَمَّدٍ ﷺ

رواه الطبراني في الاوسط واسناده حسن، مجمع الزوائد ١/٣٣١

19. हज़रत अबू हुरैरह ؓ एक मर्तबा मदीना के बाज़ार से गुज़रते हुए ठहर गए और फ़रमाया : बाज़ार वालो! तुम्हें किस चीज़ ने आजिज़ बना दिया है? लोगों ने पूछा : अबू हुरैरह क्या बात है? आप ؓ ने फ़रमाया : तुम यहां बैठे हो और रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास तक़सीम हो रही है। क्या तुम जाकर रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास से अपना हिस्सा लेना नहीं चाहते? लोगों ने पूछा : रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास कहां तक़सीम हो रही है? आपने फ़रमाया : मस्जिद में। लोग दौड़े हुए मस्जिद में गए। अबू हुरैरह ؓ लोगों के वापस आने के इंतज़ार में वहीं ठहरे रहे, यहां तक कि लोग वापस आ गए। आप ؓ ने पूछा : क्या बात हुई कि तुम वापस आ गए? उन्होंने अ़र्ज़ किया : अबू हुरैरह हम मस्जिद गए, जब हम मस्जिद में दाख़िल हुए तो हमने वहां कोई चीज़ तक़सीम होती हुई नहीं देखी। हज़रत अबू हुरैरह ؓ ने उनसे पूछा तुमने मस्जिद में किसी को नहीं देखा? उन्होंने अ़र्ज़ किया : जी हां, हमने कुछ लोगों को देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ लोग क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे और कुछ लोग हलाल व हराम का मुज़ाकरा कर रहे थे। हज़रत अबू हुरैरह ؓ ने फ़रमाया : तुम पर अफ़सोस है, यही तो रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास है।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ يَعْنِى ابْنَ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا اَرَادَ اللهُ بِعَبْدٍ خَيْرًا فَقَّهَهُ فِى الدِّيْنِ، وَاَلْهَمَهُ رُشْدَهُ.

رواه البزار والطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٢٧

20. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, तो उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमाते हैं और सही बात उसके दिल में डालते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَبِیْ وَاقِدِ اللَّیْثِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ بَیْنَمَا ھُوَجَالِسٌ فِی الْمَسْجِدِ وَالنَّاسُ مَعَہٗ اِذْ اَقْبَلَ ثَلَاثَۃُ نَفَرٍ، فَاَقْبَلَ اِثْنَانِ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ وَذَھَبَ وَاحِدٌ، قَالَ: فَوَقَفَا عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ فَاَمَّا اَحَدُھُمَا فَرَاٰی فُرْجَۃً فِی الْحَلْقَۃِ فَجَلَسَ فِیْھَا، وَ اَمَّا الْاٰخَرُ فَجَلَسَ خَلْفَھُمْ، وَاَمَّا الثَّالِثُ فَاَدْبَرَ ذَاھِبًا فَلَمَّا فَرَغَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اَلَا اُخْبِرُکُمْ عَلَی النَّفَرِ الثَّلَاثَۃِ؟ اَمَّا اَحَدُھُمْ فَاَوٰی اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی فَاٰوَاہُ اللّٰہُ اِلَیْہِ، وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَاسْتَحْیَا فَاسْتَحْیَا اللّٰہُ مِنْہُ، وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَاَعْرَضَ فَاَعْرَضَ اللّٰہُ عَنْہُ۔

رواہ البخاری، باب من قعد حیث ینتھی بہ المجلس......،رقم:٦٦

21. हज़रत अबू वाक़िद लैसी ﷺ से रिवायत है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और लोग भी आपके पास मौजूद थे। इतने में तीन आदमी आए, दो रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ मुतवज्जह हुए और एक चला गया। वे दोनों रसूलुल्लाह ﷺ के पास खड़े हो गए। उनमें से एक साहब को हल्क़ा में ख़ाली जगह नज़र आई, वह उस जगह बैठ गए, दूसरे साहब लोगों के पीछे बैठ गए और तीसरा आदमी (जैसा के ऊपर गुज़रा) पुश्त फेर कर चला गया। जब रसूलुल्लाह ﷺ हल्क़ा से फ़ारिग़ हुए तो इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उन तीन आदमियों के बारे में न बतलाऊं? एक ने तो अल्लाह तआला के पास अपनी जगह बनाई, यानी हल्क़े में बैठ गया तो अल्लाह तआला ने उसे (अपनी रहमत में) जगह दे दी। दूसरे ने (हल्क़े के अन्दर बैठने में) शर्म महसूस की तो अल्लाह तआला ने भी उसके साथ हया का मामला फ़रमाया, यानी अपनी रहमत से महरूम न फ़रमाया और तीसरे ने बेरुख़ी की, अल्लाह तआला ने भी उससे बेरुख़ी का मामला फ़रमाया। (बुख़ारी)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِیْ ھَارُوْنَ الْعَبْدِیِّ رَحِمَہُ اللّٰہُ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: یَاْتِیْکُمْ رِجَالٌ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ یَتَعَلَّمُوْنَ، فَاِذَا جَاؤُوْکُمْ فَاسْتَوْصُوْا بِھِمْ خَیْرًا قَالَ: فَکَانَ اَبُوْسَعِیْدٍ اِذَا رَآنَا قَالَ: مَرْحَبًا بِوَصِیَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ۔

رواہ الترمذی، باب ماجاء فی الاستیصاء......، رقم: ٢٦٥١

22. हज़रत अबू हारून अ़बदी रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० ने नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाया : तुम्हारे पास लोग मश्रिक़ की जानिब से दीन का इल्म सीखने आएंगे। लिहाज़ा जब वे तुम्हारे पास आएं तो उनके साथ भलाई का मामला करना। हज़रत अबू सईद रज़ि० के शागिर्द अबू हारून अ़बदी कहते हैं कि जब हज़रत अबू सईद हमें देखते तो फ़रमाते : खुश

आमदीद उन लोगों को, जिनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें वसीयत फ़रमाई।
(तिर्मिज़ी)

﴿ 23 ﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ طَلَبَ عِلْمًا فَاَدْرَكَهُ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ كِفْلَيْنِ مِنَ الْاَجْرِ، وَ مَنْ طَلَبَ عِلْمًا فَلَمْ يُدْرِكْهُ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ كِفْلًا مِنَ الْاَجْرِ۔

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ۱/ ۳۳۰

23. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ् ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इल्म की तलाश में लगे, फिर उसको हासिल भी कर ले, तो अल्लाह तआला उसके लिए दो अज्र लिख देते हैं और जो शख़्स इल्म का तालिब हो, लेकिन उसको हासिल न कर सके, तो अल्लाह तआला उसके लिए एक अज्र लिख देते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 24 ﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ الْمُرَادِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَ هُوَ فِي الْمَسْجِدِ مُتَّكِئٌ عَلٰى بُرْدٍ لَهُ اَحْمَرَ، فَقُلْتُ لَهُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنِّيْ جِئْتُ اَطْلُبُ الْعِلْمَ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِطَالِبِ الْعِلْمِ، اِنَّ طَالِبَ الْعِلْمِ لَتَحُفُّهُ الْمَلَائِكَةُ بِاَجْنِحَتِهَا، ثُمَّ يَرْكَبُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا حَتّٰى يَبْلُغُوْا السَّمَاءَ الدُّنْيَا مِنْ مَحَبَّتِهِمْ لِمَا يَطْلُبُ۔

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۱/ ۳۴۳

24. हज़रत सफ़वान बिन अस्साल मुरादी ﷺ फ़रमाते हैं कि : मैं नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त अपनी सुर्ख़ धारियों वाली चादर पर टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं इल्म हासिल करने आया हूं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तालिबे इल्म को खुशआमदीद हो! तालिबे इल्म को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं और फिर इस कसरत से आकर ऊपर तले जमा होते रहते हैं कि आसमान तक पहुंच जाते हैं और वह उस इल्म की मुहब्बत की वजह से ऐसा करते हैं, जिसको यह तालिबे इल्म हासिल कर रहा है।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 25 ﴾ عَنْ ثَعْلَبَةَ بْنِ الْحَكَمِ الصَّحَابِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَقُوْلُ عَزَّوَجَلَّ لِلْعُلَمَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِذَا قَعَدَ عَلٰى كُرْسِيِّهِ لِفَصْلِ عِبَادِهِ: اِنِّيْ لَمْ اَجْعَلْ عِلْمِيْ وَحِلْمِيْ فِيْكُمْ اِلَّا وَ اَنَا اُرِيْدُ اَنْ اَغْفِرَ لَكُمْ عَلٰى مَا كَانَ فِيْكُمْ وَلَا اُبَالِيْ.

رواه الطبرانی فی الکبیر ورواته ثقات، الترغیب ۱/ ۱۰۱

25. हज़रत सालबा बिन हकम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला अपने बन्दों के दर्मियान फ़ैसले के लिए अपनी (शान के मुताबिक़) कुर्सी पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे, तो उलमा से फ़रमाएंगे : मैंने अपने इल्म और हिल्म यानी नर्मी और बरदाश्त से तुम्हें इसलिए नवाज़ा था कि मैं चाहता था कि तुम्हारी कोताहियों के बावजूद तुम से दरगुज़र करूं और मुझको उसकी कोई परवाह नहीं, यानी तुम चाहे कितने ही बड़े गुनाहगार हो, तुम्हें बख़्शना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنِّىْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَطْلُبُ فِيْهِ عِلْماً سَلَكَ اللهُ بِهٖ طَرِيْقًا مِنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ، وَاِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضًا لِطَالِبِ الْعِلْمِ، وَ اِنَّ الْعَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ، وَ الْحِيْتَانُ فِىْ جَوْفِ الْمَاءِ، وَاِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلٰى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ، وَاِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ، وَ اِنَّ الْاَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوْا دِيْنَارًا وَلَا دِرْهَمًا، وَرَّثُوْا الْعِلْمَ، فَمَنْ اَخَذَهٗ اَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ. رواه ابو داؤد، باب فى فضل العلم، رقم: ٣٦٤١

26. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इल्मे दीन हासिल करने के लिए किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चला देते हैं, यानी इल्म हासिल करना उसके लिए जन्नत में दाख़िले का एक सबब बन जाता है। फ़रिश्ते तालिबे इल्म की खुशनूदी के लिए अपने परों को बिछा देते हैं। आ़लिम के लिए आसमान व ज़मीन की सारी मख़्लूक़ात और मछलियां, जो पानी के अन्दर हैं सबकी सब मग़्फ़िरत की दुआ़ करती हैं। बिलाशुब्हा आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं रात के चांद को सारे सितारों पर फ़ज़ीलत है। बिलाशुब्हा उलमा अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के वारिस हैं और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम दीनार और दिरहम (माल व दौलत) का वारिस नहीं बनाते, वे तो इल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस शख़्स ने इल्मे दीन हासिल किया, उसने (इस मीरास में से) भरपूर हिस्सा लिया। (अबूदाऊद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: وَ مَوْتُ الْعَالِمِ مُصِيْبَةٌ لَا تُجْبَرُ وَ ثُلْمَةٌ لَا تُسَدُّ وَ هُوَ نَجْمٌ طُمِسَ، مَوْتُ قَبِيْلَةٍ اَيْسَرُ مِنْ مَوْتِ عَالِمٍ. (وهو بعض الحديث) رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢/٢٦٤

27. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आ़लिम की मौत ऐसी मुसीबत है जिसकी तलाफ़ी नहीं हो सकती और ऐसा नुक़सान है जो पूरा नहीं हो सकता और आ़लिम ऐसा सितारा है जो (मौत की वजह से) बेनूर हो गया। एक पूरे क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से कम दर्जे की है। (बैहक़ी)

﴾ 28 ﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِنَّ مَثَلَ الْعُلَمَاءِ كَمَثَلِ النُّجُوْمِ فِي السَّمَاءِ يُهْتَدٰى بِهَا فِيْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ، فَاِذَا انْطَمَسَتِ النُّجُوْمُ اَوْشَكَ اَنْ تَضِلَّ الْهُدَاةُ۔ رواه احمد ٣/١٥٧

28. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उलमा की मिसाल उन सितारों की तरह है जिनसे ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में रहनुमाई हासिल की जाती है। जब सितारे बेनूर हो जाते हैं तो इस बात का इम्कान होता है कि रास्ता चलने वाले भटक जाएं। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मुराद यह है कि उलमा के न होने से लोग गुमराह हो जाते हैं।

﴾ 29 ﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقِيْهٌ اَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ اَلْفِ عَابِدٍ۔

رواه الترمذی و قال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فی فضل الفقه على العبادة، رقم: ٢٦٨١

29. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक आ़लिमे दीन शैतान पर हज़ार आ़बिदों से ज़्यादा सख़्त है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि शैतान के लिए एक हज़ार आ़बिदों को धोखा देना आसान है, पूरे दीन की समझ रखने वाले एक आ़लिम को धोखा देना मुश्किल है।

﴾ 30 ﴿ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ رَجُلَانِ اَحَدُهُمَا عَابِدٌ وَالْاٰخَرُ عَالِمٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِيْ عَلٰى اَدْنَاكُمْ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ وَاَهْلَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرَضِيْنَ حَتّٰى النَّمْلَةَ فِيْ جُحْرِهَا وَ حَتَّى الْحُوْتَ لَيُصَلُّوْنَ عَلٰى مُعَلِّمِ النَّاسِ الْخَيْرَ۔ رواه الترمذی

وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب ماجاء فی فضل الفقه على العبادة، رقم: ٢٦٨٥

30. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने दो आदमियों का ज़िक्र किया गया, जिनमें एक आबिद था और दूसरा आलिम। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है, जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक मामूली शख़्स पर। उसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को भलाई सिखाने वाले पर अल्लाह तआला, उनके फ़रिश्ते, आसमान और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात, यहां तक कि चींटी अपने बिल में और मछली (पानी में अपने-अपने अन्दाज़ में) रहमत भेजती और दुआएं करती हैं।
(तिर्मिज़ी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلَا إِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ وَمَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا إِلَّا ذِكْرُ اللهِ وَمَا وَالَاهُ وَعَالِمٌ أَوْ مُتَعَلِّمٌ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب منه حديث ان الدنيا ملعونة، رقم: ٢٣٢٢

31. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ग़ौर से सुनो! दुनिया और दुनिया में जो कुछ है वह अल्लाह तआला की रहमत से दूर है, अल्बत्ता अल्लाह तआला का ज़िक्र और वे चीज़ें, जो अल्लाह तआला से क़रीब करें (यानी नेक अमल) और आलिम और तालिबे इल्म कि ये सब चीज़ें अल्लाह तआला की रहमत से दूर नहीं हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: أُغْدُ عَالِمًا أَوْ مُتَعَلِّمًا أَوْ مُسْتَمِعًا أَوْ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْخَامِسَةَ فَتَهْلِكَ وَالْخَامِسَةُ أَنْ تُبْغِضَ الْعِلْمَ وَأَهْلَهُ

رواه الطبراني في الثلاثة والبزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٢٨

32. हज़रत अबू बकर : ﷺ फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम या तो आलिम बनो, या तालिबे इल्म बनो, या इल्म तवज्जोह से सुनने वाले बनो, या इल्म और इल्म वालों से मुहब्बत करने वाले बनो (इन चार के अलावा) पांचवीं क़िस्म के मत बनो, वरना हलाक हो जाओगे। पांचवीं क़िस्म यह है कि तुम इल्म और इल्म वालों से बुग्ज़ रखो। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 33 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا حَسَدَ إِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ: رَجُلٍ آتَاهُ اللهُ مَالًا فَسَلَّطَهُ عَلَى هَلَكَتِهِ فِي الْحَقِّ، وَرَجُلٍ آتَاهُ اللهُ حِكْمَةً فَهُوَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا۔

رواه البخاري، باب انفاق المال في حقه، رقم: ١٤٠٩

33. हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाह अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हसद दो शख़्सों के अलावा किसी पर जायज़ नहीं, यानी अगर हसद करना किसी पर जायज़ होता, तो ये दो शख़्स ऐसे थे कि उन पर जायज़ होता। एक वह शख़्स, जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वह उसे अल्लाह तआ़ला की रज़ा वाले कामों में ख़र्च करता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआ़ला ने इल्म अ़ता फ़रमाया और वह उसके मुताबिक़ फ़ैसले करता हो और उसे दूसरों को सिखाता हो। (बुख़ारी)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَرَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ، اِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيْدُ سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرَى عَلَيْهِ اَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا اَحَدٌ، حَتّٰى جَلَسَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَاَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ اِلٰى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلٰى فَخِذَيْهِ، وَ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ! اَخْبِرْنِىْ عَنِ الْاِسْلَامِ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اَنَّ مُحَمَّداً رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَ تَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا، قَالَ: صَدَقْتَ، قَالَ: فَعَجِبْنَا لَهُ، يَسْئَلُهُ، وَيُصَدِّقُهُ، قَالَ: فَاَخْبِرْنِىْ عَنِ الْاِيْمَانِ؟ قَالَ: اَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ، وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ، وَقَالَ:صَدَقْتَ، قَالَ فَاَخْبِرْنِىْ عَنِ الْاِحْسَانِ؟ قَالَ: اَنْ تَعْبُدَاللهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ، فَاِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ، فَاِنَّهٗ يَرَاكَ. قَالَ: فَاَخْبِرْنِىْ عَنِ السَّاعَةِ؟ قَالَ: مَا الْمَسْؤُلُ عَنْهَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ، قَالَ: فَاَخْبِرْنِىْ عَنْ اَمَارَاتِهَا؟ قَالَ: اَنْ تَلِدَ الْاَمَةُ رَبَّتَهَا، وَاَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ، الْعَالَةَ، رِعَاءَ الشَّاءِ، يَتَطَاوَلُوْنَ فِى الْبُنْيَانِ، قَالَ: ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْتُ مَلِيًّا، ثُمَّ قَالَ لِىْ: يَا عُمَرُ اَتَدْرِىْ مَنِ السَّائِلُ؟ قُلْتُ، اللهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ، قَالَ: فَاِنَّهٗ جِبْرِيْلُ، اَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ.

رواه مسلم، باب بيان الايمان والاسلام......:رقم ٩٣

34. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि अचानक एक शख़्स आया, जिसका लिबास इंतिहाई सफ़ेद और बाल गहरे स्याह थे, न उसकी हालत से सफ़र के आसार ज़ाहिर थे (कि जिससे समझा जाता कि यह कोई मुसाफ़िर शख़्स है) और न हम में से कोई उसको पहचानता था (जिससे यह ज़ाहिर होता कि यह मदीना का मुक़ामी है) बहरहाल वह शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के इतने क़रीब आकर बैठा कि अपने घुटने आप ﷺ के घुटनों से मिला लिए और अपने दोनों हाथ अपनी दोनों रानों पर रख लिए। उसके बाद

उसने अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद! मुझे बताइए कि इस्लाम क्या है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम (के अरकान में से) यह है कि तुम (दिल व ज़बान से) यह गवाही दो कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं, नमाज़ अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और अगर बैतुल्लाह के हज की ताक़त रखते हो, तो हज करो। यह सुनकर उस शख़्स ने कहा : आपने सच फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हमें उस शख़्स पर ताज्जुब हुआ कि सवाल करता है (गोया कि जानता न हो) और फिर तस्दीक़ भी करता है (जैसे पहले से जानता हो) फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मुझे बताइए कि ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान यह है कि तुम अल्लाह को, उनके फ़रिश्तों को, उनकी किताबों को, उनके रसूलों को और क़ियामत के दिन को दिल से मानो और अच्छी बुरी तक़दीर पर यक़ीन रखो। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : आपने सच फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मुझे बताइए कि एहसान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एहसान यह है कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत और बंदगी इस तरह करो, गोया तुम अल्लाह तआ़ला को देख रहे हो और अगर यह कैफ़ियत नसीब न हो, तो फिर इतना तो ध्यान में रखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहे हैं। फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मुझे क़ियामत के बारे में बताइए (कि कब आएगी)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस बारे में जवाब देने वाला, सवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता, यानी इस बारे में मेरा इल्म तुमसे ज़्यादा नहीं। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : फिर मुझे उसकी कुछ निशानियां ही बता दीजिए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (उसकी एक निशानी तो यह है कि) बांदी अपनी मालिका को जनेगी और (दूसरी निशानी यह है कि) तुम देखोगे कि जिन के पांव में जूता और जिस्म पर कपड़ा नहीं है, फ़क़ीर हैं, बकरियां चराने वाले हैं वे बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने में एक दूसरे पर बाज़ी ले जाने की कोशिश करेंगे। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह शख़्स चला गया। मैंने कुछ देर तवक्क़ुफ़ किया (और आने वाले शख़्स के बारे में दरयाफ़्त नहीं किया) फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही मुझसे पूछा : उमर! जानते हो यह सवाल करने वाला शख़्स कौन था? मैंने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उनके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह जिबरील عليه السلام थे, जो तुम्हारे पास तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे। (मुस्लिम

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में क़ियामत की निशानियों में बांदी का अपनी मालिका को जनने का एक मतलब यह है कि क़ियामत के क़रीब वालिदैन के

नाफ़रमानी आम हो जाएगी यहां तक कि लड़कियां जिनकी तबीयत में माओं की इताअ़त ज़्यादा होती है, वे भी न सिर्फ़ यह कि माओं की नाफ़रान हो जाएंगी, बल्कि उल्टा उन पर इस तरह हुक्म चलाएंगी जिस तरह एक मालिका अपनी बांदी पर हुक्म चलाती है। उसी को रसूलुल्लाह ﷺ ने इस उन्वान से ताबीर फ़रमाया है कि औरत अपनी मालिका को जनेगी। दूसरी निशानी का मतलब यह है कि क़ियामत के क़रीब माल व दौलत उन लोगों के हाथ में आ जाएगा, जो उसके अह्ल नहीं होंगे। उनकी दिलचस्पी ऊंचे-ऊंचे मकानों के बनाने में होगी और इसी में एक दूसरे पर बाज़ी ले जाने की कोशिश करेंगे। (मआ़रिफ़ुलहदीस)

﴿ 35 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ رَجُلَيْنِ كَانَا فِي بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ، اَحَدُهُمَا كَانَ عَالِمًا يُصَلِّى الْمَكْتُوْبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ، وَالْآخَرُ يَصُوْمُ النَّهَارَ وَ يَقُوْمُ اللَّيْلَ، اَيُّهُمَا اَفْضَلُ؟ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ هٰذَا الْعَالِمِ الَّذِى يُصَلِّى الْمَكْتُوْبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ عَلَى الْعَابِدِ الَّذِى يَصُوْمُ النَّهَارَ وَ يَقُوْمُ اللَّيْلَ كَفَضْلِيْ عَلٰى اَدْنَاكُمْ رَجُلًا۔ رواه الدارمى ١/١٠٩

35. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से बनी इसराईल के दो शख़्सों के बारे में पूछा गया कि उन दोनों में कौन अफ़ज़ल है? उनमें से एक आ़लिम था, जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर लोगों को ख़ैर की बातें सिखाने में मशग़ूल हो जाता। दूसरा दिन को रोज़ा रखता और रात में इबादत करता था। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस आ़लिम की फ़ज़ीलत जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर लोगों को ख़ैर की बातें सिखाने में मशग़ूल हो जाता उस आबिद पर, जो दिन को रोज़े रखता और रात में इबादत करता, ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम में से अदना दर्जे के शख़्स पर है। (दारमी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ وَتَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ وَتَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ وَعَلِّمُوْهَا النَّاسَ فَاِنِّيْ امْرُؤٌ مَقْبُوْضٌ وَاِنَّ الْعِلْمَ سَيُقْبَضُ حَتّٰى يَخْتَلِفَ الرَّجُلَانِ فِي الْفَرِيْضَةِ لَا يَجِدَانِ مَنْ يُخْبِرُ هُمَا بِهَا۔ رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢/٢٥٥

36. हज़रत अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ुरआन सीखो और लोगों को सिखाओ, इल्म सीखो और लोगों को सिखाओ, फ़र्ज़ अहकाम सीखो और लोगों को सिखाओ, क्योंकि मैं दुनिया से उठा लिया जाऊंगा और इल्म भी अंक़रीब उठा लिया जाएगा, यहां तक कि दो शख़्स एक फ़र्ज़ हुक्म के बारे में इख़्तिलाफ़ करेंगे और (इल्म के कम हो जाने की वजह से) कोई ऐसा शख़्स नहीं मिलेगा जो उनको फ़र्ज़ हुक्म के बारे में सही बात बता दे। (बैहक़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يٰاَيُّهَا النَّاسُ! خُذُوا مِنَ الْعِلْمِ قَبْلَ اَنْ يُقْبَضَ الْعِلْمُ وَقَبْلَ اَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ۔ (الحديث) رواه احمد ٥/٢٦٦

37. हज़रत अबू उमामा बाहली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! इल्म के वापस लिए जाने और उठा लिए जाने से पहले इल्म हासिल कर लो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 38 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِمَّا يَلْحَقُ الْمُؤْمِنَ مِنْ عَمَلِهٖ وَحَسَنَاتِهٖ بَعْدَ مَوْتِهٖ عِلْمًا عَلَّمَهُ وَ نَشَرَهُ، وَوَلَدًا صَالِحًا تَرَكَهُ، وَمُصْحَفًا وَرَّثَهُ اَوْ مَسْجِدًا بَنَاهُ اَوْبَيْتًا لِابْنِ السَّبِيْلِ بَنَاهُ، اَوْنَهْرًا اَجْرَاهُ،اَوْصَدَقَةً اَخْرَجَهَا مِنْ مَالِهٖ فِیْ صِحَّتِهٖ وَحَيَاتِهٖ، يَلْحَقُهُ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهٖ۔ رواه ابن ماجه،باب ثواب معلم النّاس الخير، رقم:٢٤٢

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के मरने के बाद जिन आमाल का सवाब उसको मिलता रहता है, उनमें एक तो इल्म है जो किसी को सिखाया और फैलाया हो, दूसरा सालेह औलाद है जिसको छोड़ा हो, तीसरा क़ुरआन शरीफ़ है, जो मीरास में छोड़ गया हो, चौथा मस्जिद है, जो बना गया हो, पांचवां मुसाफ़िरख़ाना है जिसको उसने तामीर किया हो, छठा नहर है, जिसको उसने जारी किया हो, सातवां वह सदक़ा है जिसको अपनी ज़िन्दगी और सेहत में इस तरह दे गया हो कि मरने के बाद उसका सवाब मिलता रहे (मसलन वक़्फ़ की शक्ल में सदक़ा कर गया हो)। (इब्ने माजा)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ كَانَ اِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ اَعَادَهَا ثَلَاثًا حَتّٰى تُفْهَمَ۔ (الحديث)، رواه البخاری، باب من اعاد الحديث......رقم: ٩٥

39.हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि आप ﷺ जब कोई बात इर्शाद फ़रमाते, तो उसको तीन मर्तबा दुहराते, ताकि (इस बात को) समझ लिया जाए। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब आप ﷺ कोई अहम बात इर्शाद फ़रमाते तो उस बात को तीन मर्तबा दुहराते ताकि लोग अच्छी तरह समझ लें।

(मज़ाहिरे हक़)

﴿40﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللهَ لَا يَقْبِضُ الْعِلْمَ اِنْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ، وَلٰكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ حَتّٰى اِذَا لَمْ يَبْقَ عَالِمٌ اِتَّخَذَ النَّاسُ رُؤُسًا جُهَّالًا، فَسُئِلُوْا فَاَفْتَوا بِغَيْرِ عِلْمٍ فَضَلُّوا وَاَضَلُّوا۔

رواه البخاري، باب كيف يقبض العلم؟رقم: ١٠٠

40. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला इल्म को (आख़िरी ज़माने में) इस तरह नहीं उठाएंगे कि लोगों (के दिल व दिमाग़) से उसे पूरे तौर पर निकाल लें बल्कि इल्म को इस तरह उठाएंगे कि उलमा को एक-एक करके उठाते रहेंगे, यहां तक कि जब कोई आ़लिम बाक़ी नहीं रहेगा तो लोग उलमा के बजाए जाहिलों को अपना सरदार बनाएंगे, उनसे मसले पूछे जाएंगे और वे इल्म के बग़ैर फ़त्वा देंगे। नतीजा यह होगा कि ख़ुद तो गुमराह थे ही, दूसरों को भी गुमराह कर देंगे। (बुख़ारी)

﴿41﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ يُبْغِضُ كُلَّ جَعْظَرِيٍّ جَوَّاظٍ سَخَّابٍ بِالْاَسْوَاقِ، جِيْفَةٍ بِاللَّيْلِ، حِمَارٍ بِالنَّهَارِ، عَالِمٍ بِاَمْرِ الدُّنْيَا، جَاهِلٍ بِاَمْرِ الْآخِرَةِ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط مسلم ١/٢٧٤

41. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से नफ़रत करते हैं जो सख़्तमिज़ाज हो, ज़्यादा खाने वाला हो, बाज़ारों में चीखने वाला हो, रात में मुर्दे की तरह (पड़ा सोता रहता) हो, दिन में गधे की तरह (दुन्यावी कामों में फंसा रहता) हो, दुनिया के मामलों का जानने वाला और आख़िरत के उमूर से बिल्कुल जाहिल हो। (इब्ने हब्बान)

﴿42﴾ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ سَلَمَةَ الْجُعْفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اِنِّي قَدْ سَمِعْتُ مِنْكَ حَدِيْثًا كَثِيْرًا اَخَافُ اَنْ يُنْسِيَ اَوَّلَهُ آخِرُهُ فَحَدِّثْنِي بِكَلِمَةٍ تَكُوْنُ جِمَاعًا، قَالَ: اتَّقِ اللهَ فِيْمَا تَعْلَمُ۔

رواه الترمذي و قال: هذاحديث ليس اسناده بمتصل وهو عندي مرسل، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة، رقم: ٢٦٨٣

42. हज़रत यज़ीद बिन सलमा जुअ़्फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैंने आप से कई हदीसें सुनी हैं, याद न रहीं, मुझे इसलिए कोई जामे बात इर्शाद फ़रमा दें। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन उमूर का तुम्हें इल्म है उनके बारे में अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, यानी अपने इल्म के मुताबिक़ अ़मल करो। (तिर्मिज़ी)

﴿43﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: لَا تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ لِتُبَاهُوْا بِهِ الْعُلَمَاءَ وَلَا تُمَارُوا بِهِ السُّفَهَاءَ، وَلَا تَخَيَّرُوْا بِهِ الْمَجَالِسَ فَمَنْ فَعَلَ ذَالِكَ، فَالنَّارُ النَّارُ. رواه ابن ماجه، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، رقم: ٢٥٤

43. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उलमा पर बड़ाई जताने, बेवक़ूफ़ों से झगड़ने यानी नासमझ अ़वाम से उलझने और मज्लिस जमाने के लिए इल्म हासिल न करो। जो शख़्स ऐसा करे उसके लिए आग है आग। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : इल्म को मज्लिसें जमाने के लिए हासिल न करो, इस जुमले का मतलब यह है कि इल्म के ज़रिए से लोगों को अपनी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह न करो।

﴿44﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَهُ اَلْجَمَهُ اللهُ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه ابوداؤد، باب كراهية منع العلم، رقم: ٣٦٥٨

44. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाए और वह (बावजूद जानने के) उसको छुपाए तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की लगाम डालेंगे। (अबूदाऊद)

﴿45﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الَّذِىْ يَتَعَلَّمُ الْعِلْمَ ثُمَّ لَا يُحَدِّثُ بِهِ كَمَثَلِ الَّذِىْ يَكْنِزُ الْكَنْزَ ثُمَّ لَا يُنْفِقُ مِنْهُ.

رواه الطبراني في الأوسط وفي اسناده ابن لهيعة، الترغيب ١/١٢٢

45. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो इल्म सीखता है, फिर लोगों को नहीं सिखाता, उस शख़्स की तरह है जो ख़ज़ाना जमा करता है फिर उसमें से ख़र्च नहीं करता। (तबरानी, तरग़ीब)

﴾46﴿ عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! اِنِّي اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا۔ (وهو قطعة من الحديث) رواه مسلم، باب فى الادعية، رقم: ٦٩٠٦

46. हज़रत जैद बिन अरक़म रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ किया करते थे : 'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन इल्मिल ला यन्फ़उ व मिन क़ल्बिल्ला यख़शउ व मिन नफ़्सिल्ला तशबउ व मिन दावतिल्ला युस्तजाबु लहा०' (या अल्लाह! मैं आपसे पनाह मांगता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे और ऐसे दिल से जो न डरे और ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो और ऐसी दुआ से जो क़ुबूल न हो।) (मुस्लिम)

﴾47﴿ عَنْ اَبِي بَرْزَةَ الْاَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لَا تَزُوْلُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُسْاَلَ عَنْ عُمُرِهٖ فِيْمَا اَفْنَاهُ، وَعَنْ عِلْمِهٖ فِيْمَا فَعَلَ، وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ اَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيْمَا اَنْفَقَهُ وَعَنْ جِسْمِهٖ فِيْمَا اَبْلَاهُ۔

رواه الترمذي و قال: هذا حديث حسن صحيح، باب فى القيامة، رقم: ٢٤١٧

47. हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन आदमी के दोनों क़दम उस वक़्त तक (हिसाब की जगह) नहीं हट सकते, जब तक उससे इन चीज़ों के बारे में पूछ न लिया जाए—अपनी उम्र किस काम में ख़र्च की? अपने इल्म पर क्या अ़मल किया? माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया? अपनी जिस्मानी क़ूव्वत किस काम में लगाई? (तिर्मिज़ी)

﴾48﴿ عَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِاللهِ الْاَزْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الَّذِيْ يُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ وَيَنْسٰى نَفْسَهُ كَمَثَلِ السِّرَاجِ يُضِيْءُ لِلنَّاسِ وَيَحْرِقُ نَفْسَهُ۔ رواه الطبراني فى الكبير و اسناده حسن ان شاء الله تعالى، الترغيب ١٢٦/١

48. हज़रत जुंदुब बिन अ़ब्दुल्लाह अज़दी رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर की बात सिखाए और अपने आपको भुला दे (खुद अ़मल न करे) उस चिराग़ की-सी है जो लोगों के लिए रोशनी करता है, लेकिन ख़ुद को जला देता है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴾49﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ غَيْرِ فَقِيْهٍ، وَمَنْ لَمْ يَنْفَعْهُ عِلْمُهُ ضَرَّهُ جَهْلُهُ، اِقْرَاِالْقُرْآنَ مَا نَهَاكَ، فَاِنْ لَمْ يَنْهَكَ فَلَسْتَ تَقْرَءُهُ.

رواه الطبرانی فی الکبیر و فیه شهر بن حوشب وهو ضعیف وقد وثق، مجمع الزوائد ١/٤٤٠

49. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बाज़ इल्म रखने वाले इल्मी समझ-बूझ नहीं रखते (इल्म के साथ जो समझ-बूझ होनी चाहिए उससे ख़ाली होते हैं) और जिसका इल्म उसे फ़ायदा न पहुंचाए तो उसकी जिहालत उसे नुक़सान पहुंचाएगी। क़ुरआन करीम को तुम (हक़ीक़त में) उस वक़्त पढ़ने वाले (शुमार) होगे, जब तक वह क़ुरआन तुम्हें (गुनाहों और बुराइयों से) रोकता रहे और अगर वह तुम्हें न रोके तो तुम उसको हक़ीक़त में पढ़ने वाले ही नहीं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾50﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَامَ لَيْلَةً بِمَكَّةَ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَامَ عُمَرُبْنُ الْخَطَّابِ، وَكَانَ اَوَّاهًا، فَقَالَ اَللّٰهُمَّ نَعَمْ، وَ حَرَّضْتَ وَ جَهَدْتَ وَ نَصَحْتَ، فَقَالَ: لَيَظْهَرَنَّ الْاِيْمَانُ حَتّٰى يُرَدَّ الْكُفْرُ اِلٰى مَوَاطِنِهٖ، وَلَتُخَاضَنَّ الْبِحَارُ بِالْاِسْلَامِ، وَلَيَاْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَتَعَلَّمُوْنَ فِيْهِ الْقُرْآنَ يَتَعَلَّمُوْنَهُ وَيَقْرَؤُنَهُ وَيَقُوْلُوْنَ: قَدْ قَرَاْنَا وَعَلِمْنَا، فَمَنْ ذَا الَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ مِنَّا؟ (ثُمَّ قَالَ لِاَصْحَابِهٖ) فَهَلْ فِيْ اُولٰئِكَ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ وَمَنْ اُولٰئِكَ؟ قَالَ اُولٰئِكَ مِنْكُمْ وَاُولٰئِكَ وَقُوْدُ النَّارِ.

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله ثقات إلا أن هند بنت الحارث الْخَثْعَمِيَّةَ التابعية لم أرمن وثقها ولاجرحها، مجمع الزوائد ١/١٩١ طبع مؤسسة المعارف، بیروت و هند مقبولة۔ تقریب التهذیب

50. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रात मक्का मुकर्रमा में खड़े हुए और तीन मर्तबा यह इर्शाद फ़रमाया : ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुंचा दिया? हज़रत उमर ﷺ जो बहुत (ज़्यादा अल्लाह तआ़ला की बारगाह में) आह व ज़ारी करने वाले थे, उठे और अ़र्ज़ किया : जी हां (मैं अल्लाह तआ़ला को गवाह बनाता हूं कि आपने पहुंचा दिया) आपने लोगों को इस्लाम के लिए ख़ूब उभारा और आपने इसके लिए ख़ूब कोशिश की और नसीहत फ़रमाई, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान ज़रूर ग़ालिब होकर रहेगा, यहां तक कि कुफ़्र को उसके ठिकानों की तरफ़ लौटा दिया जाए, और यक़ीनन तुम इस्लाम को फैलाने

लिए समुन्दर का सफ़र भी करोगे और लोगों पर ज़रूर ऐसा ज़माना आएगा जिसमें लोग क़ुरआन करीम सीखेंगे, उसकी तिलावत करेंगे और कहेंगे हमने पढ़ लिया और जान लिया, अब हम से बेहतर कौन होगा? (नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया) क्या उन लोगों में कोई ख़ैर हो सकती है? यानी उनमें ज़र्रा बराबर भी ख़ैर नहीं है और दावा है कि हमसे बेहतर कौन है? सहाबा : ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ये कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : ये लोग तुम ही में से होंगे यानी इसी उम्मत में से होंगे और ये ही दोख़ज़ का ईंधन हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿51﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ بَابِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَتَذَاكَرُ يَنْزِعُ هٰذَا بِاٰيَةٍ وَيَنْزِعُ هٰذَا بِاٰيَةٍ فَخَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ كَاَنَّمَا يُفْقَأُ فِي وَجْهِهٖ حَبُّ الرُّمَّانِ فَقَالَ: يَا هٰؤُلَاءِ بِهٰذَا بُعِثْتُمْ اَمْ بِهٰذَا اُمِرْتُمْ؟ لَا تَرْجِعُوْا بَعْدِيْ كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ. رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات اثبات، مجمع الزوائد ١/٣٨٩

51. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के दरवाज़े के पास बैठे हुए आपस में इस तौर पर मुज़ाकरा कर रहे थे कि एक शख़्स एक आयत को और दूसरा शख़्स दूसरी आयत को अपनी बात की दलील में पेश करता (इस तरह झगड़े की-सी शक्ल बन गई)। इतने में रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए, आपका चेहरा मुबारक (ग़ुस्से में) ऐसा सुर्ख़ हो रहा था, गोया आपके चेहरा मुबारक पर अनार के दाने निचोड़ दिए गए हों। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! क्या तुम इस (झगड़े) के लिए दुनिया में भेजे गए हो या तुम्हें उसका हुक्म दिया गया है? मेरे इस दुनिया से जाने के बाद झगड़ने की वजह से एक दूसरे की गरदनें मार कर काफ़िर न बन जाना (कि यह अमल कुफ़्र तक पहुंचा देता है)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿52﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: اَنَّ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ: اِنَّمَا الْاُمُوْرُ ثَلَاثَةٌ: اَمْرٌ تَبَيَّنَ لَكَ رُشْدُهٗ فَاتَّبِعْهُ، وَاَمْرٌ تَبَيَّنَ لَكَ غَيُّهٗ فَاجْتَنِبْهُ، وَاَمْرٌ اُخْتُلِفَ فِيْهِ فَرُدَّهٗ اِلٰى عَالِمِهٖ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٩٠

52. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि हज़रत ईसा ﷺ ने फ़रमाया : उमूर तीन ही क़िस्म के होते हैं। एक तो वह, जिसका हक़ होना वाज़ेह हो, उसकी पैरवी करो, दूसरा वह जिसका ग़लत होना वाज़ेह

हो उससे बचो, तीसरा वह जिसका हक़ होना या ग़लत होना वाज़ेह न हो, उसको उसके जानने वाले यानी आलिम से पूछो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾53﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِتَّقُوا الْحَدِيْثَ عَنِّي إِلَّا مَا عَلِمْتُمْ، فَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ، وَ مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن باب ماجاء فی الذی يفسر القران برايه رقم: ٢٩٥١

53. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी तरफ़ निस्बत ब्यान करने में एहतियात करो। सिर्फ़ उसी हदीस को ब्यान करो जिसका हदीस होना तुम्हें मालूम हो। जिस शख़्स ने जान-बूझ-कर मेरी तरफ़ ग़लत हदीस मंसूब की, उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना लेना चाहिए। जिसने क़ुरआन करीम की तफ़्सीर में अपनी राय से कुछ कहा उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना लेना चाहिए। (तिर्मिज़ी)

﴾54﴿ عَنْ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ فِي كِتَابِ اللهِ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ.

رواه ابو داؤد، باب الكلام فی كتاب الله بلاعلم، رقم: ٣٦٥٢

54. हज़रत जुंदुब رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने क़ुरआन करीम (की तफ़्सीर) में अपनी राय से कुछ कहा और वह हक़ीक़त में सही भी हो, तब भी उसने ग़लती की। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स क़ुरआन करीम की तफ़्सीर अपनी अ़क़्ल और राय से करता है फिर इत्तिफ़ाक़न वह सही हो जाए, तब भी उसने ग़लती की, क्योंकि उसने उस तफ़्सीर के लिए न हदीसों की तरफ़ रुजूअ़ किया और न ही उलमा-ए-उम्मत की तरफ़ रुजूअ़ किया। (मज़ाहिरे हक़)

क़ुरआन करीम और हदीस शरीफ़ से असर लेना

क़ुरआनी आयतें

قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا سَمِعُوْا مَآاُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰىٓ اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ﴾ [المائدة:٨٣]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और जब ये लोग इस किताब को सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुई है, तो आप (क़ुरआन करीम के तास्सुर से) उनकी आंखों को आंसुओं से बहता हुआ देखते हैं, उसकी वजह यह है कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया। (माइद: 83)

وَقَالَ تَعَالٰى ﴿وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ﴾ [الاعراف:٢٠٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और चुप रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाए।(आराफ़ 204)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْئَلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰىٓ اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا. [الكهف:٧٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : उन बुज़ुर्ग ने हज़रत मूसा अलैहि० से फ़रमाया : अगर आप (इल्म हासिल करने के लिए) मेरे साथ रहना चाहते हैं तो इतना ख़्याल रहे कि आप किसी बात के बारे में पूछें नहीं, जब तक कि उसके मुतअल्लिक़ मैं ख़ुद ही न बता दूं। (कहफ़ : 70)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ط اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ﴾ [الزمر:١٧،١٨]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो इस कलामे इलाही को कान लगा कर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी बातों पर अ़मल करते हैं, यही लोग हैं जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी है और यही अक़्ल वाले हैं। (ज़ुमर : 17-18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ج ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ﴾ [الزمر٢٣]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआला ने बेहतरीन कलाम यानी क़ुरआन करीम नाज़िल फ़रमाया है, वह कलाम ऐसी किताब है जिसके मज़ामीन आपस में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, उसकी बातें बार-बार दुहराई गई हैं, जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके बदन इस किताब को सुनकर कांप उठते हैं, फिर उनके जिस्म और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह तआला की याद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं। (ज़ुमर : 23)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿55﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِقْرَأْ عَلَيَّ، قُلْتُ: اَقْرَأُ عَلَيْكَ وَ عَلَيْكَ اُنْزِلَ؟ قَالَ فَاِنِّيْ اُحِبُّ اَنْ اَسْمَعَهٗ مِنْ غَيْرِيْ، فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ سُوْرَةَ النِّسَاءِ حَتّٰى بَلَغْتُ ﴿فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَاۤءِ شَهِيْدًا﴾ قَالَ: اَمْسِكْ ، فَاِذَا عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ.

رواه البخاري، باب فكيف إذا جئنا من كلّ امة بشهيد......الآية،رقم: ٤٥٨٢

55. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने

इर्शाद फ़रमाया : मुझे क़ुरआन पढ़कर सुनाओ। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मैं आपको पढ़ कर सुनाऊं जबकि आप पर क़ुरआन उतरा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि किसी दूसरे से क़ुरआन सुनूं। चुनांचे मैंने आपके सामने सूर : निसा पढ़ी, यहां तक कि जब मैं इस आयत पर पहुंचा तर्जुमा : उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और आपको अपनी उम्मत पर गवाह बनाएंगे, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : बस अब रुक जाओ। मैं आप की तरफ़ मुतवज्जह हुआ तो देखा कि आपके आंखों से आंसू जारी हैं। (बुख़ारी)

﴿56﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ یَبْلُغُ بِهِ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِذَا قَضَی اللهُ الْاَمْرَ فِی السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِاَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ، كَاَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلٰی صَفْوَانٍ فَاِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوْا: الْحَقَّ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ.

رواه البخاری، باب قول الله تعالیٰ و لا تنفع الشفاعة عنده الا لمن اذن لها الآية، رقم: ٧٤٨١

56. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला आसमान में कोई हुक्म नाज़िल फ़रमाते हैं, तो फ़रिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म की हैबत व रौब की वजह से कांप उठते हैं और अपने परों को हिलाने लगते हैं। फ़रिश्तों को अल्लाह तआला का इर्शाद इस तरह सुनाई देता है जैसे चिकने पत्थर पर ज़ंजीर मारने की आवाज़ होती है। फिर जब फ़रिश्तों के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है, तो एक दूसरे से दरयाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या हुक्म दिया? वे कहते हैं कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया, और वाक़ई वह आलीशान है, सबसे बड़ा है। (बुख़ारी)

﴿57﴾ عَنْ اَبِیْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: اِلْتَقٰی عَبْدُاللهِ بْنُ عُمَرَ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ عَلَی الْمَرْوَةِ فَتَحَدَّثَا ثُمَّ مَضٰی عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو وَ بَقِیَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ یَبْكِیْ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: مَایُبْكِیْكَ یَا اَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ؟ قَالَ: هٰذَا۔ یَعْنِیْ عَبْدَاللهِ بْنَ عَمْرٍو۔ زَعَمَ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ كَانَ فِیْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ كِبْرٍ كَبَّهُ اللهُ لِوَجْهِهٖ فِی النَّارِ۔

رواه احمد و الطبرانی فی الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١/٢٨٢

57. हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं

कि मरवा (पहाड़ी) पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ की आपस में मुलाक़ात हुई। वे दोनों कुछ देर आपस में बात करते रहे। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ चले गए और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ वहां रोते हुए ठहर गए। एक आदमी ने उनसे पूछा : अबू अ़ब्दुर्रहमान! आप क्यों रो रहे हैं? हज़रत इब्ने उमर ﷺ ने फ़रमाया : ये साहब, यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ अभी बताकर गए हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा, अल्लाह तआ़ला उसे चेहरे के बल आग में डाल देंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

ज़िक्र

अल्लाह तआला के अवामिर में अल्लाह तआला के ध्यान के साथ मशग़ूल होना यानी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेरे सामने हैं और वह मुझे देख रहे हैं।

क़ुरआन करीम के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ لا وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ﴾ [يونس: ٥٧، ٥٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : लोगो! तुम्हारे पास, तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी किताब आई है, जो सरासर नसीहत और दिलों की बीमारी के लिए शिफ़ा है और (अच्छे काम करने वालों के लिए इस क़ुरआन में) रहनुमाई और (अ़मल करने वाले) मोमिनीन के लिए रहमत का ज़रिया है। आप कह दीजिए कि लोगों को अल्लाह तआला के इस फ़ज़्ल व मेहरबानी यानी क़ुरआन के उतरने पर ख़ुश होना चाहिए। यह क़ुरआन इस दुनिया से बदरजहा बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं। (यूनुस : 57-58)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قُلْ نَزَّلَهُ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ﴾ [النحل:١٠٢]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए कि बिलाशुबहा इस क़ुरआन को रूहुल क़ुदुस यानी जिबरील आपके रब की तरफ़ से लाए हैं ताकि यह क़ुरआन, ईमान वालों के ईमान को मज़बूत करे, और यह क़ुरआन, फ़रमांबरदारों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (नह्ल : 1-2)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ﴾

[الاسراء:٨٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : यह क़ुरआन जो हम नाज़िल फ़रमा रहे हैं, यह मुसलमानों के लिए शिफ़ा और रहमत है। (बनी इस्राईल : 82)

وَقَالَ تَعَالٰى ﴿اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ﴾ [العنكبوت:٤٥]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : जो किताब आप पर उतारी गई है, उसकी तिलावत किया कीजिए। (अंकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ﴾ [فاطر:٢٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो लोग क़ुरआन करीम की तिलावत करते रहते हैं और नमाज़ की पाबंदी करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च किया करते हैं, वे यक़ीनन ऐसी तिजारत की उम्मीद लगाए हुए हैं, जिसको कभी नुक़सान पहुंचने वाला नहीं उनको उनके आ़माल का अज्र व सवाब पूरा-पूरा दिया जाएगा। (फ़ातिर : 29)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ﴾ [الواقعه:٧٥-٨١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : मैं सितारों के ग़ुरूब होने और छुपने की क़सम

खाता हूं और अगर तुम समझो तो यह क़सम बहुत बड़ी क़सम है। क़सम इसपर खाता हूं कि यह क़ुरआन बड़ी शान वाला है, जो लौहे महफ़ूज़ में दर्ज है। इस लौहे महफ़ूज़ को पाक फ़रिश्तों के अलावा और कोई हाथ नहीं लगा सकता। यह क़ुरआन रब्बुल आलमीन की जानिब से भेजा गया है तो क्या तुम इस कलाम को सरसरी बात समझते हो। (वाक़िआ : 75-81)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْآنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ﴾ [الحشر:٢١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (क़ुरआन करीम अपनी अज़्मत की वजह से ऐसी शान रखता है कि) अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते (और पहाड़ में शऊर व समझ होती) तो आप उस पहाड़ को देखते कि वह अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता। (हश्र : 21)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿58﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَقُوْلُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى: مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْآنُ عَنْ ذِكْرِىْ، وَمَسْاَلَتِىْ اَعْطَيْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِى السَّائِلِيْنَ، وَفَضْلُ كَلَامِ اللّٰهِ عَلٰى سَائِرِ الْكَلَامِ كَفَضْلِ اللّٰهِ عَلٰى خَلْقِهٖ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضائل القرآن، رقم: ٢٩٢٦

58. हज़रत अबू सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने यह हदीसे क़ुदसी ब्यान फ़रमाई : अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : जिस शख़्स को क़ुरआन शरीफ़ की मशग़ूली की वजह से ज़िक्र करने और दुआएं मांगने की फ़ुरसत नहीं मिलती, मैं उसको दुआएं मांगने वालों से ज़्यादा अता करता हूं और अल्लाह तआला के कलाम को सारे कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत है, जैसे ख़ुद अल्लाह तआला को तमाम मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत है। (तिर्मिज़ी)

﴿59﴾ عَنْ اَبِىْ ذَرٍّ الْغِفَارِىِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّكُمْ لَا تَرْجِعُوْنَ

اِلَى اللهِ بِشَىْءٍ اَفْضَلَ مِمَّا خَرَجَ مِنْهُ يَعْنِى الْقُرْآنَ۔

رواه الحاکم وقال: هٰذا حديث صحيح الاسناد لم يخرجاه ووافقه الذهبی ١/٥٥٥

59. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अल्लाह तआला का क़ुर्ब उस चीज़ से बढ़कर किसी और चीज़ से हासिल नहीं कर सकते जो ख़ुद अल्लाह तआला से निकली है, यानी क़ुरआन करीम। (मुस्तदरक हाकि

﴿60﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْقُرْآنُ مُشَفَّعٌ وَمَاحِلٌ مُصَدَّقٌ مَنْ جَعَلَهُ اَمَامَهُ قَادَهُ اِلَى الْجَنَّةِ وَمَنْ جَعَلَهُ خَلْفَ ظَهْرِهٖ سَاقَهُ اِلَى النَّارِ:

رواه ابن حبّان، قال المحقق اسناده جيد ١/٣٣١

60. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया क़ुरआन करीम ऐसी शफ़ाअ़त करने वाला है जिसकी शफ़ाअ़त क़ुबूल की गई और ऐसा झगड़ा करने वाला है कि उसका झगड़ा तस्लीम कर लिया गया, जो शख़्स इसको अपने आगे रखे, यानी उसपर अ़मल करे उसको यह जन्नत में पहुंचा देता है और जो उसको पीठ पीछे डाल दे, यानी उस पर अ़मल न करे उसको यह जहन्नम में गिरा देता है। (इब्ने हब्बा

फ़ायदा : क़ुरआन करीम ऐसा झगड़ा करने वाला है कि उसका झगड़ा तस्लीम कर लिया गया, इसका मतलब यह है कि पढ़ने और उसपर अ़मल करने वा के लिए दर्जों के बढ़ाने में अलाह तआला के दरबार में झगड़ता है और उसके हक़ में लापरवाही करने वालों से मुतालबा करता है कि मेरा ह क्यों नहीं अदा किया।

﴿61﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يَقُوْلُ الصِّيَامُ: اَىْ رَبِّ مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَ الشَّهْوَةَ فَشَفِّعْنِى فِيْهِ، وَيَقُوْلُ الْقُرْآنُ: مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِىْ فِيْهِ، قَالَ: فَيُشَفَّعَانِ لَهُ۔

رواه احمد والطبرانی فی الکبیر ورجال الطبرانی رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٣/٤١٩

61. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : रोज़ा और क़ुरआन करीम दोनों क़ियामत के दिन बन्दे के लिए शफ़ाअ़त करेंगे। रोज़ा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैंने इसको खाने और नफ़्सानी ख़्वाहिश पू

करने से रोके रखा, मेरी शफ़ाअ़त इसके बारे में क़ुबूल फ़रमाइए। क़ुरआन करीम कहेगा : मैंने इसे रात को सोने से रोका (कि यह रात को नफ़्लों में मेरी तिलावत करता था) मेरी शफ़ाअ़त उसके बारे में क़ुबूल फ़रमाइए। चुनांचे दोनों इसके लिए सिफ़ारिश करेंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿62﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ يَرْفَعُ بِهٰذَا الْكِتَابِ اَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهِ آخَرِيْنَ۔

رواه مسلم، باب فضل من يقوم بالقرآن......رقم:١٨٩٧

62. हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुलाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला इस क़ुरआन शरीफ़ की वजह से बहुत-से लोगों के मर्तबे को बुलन्द फ़रमाते हैं और बहुत-सों के मर्तबे को घटाते हैं, यानी जो लोग इस पर अ़मल करते हैं अल्लाह तआ़ला उनको दुनिया व आख़िरत में इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाते हैं और जो लोग इस पर अ़मल नहीं करते, अल्लाह तआ़ला उनको ज़लील करते हैं। (मुस्लिम)

﴿63﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ (لِاَبِيْ ذَرٍّ): عَلَيْكَ بِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ، وَذِكْرِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فَاِنَّهُ ذِكْرٌ لَكَ فِي السَّمَاءِ، وَنُوْرٌ لَكَ فِي الْاَرْضِ۔

(وهو جزء من الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان ٢٤٢/٤

63. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम की तिलावत और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र का एहतिमाम किया करो, इस अ़मल से आसमानों में तुम्हारा ज़िक्र होगा और यह अ़मल ज़मीन में तुम्हारे लिए हिदायत का नूर होगा। (बैहक़ी)

﴿64﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا حَسَدَ اِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ، رَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ الْقُرْآنَ، فَهُوَ يَقُوْمُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ وَرَجُلٌ آتَاهُ اللّٰهُ مَالًا، فَهُوَ يُنْفِقُهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ۔

رواه مسلم، باب فضل من يقوم بالقرآن......رقم:١٨٩٤

64. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो ही शख़्सों पर रश्क करना चाहिए। एक वह, जिसको अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन शरीफ़ अ़ता किया हो और वह दिन रात उसकी तिलावत में मशग़ूल रहता हो। दूसरा वह, जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल अ़ता फ़रमाया हो और वह दिन रात उसको ख़र्च करता हो। (मुस्लिम)

﴿65﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ یَقْرَاُ الْقُرْآنَ مَثَلُ الْاُتْرُجَّۃِ، رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَ طَعْمُھَا طَیِّبٌ، وَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ لَا یَقْرَاُ الْقُرْآنَ مَثَلُ التَّمْرَۃِ، لَا رِیْحَ لَھَا وَطَعْمُھَا حُلْوٌ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِی یَقْرَاُ الْقُرْآنَ مَثَلُ الرَّیْحَانَۃِ، رِیْحُھَا طَیِّبٌ وَطَعْمُھَا مُرٌّ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِی لَایَقْرَاُ الْقُرْآنَ کَمَثَلِ الْحَنْظَلَۃِ، لَیْسَ لَھَا رِیْحٌ وَ طَعْمُھَا مُرٌّ۔

رواہ مسلم، باب فضیلۃ حافظ القرآن،......رقم: ۱۸۶۰

65. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मोमिन क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है, उसकी मिसाल चकोतरे की तरह है, उसकी ख़ुश्बू भी अच्छी होती है और मज़ा भी लज़ीज़ और जो मोमिन क़ुरआन करीम नहीं पढ़ता, उसकी मिसाल खजूर की तरह है जिसकी ख़ुश्बू तो नहीं, लेकिन ज़ायक़ा मीठा है और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता है उसकी मिसाल ख़ुश्बूदार फूल की सी है कि ख़ुश्बू अच्छी और मज़ा कड़वा और जो मुनाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ता उसकी मिसाल इंदराइन की तरह है कि ख़ुश्बू कुछ नहीं और मज़ा कड़वा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इंद्राइन ख़रबूज़े की शक्ल का एक फल है, जो देखने में ख़ूबसूरत और ज़ायक़े में बहुत तल्ख़ होता है।

﴿66﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰہِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ یَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ مَنْ قَرَاَحَرْفًا مِنْ کِتَابِ اللّٰہِ فَلَہٗ بِہٖ حَسَنَۃٌ، وَالْحَسَنَۃُ بِعَشْرِ اَمْثَالِھَا لَا اَقُوْلُ الٓمّٓ حَرْفٌ وَلٰکِنْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَ مِیْمٌ حَرْفٌ۔

رواہ الترمذی، و قال: ھذا حدیث حسن صحیح غریب، باب ماجاء فی من قرأ حرفًا،......رقم ۲۹۱۰

66. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन करीम का एक हर्फ़ पढ़े, उसके लिए एक हर्फ़ का बदला एक नेकी है और एक नेकी का अज्र दस नेकी के बराबर मिलता है। मैं यह नहीं कहता कि सारा अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है, बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़, लाम एक हर्फ़, और मीम एक हर्फ़ है, यानी ये तीन हर्फ़ हुए इस पर तीस नेकियां मिलेंगी। (तिर्मिज़ी)

﴿67﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ، فَاقْرَءُوْہُ فَاِنَّ مَثَلَ الْقُرْآنِ لِمَنْ تَعَلَّمَہٗ فَقَرَاَہٗ وَقَامَ بِہٖ کَمَثَلِ جِرَابٍ مَحْشُوٍّ مِسْکًا یَفُوْحُ

رِيْحُهُ فِيْ كُلِّ مَكَانٍ، وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهُ فَيَرْقُدُ وَهُوَ فِيْ جَوْفِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ اُوْكِيَ عَلٰى مِسْكٍ.

رواه الترمذی و قال : هذا حدیث حسن، باب ماجاء فی سورة البقرة وآیة الکرسی، رقم: ٢٨٧٦

67. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन शरीफ़ सीखो, फिर उसको पढ़ो, इसलिए कि जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ सीखता है और पढ़ता है और तहज्जुद में उसको पढ़ता रहता है, उसकी मिसाल उस खुली थैली की-सी है जो मुश्क से भरी हुई हो कि उसकी ख़ुश्बू तमाम मकान में फैलती है और जिस शख़्स ने क़ुरआन करीम सीखा, फिर बावजूद इसके कि क़ुरआन करीम उसके सीने में है, वह सो जाता है, यानी उसको तहज्जुद में नहीं पढ़ता उसकी मिसाल उस मुश्क की थैली की तरह है जिसका मुंह बन्द कर दिया गया हो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम की मिसाल मुश्क की है और हाफ़िज़ का सीना उस थैली की तरह है जिसमें मुश्क हो। लिहाज़ा क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाला हाफ़िज़ उस मुश्क की थैली की तरह है, जिसका मुंह खुला हो और तिलावत न करने वाला मुश्क की बन्द थैली की तरह है।

﴿68﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ فَلْيَسْاَلِ اللهَ بِهِ فَاِنَّهُ سَيَجِيْءُ اَقْوَامٌ يَقْرَئُوْنَ الْقُرْآنَ يَسْاَلُوْنَ بِهِ النَّاسَ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن، باب من قرأ القرآن فلیسال الله به، رقم: ٢٩١٧

68. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े, उसे क़ुरआन के ज़रिए अल्लाह तआला से ही सवाल करना चाहिए। अंक़रीब ऐसे लोग आएंगे जो क़ुरआन मजीद पढ़ेंगे और उसके ज़रिए लोगों से सवाल करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿69﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ اُسَيْدَ بْنَ حُضَيْرٍ، بَيْنَمَا هُوَ، لَيْلَةً، يَقْرَاُ فِيْ مِرْبَدِهِ، اِذْ جَالَتْ فَرَسُهُ، فَقَرَاَ، ثُمَّ جَالَتْ اُخْرٰى، فَقَرَاَ، ثُمَّ جَالَتْ اَيْضًا، قَالَ اُسَيْدٌ: فَخَشِيْتُ اَنْ تَطَاَ يَحْيٰى، فَقُمْتُ اِلَيْهَا، فَاِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فَوْقَ رَاْسِيْ، فِيْهَا اَمْثَالُ السُّرُجِ، عَرَجَتْ فِي الْجَوِّ حَتّٰى مَا اَرَاهَا، قَالَ: فَغَدَوْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ بَيْنَمَا اَنَا الْبَارِحَةَ مِنْ جَوْفِ اللَّيْلِ اَقْرَاُ فِيْ مِرْبَدِيْ، اِذْ جَالَتْ فَرَسِيْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ

ﷺ: اِقْرَا ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَقَرَاْتُ، ثُمَّ جَالَتْ اَيْضًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِقْرَا ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَقَرَاْتُ، ثُمَّ جَالَتْ اَيْضًا. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِقْرَا ابْنَ حُضَيْرٍ! قَالَ: فَانْصَرَفْتُ، وَكَانَ يَحْيٰى قَرِيْبًا مِنْهَا، خَشِيْتُ اَنْ تَطَاَهُ، فَرَاَيْتُ مِثْلَ الظُّلَّةِ، فِيْهَا اَمْثَالُ السُّرُجِ، عَرَجَتْ فِي الْجَوِّ حَتّٰى مَا اَرَاهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تِلْكَ الْمَلَائِكَةُ كَانَتْ تَسْتَمِعُ لَكَ، وَلَوْ قَرَاْتَ لَاَصْبَحَتْ يَرَاهَا النَّاسُ، مَا تَسْتَتِرُ مِنْهُمْ.

رواه مسلم، باب نزول السكينة لقراءة القرآن، رقم: ١٨٥٩

69. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ﷺ अपने बाड़े में एक रात क़ुरआन मजीद पढ़ रहे थे। अचानक उनकी घोड़ी उछलने लगी। उन्होंने और पढ़ा, वह घोड़ी और उछलने लगी। वह पढ़ते रहे, घोड़ी और उछली। हज़रत उसैद ﷺ फ़रमाते हैं मुझे ख़तरा हुआ कि घोड़ी कहीं मेरे बच्चे यह्या को (जो वहीं क़रीब था) कुचल न डाले, इसलिए मैं घोड़ी के क़रीब जाकर खड़ा हो गया, क्या देखता हूं, कि मेरे सर के ऊपर बादल की तरह कोई चीज है जिसमें चिरागों की तरह कुछ चीज़ें रौशन हैं, फिर वह बादल की तरह की चीज़ फ़िज़ा में उठती चली गई, यहां तक कि मेरी नज़रों से ओझल हो गई। मैं सुबह को रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! मैं गुज़िश्ता रात अपने बाड़े में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था, अचानक मेरी घोड़ी उछलने लगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अ़र्ज़ किया : मैं पढ़ता रहा, वह घोड़ी फिर उछली। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अ़र्ज़ किया : मैं पढ़ता रहा फिर भी वह उछलती रही। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इब्ने हुज़ैर! पढ़ते रहते। उन्होंने अ़र्ज़ किया : फिर मैं उठकर चल दिया क्योंकि मेरा लड़का यह्या घोड़ी के क़रीब ही था, मुझे यह ख़तरा हुआ कि घोड़ी कहीं यह्या को कुचल न डाले तो क्या देखता हूं कि बादल की तरह कोई चीज़ है जिसमें चिरागों की तरह कुछ चीज़ें रौशन हैं फिर वह चीज़ फ़िज़ा में उठती चली गई यहां तक कि मेरी नज़रों से ओझल हो गई। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे फ़रिश्ते थे, तुम्हारा क़ुरआन सुनने आए थे, अगर तुम सुबह तक पढ़ते रहते तो और लोग भी उनको देख लेते, वे फ़रिश्ते उनसे छुपे न रहते। (मुस्लिम)

﴿70﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَلَسْتُ فِيْ عِصَابَةٍ مِنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِيْنَ، وَاِنَّ بَعْضَهُمْ لَيَسْتَتِرُ بِبَعْضٍ مِنَ الْعُرْيِ، وَقَارِئٌ يَقْرَأُ عَلَيْنَا اِذْ جَاءَ رَسُوْلُ

اللهِ ﷺ فَقَامَ عَلَيْنَا، فَلَمَّا قَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَكَتَ الْقَارِئُ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُوْنَ؟ قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! إِنَّهُ كَانَ قَارِئٌ لَنَا يَقْرَأُ عَلَيْنَا فَكُنَّا نَسْتَمِعُ إِلَى كِتَابِ اللهِ تَعَالَى، قَالَ: فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ مِنْ أُمَّتِيْ مَنْ أُمِرْتُ أَنْ أَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ قَالَ: فَجَلَسَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَسْطَنَا لِيَعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِيْنَا، ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ هٰكَذَا، فَتَحَلَّقُوْا وَبَرَزَتْ وُجُوْهُهُمْ لَهُ. قَالَ: فَمَا رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَرَفَ مِنْهُمْ أَحَدًا غَيْرِيْ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَبْشِرُوْا يَامَعْشَرَ صَعَالِيْكِ الْمُهَاجِرِيْنَ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ أَغْنِيَاءِ النَّاسِ بِنِصْفِ يَوْمٍ، وَذَالِكَ خَمْسُمِائَةِ سَنَةٍ.

رواه ابوداؤد، باب فی القصص، رقم: ٣٦٦٦

70. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं फ़ुक़रा मुहाजिरीन की एक जमाअ़त में बैठा हुआ था (उन लोगों के पास इतना कपड़ा भी न था कि जिससे पूरा बदन ढांप लें) बाज़ ने बाज़ की आड़ ली हुई थी। और एक सहाबी ﷺ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे कि इस दौरान रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए और बिल्कुल हमारे क़रीब खड़े हुए। रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीफ़ आवरी पर तिलावत करने वाले सहाबी खामोश हो गए। आप ﷺ ने सलाम किया, फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, तुम लोग क्या कर रहे थे? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक तिलावत करने वाले हमारे सामने तिलावत कर रहे थे, हम अल्लाह की किताब की तिलावत तवज्जोह से सुन रहे थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिए है, जिन्होंने मेरी उम्मत में ऐसे लोग बनाए कि उनमें मुझे ठहरने का हुक्म दिया गया। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ हमारे दर्मियान बैठ गए, ताकि सबके बराबर रहें (किसी से क़रीब, किसी से दूर न हों) फिर सबको अपने मुबारक हाथ से हल्क़ा बनाकर बैठने का हुक्म फ़रमाया। चुनांचे सब हल्क़ा बनाकर नबी करीम ﷺ की तरफ़ मुंह करके बैठ गए। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आपने मज्लिस वालों में मेरे अलावा किसी को नहीं पहचाना। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन की जमाअ़त! तुम्हें क़ियामत के दिन कामिल नूर की खुशख़बरी हो और इस बात की भी कि तुम मालदारों से आधे दिन पहले जन्नत में दाख़िल होगे। यह आधा दिन पांच सौ साल का होगा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ को पहचानने और बाक़ी लोगों को न पहचानने की वजह शायद यह होगी कि रात का अंधेरा था और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ चूंकि आपसे क़रीब थे, इसलिए आप ﷺ ने उनको

पहचान लिया। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿71﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِیْ وَقَّاصٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ ھٰذَا الْقُرْآنَ نَزَلَ بِحَزَنٍ فَاِذَا قَرَاْتُمُوْہُ فَابْکُوا، فَاِنْ لَّمْ تَبْکُوْا فَتَبَاکَوْا، وَتَغَنَّوا بِہٖ فَمَنْ لَّمْ یَتَغَنَّ بِہٖ فَلَیْسَ مِنَّا۔

رواہ ابن ماجہ، باب فی حسن الصوت بالقرآن،......رقم: ۱۳۳۷

71. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : यह क़ुरआन करीम फ़िक्र व बेक़रारी (पैदा करने वाले) के लिए नाज़िल हुआ है। जब तुम इसे पढ़ो तो रोया करो, अगर रोना न आए तो रोने वालों-जैसी शक्ल बना लो और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी आवाज़ से पढ़ो, क्योंकि जो शख़्स उसे अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है, यानी हमारी कामिल इत्तिबा करने वालों में से नहीं है। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : उलमा ने इस रिवायत के दूसरे माने यह भी लिखे हैं कि जो शख़्स क़ुरआन करीम की बरकत से लोगों से मुस्तग़नी न हो, वह हम में से नहीं है।

﴿72﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَا اَذِنَ اللّٰہُ لِشَیْءٍ مَا اَذِنَ لِنَبِیٍّ حَسَنِ الصَّوْتِ یَتَغَنّٰی بِالْقُرْآنِ۔

رواہ مسلم، باب استحباب تحسین الصوت بالقرآن، رقم: ۱۸۴۵

72. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इतना किसी की तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाते जितना कि उस नबी की आवाज़ को तवज्जोह से सुनते हैं जो क़ुरआन करीम ख़ुशइल्हानी से पढ़ता है। (मुस्लिम)

﴿73﴾ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: زَیِّنُوْا الْقُرْآنَ بِاَصْوَاتِکُمْ فَاِنَّ الصَّوْتَ الْحَسَنَ یَزِیْدُ الْقُرْآنَ حُسْنًا۔

رواہ الحاکم ۱/۵۷۵

73. हज़रत बरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अच्छी आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ को मुज़ैय्यन करो क्योंकि अच्छी आवाज़ क़ुरआन शरीफ़ के हुस्न को बढ़ा देती है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿74﴾ عَنْ عُقْبَۃَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: اَلْجَاھِرُ

بِالْقُرْآنِ كَالْجَاهِرِ بِالصَّدَقَةِ وَ الْمُسِرُّ بِالْقُرْآنِ كَالْمُسِرِّ بِالصَّدَقَةِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب من قرأ القرآن فليسال الله به، رقم: ٢٩١٩

74. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ुरआन करीम आवाज़ से पढ़ने वाले का सवाब एलानिया सदक़ा करने वाले की तरह है और आहिस्ता पढ़ने वाले का सवाब छुप कर सदक़ा करने वाले की तरह है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ से आहिस्ता पढ़ने की फ़ज़ीलत मालूम होती है, यह इस सूरत में है, जबकि रिया का शुब्हा हो, अगर रिया का शुब्हा न हो और दूसरे को तकलीफ़ का अंदेशा भी न हो तो दूसरी रिवायात की वजह से बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल है कि यह दूसरों के लिए तर्ग़ीब का ज़रिया बनेगा। (शर्हुत्तैय्यिबा)

﴿75﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِاَبِيْ مُوْسٰى: لَوْ رَاَيْتَنِيْ وَ اَنَا اَسْتَمِعُ قِرَاءَتَكَ الْبَارِحَةَ لَقَدْ اُوْتِيْتَ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيْرِ اٰلِ دَاوُدَ۔

رواه مسلم، باب استحباب تحسين الصوت بالقرآن، رقم: ١٨٥٢

75. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम मुझे गुज़िश्ता रात देख लेते जब मैं तुम्हारा क़ुरआन तवज्जोह से सुन रहा था, (तो यक़ीनन ख़ुश होते) तुम को हज़रत दाऊद ﷺ की ख़ुश इल्हानी से हिस्सा मिला है। (मुस्लिम)

﴿76﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُقَالُ يَعْنِيْ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ اِقْرَاْ وَارْقَ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا، فَاِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَاُ بِهَا۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذی ليس فی جوفه من القرآن،......رقم: ٢٩١٤

76. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) साहबे क़ुरआन से कहा जाएगा : क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों पर चढ़ता जा और ठहर ठहर कर पढ़, जैसा कि तू दुनिया में ठहर-ठहर कर पढ़ा करता था। बस तेरा मक़ाम वही होगा जहां तेरी आख़िरी आयत की तिलावत ख़त्म होगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : साहबे क़ुरआन से हाफ़िज़े क़ुरआन या कसरत से तिलावत करने वाला या

क़ुरआन करीम पर तदब्बुर के साथ अ़मल करने वाला मुराद है।

(तैय्यिबी, मिरक़ात)

﴿77﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ، وَالَّذِيْ يَقْرَءُ الْقُرْآنَ وَ يَتَتَعْتَعُ فِيْهِ، وَهُوَ عَلَيْهِ شَاقٌّ لَهُ اَجْرَانِ.

رواه مسلم، باب فضل الماهر بالقرآن والذى يتتعتع فيه، رقم ١٨٦٢

77. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन का हाफ़िज़ जिसे याद भी ख़ूब हो और पढ़ता भी अच्छा हो, उसका हश्र क़ियामत में उन मुअ़ज़्ज़ज़ फ़रमांबरदार फ़रिश्तों के साथ होगा जो क़ुरआन शरीफ़ को लौहे महफ़ूज़ से नक़ल करने वाले हैं और जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ को अटक-अटक कर पढ़ता है और उसमें मशक़्क़त उठाता है, उसके लिए दोहरा अज्र है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अटकने वाले से मुराद वह हाफ़िज़ है जिसे क़ुरआन शरीफ़ अच्छी तरह याद न हो, लेकिन वह याद करने की कोशिश में लगा रहता हो। नीज़ इससे मुराद वह देखकर पढ़ने वाला भी हो सकता है जो देखकर पढ़ने में भी अटकता हो, लेकिन सही पढ़ने की कोशिश कर रहा हो, ऐसे शख़्स के लिए दो अज्र हैं। एक अज्र तिलावत का है, दूसरा अज्र बार-बार अटकने की वजह से मशक़्क़त बरदाश्त करने का है। (तैय्यिबी, मिरक़ात)

﴿78﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَجِيْءُ صَاحِبُ الْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُوْلُ: يَارَبِّ حَلِّهِ فَيُلْبَسُ تَاجَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُوْلُ: يَارَبِّ زِدْهُ، فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ، ثُمَّ يَقُوْلُ: يَارَبِّ ارْضَ عَنْهُ، فَيَرْضٰى عَنْهُ فَيُقَالُ لَهُ اِقْرَاْ وَارْقَ وَيُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةٌ.

رواه الترمذى و قال : هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذى ليس فى جوفه من القرآن كالبيت الخرب، رقم: ٢٩١٥

78. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : साहबे क़ुरआन क़ियामत के दिन (अल्लाह तआ़ला के दरबार में) आएगा तो क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा इसको जोड़ा अ़ता फ़रमाएं, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसको करामत का ताज पहनाया जाएगा। वह फिर दरख़्वास्त करेगा, ऐ मेरे रब! और पहनाइए, तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इकराम का पूरा जोड़ा पहनाया

जाएगा। फिर वह दरख़्वास्त करेगा, ऐ मेरे रब! इस शख़्स से राज़ी हो जाइए तो अल्लाह तआला उससे राज़ी हो जाएंगे। फिर उससे कहा जाएगा, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों पर चढ़ता जा और (उसके लिए) हर आयत के बदले में एक नेकी बढ़ा दी जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴾79﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: اِنَّ الْقُرْآنَ يَلْقٰى صَاحِبَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِيْنَ يَنْشَقُّ عَنْهُ قَبْرُهٗ كَالرَّجُلِ الشَّاحِبِ فَيَقُوْلُ لَهٗ: هَلْ تَعْرِفُنِيْ؟ فَيَقُوْلُ: مَا اَعْرِفُكَ، فَيَقُوْلُ لَهٗ هَلْ تَعْرِفُنِيْ؟ فَيَقُوْلُ: مَا اَعْرِفُكَ، فَيَقُوْلُ: اَنَا صَاحِبُكَ الْقُرْآنُ الَّذِيْ اَظْمَاْتُكَ فِي الْهَوَاجِرِ وَ اَسْهَرْتُ لَيْلَكَ وَ اِنَّ كُلَّ تَاجِرٍ مِنْ وَرَاءِ تِجَارَتِهٖ وَاِنَّكَ الْيَوْمَ مِنْ وَرَاءِ كُلِّ تِجَارَتِهٖ فَيُعْطَى الْمُلْكَ بِيَمِيْنِهٖ وَالْخُلْدَ بِشِمَالِهٖ وَ يُوْضَعُ عَلٰى رَاْسِهٖ تَاجُ الْوَقَارِ وَيُكْسٰى وَالِدَاهُ حُلَّتَيْنِ لَا يُقَوَّمُ لَهُمَا اَهْلُ الدُّنْيَا فَيَقُوْلَانِ: بِمَ كُسِيْنَا هٰذِهٖ؟ فَيُقَالُ: بِاَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ ثُمَّ يُقَالُ لَهٗ: اِقْرَاْ وَاصْعَدْ فِيْ دَرَجَةِ الْجَنَّةِ وَ غُرَفِهَا فَهُوَ فِيْ صُعُوْدٍ مَادَامَ يَقْرَاُ هَذًّا كَانَ اَوْ تَرْتِيْلًا۔ رواه احمد، الفتح الربانی، ١٨/٦٩

79. हज़रत बुरैदा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन जिस वक़्त क़ुरआन वाला अपनी क़ब्र से निकलेगा, तो क़ुरआन उससे इस हालत में मिलेगा जैसे कमज़ोरी की वजह से रंग बदला हुआ आदमी हो और साहिबे क़ुरआन से पूछेगा : क्या तुम मुझे पहचानते हो? वह कहेगा : मैं तुम्हें नहीं पहचानता। क़ुरआन दोबारा पूछेगा : क्या तुम मुझे पहचानते हो? वह कहेगा : मैं तुम्हें नहीं पहचानता। कुरआन कहेगा : मैं तुम्हारा साथी क़ुरआन हूं जिसने तुम्हें सख़्त गर्मी की दोपहर में प्यासा रखा और रात को जगाया (यानी क़ुरआन के हुक्म पर अमल की वजह से तुमने दिन में रोज़ा रखा और रात में क़ुरआन की तिलावत की) हर ताजिर अपनी तिजारत से नफ़ा हासिल करना चाहता है और आज तुम अपनी तिजारत से सबसे ज़्यादा नफ़ा हासिल करने वाले हो। उसके बाद साहिबे क़ुरआन को दाएं हाथ में बादशाहत दी जाएगी और बाएं हाथ में (जन्नत में) हमेशा रहने का परवाना दिया जाएगा। उसके सर पर वक़ार का ताज रखा जाएगा और उसके वालिदैन को दो ऐसे जोड़े पहनाए जाएंगे जिसकी क़ीमत दुनिया वाले नहीं लगा सकते। वालिदैन कहेंगे : हमें ये जोड़े किस वजह से पहनाए गए हैं? उनसे कहा जाएगा : तुम्हारे बच्चे के क़ुरआन हिफ़्ज़ करने की वजह से। फिर साहिबे क़ुरआन से कहा जाएगा : क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के दरजों और बालाख़ानों पर चढ़ता

जा। चुनांचे जब तक वह क़ुरआन पढ़ता रहेगा चाहे रवानी से पढ़े, चाहे ठहर-ठहर कर पढ़े वह (जन्नत के दर्जों और बाला ख़ानों पर) चढ़ता जाएगा।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम का कमज़ोरी की वजह से रंग बदले हुए आदमी की शक्ल में क़ुरआन वाले के सामने आना दरहक़ीक़त यह ख़ुद क़ुरआन वाले का एक नक़्शा है कि उसने रातों को क़ुरआन करीम की तिलावत और दिन में उसके अह्काम पर अ़मल करके अपने आपको कमज़ोर बना लिया था।

(इन्जाहुल हाजः)

﴿80﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ لِلّٰهِ اَهْلِيْنَ مِنَ النَّاسِ قَالُوا: مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ : اَهْلُ الْقُرْآنِ هُمْ اَهْلُ اللهِ وَخَاصَّتُهُ.

رواه الحاكم، وقال الذهبی: روی من ثلاثة اوجه عن انس هذا اجودها ١/٥٥٦

80. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के लिए बाज़ लोग ऐसे हैं जैसे किसी के घर के ख़ास लोग होते हैं। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : वह कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन शरीफ़ वाले कि वह अल्लाह वाले और उसके ख़ास लोग हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿81﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الَّذِيْ لَيْسَ فِيْ جَوْفِهٖ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ان الذی ليس فی جوفه من القرآن......رقم: ٢٩١٣

81. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के दिल में क़ुरआन करीम का कोई हिस्सा भी महफ़ूज़ नहीं वह वीरान घर की तरह है, यानी जैसे मकान की रौनक़ और आबादी, रहने वाले से है ऐसे ही इंसान के दिल की रौनक़ और आबादी क़ुरआन करीम को याद रखने से है। (तिर्मिज़ी)

﴿82﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنِ امْرِیءٍ يَقْرَءُ الْقُرْآنَ ثُمَّ يَنْسَاهُ اِلَّا لَقِيَ اللهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَجْذَمَ.

رواه ابوداؤد، باب التشديد فيمن حفظ القرآن...... رقم: ١٤٧٤

82. हज़रत साद बिन उबादा ﵁ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर भुला दे, तो वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के यहां इस हाल में आएगा कि कोढ़ के मर्ज़ की वजह से उसके अंग-अंग झड़े हुए होंगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : क़ुरआन को भुला देने के कई मतलब ब्यान किए गए हैं। एक यह है कि देखकर भी न पढ़ सके। दूसरा यह है कि ज़बानी न पढ़ सके। तीसरा यह है कि उसकी तिलावत में ग़फ़लत करे। चौथा यह है कि क़ुरआनी हुक्मों को जानने के बाद उसपर अ़मल न करे।

(बज़्लुलमजहूद, शर्हे सुनन अबीदाऊद लिलऐनी)

﴾83﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَفْقَهُ مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ فِيْ اَقَلَّ مِنْ ثَلاثٍ ۔ رواه ابوداؤد، باب تحزيب القرآن، رقم: ١٣٩٤

83. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﵁ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम को तीन दिन से कम में ख़त्म करने वाला उसे अच्छी तरह नहीं समझ सकता। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ का यह इर्शाद अवाम के लिए है, चुनांचे बाज़ सहाबा ﵃ के बारे में तीन दिन से कम में ख़त्म करना भी साबित है। (शर्हुत्तैयिबी)

﴾84﴿ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اُعْطِيْتُ مَكَانَ التَّوْرَاةِ السَّبْعَ وَاُعْطِيْتُ مَكَانَ الزَّبُوْرِ الْمِئِيْنَ واُعْطِيْتُ مَكَانَ الْاِنْجِيْلِ الْمَثَانِيَ وَ فُضِّلْتُ بِالْمُفَصَّلِ۔ رواه احمد ١٠٧/٤

84. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ़ ﵁ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तौरात के बदले में क़ुरआन करीम के शुरू की सात सूरतें और ज़बूर के बदले में "मेईन" यानी उसके बाद की ग्यारह सूरतें और इंजील के बदले में "मसानी" यानी उसके बाद की बीस सूरतें मिली हैं और उसके बाद आख़िर क़ुरआन तक की सूरतें "मुफ़स्सल" मुझे ख़ास तौर पर दी गई हैं। (मुस्नद अहमद)

﴾85﴿ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ ابْنِ عُمَيْرٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فِيْ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ. رواه الدارمی ٥٣٨/٢

85. हज़रत अब्दुल मलिक बिन उमैर रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरः फ़ातिहा में हर बीमारी से शिफ़ा है। (दारमी)

﴿86﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ اَحَدُكُمْ: آمِیْنَ، وَ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ فِی السَّمَاءِ: آمِیْنَ، فَوَافَقَتْ اِحْدَاهُمَا الْاُخْرٰی، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ. رواه البخاری، باب فضل التامین، رقم: ٧٨١

86. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई (सूरः फ़ातिहा के आख़िर में) आमीन कहता है, तो उसी वक़्त फ़रिश्ते आसमान पर आमीन कहते हैं, अगर उस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाती है तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿87﴾ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الْكِلَابِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: يُؤْتٰی بِالْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاَهْلِهِ الَّذِيْنَ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ بِهٖ، تَقْدُمُهُ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ وَآلُ عِمْرَانَ. (الحديث) رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، رقم: ١٨٧٦

87. हज़रत नव्वास बिन समआ़न किलाबी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन क़ुरआन मजीद को लाया जाएगा और वे लोग भी लाए जाएंगे जो उस पर अ़मल किया करते थे। सूरः बक़रः और आले इमरान (जो क़ुरआन की सबसे पहली सूरतें हैं) पेश-पेश होंगी। (मुस्लिम)

﴿88﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَا تَجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ مَقَابِرَ، اِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْفِرُ مِنَ الْبَيْتِ الَّذِیْ تُقْرَاُ فِيْهِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ.

رواه مسلم، باب استحباب الصلاة النافلة فی بيته......، رقم: ١٨٢٤

88. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ, यानी घरों को अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से आबाद रखो। जिस घर में सूरः बक़रः पढ़ी जाती है शैतान उस घर से भाग जाता है। (मुस्लिम)

﴿89﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ:

اِقْرَءُوْا الْقُرْآنَ، فَاِنَّهُ يَاْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيْعًا لِاَصْحَابِهٖ، اِقْرَءُوْا الزَّهْرَاوَيْنِ: الْبَقَرَةَ وَسُوْرَةَ آلِ عِمْرَانَ، فَاِنَّهُمَا يَاْتِيَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، كَاَنَّهُمَا غَمَامَتَانِ، اَوْ كَاَنَّهُمَا غَيَايَتَانِ، اَوْ كَاَنَّهُمَا فِرْقَانِ مِنْ طَيْرٍ صَوَافَّ، تُحَاجَّانِ عَنْ اَصْحَابِهِمَا، اِقْرَءُوا سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، فَاِنَّ اَخْذَهَا بَرَكَةٌ، وَتَرْكَهَا حَسْرَةٌ، وَلَا يَسْتَطِيْعُهَا الْبَطَلَةُ، قَالَ مُعَاوِيَةُ: بَلَغَنِيْ اَنَّ الْبَطَلَةَ السَّحَرَةُ.

رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن و سورة البقرة، رقم: ١٨٧٤

89. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ुरआन मजीद पढ़ो, क्योंकि यह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों का सिफ़ारशी बनकर आएगा। सूरह बक़रः और आले इमरान जो दोनों रौशन सूरतें हैं (ख़ास तौर से) पढ़ा करो क्योंकि ये क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों को अपने साए में लिए इस तरह आएंगी जैसे वह अब्र के दो टुकड़े हों या दो सायबान हों या क़तार बांधे परिन्दों के दो ग़ौल हों, ये दोनों अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करेंगी और ख़ुसूसियत से सूरः बक़रः पढ़ा करो, क्योंकि इसका पढ़ना, याद करना और समझना बरकत का सबब है और इसका छोड़ देना महरूमी की बात है और इस सूरः से ग़लत क़िस्म के लोग फ़ायदा नहीं उठा सकते। मुआ़विया बिन सलाम रह० कहते हैं मुझे यह बात पहुंची है कि ग़लत क़िस्म के लोगों से मुराद जादूगर हैं यानी सूरः बक़रः की तिलावत का मामूल रखने वाले, पर कभी किसी जादूगर का जादू नहीं चलेगा। (मुस्लिम)

﴿90﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ فِيْهَا آيَةٌ سَيِّدَةُ آيِ الْقُرْآنِ لَا تُقْرَاُ فِيْ بَيْتٍ وَ فِيْهِ شَيْطَانٌ اِلَّا خَرَجَ مِنْهُ، آيَةُ الْكُرْسِيِّ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد، الترغيب ٢/٣٧٠

90. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूर : बक़रः में एक आयत है जो क़ुरआन शरीफ़ की तमाम आयतों की सरदार है। वह आयत जैसे ही किसी घर में पढ़ी जाए और वहां शैतान हो तो फ़ौरन निकल जाता है, वह आयतल कुर्सी है। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴿91﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكٰوةِ رَمَضَانَ، فَاَتَانِيْ آتٍ فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ، فَاَخَذْتُهُ وَقُلْتُ : لَاَرْفَعَنَّكَ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، قَالَ: اِنِّيْ مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ وَلِيْ حَاجَةٌ شَدِيْدَةٌ، قَالَ فَخَلَّيْتُ عَنْهُ، فَاَصْبَحْتُ

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا اَبَا هُرَيْرَةَ، مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ الْبَارِحَةَ؟ قَالَ: قُلْتُ : يَارَسُوْلَ اللهِ شَكَا حَاجَةً شَدِيْدَةً وَ عِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ قَالَ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ وَ سَيَعُوْدُ فَعَرَفْتُ اَنَّهُ سَيَعُوْدُ لِقَوْلِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ "اِنَّهُ سَيَعُوْدُ" فَرَصَدْتُهُ، فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ فَاَخَذْتُهُ فَقُلْتُ لَاَرْفَعَنَّكَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ دَعْنِىْ فَاِنِّىْ مُحْتَاجٌ وَعَلَىَّ عِيَالٌ، لَا اَعُوْدُ، فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، فَاَصْبَحْتُ فَقَالَ لِىْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ :يَا اَبَاهُرَيْرَةَ، مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ؟ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، شَكَا حَاجَةً شَدِيْدَةً وَ عِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، قَالَ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ و سَيَعُوْدُ، فَرَصَدْتُهُ الثَّالِثَةَ فَجَعَلَ يَحْثُوْ مِنَ الطَّعَامِ فَاَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لَاَرْفَعَنَّكَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَ هٰذَا آخِرُ ثَلَاثِ مَرَّاتٍ اِنَّكَ تَزْعُمُ لَا تَعُوْدُ ثُمَّ تَعُوْدُ، قَالَ: دَعْنِي اُعَلِّمْكَ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُكَ اللهُ بِهَا، قُلْتُ: مَاهُنَّ؟ قَالَ : اِذَا اَوَيْتَ اِلٰى فِرَاشِكَ فَاقْرَاْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ "اَللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" (البقرة: ٢٥٥) حَتّٰى تَخْتِمَ الْآيَةَ، فَاِنَّكَ لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللهِ حَافِظٌ وَلَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتّٰى تُصْبِحَ، فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، فَاَصْبَحْتُ فَقَالَ لِىْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ الْبَارِحَةَ؟ قُلْتُ : يَا رَسُوْلَ اللهِ، زَعَمَ اَنَّهُ يُعَلِّمُنِىْ كَلِمَاتٍ يَنْفَعُنِى اللهُ بِهَا فَخَلَّيْتُ سَبِيْلَهُ، قَالَ: مَا هِيَ؟ قُلْتُ:قَالَ لِىْ : اِذَا اَوَيْتَ اِلٰى فِرَاشِكَ فَاقْرَاْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ مِنْ اَوَّلِهَا حَتّٰى تَخْتِمَ الْآيَةَ "اَللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" وَقَالَ لِىْ: لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ مِنَ اللهِ حَافِظٌ وَ لَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتّٰى تُصْبِحَ، وَ كَانُوا اَحْرَصَ شَيْءٍ عَلَى الْخَيْرِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَمَا اِنَّهُ قَدْ صَدَقَكَ وَ هُوَ كَذُوْبٌ، تَعْلَمُ مَنْ تُخَاطِبُ مُذْ ثَلَاثِ لَيَالٍ يَا اَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: ذَاكَ شَيْطَانٌ. رواه البخارى، باب اذا وكل رجلا فترك الوكيل شيئا......رقم:٢٣١١ وفى رواية الترمذى عَنْ اَبِىْ اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اِقْرَاْهَا فِي بَيْتِكَ فَلَا يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ وَلَا غَيْرُهُ. رقم: ٢٨٨٠

91. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सदक़ा-ए-फ़ित्र की निगरानी पर मुझे मुक़र्रर फ़रमाया था। एक शख़्स आया और दोनों हाथ भर कर ग़ल्ला लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा : मैं तुझे ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ के पास ले चलूंगा। उसने कहा, मैं एक मुहताज हूं, मेरे ऊपर मेरे अह्ल व अ़याल का बोझ है और मैं सख़्त ज़रूरतमंद हूं। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो नबी करीम ﷺ ने मुझसे फ़रमाया : अबू हुरैरह! तुम्हारे क़ैदी ने कल रात क्या किया? (अल्लाह तआ़ला ने आपको इस वाक़िआ की ख़बर दे दी थी) मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसने अपनी शदीद ज़रूरत और अह्ल व अ़याल के बोझ की शिकायत की, इसलिए मुझे उस पर रहम आया और मैंने उसे

छोड़ दिया। आप ﷺ ने फ़रमाया : ख़बरदार रहना उसने तुम से झूठ बोला है वह दोबारा आएगा। मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के फ़रमान की वजह से यक़ीन हो गया कि वह दोबारा आएगा। चुनांचे मैं उसकी ताक में लगा रहा। (वह आया) और अपने दोनों हाथों से ग़ल्ला भरना शुरू कर दिया। चुनांचे मैंने उसे पकड़ कर कहा, मैं तुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास ज़रूर ले जाऊंगा। उसने कहा, मुझे छोड़ दीजिए मैं ज़रूरतमंद हूं, मेरे ऊपर बाल बच्चों का बोझ है अब आइन्दा मैं नहीं आऊंगा। मुझे उस पर रहम आया और मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से फिर फ़रमाया : अबू हुरैरह! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसने अपनी शदीद ज़रूरत और अह्ल व अयाल के बोझ की शिकायत की इसलिए मुझे उस पर रहम आ गया और मैंने उसको छोड़ दिया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : होशियार रहना! उसने झूठ बोला है वह फिर आएगा। चुनांचे मैं फिर उसकी ताक में रहा। (वह आया) और दोनों हाथों से ग़ल्ला भरने लगा। मैंने उसे पकड़ कर कहा कि मैं तुझे ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ के पास ले जाऊंगा। यह तीसरा और आख़िरी मौक़ा है, तूने कहा था आइन्दा नहीं आऊंगा, मगर तू फिर आ गया। उसने कहा, मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें ऐसे कलिमे सिखाऊंगा कि अल्लाह तआला उनकी वजह से तुम्हें नफ़ा पहुंचाएंगे। मैंने कहा वे कलिमे क्या हैं? उसने कहा जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करो। तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से एक हिफ़ाज़त करने वाला मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा। सुबह को रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे फ़रमाया : तुम्हारे कैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज़ किया : उसने कहा था कि वह मुझे चन्द ऐसे कलिमे सिखाएगा जिनसे अल्लाह तआला मुझे नफ़ा पहुंचाएंगे, तो मैंने इस मर्तबा भी छोड़ दिया। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, वे कलिमे क्या थे। मैंने कहा कि वह यह कह गया, जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने लगो तो आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करो। तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से एक हिफ़ाज़त करने वाला मुक़र्रर रहेगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा। रावी कहते हैं, सहाबा किराम : ख़ैर के कामों पर बहुत ज़्यादा हरीस थे। (इसलिए आख़िरी मर्तबा ख़ैर की बात सुनकर उसे छोड़ दिया।) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ौर से सुनो, अगरचे वह झूठा है लेकिन तुम से सच बोल गया। अबू हुरैरह! तुम जानते हो कि तुम तीन रातों से किस से बातें कर रहे थे? मैंने कहा नहीं! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शैतान था (जो इस तरह मक्र व फ़रेब से सदक़ों के माल में कमी करने आया था)। (बुख़ारी)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी ﷺ की रिवायत में है कि शैतान ने यूं कहा : तुम अपने घर में आयतुल कुर्सी पढ़ा करो, तुम्हारे पास कोई शैतान जिन्न वग़ैरह न आएगा। (तिर्मिज़ी)

﴿92﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا اَبَا الْمُنْذِرِ! اَتَدْرِيْ اَيُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ مَعَكَ اَعْظَمُ؟ قَالَ: قُلْتُ: اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: يَا اَبَا الْمُنْذِرِ! اَتَدْرِيْ اَيُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ مَعَكَ اَعْظَمُ؟ قَالَ: قُلْتُ: "اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ" قَالَ: فَضَرَبَ فِيْ صَدْرِيْ وَ قَالَ: وَاللّٰهِ! لِيَهْنِكَ الْعِلْمُ اَبَا الْمُنْذِرِ. رواه مسلم، باب فضل سورة الكهف وآية الكرسى، رقم: ١٨٨٥ وَفِيْ رِوَايَةٍ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ اِنَّ لَهَا لِسَانًا وَ شَفَتَيْنِ تُقَدِّسُ الْمَلِكَ عِنْدَ سَاقِ الْعَرْشِ.

قُلْتُ: هُوَ فى الصحيح باختصار. رواه احمد ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٣٩/٧

92. हज़रत उबई बिन काब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अबुलमुंज़िर! (यह हज़रत उबई बिन काब ﷺ की कुन्नियत है) क्या तुम जानते हो कि किताबुल्लाह की कौन-सी आयत तुम्हारे पास सबसे ज़्यादा अ़ज़मत वाली है? मैंने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उनके रसूल ही सबसे ज़्यादा जानते हैं। नबी करीम ﷺ ने दोबारा पूछा : अबुलमुंज़िर! क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे पास किताबुल्लाह की सबसे अ़ज़ीम आयत कौन-सी है? मैंने अ़र्ज़ किया : (आयतुल कुर्सी) आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मारा (गोया इस जवाब पर शाबाशी दी) और इर्शाद फ़रमाया : अबुलमंज़िर! तुझे इल्म मुबारक हो। (मुस्लिम)

एक रिवायत में आयतुल कुर्सी के बारे में फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है इस आयत की एक ज़बान और दो होंठ हैं, जो अ़र्श के पाए के पास अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान करते हैं।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿93﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لِكُلِّ شَيْءٍ سَنَامٌ وَ اِنَّ سَنَامَ الْقُرْآنِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ ، وَ فِيْهَا آيَةٌ هِيَ سَيِّدَةُ آيِ الْقُرْآنِ هِيَ آيَةُ الْكُرْسِيِّ.

رواه الترمذى و قال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فى سورة البقرة وآية الكرسى، رقم: ٢٨٧٨

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर चीज़ की कोई चोटी होती है (जो सबसे ऊपर और बालातर होती है) और क़ुरआन

करीम की चोटी सूरः बक़रः है और उसमें एक आयत ऐसी है जो क़ुरआन शरीफ़ की सारी आयतों की सरदार है, वह आयतुल कुर्सी है। (तिर्मिज़ी)

﴿94﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَا جِبْرَئِيْلُ قَاعِدٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، سَمِعَ نَقِيْضًا مِنْ فَوْقِهِ، فَرَفَعَ رَأْسَهُ، فَقَالَ: هٰذَا بَابٌ مِنَ السَّمَاءِ فُتِحَ الْيَوْمَ، لَمْ يُفْتَحْ قَطُّ اِلَّا الْيَوْمَ، فَنَزَلَ مِنْهُ مَلَكٌ فَقَالَ: هٰذَا مَلَكٌ نَزَلَ اِلَى الْاَرْضِ، لَمْ يَنْزِلْ قَطُّ اِلَّا الْيَوْمَ، فَسَلَّمَ وَقَالَ: اَبْشِرْ بِنُوْرَيْنِ اُوْتِيْتَهُمَا لَمْ يُؤْتَهُمَا نَبِيٌّ قَبْلَكَ، فَاتِحَةُ الْكِتَابِ وَخَوَاتِيْمُ سُوْرَةِ الْبَقَرَةِ، لَنْ تَقْرَاَ بِحَرْفٍ مِنْهُمَا اِلَّا اُعْطِيْتَهُ. رواه مسلم، باب فضل الفاتحة......رقم:١٨٧٧

94. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि एक मर्तबा जिबरईल अलैहि० नबी करीम ﷺ के पास बैठे हुए थे, इतने में आसमान से कुछ खड़का सुनाई दिया। उन्होंने सर उठाया और कहा, यह आसमान का एक दरवाज़ा खुला है जो आज से पहले कभी नहीं खुला था। उससे एक फ़रिश्ता उतरा है, यह फ़रिश्ता आज से पहले कभी ज़मीन पर नहीं आया था। उस फ़रिश्ते ने ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अर्ज़ किया : खुशख़बरी हो आपको दो नूर दिए गए हैं जो आपसे पहले किसी नबी को नहीं दिए गए थे। एक सूरः फ़ातिहा, दूसरे सूरः बक़रः की आख़िरी (दो) आयतें। आप उनमें से जो जुम्ला भी पढ़ेंगे, वह आपको मिलेगा।

फ़ायदा : यानी अगर तारीफ़ी जुम्ला है तो तारीफ़ करने का सवाब मिलेगा, और अगर दुआ का जुम्ला है तो दुआ क़ुबूल की जाएगी। (मुस्लिम)

﴿95﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضَ بِاَلْفَيْ عَامٍ اَنْزَلَ مِنْهُ آيَتَيْنِ خَتَمَ بِهِمَا سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، وَلَا يُقْرَآنِ فِيْ دَارٍ ثَلَاثَ لَيَالٍ فَيَقْرَبُهَا شَيْطَانٌ

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في آخر سورة البقرة رقم: ٢٨٨٢

95. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आसमान व ज़मीन की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले अल्लाह तआला ने किताब लिखी। इस किताब में से दो आयतें नाज़िल फ़रमाईं, जिन पर अल्लाह तआला ने सूरः बक़रः को ख़त्म फ़रमाया। ये आयतें जिस मकान में तीन रात तक पढ़ी जाती रहें, शैतान उसके नज़दीक भी नहीं आता। (तिर्मिज़ी)

﴾96﴿ عَنْ اَبِىْ مَسْعُوْدٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ الْاٰيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُوْرَةِ الْبَقَرَةِ فِى لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فى آخر سورة البقرة، رقم: ٢٨٨١

96. हज़रत अ़बू मस्ऊ़द अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सूरः बक़रः की आख़िरी दो आयतें किसी रात में पढ़ ले, तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफ़ी हो जाएंगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : दो आयतों के काफ़ी हो जाने के दो मतलब हैं—एक यह कि उनका पढ़ने वाला उस रात हर बुराई से महफ़ूज़ रहेगा। दूसरा यह कि ये दो आयतें तहज्जुद के क़ायम मक़ाम हो जाएंगी। (नव्वी)

﴾97﴿ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَاْخُذُ مَضْجَعَهُ يَقْرَاُ سُوْرَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ اِلَّا وَكَّلَ اللهُ مَلَكًا فَلَا يَقْرَبُهُ شَيْءٌ يُؤْذِيْهِ حَتّٰى يَهُبَّ مَتٰى هَبَّ.

رواه الترمذى، كتاب الدعوات، رقم: ٣٤٠٧

97. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान भी बिस्तर पर जाकर क़ुरआन करीम की कोई-सी भी सूरत पढ़ लेता है, तो अल्लाह तआ़ला उसकी हिफ़ाज़त के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देते हैं, फिर जब भी वह बेदार हो उसके बेदार होने तक कोई तकलीफ़देह चीज़ उसके क़रीब भी नहीं आती। (तिर्मिज़ी)

﴾98﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ فِىْ لَيْلَةٍ مِائَةَ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِيْنَ.

(وهو بعض الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١/٣٠٨

98. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात में सौ आयतों की तिलावत करे वह उस रात इबादतगुज़ारों में शुमार किया जाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾99﴿ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ وَتَمِيْمٍ الدَّارِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ عَشْرَ آيَاتٍ فِىْ لَيْلَةٍ كُتِبَ لَهُ قِنْطَارٌ وَالْقِنْطَارُ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا.

(الحديث) رواه الطبرانى فى الكبير والاوسط وفيه: اسماعيل بن عياش ولكنه من روايته عن الشاميين وهى مقبولة، مجمع الزوائد ٢/٥٤٧

99. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद और हज़रत तमीम दारी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी रात दस आयतों की तिलावत करे, उसके लिए एक क़िन्तार लिखा जाता है और क़िन्तार दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उन सबसे बेहतर है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿100﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ عَشْرَ آيَاتٍ فِیْ لَيْلَةٍ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبى ١/٥٥٥

100. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात में दस आयतों की तिलावत करे, वह उस रात अल्लाह तआ़ला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿101﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : اِنِّیْ لَاَعْرِفُ اَصْوَاتَ رُفْقَةِ الْاَشْعَرِيِّيْنَ بِالْقُرْآنِ، حِيْنَ يَدْخُلُوْنَ بِاللَّيْلِ، وَاَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ اَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ، وَاِنْ كُنْتُ لَمْ اَرَمَنَازِلَهُمْ حِيْنَ نَزَلُوْا بِالنَّهَارِ.

(الحديث) رواه مسلم، باب من فضائل الاشعريين رضى الله عنهم، رقم: ٦٤٠٧

101. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अशअ़र क़ौम के सफ़र के साथियों के क़ुरआन करीम पढ़ने की आवाज़ को पहचान लेता हूं जबकि वह अपने कामों से वापस आकर रात को अपनी क़ियामगाहों में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं और रात को उनके क़ुरआन मजीद पढ़ने की आवाज़ से उनकी क़ियामगाहों को भी पहचान लेता हूं अगरचे दिन में, मैंने उन्हें उनकी क़ियामगाहों पर उतरते हुए न देखा हो। (मुस्लिम)

﴿102﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ خَشِیَ مِنْكُمْ اَنْ لَا يَسْتَيْقِظَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوْتِرْ مِنْ اَوَّلِهٖ، وَمَنْ طَمِعَ مِنْكُمْ اَنْ يَقُوْمَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوْتِرْ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ، فَاِنَّ قِرَاءَةَ الْقُرْآنِ فِیْ آخِرِ اللَّيْلِ مَحْضُوْرَةٌ، وَهِیَ اَفْضَلُ۔

رواه الترمذى، باب ماجاء فى كراهية النوم قبل الوتر، رقم: ٤٥٥

102. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको यह अंदेशा हो कि वह रात के आख़िरी हिस्से में न उठ सकेगा उसको रात के शुरू में (सोने से पहले) वित्र पढ़ लेना चाहिए और जिसको रात के आख़िरी हिस्से

में उठने की उम्मीद हो उसे रात के आख़िर में वित्र पढ़ने चाहिएं, क्योंकि रात के आख़िरी हिस्से में क़ुरआन करीम की तिलावत के वक़्त फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और उस वक़्त तिलावत करना अफ़ज़ल है। (तिर्मिज़ी)

﴿103﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ ثَلَاثَ آیَاتٍ مِنْ اَوَّلِ الْکَہْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَۃِ الدَّجَّالِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فی فضل سورة الكهف، رقم: ٢٨٨٦

103. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूर : कहफ़ की शुरू की तीन आयतें पढ़ लीं, वह दज्जाल के फ़ित्ने से बचा लिया गया। (तिर्मिज़ी)

﴿104﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ حَفِظَ عَشْرَ آیَاتٍ مِنْ اَوَّلِ سُوْرَۃِ الْکَہْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَۃِ الدَّجَّالِ، وَفِیْ رِوَایَۃٍ: مِنْ آخِرِ الْکَہْفِ۔

رواه مسلم، باب فضل سورة الكهف وآية الكرسی، رقم: ١٨٨٣

85. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूर : कहफ़ की शुरू की दस आयतें याद कर लीं वह दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ हो गया। और एक रिवायत में सूर : कहफ़ की आख़िरी दस आयतों के याद करने का ज़िक्र है। (मुस्लिम)

﴿105﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ الْعَشْرَ الْاَوَاخِرَ مِنْ سُوْرَۃِ الْکَہْفِ فَاِنَّہٗ عِصْمَۃٌ لَہٗ مِنَ الدَّجَّالِ۔

رواه النسائی فی عمل اليوم والليلة، رقم:٩٤٨ قال المحقق:هذا الاسناد رجاله ثقات

105. हज़रत सौबान ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सूर : कहफ़ की आख़िरी दस आयतें पढ़ ले तो यह पढ़ना उसके लिए दज्जाल के फ़ित्ने से बचाव होगा। (अ़मलुलयौम वल्लैल:)

﴿106﴾ عَنْ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ مَرْفُوْعًا: مَنْ قَرَاَ سُوْرَۃَ الْکَہْفِ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ فَہُوَ مَعْصُوْمٌ اِلٰی ثَمَانِیَۃِ اَیَّامٍ مِنْ کُلِّ فِتْنَۃٍ، وَاِنْ خَرَجَ الدَّجَّالُ عُصِمَ مِنْہُ۔

التفسير لابن كثير عن المختارة للحافظ الضياء المقدسی ٧٥/٣

106. हज़रत अ़ली ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स

जुमा के दिन सूर : कहफ़ पढ़ ले, वह आठ दिन तक यानी अगले जुमा तक हर फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा और अगर इस दौरान दज्जाल निकल आए तो यह उसके फ़ित्ने से भी महफ़ूज़ रहेगा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿107﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ قَرَاَ سُوْرَۃَ الْکَھْفِ کَمَا اُنْزِلَتْ کَانَتْ لَہٗ نُوْرًا یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مِنْ مَقَامِہٖ اِلٰی مَکَّۃَ وَمَنْ قَرَاَ عَشْرَ آیَاتٍ مِنْ آخِرِھَا ثُمَّ خَرَجَ الدَّجَّالُ لَمْ یُسَلَّطْ عَلَیْہِ۔

(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبي ١/٥٦٤

107. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने सूरः कहफ़ को (हुरूफ़ की सही अदाइगी के साथ) इस तरह पढ़ा जिस तरह कि वह नाज़िल की गई है तो यह सूरः अपने पढ़ने वाले के लिए क़ियामत के दिन उसके रहने की जगह से लेकर मक्का मुकर्रमा तक नूर बन जाएगी। जिस शख़्स ने इस सूरः की आख़िरी दस आयतों की तिलावत की फिर दज्जाल निकल आया, तो दज्जाल उस पर क़ाबू न पा सकेगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿108﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ یَسَارٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اَلْبَقَرَۃُ سَنَامُ الْقُرْآنِ وَ ذُرْوَتُہٗ، نَزَلَ مَعَ کُلِّ آیَۃٍ مِنْھَا ثَمَانُوْنَ مَلَکًا، وَ اسْتُخْرِجَتْ "اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ" مِنْ تَحْتِ الْعَرْشِ، فَوُصِلَتْ بِسُوْرَۃِ الْبَقَرَۃِ، وَ "یٰسٓ" قَلْبُ الْقُرْآنِ لَا یَقْرَاُھَا رَجُلٌ یُرِیْدُ اللّٰہَ۔ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی۔ وَالدَّارَ الْآخِرَۃَ اِلَّا غُفِرَ لَہٗ وَاقْرَءُوْھَا عَلٰی مَوْتَاکُمْ۔

رواه احمد ٥/٢٦

108. हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ियलाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम की चोटी यानी सबसे ऊंचा हिस्सा सूरः बक़रः है। उसकी हर आयत के साथ अस्सी फ़रिश्ते उतरते हैं और आयतल कुर्सी अर्श के नीचे से निकाली गई है, यानी अल्लाह तआला के ख़ास ख़ज़ाने से नाज़िल हुई है। फिर उसको सूरः बक़रः के साथ मिला दिया गया, यानी उसमें शामिल कर लिया गया और सूरः यासीन क़ुरआन करीम का दिल है। उसको जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत की नीयत से पढ़ेगा, तो यक़ीनन उसकी मग्फ़िरत कर दी जाएगी, लिहाज़ा इस सूरः को अपने मरने वालों के पास पढ़ा करो (ताकि रूह निकलने में आसानी हो)। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में सूरः बक़रः को क़ुरआन करीम की चोटी ग़ालिबन इस वजह से फ़रमाया है कि इस्लाम के बुनियादी उसूल और अक़ाइद और शरीयत के हुक्मों का जितना तफ़्सीली ब्यान सूरः बक़रः में किया गया है उतना और इस तरह क़ुरआन करीम की किसी दूसरी सूरः में नहीं किया गया। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿109﴾ عَنْ جُنْدُبٍ رضِىَ اللهُ عَنهُ قال: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ يٰسٓ فِيْ لَيْلَةٍ ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ غُفِرَ لَهُ. رواه ابن حبان، قال المحقق: رجاله ثقات ٣١٢/٦

109. हज़रत जुंदुब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सूरः यासीन किसी रात में अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए पढ़ी तो उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (इब्ने हब्बान)

﴿110﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَرَأَ الْوَاقِعَةَ كُلَّ لَيْلَةٍ لَمْ يَفْتَقِرْ. رواه البيهقى فى شعب الايمان ٤٩١/٢

110. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने हर रात सूरः वाक़िआ पढ़ी, उस पर फ़क़्र नहीं आएगा। (बैहक़ी)

﴿111﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَنَامُ حَتّٰى يَقْرَأَ الٓمّٓ تَنْزِيْلُ، وَتَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ. رواه الترمذى، باب ماجاء فى فضل سورة الملك، رقم: ٢٨٩٢

111. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ उस वक़्त तक नहीं सोते थे जब तक कि सूरः 'अलिफ़-लाम-मीम सज्दा' (जो इक्कीसवें पारे में है) और 'त-बा-र-कल्लज़ी बियदिहिल मुल्क' न पढ़ लेते। (तिर्मिज़ी)

﴿112﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ سُوْرَةً مِنَ الْقُرْآنِ ثَلَاثُوْنَ آيَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتّٰى غُفِرَ لَهُ وَهِىَ سُوْرَةُ تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ.

(رواه الترمذى و قال: هذا حديث حسن ، باب ماجاء فى فضل سورة الملك،رقم: ٢٨٩١

112. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियलाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ुरआन करीम में एक सूरः तीस आयतों की ऐसी है कि वह अपने पढ़ने वाले की शफ़ाअ़त करती रहती है, यहां तक कि उसकी मग़फ़िरत कर दी जाए। वह

सूरः "त-बा-र-कल्लज़ी" है। (तिर्मिज़ी)

﴾113﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَرَبَ بَعْضُ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ خِبَائَهُ عَلٰى قَبْرٍ وَ هُوَ لَا يَحْسِبُ اَنَّهُ قَبْرٌ، فَاِذَا فِيْهِ قَبْرُ اِنْسَانٍ يَقْرَأُ سُوْرَةَ الْمُلْكِ حَتّٰى خَتَمَهَا، فَاَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّي ضَرَبْتُ خِبَائِيْ وَاَنَا لَا اَحْسِبُ اَنَّهُ قَبْرٌ فَاِذَا فِيْهِ اِنْسَانٌ يَقْرَأُ سُوْرَةَ الْمُلْكِ حَتّٰى خَتَمَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هِيَ الْمَانِعَةُ، هِيَ الْمُنْجِيَةُ تُنْجِيْهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل سورة الملك، رقم: ٢٨٩٠

113. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि किसी सहाबी ﷺ ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया। उनको इल्म न था कि वहां क़ब्र है। अचानक उस जगह किसी को सूरः तबारकल्लज़ी पढ़ते हुए सुना, तो नबी करीम ﷺ से आकर अ़र्ज़ किया कि मैंने एक जगह ख़ेमा लगाया था, मुझे मालूम न था कि वहां क़ब्र है। अचानक मैंने उस जगह किसी को तबारकल्लज़ी आख़िर तक पढ़ते हुए सुना। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह सूरः अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से रोकने वाली है और क़ब्र के अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाली है। (तिर्मिज़ी)

﴾114﴿ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: يُؤْتَى الرَّجُلُ فِيْ قَبْرِهٖ فَتُؤْتٰى رِجْلَاهُ فَتَقُوْلُ رِجْلَاهُ لَيْسَ لَكُمْ عَلٰى مَا قِبَلِيْ سَبِيْلٌ كَانَ يَقُوْمُ يَقْرَأُ بِيْ سُوْرَةَ الْمُلْكِ، ثُمَّ يُؤْتٰى مِنْ قِبَلِ صَدْرِهٖ اَوْ قَالَ بَطْنِهٖ فَيَقُوْلُ لَيْسَ لَكُمْ عَلٰى مَا قِبَلِيْ سَبِيْلٌ كَانَ يَقْرَأُ بِيْ سُوْرَةَ الْمُلْكِ، ثُمَّ يُؤْتٰى رَاْسَهُ فَيَقُوْلُ لَيْسَ لَكُمْ عَلٰى مَا قِبَلِيْ سَبِيْلٌ كَانَ يَقْرَأُ بِيْ سُوْرَةَ الْمُلْكِ، فَهِيَ الْمَانِعَةُ تَمْنَعُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَهِيَ فِي التَّوْرَاةِ سُوْرَةُ الْمُلْكِ، مَنْ قَرَاَهَا فِيْ لَيْلَةٍ فَقَدْ اَكْثَرَ وَاَطْنَبَ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد و لم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤٩٨/٢

114. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि क़ब्र में आदमी पर पैरों की तरफ़ से अ़ज़ाब आता है, तो उसके पैर कहते हैं कि मेरी तरफ़ से आने का कोई रास्ता नहीं, क्योंकि ये सूरः मुल्क पढ़ता था। फिर वह सीने या पेट की तरफ़ से आता है तो सीना या पेट कहता है, मेरी तरफ़ से तेरे लिए आने का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि यह सूरः मुल्क पढ़ा करता था। फिर अ़ज़ाब सिर की तरफ़ से आता है तो सिर कहता है कि तेरे लिए मेरी तरफ़ से आने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि ये सूरः मुल्क पढ़ा करता था। (हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि) यह सूरः क़ब्र के अ़ज़ाब को रोकने वाली है। तौरात में उसका नाम सूरः मुल्क है। जिस शख़्स ने

उसको किसी रात में पढ़ा उसने बहुत ज़्यादा सवाब कमाया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿115﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَنْظُرَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كَاَنَّهُ رَاْىُ عَيْنٍ فَلْيَقْرَاْ: "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" وَ "اِذَاالسَّمَآءُ انْفَطَرَتْ" وَ "اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ".

رواه الترمذي و قال هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة "اِذَالشمس كورت"۔ رقم: ٣٣٣٣

115. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे यह शौक़ हो कि क़ियामत के दिन का मंज़र गोया अपनी आंखों से देख ले तो उसे सूरः **'इज़श-शम्सु कुव्विरत, इज़स्समाउन फ़-तरत, इज़स्समाउन शक़्क़त'** पढ़नी चाहिए (इसलिए कि इन सूरतों में क़ियामत का ब्यान है)।(तिर्मिज़ी)

﴿116﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا زُلْزِلَتْ تَعْدِلُ نِصْفَ الْقُرْآنِ، وَ قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ تَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ، وَقُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ تَعْدِلُ رُبْعَ الْقُرْآنِ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في اذا زلزلت، رقم: ٢٨٩٤

116. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरः 'इज़ा ज़ुलज़िलत' आधे क़ुरआन के बराबर है, सूरः 'क़ुलहुवल्लाहु अहद' एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है और सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' चौथाई क़ुरआन के बराबर है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : क़ुरआन करीम में इंसान की दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी को ब्यान किया गया है और सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' में आख़िरत की ज़िन्दगी का मोअस्सिर अन्दाज़ में ब्यान है, इसलिए यह सूरः आधे क़ुरआन के बराबर है। सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' को एक तिहाई क़ुरआन के बराबर इसलिए फ़रमाया कि क़ुरआन करीम में बुनयादी तौर पर तीन क़िस्म के मज़्मून मज़्कूर हैं : वाक़िआत, अह्कामात, तौहीद। सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' में तौहीद का ब्यान निहायत उम्दा तरीक़े पर किया गया है। सूर : 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' चौथाई क़ुरआन के बराबर इस तौर पर है कि अगर क़ुरआन करीम में तौहीद, नुबुव्वत, अह्काम, वाक़िआत ये चार मज़्मून समझे जाएं, तो इस सूरः में तौहीद का बहुत आला ब्यान है।

बाज़ उलमा के नज़दीक इन सूरतों के आधे, तिहाई और चौथाई क़ुरआन

करीम के बराबर होने का मतलब यह है कि इन सूरतों की तिलावत पर आधे, तिहाई और चौथाई क़ुरआन करीम की तिलावत के बराबर अज्र मिलेगा।

(मज़ाहिरे हक़)

﴿117﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَقْرَاَ اَلْفَ آيَةٍ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ؟ قَالُوْا: وَمَنْ يَسْتَطِيْعُ ذٰلِكَ! قَالَ: اَمَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَقْرَاَ اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ.

رواه الحاكم وقال: رواة هذا الحديث كلهم ثقات و عقبة هذا غير مشهور ووافقه الذهبى ١/٥٦٧

117. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई इस बात की ताक़त नहीं रखता कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें क़ुरआन शरीफ़ की पढ़ लिया करे? सहाबा ने अ़र्ज़ किया : किसमें यह ताक़त है कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें पढ़े? इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें कोई इतना नहीं कर सकता कि सूरः 'अलहाकुमुत्तकासुर' पढ़ लिया करे (कि असका सवाब एक हज़ार आयतों के बराबर है)। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿118﴾ عَنْ نَوْفَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِنَوْفَلٍ: اِقْرَاْ "قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ" ثُمَّ نَمْ عَلٰى خَاتِمَتِهَا فَاِنَّهَا بَرَاءَةٌ مِنَ الشِّرْكِ. رواه ابو داؤد، باب مايقول عند النوم، رقم ٥٠٥٥

118. हज़रत नौफ़ल ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : सूरः 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' पढ़ने के बाद बग़ैर किसी से बात किए हुए सो जाया करो, क्योंकि इस सूरः में शिर्क से बरअत है। (अबूदाऊद)

﴿119﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ اَصْحَابِهِ: هَلْ تَزَوَّجْتَ يَا فُلَانُ؟ قَالَ: لَا، وَاللهِ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَلَا عِنْدِيْ مَا اَتَزَوَّجُ بِهِ قَالَ اَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ، قَالَ: بَلٰى، قَالَ: ثُلُثُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: اَلَيْسَ مَعَكَ اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ؟ قَالَ: بَلٰى، قَالَ: رُبُعُ الْقُرْآنِ، قَالَ: تَزَوَّجْ تَزَوَّجْ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى اذا زلزلت، رقم ٢٨٩٥

119. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा में एक सहाबी से फ़रमाया : ऐ फ़्लां! क्या तुमने शादी कर ली? उन्होंने अ़र्ज़

किया : या रसूलुल्लाह! शादी नहीं की और न मेरे पास इतना माल है कि मैं शादी कर सकूं यानी ग़रीब आदमी हूं। आप ﷺ ने पूछा : तुम्हें सूरः इख़्लास याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : ये (सवाब में) तिहाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें सूरः 'इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि वल-फ़त्ह' याद नहीं? अ़र्ज़ किया, जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : ये (सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें 'क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून' याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी याद है। इर्शाद फ़रमाया : (यह सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है। पूछा : क्या तुम्हें सूर : 'इज़ा ज़ुलज़िलतिल अर्ज़' याद नहीं? अ़र्ज़ किया : जी, याद है। इर्शाद फ़रमाया : यह (सवाब में) चौथाई क़ुरआन (के बराबर) है, शादी कर लो, शादी कर लो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद का मक़सद यह है कि जब तुम्हें ये सूरतें याद हैं तो तुम गरीब नहीं, बल्कि ग़नी हो, लिहाज़ा तुम्हें शादी करनी चाहिए। (आरिज़तुल अह्वज़ी)

﴿120﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: اَقْبَلْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَسَمِعَ رَجُلًا يَقْرَاُ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: وَجَبَتْ، فَسَاَلْتُهُ: مَاذَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: الْجَنَّةُ، قَالَ اَبُوْهُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ: فَاَرَدْتُ اَنْ اَذْهَبَ اِلَى الرَّجُلِ فَاُبَشِّرُهُ ثُمَّ فَرِقْتُ اَنْ يَفُوْتَنِى الْغَدَآءُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَآثَرْتُ الْغَدَآءَ ثُمَّ ذَهَبْتُ اِلَى الرَّجُلِ فَوَجَدْتُهُ قَدْ ذَهَبَ.

رواه امام مالك فى الموطأ، ماجاء فى قراءة قُل هو اللّٰه احد، ص ١٩٣

120. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ आया। आप ﷺ ने एक शख़्स को 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ते हुए सुनकर इर्शाद फ़रमाया : वाजिब हो गई। मैंने पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या वाजिब हो गई? इर्शाद फ़रमाया : जन्नत वाजिब हो गई। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं : मैंने चाहा कि उन साहब के पास जाकर यह ख़ुशख़बरी सुना दूं, फिर मुझे डर हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ दोपहर का खाना न छूट जाए तो मैंने खाने को तरजीह दी (कि आप ﷺ के साथ खाना सआ़दत की बात है) फिर उन साहब के पास गया तो देखा कि वह जा चुके थे। (मालिक)

﴿121﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَيَعْجِزُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَقْرَاَ فِىْ لَيْلَةٍ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ قَالُوْا: وَكَيْفَ يَقْرَاُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ قَالَ "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" يَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ.

رواه مسلم، باب فضل قراءة قل هو اللّٰه احد، رقم: ١٨٨٦

121. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स इस बात से आजिज़ है कि एक रात में तिहाई क़ुरआन पढ़ लिया करे? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : एक रात में तिहाई क़ुरआन कैसे कोई पढ़ सकता है? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' तिहाई क़ुरआन के बराबर है। (मुस्लिम)

﴿122﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ اَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَءَ" قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ " حَتّٰى يَخْتِمَهَا عَشَرَ مَرَّاتٍ بَنَى اللهُ لَهُ قَصْرًا فِي الْجَنَّةِ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: اِذًا اَسْتَكْثِرُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اللهُ اَكْثَرُ وَ اَطْيَبُ. رواه احمد ٤٣٧/٣

122. हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दस मर्तबा सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ी, अल्लाह तआ़ला जन्नत में उसके लिए एक महल बना देंगे। हज़रत उमर : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फिर तो मैं बहुत ज़्यादा पढ़ा करूंगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला भी बहुत ज़्यादा और बहुत उम्दा सवाब देने वाले हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿123﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلًا عَلٰى سَرِيَّةٍ وَكَانَ يَقْرَاُ لِاَصْحَابِهِ فِيْ صَلَاتِهِ فَيَخْتِمُ بِ" قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ" فَلَمَّا رَجَعُوْا ذَكَرُوا ذٰلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: سَلُوْهُ لِاَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذٰلِكَ؟ فَسَاَلُوْهُ فَقَالَ: لِاَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمٰنِ، وَاَنَا اُحِبُّ اَنْ اَقْرَاَ بِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَخْبِرُوْهُ اَنَّ اللهَ يُحِبُّهُ.

رواه البخاری، باب ماجاء فی دعاء النبی ﷺ......رقم: ٧٣٧٥

123. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ब्यान करती हैं कि नबी करीम ﷺ ने एक शख़्स को लश्कर का अमीर बनाकर भेजा। वह अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते और (और जो भी सूरः पढ़ते उसके साथ) अख़ीर में 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' पढ़ते। जब ये लोग वापस हुए तो उन्होंने उसका तज़्किरा नबी करीम ﷺ से किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उनसे पूछो कि यह ऐसा क्यों करते हैं? लोगों ने उनसे पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि इस सूरः में रहमान की सिफ़ात का ब्यान है इसलिए इसे ज़्यादा पढ़ना मुझे महबूब है। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन्हें बता दो कि अल्लाह तआ़ला भी उनसे मुहब्बत फ़रमाते हैं। (बुख़ारी)

﴿124﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ اِذَا اَوٰى اِلٰى فِرَاشِهٖ كُلَّ لَيْلَةٍ جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيْهِمَا فَقَرَاَ فِيْهِمَا: قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ، وَ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، وَقُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ، ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا مَا اسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهٖ، يَبْدَاُ بِهِمَا عَلٰى رَاْسِهٖ وَوَجْهِهٖ وَ مَا اَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهٖ، يَفْعَلُ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ۔

رواه ابو داؤد، باب ما يقول عند النوم، رقم:٥٠٥٦

124. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल था कि जब रात को सोने के लिए लेटते तो दोनों हथेलियों को मिलाते और (क़ुल हुवल्लाहु अहद) और (क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़) और (क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास) पढ़कर हथेलियों में दम फ़रमाते, फिर जहां तक आप ﷺ के मुबारक हाथ पहुंच सकते, उनको मुबारक जिस्म पर फेरते, पहले सर और चेहरे और जिस्म के सामने के हिस्से पर फेरते। यह अ़मल तीन मर्तबा फ़रमाते। (अबूदाऊद)

﴿125﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خُبَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ، فَلَمْ اَقُلْ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: قُلْ، فَلَمْ اَقُلْ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: قُلْ، فَقُلْتُ: مَا اَقُوْلُ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: قُلْ هُوَ اللهُ اَحَدٌ وَ الْمُعَوِّذَتَيْنِ، حِيْنَ تُمْسِيْ وَ حِيْنَ تُصْبِحُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، تَكْفِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ۔

رواه ابو داؤد، باب ما يقول اذا اصبح رقم: ٥٠٨٢

125. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब ﷺ रिवायत करते हैं कि (मुझे) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैं चुप रहा। फिर इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैं चुप रहा। फिर इर्शाद फ़रमाया : कहो, मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या कहूं? इर्शाद फ़रमाया : सुबह शाम 'क़ुल हुवल्लाहु अहद, क़ुल अऊज़ुबिब्बिल फ़लक़, क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास' तीन मर्तबा पढ़ लिया करो, ये सूरतें हर (तकलीफ़ देने वाली) चीज़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगी। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : बाज़ उलमा के नज़दीक इर्शादे नब्वी का मक़सद यह है कि जो लोग ज़्यादा न पढ़ सकें वह कम-से-कम ये तीन सूरतें सुबह व शाम पढ़ लिया करें, यही इन्शाअल्लाह काफ़ी होंगी। (शर्हुत्तैयिबी)

﴿126﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا عُقْبَةَ بْنَ عَامِرٍ! اِنَّكَ لَنْ تَقْرَاَ سُوْرَةً اَحَبَّ اِلَى اللهِ، وَلَا اَبْلَغَ عِنْدَهُ، مِنْ اَنْ تَقْرَاَ "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ لَا تَفُوْتَكَ فِيْ صَلَاةٍ فَافْعَلْ. رواه ابن حبان، قال المحقق: واسناده قوى ٥/١٥٠

126. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (मुझ से)

इर्शाद फ़रमाया : ऐ उक्बा बिन आमिर! तुम अल्लाह तआला के नज़दीक सूरः "कुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़" से ज़्यादा महबूब और उससे ज़्यादा जल्द क़ुबूल होने वाली और कोई सूरः नहीं पढ़ सकते। लिहाज़ा जहां तक तुम से हो सके, उसको नमाज़ में पढ़ना मत छोड़ो। (इब्ने हब्बान)

﴿127﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَمْ تَرَ آيَاتٍ اُنْزِلَتِ اللَّيْلَةَ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ قَطُّ! "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ"۔

رواه مسلم، باب فضل قراءة المعوذتين، رقم: ۱۸۹۱

127. हज़रत उक्बा बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज रात जो आयतें मुझ पर नाज़िल की गईं (वे ऐसी बेमिसाल हैं कि) उन-जैसी आयतें देखने में नहीं आईं। वह सूरः 'कुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़' और सूरः 'कुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास' हैं। (मुस्लिम)

﴿128﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا اَنَا اَسِيْرُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ بَيْنَ الْجُحْفَةِ وَ الْاَبْوَاءِ اِذْ غَشِيَتْنَا رِيْحٌ وَظُلْمَةٌ شَدِيْدَةٌ، فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَتَعَوَّذُ بِ "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" وقُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" وَهُوَ يَقُوْلُ: يَا عُقْبَةُ! تَعَوَّذْ بِهِمَا، فَمَا تَعَوَّذَ مُتَعَوِّذٌ بِمِثْلِهِمَا قَالَ: وَسَمِعْتُهُ يَؤُمُّنَا بِهِمَا فِى الصَّلٰوةِ۔

رواه ابو داؤد، باب في المعوذتين، رقم: ۱٤٦٣

128. हज़रत उक्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं सफ़र में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जुह्फ़ा और अब्वा के दर्मियान चल रहा था कि अचानक आंधी और सख़्त अंधेरा हम पर छा गया। रसूलुल्लाह ﷺ **'कुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़'** और **'कुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास'** पढ़कर अल्लाह तआला की पनाह लेने लगे और मुझ से इर्शाद फ़रमाने लगे : उक्बा! तुम भी ये दो सूरतें पढ़ कर अल्लाह तआला की पनाह लो। किसी पनाह लेने वाले ने उन-जैसी दो सूरतों की तरह किसी चीज़ से पनाह नहीं ली, यानी अल्लाह तआला की पनाह लेने में कोई दुआ ऐसी नहीं है जो इन दो सूरतों की तरह हो। इन ख़ुसूसियात में ये दो सूरतें बेमिसाल हैं। हज़रत उक्बा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इमामत करते वक़्त इन दोनों सूरतों को पढ़ते हुए सुना। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : जुह्फ़ा और अब्वा मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के रास्ते में दो मशहूर मक़ाम थे। (बज़्लुलमज्हूद)

अल्ला तआला के ज़िक्र के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿فَاذْكُرُوْنِىْٓ اَذْكُرْكُمْ﴾ [البقرة: ١٥٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूंगा। यानी दुनिया व आख़िरत में मेरी इनायात और एहसानात तुम्हारे साथ रहेंगे। (बक़रः 152)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا﴾ [المزمل: ٨]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप अपने रब के नाम को याद करते रहा कीजिए और हर तरफ़ से ला-तअल्लुक़ होकर उन्हीं की तरफ़ मुतवज्जह रहिए। (मुज़्ज़म्मिल 8)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ﴾ [الرعد: ٢٨]

एक जगह इर्शाद फ़रमाया : ख़ूब समझ लो, अल्लाह तआला के ज़िक्र ही से दिलों को इत्मीनान हुआ करता है। (राद : 28)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ﴾ [العنكبوت: ٤٥]

एक जगह इर्शाद है : और अल्लाह तआला की याद बहुत बड़ी चीज़ है। (अंकबूत : 45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ﴾

[آلِ عمران: ١٩١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : अक़्लमंद वे लोग हैं जो खड़े और बैठे और लेटे, हर हाल में अल्लाह तआला को याद किया करते हैं। (आले इमरान : 191)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا﴾ [البقرة: ٢٠٠]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तुम अल्लाह तआला का ज़िक्र किया करो जिस तरह तुम अपने बाप-दादा का ज़िक्र किया करते हो, बल्कि अल्लाह तआला का ज़िक्र उससे भी ज़्यादा किया करो। (बक़र: 20)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ﴾ [الاعراف: ٢٠٥]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : सुबह व शाम अपने रब को दिल ही दिल में आजिज़ी, ख़ौफ़ और पस्त आवाज़ से क़ुरआन करीम पढ़कर तस्बीह करते हुए याद करते रहिए, और ग़ाफ़िल न रहिए। (आराफ़ : 205)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ﴾ [يونس: ٦١]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और तुम जिस हाल में होते हो या क़ुरआन में से कुछ पढ़ते हो या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उसमें मसरूफ़ होते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं। (यूनुस : 61)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ○ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ○ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ○ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ﴾ [الشعراء: ٢١٧-٢٢٠]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप, उस ज़बरदस्त रहम करने वाले पर भरोसा रखिए, जो आप को उस वक़्त भी

देखता है जब आप तहज्जुद की नमाज़ के लिए खड़े होते हैं और उस वक़्त भी आपके उठने-बैठने को देखता है जब आप नमाज़ियों में होते हैं। बेशक वही ख़ूब सुनने वाला, जानने वाला है। (शुअ़रा :217-220)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ﴾ [الحديد: ٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे साथ हैं जहां कहीं तुम हो। (हदीद : 4)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ﴾ [الزخرف: ٣٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जो अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल होता है, तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, फिर हर वक़्त वह उसके साथ रहता है। (ज़ुख़्रुफ़ : 36)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ○ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ﴾ [الصافات: ١٤٣، ١٤٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अगर यूनुस عليه السلام मछली के पेट में भी और मछली के पेट में जाने से पहले भी, अल्लाह तआ़ला की कसरत से तस्बीह करने वाले न होते, तो क़ियामत तक मछली के पेट से निकलना नसीब नहीं होता (यानी मछली की ग़िज़ा बन जाते। मछली के पेट में हज़रत युनूस عليه السلام की तस्बीह **'ला इला-ह इल्ला अन-त सुब-हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०'** थी)। (साफ़्फ़ात : 143-144)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ﴾ [الروم: ١٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तो अल्लाह तआ़ला की तस्बीह हर वक़्त किया करो, ख़ुसूसन शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (रूम : 17)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ○ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا﴾ [الاحزاب: ٤١، ٤٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला को बहुत याद किया

करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह ब्यान किया करो। (अह्ज़ाब : 41-42)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿إِنَّ اللهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا﴾ [الاحزاب: ٥٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। (अह्ज़ाब : 56)

यानी अल्लाह तआला अपनी ख़ास रहमत से अपने नबी को नवाज़ते हैं और उस ख़ास रहमत के भेजने के लिए फ़रिश्ते अल्लाह तआला से दुआ किया करते हैं। लिहाज़ा मुसलमानो! तुम भी रसूलुल्लाह ﷺ के लिए उस ख़ास रहमत के नाज़िल होने की दुआ किया करो और आप पर कसरत से सलाम भेजा करो। (अह्ज़ाब)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ قف وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللهُ قف وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ﴾ [ال عمران: ١٣٥-١٣٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : तक़्वा वालों की सिफ़तों में से यह है कि वे लोग जब खुल्लम खुल्ला कोई बेहयाई का काम कर बैठते हैं या और कोई बुरी हरकत करके ख़ास अपनी ज़ात को नुक़्सान पहुंचाते हैं तो उसी लम्हा अल्लाह तआला की अ़ज़्मत व अ़ज़ाब को याद कर लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं, और बात भी यह है कि सिवाए अल्लाह तआला के कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है? और बुरे काम पर वह अड़ते नहीं, और वे यक़ीन रखते हैं (कि तौबा से गुनाह माफ़ हो जाते हैं) यही वे लोग हैं जिनका बदला उनके रब की जानिब से बख़्शिश और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, ये लोग उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे। और काम करने वालों की कैसी अच्छी मज़दूरी है। (आले इमरान : 135-136)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ﴾ [الانفال: ٣٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद फ़रमाया : और अल्लाह तआ़ला की यह शान ही नहीं है कि लोग इस्तिग़्फ़ार करने वाले हों और फिर उनको अ़ज़ाब दें।(अनफ़ाल : 33)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْآ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ [النحل: ١١٩]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : फिर बेशक आप का रब उन लोगों के लिए जो नादानी से कोई बुराई कर बैठें, फिर उस बुराई के बाद वह तौबा कर लें और अपने आ़माल दुरुस्त कर लें, तो बेशक आप का रब उस तौबा के बाद बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (नह्ल : 119)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ﴾ [النمل: ٤٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम लोग अल्लाह तआ़ला से इस्तग़्फ़ार क्यों नहीं करते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (नम्ल : 46)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَ تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾ [النور: ٣١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! तुम सब अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा करो, ताकि तुम भलाई पाओ। (नूर : 31)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْآ اِلَی اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا﴾ [التحريم: ٨]

एक जगह इर्शाद है : ईमान वालो! तुम अल्लाह तआ़ला के सामने सच्चे दिल से तौबा करो (कि दिल में उस गुनाह का ख़्याल भी न रहे)। (तहरीम : 8)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿129﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا عَمِلَ آدَمِیٌّ عَمَلًا اَنْجٰی لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مِنْ ذِكْرِ اللّٰهِ تَعَالٰی، قِيْلَ: وَ لَا الْجِهَادُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ؟ قَالَ: وَلَا الْجِهَادُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِلَّا اَنْ يَضْرِبَ بِسَيْفِهٖ حَتّٰی يَنْقَطِعَ۔

رواه الطبرانی فی الصغير والاوسط و رجالهما رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٧١/١٠

129. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने नबी करीम ﷺ का यह इर्शाद नक़ल

किया है कि अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से बढ़कर किसी आदमी का कोई अ़मल अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाला नहीं है। अ़र्ज़ किया गया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते का जिहाद भी नहीं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद भी अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचाने में अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से बढ़कर नहीं, मगर यह कि कोई ऐसी बहादुरी से जिहाद करे कि तलवार चलाते-चलाते टूट जाए, फिर तो यह अ़मल भी ज़िक्र की तरह अ़ज़ाब से बचाने वाला हो सकता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾130﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ تَعَالٰى: اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ، وَاَنَا مَعَهُ اِذَا ذَكَرَنِيْ فَاِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهُ فِيْ نَفْسِيْ، وَاِنْ ذَكَرَنِيْ فِيْ مَلَاٍ ذَكَرْتُهُ فِيْ مَلَاٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَ اِنْ تَقَرَّبَ اِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ اِلَيْهِ بَاعًا، وَاِنْ اَتَانِيْ يَمْشِيْ اَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً.

رواه البخاری، باب قول الله تعالٰی و یحذّرکم الله نفسه ٧٤٠٥ طبع دارابن كثير بيروت

130. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूं जैसा वह मेरे साथ गुमान करता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूं। अगर वह मेरा मजमा में ज़िक्र करता है तो मैं उस मजमा से बेहतर यानी फ़रिश्तों के मजमा में उसका तज़्किरा करता हूं। अगर बन्दा मेरी तरफ़ एक बालिश्त मुतवज्जह होता है तो मैं एक हाथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। अगर वह मेरी तरफ़ एक हाथ बढ़ता है तो मैं दो हाथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं। अगर वह मेरी तरफ़ चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर आता हूं। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स आ़माले सालिहा के ज़रिए जितना ज़्यादा मेरा क़ुर्ब हासिल करता है, मैं उससे ज़्यादा अपनी रहमत और मदद के साथ उसकी तरफ़ मुतवज्जह होता हूं।

﴾131﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ: اَنَا مَعَ عَبْدِيْ اِذَا هُوَ ذَكَرَنِيْ وَ تَحَرَّكَتْ بِيْ شَفَتَاهُ. رواه ابن ماجه، باب فضل الذكر، رقم: ٣٧٩٢

131. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और उसके होंठ मेरी याद में हिलते रहते हैं, तो मैं उसके साथ होता हूं। (इब्ने माजा)

﴿132﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنَّ شَرَائِعَ الْاِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَاَخْبِرْنِيْ بِشَيْءٍ اَتَشَبَّثُ بِهٖ، قَالَ: لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللهِ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی فضل الذكر، رقم: ٣٣٧٥

132. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ से रिवायत है कि एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अहकाम तो शरीअ़त के बहुत से हैं (जिन पर अ़मल तो ज़रूरी है ही, लेकिन) मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जिसको मैं अपना मामूल बना लूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से हर वक़्त तर रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿133﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ كَلِمَةٍ فَارَقْتُ عَلَيْهَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَخْبِرْنِيْ بِاَحَبِّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ! قَالَ: اَنْ تَمُوْتَ وَ لِسَانُكَ رَطْبٌ مِنْ ذِكْرِ اللهِ تَعَالٰى۔ رواه ابن السنى فى عمل اليوم والليلة، رقم:٢، وقال المحقق: اخرجه البزار كما فى كشف الاستار ولفظه: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ اَخْبِرْنِيْ بِاَفْضَلِ الْاَعْمَالِ وَ اَقْرَبِهَا اِلَى اللهِ...... الحديث و حسن الهيثمى اسناده فى مجمع الزوائد ٧٤/١٠

133. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं मेरी आख़िरी गुफ़्तगू जो रसूलुल्लाह ﷺ से जुदाई के वक़्त हुई, वह यह थी—मैंने पूछा, तमाम आ़माल में महबूब तरीन अ़मल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक क्या है? एक रिवायत में है कि हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा कि मुझे सबसे अफ़ज़ल अ़मल और अल्लाह का सबसे ज़्यादा क़ुर्ब दिलाने वाला अ़मल बताइए। इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मौत इस हाल में आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से तर हो (और यह उसी वक़्त हो सकता है जब ज़िन्दगी में ज़िक्र का इहतिमाम रहा हो)।

(अ़मलुल यौम वल्लैलः, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : जुदाई के वक़्त का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआ़ज़ ﷺ को यमन का अमीर बनाकर भेजा था, उस मौक़े पर यह गुफ़्तगू हुई थी।

﴿134﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَلَا اُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ اَعْمَالِكُمْ وَاَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيْكِكُمْ وَاَرْفَعِهَا فِيْ دَرَجَاتِكُمْ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ اِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرِقِ، وَ خَيْرٍ لَكُمْ مِنْ اَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوْا اَعْنَاقَهُمْ وَ يَضْرِبُوْا اَعْنَاقَكُمْ؟ قَالُوْا: بَلٰى، قَالَ: ذِكْرُ اللهِ تَعَالٰى۔ رواه الترمذى، باب منه كتاب الدعوات، الرقم: ٣٣٧٧

134. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या

मैं तुम को ऐसा अ़मल न बताऊं जो तुम्हारे आ़माल में सबसे बेहतर हो, तुम्हारे मालिक के नज़दीक सबसे ज़्यादा पाकीज़ा, तुम्हारे दर्जों को बहुत ज़्यादा बुलन्द करने वाला, सोने-चांदी को अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करने से भी बेहतर और जिहाद में तुम दुश्मनों को क़त्ल करो, वे तुमको क़त्ल करें उससे भी बढ़ा हुआ हो? सहाबा ः ने अ़र्ज़ किया : ज़रूर बताइए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह अ़मल अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है। (तिर्मिज़ी)

﴿135﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَرْبَعٌ مَنْ اُعْطِيَهُنَّ فَقَدْ اُعْطِيَ خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ: قَلْبًا شَاكِرًا، وَ لِسَانًا ذَاكِرًا، وَ بَدَنًا عَلَى الْبَلَاءِ صَابِرًا، وَ زَوْجَةً لَا تَبْغِيْهِ خَوْنًا فِيْ نَفْسِهَا وَ لَا مَالِهِ.

رواه الطبراني في الكبير والاوسط ورجال الاوسط رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٤/٢ ٥٠

135. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चार चीज़ें ऐसी हैं जिसको वे मिल गईं उसको दुनिया व आख़िरत की हर ख़ैर मिल गई। शुक्र करने वाला दिल, ज़िक्र करने वाली ज़बान, मुसीबतों पर सब्र करने वाला बदन और ऐसी बीवी जो न अपने नफ़्स में ख़ियानत करे, यानी पाक दामन रहे और न शौहर के माल में ख़ियानत करे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿136﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ اِلَّا لِلّٰهِ مَنٌّ يَمُنُّ بِهِ عَلٰى عِبَادِهِ وَ صَدَقَةٌ، وَ مَا مَنَّ اللهُ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ عِبَادِهِ اَفْضَلَ مِنْ اَنْ يُلْهِمَهُ ذِكْرَهُ. (وهو جزء من الحديث) رواه الطبراني في الكبير، و فيه: موسى بن يعقوب الزمعي، وثقه ابن معين وابن حبان، و ضعفه ابن المديني وغيره، وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/ ٤٩٤

136. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रोज़ाना दिन रात बन्दों पर एहसान और सदक़ा होता रहता है, लेकिन कोई एहसान किसी बन्दे पर इससे बढ़कर नहीं कि उसको अल्लाह तआ़ला अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿137﴾ عَنْ حَنْظَلَةَ الْاُسَيْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهِ! اِنْ لَوْ تَدُوْمُوْنَ عَلٰى مَاتَكُوْنُوْنَ عِنْدِيْ، وَفِي الذِّكْرِ، لَصَافَحَتْكُمُ الْمَلَائِكَةُ عَلٰى فُرُشِكُمْ، وَفِيْ طُرُقِكُمْ، وَلٰكِنْ، يَا حَنْظَلَةُ! سَاعَةً وَسَاعَةً ثَلَاثَ مِرَارٍ.

رواه مسلم، باب فضل دوام الذكر،...... رقم: ٦٩٦٦

137. हज़रत हनज़ला उसैदी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुम्हारा हाल वैसा रहे जैसा मेरे पास होता है और तुम हर वक़्त अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशगूल रहो, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुमसे मुसाफ़हा करने लगें, लेकिन हनज़ला बात यह है कि यह कैफ़ियत कभी-कभी होती है। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई, यानी इंसान की एक ही कैफ़ियत हर वक़्त नहीं रहती बल्कि हालात के एतबार से बदलती रहती है। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَيْسَ يَتَحَسَّرُ اَهْلُ الْجَنَّةِ عَلٰى شَيْءٍ اِلَّا عَلٰى سَاعَةٍ مَرَّتْ بِهِمْ لَمْ يَذْكُرُوا اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ فِيْهَا.

رواه الطبرانی فی الکبیر والبیهقی فی شعب الایمان و هو حدیث حسن، الجامع الصغیر ٢/٤٦٨

138. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत वालों को जन्नत में जाने के बाद दुनिया की किसी चीज़ का अफ़सोस नहीं होगा सिवाए उस घड़ी के जो दुनिया में अल्लाह तआला के ज़िक्र के बग़ैर गुज़री होगी। (तबरानी, बैहक़ी, जामेअ् सग़ीर)

﴿139﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَدُّوا حَقَّ الْمَجَالِسِ: اُذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا. (الحدیث) رواه الطبرانی فی الکبیر وهو حدیث حسن، الجامع الصغیر ١/٥٣

139. हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज्लिसों का हक़ अदा किया करो (उसमें से एक यह है कि) अल्लाह तआला का ज़िक्र उनमें कसरत से करो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿140﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا مِنْ رَاكِبٍ يَخْلُوْ فِيْ مَسِيْرِهٖ بِاللّٰهِ وَ ذِكْرِهٖ اِلَّا رَدِفَهٗ مَلَكٌ، وَلَا يَخْلُوْ بِشِعْرٍ وَ نَحْوِهٖ اِلَّا رَدِفَهٗ شَيْطَانٌ.

رواه الطبرانی و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/١٨٥

140. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो सवार अपने सफ़र में दुन्यावी बातों से दिल हटा कर अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान रखता है, तो फ़रिश्ता उसके साथ रहता है और जो शख़्स बेहूदा अशआर या किसी और बेकार काम में लगा रहता है, तो शैतान उसके साथ रहता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿141﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللہُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: مَثَلُ الَّذِیْ یَذْکُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِیْ لَا یَذْکُرُ رَبَّهٗ مَثَلُ الْحَیِّ وَالْمَیِّتِ۔ (رواہ البخاری، باب فضل ذکر اللہ عزوجل، رقم: ٦٤٠٧ وفی روایة لمسلم: مَثَلُ الْبَیْتِ الَّذِیْ یُذْکَرُ اللہُ فِیْهِ وَالْبَیْتُ الَّذِیْ لَا یُذْکَرُ اللہُ فِیْهِ مَثَلُ الْحَیِّ وَ الْمَیِّتِ باب استحباب صلاۃ النافلة فی بیته......، رقم: ١٨٢٣

141. हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता, उन दोनों की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दे की तरह है। ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है। एक रिवायत में यह भी है कि उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाता हो ज़िन्दा शख़्स की तरह है, यानी आबाद है और जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र न होता हो वह मुर्दा शख़्स की तरह है यानी वीरान है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

﴿142﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللہِ ﷺ اَنَّ رَجُلًا سَاَلَهٗ فَقَالَ: اَیُّ الْجِهَادِ اَعْظَمُ اَجْرًا؟ قَالَ: اَکْثَرُهُمْ لِلّٰہِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰی ذِکْرًا قَالَ: فَاَیُّ الصَّائِمِیْنَ اَعْظَمُ اَجْرًا قَالَ: اَکْثَرُهُمْ لِلّٰہِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی ذِکْرًا، ثُمَّ ذَکَرَلَنَا الصَّلٰوۃَ وَالزَّکٰوۃَ وَ الْحَجَّ وَ الصَّدَقَةَ کُلُّ ذٰلِكَ وَرَسُوْلُ اللہِ ﷺ یَقُوْلُ: اَکْثَرُهُمْ لِلّٰہِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰی ذِکْرًا فَقَالَ اَبُوْ بَکْرٍ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ لِعُمَرَ رَضِیَ اللہُ عَنْهُ: یَا اَبَا حَفْصٍ! ذَهَبَ الذَّاکِرُوْنَ بِکُلِّ خَیْرٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: اَجَلْ۔ رواہ احمد ٤٨٣/٣

142. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : कौन से जिहाद का अज्र सबसे ज़्यादा है? इर्शाद फ़रमाया : जिस जिहाद में अल्लाह तआला का ज़िक्र सबसे ज़्यादा हो। पूछा : रोज़ेदारों में सबसे ज़्यादा अज्र किसे मिलेगा? इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा ज़िक्र करने वाला हो। फिर उसी तरह नमाज़, ज़कात, हज और सदक़ा के मुतअल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि वह नमाज़, ज़कात, हज और सदक़ा अफ़ज़ल है जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र ज़्यादा हो। हज़रत अबूबक्र ﷺ ने हज़रत उमर ﷺ से फ़रमाया : अबू हफ़्स! ज़िक्र करने वाले सारी ख़ैर व भलाई ले गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिल्कुल ठीक कहते हो। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : अबू हफ़्स हज़रत उमर ﷺ की कुन्नियत है।

﴾143﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ، قَالُوْا: وَ مَا الْمُفَرِّدُوْنَ یَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْمُسْتَهْتَرُوْنَ فِیْ ذِکْرِ اللهِ یَضَعُ الذِّکْرُ عَنْهُمْ اَثْقَالَهُمْ فَیَاْتُوْنَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ خِفَافًا.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب سبق المفردون......،رقم:٣٥٩٦

143. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुफ़र्रिद लोग बहुत आगे बढ़ गए। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुफ़र्रिद लोग कौन हैं? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मर मिटने वाले, ज़िक्र उनके बोझों को हल्का कर देगा, चुनांचे वे क़ियामत के दिन हल्के-फुल्के आएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴾144﴿ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ اَنَّ رَجُلًا فِیْ حِجْرِهٖ دَرَاهِمُ یُقَسِّمُهَا، وَ آخَرُ یَذْکُرُ اللهَ کَانَ ذِکْرُ اللهِ اَفْضَلَ.

رواہ الطبرانی فی الاوسط و رجاله وثقوا، مجمع الزوائد ١٠/٧٢

144. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर एक शख़्स के पास बहुत-से रुपये हों और वह उनको तक़सीम कर रहा हो और दूसरा शख़्स अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल हो, तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र (करने वाला) अफ़ज़ल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾145﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَکْثَرَ ذِکْرَ اللهِ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ النِّفَاقِ.

رواه الطبرانی فی الصغیر و هو حدیث صحیح، الجامع الصغیر ٢/٥٧٩

145. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र कसरत से करे, वह निफ़ाक़ से बरी है। (तबरानी, जामेअ़ सग़ीर)

﴾146﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَیَذْکُرَنَّ اللهَ قَوْمٌ عَلَی الْفُرُشِ الْمُمَهَّدَةِ یُدْخِلُهُمُ الْجَنَّاتِ الْعُلٰی.

رواہ ابو یعلی و اسنادہ حسن، مجمع الزّوائد ١٠/٨٠

146. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बहुत से लोग ऐसे हैं जो नर्म-नर्म बिस्तरों पर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र

करते हैं, अल्लाह तआला उस ज़िक्र की बरकत से उनको जन्नत के आला दर्जों में पहुंचा देते हैं। (अबूयाला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿147﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا صَلَّى الْفَجْرَ تَرَبَّعَ فِي مَجْلِسِهِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ حَسْنَاءَ. رواه ابو داؤد، باب فى الرجل يجلس متربعا، رقم: ٤٨٥٠

147. हज़रत जाबिर बिन समुरः ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ जब फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होते, तो चार ज़ानू बैठ जाते, यहां तक कि सूरज अच्छी तरह निकल आता। (अबूदाऊद)

﴿148﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُوْنَ اللهَ تَعَالَى مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً مِنْ وُلْدِ إِسْمَاعِيْلَ، وَ لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُوْنَ اللهَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً. رواه ابو داؤد، باب فى القصص، رقم: ٣٦٦٧

148. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सुबह की नमाज़ के बाद से आफ़ताब निकलने तक ऐसी जमाअत के साथ बैठूं, जो अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशगूल हो। यह मुझे हज़रत इस्माईल عليه السلام की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है, इसी तरह मैं अस्र की नमाज़ के बाद से आफ़ताब ग़ुरूब होने तक ऐसी जमाअत के साथ बैठूं जो अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशगूल हो यह मुझे हज़रत इस्माईल عليه السلام की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हज़रत इस्माईल عليه السلام की औलाद का ज़िक्र इसलिए फ़रमाया कि वे अरबों में अफ़ज़ल और शरीफ़ होने की वजह से ज़्यादा क़ीमती हैं।

﴿149﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ مَلَائِكَةً يَطُوْفُوْنَ فِي الطُّرُقِ يَلْتَمِسُوْنَ أَهْلَ الذِّكْرِ، فَإِذَا وَجَدُوْا قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ اللهَ تَنَادَوْا هَلُمُّوْا إِلَى حَاجَتِكُمْ، فَيَحُفُّوْنَهُمْ بِأَجْنِحَتِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، قَالَ: فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ عَزَّ وَجَلَّ، وَ هُوَ أَعْلَمُ مِنْهُمْ: مَا يَقُوْلُ عِبَادِيْ؟ قَالَ: تَقُوْلُ: يُسَبِّحُوْنَكَ وَ يُكَبِّرُوْنَكَ، وَيَحْمَدُوْنَكَ، وَ يُمَجِّدُوْنَكَ فَيَقُوْلُ: هَلْ رَأَوْنِيْ؟ قَالَ فَيَقُوْلُوْنَ: لَا، وَ اللهِ مَا رَأَوْكَ، قَالَ فَيَقُوْلُ: كَيْفَ لَوْ رَأَوْنِيْ؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَوْ رَأَوْكَ كَانُوْا أَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً، وَأَشَدَّ لَكَ تَمْجِيْدًا، وَأَكْثَرَ لَكَ

تَسْبِيْحًا، قَالَ يَقُوْلُ: فَمَا يَسْأَلُوْنِيْ؟ قَالَ: يَسْأَلُوْنَكَ الْجَنَّةَ، قَالَ يَقُوْلُ: وَ هَلْ رَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَا، وَاللهِ يَارَبِّ مَارَاَوْهَا، قَالَ فَيَقُوْلُ: فَكَيْفَ لَوْ اَنَّهُمْ رَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَوْ اَنَّهُمْ رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا وَ اَشَدَّ لَهَا طَلَبًا وَ اَعْظَمَ فِيْهَا رَغْبَةً، قَالَ: فَمِمَّ يَتَعَوَّذُوْنَ؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: مِنَ النَّارِ، قَالَ يَقُوْلُ: وَ هَلْ رَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَا، وَاللهِ يَا رَبِّ مَا رَاَوْهَا، قَالَ يَقُوْلُ: فَكَيْفَ لَوْرَاَوْهَا؟ قَالَ يَقُوْلُوْنَ: لَوْ رَاَوْهَا كَانُوْا اَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا وَاَشَدَّ لَهَا مَخَافَةً، قَالَ فَيَقُوْلُ: فَاُشْهِدُكُمْ اَنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ قَالَ يَقُوْلُ مَلَكٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ: فِيْهِمْ فُلَانٌ لَيْسَ مِنْهُمْ اِنَّمَا جَاءَ لِحَاجَةٍ قَالَ: هُمُ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ۔

رواه البخاري، باب فضل ذكر الله عزّوجل، رقم:٦٤٠٨

149. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़रिश्तों की एक जमाअ़त है, जो रास्तों में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने वालों की तलाश में घूमती फिरती है। जब वे किसी ऐसी जमाअ़त को पा लेते हैं जो अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मसरूफ़ होती है तो एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि आओ यहां तुम्हारी मतलूबा चीज़ है। उसके बाद वे सब फ़रिश्ते मिलकर आसमाने दुनिया तक उन लोगों को अपने परों से घेर लेते हैं। अल्लाह तआ़ला उन फ़रिश्तों से पूछते हैं, जबकि अल्लाह तआ़ला उन फ़रिश्तों से ज़्यादा बाख़बर हैं कि मेरे बन्दे क्या कह रहे हैं? फ़रिश्ते जवाब में कहते हैं : वे आपकी पाकी, बड़ाई, तारीफ़ और बुज़ुर्गी ब्यान करने में मशगूल हैं। फिर अल्लाह तआ़ला उन फ़रिश्तों से पूछते हैं, क्या उन्होंने मुझे देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं : अल्लाह की क़सम! उन्होंने आप को देखा तो नहीं। इर्शाद होता है कि अगर देख लेते तो क्या हाल होता? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर वह आप को देख लेते तो और भी ज़्यादा इबादत में मशगूल होते और इससे भी ज़्यादा आपकी तस्बीह और तारीफ़ करते। फिर अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है कि वे मुझसे क्या मांग रहे हैं? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि वे आप से जन्नत का सवाल कर रहे हैं। इर्शाद होता है : क्या उन्होंने जन्नत को देखा है? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अल्लाह की क़सम! ऐ रब! उन्होंने जन्नत को देखा तो नहीं। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है कि अगर वह जन्नत को देख लेते तो उनका क्या हाल होता? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर वह उसको देख लेते तो उससे भी ज़्याया जन्नत के शौक़, तमन्ना और उसकी तलब में लग जाते। फिर अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है : किस चीज़ से पनाह मांग रहे हैं? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : वे जहन्नम से पनाह मांग रहे हैं। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है : क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते

हैं : अल्लाह की क़सम! ऐ रब! उन्होंने देखा तो नहीं। इर्शाद होता है : अगर देख लेते तो क्या हाल होता? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : अगर देख लेते तो और भी ज़्यादा उससे डरते और भागने की कोशिश करते। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद होता है : अच्छा तुम गवाह रहो मैंने इन मज्लिस वालों को बख़्श दिया। एक फ़रिश्ता एक शख़्स के बारे में अ़र्ज़ करता है कि वह शख़्स अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र करने वालों में शामिल नहीं था, बल्कि वह अपनी किसी ज़रूरत से मज्लिस में आया था (और उनके साथ बैठ गया था)। इर्शाद होता है : ये लोग ऐसी मज्लिस वाले हैं कि उनके साथ बैठने वाला भी (अल्लाह तआ़ला की रहमत से) महरूम नहीं होता। (बुख़ारी)

﴾150﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ لِلّٰهِ سَيَّارَةً مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَطْلُبُوْنَ حِلَقَ الذِّكْرِ، فَاِذَا اَتَوا عَلَيْهِمْ وَ حَفُّوْا بِهِمْ، ثُمَّ بَعَثُوا رَائِدَهُمْ اِلَى السَّمَاءِ اِلٰى رَبِّ الْعِزَّةِ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى، فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا اَتَيْنَا عَلٰى عِبَادٍ مِنْ عِبَادِكَ يُعَظِّمُوْنَ آلَاءَكَ، وَ يَتْلُوْنَ كِتَابَكَ، وَيُصَلُّوْنَ عَلٰى نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَ يَسْاَلُوْنَكَ لِآخِرَتِهِمْ وَدُنْيَاهُم، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: غَشُّوْهُمْ رَحْمَتِيْ، فَيَقُوْلُوْنَ: يَا رَبِّ، اِنَّ فِيْهِمْ فُلَانًا الْخَطَّاءُ اِنَّمَا اعْتَنَقَهُمْ اِعْتِنَاقًا، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: غَشُّوْهُمْ رَحْمَتِيْ، فَهُمُ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ۔

رواه البزار من طريق زائدة بن ابى الرقاد، عن زياد النميرى، و كلاهما وثق على ضعفه، فعاد هذا اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٧٧

150. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्तों की चलने फिरने वाली एक जमाअ़त है जो ज़िक्र के हल्क़ों की तलाश में होती है। जब वह ज़िक्र के हल्क़ों के पास आती है और उनको घेर लेती है तो अपना एक क़ासिद (पैग़ाम देकर) अल्लाह तआ़ला के पास आसमान पर भेजती है। वह उन सबकी तरफ़ से अ़र्ज़ करता है : हमारे रब! हम आपके उन बन्दों के पास से आए हैं जो आपकी नेमतों (क़ुरआन, ईमान, इस्लाम) की बड़ाई ब्यान कर रहे हैं, आपकी किताब की तिलावत कर रहे हैं, आपके नबी मुहम्मद ﷺ पर दुरूद शरीफ़ भेज रहे हैं और अपनी आख़िरत और दुनिया की भलाई आप से मांग रहे हैं। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाते हैं : उनको मेरी रहमत से ढांप दो। फ़रिश्ते कहते हैं : हमारे रब! उनके साथ-साथ एक गुनहगार बन्दा भी था। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : उन सबको मेरी रहमत से ढांप दो, क्योंकि यह ऐसे लोगों की मज्लिस

है कि उनमें बैठने वाला भी (अल्लाह तआ़ला की रहमत से) महरूम नहीं होता।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿151﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ قَوْمٍ اجْتَمَعُوْا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ لَا يُرِيْدُوْنَ بِذٰلِكَ اِلَّا وَجْهَهُ اِلَّا نَادَاهُمْ مُنَادٍ مِنَ السَّمَآءِ اَنْ قُوْمُوْا مَغْفُوْرًا لَّكُمْ، فَقَدْ بُدِّلَتْ سَيِّئَاتُكُمْ حَسَنَاتٍ۔ رواه احمد وابو يعلى والبزار والطبرانى فى الاوسط،

وفيه: ميمون المرئى، وثقه جماعة، وفيه ضعف، وبقية رجال رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ۷۵/۱۰

151. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के लिए जमा हों, और उनका मक़सूद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की रज़ा हो तो आसमान से एक फ़रिश्ता (अल्लाह तआ़ला के हुक्म से उस मज्लिस के ख़त्म होने पर) एलान करता है कि बख़्शे-बख़्शाए उठ जाओ। तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया गया है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, अबू याला, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿152﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ وَ اَبِىْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِىِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ، وَ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ، وَ ذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيْمَنْ عِنْدَهُ۔

رواه مسلم، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن......،رقم: ٦٨٥٥

152. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ दोनों हज़रात इस बात की गवाही देते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो जमाअ़त अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल हो, फ़रिश्ते उस जमाअ़त को घेर लेते हैं, रहमत उनको ढांप लेती है, सकीनत उनपर नाज़िल होती है और अल्लाह तआ़ला उनका तज़्किरा फ़रिश्तों की मज्लिस में फ़रमाते हैं। (मुस्लिम)

﴿153﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ : لَيَبْعَثَنَّ اللّٰهُ اَقْوَامًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِىْ وُجُوْهِهِمُ النُّوْرُ عَلٰى مَنَابِرِ اللُّؤْلُؤِ، يَغْبِطُهُمُ النَّاسُ، لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ وَ لَا شُهَدَاءَ قَالَ: فَجَثَا اَعْرَابِىٌّ عَلٰى رُكْبَتَيْهِ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! حَلِّهِمْ لَنَا نَعْرِفْهُمْ، قَالَ: هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ فِى اللّٰهِ، مِنْ قَبَائِلَ شَتّٰى وَ بِلَادٍ شَتّٰى يَجْتَمِعُوْنَ عَلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ يَذْكُرُوْنَهُ۔

رواه الطبرانى واسناده حسن، مجمع الزوائد ۷۷/۱۰

153. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला बाज़ लोगों का हश्र इस तरह फ़रमाएंगे कि उनके चेहरों पर नूर चमकता हुआ होगा, वे मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करते होंगे, वे अम्बिया और शुहदा नहीं होंगे। एक देहात के रहने वाले (सहाबी) ने घुटनों के बल बैठ कर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उनका हाल ब्यान कर दीजिए कि हम उनको पहचान लें। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे लोग होंगे जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों से मुख़्तलिफ़ जगहों से आकर एक जगह जमा हो गए हों और अल्लाह तआला के ज़िक्र में मशग़ूल हों।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿154﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: عَنْ يَمِيْنِ الرَّحْمٰنِ-وَكِلْتَا يَدَيْهِ يَمِيْنٌ-رِجَالٌ لَيْسُوا بِاَنْبِيَاءَ،وَلَا شُهَدَاءَ، يَغْشَى بَيَاضُ وُجُوهِهِمْ نَظَرَ النَّاظِرِيْنَ، يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ بِمَقْعَدِهِمْ، وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ، قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمْ جُمَّاعٌ مِنْ نَوَازِعِ الْقَبَائِلِ، يَجْتَمِعُوْنَ عَلٰى ذِكْرِ اللهِ، فَيَنْتَقُوْنَ اَطَايِبَ الْكَلَامِ، كَمَا يَنْتَقِيْ آكِلُ التَّمْرِ اَطَايِبَهُ.

رواه الطبرانی و رجاله موثقون، مجمع الزوائد ۱۰/۷۸

154. हज़रत अम्र बिन अ़बसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : रहमान के दाहिनी तरफ़। और उनके दोनों ही हाथ दाहिने हैं। कुछ ऐसे होंगे कि वे न तो नबी होंगे न शहीद, उनके चेहरों की नूरानियत देखने वालों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह रखेगी, उनके बुलन्द मक़ाम और अल्लाह तआला से उनके क़रीब होने की वजह से अम्बिया और शुहदा भी उन पर रश्क करते होंगे। पूछा गया : या रसूलुल्लाह! वे कौन लोग होंगे? इर्शाद फ़रमाया : ये वह लोग होंगे जो मुख़्तलिफ़ खानदानों से अपने घर वालों और रिश्तेदारों से दूर होकर अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए (एक जगह) जमा होते थे और ये सब इस तरह छांट-छांट कर अच्छी बातें करते थे, जैसे खजूरें खाने वाला (खजूरों के ढेर में से) अच्छी खूजूरें छांट कर निकालता रहता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में रहमान के दाहिने तरफ़ होने से मुराद यह है कि उन लोगों का अल्लाह तआला के यहां ख़ास मक़ाम होगा। रहमान के दोनों हाथ दाहिने हैं का मतलब यह है कि जैसे दाहिना हाथ ख़ूबियों वाला है, ऐसे

ही अल्लाह तआ़ला की ज़ात में ख़ूबियां ही हैं।

अम्बिया ﷺ और शुहदा का उन पर रश्क करना उन लोगों के इस ख़ास अ़मल की वजह से होगा अगरचे हज़रात अम्बिया ﷺ और शुहदा का दर्जा उनसे कहीं ज़्यादा होगा। (मज्मअ़ुबहारुल अनवार)

﴾155﴿ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَ هُوَ فِيْ بَعْضِ اَبْيَاتِهٖ﴿وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ﴾ خَرَجَ يَلْتَمِسُ فَوَجَدَ قَوْمًا يَذْكُرُوْنَ اللهَ مِنْهُمْ ثَائِرُ الرَّأْسِ وَ جَافُّ الْجِلْدِ وَ ذُوالثَّوْبِ الْوَاحِدِ فَلَمَّا رَآهُمْ جَلَسَ مَعَهُمْ فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ فِيْ اُمَّتِيْ مَنْ اَمَرَنِيْ اَنْ اَصْبِرَ نَفْسِيْ مَعَهُمْ۔ رواه الطبرانی ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٧/٨٩

155. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन सह्ल बिन हुनैफ़ ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ अपने घर में थे कि आप पर यह आयत उतरी : तर्जुमा : अपने आपको उन लोगों के पास (बैठने का) पाबन्द कीजिए जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं। नबी करीम ﷺ इस आयत के नाज़िल होने पर उन लोगों की तलाश में निकले। एक जमाअ़त को देखा कि अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मशग़ूल है। बाज़ लोग उनमें बिखरे हुए बालों वाले, ख़ुश्क खालों वाले और सिर्फ़ एक कपड़े वाले हैं (कि सिर्फ़ एक लुंगी उनके पास है) जब नबी करीम ﷺ ने उनको देखा तो उनके पास बैठ गए और इर्शाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं, जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़रमाए कि मुझे ख़ुद उनके पास बैठने का हुक्म फ़रमाया है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴾156﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا غَنِيْمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ؟ قَالَ: غَنِيْمَةُ مَجَالِسِ الذِّكْرِ الْجَنَّةُ الْجَنَّةُ۔

رواه احمد و الطبرانی واسناد احمد حسن، مجمع الزوائد ١٠/٧٨

156. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़िक्र की मज्लिस का क्या अज्र व इनाम है? इर्शाद फ़रमाया : ज़िक्र की मज्लिस का अज्र व इनाम जन्नत है, जन्नत।(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾157﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ عَزَّ

وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، سَيَعْلَمُ اَهْلُ الْجَمْعِ مَنْ اَهْلُ الْكَرَمِ، فَقِيْلَ: وَ مَنْ اَهْلُ الْكَرَمِ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: مَجَالِسُ الذِّكْرِ فِي الْمَسَاجِدِ.

رواه احمد باسنادين واحدهما حسن وابو يعلى كذلك، مجمع الزوائد ١٠/٧٥

157. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआला एलान फ़रमाएंगे कि आज क़ियामत के दिन मैदान में जमा होने वालों को मालूम हो जाएगा कि इज़्ज़त व एहतराम वाले कौन लोग हैं। अर्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! ये इज़्ज़त व एहतराम वाले कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : मसाजिद में ज़िक्र की मज्लिसों (वाले)।

(मुस्नद अहमद, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿158﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوْا، قَالُوْا: وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: حِلَقُ الذِّكْرِ.

رواه الترمذى، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب حديث فى أسماء الله الحسنى، رقم: ٣٥١٠

158. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो तो ख़ूब चरो। सहाबा : ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : ज़िक्र के हल्क़े। (तिर्मिज़ी)

﴿159﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ خَرَجَ عَلٰى حَلْقَةٍ مِنْ اَصْحَابِهِ فَقَالَ: مَا اَجْلَسَكُمْ؟ قَالُوا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللهَ وَ نَحْمَدُهُ عَلٰى مَا هَدَانَا لِلْاِسْلَامِ، وَ مَنَّ بِهِ عَلَيْنَا، قَالَ: آللهِ! مَا اَجْلَسَكُمْ اِلَّا ذَاكَ؟ قَالُوْا: وَ اللهِ! مَا اَجْلَسَنَا اِلَّا ذَاكَ، قَالَ: اَمَا اِنِّيْ لَمْ اَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ، وَ لٰكِنَّهُ اَتَانِيْ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَاَخْبَرَنِيْ اَنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِيْ بِكُمُ الْمَلَائِكَةَ.

رواه مسلم، باب فضل الاجتماع على تلاوة القرآن وعلى الذكر، رقم: ٦٨٥٧

159. हज़रत मुआ़विया ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सहाबा के एक हल्क़े में तशरीफ़ ले गए और उनसे दरयाफ़्त फ़रमाया : हम लोग अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने और इस बात का शुक्र अदा करने के लिए बैठे हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हम को इस्लाम की हिदायत देकर हम पर एहसान किया है। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! क्या तुम सिर्फ़ इसी वजह से बैठे हो? सहाबा : ने अर्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला की क़सम! सिर्फ़ इसीलिए बैठे हैं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : मैंने तुम्हें झूठा समझ कर क़सम नहीं ली, बल्कि बात यह है कि जिबरईल ﷺ मेरे पास आए थे और यह ख़बर सुना गए कि अल्लाह तआ़ला तुम लोगों की वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं। (मुस्लिम)

﴿160﴾ عَنْ اَبِىْ رَزِيْنٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰى مِلَاكِ هٰذَا الْاَمْرِ الَّذِىْ تُصِيْبُ بِهٖ خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ؟ عَلَيْكَ بِمَجَالِسِ اَهْلِ الذِّكْرِ وَ اِذَا خَلَوْتَ فَحَرِّكْ لِسَانَكَ مَا اسْتَطَعْتَ بِذِكْرِ اللهِ.

(الحديث) رواه البيهقى فى شعب الايمان، مشكوة المصابيح رقم: ٥٠٢٥

160. हज़रत अबू रज़ीन ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमको दीन की बुनियादी चीज़ न बताऊं जिससे तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल कर लो? अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करने वालों की मज्लिसों में बैठा करो और तन्हाई में भी जितना हो सके अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में अपनी ज़बान को हरकत में रखो। (बैहक़ी, मिश्कात)

﴿161﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَىُّ جُلَسَائِنَا خَيْرٌ؟ قَالَ: مَنْ ذَكَّرَكُمُ اللهَ رُؤْيَتُهُ وَزَادَ فِى عَمَلِكُمْ مَنْطِقُهُ، وَذَكَّرَكُمْ بِالْاٰخِرَةِ عَمَلُهُ.

رواه ابويعلى وفيه مبارك بن حسان، وقد وثق وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٩

161. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया गया : हमारे लिए किस शख़्स के पास बैठना बेहतर है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको देखने से तुम्हें अल्लाह तआ़ला याद आएं, जिसकी बात से तुम्हारे अ़मल में तरक़्क़ी हो और जिसके अ़मल से तुम्हें आख़िरत याद आ जाए।

(अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿162﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَكَرَ اللهَ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ حَتّٰى يُصِيْبَ الْاَرْضَ مِنْ دُمُوْعِهٖ لَمْ يُعَذِّبْهُ اللهُ تَعَالٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الحاكم و قال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه و وافقه الذهبى ٤/٢٦٠

162. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करे और अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से उसकी आंखों से कुछ आंसू ज़मीन पर गिर पड़ें तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब नहीं देंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿163﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَیْسَ شَیْءٌ اَحَبَّ اِلَی اللّٰهِ مِنْ قَطْرَتَیْنِ وَ اَثَرَیْنِ: قَطْرَةٌ مِنْ دُمُوْعٍ مِنْ خَشْیَةِ اللّٰهِ، وَقَطْرَةُ دَمٍ تُهْرَاقُ فِی سَبِیْلِ اللّٰهِ، وَاَمَّا الْاَثَرَانِ فَاَثَرٌ فِی سَبِیْلِ اللّٰهِ وَاَثَرٌ فِی فَرِیْضَةٍ مِنْ فَرَائِضِ اللّٰهِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی فضل المرابط، رقم: ١٦٦٩

1 3. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला को दो क़तरे और दो निशानों से ज़्यादा कोई चीज़ महबूब नहीं। एक ―पू का क़तरा जो अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से निकले, दूसरा ख़ून का क़तरा जो ― लाह तआला के रास्ते में बह जाए और दो निशानों में एक अल्लाह तआला का कोई निशान (जैसे ज़ख़्म या अल्लाह तआला के रास्ते में चलने का निशान) और ए वह निशान जो अल्लाह तआला के किसी फ़रीज़े की अदाइगी में पड़ गया हो (जैसे सज्दा या सफ़रे हज वग़ैरह का कोई निशान)। (तिर्मिज़ी)

﴿164﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: سَبْعَةٌ یُظِلُّهُمُ اللّٰهُ فِی ظِلِّهِ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّهُ: اِمَامٌ عَدْلٌ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِی عِبَادَةِ اللّٰهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِی الْمَسَاجِدِ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِی اللّٰهِ، اجْتَمَعَا عَلَیْهِ وَ تَفَرَّقَا عَلَیْهِ، وَ رَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَاَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ: اِنِّیْ اَخَافُ اللّٰهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَاَخْفَاهَا حَتّٰی لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ یَمِیْنُهُ وَ رَجُلٌ ذَکَرَ اللّٰهَ خَالِیًا فَفَاضَتْ عَیْنَاهُ۔

رواه البخاری، باب الصدقة بالیمین، رقم: ١٤٢٣

1(. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात आदमी हैं जिनको अल्लाह तआला अपनी रहमत के साए में ऐसे दिन जगह अता फ़ ाएंगे, जिस दिन उसके साए के अलावा कोई साया न होगा—1. आदिल बा-शाह, 2. वह जवान जो जवानी में अल्लाह तआला की इबादत करता हो, 3. वह शख़्स जिसका दिल हर वक़्त मस्जिद में लगा रहता हो, 4. दो ऐसे शख़्स जो अल्लाह त ला के लिए मुहब्बत रखते हों, उनके मिलने और जुदा होने की बुनियाद यही हो, 5. वह शख़्स जिसको कोई ऊंचे ख़ानदान वाली हसीन औरत अपनी तरफ़ मुतवज्जह क और वह कह दे, मैं तो अल्लाह तआला से डरता हूं, 6. वह शख़्स जो इस तरह छुप। कर सदक़ा करे कि बाएं हाथ को भी ख़बर न हो कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है, 7. वह शख़्स जो अल्लाह तआला का ज़िक्र तन्हाई में करे और आंसू बहने लगे (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ یَذْکُرُوا اللهَ فِیْهِ وَ لَمْ یُصَلُّوا عَلٰی نَبِیِّهِمْ اِلَّا کَانَ عَلَیْهِمْ تِرَةً فَاِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَاِنْ شَاءَ غَفَرَلَهُمْ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء فی القوم یجلسون ولا یذکرون الله، رقم ٣٣٨٠

165. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी मज्लिस में बैठें, जिसमें न अल्लाह तआला का ज़िक्र करें और न अपने नबी पर दुरूद भेजें, तो वह मज्लिस उनके लिए क़ियामत के दिन ख़सारे का सबब होगी। अब यह अल्लाह तआला को इख़्तियार है, चाहे उनको अज़ाब दें, चाहे माफ़ फ़रमा दें। (तिर्मिज़ी)

﴿166﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَعَدَ مَقْعَدًا لَمْ یَذْکُرِ اللهَ فِیْهِ کَانَتْ عَلَیْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَا یَذْکُرُ اللهَ فِیْهِ کَانَتْ عَلَیْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ۔ رواه ابوداؤد، باب کراهیة ان یقوم الرجل من مجلسه ولا یذکر الله، رقم: ٤٨٥٦

166. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मज्लिस में बैठे, जिसमें अल्लाह तआला का ज़िक्र न करे तो वह मज्लिस उसके लिए नुक़सानदेह होगी और जो शख़्स लेटने के वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र न करे, तो यह लेटना भी उसके लिए नुक़सानदेह होगा। (अबूदाऊद)

﴿167﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا قَعَدَ قَوْمٌ مَقْعَدًا لَا یَذْکُرُوْنَ اللهَ فِیْهِ وَ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ، اِلَّا کَانَ عَلَیْهِمْ حَسْرَةٌ یَوْمَ الْقِیَامَةِ، وَ اِنْ اُدْخِلُوْا الْجَنَّةَ لِلثَّوَابِ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: إسناده صحیح ٣٥٢/٢

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी मज्लिस में बैठें जिसमें न अल्लाह तआला का ज़िक्र करें और न नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजें तो उनको क़ियामत के दिन (ज़िक्र और दुरूद शरीफ़ के, सवाब को देखते हुए उस मज्लिस पर अफ़सोस होगा, अगरचे वे लोग (अपनी दूसरी नेकियों की वजह से) जन्नत में दाख़िल भी हो जाएं। (इब्ने हब्बान)

﴿168﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ قَوْمٍ یَقُوْمُوْنَ مِنْ مَجْلِسٍ لَایَذْکُرُوْنَ اللهَ فِیْهِ اِلَّا قَامُوْا عَنْ مِثْلِ جِیْفَةِ حِمَارٍ وَکَانَ لَهُمْ حَسْرَةً۔

رواه ابوداؤد، باب کراهیة ان یقوم الرجل من مجلسه ولا یذکر الله، رقم: ٤٨٥٥

168. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी ऐसी मज्लिस से उठते हैं जिसमें अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करते तो वह गोया (बदबूदार) मुर्दा गधे के पास से उठे हैं और यह मज्लिस उनके लिए क़ियामत के दिन अफ़सोस का ज़रिया होगी। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अफ़सोस का ज़रिया इसलिए होगी कि मज्लिस में आम तौर से कोई फ़ुज़ूल बात हो ही जाती है जो पकड़ का सबब बन सकती है, अलबत्ता उसमें अगर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र कर लिया जाए तो उसकी वजह से पकड़ से बचाव हो जाएगा। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿169﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: اَيَعْجِزُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْمٍ اَلْفَ حَسَنَةٍ؟ فَسَالَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: كَيْفَ يَكْسِبُ اَحَدُنَا اَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: يُسَبِّحُ مِائَةَ تَسْبِيْحَةٍ فَيُكْتَبُ لَهُ اَلْفُ حَسَنَةٍ، وَتُحَطُّ عَنْهُ اَلْفُ خَطِيْئَةٍ.

رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٥٢

169. हज़रत साद ﷺ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बैठे हुए थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स हर रोज़ एक हज़ार नेकियां कमाने से आजिज़ है? आप ﷺ के पास बैठे हुए लोगों में से एक ने सवाल किया : हममें से कोई आदमी एक हज़ार नेकियां किस तरह कमा सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह सौ मर्तबा पढ़े उस के लिए एक हज़ार नेकियां लिख दी जाएंगी और उसके एक हज़ार गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। (मुस्लिम)

﴿170﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِمَّا تَذْكُرُوْنَ مِنْ جَلَالِ اللّٰهِ، التَّسْبِيْحَ وَ التَّهْلِيْلَ وَ التَّحْمِيْدَ يَنْعَطِفْنَ حَوْلَ الْعَرْشِ، لَهُنَّ دَوِيٌّ كَدَوِيِّ النَّحْلِ، تُذَكِّرُ بِصَاحِبِهَا، اَمَا يُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَكُوْنَ لَهُ، اَوْلَا يَزَالُ لَهُ، مَنْ يُذَكِّرُ بِهِ؟

رواه ابن ماجه، باب فضل التسبيح، رقم: ٣٨٠٩

170. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन चीज़ों से तुम अल्लाह तआ़ला की बड़ाई ब्यान करते हो, उनमें से 'सुब-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर' हैं। ये कलिमात अ़र्श के चारों तरफ़ घूमते हैं। उनकी आवाज़ शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की तरह होती है। इस तरह ये कलिमात अपने पढ़ने वाले का अल्लाह तआ़ला की बारगाह में

तज़्किरा करते हैं। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में कोई तुम्हारा हमेशा तज़्किरा करता रहे? (इब्ने माजा)

﴾171﴿ عَنْ يُسَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُنَّ بِالتَّسْبِيْحِ وَ التَّهْلِيْلِ وَالتَّقْدِيْسِ وَ اعْقِدْنَ بِالْاَنَامِلِ فَاِنَّهُنَّ مَسْؤُوْلَاتٌ مُسْتَنْطَقَاتٌ وَ لَا تَغْفَلْنَ فَتَنْسَيْنَ الرَّحْمَةَ. رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فی فضل التسبيح......، رقم: ٣٥٨٣

171. हज़रत युसैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमसे इर्शाद फ़रमाया : अपने ऊपर तस्बीह (सुब-हानल्लाह कहना) और तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) और तक़दीस (अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान करना, मसलन 'सुबू-हानलमलिकिल कुद्दूस' कहना) लाज़िम कर लो और उंगलियों पर गिना करो, इसलिए कि उंगलियों से सवाल किया जाएगा (कि उनसे क्या अ़मल किए और जवाब के लिए) बोलने की ताक़त दी जाएगी और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़फ़लत न करना वरना तुम अपने आपको अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरूम कर लोगी। (तिर्मिज़ी)

﴾172﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ غُرِسَتْ لَهٗ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ.

رواه البزار واسناده جيد، مجمع الزوائد ١١١/١٠

172. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' पढ़ता है, उसके लिए जन्नत में एक खजूर का दरख़्त लगा दिया जाता है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾173﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سُئِلَ اَیُّ الْكَلَامِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: مَا اصْطَفَاهُ اللهُ لِمَلَائِكَتِهٖ اَوْ لِعِبَادِهٖ سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ.

رواه مسلم، باب فضل سُبْحَانَ اللّٰه وبحمده، رقم: ٦٩٢٥

173. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : अफ़ज़ल कलाम कौन-सा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़ज़ल कलाम वह है जिसको अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़रिश्तों या अपने बन्दों के लिए पसन्द फ़रमाया है। वह 'सुब-हानल्लाहि व बिहम्दिही' है। (मुस्लिम)

﴿174﴾ عَنْ اَبِیْ طَلْحَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ اَوْ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ، وَ مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ مِائَةَ مَرَّةٍ كَتَبَ اللّٰهُ لَهُ مِائَةَ اَلْفِ حَسَنَةٍ وَاَرْبَعًا وَ عِشْرِيْنَ اَلْفَ حَسَنَةٍ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اِذًا لَا يَهْلِكُ مِنَّا اَحَدٌ؟ قَالَ: بَلٰى، اِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَجِیْءُ بِالْحَسَنَاتِ لَوْ وُضِعَتْ عَلٰى جَبَلٍ اَثْقَلَتْهُ، ثُمَّ تَجِیْءُ النِّعَمُ فَتَذْهَبُ بِتِلْكَ، ثُمَّ يَتَطَاوَلُ الرَّبُّ بَعْدَ ذٰلِكَ بِرَحْمَتِهٖ۔

رواہ الحاکم و قال: صحیح الاسناد، الترغیب ۴۲۱/۲

174. हज़रत अबू तलहा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स 'ला इला-ह इल्लल्लाह' कहता है, उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। जो शख़्स 'सुब्-हानल्लाहि व बिहम्दिही' सौ मर्तबा पढ़ता है इसके लिए एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ऐसी हालत में तो कोई भी (क़ियामत में) हलाक नहीं हो सकता (कि नेकियां ज़्यादा ही रहेंगी)? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (बाज़ लोग फिर भी हलाक होंगे, इसलिए कि) तुम में से एक शख़्स इतनी नेकियां लेकर आएगा कि अगर पहाड़ पर लिख दी जाएं तो वह दब जाए लेकिन अल्लाह तआ़ला की नेमतों के मुक़ाबले में वे नेकियां ख़त्म हो जाएंगी, फिर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से जिसकी चाहेंगे मदद फ़रमाएंगे और हलाक होने से बचा लेंगे। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴿175﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُكَ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَى اللّٰهِ؟ قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَخْبِرْنِیْ بِاَحَبِّ الْكَلَامِ اِلَى اللّٰهِ، فَقَالَ: اِنَّ اَحَبَّ الْكَلَامِ اِلَى اللّٰهِ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ۔

رواہ مسلم، باب فضل سبحان اللّٰہ و بحمدہٖ رقم: ۶۹۲۶، والترمذی الاانہ قال: سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِهٖ وقال: ھذا حدیث حسن صحیح، باب ای الکلام احب الی اللّٰہ، رقم: ۳۵۹۳

175. हज़रत अबूज़र ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको बताऊं कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा कलाम क्या है? मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे बता दीजिए कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम किया है? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम **'सुब्-हानल्लाहि व बिहम्दिही'** है। (मुस्लिम)

दूसरी रिवायत में सबसे ज़्यादा पसन्दीदा कलाम **'सुब्हा-न रब्बी व बिहम्दिही'** है। (तिर्मिज़ी)

﴿176﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فی فضائل سبحان اللّٰه و بحمده......رقم: ٣٤٦٥

176. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ि ा शख़्स ने 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीमि व बिहम्दिही०' कहा, उसके लिए जन्नत में एक खजूर का दरख़्त लगा दिया जाता है। (तिर्मि...)

﴿177﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: كَلِمَتَانِ حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ۔ رواه البخاری، باب قول اللّٰه تعالٰی و نضع الموازين القسط ليوم القيامة،رقم: ٧٥٦٣

177. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ो कलिमे ऐसे हैं, जो अल्लाह तआला को बहुत महबूब, ज़बान पर बहुत हल्के और तराज़ू में बहुत वज़नी हैं। वह कलिमात 'सुब्हा-नल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्ल ि अज़ीम०' हैं। (बुख़...)

﴿178﴾ عَنْ صَفِيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَ بَيْنَ يَدَيَّ اَرْبَعَةُ آلَافِ نَوَاةٍ اُسَبِّحُ بِهِنَّ فَقَالَ: يَا بِنْتَ حُيَيٍّ! مَا هٰذَا؟ قُلْتُ: اُسَبِّحُ بِهِنَّ،قَالَ:قَدْ سَبَّحْتُ مُنْذُ قُمْتُ عَلٰى رَاْسِكِ اَكْثَرَ مِنْ هٰذَا قُلْتُ:عَلِّمْنِيْ يَا رَسُوْلَ اللهِ قَالَ: قُوْلِيْ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ مِنْ شَيْءٍ۔

رواه الحاكم فی المستدرك و قال: هذاحديث صحيح ولم يخرجاه و وافقه الذهبی ١/٥٤٧

178. हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए मेरे सामने चार हज़ार खजूर की गुठलियां रखी हुई थीं, जिन पर मैं तस्बीह पढ़ रही थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हुय्य की बेटी (सफ़िया)! यह क्या है? मैंने अर्ज़ किया कि इन गुठलियों पर तस्बीह पढ़ रही हूं। इर्शाद फ़रमाया : मैं जब से तुम्हारे पास आकर खड़ा हुआ हूं उससे ज़्यादा तस्बीह पढ़ चुका हूं। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वह मुझे सिखा दें। इर्शाद फ़रमाया 'सुब्हानल्लज़ी अ-द-द मा ख़-ल-क़ मिन शैइन' कहा करो, यानी जो चीज़ें अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाई हैं उन की तादाद के बराबर मैं अल्लाह की पाकी ब्यान करती हूं। (मुस्तदरक हाकि...)

﴿179﴾ عَنْ جُوَيْرِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا بُكْرَةً حِيْنَ صَلَّى الصُّبْحَ، وَهِيَ فِي مَسْجِدِهَا، ثُمَّ رَجَعَ بَعْدَ اَنْ اَضْحٰى، وَ هِيَ جَالِسَةٌ، فَقَالَ: مَازِلْتِ عَلَى الْحَالِ الَّتِي فَارَقْتُكِ عَلَيْهَا؟ قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ اَرْبَعَ كَلِمَاتٍ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ: سُبْحَانَ اللهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ، وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ.

رواه مسلم، باب التسبيح اول النهار و عند النوم، رقم: ٦٩١٣

179. हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ सुबह की नमाज़ के वक़्त उनके पास से तशरीफ़ ले गए और यह अपनी नमाज़ की जगह पर बैठी हुई (ज़िक्र में मशगूल थीं)। नबी करीम ﷺ चाश्त की नमाज़ के बाद तशरीफ़ लाए तो यह उसी हाल में बैठी हुई थीं। नबी करीम ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम उसी हाल में हो जिस पर मैंने छोड़ा था? उन्होंने अ़र्ज़ किया : जी हां! नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैंने तुमसे जुदा होने के बाद चार कलिमे तीन मर्तबा कहे। अगर उन कलिमों को उन सबके मुक़ाबले में तौला जाए, जो तुमने सुबह से अब तक पढ़ा है तो वे कलिमे भारी हो जाएं। वह कलिमे ये हैं 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही अ-द-द ख़ल्क़िही व रिज़ा नफ़्सिही व ज़ि-न-त अ़र्शिही व मिदा-द कलिमातिही०' ''मैं अल्लाह तआ़ला की मख़लूक़ात की तादाद के बराबर, उसकी रज़ा, उसके अ़र्श के वज़न और उसके कलिमात के लिखने की स्याही के बराबर अल्लाह तआ़ला की तस्बीह और तारीफ़ ब्यान करता हूं।'' (मुस्लिम)

﴿180﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِيْ وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَلَى امْرَاَةٍ وَ بَيْنَ يَدَيْهَا نَوًى، اَوْحَصًى، تُسَبِّحُ بِهٖ فَقَالَ: اُخْبِرُكِ بِمَا هُوَ اَيْسَرُ عَلَيْكِ مِنْ هٰذَا اَوْ اَفْضَلُ؟ فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْاَرْضِ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَاخَلَقَ بَيْنَ ذٰلِكَ، وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ، وَ اللهُ اَكْبَرُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ مِثْلَ ذٰلِكَ.

رواه ابو داؤد، باب التسبيح بالحصى، رقم: ١٥٠٠

180. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया, जिनके सामने गुठलियां या कंकरियां रखी हुई थीं। वह उन पर तस्बीह पढ़ रही थीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या

मैं तुमको ऐसे कलिमे बतलाऊं जो तुम्हारे लिए इस अमल से ज़्यादा आसान हैं? उसके बाद ये कलिमे बताए : "मैं अल्लाह तआला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसने आसमान में पैदा फ़रमाई हैं, मैं अल्लाह तआला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसने ज़मीन में पैदा फ़रमाई हैं, मैं अल्लाह तआला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान उसने पैदा की हैं और मैं अल्लाह तआला की तस्बीह ब्यान करता हूं उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो अल्लाह तआला आईंदा पैदा फ़रमाने वाले हैं" फिर फ़रमाया : अल्लाहु अकबर इसी तरह, अल-हम्दु लिल्लाह इसी तरह और 'ला-हौ-ल व ला कुव्व इल्ला बिल्लाह' को भी इसी तरह पढ़ो, यानी इन कलिमों के साथ भी आख़िर में और मिला दो। (अबूदाऊद)

﴿181﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَ اَنَا جَالِسٌ اُحَرِّكُ شَفَتَیَّ فَقَالَ: بِمَ تُحَرِّكُ شَفَتَیْكَ؟ قُلْتُ: اَذْكُرُ اللّٰهَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ: اَفَلَا اُخْبِرُكَ بِشَیْءٍ اِذَا قُلْتَهُ، ثُمَّ دَابَتَ اللَّیْلَ وَ النَّهَارَ لَمْ تَبْلُغْهُ؟ قُلْتُ: بَلٰی، قَالَ: تَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی كِتَابُهُ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَمَا فِی كِتَابِهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی خَلْقُهُ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا فِیْ خَلْقِهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ سَمٰوَاتِهِ وَ اَرْضِهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَیْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ، وَ تُسَبِّحُ مِثْلَ ذٰلِكَ، وَ تُكَبِّرُ مِثْلَ ذٰلِكَ.

رواه الطبرانی من طریقین و اسناد احد هما حسن، مجمع الزوائد ١٠/١٠٩

181. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और मैं बैठा हुआ था मेरे होंठ हरकत कर रहे थे। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि अपने होंठ किस वजह से हिला रहे हो? मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला का ज़िक्र कर रहा हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वे कलिमे न बतला दूं कि अगर तुम उनको कह लो, तो तुम्हारा दिन रात मुसलसल ज़िक्र करना भी उसके सवाब को न पहुंच सके? मैंने अर्ज़ किया : ज़रूर बता दीजिए। इर्शाद फ़रमाया : ये कलिमे कहा करो तर्जुमा : अल्लाह तआला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़लूक़ ने शुमार किया है, अल्लाह तआला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं उन चीज़ों के

भर देने के बराबर जो मख़लूक़ात में हैं, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं आसमानों ओर ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला के लिए तमाम तारीफ़ें हैं हर चीज़ पर।

अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर, जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जो उसकी किताब में हैं, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़्लूक़ात ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है आसमानों और ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला की तस्बीह है हर चीज़ पर।

अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों के बराबर जिसे उसकी किताब ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जो उनकी किताब में हैं, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों की तादाद के बराबर जिसे उसकी मख़्लूक़ात ने शुमार किया है, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है उन चीज़ों के भर देने के बराबर जो मख़्लूक़ात में हैं, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है आसमानों और ज़मीनों के ख़ला को भर देने के बराबर, अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है हर चीज़ के शुमार के बराबर और अल्लाह तआ़ला की बड़ाई है हर चीज़ पर। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿182﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَوَّلُ مَنْ يُدْعٰى اِلَى الْجَنَّةِ الَّذِيْنَ يَحْمَدُوْنَ اللّٰهَ فِي السَّرَّاءِ وَ الضَّرَّاءِ۔

رواه الحاكم و قال: صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٢٠٥

182. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : सबसे पहले जन्नत की तरफ़ बुलाए जाने वाले वे लोग होंगे जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती (दोनों हालतों में) अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿183﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ لَيَرْضٰى عَنِ الْعَبْدِ اَنْ يَاْكُلَ الْاَكْلَةَ فَيَحْمَدُهُ عَلَيْهَا، اَوْيَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدُهُ عَلَيْهَا۔

رواه مسلم، باب استحباب حمد الله تعالى بعد الاكل والشرب، رقم: ٦٩٣٢

183. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला उस बन्दे से बेहद ख़ुश होते हैं जो लुक़मा खाए और उसपर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे या पानी का घूंट पीये और उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे। (मुस्लिम)

﴿184﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَلِمَتَانِ اِحْدَاهُمَا لَيْسَ لَهَا نَاهِيَةٌ دُوْنَ الْعَرْشِ، وَالْاُخْرٰى تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ: لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ۔

رواه الطبراني ورواته الى معاذ بن عبدالله ثقة سوى ابن لهيعة ولحديثه هذا شواهد، الترغيب ٢/٤٣٤

184. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : **ला इला-ह इल्लल्लाह** और **अल्लाहु अकबर** दो कलिमे हैं, उनमें से एक (**ला इला-ह इल्लल्लाह**) तो अर्श से पहले कहीं रुकता नहीं और दूसरा (**अल्लाहु अकबर**) ज़मीन व आसमान के दर्मियानी ख़ला को (नूर या अज्र से) भर देता है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿185﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِيْ سُلَيْمٍ قَالَ: عَدَّ هُنَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي يَدِي۔ اَوْ فِي يَدِهٖ: التَّسْبِيْحُ نِصْفُ الْمِيْزَانِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ يَمْلَؤُهٗ وَالتَّكْبِيْرُ يَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ۔

(الحديث) رواه الترمذي وقال: حديث حسن، باب فيه حديث أن التسبيح نصف الميزان، رقم: ٣٥١٩

185. क़बीला बनू सुलैम के एक सहाबी : फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इन बातों को मेरे हाथ या अपने मुबारक हाथ पर गिनकर फ़रमाया : **सुब्हानल्लाह** कहना आध ो तराज़ू को सवाब से भर देता है। और **अल-हम्दुलिल्लाह** कहना पूरे तराज़ू को सवाब से भर देता है और **अल्लाहु अकबर** का सवाब ज़मीन व आसमान के दर्मियान की ख़ाली जगह को पुर कर देता है। (तिर्मिज़ी)

﴿186﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلاَ اَدُلُّكَ عَلٰى بَابٍ مِنْ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ؟ قُلْتُ: بَلٰى، يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ۔

رواه الحاكم وقال: صحيح على شرطهما ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/٢٩٠

186. हज़रत साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा न बतलाऊं? मैंने अर्ज़ किया : ज़रूर

बतलाइए! इर्शाद फ़रमाया : वह दरवाज़ा 'ला हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह' है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿187﴾ عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ لَیْلَۃَ اُسْرِیَ بِہٖ مَرَّ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ عَلَیْہِ السَّلَامُ فَقَالَ: یَا جِبْرِیْلُ مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ ﷺ، قَالَ لَہٗ اِبْرَاھِیْمُ عَلَیْہِ السَّلَامُ: مُرْ اُمَّتَكَ فَلْیُکْثِرُوْا مِنْ غِرَاسِ الْجَنَّۃِ فَاِنَّ تُرْبَتَھَا طَیِّبَۃٌ، وَ اَرْضَھَا وَاسِعَۃٌ قَالَ: وَمَا غِرَاسُ الْجَنَّۃِ ؟ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ۔

رواه احمد ورجال احمد رجال الصحيح غير عبدالله بن عبد الرّحمٰن بن عبدالله بن عمربن الخطاب و هو ثقة لم يتكلم فيه احد وو ثقه ابن حبّان، مجمع الزوائد ١١٩/١٠

187. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ मेराज की रात हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा : जिबरील! यह तुम्हारे साथ कौन हैं? जिबरील ﷺ ने अ़र्ज़ किया : मुहम्मद ﷺ हैं। इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया : आप अपनी उम्मत से कहिए कि वह जन्नत के पौधे ज़्यादा-से-ज़्यादा लगाएं, इसलिए कि जन्नत की मिट्टी उम्दा है और उसकी ज़मीन कुशादा है। पूछा : जन्नत के पौधे क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : 'ला हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह०'। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿188﴾ عَنْ سَمُرَۃَ بْنِ جُنْدُبٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَحَبُّ الْکَلَامِ اِلَی اللّٰہِ اَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللّٰہِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ، وَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ، وَاللّٰہُ اَکْبَرُ، لَا یَضُرُّكَ بِاَیِّھِنَّ بَدَاْتَ

(وهو جزء من الحديث)۔رواه مسلم باب كراهة التسمية بالاسماء القبيحة......رقم: ٥٦٠١، وزاد احمد: اَفْضَلُ الْکَلَامِ بَعْدَ الْقُرْآنِ اَرْبَعٌ وَ ھِیَ مِنَ الْقُرْآنِ ٥/٢٠

188. हज़रत समुरा बिन जुंदुब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चार कलिमे अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा महबूब हैं 'सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' उनमें से जिसको चाहो पहले पढ़ो (और जिसको चाहो बाद में पढ़ो कोई हर्ज नहीं) (मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि ये चारों कलिमे क़ुरआन मजीद के बाद सबसे अफ़ज़ल हैं और ये क़ुरआन करीम ही के कलिमे हैं। (मुस्नद अहमद)

﴾189﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَاَنْ اَقُوْلَ سُبْحَانَ اللهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّااللهُ، وَ اللهُ اَكْبَرُ، اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَیْهِ الشَّمْسُ۔

رواہ مسلم، باب فضل التهلیل والتسبیح والدعاء، رقم: ٦٨٤٧

189. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे 'सुब्-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहना हर उस चीज़ से ज़्यादा महबूब है, जिसपर सूरज तुलू होता है (क्योंकि उनका अज्र व सवाब बाक़ी रहेगा और दुनिया अपने तमाम साज़ व सामान समेत ख़त्म हो जाएगी)। (मुस्लिम)

﴾190﴿ عَنْ اَبِیْ سَلْمٰی رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَخٍ بَخٍ بِخَمْسٍ مَااَثْقَلَهُنَّ فِي الْمِيْزَانِ: سُبْحَانَ اللهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَ اللهُ اَكْبَرُ، وَالْوَلَدُ الصَّالِحُ يُتَوَفّٰى لِلْمُسْلِمِ فَيَحْتَسِبُهُ۔

رواہ الحاکم و قال: هذا حدیث صحیح الاسناد ووافقه الذهبی ١/٥١١

190. हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वाह! वाह! पांच चीज़ें आमालनामे के तराज़ू में कितनी ज़्यादा वज़नी हैं—1. ला इला-ह इल्लल्लाह 2. सुब्-हानल्लाह 3. अल-हम्दु लिल्लाह 4. अल्लाहु अकबर 5. किसी मुसलमान का नेक लड़का फ़ौत हो जाए और वह सवाब की उम्मीद पर सब्र करे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾191﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، كُتِبَ لَهٗ بِكُلِّ حَرْفٍ عَشْرُ حَسَنَاتٍ.

(و هو جزء من الحدیث) رواہ الطبرانی فی الکبیر والاوسط ورجالهما رجال الصحیح غیر محمد بن منصور الطوسی و هو ثقة، مجمع الزوائد ١٠/١٠٦

191. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुब्-हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़े, हर हर्फ़ के बदले उसके आमालनामे में दस नेकियां लिख दी जाएंगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾192﴿ عَنْ اُمِّ هَانِیٍٔ بِنْتِ اَبِیْ طَالِبٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَرَّ بِیْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَدْ كَبِرْتُ وَضَعُفْتُ، اَوْكَمَا قَالَتْ: فَمُرْنِیْ بِعَمَلٍ اَعْمَلُ

وَ اَنَا جَالِسَةٌ؟ قَالَ: سَبِّحِي اللهَ مِائَةَ تَسْبِيْحَةٍ، فَإِنَّهَا تَعْدِلُ لَكِ مِائَةَ رَقَبَةٍ تُعْتِقِيْنَهَا مِنْ وُلْدِ اِسْمَاعِيْلَ، وَاحْمَدِي اللهَ مِائَةَ تَحْمِيْدَةٍ فَإِنَّهَا تَعْدِلُ مِائَةَ فَرَسٍ مُسْرَجَةٍ مُلْجَمَةٍ تَحْمِلِيْنَ عَلَيْهَا فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَ كَبِّرِي اللهَ مِائَةَ تَكْبِيْرَةٍ، فَإِنَّهَا تَعْدِلُ لَكِ مِائَةَ بَدَنَةٍ مُقَلَّدَةٍ مُتَقَبَّلَةٍ، وَهَلِّلِي اللهَ مِائَةً، قَالَ ابْنُ خَلَفٍ: اَحْسِبُهُ قَالَ: تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَ الْاَرْضِ، وَ لَا يُرْفَعُ يَوْمَئِذٍ لِاَحَدٍ عَمَلٌ اِلَّا اَنْ يَاْتِيَ بِمِثْلِ مَا اَتَيْتِ. قلت: رواه ابن ماجه با ختصار و رواه احمد و الطبراني في الكبير ولم يقل اَحْسِبُهُ. ورواه في الاوسط الا أنه قال فيه: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ كَبُرَتْ سِنِّيْ، وَ رَقَّ عَظْمِيْ فَدُلَّنِيْ عَلٰى عَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ، فَقَالَ: بَخٍ بَخٍ، لَقَدْ سَاَلْتِ، وَقَالَ خَيْرٌ لَكِ مِنْ مِائَةِ بَدَنَةٍ مُقَلَّدَةٍ مُجَلَّلَةٍ تُهْدِيْنَهَا اِلٰى بَيْتِ اللهِ تَعَالٰى: وَ قَوْلِيْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، مِائَةَ مَرَّةٍ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكِ مِمَّا اَطْبَقَتْ عَلَيْهِ السَّمَاءُ وَالْاَرْضُ، وَ لَا يُرْفَعُ يَوْمَئِذٍ لِاَحَدٍ عَمَلٌ اَفْضَلُ مِمَّا رُفِعَ لَكِ اِلَّا مَنْ قَالَ مِثْلَ مَا قُلْتِ اَوْزَادَ واسانيدهم حسنة، مجمع الزوائد ١٠٨/١٠ رواه الحاكم وقال: قُوْلِيْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ لَا تَتْرُكُ ذَنْبًا، وَلَا يُشْبِهُهَا عَمَلٌ.

وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ووافقه الذهبي ٥١٤/١

192. हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मेरे यहां तशरीफ़ लाए। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बूढ़ी और कमज़ोर हो गई हूं, कोई अ़मल ऐसा बता दीजिए कि बैठे-बैठे करती रहा करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसा है गोया तुम इस्माईल عليه السلام की औलाद में से सौ गुलाम आज़ाद करो। अल-हम्दु लिल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसे सौ घोड़ों के बराबर है, जिन पर ज़ीन कसी हुई हो और लगाम लगी हुई हो, उन्हें अल्लाह तआ़ला के रास्ते में सवारी के लिए दे दो। अल्लाहु अकबर सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब ऐसे सौ ऊंटों को ज़बह* किए जाने के बराबर है जिनकी गर्दनों में क़ुरबानी का पट्टा पड़ा हुआ हो। ला इला-ह इल्लल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो, उसका सवाब तो आसमान और ज़मीन के दर्मियान को भर देता है और उस दिन तुम्हारे अ़मल से बढ़कर किसी का कोई अ़मल नहीं होगा जो अल्लाह तआ़ला के यहां क़ुबूल हो, अलबत्ता उस शख़्स का अ़मल बढ़ सकता है, जिसने तुम्हारे जैसा अ़मल किया हो।

एक रिवायत में है कि हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बूढ़ी हो गई हूं और मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल करा दे।

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वाह! वाह! तुमने बहुत अच्छा सवाल किया, और फ़रमाया कि अल्लाहु अकबर सौ मर्तबा पढ़ा करो, ये तुम्हारे लिए ऐसे सौ ऊंटों से बेहतर है जिनकी गर्दन में पट्टा पड़ा हुआ हो, झूल डली हुई हो और वे मक्का में ज़बह किए जाएं। ला इला-ह इल्लल्लाह सौ मर्तबा पढ़ा करो वह तुम्हारे लिए उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिनको आसमान व ज़मीन ने ढांप रखा है, और उस दिन तुम्हारे अ़मल से बढ़कर किसी का कोई अ़मल नहीं होगा जो अल्लाह तआ़ला के यहां क़ुबूल हो, अलबत्ता उस शख़्स का अ़मल बढ़ सकता है जिसने ये कलिमात इतने ही मर्तबा या इससे ज़्यादा मर्तबा कहे हों।

एक रिवायत में यह भी है कि ला इला-ह इल्लल्लाह पढ़ा करो, यह किसी गुनाह को नहीं छोड़ता, और उस-जैसा कोई अ़मल नहीं।

(इब्ने माजा, मुस्नद अहमद, तबरानी, मुस्तदरक हाकिम, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿193﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ مَرَّ بِهٖ وَهُوَ یَغْرِسُ غَرْسًا، فَقَالَ: یَا اَبَا هُرَیْرَةَ! مَا الَّذِیْ تَغْرِسُ؟ قُلْتُ: غِرَاسًا لِیْ، قَالَ: اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰی غِرَاسٍ خَیْرٍ لَكَ مِنْ هٰذَا؟ قَالَ: بَلٰی، یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: قُلْ سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، یُغْرَسْ لَكَ، بِكُلِّ وَاحِدَةٍ، شَجَرَةٌ فِی الْجَنَّةِ.

رواه ابن ماجه باب فضل التسبيح، رقم: ٣٨٠٧

193. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास से गुज़रे और मैं पौधा लगा रहा था, फ़रमाया : अबू हुरैरह! क्या लगा रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया : अपने लिए पौधा लगा रहा हूं। इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर पौधे न बता दूं?

'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहना, इनमें से हर कलिमे के बदले में तुम्हारे लिए जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। (इब्ने माजा)

﴿194﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: خُذُوْا جُنَّتَكُمْ، قُلْنَا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَمِنْ عَدُوٍّ حَضَرَ؟ فَقَالَ: خُذُوْا جُنَّتَكُمْ مِنَ النَّارِ، قُوْلُوْا: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، فَاِنَّهُنَّ یَاْتِیْنَ یَوْمَ

الْقِيَامَةِ مُسْتَقْدِمَاتٍ، وَمُسْتَأْخِرَاتٍ، وَ مُنْجِيَاتٍ وَمُجَنِّبَاتٍ وَهُنَّ الْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ۔

مجمع البحرين فی زوائد المعجمین :۳۲۹/۷ قال المحشی اخرجه

الطبرانی فی الصغیر و قال الهیثمی فی المجمع: و رجاله رجال الصحیح غیر داؤد بن بلال وهو ثقة

194. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : देखो अपने बचाव के लिए ढाल ले लो। सहाबा ने पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या कोई दुश्मन आ गया है? इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम की आग से बचाव के लिए ढाल ले लो। 'सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह, इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर' कहा करो, क्योंकि ये कलिमे क़ियामत के दिन अपने कहने वाले के आगे, पीछे, दाएं, बाएं, से आएंगे और उसको नजात दिलाने वाले होंगे और यही वह नेक आमाल हैं जिनका सवाब हमेशा मिलता रहता है। (मज्मउल बहरैन)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के इस जुम्ले "ये कलिमे अपने पढ़ने वाले के आगे से आएंगे" का मतलब यह है कि क़ियामत के दिन ये कलिमे आगे बढ़कर अपने पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करेंगे। "और दाएं-बाएं-पीछे से आने" का मतलब यह है कि अपने पढ़ने वाले की अज़ाब से हिफ़ाज़त करेंगे।

﴿195﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ اِنَّ سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ تَنْفُضُ الْخَطَايَا كَمَا تَنْفُضُ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا۔ رواه احمد ۱۵۲/۳

195. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर कहने की वजह से गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे (सर्दी में) दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿196﴾ عَنْ عِمْرَانَ۔ يَعْنِيْ: ابْنَ حُصَيْنٍ۔ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَمَا يَسْتَطِيْعُ اَحَدُكُمْ اَنْ يَعْمَلَ كُلَّ يَوْمٍ مِثْلَ اُحُدٍ عَمَلًا؟ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَنْ يَسْتَطِيْعُ اَنْ يَعْمَلَ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ مِثْلَ اُحُدٍ عَمَلًا؟ قَالَ: كُلُّكُمْ يَسْتَطِيْعُهُ، قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَاذَا؟ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ اَعْظَمُ مِنْ اُحُدٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ اَعْظَمُ مِنْ اُحُدٍ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَعْظَمُ مِنْ اُحُدٍ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَعْظَمُ مِنْ اُحُدٍ۔

رواه الطبرانی و البزار و رجالهما رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۱۰۵/۱۰

196. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से कोई शख़्स हर रोज़ उहुद पहाड़ के बराबर अ़मल नहीं कर सकता? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उहुद पहाड़ के बराबर कौन अ़मल कर सकता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से हर एक कर सकता है। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वह कौन-सा अ़मल है? इर्शाद फ़रमाया : सुब्-हानल्लाह (का सवाब) उहुद से बड़ा है, अल-हम्दु लिल्लाह का सवाब उहुद से बड़ा है, 'ला इला-ह इल्लल्लाह' का सवाब उहुद से बड़ा है और अल्लाहु अकबर का सवाब उहुद से बड़ा है। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿197﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِیَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوا، قُلْتُ: یَا رَسُولَ اللّٰهِ وَ مَا رِیَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: الْمَسَاجِدُ، قُلْتُ: وَمَا الرَّتْعُ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ. رواه الترمذی

وقال: حدیث حسن غریب، باب حدیث فی اسماء الله الحسنی مع ذکرها تماما، رقم: ۳۵۰۹

197. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम जन्नत के बाग़ों पर गुज़रो तो ख़ूब चरो। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जन्नत के बाग़ क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : मस्जिदें। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! चरने से क्या मुराद है? इर्शाद फ़रमाया : सुब्-हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर का पढ़ना। (तिर्मिज़ी)

﴿198﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ وَاَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰی مِنَ الْكَلَامِ اَرْبَعًا: سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، فَمَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ كُتِبَ لَهٗ عِشْرُوْنَ حَسَنَةً، وَحُطَّتْ عَنْهُ عِشْرُوْنَ سَیِّئَةً، وَمَنْ قَالَ: اَللّٰهُ اَكْبَرُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَمِثْلُ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ مِنْ قِبَلِ نَفْسِهٖ كُتِبَتْ لَهٗ ثَلَاثُوْنَ حَسَنَةً وَحُطَّتْ عَنْهُ ثَلَاثُوْنَ سَیِّئَةً.

رواه النسائی فی عمل الیوم واللیلة، رقم: ۸٤۰

198. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम में से चार कलिमे चुने हैं : सुब्-हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर। जो शख़्स एक मर्तबा सुब्हानल्लाह कहता है उसके लिए बीस नेकियां

लिख दी जाती हैं, उसकी बीस बुराइयां मिटा दी जाती हैं। जो शख़्स अल्लाहु अकबर कहे, उसके लिए भी यही अज्र है। जो शख़्स अल्लाहु अकबर कहे, उसके लिए भी यही अज्र है। जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाह कहे, उसके लिए भी यही अज्र है, जो शख़्स दिल की गहराई से अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन कहे, उसके लिए तीस नेकियां लिखी जाती हैं और तीस गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। (अ़मलुलयौम वल्लैल:)

﴿199﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اسْتَكْثِرُوا مِنَ الْبَاقِيَاتِ الصَّالِحَاتِ قِيْلَ: وَ مَا هُنَّ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْمِلَّةُ، قِيْلَ وَ مَاهِيَ؟ قَالَ: التَّكْبِيْرُ وَ التَّهْلِيْلُ، وَ التَّسْبِيْحُ، وَ التَّحْمِيْدُ، وَلَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ۔

رواه الحاكم وقال: هذا اصح اسناد المصريين ووافقه الذهبی ١/٥١٢

199. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बाक़ियाते सालिहात की कसरत किया करो। किसी ने पूछा, वे क्या चीज़ें हैं? इर्शाद फ़रमाया : वे दीन की बुनयादें हैं। अ़र्ज़ किया गया : वे बुनयादें क्या हैं? इर्शाद फ़रमाया : तकबीर (अल्लाहु अकबर कहना) तहलील (ला इला-ह इल्लल्लाह कहना) तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना) तहमीद (अल-हम्दु लिल्लाह कहना) और ला हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह कहना। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : बाक़ियाते सालिहात से मुराद वे नेक आ़माल हैं, जिनका सवाब हमेशा मिलता रहता है। रसूलुल्लाह ﷺ ने उन कलिमों को मिल्लत इसलिए फ़रमाया है कि ये कलिमे दीने इस्लाम में बुनयादी हैसीयत रखते हैं। (फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ. قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ، فَاِنَّهُنَّ الْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ، وَهُنَّ يَحْطُطْنَ الْخَطَايَا كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا، وَ هُنَّ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ۔

رواه الطبرانی باسنادین فی احد هما: عمر بن راشد اليمامی، وقد وُثق على ضعفه وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ـ ١٠/١٠٤

200. हज़रत अबुद्दर्दा ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर,

ला-हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह कहा करो। ये बाक़ियाते सालिहात हैं और ये गुनाहों को इस तरह मिटा देते हैं जिस तरह दरख़्त से (सर्दी के मौसम में) पत्ते झड़ते हैं, और ये कलिमे जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿201﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا عَلَی الْاَرْضِ اَحَدٌ يَقُوْلُ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ اِلَّا كُفِّرَتْ عَنْهُ خَطَايَاهُ وَلَوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی فضل التسبيح والتكبير و التحميد، رقم: ٣٤٦٠ وزاد الحاكم: سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

وقال الذهبی: حاتم ثقة، وزيادته مقبولة ١/٥٠٣

201. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़मीन पर जो शख़्स भी ला इला-ह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर व ला-हौ-ल व ला क़ुव्वत इल्लाबिल्लाह पढ़ता है तो उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं, ख़्वाह समुंदर के झाग के बराबर हों। (तिर्मिज़ी)

एक रिवायत में यह फ़ज़ीलत सुब्हानल्लाह, वलहम्दु लिल्लाह के इज़ाफ़े के साथ ज़िक्र की गई है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿202﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ، قَالَ اللهُ: اَسْلَمَ عَبْدِیْ وَاسْتَسْلَمَ۔ رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد ووافقه الذهبی ١/٥٠٢

202. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स (दिल से) 'सुब्हानल्लाह, अल-हम्दु लिल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर, व ला-हौ-ल व ला क़ुव्व त' इल्ला बिल्लाहि कहे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा फ़रमांबरदार हो गया और अपने आपको मेरे हवाले कर दिया। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿203﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِيْدٍ وَاَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُمَا شَهِدَا عَلَی النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، صَدَّقَهُ رَبُّهُ وَ قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَ اَنَا اَكْبَرُ، وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ قَالَ: يَقُوْلُ اللهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَاَنَا وَحْدِیْ، وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ، قَالَ اللهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَحْدِیْ لَا شَرِيْكَ لِیْ وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا

اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، قَالَ اللّٰهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا لِيَ الْمُلْكُ وَلِيَ الْحَمْدُ، وَاِذَا قَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، قَالَ اللّٰهُ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا وَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِيْ وَكَانَ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَهَا فِيْ مَرَضِهٖ ثُمَّ مَاتَ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ۔

رواه الترمذی و قال هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ما يقول العبد اذا مرض، رقم: ٣٤٣٠

203. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई कहता है : **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर'** "अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह तआला ही सबसे बड़े हैं" तो अल्लाह तआला उसकी तस्दीक़ करते हैं और फ़रमाते हैं **ला इला-ह इल्ला अना व अना अकबर** "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं सबसे बड़ा हूं"। और जब वह कहता है : **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू'** "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं" तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं **'ला इला-ह इल्ला अना व अना वह्दी'** "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अकेला हूं"। और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू** "अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं और उनका कोई शरीक नहीं है" तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना वह्दी ला शरी-क ली** "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं अकेला हूं, मेरा कोई शरीक नहीं है" और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्द** "अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं उन्हीं के लिए बादशाहत है और तमाम तारीफ़ें उन्हीं के लिए हैं" तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना लियल मुल्कु व लियल हम्द** "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मेरे लिए ही बादशाहत और मेरे लिए ही तमाम तारीफ़ें हैं"। और जब वह कहता है : **ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह** "अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, और गुनाहों से बचाने और नेकियों पर लगाने की ताक़त अल्लाह तआला ही को है"। तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : **ला इला-ह इल्ला अना व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह** "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं है और गुनाहों से बचाने और नेकियों पर लगाने की क़ुव्वत मुझ ही को है"। रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स बीमारी में इन ज़िक्र किए गए कलिमों यानी **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ; ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू ला इला-ह इल्लल्लाहु लहुल मुल्क व लहुल हम्दु ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह'** को पढ़े और फिर मर जाए तो जहन्नम की आग उसे

चखेगी भी नहीं। (तिर्मिज़ी)

﴿204﴾ عَنْ يَعْقُوْبَ بْنِ عَاصِمٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَجُلَيْنِ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُمَا سَمِعَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا قَالَ عَبْدٌ قَطُّ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، مُخْلِصًا بِهَا رُوْحُهُ، مُصَدِّقًا بِهَا قَلْبُهُ لِسَانَهُ اِلَّا فُتِقَ لَهُ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى يَنْظُرَ اللهُ اِلٰى قَائِلِهَا وَحُقَّ لِعَبْدٍ نَظَرَ اللهُ اِلَيْهِ اَنْ يُعْطِيَهُ سُؤْلَهُ۔

رواه النسائي في عمل اليوم والليلة، رقم:٢٨

204. हज़रत याक़ूब बिन आसिम रह० दो सहाबा ﷺ से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुलमुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर'** इस तौर पर कहे कि उसके अन्दर इख़्लास हो और दिल और ज़बान से कहे हुए कलिमों की तसदीक़ करता हो, तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उसके कहने वाले को अल्लाह तआ़ला रहमत की नज़र से देखते हैं और जिस बन्दे पर अल्लाह तआ़ला की रहमत की नज़र पड़ जाए, तो वह इसका मुस्तहिक़ है कि अल्लाह तआ़ला से जो मांगे अल्लाह तआ़ला उसे दे दें। (अ़मलुलयौम वल्लैल:)

﴿205﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: خَيْرُ الدُّعَاءِ دُعَاءُ يَوْمِ عَرَفَةَ، وَخَيْرُ مَا قُلْتُ اَنَا وَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ قَبْلِيْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في دعاء يوم عرفة، رقم: ٣٥٨٥

205. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे बेहतर दुआ़ अरफ़ा के दिन की दुआ़ है और सबसे बेहतर कलिमे जो मैंने और मुझसे पहले अम्बिया ﷺ ने कहे, ये हैं **'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर'**। (तिर्मिज़ी)

﴿206﴾ رُوِيَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا وَ كَتَبَ لَهُ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ۔ رواه الترمذي، باب ما جاء في فضل الصلاة على النبي ﷺ، رقم: ٤٨٤

206. एक रिवायत में रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला उसके बदले उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके लिए दस नेकियां लिख देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿207﴾ عَنْ عُمَيْرٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ مِنْ اُمَّتِيْ صَلَاةً مُخْلِصًا مِنْ قَلْبِهٖ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرَ صَلَوَاتٍ، وَرَفَعَهُ بِهَا عَشْرَ دَرَجَاتٍ، وَكَتَبَ لَهُ بِهَا عَشْرَ حَسَنَاتٍ، وَمَحَا عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ.

رواه النسائى فى عمل اليوم الليلة رقم: ٦٤

207. हज़रत उमैर अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में से जो शख़्स दिल के ख़ुलूस के साथ मुझ पर दुरूद भेजता है, अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं, उसके बदले में दस दर्जे बुलन्द फ़रमाते हैं, उसके लिए दस नेकियां लिख देते हैं और उसके दस गुनाह मिटा देते हैं। (अ़मलुलयौम वल्लैलः)

﴿208﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْثِرُوْا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيْ كُلِّ يَوْمِ الْجُمُعَةِ، فَاِنَّ صَلَاةَ اُمَّتِيْ تُعْرَضُ عَلَيَّ فِيْ كُلِّ يَوْمِ جُمُعَةٍ، فَمَنْ كَانَ اَكْثَرَهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً كَانَ اَقْرَبَهُمْ مِنِّيْ مَنْزِلَةً.

رواه البيهقى باسناد حسن الاان مكحولا قيل: لم يسمع من ابى امامة، الترغيب ٢/٥٠٣

208. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे ऊपर हर जुमा के दिन कसरत से दुरूद भेजा करो, इसलिए कि मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमा को मुझ पर पेश किया जाता है। लिहाज़ा जो शख़्स जितना ज़्यादा मेरे ऊपर दुरूद भेजेगा, वह मुझसे (क़ियामत के दिन) दर्जे के लिहाज़ से उतना ही ज़्यादा क़रीब होगा। (बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿209﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ، فَاِنَّهُ اَتَانِيْ جِبْرِيْلُ آنِفًا عَنْ رَبِّهٖ عَزَّ وَجَلَّ فَقَالَ: مَا عَلَى الْاَرْضِ مِنْ مُسْلِمٍ يُصَلِّيْ عَلَيْكَ مَرَّةً وَاحِدَةً اِلَّا صَلَّيْتُ اَنَا وَ مَلَائِكَتِيْ عَلَيْهِ عَشْرًا.

رواه الطبرانى عن ابى ظلال عنه، وابو ظلال وثق، ولا يضر فى المتابعات، الترغيب ٢/٤٩٨

209. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो, क्योंकि जिबरील ﷺ अपने रब की जानिब से मेरे पास अभी यह पैग़ाम लेकर आए थे कि रुए ज़मीन पर जो कोई मुसलमान आप पर एक मर्तबा दुरूद भेजेगा, तो मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूंग और मेरे फ़रिश्ते उसके लिए दस मर्तबा मग्फ़िरत की दुआ करेंगे। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿210﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً۔

رواه الترمذی وقال: هذاحدیث حسن غریب، باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی ﷺ، رقم: ٤٨٤

210. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मुझ से क़रीबतरीन मेरा वह उम्मती होगा, जो मुझ पर ज़्यादा दुरूद भेजने वाला होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿211﴾ عَنْ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا ذَهَبَ ثُلُثَا اللَّيْلِ قَامَ فَقَالَ يَاَيُّهَا النَّاسُ! اذْكُرُوا اللهَ، اذْكُرُوا اللهَ جَاءَتِ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيْهِ، جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا فِيْهِ قَالَ اُبَيٌّ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّي اُكْثِرُ الصَّلَاةَ عَلَيْكَ فَكَمْ اَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلَاتِيْ؟ قَالَ: مَا شِئْتَ قَالَ قُلْتُ: الرُّبُعَ؟ قَالَ: مَا شِئْتَ، فَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ قُلْتُ: فَالنِّصْفَ؟ قَالَ: مَاشِئْتَ، وَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ، قَالَ قُلْتُ: فَالثُّلُثَيْنِ؟ قَالَ: مَاشِئْتَ فَاِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ قُلْتُ: اَجْعَلُ لَكَ صَلَاتِيْ كُلَّهَا؟ قَالَ: اِذًا تُكْفٰى هَمَّكَ وَيُغْفَرُ لَكَ ذَنْبُكَ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب فی الترغیب فی ذکر الله......،رقم: ٢٤٥٧

211. हज़रत काब ﷺ से रिवायत है कि जब रात दो तिहाई हिस्से गुज़र जाते, रसूलुल्लाह ﷺ (तहज्जुद के लिए) उठते और फ़रमाते, लोगो! अल्लाह तआला को याद करो, अल्लाह तआला को याद करो। हिला देने वाली चीज़ आ पहुंची अं उसके बाद आने वाली चीज़ आ पहुंची (मुराद यह है कि पहले सूर और उसके बाद दूसरे सूर के फूंके जाने का वक़्त क़रीब आ गया)। मौत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ आ गई है, मौत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ आ गई है। इस पर उ बिन काब ﷺ कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं आप पर कसरत से दुरूद भेजना चाहता हूं, मैं अपने दुआ और अज़्कार के वक़्त में से दुरूद शरीफ़

लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करूं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम्हारा दिल चाहे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! एक चौथाई वक़्त? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया कि आधा करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया दो तिहाई कर दूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जितना तुम चाहो और अगर ज़्यादा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया, फिर मैं अपने सारे वक़्त को आपके दुरूद के लिए मुक़र्रर करता हूं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर ऐसा कर लोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सारी फ़िक्रों को ख़त्म फ़रमा देंगे और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर दिए जाएंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿212﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْنَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ ! كَيْفَ الصَّلَاةُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ؟ فَإِنَّ اللهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ، قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ، اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. رواه البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، رقم: ٣٣٧٠

212. हज़रत काब बिन उजरा ﷺ फ़रमाते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! आप पर और आप के घर वालों पर हम दुरूद किस तरह भेजें? अल्लाह तआ़ला ने सलाम भेजने का तरीक़ा तो (आपके ज़रिए से) हमें खुद ही सिखा दिया है (कि हम तशह्हुद में **अस्सलामु अ़लै-क ऐय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह॰** कहकर आप पर सलाम भेजा करें) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यूं कहा करो।

तर्जुमा : या अल्लाह! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आपने हज़रत इब्राहीम عليه السلام पर और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई, यक़ीनन आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं। या अल्लाह! हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आपने हज़रत इब्राहीम عليه السلام और हज़रत इब्राहीम عليه السلام के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई, यक़ीनन आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं। (बुख़ारी)

﴿213﴾ عَنْ اَبِیْ حُمَیْدٍ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُمْ قَالُوْا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! کَیْفَ نُصَلِّی عَلَیْكَ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: قُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِهٖ وَ ذُرِّیَّتِهٖ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی آلِ اِبْرَاهِیْمَ، وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّیَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی آلِ اِبْرَاهِیْمَ، اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔ رواه البخاری، كتاب احادیث الانبیاء، رقم: ۳۳٦۹

213. हज़रत अबू हुमैद साइदी ﷛ से रिवायत है कि सहाबा रजि० ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हम आप पर किस तरह दुरूद भेजा करें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यूं कहा करो ।

तर्जुमा : या अल्लाह! मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवियों पर और आपकी नस्ल पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, जैसा कि आपने हज़रत इब्राहीम ﷵ के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई। और हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवीयों पर और आपकी नस्ल पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए, जैसा कि आपने हज़रत इब्राहीम ﷵ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई। बिलाशुब्हः आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, बुज़ुर्गी वाले हैं (बुख़ारी)

﴿214﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْنَا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هٰذَا السَّلَامُ عَلَیْكَ فَكَیْفَ نُصَلِّیْ؟ قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَ آلِ اِبْرَاهِیْمَ۔ رواه البخاری، باب الصّلاة علی النبی ﷺ، رقم: ٦۳۵۸

214. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷛ फ़रमाते हैं, हमने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें मालूम हो गया (कि हम तशह्हुद में कहकर आप पर सलाम भेजा करें) अब हमें यह भी बता दें कि हम आप पर दुरूद किस तरह भेजें? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस तरह कहा करो ।

तर्जुमा : या अल्लाह! अपने बन्दे और अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए, जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम ﷵ पर रहमत नाज़िल फ़रमाई और मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम ﷵ और हज़रत इब्राहीम ﷵ के घर वालों पर बरकत नाज़िल फ़रमाई। (बुख़ारी)

﴿215﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يُكْتَالَ بِالْمِكْيَالِ الْاَوْفٰى اِذَا صَلّٰى عَلَيْنَا اَهْلَ الْبَيْتِ فَلْيَقُلْ: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

رواه ابوداؤد، باب الصلاة على النبي ﷺ بعد التشهد، رقم:٩٨٢

215. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि जिसको यह बात पसन्द हो कि जब वह हमारे घर वाले पर दुरूद पढ़े तो उसका सवाब बहुत बड़े पैमाने में नापा जाए तो वह इन अल्फ़ाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे :

तर्जुमा : या अल्लाह! नबी मुहम्मद ﷺ पर और आपकी बीवियों पर जो कि मोमिनीन की माएं हैं और आपकी नस्ल पर और आपके सब घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाइए जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम عليه السلام के घर वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाई। आप तारीफ़ के मुस्तहिक़, अ़ज़्मत वाले हैं। (अबूदाऊद)

﴿216﴾ عَنْ رُوَيْفِعِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِيْ.

رواه البزار والطبراني في الاوسط والكبير واسانيدهم حسنة، مجمع الزوائد ١٠/٢٥٤

216. हज़रत रुवैफ़ेअ़ बिन साबित ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुहम्मद ﷺ पर इस तरह दुरूद भेजे, उसके लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाएगी।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप मुहम्मद ﷺ को क़ियामत के दिन अपने पास ख़ास मक़ामे क़ुर्ब में जगह दीजिए। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿217﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ: يَا عَبْدِيْ مَا عَبَدْتَنِيْ وَرَجَوْتَنِيْ فَاِنِّيْ غَافِرٌ لَكَ عَلٰى مَا كَانَ فِيْكَ، وَيَا عَبْدِيْ اِنْ لَقِيْتَنِيْ بِقُرَابِ الْاَرْضِ خَطِيْئَةً مَالَمْ تُشْرِكْ بِيْ لَقِيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً. (الحديث) رواه احمد ٥/١٥٤

217. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे! बेशक जब तक तू मेरी इबादत करता रहेगा और मुझ से (मग़्फ़िरत की) उम्मीद रखेगा, मैं तुझको माफ़ करता रहूंगा, चाहे तुझमें

कितनी ही बुराइयां क्यों न हों। मेरे बन्दे! अगर तू ज़मीन भर गुनाह के साथ भी मुझ से इस हाल में मिले कि मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तो मैं भी ज़मीन भर मग़्फ़िरत के साथ तुझ से मिलूंगा यानी भरपूर मग़्फ़िरत कर दूंगा। (मुस्नद अहमद)

﴿218﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: يَا ابْنَ آدَمَ! اِنَّكَ مَادَعَوْتَنِيْ وَرَجَوْتَنِيْ غَفَرْتُ لَكَ عَلٰى مَا كَانَ فِيْكَ وَلَا اُبَالِيْ. يَاابْنَ آدَمَ! لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوْبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ، ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِيْ غَفَرْتُ لَكَ وَلَا اُبَالِيْ.

(الحديث) رواه الترمذي، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب الحديث القدسي: يا ابن آدم انك مادعوتني رقم: ٣٥٤٠

218. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : आदम के बेटे! बेशक तू जब तक मुझ से दुआ मांगता रहेगा और (मग़्फ़िरत की) उम्मीद रखेगा, मैं तुझको माफ़ करता रहूंगा चाहे कितने ही गुनाह क्यों न हों और मुझको इसकी परवाह न होगी, यानी तू चाहे कितना ही बड़ा गुनाहगार हो, तुझे माफ़ करना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है। आदम के बेटे! अगर तेरे गुनाह आसमान की बुलन्दियों तक भी पहुंच जाएं, फिर तू मुझसे बख़्शिश चाहे तो मैं तुझको बख़्श दूंगा और मुझको उसकी परवाह नहीं होगी। (तिर्मिज़ी)

﴿219﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ عَبْدًا اَصَابَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ ذَنْبًا فَاغْفِرْلِي، فَقَالَ رَبُّهُ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ، ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللهُ ثُمَّ اَصَابَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ، فَقَالَ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ، ثُمَّ مَكَثَ مَاشَاءَ اللهُ ثُمَّ اَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ اَذْنَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ، فَقَالَ: اَعَلِمَ عَبْدِيْ اَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَاْخُذُ بِهٖ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِيْ ثَلَاثًا فَلْيَعْمَلْ مَا شَاءَ.

رواه البخاري، باب قول الله تعالى يريدون ان يبدلوا كلام الله، رقم: ٧٥٠٧

219. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : कोई बन्दा जब गुनाह कर लेता है, फिर (नादिम होकर) कहता है, मेरे रब! मैं तो गुनाह कर बैठा, अब आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों के सामने) फ़रमाते हैं कि क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई

रब है जो गुनाहों को माफ़ करता है और उन पर पकड़ भी कर सकता है। (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी। फिर वह बन्दा जब तक अल्लाह तआला चाहें गुनाह से रुका रहता है। फिर कोई गुनाह कर बैठता है तो (नादिम होकर) कहता है : मेरे रब! मैं तो एक और गुनाह कर बैठा, आप उसको भी माफ़ कर दीजिए तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : क्या मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह माफ़ करता है और उस पर पकड़ भी कर सकता है? (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी। फिर वह बन्दा जब तक अल्लाह तआला चाहें गुनाह से रुका रहता है। उसके बाद फिर कोई गुनाह कर बैठता है, तो (नादिम होकर) कहता है : मेरे रब! मैं तो एक और गुनाह कर बैठा आप उसको भी माफ़ कर दीजिए, तो अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : क्या मेरा बन्दा यह जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह माफ़ करता है और उस पर पकड़ भी कर सकता है? (सुन लो) मैंने अपने बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी। बन्दा जो चाहे करे यानी हर गुनाह के बाद तौबा करता रहे, मैं उसकी तौबा क़ुबूल करता रहूंगा। (बुख़ारी)

﴿220﴾ عَنْ أُمِّ عِصْمَةَ الْعَوْصِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَعْمَلُ ذَنْبًا إِلَّا وَقَفَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِإِحْصَاءِ ذُنُوْبِهِ ثَلَاثَ سَاعَاتٍ فَإِنِ اسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْ ذَنْبِهِ ذٰلِكَ فِي شَيْءٍ مِنْ تِلْكَ السَّاعَاتِ لَمْ يُوْقِفْهُ عَلَيْهِ، وَلَمْ يُعَذَّبْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢٦٢/٤

220. हज़रत उम्मे इस्मा औसिया रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई मुसलमान गुनाह करता है तो जो फ़रिश्ता उसके गुनाह लिखने पर मुक़र्रर है वह उस गुनाह को लिखने से तीन घड़ी यानी कुछ देर के लिए ठहर जाता है। अगर उसने उन तीन घड़ियों के दौरान किसी वक़्त भी अल्लाह तआला से अपने उस गुनाह की माफ़ी मांग ली, तो वह फ़रिश्ता आख़िरत में उसे उस गुनाह पर मुत्तला नहीं करेगा और न क़ियामत के दिन (उस गुनाह पर) उसे अज़ाब दिया जाएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿221﴾ عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ صَاحِبَ الشِّمَالِ لَيَرْفَعُ الْقَلَمَ سِتَّ سَاعَاتٍ عَنِ الْعَبْدِ الْمُسْلِمِ الْمُخْطِئِ أَوِ الْمُسِيْءِ، فَإِنْ نَدِمَ وَاسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْهَا أَلْقَاهَا، وَإِلَّا كُتِبَتْ وَاحِدَةً.

رواه الطبراني باسانيد ورجال احدها وثقوا، مجمع الزوائد ٢٤٦/١٠

221. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यक़ीनन बाएं तरफ़ का फ़रिश्ता गुनाहगार मुसलमान के लिए छ : घड़ियां (कुछ देर) क़लम को (गुनाह के) लिखने से उठाए रखता है, यानी नहीं लिखता। फिर अगर यह गुनाहगार बन्दा नादिम हो जाता है और अल्लाह तआला से गुनाह की माफ़ी मांग लेता है तो फ़रिश्ता उस गुनाह को नहीं लिखता, वरना एक गुनाह लिख दिया जाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿222﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اَخْطَاَ خَطِيْئَةً نُكِتَتْ فِیْ قَلْبِهٖ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فَاِذَا هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ سُقِلَ قَلْبُهٗ، وَاِنْ عَادَ زِيْدَ فِيْهَا حَتّٰى تَعْلُوَ قَلْبَهٗ، وَهُوَ الرَّانُ الَّذِیْ ذَكَرَ اللهُ ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ﴾ [المطففين: ١٤]

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ومن سورة ويل للمطففين، رقم: ٣٣٣٤

222. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में एक स्याह नुक़्ता लग जाता है। फिर उसने इस गुनाह को छोड़ दिया, और अल्लाह तआला से माफ़ी मांग ली और तौबा कर ली तो (वह स्याह नुक़्ता ख़त्म होकर) दिल साफ़ हो जाता है और अगर उसने गुनाह के बाद तौबा व इस्तग़फ़ार के बजाए मज़ीद गुनाह किए तो दिल की स्याही और बढ़ जाती है, यहां तक कि दिल पर छा जाती है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यही वह ज़ंग है जिसे अल्लाह तआला ने كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ में ज़िक्र फ़रमाया। (तिर्मिज़ी)

﴿223﴾ عَنْ اَبِیْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا اَصَرَّ مَنِ اسْتَغْفَرَ وَاِنْ عَادَ فِی الْيَوْمِ سَبْعِيْنَ مَرَّةً۔

رواه ابوداؤد، باب فی الاستغفار، رقم: ١٥١٤

223. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस्तग़फ़ार करता रहता है वह गुनाह पर अड़ने वाला शुमार नहीं होता, अगरचे दिन में सत्तर मर्तबा गुनाह करे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस गुनाह के बाद नदामत हो और आइंदा उस गुनाह से बचने का पक्का इरादा हो तो वह माफ़ी के क़ाबिल है, अगरचे वह गुनाह बार-बार भी सरज़द हो जाए। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿224﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَزِمَ الْإِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ ضِيْقٍ مَخْرَجًا وَمِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ.

رواه ابوداؤد، باب في الاستغفار، رقم: ١٥١٨

224. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स पाबन्दी से इस्तग़फ़ार करता रहता है, अल्लाह तआ़ला उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते हैं, हर ग़म से उसे नजात अ़ता फ़रमाते हैं और उसे ऐसी जगह से रोज़ी अ़ता फ़रमाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। (अबूदाऊद)

﴿225﴾ عَنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ اَنْ تَسُرَّهُ صَحِيْفَتُهُ فَلْيُكْثِرْ فِيْهَا مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٣٤٧

225. हज़रत ज़ुबैर ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि (क़ियामत के दिन) उसका आमालनामा उसको ख़ुश कर दे तो उसे कसरत से इस्तग़फ़ार करते रहना चाहिए। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿226﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: طُوْبٰى لِمَنْ وَجَدَ فِيْ صَحِيْفَتِهٖ اسْتِغْفَارًا كَثِيْرًا.

رواه ابن ماجه، باب الاستغفار، رقم: ٣٨١٨

226. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ख़ुशख़बरी है उस शख़्स के लिए जो अपने आ़मालनामे में (क़ियामत के दिन) ज़्यादा इस्तग़फ़ार पाए। (इब्ने माजा)

﴿227﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَقُوْلُ: يَا عِبَادِيْ كُلُّكُمْ مُذْنِبٌ اِلَّا مَنْ عَافَيْتُ فَاسْئَلُوْنِي الْمَغْفِرَةَ فَاَغْفِرَ لَكُمْ وَمَنْ عَلِمَ مِنْكُمْ اَنِّيْ ذُوْ قُدْرَةٍ عَلَى الْمَغْفِرَةِ فَاسْتَغْفَرَنِيْ بِقُدْرَتِيْ غَفَرْتُ لَهٗ وَكُلُّكُمْ ضَالٌّ اِلَّا مَنْ هَدَيْتُ فَسْئَلُوْنِي الْهُدٰى اَهْدِكُمْ وَكُلُّكُمْ فَقِيْرٌ اِلَّا مَنْ اَغْنَيْتُ فَسْئَلُوْنِيْ اَرْزُقْكُمْ وَلَوْ اَنَّ حَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ، وَاَوَّلَكُمْ وَ آخِرَكُمْ، وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمْ اجْتَمَعُوْا فَكَانُوْا عَلٰى قَلْبِ اَتْقٰى عَبْدٍ مِنْ عِبَادِيْ. لَمْ يَزِدْ فِيْ مُلْكِيْ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ وَلَوِ اجْتَمَعُوْا فَكَانُوْا عَلٰى قَلْبِ اَشْقٰى عَبْدٍ مِنْ عِبَادِيْ. لَمْ يَنْقُصْ مِنْ مُلْكِيْ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ وَلَوْ اَنَّ حَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ، وَاَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمُ اجْتَمَعُوْا، فَسَاَلَ كُلُّ سَائِلٍ مِنْهُمْ مَا بَلَغَتْ اُمْنِيَّتُهٗ مَا نَقَصَ مِنْ مُلْكِيْ اِلَّا كَمَا لَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ مَرَّ بِشَفَةِ الْبَحْرِ، فَغَمَسَ فِيْهَا اِبْرَةً ثُمَّ نَزَعَهَا ذٰلِكَ بِاَنِّيْ

جَوَّادٌ مَاجِدٌ عَطَائِي كَلَامٌ إِذَا أَرَدْتُ شَيْئًا، فَإِنَّمَا أَقُوْلُ لَهُ: كُنْ فَيَكُوْنُ.

رواه ابن ماجه، باب ذكر التوبة، رقم: ٤٢٥٧

227. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : मेरे बन्दो! तुममें से हर शख़्स गुनाहगार है, सिवाए उसके जिसे मैं बचा लूं, लिहाज़ा मुझसे मग्फ़िरत मांगो, मैं तुम्हारी मग्फ़िरत कर दूंगा, और जो शख़्स यह जानते हुए कि मैं माफ़ करने पर क़ादिर हूं, मुझसे माफ़ी मांगता है, मैं उसको माफ़ कर देता हूं और तुम सब गुमराह हो सिवाए उसके जिसे मैं हिदायत दूं, लिहाज़ा मुझसे हिदायत मांगो, मैं तुम्हें हिदायत दूंगा और तुम सब फ़क़ीर हो सिवाए उसके जिसे मैं ग़नी कर दूं, लिहाज़ा मुझसे मांगो मैं तुमको रोज़ी दूंगा। अगर तुम्हारे ज़िन्दा, मुर्दा, अगले, पिछले, नबातात और जमादात (भी इंसान बनकर) जमा हो जाएं, फिर ये सारे उस शख़्स की तरह हो जाएं जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला हो तो यह बात मेरी बादशाही में मच्छर के पर के बराबर भी ज़्यादती नहीं कर सकती। अगर तुम्हारे ज़िन्दा, मुर्दा, अगले, पिछले, नबातात और जमादात (भी इंसान बनकर) जमा हो जाएं तो मेरे ख़ज़ानों में इतनी भी कमी नहीं आएगी जितनी तुम में से कोई समुंदर के किनारे पर से गुज़रे और उसमें सूई डूबो कर निकाल ले। यह इसलिए कि मैं बहुत सख़ी हूं, बुज़ुर्गी वाला हूं, मेरा देना सिर्फ़ कह देना है। मैं जब किसी चीज़ का इरादा करता हूं तो उस चीज़ को कह देता हूं कि हो जा, वह हो जाती है। (इब्ने माजा)

﴿228﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنِ اسْتَغْفَرَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ، كَتَبَ اللهُ لَهُ بِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ حَسَنَةً.

رواه الطبراني واسناده جيد، مجمع الزوائد ١/٣٥٢

228. हज़रत उ़बादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए इस्तग़्फ़ार करे, अल्लाह तआ़ला उसके लिए हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत के बदले एक नेकी लिख देते हैं। (तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿229﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ فَتَصَافَحَا وَحَمِدَا اللهَ وَاسْتَغْفَرَاهُ غُفِرَ لَهُمَا.

رواه ابوداود، باب في المصافحة، رقم: ٥٢١١

229. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ा करते हैं और अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ करते हैं और अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत तलब करते हैं (मसलन اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ कहते हैं) तो उनकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (अबूदाऊद)

﴿230﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: كَيْفَ تَقُوْلُوْنَ بِفَرَحِ رَجُلٍ انْفَلَتَتْ مِنْهُ رَاحِلَتُهُ، تَجُرُّ زِمَامَهَا بِاَرْضٍ قَفْرٍ لَيْسَ بِهَا طَعَامٌ وَلَا شَرَابٌ، وَعَلَيْهَا لَهُ طَعَامٌ وَشَرَابٌ، فَطَلَبَهَا حَتّٰى شَقَّ عَلَيْهِ، ثُمَّ مَرَّتْ بِجِذْلِ شَجَرَةٍ، فَتَعَلَّقَ زِمَامُهَا، فَوَجَدَهَا مُتَعَلِّقَةً بِهِ؟ قُلْنَا: شَدِيْدًا، يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَمَا، اِنَّهُ وَاللّٰهِ! لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ، مِنَ الرَّجُلِ بِرَاحِلَتِهِ.

رواه مسلم، باب فی الحض علی التوبة والفرح بها: ٦٩٥٩

230. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम उस शख़्स की ख़ुशी के बारे में क्या कहते हो जिसकी ऊंटनी किसी सुनसान जंगल में अपनी नकेल की रस्सी घसीटती हुई निकल जाए, जहां न खाना हो न पानी, और उस ऊंटनी पर उस शख़्स का खाना और पानी रखा हुआ हो और वह उस ऊंटनी को ढूंढ-ढूंढ कर थक जाए, फिर वह ऊंटनी एक दरख़्त के तने के पास से गुज़रे तो उसकी नकेल दरख़्त के तने में अटक जाए और उस शख़्स को वह ऊंटनी उस तने में अटकी हुई मिल जाए? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसको बहुत ही ज़्यादा ख़ुशी होगी। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुनो, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला को अपने बन्दे की तवज्जोह पर उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी उस शख़्स को (ऐसे सख़्त हाल में मायूस होने के बाद) सवारी के मिल जाने से होती है। (मुस्लिम)

﴿231﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ حِيْنَ يَتُوْبُ اِلَيْهِ، مِنْ اَحَدِكُمْ كَانَ عَلٰى رَاحِلَتِهِ بِاَرْضِ فَلَاةٍ، فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ، وَعَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ، فَاَيِسَ مِنْهَا، فَاَتٰى شَجَرَةً، فَاضْطَجَعَ فِيْ ظِلِّهَا، قَدْ اَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهِ، فَبَيْنَا هُوَ كَذٰلِكَ اِذْ هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهُ، فَاَخَذَ بِخِطَامِهَا، ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ: اَللّٰهُمَّ! اَنْتَ عَبْدِيْ وَاَنَا رَبُّكَ، اَخْطَاَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ.

رواه مسلم، باب فی الحض علی التوبة والفرح بها، رقم: ٦٩٦٠

231. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबा से उससे भी ज़्यादा ख़ुश होते हैं जो ख़ुशी तुममें से किसी को उस वक़्त होती है जब वह अपनी सवारी के साथ जंगल बयाबान में हो और सवारी उससे छूट कर चली जाए जिस पर उसका खाना- पीना भी रखा हुआ हो, फिर वह अपनी सवारी के मिलने से नाउम्मीद होकर किसी दरख़्त के साए में आकर लेट जाए। अब जबकि वह अपनी सवारी के मिलने से बिल्कुल नाउम्मीद हो चुका था कि अचानक उसे वह सवारी खड़ी नज़र आए तो वह फ़ौरन उसकी नकेल पकड़ ले और ख़ुशी के ग़लबा में ग़लती से यूं कह जाए या अल्लाह! आप मेरे बन्दे हैं और मैं आपका रब हूं। (मुस्लिम)

﴿232﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنْ رَجُلٍ فِي اَرْضٍ دَوِيَّةٍ مَهْلِكَةٍ مَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَنَامَ فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ فَطَلَبَهَا حَتّٰى اَدْرَكَهُ الْعَطَشُ ثُمَّ قَالَ: اَرْجِعُ اِلٰى مَكَانِيَ الَّذِيْ كُنْتُ فِيْهِ، فَاَنَامُ حَتّٰى اَمُوْتَ، فَوَضَعَ رَاْسَهُ عَلٰى سَاعِدِهٖ لِيَمُوْتَ فَاسْتَيْقَظَ وَعِنْدَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا زَادُهُ وَطَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَاللهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ الْمُؤْمِنِ مِنْ هٰذَا بِرَاحِلَتِهٖ وَزَادِهٖ.

رواه مسلم، باب في الحض على التوبة والفرح بها، رقم: ٦٩٥٥

232. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला को अपने मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुशी होती है जो किसी हलाकत वाले जंगल में सवारी पर जाए जिस पर उसका खाना-पीना रखा हो और वह (सवारी से उतर कर) सो जाए और जब आंख खुले और देखे कि सवारी कहीं जा चुकी है, तो वह उसको ढूंढता रहे, यहां तक कि जब उसे (सख़्त) प्यास लगे तो कहे कि मैं वापस उसी जगह जाता हूं जहां मैं पहले था और मैं वहां सो जाऊंगा यहां तक कि मर जाऊं, चुनांचे वह बाज़ू पर सर रख कर लेट जाता है ताकि मर जाए, फिर वह बेदार होता है तो उसकी सवारी उसके पास मौजूद होती है जिस पर उसका तोशा और खाने-पीने का सामान रखा हुआ होता है। अल्लाह तआ़ला को मोमिन बन्दे की तौबा पर उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है जितनी उस शख़्स को (नाउम्मीद होने के बाद) अपनी सवारी और तोशा (के मिल जाने) से होती है। (मुस्लिम)

﴾233﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوْبَ مُسِيْءُ النَّهَارِ، وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوْبَ مُسِيْءُ اللَّيْلِ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا۔ رواه مسلم، باب قبول التوبة من الذنوب......،رقم: ۶۹۸۹

233. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला रात भर अपनी रहमत का हाथ बढ़ाए रखते हैं ताकि दिन का गुनहगार रात को तौबा कर ले, और दिन भर अपनी रहमत का हाथ बढ़ाए रखते हैं ताकि रात का गुनहगार दिन में तौबा कर ले (और यह सिलसिला जारी रहेगा) यहां तक कि सूरज मग़्रिब से निकले। (उसके बाद तौबा क़ुबूल नहीं होगी)। (मुस्लिम)

﴾234﴿ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ بِالْمَغْرِبِ بَابًا عَرْضُهُ مَسِيْرَةُ سَبْعِيْنَ عَامًا لِلتَّوْبَةِ لَا يُغْلَقُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ قِبَلِهٖ۔ (وهو قطعة من الحديث) رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فى فضل التوبة، رقم: ۳۵۳۶

234. हज़रत सफ़्वान बिन अ़स्साल ﷺ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने मग़्रिब की जानिब से एक दरवाज़ा तौबा के लिए बनाया है, (जिसकी लम्बाई का तो क्या पूछना) उसकी चौड़ाई सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर है जो कभी बन्द न होगा, यहां तक कि सूरज मग़्रिब की तरफ़ से निकले (उस वक़्त क़ियामत क़रीब होगी और तौबा का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा)। (तिर्मिज़ी)

﴾235﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ۔ رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ان الله يقبل توبة العبد......،رقم:۳۵۳۷

235. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियलाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल फ़रमाते हैं, जब तक ग़रग़रा यानी नज़अ़् की कैफ़ियत शुरू न हो जाए। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मौत के वक़्त जब बन्दे की रूह जिस्म से निकलने लगती है तो हलक़ की नाली में एक क़िस्म की आवाज़ पैदा होती है जिसे ग़रग़रा कहते हैं, उसके बाद ज़िन्दगी की कोई उम्मीद नहीं रहती, यह मौत की यक़ीनी और आख़िरी अ़लामत होती है, लिहाज़ा इस अ़लामत के ज़ाहिर होने के बाद तौबा करना या ईमान लाना मोतबर नहीं होता।

﴿236﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَابَ قَبْلَ مَوْتِهِ بِعَامٍ تِيْبَ عَلَيْهِ حَتّٰى قَالَ بِشَهْرٍ حَتّٰى قَالَ بِجُمُعَةٍ، حَتّٰى قَالَ بِيَوْمٍ، حَتّٰى قَالَ بِسَاعَةٍ، حَتّٰى قَالَ بِفُوَاقٍ۔ رواه الحاكم ٤/٢٥٨

236. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी मौत से एक साल पहले तौबा कर ले बल्कि महीना, हफ़्ता, एक दिन, एक घड़ी और ऊंटनी का दूध एक मर्तबा दूहने के बाद दूसरी मर्तबा दूहने तक का जो थोड़ा-सा दर्मियानी वक़्फ़ा है, मौत से इतनी देर पहले तक भी तौबा कर ले तो क़ुबूल हो जाती है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿237﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَخْطَأَ خَطِيْئَةً اَوْ اَذْنَبَ ذَنْبًا ثُمَّ نَدِمَ فَهُوَ كَفَّارَتُهُ۔ رواه البيهقى فى شعب الايمان ٥/٣٨٧

237. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने कोई ग़लती की या कोई गुनाह किया, फिर उस पर शर्मिन्दा हुआ तो यह शर्मिन्दगी उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा है। (बैहक़ी)

﴿238﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كُلُّ ابْنِ آدَمَ خَطَّاءٌ، وَخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب فى استعظام المؤمن ذنوبه...... رقم: ٢٤٩٩

238. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ह आदमी ख़ता करने वाला है और बेहतरीन ख़ता करने वाले वे हैं जो तौबा करने वाल हैं। (तिर्मिज़ी

﴿239﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ مِنْ سَعَادَةِ الْمَرْءِ اَنْ يَطُوْلَ عُمْرُهُ، وَيَرْزُقَهُ اللهُ الْاِنَابَةَ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٤/٢٤٠

239. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को य इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इंसान की नेकबख़्ती में से यह है कि उसकी उम्र लम्बी हो और अल्लाह तआ़ला उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दें। (मुस्तदरक हाकि

﴿240﴾ عَنِ الْاَغَرِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا يُّهَا النَّاسُ! تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ، فَاِنِّي اَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ۔ فِي الْيَوْمِ۔ مِائَةَ مَرَّةٍ۔

رواه مُسلِم، باب استحباب الاستغفار......،رقم: ٦٨٥٩

240. हज़रत अग़र्र ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा किया करो, इसलिए कि मैं ख़ुद दिन में सौ मर्तबा अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा करता हूं। (मुस्लिम)

﴿241﴾ عَنِ ابْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: يَا يُّهَا النَّاسُ! اِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: لَوْ اَنَّ ابْنَ آدَمَ اُعْطِيَ وَادِيًا مِلأً مِنْ ذَهَبٍ، اَحَبَّ اِلَيْهِ ثَانِيًا، وَلَوْ اُعْطِيَ ثَانِيًا اَحَبَّ اِلَيْهِ ثَالِثًا، وَلَا يَسُدُّ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ اِلَّا التُّرَابُ، وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ.

رواه البخاري، باب ما يتقى من فتنة المال رقم: ٦٤٣٨

241. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ؓ फ़रमाते हैं कि लोगो! नबी करीम ﷺ इर्शाद फ़रमाते थे : अगर इंसान को सोने से भरा हुआ एक जंगल मिल जाए तो दूसरे की ख़्वाहिश करेगा और अगर दूसरा जंगल मिल जाए तो तीसरे की ख़्वाहिश करेगा, इंसान का पेट तो सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही भर सकती है (यानी क़ब्र की मिट्टी में जाकर ही वह अपने उस माल के बढ़ाने की ख़्वाहिश से रुक सकता है) अलबत्ता अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर मेहरबानी फ़रमाते हैं जो अपने दिल का रुख़ दुनिया की दौलत के बजाए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ कर ले (उसे अल्लाह तआ़ला दुनिया में दिल का इत्मीनान नसीब फ़रमाते हैं और माल के बढ़ाने की हिर्स से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं) (बुख़ारी)

﴿242﴾ عَنْ زَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ غُفِرَلَهُ، وَاِنْ كَانَ فَرَّ مِنَ الزَّحْفِ۔ رواه ابوداؤد، باب في الاستغفار، رقم: ١٥١٧ ورواه الحاكم من حديث ابن مسعود وقال: صحيح على شرط مسلم الا انه قال: يَقُوْلُهَا ثَلَاثًا ووافقه الذهبي ١١٨/٢

242. हज़रत ज़ैद ؓ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स 'अस्तग़्फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हैय्युल क़ैय्यूम' कहे, उसकी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी, अगरचे वह जिहाद के मैदान से भागा हो। एक रिवायत में इन कलिमे के तीन मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र है।

तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला से मग्फ़िरत चाहता हूं, जिनके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा हैं, क़ायम रहने वाले हैं और उन्हीं के सामने तौबा करता हूं।
(अबूदाऊद, मुस्तदरक हाकिम)

﴿243﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: وَا ذُنُوْبَاهُ وَا ذُنُوْبَاهُ، فَقَالَ هٰذَا الْقَوْلَ مَرَّتَيْنِ اَوْثَلاَثًا، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ، فَقَالَهَا ثُمَّ قَالَ: عُدْ فَعَادَ، ثُمَّ قَالَ: عُدْ فَعَادَ، فَقَالَ: قُمْ فَقَدْ غَفَرَاللهُ لَكَ. رواه الحاكم، وقال: حديث

رواته عن اخرهم مدنيون ممن لايعرف واحدمنهم بجرح ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٤٣

243. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे : हाए मेरे गुनाह! हाए मेरे गुनाह! उसने यह दो या तीन मर्तबा कहा। रसूलुल्लाह ﷺ ने उससे इर्शाद फ़रमाया : तुम कहो ऐ अल्लाह! आपकी मग्फ़िरत मेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा वसीअ़ है और मैं अपन अमल से ज़्यादा आपकी रहमत का उम्मीदवार हूं। उस शख़्स ने ये कलिमे कहे। आ ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर कहो, उसने फिर कहे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया फिर कहो उसने तीसरी मर्तबा भी ये कलिमे कहे। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उठ जाओ अल्लाह तआला ने तुम्हारी मग्फ़िरत फ़रमा दी। (मुस्तदरक हाकि

﴿244﴾ عَنْ سَلْمٰى اُمِّ بَنِيْ اَبِيْ رَافِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَوْلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، اَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَخْبِرْنِيْ بِكَلِمَاتٍ وَلَا تُكْثِرْ عَلَيَّ، قَالَ: قُوْلِيْ: اَللهُ اَكْبَرُ عَشْرَ مَرَّاتٍ، يَقُوْلُ اللهُ: هٰذَا لِيْ وَقُوْلِيْ: سُبْحَانَ اللهِ عَشْرَمَرَّاتٍ، يَقُوْلُ اللهُ: هٰذَا لِيْ، وَقُوْلِيْ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ، يَقُوْلُ: قَدْ فَعَلْتُ: فَتَقُوْلِيْنَ عَشْرَ مِرَارٍ، يَقُوْلُ: قَدْ فَعَلْتُ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/١٠٩

244. हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया : ऐ रसूलुल्लाह! मुझे चन्द कलिमे बता दीजिए मगर ज़्यादा न हों। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस मर्तबा अल्लाहु अकबर कहो। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यह मेरे लिए है। दस मर्तबा सुब्हानल्लाह कहो, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : यह मेरे लिए है और कहो अल्लाहुम्मग्फ़िरली ''ऐ अल्लाह मेरी मग्फ़िरत फ़रमा दीजिए'' अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : मैंने मग्फ़िरत कर दी। तुम उसको दस मर्तबा कहो अल्लाह तआला हर मर्तबा फ़रमाते हैं : मैंने मग्फ़िरत कर दी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾245﴿ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِیْ وَقَّاصٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ اَعْرَابِیٌّ اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: عَلِّمْنِیْ كَلَامًا اَقُوْلُهٗ، قَالَ: قُلْ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِیْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِیْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَكِیْمِ. قَالَ: فَهٰٓؤُلَاءِ لِرَبِّیْ، فَمَالِیْ؟ قَالَ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ۔ رواه مسلم، رقم: ٦٨٤٨، و زاد من حديث ابی مالك: وَعَافِنِیْ وقال فی رواية: فَاِنَّ هٰٓؤُلَاءِ تَجْمَعُ لَكَ دُنْيَاكَ وَآخِرَتَكَ. رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٥١، ٦٨٥٠

245. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से रिवायत है एक देहात के रहने वाले शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : मुझे कोई ऐसा कलाम सिखा दीजिए, जिसको मैं पढ़ता रहूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह कहा करो ।

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेले हैं, उनका कोई शरीक नहीं। अल्लाह तआ़ला बहुत ही बड़े हैं और अल्लाह तआ़ला ही के लिए बहुत तारीफ़ें हैं। अल्लाह तआ़ला हर ऐब से पाक हैं जो तमाम जहानों के पालने वाले हैं। गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ुव्वत अल्लाह तआ़ला ही की मदद से है, जो ग़ालिब हैं, हिकमत वाले हैं। उस देहात के रहने वाले शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ये कलिमात तो मेरे रब को याद करने के लिए हैं। मेरे लिए वे कौन से कलिमात हैं (जिनके ज़रिए मैं अपने लिए दुआ़ करूं)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस तरह मांगो : अल्लाह! मेरी मग्फ़िरत फ़रमा दीजिए, मुझ पर रहम फ़रमा दीजिए, मुझे हिदायत दे दीजिए, मुझे रोज़ी दे दीजिए और मुझे आ़फ़ियत अ़ता फ़रमा दीजिए।'

एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ये कलिमे तुम्हारे लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई को जमा कर देंगे। (मुस्लिम)

﴾246﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَاَیْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَعْقِدُ التَّسْبِیْحَ بِیَدِهٖ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی عقد التسبيح باليد، رقم: ٣٤٨٦

246. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को अपने मुबारक हाथ की उंगलियों पर तस्बीह शुमार करते देखा। (तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह ﷺ से मंक़ूल अज़कार और दुआएँ

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: ﴿وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّي فَاِنِّي قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ [البقرة: ١٨٦]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : जब आप से मेरे बन्दे मेरे मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त करें (कि मैं क़रीब हूं या दूर) तो आप बता दीजिए कि मैं क़रीब ही हूं, दुआ मांगने वाले की दुआ को क़ुबूल करता हूं जब वह मुझसे दुआ मांगे। (बक़रः 186)

وَقَالَ تَعَالٰی : ﴿قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَاؤُكُمْ﴾ [الفرقان:٧٧]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप फ़रमा दीजिए, अगर तुम दुआ न करो, तो मेरा रब भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करेगा। (फ़ुरक़ान : 77)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ﴾ [الاعراف: ٥٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : लोगो! अपने रब से गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके दुआ किया करो। (आराफ़ : 55)

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿ وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا﴾ [الاعراف: ٥٦]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआला से डरते हुए और रहमत की उम्मीद रखते हुए दुआ मांगते रहना। (आराफ़ : 56)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا﴾ [الاعراف: ١٨٠]

एक जगह इर्शाद है : और अच्छे-अच्छे सब नाम अल्लाह तआला के लिए ख़ास हैं, लिहाज़ा उन्हीं नामों से अल्लाह तआला को पुकारा करो। (आराफ़ : 180)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْءَ﴾ [النمل: ٦٢]

एक जगह इर्शाद है : (अल्लाह तआला के सिवा) भला कौन है जो बेक़रार की दुआ क़ुबूल करता है, जब वह बेक़रार उसको पुकारता है और तकलीफ़ व मुसीबत को दूर कर देता है। (नम्ल : 62)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ لا قَالُوْآ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ۝ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ قف وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ﴾

[البقرة: ١٥٦، ١٥٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (सब्र करने वाले वे हैं जिनकी यह आदत है कि) जब उन पर किसी क़िस्म की कोई भी मुसीबत आती है, तो (दिल से समझ कर यूं) कहते हैं कि हम तो (माल व औलाद समेत, हक़ीक़त में) अल्लाह तआला ही की मिल्कियत हैं (और हक़ीक़ी मालिक को अपनी चीज़ में हर तरह का अख़्तियार होता है, लिहाज़ा बन्दे को मुसीबत में परेशान होने की ज़रूरत नहीं) और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआला ही के पास जाने वाले हैं (लिहाज़ा यहां के नुक़सानों का बदला वहां मिल कर रहेगा) यही वे लोग हैं, जिन पर उनके रब की जानिब से ख़ास-ख़ास रहमतें हैं (जो सिर्फ़ उन्हीं पर होंगी) और आम रहमत भी होगी (जो सब पर होती है) और यही हिदायत पाने वाले हैं। (बक़रः 156-157)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى۝ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ۝ وَيَسِّرْلِيْ اَمْرِيْ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ۝ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ۝ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ۝ هٰرُوْنَ اَخِي۝ اشْدُدْ بِهٖ اَزْرِيْ۝ وَاَشْرِكْهُ فِيْ اَمْرِيْ۝ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا۝ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا﴾ [طه: ٢٤-٣٤]

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा عليه السلام से इर्शाद फ़रमाया : फ़िरऔन के पास जाओ, क्योंकि वह बहुत हद से निकल गया है। मूसा عليه السلام ने दरख़्वास्त की, मेरे रब! मेरा हौसला बढ़ा दीजिए और मेरे लिए मेरे (तब्लीग़ी) काम को आसान कर दीजिए और मेरी ज़बान का बन्द यानी लुकनत हटा दीजिए, ताकि लोग मेरी बात समझ सकें और मेरे घर वालों में से मेरे लिए एक मददगार मुक़र्रर कर दीजिए वह मददगार हारून को बना दीजिए जो मेरे भाई हैं। उनके ज़रिए मेरी कमर-ए-हिम्मत मज़बूत कर दीजिए और उनको मेरे (तब्लीग़ी) काम में शरीक कर दीजिए, ताकि हम मिलकर आपकी पाकी ब्यान करें और ख़ूब कसरत से आप का ज़िक्र करें। (ताहा : 24-34)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿247﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب، باب منه الدعاء مخ العبادة، رقم: ٣٣٧١

247. हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه से नबी करीम ﷺ का इर्शाद मंक़ूल है : दुआ़ इबादत का मग्ज़ है। (तिर्मिज़ी)

﴿248﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ، ثُمَّ قَالَ﴿ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ﴾

رواه الترمذی وقال هذا حديث حسن صحيح، باب ومن سورة المؤمن، رقم: ٣٢٤٧

248. हज़रत नोमान बिन बशीर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : दुआ़ इबादत ही है। उसके बाद आप ﷺ ने (दलील के तौर पर) क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई :

तर्जुमा : और तुम्हारे रब ने इर्शाद फ़रमाया है : मुझसे दुआ़ मांगा करो, मैं तुम्हारी दुआ़ क़ुबूल करूंगा, बिलाशुब्हा जो लोग मेरी बन्दगी करने से तकब्बुर करते हैं वे अंक़रीब ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿249﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَلُوا اللهَ مِنْ فَضْلِهٖ فَاِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يُحِبُّ اَنْ يُّسْاَلَ، وَاَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اِنْتِظَارُ الْفَرَجِ۔

رواه الترمذی، باب فی انتظار الفرج،رقم: ٣٥٧١

249. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला से उसका फ़ज़्ल मांगो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला को यह बात पसन्द है कि उनसे मांगा जाए और कुशादगी (की दुआ़ के बाद कुशादगी) का इंतज़ार करना अफ़ज़ल इबादत है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : कुशादगी के इंतिज़ार का मतलब यह है कि इस बात की उम्मीद रखी जाए कि जिस रहमत, हिदायत, भलाई के लिए दुआ़ मांगी जा रही है, वह इन्शाअल्लाह ज़रूर हासिल होगी।

﴿250﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَرُدُّ الْقَدْرَ اِلَّا الدُّعَاءُ، وَلَا يَزِيْدُ فِی الْعُمُرِ اِلَّا الْبِرُّ وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيْبُهُ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبی ١/٤٩٣

250. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुआ़ के सिवा कोई चीज़ तक़दीर के फ़ैसले को टाल नहीं सकती और नेकी के सिवा कोई चीज़ उम्र को नहीं बढ़ा सकती और आदमी (कभी-कभी) किसी गुनाह के करने की वजह से रोज़ी से महरूम कर दिया जाता है। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला के यहां यह तय होता है कि यह शख़्स अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगेगा और जो मांगेगा वह उसे मिलेगा। चुनांचे हदीस शरीफ़ में आता है "दुआ़ करना भी अल्लाह तआ़ला के हां मुक़द्दर होता है"।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला के हां यह फ़ैसला होता है कि उस शख़्स की उम्र मिसाल के तौर पर साठ साल है लेकिन यह शख़्स फ़्लां नेकी (मिसाल के तौर पर हज) करेगा, इसलिए उसकी उम्र बीस साल बढ़ा दी जाएगी और यह अस्सी साल दुनिया में ज़िन्दा रहेगा। (मिरक़ात)

﴿251﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا عَلَى الْاَرْضِ مُسْلِمٌ يَدْعُو اللهَ تَعَالٰى بِدَعْوَةٍ اِلَّا آتَاهُ اللهُ اِيَّاهَا اَوْصَرَفَ عَنْهُ مِنَ السُّوْءِ مِثْلَهَا مَا لَمْ يَدْعُ

بِـمَـاْثَمٍ اَوْ قَطِيْعَةِ رَحِمٍ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: اِذًا نُكْثِرُ قَالَ: اللّٰهُ اَكْثَرُ۔ رواه الترمذی وقال: هـذا حـديـث غـريـب صحيح، باب انتظار الفرج وغير ذلك، رقم: ٣٥٧٣ ورواه الـحـاكـم وزاد فيه: اَوْ يَدَّخِرُ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلَهَا وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ووافقه الذهبی ۱/۴۹۳

251. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़मीन पर जो मुसलमान भी अल्लाह तआला से कोई ऐसी दुआ करता है, जिसमें कोई गुनाह या रिश्तों के काटने की बात न हो तो अल्लाह तआला या तो उसको वही अ़ता फ़रमा देते हैं जो उसने मांगा है या कोई तकलीफ़ उस दुआ के बक़द्र उससे हटा लेते हैं या उसके लिए उस दुआ के बराबर अज्र का ज़ख़ीरा कर देते हैं। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : जब बात यह है (कि दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है और उसके बदले में कुछ न कुछ ज़रूर मिलता है) तो हम बहुत ज़्यादा दुआएं करेंगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला भी बहुत ज़्यादा देने वाले हैं।

(तिर्मिज़ी, मुस्तदरक हाकिम)

﴿252﴾ عَنْ سَلْـمَـانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ حَيِيٌّ كَرِيْمٌ يَسْتَحْيِيْ اِذَا رَفَعَ الرَّجُلُ اِلَيْهِ يَدَيْهِ اَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا خَائِبَتَيْنِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ان الله حيى كريم......، رقم: ٣٥٥٦

252. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा अल्लाह तआला की ज़ात में बहुत ज़्यादा हया की सिफ़त है, वह बग़ैर मांगे बहुत ज़्यादा देने वाले हैं। जब आदमी अल्लाह तआला के सामने मांगने के लिए हाथ उठाता है, तो उन्हें उन हाथों को ख़ाली और नाकाम वापस करने से हया आती है (इसलिए ज़रूर अ़ता फ़रमाने का फ़ैसला फ़रमाते हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴿253﴾ عَنْ اَبِيْ هُـرَيْـرَةَ رَضِـيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ يَقُوْلُ: اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِيْ بِيْ، وَاَنَا مَعَهُ اِذَا دَعَانِيْ۔ رواه مسلم، باب فضل الذكر والدعاء، رقم:...... ٦٨٢٩

253. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं अपने बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूं जैसा कि वह मेरे साथ गुमान रखता है और जिस वक़्त वह मुझसे दुआ करता है, तो मैं उसके साथ होता हूं।

(मुस्लिम)

﴿254﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَيْءٌ اَكْرَمَ عَلَى اللهِ تَعَالٰى مِنَ الدُّعَاءِ۔

رواه الترمذی وقال: هذاحديث حسن غريب، باب ماجاء فی فضل الدعاء، رقم: ٣٣٧٠

254. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से ज़्यादा बुलन्द मर्तबा कोई चीज़ नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴿255﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَسْتَجِيْبَ اللهُ لَهُ عِنْدَ الشَّدَائِدِ وَالْكُرَبِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِی الرَّخَاءِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، رقم: ٣٣٨٢

255. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह तआला सख़्तियों और बेचैनियों के वक़्त उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएं, उसे चाहिए कि वह ख़ुशहाली के ज़माने में ज़्यादा दुआ किया करे। (तिर्मिज़ी)

﴿256﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح ووافقه الذهبی ٤٩٢/١

256. हज़रत अली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुआ मोमिन का हथियार है, दीन का स्तून है और ज़मीन व आसमान का नूर है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿257﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: لَا يَزَالُ يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَالَمْ يَدْعُ بِاِثْمٍ اَوْ قَطِيْعَةِ رَحِمٍ، مَا لَمْ يَسْتَعْجِلْ، قِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! مَا الْاِسْتِعْجَالُ؟ قَالَ: يَقُوْلُ: قَدْ دَعَوْتُ، وَقَدْ دَعَوْتُ، فَلَمْ اَرَ يَسْتَجِيْبُ لِیْ، فَيَسْتَحْسِرُ عِنْدَ ذٰلِكَ، وَيَدَعُ الدُّعَاءَ۔

رواه مسلم، باب بيان انه يُستجاب للداعی .....،رقم: ٦٩٣٦

257. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब तक गुनाह और रिश्तों के काटने की दुआ न करे उसकी दुआ क़ुबूल होती रहती है, बशर्ते कि वह जल्दबाज़ी न करे। पूछा गया : या रसूलुल्लाह! जल्दबाज़ी का

क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया : बन्दा कहता है मैंने दुआ की, फिर दुआ की, लेकिन मुझे तो क़ुबूल होती नज़र नहीं आती, फिर उकता कर दुआ करना छोड़ देता है। (मुस्लिम)

﴾258﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَیَنْتَهِیَنَّ اَقْوَامٌ عَنْ رَفْعِهِمْ اَبْصَارَهُمْ، عِنْدَ الدُّعَاءِ فِی الصَّلَاةِ اِلَی السَّمَاءِ اَوْ لَتُخْطَفَنَّ اَبْصَارُهُمْ۔

رواہ مسلم، باب النھی عن رفع البصر الی السّماء فی الصلاۃ، صحیح مسلم ۱/۳۲۱ طبع دار احیاء التراث العربی، بیروت

258. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोग नमाज़ में दुआ के वक़्त अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाने से बाज़ आ जाएं वरना उनकी बीनाई उचक ली जाएगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नमाज़ में दुआ के वक़्त आसमान की तरफ़ निगाह उठाने से ख़ास तौर पर इस वजह से मना किया गया है कि दुआ के वक़्त निगाह आसमान की तरफ़ उठ ही जाती है। (फ़त्हुलमुलहिम)

﴾259﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اُدْعُوا اللّٰهَ وَاَنْتُمْ مُوْقِنُوْنَ بِالْاِجَابَةِ، وَ اعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ لَا یَسْتَجِیْبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لَاهٍ۔

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث غریب، کتاب الدعوات، رقم: ۳۴۷۹

259. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अल्लाह तआला से दुआ की क़ुबूलियत का यक़ीन रखते हुए दुआ मांगो और यह बात समझ लो कि अल्लाह तआला उस शख़्स की दुआ को क़ुबूल नहीं फ़रमाते, जिसका दिल (दुआ मांगते वक़्त) अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल हो, अल्लाह तआला के ग़ैर में लगा हुआ हो। (तिर्मिज़ी)

﴾260﴿ عَنْ حَبِیْبِ بْنِ مَسْلَمَةَ الْفِهْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: لَا یَجْتَمِعُ مَلَأٌ فَیَدْعُوْ بَعْضُهُمْ وَیُؤَمِّنُ الْبَعْضُ اِلَّا اَجَابَهُمُ اللّٰهُ۔ رواہ الحاکم ۳/۳۴۷

260. हज़रत हबीब बिन मसलमा फ़िहरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो जमाअत एक जगह जमा हो और उनमें से एक दुआ करे और दूसरे आमीन कहें तो अल्लाह तआला उनकी दुआ ज़रूर क़ुबूल फ़रमाते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾261﴿ عَنْ زُهَيْرِ النُّمَيْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ، فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ قَدْ أَلَحَّ فِي الْمَسْئَلَةِ، فَوَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَمِعُ مِنْهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: أَوْجَبَ إِنْ خَتَمَ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: بِأَيِّ شَيْءٍ يَخْتِمُ، فَقَالَ : بِآمِيْنَ، فَإِنَّهُ إِنْ خَتَمَ بِآمِيْنَ فَقَدْ أَوْجَبَ، فَانْصَرَفَ الرَّجُلُ الَّذِيْ سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ ، فَأَتَى الرَّجُلَ فَقَالَ: اِخْتِمْ يَا فُلَانُ بِآمِيْنَ وَ اَبْشِرْ۔ رواه ابو داؤد، باب التامين وراء الامام، رقم :٩٣٨

261. हज़रत ज़ुहैर नुमैरी ﷺ रिवायत करते हैं कि हम एक रात रसूलुल्लाह ﷺ के साथ निकले तो हमारा गुज़र एक शख़्स के पास से हुआ जो बहुत आजिज़ी के साथ दुआ में लगा हुआ था। नबी करीम ﷺ उसकी दुआ सुनने खड़े हो गए और फिर इर्शाद फ़रमाया : यह दुआ क़ुबूल करवा लेगा अगर उस पर मुहर लगा दे। लोगों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, किस चीज़ के साथ मुहर लगाए? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आमीन के साथ। बिलाशुब्हा अगर उसने आमीन के साथ मुहर लगा दी, यानी दुआ के ख़त्म पर आमीन कह दी तो उसने दुआ को क़ुबूल करवा लिया। फिर उस शख़्स ने जिसने नबी करीम ﷺ से मुहर के बारे में दरयाफ़्त किया था, उस (दुआ मांगने वाले) शख़्स से जाकर कहा, फ़्लां! आमीन के साथ दुआ को ख़त्म करो, और दुआ की क़ुबूलियत की ख़ुशख़बरी हासिल करो। (अबूदाऊद)

﴾262﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَسْتَحِبُّ الْجَوَامِعَ مِنَ الدُّعَاءِ وَيَدَعُ مَا سِوَى ذٰلِكَ۔ رواه ابو داؤد، باب الدعاء،رقم:١٤٨٢

262. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जामेअ़ दुआओं को पसन्द फ़रमाते थे और इसके अलावा की दुआओं को छोड़ देते थे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : जामेअ़ दुआ से वह दुआ मुराद है, जिसमें अल्फ़ाज़ मुख़्तसर हों और मफ़हूम में वुस्अ़त हो या वह दुआ मुराद है जिसमें दुनिया व आख़िरत की भलाई को मांगा गया हो या वह दुआ मुराद है, जिसमें तमाम मोमिनीन को शामिल किया गया हो जैसे रसूलुल्लाह ﷺ से अक्सर यह जामेअ़ दुआ मंक़ूल है : 'रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तौं-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तौं-व क़िना अ़ज़ा-बन्नार०'। (बज़्लुलमज्हूद)

﴾263﴿ عَنِ ابْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعَنِيْ أَبِيْ وَأَنَا أَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! إِنِّي أَسْأَلُكَ

الْجَنَّةَ، وَنَعِيْمَهَا وَبَهْجَتَهَا، وَ كَذَا وَكَذَا، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَسَلَاسِلِهَا، وَاَغْلَالِهَا وَكَذَا وَكَذَا، فَقَالَ: يَا بُنَيَّ! اِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَيَكُوْنُ قَوْمٌ يَعْتَدُوْنَ فِي الدُّعَاءِ، فَإِيَّاكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنْهُمْ، اِنَّكَ اِنْ اُعْطِيْتَ الْجَنَّةَ اُعْطِيْتَهَا وَمَا فِيْهَا مِنَ الْخَيْرِ، وَاِنْ اُعِذْتَ مِنَ النَّارِ اُعِذْتَ مِنْهَا وَمَا فِيْهَا مِنَ الشَّرِّ. رواه ابوداؤد، باب الدعاء، رقم: ١٤٨٠

263. हज़रत सअ़द ﷺ के बेटे फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं दुआ़ में यूं कह रहा था, ऐ अल्लाह! मैं आपसे जन्नत और उसकी नेमतों और उसकी बहारों और फ़्लां-फ़्लां चीज़ों का सवाल करता हूं और मैं जहन्नम से और उसकी ज़ंजीरों, हथकड़ियों और फ़्लां-फ़्लां क़िस्म के अ़ज़ाब से पनाह मांगता हूं। मेरे वालिद सअ़द ﷺ ने यह सुना तो इर्शाद फ़रमाया : मेरे प्यारे बेटे! मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अंक़रीब ऐसे लोग होंगे जो दुआ़ में मुबालग़े से काम लिया करेंगे। तुम उन लोगों में शामिल होने से बचो। अगर तुम्हें जन्नत मिल गई, तो जन्नत की सारी नेमतें मिल जाएंगी और अगर तुम्हें जहन्नम से निजात मिल गई तो जहन्नम की तमाम तकलीफ़ों से नजात मिल जाएगी (लिहाज़ा दुआ़ में इस तफ़सील की ज़रूरत नहीं, बल्कि जन्नत की तलब और दोज़ख़ से पनाह मांगना काफ़ी है)। (अबूदाऊद)

﴾264﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً، لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ خَيْرًا مِنْ اَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ، وَذٰلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ. رواه مسلم، باب في الليل ساعة مستجاب فيها الدعاء، رقم: ١٧٧٠

264. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हर रात में एक घड़ी ऐसी होती है कि मसुलमान बन्दा उसमें दुनिया व आख़िरत की जो ख़ैर मांगता है, अल्लाह तआ़ला उसे ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं। (मुस्लिम)

﴾265﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالٰى كُلَّ لَيْلَةٍ اِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا حِيْنَ يَبْقٰى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ يَقُوْلُ: مَنْ يَدْعُوْنِيْ فَاَسْتَجِيْبَ لَهُ؟ مَنْ يَسْاَلُنِيْ فَاُعْطِيَهُ؟ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِيْ فَاَغْفِرَ لَهُ؟.

رواه البخاري، باب الدعاء والصلاة من آخر الليل، رقم: ١١٤٥

265. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब रात का तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, तो हर रात हमारे रब आसमाने दुनिया

की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाते हैं और इर्शाद फ़रमाते हैं : कौन है जो मुझसे दुआ करे, मैं उसकी दुआ क़ुबूल करूं? कौन है जो मुझसे मांगे मैं उसको अता करूं? कौन है जो मुझसे मग्फ़िरत तलब करे मैं उसकी मग्फ़िरत करूं? (बुख़ारी)

﴿266﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ اَبِىْ سُفْيَانَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ دَعَا بِهٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ الْخَمْسِ لَمْ يَسْاَلِ اللّٰهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ۔

رواه الطبرانى فى الكبير والاوسط واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٢٤١

266. हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स भी इन पांच कलिमात के ज़रिए कोई चीज़ अल्लाह तआला से मांगता है अल्लाह तआला उसको ज़रूर अता फ़रमाते हैं। 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इला-ह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह०'

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿267﴾ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلِظُّوْا بِيَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ۔ رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١/٤٩٩

267. हज़रत रबीया बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : दुआ में 'या ज़लजलालि वल इकराम' के ज़रिए इसरार करो, यानी इस लफ़्ज़ को दुआ में बार-बार कहो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿268﴾ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْاَكْوَعِ الْاَسْلَمِىِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: مَا سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ دَعَا دُعَاءً اِلَّا اسْتَفْتَحَهُ بِسُبْحَانَ رَبِّىَ الْعَلِىِّ الْاَعْلَى الْوَهَّابِ۔

رواه احمد والطبرانى بنحوه، وفيه: عمر بن راشد اليمامى وثقه غير واحد وبقية رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٢٤٠

268. हज़रत सलमा बिन अक्वा असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को कोई ऐसी दुआ करते हुए नहीं सुना जिस दुआ को आप ﷺ इन

कलिमों से शुरू न फ़रमाते हों, यानी हर दुआ के शुरू में आप ﷺ ये कलिमे फ़रमाते 'सुब्-हा-न रब्बियल अ़लीयल आ़ललवह्हाब' 'मेरा रब सब ऐबों से पाक है, सबसे बुलन्द, सबसे ज़्यादा देने वाला है।' (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿269﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سَمِعَ رَجُلًا يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ اَنِّىْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ فَقَالَ: لَقَدْ سَاَلْتَ اللهَ بِالْاِسْمِ الَّذِىْ اِذَا سُئِلَ بِهٖ اَعْطٰى وَاِذَا دُعِىَ بِهٖ اَجَابَ۔ رواه ابوداؤد، باب الدعاء، رقم: ١٤٩٣

269. हज़रत बुरैदा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स को यह दुआ करते सुना तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने अल्लाह तआ़ला से इस नाम के ज़रिए से सवाल किया है जिसके वास्ते से कुछ भी मांगा जाता है वह अ़ता फ़रमाते हैं और जो दुआ़ भी की जाती है वह उसे क़ुबूल फ़रमाते हैं।

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आप से इस बात का वास्ता देकर सवाल करता हूं कि मैं गवाही देता हूं कि बेशक आप ही अल्लाह हैं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है,आप अकेले हैं, बेनियाज़ हैं, सब आप की ज़ात के मुहताज हैं जिस ज़ात से न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उनके बराबर का है। (अबूदाऊद)

﴿270﴾ عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِسْمُ اللهِ الْاَعْظَمُ فِىْ هَاتَيْنِ الْاٰيَتَيْنِ ﴿وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾ [البقرة: ١٦٣] وَفَاتِحَةُ آلِ عِمْرَانَ ﴿الٓمّٓ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ﴾ [آل عمران: ٢،١] رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب فى ايجاب الدعاء بتقديم الحمد والثناء......رقم: ٣٤٧٨

270. हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्मे आज़म इन दो आयतों में है : सूरः बक़रः की आयत और सूरः आले इमरान की पहली आयत। (तिर्मिज़ी)

﴿271﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِىْ حَلْقَةٍ وَرَجُلٌ قَائِمٌ يُصَلِّىْ فَلَمَّا رَكَعَ وَسَجَدَ تَشَهَّدَ وَدَعَا فَقَالَ فِىْ دُعَائِهٖ: اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ، يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ

فَقَالَ النَّبِيُّ عَلَيْهِ: لَقَدْ دَعَا بِاسْمِ اللّٰهِ الْاَعْظَمِ الَّذِيْ اِذَا دُعِيَ بِهٖ اَجَابَ وَاِذَا سُئِلَ بِهٖ اَعْطٰى۔

رواه الحاكم وقال: هذاحديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/ ٥٠٣

271. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि हम लोग नबी करीम ﷺ के साथ एक हल्क़ा में बैठे हुए थे और एक साहब नमाज़ पढ़ रहे थे। जब वह रुकूअ्-सज्दा और तशह्हुद से फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने दुआ़ में यूं कहा : तर्जुमा : "ऐ अल्लाह! मैं आप से आपकी तमाम तारीफ़ों के वास्ते से सवाल करता हूं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप ज़मीन व आसमान को नमूने के बग़ैर बनाने वाले हैं, ऐ अ़ज़्मत व जलाल और इनाम व एहसान के मालिक, ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और सबको क़ायम रखने वाले।' नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसने अल्लाह तआ़ला के ऐसे इस्मे आज़म के साथ दुआ़ की है कि जिसके वास्ते से जब भी दुआ़ की जाती है अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाते हैं और जब भी सवाल किया जाता है अल्लाह तआ़ला उसको पूरा फ़रमाते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿272﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى اِسْمِ اللّٰهِ الْاَعْظَمِ الَّذِيْ اِذَا دُعِيَ بِهٖ اَجَابَ وَاِذَا سُئِلَ بِهٖ اَعْطٰى، الدَّعْوَةُ الَّتِيْ دَعَا بِهَا يُوْنُسُ حَيْثُ نَادَاهُ فِي الظُّلُمَاتِ الثَّلَاثِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هَلْ كَانَتْ لِيُوْنُسَ خَاصَّةً اَمْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ عَامَّةً؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَا تَسْمَعُ قَوْلَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ "وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ" وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَيُّمَا مُسْلِمٍ دَعَا بِهَا فِيْ مَرَضِهٖ اَرْبَعِيْنَ مَرَّةً فَمَاتَ فِيْ مَرَضِهٖ ذٰلِكَ، اُعْطِيَ اَجْرَ شَهِيْدٍ وَاِنْ بَرَاَ بَرَاَ وَقَدْ غُفِرَ لَهٗ جَمِيْعُ ذُنُوْبِهٖ۔ رواه الحاكم ووافقه الذهبي ١/ ٥٠٦

272. हज़रत सअ़्द बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क्या मैं तुमको अल्लाह तआ़ला का इस्मे आज़म न बता दूं कि जिसके ज़रिए से दुआ़ की जाए तो क़ुबूल फ़रमाते हैं और सवाल किया जाए तो पूरा फ़रमाते हैं ? यह वह दुआ़ है जिसके ज़रिए हज़रत यूनुस ﷺ ने अल्लाह तआ़ला को तीन अंधेरियों में पुकारा था, "आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप तमाम ऐबों से पाक हैं बेशक मैं ही क़ुसूरवार हूं" (तीन अंधेरियों से मुराद रात, समुंदर और मछली के पेट के अंधेरे हैं)। एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या यह दुआ़ हज़रत यूनुस ﷺ के साथ ख़ास है या तमाम ईमान वालों के लिए

आम है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने अल्लाह तआ़ला का मुबारक इर्शाद नहीं सुना कि हमने यूनुस عليه السلام को मुसीबतों से नजात दी और हम उसी तरह ईमान वालों को नजात दिया करते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान इस दुआ़ को अपनी बीमारी में चालीस मर्तबा पढ़े, अगर वह उस मर्ज़ में फ़ौत हो जाए तो उसको शहीद का सवाब दिया जाएगा और अगर उस बीमारी से उसे शिफ़ा मिल गई, तो उस शिफ़ा के साथ उसके तमाम गुनाह माफ़ किए जा चुके होंगे।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿273﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: خَمْسُ دَعَوَاتٍ يُسْتَجَابُ لَهُنَّ: دَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ حَتّٰى يَنْتَصِرَ، وَدَعْوَةُ الْحَاجِّ حَتّٰى يَصْدُرَ، وَ دَعْوَةُ الْمُجَاهِدِ حَتّٰى يَقْفُلَ، وَدَعْوَةُ الْمَرِيْضِ حَتّٰى يَبْرَءَ، وَدَعْوَةُ الْاَخِ لِاَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ. ثُمَّ قَالَ: وَاَسْرَعُ هٰذِهِ الدَّعَوَاتِ اِجَابَةً دَعْوَةُ الْاَخِ لِاَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ.

رواه البيهقى فى الدعوات الكبير، مشكاة المصابيح رقم: ٢٢٦٠

273. हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنهما से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पांच क़िस्म की दुआ़एं ख़ास तौर पर क़ुबूल की जाती हैं। मज़्लूम की दुआ़ जब तक वह बदला न ले ले, हज करने वाले की दुआ़ जब तक वह लौट न आए, मुजाहिद की दुआ़ जब तक वह वापस न आए, बीमार की दुआ़, जब तक वह सेहतयाब न हो और एक भाई की दूसरे भाई के लिए पीठ पीछे दुआ़। फिर नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : और उन दुआ़ओं में सबसे जल्दी क़ुबूल होने वाली वह दुआ़ है, जो अपने किसी भाई के लिए उसकी पीठ पीछे की जाए। (बैहक़ी)

﴿274﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ لَا شَكَّ فِيْهِنَّ: دَعْوَةُ الْوَالِدِ، وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ، وَدَعْوَةُ الْمَظْلُوْمِ.

رواه ابو داؤد، باب الدعاء بظهر الغيب، رقم: ١٥٣٦

274. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन दुआ़एं ख़ास तौर पर क़ुबूल की जाती हैं, जिनके क़ुबूल होने में कोई शक नहीं। (औलाद के हक़ में) बाप की दुआ़, मुसाफ़िर की दुआ़ और मज़्लूम की दुआ़।

(अबूदाऊद)

﴿275﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَاَنْ اَقْعُدَ اَذْكُرُ اللهَ، وَاُكَبِّرُهُ، وَاَحْمَدُهُ، وَاُسَبِّحُهُ، وَاُهَلِّلُهُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِنْ اَنْ اُعْتِقَ رَقَبَتَيْنِ

اَوْ اَكْثَرَ مِنْ وُلْدِ اِسْمَاعِيْلَ، وَمِنْ بَعْدِ الْعَصْرِ حَتّٰى تَغْرُبَ الشَّمْسُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ اُعْتِقَ اَرْبَعَ رِقَابٍ مِنْ وُلْدِ اِسْمَاعِيْلَ. رواه احمد ٥/٢٥٥

275. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं फ़ज्र की नमाज़ से सूरज के निकलने तक अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र, उसकी बड़ाई, उसकी तारीफ़, उसकी पाकी ब्यान करने और ला इला-ह इल्लल्लाह कहने में मशग़ूल रहूं, यह मुझे हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद में से दो या उससे ज़्यादा ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है। इसी तरह अ़स्र की नमाज़ के बाद से सूरज ग़ुरूब होने तक उन आ़माल में मशग़ूल रहूं, यह मुझे हज़रत इस्माईल की औलाद में से चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्दीदा है। (मुस्नद अहमद)

﴿276﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ بَاتَ طَاهِرًا، بَاتَ فِيْ شِعَارِهِ مَلَكٌ، فَلَمْ يَسْتَيْقِظْ اِلَّا قَالَ الْمَلَكُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِكَ فُلَانٍ، فَاِنَّهُ بَاتَ طَاهِرًا. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٣/٣٢٨

276. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स बावुज़ू रात को सोता है तो फ़रिश्ता उसके जिस्म के साथ लगकर रात गुज़ारता है। जब भी वह नींद से बेदार होता है, फ़रिश्ता उसे दुआ़ देता है। या अल्लाह! अपने इस बन्दे की मग्फ़िरत फ़रमा दीजिए, इसलिए कि यह बावुज़ू सोया है। (इब्ने हब्बान)

﴿277﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَبِيْتُ عَلٰى ذِكْرٍ طَاهِرًا فَيَتَعَارُّ مِنَ اللَّيْلِ فَيَسْاَلُ اللّٰهَ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ.

رواه ابوداؤد، باب في النوم على طهارة، رقم: ٥٠٤٢

277. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मसुलमान भी रात बावुज़ू ज़िक्र करते हुए सोता है, फिर जब किसी वक़्त रात में उसकी आंख खुलती है और वह अल्लाह तआ़ला से दुनिया व आख़िरत की किसी भी ख़ैर का सवाल करता है अल्लाह तआ़ला उसे वह चीज़ ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿278﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اَقْرَبَ مَا يَكُوْنُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ جَوْفُ اللَّيْلِ الْاٰخِرُ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَكُوْنَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللّٰهَ فِيْ تِلْكَ

السَّاعَةِ فَكُنْ۔ رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٣٠٩

278. हज़रत अ़म्र बिन अ़बसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला रात के आख़िरी हिस्से में बन्दे से बहुत ज़्यादा क़रीब होते हैं, अगर तुम से हो सके तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र किया करो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿279﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ، أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ، فَقَرَأَهُ فِيْمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ الظُّهْرِ، كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْلِ۔ رواه مسلم، باب جامع صلوة الليل...... رقم: ١٧٤٥

279. हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात को सोता रह जाए और अपने मामूल या उसका कुछ हिस्सा पूरा न कर सके, फिर उसे (अगले दिन) फ़ज्र और ज़ुहृ के दर्मियान पूरा कर ले, तो उसके आमालनामे में वह अ़मल रात ही का लिखा जाएगा। (मुस्लिम)

﴿280﴾ عَنْ أَبِيْ أَيُّوْبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ إِذَا أَصْبَحَ : لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ كُتِبَ لَهُ بِهِنَّ عَشْرُ حَسَنَاتٍ، وَ مُحِيَ بِهِنَّ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ، وَرُفِعَ لَهُ بِهِنَّ عَشْرُ دَرَجَاتٍ، وَكُنَّ لَهُ عَدْلَ عِتَاقَةِ أَرْبَعِ رِقَابٍ، وَكُنَّ لَهُ حَرَسًا مِنَ الشَّيْطَانِ حَتّٰى يُمْسِيَ، وَمَنْ قَالَهُنَّ إِذَا صَلَّى الْمَغْرِبَ دُبُرَ صَلَاتِهِ فَمِثْلُ ذٰلِكَ حَتّٰى يُصْبِحَ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: سنده حسن ٣٦٩/٥

280. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह दस मर्तबा 'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०' पढ़े, तो उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाएंगी, उसकी दस बुराइयां मिटा दी जाएंगी, उसके लिए दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाएंगे, उसको चार गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा, और शाम होने तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होगी और जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद ये कलिमे पढ़े, तो सुबह तक यही सब इनामात मिलेंगे। (इब्ने हब्बान)

﴾281﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ وَحِيْنَ يُمْسِیْ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ، مِائَةَ مَرَّةٍ، لَمْ يَاْتِ اَحَدٌ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، بِاَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهٖ، اِلَّا اَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ اَوْ زَادَ عَلَيْهِ. رواه مسلم، باب فضل التهليل والتسبيح والدعاء، رقم: ٦٨٤٣ وعند ابی داؤد: سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

باب ما يقول اِذا اَصْبَحَ، رقم: ٥٠٩١

281. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सुबह और शाम 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' सौ सौ-सौ मर्तबा पढ़ा तो कोई शख़्स क़ियामत के दिन उससे अफ़ज़ल अ़मल लेकर नहीं आएगा, सिवाए उस शख़्स के जो उसके बराबर या उससे ज़्यादा पढ़े। एक रिवायत में यह फ़ज़ीलत सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीमि व बिहम्दिही के बारे में आई है। (मुस्लिम, अबूदाऊद)

﴾282﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ مِائَةَ مَرَّةٍ، وَاِذَا اَمْسٰی مِائَةَ مَرَّةٍ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ غُفِرَتْ ذُنُوْبُهُ، وَاِنْ كَانَتْ اَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبی ٥١٨/١

282. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुबह शाम सौ-सौ मर्तबा सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही पढ़े, उसके गुनाह माफ़ हो जाएंगे, अगरचे समुंदर के झाग से भी ज़्यादा हों।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴾283﴿ عَنْ رَجُلٍ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰی: رَضِيْنَا بِاللهِ رَبًّا وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا، اِلَّا كَانَ حَقًّا عَلَی اللهِ اَنْ يُرْضِيَهُ. رواه ابوداؤد، باب مايقول اِذا اَصْبَحَ، رقم: ٥٠٧٢ وعند احمد: اَنَّهُ يَقُوْلُ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ حِيْنَ يُمْسِیْ وَحِيْنَ يُصْبِحُ ٣٣٧/٤

283. एक सहाबी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स सुबह शाम 'रज़ीना बिल्लाहि रब्बौं व बिल इस्लामि दीनौं व बिमुहम्मदिन रसूला' पढ़े, अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि वह उस शख़्स को (क़ियामत के दिन) राज़ी करें। तर्जुमा : हम अल्लाह तआ़ला को रब और इस्लाम को दीन और मुहम्मद ﷺ को रसूल मानने पर राज़ी हैं।

दूसरी रिवायत में इस दुआ को सुबह शाम तीन मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र है।
(अबूदाऊद, मुस्नद अहमद)

﴿284﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا، وَحِيْنَ يُمْسِيْ عَشْرًا اَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

رواه الطبراني باسنا دين واسناد احدهما جيد، ورجاله وثقوا، مجمع الزوائد ١٠/١٦٣

284. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम मुझ पर दस-दस मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े, उसको क़ियाम के दिन मेरी शफ़ाअत पहुंचेगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿285﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: قَالَ سَمُرَةُ بْنُ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: اَلَا اُحَدِّثُكَ حَدِيْثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ مِرَارًا وَمِنْ اَبِيْ بَكْرٍ مِرَارًا وَمِنْ عُمَرَ مِرَارًا، قُلْتُ: بَلٰى، قَالَ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰى: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ، وَاَنْتَ تَهْدِيْنِيْ، وَاَنْتَ تُطْعِمُنِيْ، وَاَنْتَ تَسْقِيْنِيْ، وَاَنْتَ تُمِيْتُنِيْ، وَاَنْتَ تُحْيِيْنِيْ لَمْ يَسْاَلِ اللّٰهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ قَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ سَلَامٍ: كَانَ مُوْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ يَدْعُوْ بِهِنَّ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ سَبْعَ مِرَارٍ، فَلَا يَسْاَلُ اللّٰهَ شَيْئًا اِلَّا اَعْطَاهُ اِيَّاهُ.

رواه الطبراني في الاوسط باسناد حسن، مجمع الزوائد ١٠/١٦٠

285. हज़रत हसन रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊं जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बक्र ﷺ और हज़रत उमर ﷺ से भी कई मर्तबा सुनी है। मैंने अ़र्ज़ किया : ज़रूर सुनाएं। हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम "ऐ अल्लाह आप ही ने मुझे पैदा किया और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं, आप ही मुझे खिलाते हैं, आप ही मुझे पिलाते हैं, आप ही मुझे मारेंगे और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे" पढ़े, तो जो अल्लाह तआ़ला से मांगेगा अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसको अ़ता फ़रमाएंगे।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा ﷺ रोज़ाना सात मर्तबा इन कलिमों के साथ दुआ़ किया करते थे और जो भी चीज़ वह अल्लाह तआ़ला से मांगते थे अल्लाह तआ़ला उनको अ़ता फ़रमा देते थे।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾286﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ غَنَّامٍ الْبَيَاضِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ: اَللّٰهُمَّ! مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنْكَ وَحْدَكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ، فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ يَوْمِهِ، وَمَنْ قَالَ مِثْلَ ذٰلِكَ حِيْنَ يُمْسِيْ فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ لَيْلَتِهِ.

رواه ابوداؤد ،باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٣ وفي رواية للنسائي بزيادة: أَوْ بِاَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ بدون ذكر المساء في عمل اليوم والليلة، رقم:٧

286. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम ब्याज़ी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह यह दुआ़ पढ़े : ''ऐ अल्लाह! जो भी कोई नेमत मुझे या आपकी किसी मख़्लूक़ को आज सुबह मिली है वह तन्हा आप ही की तरफ़ से दी हुई है, आपका कोई शरीक नहीं, आप ही के लिए तमाम तारीफ़ें हैं और आप ही के लिए सारा शुक्र है'' तो उसने उस दिन की सारी नेमतों का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम होने पर यह दुआ़ पढ़ी, तो उसने उस रात की सारी नेमतों का शुक्र अदा कर दिया। (अबूदाऊद, नसाई)

﴾287﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ اَوْيُمْسِيْ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ، وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ، وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ اَعْتَقَ اللهُ رُبْعَهُ مِنَ النَّارِ، فَمَنْ قَالَهَا مَرَّتَيْنِ اَعْتَقَ اللهُ نِصْفَهُ، وَمَنْ قَالَهَا ثَلَاثًا، اَعْتَقَ اللهُ ثَلَاثَةَ اَرْبَاعِهِ، فَاِنْ قَالَهَا اَرْبَعًا اَعْتَقَهُ اللهُ مِنَ النَّارِ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول إذااصبح، رقم: ٥٠٦٩

287. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह या शाम एक मर्तबा ये कलिमे पढ़ ले : ''ऐ अल्लाह! मैंने इस हाल में सुबह की कि मैं आपको गवाह बनता हूं, और आपके अ़र्श के उठाने वालों को, आपके फ़रिश्तों को और आपकी सारी मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूं इस बात पर कि आप ही अल्लाह हैं, आपके सिवा कोई माबूद नहीं और इस पर कि मुहम्मद ﷺ आपके बन्दे और आपके रसूल हैं'' तो अल्लाह तआ़ला उसके चौथाई हिस्से को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देते हैं, जो दो मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके आधे हिस्से को जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं; जो तीन मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके तीन चौथाई को दोज़ख़ की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं और जो शख़्स चार मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसको पूरा दोज़ख़ की आग से आज़ाद फ़रमा देते हैं। (अबूदाऊद)

﴾288﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لِفَاطِمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا: مَا يَمْنَعُكِ اَنْ تَسْمَعِيْ مَا اُوْصِيْكِ بِهٖ اَنْ تَقُوْلِيْ اِذَا اَصْبَحْتِ وَاِذَا اَمْسَيْتِ: يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٤٥

288. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया : मेरी नसीहत ग़ौर से सुनो। तुम सुबह व शाम ''ऐ हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, ऐ ज़मीन व आसमान और तमाम मख़्लूक़ को क़ायम रखने वाले! मैं आपकी रहमत का वास्ता देकर फ़रियाद करता हूं कि मेरे सारे काम दुरुस्त फ़रमा दीजिए और मुझे एक लम्हा के लिए भी मेरे नफ़्स के हवाला न फ़रमाइए'' कहा करो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾289﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا لَقِيْتُ مِنْ عَقْرَبٍ لَدَغَتْنِي الْبَارِحَةَ! قَالَ: اَمَا لَوْ قُلْتَ حِيْنَ اَمْسَيْتَ: اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ تَضُرَّكَ۔

رواه مسلم، باب في التعوذ من سوء القضاء ......رقم: ٦٨٨٠

289. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! मुझे रात बिच्छू के काटने से बहुत तकलीफ़ पहुंची। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम शाम के वक़्त ये कलिमे कह लेते : ''मैं अल्लाह तआ़ला के सारे (नफ़ा देने वाले, शिफ़ा देने वाले) कलिमे के ज़रिए उसकी तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूं'' तो तुम्हें बिच्छू कभी नुक़सान न पहुंचा सकता। (मुस्लिम)

फ़ायदा : कुछ उलमा ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला के कलिमे से मुराद क़ुरआन करीम है। (मिरक़ात)

﴾290﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُمْسِيْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَضُرَّهٗ حُمَةٌ تِلْكَ اللَّيْلَةَ قَالَ سُهَيْلٌ رَحِمَهُ اللّٰهُ: فَكَانَ اَهْلُنَا تَعَلَّمُوْهَا فَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَهَا كُلَّ لَيْلَةٍ فَلُدِغَتْ جَارِيَةٌ مِنْهُمْ فَلَمْ تَجِدْ لَهَا وَجَعًا۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب دعاء أعوذ بكلمات الله التامات ......رقم: ٣٦٠٤

290. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने शाम के वक़्त तीन मर्तबा ये कलिमे कहे : 'अऊज़ु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिनशर्रि मा ख़लक़०' तो उस रात उसको किसी क़िस्म का ज़हर नुक़्सान न पहुंचा सकेगा। हज़रत सुहैल रह० फ़रमाते हैं कि हमारे घर वालों ने इस दुआ को याद कर रखा था और वे रोज़ाना रात को पढ़ लिया करते थे। एक रात एक बच्ची को किसी ज़हरीले जानवर ने डस लिया, तो उसे उसकी तकलीफ़ बिल्कुल महसूस नहीं हुई। (तिर्मिज़ी)

﴿291﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: اَعُوْذُ بِاللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَقَرَأَ ثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُوْرَةِ الْحَشْرِ وَكَّلَ اللهُ بِهِ سَبْعِيْنَ اَلْفَ مَلَكٍ يُصَلُّوْنَ عَلَيْهِ حَتّٰى يُمْسِيَ وَاِنْ مَاتَ فِيْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ مَاتَ شَهِيْدًا، وَمَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُمْسِيْ كَانَ بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في فضل قراءة آخر سورة الحشر، رقم: ٢٩٢٢

291. हज़रत माक़िल बिन यसार ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं, जो शख़्स सुबह तीन मर्तबा 'अऊज़ु बिल्लाहिस्समीइल अ़लीम मिनश्शैतानिर्रजीम०' पढ़कर सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें पढ़ ले, तो उसके लिए अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते हैं जो शाम तक उस पर रहमत भेजते रहते हैं और अगर उस दिन मर जाए तो शहीद मरेगा। (तिर्मिज़ी)

﴿292﴾ عَنْ عُثْمَانَ يَعْنِيْ ابْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ قَالَ بِسْمِ اللهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، لَمْ تُصِبْهُ فَجْاَةُ بَلَاءٍ حَتّٰى يُصْبِحَ، وَمَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُصْبِحُ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَمْ تُصِبْهُ فَجْاَةُ بَلَاءٍ حَتّٰى يُمْسِيَ.

رواه ابو داؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٨٨

292. हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स शाम को तीन मर्तबा ये कलिमे पढ़े, तो सुबह होने तक और सुबह को तीन मर्तबा पढ़े तो शाम होने तक उसे कोई अचानक मुसीबत नहीं पहुंचेगी। (वे कलिमे ये हैं) 'उस अल्लाह के नाम के साथ (हमने सुबह या शाम की) जिसके नाम के साथ ज़मीन या आसमान में कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती और वह (सब कुछ) सुनने और जानने वाला है।' (अबूदाऊद)

﴿293﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَنْ قَالَ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰى: حَسْبِيَ اللهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ سَبْعَ مَرَّاتٍ، كَفَاهُ اللهُ مَا اَهَمَّهُ، صَادِقًا كَانَ بِهَا اَوْ كَاذِبًا۔ رواه ابوداؤد، باب مايقول إذا اصبح، رقم: ٥٠٨١

293. हज़रत अबूद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सुबह व शाम सात मर्तबा सच्चे दिल से कहे, यानी फ़ज़ीलत के यक़ीन के साथ कहे या यूं ही फ़ज़ीलत के यक़ीन के बग़ैर कहे, तो अल्लाह तआ़ला उसकी (दुनिया और आख़िरत के) तमाम ग़मों से हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे।

तर्जुमा : मुझे अल्लाह तआ़ला ही काफ़ी हैं, उनके सिवा कोई माबूद नहीं, उन ही पर मैंने भरोसा किया और वही अ़र्शे अज़ीम के मालिक हैं। (अबूदाऊद)

﴿294﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَدَعُ هٰؤُلَاءِ الدَّعَوَاتِ حِيْنَ يُمْسِيْ وَحِيْنَ يُصْبِحُ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللّٰهُمَّ! اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَآمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ! احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ، وَعَنْ يَمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ فَوْقِيْ، وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ۔ رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٧٤

294. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सुबह व शाम कभी भी इन दुआ़ओं को पढ़ना नहीं छोड़ते थे :

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे दुनिया व आख़िरत में आ़फ़ियत का सवाल करता हूं। या अल्लाह! मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं और अपने दीन, दुनिया, अह्ल व अ़याल और माल में आ़फ़ियत और सलामती चाहता हूं। या अल्लाह! आप मेरे उयूब की पर्दापोशी फ़रमाइए और मुझको ख़ौफ़ की चीज़ों से अमन नसीब फ़रमाइए। या अल्लाह! आप मेरी आगे, पीछे, दाएं, बाएं, और ऊपर से हिफ़ाज़त फ़रमाइए और मैं आपकी अ़ज़मत की पनाह लेता हूं, इससे कि मैं नीचे की जानिब से अचानक हलाक कर दिया जाऊं। (अबूदाऊद)

﴿295﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: سَيِّدُ الْاِسْتِغْفَارِ اَنْ يَقُوْلَ: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوْقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهٖ قَبْلَ اَنْ يُمْسِيَ،

فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ، وَهُوَ مُوْقِنٌ بِهَا ، فَمَاتَ قَبْلَ اَنْ يُصْبِحَ،فَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ۔

رواه البخارى، باب افضل الاستغفار، رقم: ٦٣٠٦

295. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सैय्यिदुल इस्तिग्फ़ार (मग़फ़िरत मांगने का सबसे बेहतर तरीक़ा) यह है कि यूं कहे :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप ही मेरे रब हैं आपके सिवा कोई माबूद नहीं, आप ही ने मुझे पैदा फ़रमाया है। मैं आपका बन्दा हूं, और बक़द्रे इस्तिताअ़त आपसे किए हए अ़हद और वादे पर क़ायम हूं, मैं अपने किए हुए बुरे अ़मल से आपकी पनाह लेता हूं और मुझ पर जो आप की नेमतें हैं उनका मैं इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का भी एतराफ़ करता हूं, लिहाज़ा मुझे बख़्श दीजिए, क्योंकि गुनाहों को आप के अलावा कोई नहीं बख़्श सकता।

रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने दिल के यक़ीन के साथ दिन के किसी हिस्से में इन कलिमों को पढ़ा और उसी दिन शाम होने से पहले उसको मौत आ गई, तो वह जन्नतियों में से होगा और इसी तरह अगर किसी ने दिल के यक़ीन के साथ शाम के किसी हिस्से में इन कलिमों को पढ़ा अैर सुबह होने से पहले उसको मौत आ गई, तो वह जन्नतियों में से होगा।

(बुख़ारी)

﴿296﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَالَ حِيْنَ يُصْبِحُ: "فَسُبْحٰنَ اللهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ" اِلٰى "وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ"، (الروم: ١٧ـ١٩) ، اَدْرَكَ مَا فَاتَهُ فِيْ يَوْمِهٖ ذٰلِكَ، وَمَنْ قَالَهُنَّ حِيْنَ يُمْسِيْ، اَدْرَكَ مَافَاتَهُ فِيْ لَيْلَتِهٖ۔

رواه ابوداؤد،باب مايقول إذا أصبح ، رقم: ٥٠٧٦

296. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह (सूरः रूम पारः 21 की) ये तीन आयतें पढ़ ले, तो उस दिन के जो (मामूलात वग़ैरह) उससे छूट जाएं उसका सवाब मिल जाएगा और जो शख़्स शाम को ये आयतें पढ़ ले, तो उस रात को जो (मामूलात) उससे छूट जाएं उसका सवाब उसे मिल जाएगा।

तर्जुमा : तुम लोग जब शाम करो और जब सुबह करो, तो अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान करो और तमाम आसमान और ज़मीन में उन्हीं की तारीफ़ होती है, और तुम तीसरे पहर के वक़्त और ज़ुह्र के वक़्त (भी अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान किया करो) वह ज़िन्दा को मुर्दे से निकालते हैं और मुर्दा को ज़िन्दा से निकलते हैं और ज़मीन को उसके मुर्दे यानी ख़ुश्क होने के बाद ज़िन्दा यानी सरसब्ज़ व शादाब करते हैं और इसी तरह तुम लोग (क़ियामत के रोज़ क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (अबूदाऊद)

﴿297﴾ عَنْ اَبِىْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِيِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا وَلَجَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَلْيَقُلْ: اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ، بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا، وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا، وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا، ثُمَّ لِيُسَلِّمْ عَلٰى اَهْلِهِ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول الرجل اذا دخل بيته رقم: ٥٠٩٦

297. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी अपने घरों में दाख़िल हो, तो यह दुआ़ पढ़े : "ऐ अल्लाह! मैं आपसे घर में दाख़िल होने और घर से निकलने की ख़ैर मांगता हूं यानी मेरा घर में दाख़िल होना और बाहर निकलना मेरे लिए ख़ैर का ज़रिया बने। अल्लाह तआ़ला ही के नाम के साथ हम घर में दाख़िल हुए और अल्लाह तआ़ला ही के नाम के साथ हम घर से निकले और अल्लाह तआ़ला ही पर जो हमारे रब हैं हमने भरोसा किया"। फिर अपने घर वालों को सलाम करे। (अबूदाऊद)

﴿298﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا دَخَلَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ، فَذَكَرَ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ عِنْدَ دُخُوْلِهِ وَعِنْدَ طَعَامِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: لَا مَبِيْتَ لَكُمْ وَلَا عَشَاءَ وَاِذَا دَخَلَ فَلَمْ يَذْكُرِ اللّٰهَ عِنْدَ دُخُوْلِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: اَدْرَكْتُمُ الْمَبِيْتَ، وَاِذَا لَمْ يَذْكُرِ اللّٰهَ عِنْدَ طَعَامِهِ، قَالَ: اَدْرَكْتُمُ الْمَبِيْتَ وَالْعَشَاءَ.

رواه مسلم، باب آداب الطعام والشراب واحكامهما، رقم: ٥٢٦٢

298. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब आदमी अपने घर में दाख़िल होता है और दाख़िल होने और खाने के वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करता है, तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है, यहां तुम्हारे लिए न रात ठहरने की जगह है और न रात का

खाना है और जब घर में दाख़िल हो जाता है और दाख़िल होते वक़्त अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करता, तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि यहां तुम्हें रात रहने की जगह मिल गई और जब खाने के वक़्त भी अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान (अपने साथियों से) कहता है कि यहां तुम्हें रात रहने की जगह और खाना भी मिल गया। (मुस्लिम)

﴿299﴾ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنْ بَيْتِي قَطُّ إِلَّا رَفَعَ طَرْفَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ! إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ۔ رواه ابوداؤد، باب مايقول إذا خَرَجَ من بيته، رقم: ٥٠٩٤

299. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब भी मेरे घर से निकलते तो आसमान की तरफ़ निगाह उठाकर यह दुआ़ पढ़ते :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह, मैं आपसे पनाह मांगता हूं कि मैं गुमराह हो जाऊं या गुमराह किया जाऊं या मैं जिहालत में बुरा बरताव करूं या मेरे साथ जिहालत में बुरा बरताव किया जाए। (अबूदाऊद)

﴿300﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَالَ يَعْنِي إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ: بِسْمِ اللهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ يُقَالُ لَهُ: كُفِيْتَ وَوُقِيْتَ وَتَنَحَّى عَنْهُ الشَّيْطَانُ۔ باب ماجاء ما يقول الرجل اذا خرج من بيته، رقم: ٣٤٢٦ وابوداؤد، وفيه: يُقَالُ حِيْنَئِذٍ: هُدِيْتَ وَكُفِيْتَ وَوُقِيْتَ فَتَتَنَحَّى لَهُ الشَّيَاطِيْنُ، فَيَقُوْلُ شَيْطَانٌ آخَرُ: كَيْفَ لَكَ بِرَجُلٍ قَدْ هُدِيَ وَكُفِيَ وَوُقِيَ۔

باب مايقول اذاخَرَجَ من بيته، رقم: ٥٠٩٥

300. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़े : ''मैं अल्लाह का नाम लेकर निकल रहा हूं, अल्लाह ही पर मेरा भरोसा है, किसी ख़ैर के हासिल करने या किसी शर से बचने में कामयाबी अल्लाह ही के हुक्म से हो सकती है'' उस वक़्त उससे कहा जाता है यानी फ़रिश्ते कहते हैं : तुम्हारे काम बना दिए गए और तुम्हारी हर शर से हिफ़ाज़त की गई। शैतान (नामुराद होकर) उससे दूर हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

एक रिवायत में यह है कि उस वक़्त (इस दुआ के पढ़ने के बाद) उससे कहा जाता है : तुम्हें पूरी रहनुमाई मिल गई, तुम्हारे काम बना दिए गए और तुम्हारी हिफ़ाज़त की गई। चुनांचे शयातीन उससे दूर हो जाते हैं। दूसरा शैतान पहले शैतान से कहता है तू इस शख़्स पर कैसे क़ाबू पा सकता है जिसे रहनुमाई मिल गई हो, जिसके काम बना दिए गए हों और जिसकी हिफ़ाज़त की गई हो। (अबूदाऊद)

﴿301﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ عِنْدَ الْكَرْبِ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ۔ رواه البخاري، باب الدعاء عند الكرب، رقم:٦٣٤٦

301. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ बेचैनी के वक़्त यह दुआ पढ़ते थे :

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो बहुत बड़े और बुर्दबार हैं (गुनाह पर फ़ौरन पकड़ नहीं फ़रमाते) अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो अ़र्शे अ़ज़ीम के रब हैं, अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं है जो आसमानों और ज़मीनों और मुअ़ज़्ज़ज़ अ़र्श के रब हैं। (बुख़ारी)

﴿302﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: دَعَوَاتُ الْمَكْرُوْبِ: اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ، فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَاَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ. رواه ابو داؤد، باب مايقول اذا اصبح، رقم: ٥٠٩٠

302. हज़रत अबूबक्रः रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसीबत में मुब्तला हो वह यह दुआ पढ़े : "ऐ अल्लाह! मैं आपकी रहमत की उम्मीद करता हूं, मुझे पलक झपकने के बराबर भी मेरे नफ़्स के हवाले न फ़रमाइए। मेरे तमाम हालात को दुरुस्त फ़रमा दीजिए आपके सिवा कोई माबूद नहीं है।" (बुख़ारी)

﴿303﴾ عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ تَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَبْدٍ تُصِيْبُهُ مُصِيْبَةٌ فَيَقُوْلُ: اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاَخْلِفْ لِيْ خَيْرًا مِنْهَا اِلَّا اَجَرَهُ اللهُ فِيْ مُصِيْبَتِهِ، وَاَخْلَفَ لَهُ خَيْرًا مِنْهَا قَالَتْ:

فَلَمَّا تُوُفِّيَ اَبُوْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، قُلْتُ كَمَا اَمَرَنِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ، فَاَخْلَفَ اللّٰهُ لِيْ خَيْرًا مِنْهُ، رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ رواه مسلم، باب مايقال عند المصيبة، رقم: ٢١٢٧

303. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतर्मा हैंए फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस बन्दे को कोई मुसीबत पहुंचे और वह यह दुआ पढ़ ले : इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम-म अजिरनी मुसीबती वख़्लिफ़ ली ख़ैरम मिनहा 'बेशक हम अल्लाह तआ़ला ही के लिए हैं और अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी मुसीबत में सवाब अ़ता फ़रमाइए और जो चीज़ आपने मुझसे ले ली है उससे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमाइए'' तो अल्लाह तआ़ला उसको उस मुसीबत में सवाब अ़ता फ़रमाते हैं और उसको उस फ़ौत शुदा चीज़ के बदले में उससे अच्छी चीज़ इनायत फ़रमा देते हैं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबू सलमा ﷺ फ़ौत हो गए तो मैंने उसी तरह दुआ़ की जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे इस दुआ़ का हुक्म दिया था तो अल्लाह तआ़ला ने मुझे अबू सलमा से बेहतर बदल अ़ता फ़रमा दिया यानी रसूलुल्लाह ﷺ को मेरा शौहर बना दिया। (मुस्लिम)

﴿304﴾ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ (فِيْ رَجُلٍ غَضِبَ عَلَى الْآخَرِ) لَوْ قَالَ: اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ، ذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ۔

(وهُوَ بعض الحديث) رواه البخاري، باب قصة ابليس و جنوده، رقم: ٣٢٨٢

304. हज़रत सुलैमान बिन सुरद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (एक शख़्स के बारे में जो दूसरे पर नाराज़ हो रहा था) इर्शाद फ़रमाया : अगर यह शख़्स अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० पढ़ ले तो उसका गुस्सा जाता रहे। (बुख़ारी)

﴿305﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ نَزَلَتْ بِهٖ فَاقَةٌ فَاَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ فَاقَتُهُ وَمَنْ نَزَلَتْ بِهٖ فَاقَةٌ فَاَنْزَلَهَا بِاللّٰهِ فَيُوْشِكُ اللّٰهُ لَهُ بِرِزْقٍ عَاجِلٍ اَوْ آجِلٍ۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ماجاء في الهم في الدنيا وحبها، رقم: ٢٣٢٦

305. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को फ़ाक़ा की नौबत आ जाए और वह उसको दूर करने के लिए लोगों से सवाल करे, तो उसका फ़ाक़ा बन्द न होगा और जिस शख़्स को फ़ाक़ा

की नौबत आ जाए और वह उसको दूर करने के लिए अल्लाह तआला से सवाल करे तो अल्लाह तआला जल्द उसकी रोज़ी का इंतज़ाम फ़रमा देते हैं, फ़ौरन मिल जाए या कुछ ताख़ीर से। (तिर्मिज़ी)

﴿306﴾ عَنْ اَبِیْ وَائِلٍ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ عَلِیٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ مُکَاتَبًا جَاءَ هُ فَقَالَ: اِنِّی قَدْ عَجِزْتُ عَنْ كِتَابَتِیْ فَاَعِنِّیْ، قَالَ: اَلاَ اُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ عَلَّمَنِیْهِنَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ؟ لَوْ كَانَ عَلَيْكَ مِثْلُ جَبَلِ صِيْرٍ دَيْنًا اَدَّاهُ اللهُ عَنْكَ قَالَ: قُلِ اللّٰهُمَّ اكْفِنِیْ بِحَلاَ لِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ۔

رواه الترمذی وقال: هذاحديث حسن غريب، احاديث شتّٰی من ابواب الدعوات، رقم: ٣٥٦٣

306. हज़रत अबू वाइल रह० फ़रमाते हैं कि एक मुकातब (ग़ुलाम) ने हज़रत अ़ली ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : मैं (किताबत के बदले में) तयशुदा माल अदा नहीं कर पा रहा। आप इस बारे में मेरी मदद फ़रमाइए। हज़रत अ़ली ﷺ ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वह कलिमे न सिखा दूं जो मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने सिखाए थे? अगर तुम पर (यमन के) सीर पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हो तो भी अल्लाह तआला उस क़र्ज़ को अदा करा देंगे। तुम यह दुआ पढ़ा करो : "या अल्लाह! मुझे अपना हलाल रिज़्क़ देकर हराम से बचा लीजिए और मुझे अपने फ़ज़्ल व करम से अपने ग़ैर से बेनियाज़ कर दीजिए"। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं जिसे उसके आक़ा ने कहा हो कि अगर तुम इतना माल इतने अर्से में अदा कर दोगे तो तुम आज़ाद हो जाओगे, जो माल उस मामले में तय किया जाता है उसको किताबत का बदल कहते हैं।

﴿307﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِيْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ الْمَسْجِدَ فَاِذَا هُوَ بِرَجُلٍ مِنَ الْاَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ: اَبُوْ اُمَامَةَ، فَقَالَ: يَا اَبَا اُمَامَةَ! مَالِیْ اَرَاكَ جَالِسًا فِی الْمَسْجِدِ فِیْ غَيْرِ وَقْتِ الصَّلَاةِ؟ قَالَ: هُمُوْمٌ لَزِمَتْنِیْ وَدُيُوْنٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: اَفَلاَ اُعَلِّمُكَ كَلاَمًا اِذَا قُلْتَهُ اَذْهَبَ اللهُ هَمَّكَ وَقَضٰی عَنْكَ دَيْنَكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: بَلٰی، يَارَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: قُلْ: اِذَا اَصْبَحْتَ وَاِذَا اَمْسَيْتَ: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ، قَالَ: فَفَعَلْتُ ذٰلِكَ فَاَذْهَبَ اللهُ هَمِّیْ وَ قَضٰی عَنِّیْ دَيْنِیْ۔

رواه ابوداؤد، باب فی الاستعاذة، رقم: ١٥٥٥

307. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप की नज़र एक अन्सारी शख़्स पर पड़ी जिनका नाम अबू उमामा था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू उमामा! क्या बात है मैं तुम्हें नमाज़ के वक़्त के अलावा मस्जिद में (अलग-थलग) बैठा हुआ देख रहा हूं? हज़रत अबू उमाभा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे ग़मों और क़र्ज़ों ने घेर रखा है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक दुआ़ न सिखा दूं जब तुम उसको कहोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ग़म दूर कर देंगे और तुम्हारा क़र्ज़ उतरवा देंगे? हज़रत उमामा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर सिखा दें। आप ﷺ ने फ़रमाया : सुबह व शाम यह दुआ़ पढ़ा करो : **'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल हम्मि वल ह-ज़न व अऊज़ु बि-क मिनल अज्ज़ि वल कस्लि व अऊज़ु बि-क मिनल जुब्नि वल बुख़्लि व अऊज़ु बि-क मिनल ग़लबति दैनि व क़ह्रिर्रिजाल०'**।

तर्जुमा : 'या अल्लाह! मैं फ़िक्र व ग़म से आप की पनाह लेता हूं, और मैं बेबसी और सुस्ती से आपकी पनाह लेता हूं, और मैं कंजूसी और बुज़दिली से आपकी पनाह लेता हूं और मैं क़र्ज़ के बोझ में दबने से और लोगों के मेरे ऊपर दबाव से आपकी पनाह लेता हूं।' हज़रत उमामा ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने सुबह व शाम इस दुआ़ को पढ़ा, तो अल्लाह तआ़ला ने मेरे ग़म दूर कर दिए और मेरा सारा क़र्ज़ा भी अदा करवा दिया। (अबूदाऊद)

﴿308﴾ عَنْ اَبِىْ مُوْسَى الْاَشْعَرِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا مَاتَ وَلَدُ الْعَبْدِ قَالَ اللهُ لِمَلَائِكَتِهٖ: قَبَضْتُمْ وَلَدَ عَبْدِىْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: نَعَمْ، فَيَقُوْلُ: قَبَضْتُمْ ثَمَرَةَ فُؤَادِهٖ فَيَقُوْلُوْنَ: نَعَمْ، فَيَقُوْلُ: مَاذَا قَالَ عَبْدِىْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: حَمِدَكَ وَاسْتَرْجَعَ، فَيَقُوْلُ اللهُ: اِبْنُوْا لِعَبْدِىْ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَسَمُّوْهُ بَيْتَ الْحَمْدِ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضل المصيبة اذا احتسب، رقم: ١٠٢١

308. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से पूछते हैं : तुम मेरे बन्दे के बच्चे को ले आए? वह अ़र्ज़ करते हैं : जी हां! अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : तुम मेरे बन्दे के दिल के टुकड़े को ले आए? वह अ़र्ज़ करते हैं : जी हां! अल्लाह तआ़ला पूछते हैं : मेरे बन्दे ने उस पर क्या कहा? वह अ़र्ज़ करते हैं : आपकी तारीफ़ की और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० पढ़ा। अल्लाह

तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल-हम्द यानी 'तारीफ़ का घर' रखो। (तिर्मिज़ी)

﴾309﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُهُمْ اِذَا خَرَجُوْ اِلَى الْمَقَابِرِ، فَكَانَ قَائِلُهُمْ يَقُوْلُ: اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللهُ لَلَاحِقُوْنَ، اَسْاَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ.

رواه مسلم، باب مايقال عند دخول القبور والدعا لا هلها، رقم: ٢٢٥٧

309. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ सहाबा कराम : को सिखाते थे कि जब वे क़ब्रिस्तान जाएं, तो इस तरह कहें : 'अस्सलामु अ़लैकुम अह्लद्दयारि मिनल मोमिनीन वल मुस्लिमीन व इन्ना इनशाअल्लाहु ल-लाहिक़ून अस अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आ़फ़ियः' (इस बस्ती के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानो! तुम पर सलाम हो, बिला शुब्हा हम भी इन्शा अल्लाह तुम से अंक़रीब मिलने वाले हैं। हम अल्लाह तआ़ला से अपने और तुम्हारे लिए आ़फ़ियत का सवाल करते हैं''। (मुस्लिम)

﴾310﴿ عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ دَخَلَ السُّوْقَ فَقَالَ: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، كَتَبَ اللهُ لَهُ اَلْفَ اَلْفِ حَسَنَةٍ وَمَحَاعَنْهُ اَلْفَ اَلْفِ سَيِّئَةٍ وَرَفَعَ لَهُ اَلْفَ اَلْفِ دَرَجَةٍ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب مايقول اذا دخل السوق، رقم: ٣٤٢٨ وقال الترمذى فى رواية له مكان " وَرَفَعَ لَهُ اَلْفَ اَلْفِ دَرَجَةٍ، "وَبَنٰى لَهُ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ" رقم: ٣٤٢٩

310. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने बाज़ार में क़दम रखते हुए ये कलिमे पढ़े : अल्लाह तआ़ला उसके लिए दस लाख नेकियां लिख देते हैं, और उसकी दस लाख ख़ताएं मिटा देते हैं, और दस लाख दर्जे उसके बुलन्द कर देते हैं। एक रिवायत में दस लाख दर्जे बुलन्द करने के बजाए जन्नत में एक महल बना देने का ज़िक्र है। (तिर्मिज़ी)

﴾311﴿ عَنْ اَبِيْ بَرْزَةَ الْاَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ بِاٰخِرَةٍ

اِذَا اَرَادَ اَنْ يَقُوْمَ مِنَ الْمَجْلِسِ: سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنَّكَ لَتَقُوْلُ قَوْلًا مَا كُنْتَ تَقُوْلُهُ فِيْمَا مَضٰى؟ قَالَ: كَفَّارَةٌ لِمَا يَكُوْنُ فِي الْمَجْلِسِ۔

رواه ابو داؤد، باب في كفّارة المجلس، رقم: ٤٨٥٩

311. हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल मुबारक उम्र के आख़िरी ज़माने में यह था कि जब मज्लिस से उठने का इरादा फ़रमाते तो 'सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्लाइ-ला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक०' पढ़ा करते। एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आजकल आपका मामूल एक दुआ़ पढ़ने का है जो पहले नहीं था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि यह दुआ़ मज्लिस (की लग़्ज़िशों) का कफ़्फ़ारा है।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! आप पाक हैं, मैं आपकी तारीफ़ ब्यान करता हूं, मैं गवाही देता हूं कि आपके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं और आपके सामने तौबा करता हूं। (अबूदाऊद)

﴿312﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ،اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ،اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ، فَقَالَهَا فِيْ مَجْلِسِ ذِكْرٍ كَانَتْ كَالطَّابِعِ يُطْبَعُ عَلَيْهِ، وَمَنْ قَالَهَا فِيْ مَجْلِسِ لَغْوٍ كَانَتْ كَفَّارَةً لَهُ۔

رواه الحاكم وقال:هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٥٣٧/١

312. हज़रत जुबैर बिन मुतइम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने ज़िक्र की मज्लिस (के आख़िर) में यह दुआ़ पढ़ी : 'सुब्हानल्लाह व बिहम्दिही सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग्फ़िरु-क व अतूबु इलैक' यह दुआ़ उस ज़िक्र की मज्लिस के लिए इस तरह होगी जिस तरह (अहम काग़ज़ों पर) मुहर लगा दी जाती है, यानी यह मज्लिस अल्लाह के हां क़ुबूल हो जाती है और उसका अज्र व सवाब अल्लाह के यहां महफ़ूज़ हो जाता है और अगर यह दुआ़ ऐसी मज्लिस में पढ़े जिसमें बेकार बातें हुई हों तो यह दुआ़ उस मज्लिस का कफ़्फ़ारा बन जाएगी।(मुस्तदरक हाकिम)

﴿313﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: اُهْدِيَتْ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ شَاةٌ فَقَالَ: اقْسِمِيْهَا

وَكَانَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِذَا رَجَعَتِ الْخَادِمُ تَقُوْلُ: مَاقَالُوا؟ تَقُوْلُ الْخَادِمُ: قَالُوْا: بَارَكَ اللهُ فِيْكُمْ تَقُوْلُ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: وَفِيْهِمْ بَارَكَ اللهُ نَرُدُّ عَلَيْهِمْ مِثْلَ مَا قَالُوْا وَيَبْقَى اَجْرُنَا لَنَا۔ الوابل الصيب من الكلم الطيب قال المحشي: اسناده صحيح ص١٨٢

313. "हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक बकरी हदिए में आई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा! उसे तक़सीम कर दो। जब ख़ादिमा लोगों में गोश्त तक़सीम करके वापस आती तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पूछतीं : लोगों ने क्या कहा? ख़ादिमा कहती, लोगों ने बारकल्लाहु फ़ीकुम कहा, यानी अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दें। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमातीं, **'वफ़ीहिम बारकल्लाह'** यानी अल्लाह तआला उन्हें बरकत दें। हमने उनको वही दुआ दी, जो दुआ उन्होंने हमें दी (दुआ देने में हम और वह बराबर हो गए) अब गोश्त की तक़सीम का सवाब हमारे लिए बाक़ी रह गया।

(अलवाबिलुस्सैयिब)

﴾314﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يُوْتَى بِاَوَّلِ الثَّمَرِ فَيَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! بَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَفِيْ ثِمَارِنَا، وَفِيْ مُدِّنَا وَ فِيْ صَاعِنَا بَرَكَةً مَعَ بَرَكَةٍ ثُمَّ يُعْطِيْهِ اَصْغَرَ مَنْ يَحْضُرُهُ مِنَ الْوِلْدَانِ۔ رواه مسلم، باب فضل المدينة..... رقم: ٣٣٣٥

314. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मौसम का नया फल पेश किया जाता, तो आप ﷺ यह दुआ पढ़ते : "ऐ अल्लाह! आप हमारे शहर मदीना में, हमारे फलों में, हमारे मुद्द में और हमारे साअ् में ख़ूब बरकत अता फ़रमाइए"। फिर आप ﷺ उस वक़्त जो बच्चे हाज़िर होते, उनमें सबसे छोटे बच्चे को वह फल दे दिया करते थे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मुद्द, नापने का छोटा पैमाना है जिसमें तक़रीबन एक किलो की मिक़दार आ जाती है। साअ् नापने का बड़ा पैमाना है, जिसमें तक़रीबन चार किलो की मिक़दार आ जाती है।

﴾315﴿ عَنْ وَحْشِيِّ بْنِ حَرْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ اَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنَّا نَاْكُلُ وَلَا نَشْبَعُ، قَالَ: فَلَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُوْنَ؟ قَالُوْا: نَعَمْ، قَالَ: فَاجْتَمِعُوْا عَلٰى طَعَامِكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ عَلَيْهِ يُبَارَكْ لَكُمْ فِيْهِ۔ (رواه ابوداؤد، باب في الاجتماع على الطعام، رقم: ٣٧٦٤

315. हज़रत वहशी बिन हर्ब رضي الله عنه से रिवायत है कि चन्द सहाबा ने अर्ज़ किया : या

रसूलुल्लाह! हम खाना खाते हैं मगर हमारा पेट नहीं भरता। आप ﷺ ने पूछा : शायद तुम लोग अ़लाहिदा-अ़लाहिदा खाते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग खाना एक जगह जमा होकर और अल्लाह तआ़ला का नाम ले कर खाया करो, तुम्हारे खाने में बरकत होगी। (अबूदाऊद)

﴾316﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ : مَنْ اَكَلَ طَعَامًا ثُمَّ قَالَ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنِيْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَاَخَّرَ، قَالَ: وَمَنْ لَبِسَ ثَوْبًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَاَخَّرَ.

رواه ابوداؤد، باب مايقول اذا لبس ثوبا جديدا، رقم: ٤٠٢٣

316. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने खाना खाकर यह दुआ़ पढ़ी : **'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ़-म-नी हाज़त्तआ-म व र-ज़-क़-नीहि मिनग़ैरि हौलिम-मिन्नी व ला क़ुव्वः'** ''तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी कोशिश और ताक़त के बग़ैर मुझे यह नसीब फ़रमाया'' तो उसके अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

और जिसने कपड़ा पहनकर यह दुआ़ पढ़ी : **'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़स्सौ-ब व र-ज़-क़-नीहि मिन ग़ैरि हौलिम मिन्नी व ला क़ुव्वः'** ''तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिन्होंने मुझे यह कपड़ा पहनाया और मेरी कोशिश और ताक़त के बग़ैर मुझे यह नसीब फ़रमाया'' तो उसके अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अगले गुनाह माफ़ होने का मतलब यह है कि आइंदा अल्लाह तआ़ला अपने इस बन्दे की गुनाहों से हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴾317﴿ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيْدًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ مَا اُوَارِيْ بِهٖ عَوْرَتِيْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِيْ حَيَاتِيْ، ثُمَّ عَمَدَ اِلَى الثَّوْبِ الَّذِيْ اَخْلَقَ فَتَصَدَّقَ بِهٖ كَانَ فِيْ كَنَفِ اللهِ وَفِيْ حِفْظِ اللهِ وَفِيْ سِتْرِ اللهِ حَيًّا وَ مَيِّتًا.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب، احاديث شتى من ابواب الدعوات، رقم: ٣٥٦٠

317. हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स नया कपड़ा पहन कर यह दुआ़ पढ़े : **अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औ़रती व अ-तजम्मलु बिही फ़ी हयाती** "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं जिन्होंने मुझे कपड़े पहनाए, उन कपड़ों से मैं अपना सतर छुपाता हूं और अपनी ज़िन्दगी में उनसे ज़ीनत हासिल करता हूं' फिर पुराने कपड़े को सदक़ा कर दे तो ज़िन्दगी और मरने के बाद अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त और अमान में रहेगा और उसके गुनाहों पर अल्लाह तआ़ला पर्दा डाले रखेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿318﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: اِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَسْئَلُوْا اللهَ مِنْ فَضْلِهٖ فَاِنَّهَا رَاَتْ مَلَكًا، وَاِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيْقَ الْحَمِيْرِ فَتَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَاِنَّهَا رَاَتْ شَيْطَانًا۔ رواه البخاری، باب خير مال المسلم......، رقم ٣٣٠٣

381. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्ल का सवाल करो, क्योंकि वह फ़रिश्ते को देखकर आवाज़ देता है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगों, क्योंकि वह शैतान को देखकर बोलता है। (बुख़ारी)

﴿319﴾ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ كَانَ اِذَا رَاَى الْهِلَالَ قَالَ: اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ، رَبِّىْ وَرَبُّكَ اللهُ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب مايقول عند رؤية الهلال، الجامع الصحيح للترمذی، رقم: ٣٤٥١

319. हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम ﷺ नया चांद देखते तो यह दुआ़ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म अहिल्लहू अ़लैना बिलयुम्नि वल इमानि वस्सलामति वल इस्लाम। रब्बी व रब्बुकल्लाह'**

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! यह चांद हमारे ऊपर बरकत, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ निकालिए। ऐ चांद! मेरा और तेरा रब अल्लाह तआ़ला है। (तिर्मिज़ी)

﴿320﴾ عَنْ قَتَادَةَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ بَلَغَهُ اَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا رَاَى الْهِلَالَ قَالَ: هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، آمَنْتُ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ يَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ ذَهَبَ بِشَهْرِ كَذَا وَجَاءَ بِشَهْرِ كَذَا.

رواه ابوداؤد، باب مايقول الرجل اذا راى الهلال،رقم: ٥٠٩٢

320. हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब नये चांद को देखते, तो तीन बार फ़रमाते : "यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, यह ख़ैर और हिदायत का चांद हो, मैं ईमान लाया अल्लाह तआ़ला पर जिन्होंने तुझे पैदा किया"। फिर फ़रमाते : 'तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने फ़्लां महीना ख़त्म किया और फ़्लां महीना शुरू किया" (अबूदाऊद)

﴿321﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ رَاَى صَاحِبَ بَلَاءٍ فَقَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا، اِلَّا عُوْفِىَ مِنْ ذٰلِكَ الْبَلَاءِ، كَائِنًا مَّا كَانَ مَا عَاشَ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء مايقول اذا راى مبتلى، رقم: ٣٤٣١

321. हज़रत उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसीबतज़दा को देखकर यह दुआ़ पढ़ ले : 'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तला-क बिही व फज़्ज़लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़-ल-क़ तफ़्ज़ीला०' तो उस दुआ़ का पढ़ने वाला उस पर परेशानी से ज़िन्दगी भर महफ़ूज़ रहेगा ख़्वाह वह परेशानी कैसी ही हो।

तर्जुमा : सब तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिए हैं, जिन्होंने मुझे उस हाल से बचाया जिसमें तुम्हें मुब्तला किया और उसने अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ पर मुझे फ़ज़ीलत दी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हज़रत जाफ़र रह० फ़रमाते हैं कि ये अल्फ़ाज़ अपने दिल में कहे और मुसीबतज़दा को न सुनाए। (तिर्मिज़ी)

﴿322﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِىُّ ﷺ اِذَا اَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهٖ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى وَاِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ.

رواه البخارى، باب وضع اليد تحت الخد اليمنى، رقم: ٦٣١٤

322. हज़रत हुज़ैफ़ा ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब रात को अपने बिस्तर पर लेटते, तो अपना हाथ अपने रुख़्सार के नीचे रखते, फिर यह दुआ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म बिस्मि-क अमूतु व अह़्या'** ''ऐ अल्लाह! मैं आपका नाम लेकर मरता हूं (यानी सोता हूं) और ज़िन्दा होता हूं (यानी जागता हूं)'' और जब बेदार होते तो यह दुआ पढ़ते : **'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़्याना बा-द मा अमा-तना व इलैहिन्नुशूर०'** ''तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिसने हमें मार कर ज़िन्दगी बख़्शी और हमको उन्हीं की तरफ़ क़ब्रों से उठकर जाना है''। (बुख़ारी)

﴿323﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا اَتَيْتَ مَضْجَعَكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوْءَكَ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلٰى شِقِّكَ الْاَيْمَنِ وَقُلْ: اَللّٰهُمَّ! اَسْلَمْتُ وَجْهِيْ اِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ اَمْرِيْ اِلَيْكَ، وَاَلْجَاْتُ ظَهْرِيْ اِلَيْكَ، رَهْبَةً وَرَغْبَةً اِلَيْكَ، لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِيْ اَنْزَلْتَ، وَنَبِيِّكَ الَّذِيْ اَرْسَلْتَ قَالَ: فَاِنْ مُتَّ مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ، وَاجْعَلْهُنَّ آخِرَ مَا تَقُوْلُ قَالَ الْبَرَاءُ: فَقُلْتُ اَسْتَذْكِرُهُنَّ، فَقُلْتُ: وَبِرَسُوْلِكَ الَّذِيْ اَرْسَلْتَ، قَالَ: لَا، وَنَبِيِّكَ الَّذِيْ اَرْسَلْتَ۔

رواه ابوداؤد، باب مايقول عند النوم، رقم: ٥٠٤٦ و زاد مسلم وَاِنْ اَصْبَحْتَ اَصَبْتَ خَيْرًا، باب الدعاء عند النوم، رقم: ٦٨٨٥

323. हज़रत बरा बिन आज़िब ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : जब तुम (सोने के लिए) बिस्तर पर आने का इरादा करो तो वुज़ू करो, फिर दाएं करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान आप के सुपुर्द कर दी और अपना मामला आपके हवाले कर दिया और आपसे डरते हुए और आप ही की तरफ़ रग़बत करते हुए मैंने आपका सहारा लिया। आपकी ज़ात के अलावा कोई पनाह की जगह और नजात की जगह नहीं है और जो किताब आपने उतारी है, उस पर मैं ईमान ले आया और जो नबी आपने भेजा है उस पर भी मैं ईमान ले आया। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत बरा ﵁ से फ़रमाया : (अगर इस दुआ को पढ़कर सो जाओ) फिर उस रात तुम्हारी मौत आ जाए तो तुम्हारी मौत इस्लाम पर होगी और अगर सुबह उठोगे तो तुम्हें बड़ी ख़ैर मिलेगी और इस दुआ के बाद कोई और बात न करो (बल्कि सो जाओ)। हज़रत बरा ﵁ फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ के सामने ही इस दुआ को याद करने लगा, तो मैंने (आख़िरी जुमले में) ونبیک الذی ارسلت की जगह وبرسولک الذی ارسلت कहा,

आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं (बल्कि) ونبيك الذى ارسلت कहो। (अबूदाऊद)

﴿324﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: اِذَا اَوٰى اَحَدُكُمْ اِلٰى فِرَاشِهٖ فَلْيَنْفُضْ فِرَاشَهٗ بِدَاخِلَةِ اِزَارِهٖ، فَاِنَّهٗ لَا يَدْرِىْ مَا خَلَفَهٗ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَقُوْلُ: بِاسْمِكَ رَبِّىْ وَضَعْتُ جَنْبِىْ، وَبِكَ اَرْفَعُهٗ، اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِىْ فَارْحَمْهَا، وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

رواه البخارى، كتاب الدعوات، رقم: ٦٣٢٠

324. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर आए तो बिस्तर को अपने तहबन्द के किनारे से तीन मर्तबा झाड़ ले, क्योंकि उसे मालूम नहीं कि उसके बिस्तर पर उसकी ग़ैर मौजूदगी में क्या चीज़ आ गई हो, यानी मुम्किन है कि उसकी ग़ैर मौजूदगी में बिस्तर के अन्दर कोई ज़हरीला जानवर छुप गया हो। फिर कहे :

तर्जुमा : ऐ मेरे रब! मैंने आपका नाम लेकर अपना पहलू बिस्तर पर रखा है और आपके नाम से उसको उठाऊंगा, अगर आप सोने की हालत में मेरी रूह को क़ब्ज़ कर लें तो उस पर रहम फ़रमा दीजिएगा और अगर आप उसे ज़िन्दा रखें तो उसकी इसी तरह हिफ़ाज़त कीजिए जिस तरह आप अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। (बुख़ारी)

﴿325﴾ عَنْ حَفْصَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِىِّ ﷺ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ اِذَا اَرَادَ اَنْ يَرْقُدَ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنٰى تَحْتَ خَدِّهٖ، ثُمَّ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ! قِنِىْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ۔

رواه ابوداؤد، باب مايقول عند النوم، رقم: ٥٠٤٥

325. हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि रसूलुल्लाह ﷺ की अह्लिया मुहतर्मा हैं फ़रमाती हैं जब रसूलुल्लाह ﷺ सोने का इरादा फ़रमाते, तो अपना दायां हाथ अपने दाएं रुख़सार के नीचे रखते और तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ते : **'अल्लाहुम-म क़िनी अज़ा-ब-क यौ-म तबअसु इबा-द-क०'** "ऐ अल्लाह! मुझे अपने अज़ाब से उस दिन बचाइए, जिस दिन आप अपने बन्दों को क़ब्रों से उठाएंगे"। (अबूदाऊद)

﴿326﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِىُّ ﷺ: اَمَا لَوْ اَنَّ اَحَدَهُمْ يَقُوْلُ حِيْنَ يَاْتِىْ اَهْلَهٗ: بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنِى الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا، ثُمَّ قُدِّرَ بَيْنَهُمَا فِىْ ذٰلِكَ اَوْقُضِىَ وَلَدٌ لَمْ يَضُرَّهٗ شَيْطَانٌ اَبَدًا۔

رواه البخارى، باب مايقول اذا اتى اهله، رقم: ٥١٦٥

326. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई अपनी बीवी के पास आए और यह दुआ़ पढ़े : **'बिस्मिल्लाह अल्लाहुम-म जन्निब निश-शैता-न व जन्निबिश-शैता-न मा र-ज़क़-तना'** फिर उस वक़्त की हमबिस्तरी से अगर उनके यहां बच्चा पैदा हुआ तो उसे शैतान कभी नुक़सान न पहुंचा सकेगा, यानी शैतान उस बच्चे को गुमराह करने में कामयाब न हो सकेगा।

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के नाम से यह काम करता हूं, ऐ अल्लाह! मुझे शैतान से बचाइए और जो औलाद आप हम को अ़ता फ़रमाएं उनको भी शैतान से बचाइए। (बुख़ारी)

﴿327﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا فَزِعَ اَحَدُكُمْ فِي النَّوْمِ فَلْيَقُلْ: اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَ عِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَحْضُرُوْنِ فَاِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهٗ قَالَ: فَكَانَ عَبْدُاللهِ بْنُ عَمْرٍو يُعَلِّمُهَا مَنْ بَلَغَ مِنْ وَلَدِهٖ، وَمَنْ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهُمْ كَتَبَهَا فِي صَكٍّ ثُمَّ عَلَّقَهَا فِيْ عُنُقِهٖ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب دعاء الفزع في النوم، رقم: ٣٥٢٨

327. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई शख़्स सोते हुए घबरा जाए, तो यह कलिमात कहे : "मैं अल्लाह तआ़ला के मुकम्मल, हर ऐब और कमी से पाक क़ुरआनी कलिमों के ज़रिए उसके ग़ुस्सा से, उसके अ़ज़ाब से, उसके बन्दों की बुराई से, शैतानों के वस्वसों से और इस बात से कि शैतान मेरे पास आए, पनाह मांगता हूं" तो वह ख़्वाब उसको कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ؓ (अपने ख़ानदान की) औलाद में जो ज़रा समझदार होते, उनको यह दुआ़ सिखाते थे और नासमझ के लिए यह दुआ़ काग़ज़ पर लिखकर उनके गले में डाल देते थे। (तिर्मिज़ी)

﴿328﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا رَاٰى اَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يُحِبُّهَا فَاِنَّمَا هِيَ مِنَ اللهِ فَلْيَحْمَدِ اللهَ عَلَيْهَا وَ لْيُحَدِّثْ بِمَا رَاٰى، وَاِذَا رَاٰى غَيْرَ ذٰلِكَ مِمَّا يَكْرَهُهٗ فَاِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ مِنْ شَرِّهَا وَلَا يَذْكُرْهَا لِاَحَدٍ فَاِنَّهَا لَا تَضُرُّهٗ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب مايقول اذا رأى رؤيا يكرهها، رقم: ٣٤٥٣

328. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह

इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुममें से कोई शख़्स अच्छा ख़्वाब देखे तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ से है, लिहाज़ा उस पर अल्लाह तआला की तारीफ़ करे और उसे ब्यान करे और अगर बुरा ख़्वाब देखे तो यह शैतान की तरफ़ से है, उसे चाहिए कि उस ख़्वाब के शर से अल्लाह तआला की पनाह मांगे और किसी के सामने उसे ब्यान न करे तो बुरा ख़्वाब उसे नुक़सान न देगा। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अल्लाह तआला की पनाह मांगने के लिए 'अऊज़ु बिल्लाहि मिन शर्रिहा०' "मैं इस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह तआला की पनाह लेता हूं" कहे।

﴾329﴿ عَنْ اَبِیْ قَتَادَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ: الرُّؤْيَا مِنَ اللّٰهِ، وَ الْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَاِذَارَاٰی اَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهٗ فَلْيَنْفِثْ حِيْنَ يَسْتَيْقِظُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، وَيَتَعَوَّذْ مِنْ شَرِّهَا فَاِنَّهَا لَا تَضُرُّهٗ۔ رواه البخاری، باب النفث فی الرقية، رقم: ٥٧٤٧

329. हज़रत अबू क़तादा ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अच्छा ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से है और बुरा ख़्वाब (जिसमें घबराहट हो) शैतान की तरफ़ से है। जब तुम में से कोई ख़्वाब में नापसन्दीदा चीज़ देखे तो जिस वक़्त उठे (अपनी बाईं तरफ़) तीन मर्तबा थुथकारे और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह तआला की पनाह मांगे, तो वह ख़्वाब उस शख़्स को नुक़सान न पहुंचाएगा। (बुख़ारी)

﴾330﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا اَوٰی اَحَدُكُمْ اِلٰی فِرَاشِهٖ، ابْتَدَرَهٗ مَلَكٌ وَشَيْطَانٌ، يَقُوْلُ الشَّيْطَانُ: اِخْتِمْ بِشَرٍّ، وَيَقُوْلُ الْمَلَكُ: اِخْتِمْ بِخَيْرٍ، فَاِنْ ذَكَرَاللّٰهَ ذَهَبَ الشَّيْطَانُ وَبَاتَ الْمَلَكُ يَكْلَؤُهٗ، وَاِذَا اسْتَيْقَظَ ابْتَدَرَهٗ مَلَكٌ وَشَيْطَانٌ، يَقُوْلُ الشَّيْطَانُ: اِفْتَحْ بِشَرٍّ وَيَقُوْلُ الْمَلَكُ: اِفْتَحْ بِخَيْرٍ فَاِنْ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَدَّ اِلَیَّ نَفْسِیْ بَعْدَ مَوْتِهَا وَلَمْ يُمِتْهَا فِیْ مَنَامِهَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَی الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ يُحْيِی الْمَوْتٰی وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، فَاِنْ خَرَّ مِنْ دَابَّةٍ مَاتَ شَهِيْدًا، وَاِنْ قَامَ فَصَلّٰی صَلّٰی فِی الْفَضَائِلِ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبی ٥٤٨/١

330. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर सोने के लिए आता है तो फ़ौरन एक फ़रिश्ता और

एक शैतान उसके पास आते हैं। शैतान कहता है कि अपने बेदारी के वक़्त को बुराई पर ख़त्म कर, और फ़रिश्ता कहता है : इसे भलाई पर ख़त्म कर। अगर वह अल्लाह तआला का ज़िक्र करके सोया है तो शैतान उसके पास से चला जाता है और रात भर एक फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त करता है। फिर जब वह बेदार होता है, तो एक फ़रिश्ता और शैतान फ़ौरन उसके पास आते हैं। शैतान उससे कहता है : अपनी बेदारी को बुराई से शुरू कर और फ़रिश्ता कहता है : भलाई से शुरू कर। फिर अगर वह यह दुआ पढ़ लेता है : उसके बाद अगर वह किसी जानवर से गिर कर मर जाए (या किसी और वजह से उसकी मौत वाक़े हो जाए) तो वह शहादत की मौत मरा, और अगर ज़िन्दा रहा और खड़े होकर नमाज़ पढ़ी, तो उसे उस नमाज़ पर बड़े दर्जे मिलते हैं।

तर्जुमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिन्होंने मेरी जान मुझको वापस लौटा दी और मुझे सोने की हालत में मौत न दी। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिन्होंने आसमान को अपनी इजाज़त के बग़ैर ज़मीन पर गिरने से रोका हुआ है। यक़ीनन अल्लाह तआला लोगों पर बड़ी शफ़क़त करने वाले, मेहरबानी फ़रमाने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जो मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿331﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِاَبِيْ: يَا حُصَيْنُ! كَمْ تَعْبُدُ الْيَوْمَ اِلٰهًا؟ قَالَ اَبِيْ: سَبْعَةً: سِتَّةً فِي الْاَرْضِ، وَوَاحِدًا فِي السَّمَاءِ، قَالَ: فَاَيُّهُمْ تَعُدُّ لِرَغْبَتِكَ وَرَهْبَتِكَ؟ قَالَ: الَّذِي فِي السَّمَاءِ، قَالَ: يَا حُصَيْنُ! اَمَا اِنَّكَ لَوْ اَسْلَمْتَ عَلَّمْتُكَ كَلِمَتَيْنِ تَنْفَعَانِكَ، قَالَ: فَلَمَّا اَسْلَمَ حُصَيْنٌ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! عَلِّمْنِي الْكَلِمَتَيْنِ اللَّتَيْنِ وَعَدْتَنِيْ، فَقَالَ: قُلْ: اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِيْ رُشْدِيْ، وَ اَعِذْنِيْ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ۔

رواه الترمذی، وقال: هذا حديث حسن غريب، باب قصة تعليم دعاء ......،رقم: ٣٤٨٣

331. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे वालिद से पूछा : तुम कितने माबूदों की इबादत करते हो? मेरे वालिद ने जवाब दिया : सात माबूदों की इबादत करता हूं, छः ज़मीन में हैं और एक आसमान में है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम उम्मीद व ख़ौफ़ की हालत में किस को पुकारते हो? उन्होंने अर्ज़ किया : उस माबूद को जो आसमान में है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हुसैन! अगर तुम इस्लाम ले आओ तो मैं तुम्हें दो कलिमे सिखाऊंगा, जो तुम को

फ़ायदा देंगे। जब हज़रत हुसैन ﷺ मुसलमान हो गए तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! आप मुझे वे दो कलिमे सिखाइए, जिनका आपने मुझसे वादा किया था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़हो : 'अल्लाहुम-म अलहिम्नी रुश्दी व अइज़नी मिनशर्रि नफ़्सी' "ऐ अल्लाह! मेरी भलाई मेरे दिल में डाल दीजिए और मुझे मेरे नफ़्स के शर से बचा लीजिए।" (तिर्मिज़ी)

﴿332﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ اَمَرَهَا اَنْ تَدْعُوَ بِهٰذَا الدُّعَاءِ: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَاعَلِمْتُ مِنْهُ وَمَالَمْ اَعْلَمْ وَاَسْاَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْعَمَلٍ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْعَمَلٍ وَاَسْاَلُكَ خَيْرَ مَا سَاَلَكَ عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ بِكَ عَنْهُ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَسْاَلُكَ مَا قَضَيْتَ لِیْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهٗ رُشْدًا۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبی ۱/۵۲۲

332. हज़रत आ़इशा रज़ियलाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मझे फ़रमाया कि इन अल्फ़ाज़ से दुआ़ करो :

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं हर क़िस्म की भलाई जल्द मिलने वाली और देर में मिलने वाली, जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता उन तमाम को आपसे तलब करता हूं, और मैं हर क़िस्म के शर से, जो जल्द या देर में आने वाला हो जो मैं जानता हूं और जो मैं नहीं जानता, उन तमाम से आप की पनाह मांगता हूं। मैं आपसे जन्नत का और हर उस क़ौल या अ़मल का सवाल करता हूं जो जन्नत से क़रीब कर दे। और मैं आपसे जहन्नम से और हर उस क़ौल या अ़मल से पनाह मांगता हूं जो जहन्नम से क़रीब कर दे। मैं आपसे उन तमाम भलाइयों का सवाल करता हूं जिसका आपके बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ ने सवाल किया और मैं आपसे हर उस शर से पनाह मांगता हूं जिससे आपके बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ ने पनाह मांगी और मैं आपसे दरख़्वास्त करता हूं कि जो कुछ आप मेरे हक़ में फ़ैसला फ़रमाएंगे, उसके अंजाम को मेरे लिए बेहतर फ़रमाएं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿333﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اِذَا رَاٰى مَايُحِبُّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ، وَاِذَا رَاٰى مَا يَكْرَهُ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ۔

رواه ابن ماجه، باب فضل الحامدين، رقم: ۳۸۰۳

333. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी पसन्दीदा चीज़ को देखते तो फ़रमाते : "तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिनके फ़ज़्ल से तमाम नेक काम अंजाम पाते हैं"। और जब किसी नागवार चीज़ को देखते, तो फ़रमाते : "तमाम तारीफ़ें हर हाल में अल्लाह तआला ही के लिए हैं"। (इब्ने माजा)

इकरामे मुस्लिम

बन्दों से मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला के अवामिर को रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े की पाबंदी के साथ पूरा करना और उसमें मुसलमानों की नौइयत का लिहाज़ करना।

मुसलमान का मक़ाम

क़ुरआनी आयतें

قَالَ تَعَالٰى ﴿وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ﴾ [البقرة: ٢٢١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और एक मुसलमान ग़ुलाम मुशरिक आज़ाद मर्द से कहीं बेहतर है, ख़्वाह वह मुश्रिक मर्द तुमको कितना ही भला क्यों न मालूम होता हो। (बक़रः 221)

وَقَالَ تَعَالٰى ﴿اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا﴾ [الانعام: ١٢٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : क्या एक ऐसा शख़्स जो मुर्दा था, फिर हमने उसको ज़िन्दगी बख़्शी और हमने उसको एक ऐसा नूर अ़ता किया, जिसको लिए हुए वह लोगों में चलता फिरता है, भला क्या यह शख़्स उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो मुख़्तलिफ़ तारीकियों में पड़ा हुआ हो और उन

तारीकियों से निकल न सकता हो (यानी क्या मसुलमान काफ़िर के बराबर हो सकता है?)। (अन्आम : 122)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ط لَا يَسْتَوٗنَ﴾ [السجدة:١٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो शख़्स मोमिन हो क्या वह उस शख़्स जैसा हो जाएगा, जो बेहुक्म (यानी काफ़िर) हो? (नहीं) वे आपस में बराबर नहीं हो सकते। (सज्दा : 18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا﴾ [فاطر:٣٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : फिर यह किताब हमने उन लोगों के हाथों में पहुंचाई जिनको हमने अपने (तमाम दुनिया व जहान के) बन्दों में से (ब-एतबार ईमान के) पसन्द फ़रमाया, (मुराद इससे अह्ले इस्लाम हैं जो ईमान की इस हैसियत से दुनिया वालों में मक़बूल इन्दल्लाह हैं)। (फ़ातिर : 32)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّهَا قَالَتْ: اَمَرَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَنْ نُنْزِلَ النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ.

رواه مسلم في مقدمه صحيحه

1. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हमें रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बात का हुक्म फ़रमाया कि हम, लोगों के साथ उनके मरतबों का लिहाज़ करके बरताव किया करें। (मुक़दमा सही मुस्लिम)

﴿2﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَظَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِلَى الْكَعْبَةِ فَقَالَ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مَا اَطْيَبَكِ وَاَطْيَبَ رِيْحَكِ، وَاَعْظَمَ حُرْمَتَكِ، وَ الْمُؤْمِنُ اَعْظَمُ حُرْمَةً مِنْكِ، اِنَّ اللهَ تَعَالٰى جَعَلَكِ حَرَامًا، وَحَرَّمَ مِنَ الْمُؤْمِنِ مَالَهُ وَ دَمَهُ وَعِرْضَهُ، وَاَنْ نَظُنَّ بِهٖ ظَنًّا سَيِّئًا.

رواه الطبراني في الكبير و فيه: الحسن بن ابى جعفر وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ٣/ ٦٣٠

2. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि॰ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने काबा को

देखकर (ताज्जुब से) इर्शाद फ़रमाया : ला इला-ह इल्लल्लाह (ऐ काबा!) तू किस क़द्र पाकीज़ा है, तेरी ख़ुश्बू किस क़द्र उम्दा है और तू कितना ज़्यादा क़ाबिले एहतराम है, (लेकिन) मोमिन की इज़्ज़त व एहतराम तुझसे ज़्यादा है। अल्लाह तआ़ला ने तुझको एहतराम के क़ाबिल बनाया है और (इसी तरह) मोमिन के माल, ख़ून और इज़्ज़त को भी एहतराम के क़ाबिल बनाया है और (इसी एहतराम की वजह से) इस बात को भी हराम क़रार दिया है कि हम मोमिन के बारे में ज़रा भी बदगुमानी करें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 3 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِيْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ اَغْنِيَائِهِمْ بِاَرْبَعِيْنَ خَرِيْفًا۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين......رقم: ٢٣٥٥

3. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान फ़ुक़रा, मुसलमान मालदारों से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 4 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَدْخُلُ الْفُقَرَاءُ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْاَغْنِيَاءِ بِخَمْسِ مِائَةِ عَامٍ، نِصْفِ يَوْمٍ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء ان فقراء المهاجرين ......رقم: ٢٣٥٣

4. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़ुक़रा मालदारों से आधे दिन पहले जन्नत में दाख़िल होंगे और उस आधे दिन की मिक़दार पांच सौ बरस होगी। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : पिछली हदीस में ग़रीब का अमीर से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होने का ज़िक्र है, यह इस सूरत में है कि अमीर और ग़रीब दोनों में माल की रग़बत हो। इस हदीस में पांच सौ साल पहले जन्नत में जाने का ज़िक्र है, यह उस वक़्त है, जबकि ग़रीब में माल की रग़बत न हो और मालदार में माल की रग़बत हो। (जामेउल उसूल लिइब्ने असीर)

﴿ 5 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: تَجْتَمِعُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ: اَيْنَ فُقَرَاءُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ وَمَسَاكِيْنُهَا؟ قَالَ: فَيَقُوْمُوْنَ، فَيُقَالُ لَهُمْ: مَاذَا عَمِلْتُمْ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا ابْتَلَيْتَنَا فَصَبَرْنَا، وَآتَيْتَ الْاَمْوَالَ وَالسُّلْطَانَ غَيْرَنَا، فَيَقُوْلُ اللهُ: صَدَقْتُمْ،

قَالَ: فَيَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ النَّاسِ، وَيَبْقَى شِدَّةُ الْحِسَابِ عَلٰى ذَوِى الْاَمْوَالِ وَالسُّلْطَانِ۔

(الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ١٦/٤٣٦

5. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब तुम लोग जमा होगे, तो उस वक़्त एलान किया जाएगा इस उम्मत के फ़ुक़रा व मसाकीन कहां हैं? (इस एलान पर) वे खड़े हो जाएंगे। उनसे पूछा जाएगा : तुमने क्या आमाल किए थे? वे कहेंगे : हमारे रब! आपने हमारा इम्तिहान लिया हमने सब्र किया। आपने हमारे अलावा दूसरे लोगों को माल और हुक्मरानी दी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : तुम सच कहते हो। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : चुनांचे वे लोग जन्नत में आम लोगों से पहले दाख़िल हो जाएंगे और हिसाब व किताब की सख़्ती मालदारों और हुक्मरानों के लिए रह जाएगी।

(इब्ने हब्बान)

﴿ 6 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: هَلْ تَدْرُوْنَ مَنْ اَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ خَلْقِ اللهِ؟ قَالُوْا: اَللهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: اَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ خَلْقِ اللهِ الْفُقَرَاءُ الْمُهَاجِرُوْنَ الَّذِيْنَ تُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُوْرُ، وَتُتَّقٰى بِهِمُ الْمَكَارِهُ، وَيَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِىْ صَدْرِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا قَضَاءً، فَيَقُوْلُ اللهُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ مَلَائِكَتِهٖ: اِئْتُوْهُمْ فَحَيُّوْهُمْ، فَيَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: رَبَّنَا نَحْنُ سُكَّانُ سَمٰوَاتِكَ وَخِيَرَتُكَ مِنْ خَلْقِكَ، اَفَتَأْمُرُنَا اَنْ نَاْتِىَ هٰؤُلَاءِ، فَنُسَلِّمَ عَلَيْهِمْ؟ قَالَ: اِنَّهُمْ كَانُوْا عِبَادًا يَعْبُدُوْنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا، وَتُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُوْرُ وَتُتَّقٰى بِهِمُ الْمَكَارِهُ، وَيَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِىْ صَدْرِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُ لَهَا قَضَاءً، قَالَ: فَتَاْتِيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ ذٰلِكَ، فَيَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ: سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٦/٤٣٨

6. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में कौन सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होगा? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया : अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया : सबसे पहले जो लोग जन्नत में दाख़िल होंगे वह फ़ुक़रा मुहाजिरीन हैं। जिनके ज़रिए सरहदों की हिफ़ाज़त की जाती है, मुश्किल कामों में (उन्हें आगे रखकर) उनके ज़रिए से बचाव हासिल किया जाता है,

उन में से जिसको मौत आती है उसकी हाजत उसके सीने में ही रह जाती है वह उसे पूरा नहीं कर पाता। अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के दिन) फ़रिश्तों से फ़रमाएगा : उनके पास जाकर उन्हें सलाम करो, फ़रिश्ते (ताज्जुब से) अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब! हम तो आपके आसमानों के रहने वाले हैं और आपकी बेहतरीन मख़्लूक़ हैं, (इसके बावजूद) आप हमें हुक्म फ़रमा रहे हैं कि हम उनके पास जाकर उनको सलाम क॑ (इसकी क्या वजह है?) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : (इसकी वजह यह है कि) ये मेरे ऐसे बन्दे थे जो मेरी इबादत करते थे, मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थे, उनके ज़रिए सरहदों की हिफ़ाज़त की जाती थी, मुश्किल कामों में उन्हें (आगे रखकर) उनके ज़रिए से बचाव हासिल किया जाता था और उनमें से जिसको मौत आती थी, उसकी हाजत उसके सीने में ही रह जाती थी, वह उसे पूरा नहीं कर पाता था। चुनांचे उस वक़्त फ़रिश्ते उनके पास हर दरवाज़े से यूं कहते हुए आएंगे कि तुम्हारे सब्र करने की वजह से तुम पर सलामती हो। इस जहान में तुम्हारा अंजाम कितना ही अच्छा है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيَاتِي أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ نُوْرُهُمْ كَضَوْءِ الشَّمْسِ، قُلْنَا: مَنْ أُولٰئِكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ فَقَالَ: فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ الَّذِيْنَ تُتَّقَى بِهِمُ الْمَكَارِهُ يَمُوْتُ اَحَدُهُمْ وَحَاجَتُهُ فِيْ صَدْرِهٖ يُحْشَرُوْنَ مِنْ اَقْطَارِ الْاَرْضِ رواه احمد ٢/١٧٧

7. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स ﵁ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग आएंगे, उनका नूर सूरज की रोशनी की तरह होगा। हमने अ़र्ज़ किया : अल्लाह के रसूल! वे कौन लोग होंगे? इर्शाद फ़रमाया : वे फ़ुक़रा मुहाजिरीन होंगे, जिनको मुश्किल कामों में आगे रखकर उनके ज़रिए से बचाव हासिल किया जाता था, उनमें से जिसको मौत आती थी उसकी हाजत उसके सीने में रह जाती थी। उन्हें ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हेस्सों से लाकर जमा किया जाएगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 8 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مِسْكِيْنًا، وَتَوَفَّنِيْ مِسْكِيْنًا، وَاحْشُرْنِيْ فِيْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ.

(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٣٢٢/٤

८. हज़रत अबू सईद ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए

सुना : मुझे मिस्कीन तबीयत बनाकर ज़िन्दा रखिए, मिस्कीनी की हालत में दुनिया से उठाइए और मेरा हश्र मिस्कीनों की जमाअ़त में फ़रमाइए। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 9 ﴾ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ اَبِىْ سَعِيْدٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ اَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِىَّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ شَكَا اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ حَاجَتَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِصْبِرْ اَبَا سَعِيْدٍ، فَاِنَّ الْفَقْرَ اِلٰى مَنْ يُحِبُّنِىْ مِنْكُمْ اَسْرَعُ مِنَ السَّيْلِ مِنْ اَعْلَى الْوَادِىْ، وَمِنْ اَعْلَى الْجَبَلِ اِلٰى اَسْفَلِهٖ.

رواه احمد ورجاله رجال الصحيح الا انه شبه المرسل، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٦

9. हज़रत सईद बिन अबी सईद रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ से अपनी (तंगदस्ती और) ज़रूरत का इज़्हार किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू सईद! सब्र करो, तुम में से जो मुझसे मुहब्बत करता है, फ़क्र उस पर ऐसी तेज़ी से आता है, जिस तेज़ी से सैलाब का पानी वादी की ऊंचाई और पहाड़ों की बुलन्दी से नीचे की तरफ़ आता है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 10 ﴾ عَنْ رَافِعِ بْنِ خُدَيْجٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا اَحَبَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ عَبْدًا حَمَاهُ الدُّنْيَا كَمَا يَظَلُّ اَحَدُكُمْ يَحْمِىْ سَقِيْمَهُ الْمَاءَ.

رواه الطبرانى واسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٠٨

10. हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़ुदैज ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाते हैं तो उसको दुनिया से इस तरह बचाते हैं जिस तरह तुम में से कोई शख़्स अपने मरीज़ को पानी से बचाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَحِبُّوا الْفُقَرَاءَ وَجَالِسُوْهُمْ وَاَحِبَّ الْعَرَبَ مِنْ قَلْبِكَ وَلْتَرُدَّ عَنِ النَّاسِ مَا تَعْلَمُ مِنْ قَلْبِكَ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد ووافقه الذهبى ٤/٣٣٢

11. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़ुक़रा से मुहब्बत करो और उनके साथ बैठो। अरबों से दिल से मुहब्बत करो और जो ऐब तुममें मौजूद हैं वे तुम्हें दूसरों पर तान व तशनीअ़ करने से रोक दें। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾ 12 ﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: رُبَّ اَشْعَثَ اَغْبَرَ ذِيْ طِمْرَيْنِ مُصَفَّحٍ عَنْ اَبْوَابِ النَّاسِ، لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللّٰهِ لَاَبَرَّهٗ۔ رواه الطبرانی فی الاوسط

وفیه: عبداللّٰه بن موسٰی التیمی، وقد وثق، وبقیة رجاله رجال الصحیح، مجمع الزوائد ١٠/٤٦٦

12. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बहुत से परागंदा बाल, गर्द आलूद, पुरानी चादरों वाले, लोगों के दरवाज़ों से हटाए जाने वाले, अगर अल्लाह तआ़ला (के भरोसे) पर क़सम खा लें, तो अल्लाह तआ़ला उनकी क़सम को ज़रूर पूरा फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ का मक़सद यह है कि अल्लाह तआ़ला के किसी बन्दे को मैला कुचैला और परागंदा बाल देखकर अपने से कमतर न समझा जाए, क्योंकि बहुत से इस हाल में रहने वाले भी अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दों में से होते हैं, अलबत्ता वाज़ेह रहे कि हदीस शरीफ़ का मक़सद परागंदा बाल और मैला कुचैला रहने की तर्ग़ीब देना नहीं है। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴾ 13 ﴿ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهٗ جَالِسٍ: مَا رَاْيُكَ فِيْ هٰذَا؟ فَقَالَ: رَجُلٌ مِنْ اَشْرَافِ النَّاسِ، هٰذَا وَاللّٰهِ حَرِيٌّ اِنْ خَطَبَ اَنْ يُنْكَحَ، وَاِنْ شَفَعَ اَنْ يُشَفَّعَ، قَالَ: فَسَكَتَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ ثُمَّ مَرَّ رَجُلٌ فَقَالَ لَهٗ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَارَاْيُكَ فِيْ هٰذَا؟ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هٰذَا رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ، هٰذَا حَرِيٌّ اِنْ خَطَبَ اَنْ لَا يُنْكَحَ، وَاِنْ شَفَعَ اَنْ لَا يُشَفَّعَ، وَاِنْ قَالَ اَنْ لَا يُسْمَعَ لِقَوْلِهٖ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: هٰذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الْاَرْضِ مِثْلَ هٰذَا۔

رواه البخاری، باب فضل الفقر، رقم: ٦٤٤٧

13. हज़रत सह्ल बिन साद साइदी ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के सामने से गुज़रे तो आप ﷺ ने अपने पास बैठे हुए आदमी से पूछा : तुम्हारी इस शख़्स के बारे में क्या राय है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों में से है। अल्लाह तआ़ला की क़सम! इस क़ाबिल है कि अगर कहीं निकाह का पैग़ाम दे तो क़ुबूल किया जाए और किसी की सिफ़ारिश करे, तो सिफ़ारिश क़ुबूल की जाए। आप ﷺ यह सुनकर ख़ामोश हो गए। उसके बाद एक और साहब सामने से गुज़रे। आप ﷺ ने उस आदमी से पूछा : तुम्हारी उस शख़्स के बारे में क्या राय है? उस आदमी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक मुसलमान फ़क़ीर है, अगर कहीं निकाह का

पैग़ाम दे तो क़ुबूल न किया जाए, किसी की सिफ़ारिश करे तो क़ुबूल न की जाए और अगर बात कहे तो उसकी बात न सुनी जाए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर पहले शख़्स जैसों से सारी दुनिया भर जाए, तो भी उन सबसे यह शख़्स बेहतर है। (बुख़ारी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : رَاٰى سَعْدٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ لَهُ فَضْلًا عَلٰى مَنْ دُوْنَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: هَلْ تُنْصَرُوْنَ وَتُرْزَقُوْنَ اِلَّا بِضُعَفَائِكُمْ؟

رواه البخاري، باب من استعان بالضعفاء......، رقم: ٢٨٩٦

14. हज़रत मुसअ़ब बिन साद ؓ से रिवायत है कि (उनके वालिद) हज़रत सईद ؓ का ख़्याल था कि उन्हें उन सहाबा पर फ़ज़ीलत हासिल है, जो उनसे (मालदारी और बहादुरी की वजह से) कम दर्जे के हैं। (उनके ख़्याल की इस्लाह की ग़रज़ से) नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे कमज़ोरों और बेकसों ही की बरकत से तुम्हारी मदद की जाती है और तुम्हें रोज़ी दी जाती है। (बुख़ारी)

﴿ 15 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِبْغُوْنِي الضُّعَفَاءَ فَاِنَّمَا تُرْزَقُوْنَ وَتُنْصَرُوْنَ بِضُعَفَائِكُمْ۔ رواه ابوداؤد، باب في الانتصار......، رقم: ٢٥٩٤

15. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुझे कमज़ोरों में तलाश किया करो, इसलिए कि तुम्हारे कमज़ोरों की वजह से तुम्हें रोज़ी मिलती है और तुम्हारी मदद होती है। (अबूदाऊद)

﴿ 16 ﴾ عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى اَهْلِ الْجَنَّةِ؟ كُلُّ ضَعِيْفٍ مُتَضَعَّفٍ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللهِ لَاَبَرَّهُ، وَاَهْلِ النَّارِ كُلُّ جَوَّاظٍ عُتُلٍّ مُسْتَكْبِرٍ۔

رواه البخاري، باب قول الله تعالىٰ وَاَقْسَمُوْا بِاللهِ......، رقم: ٦٦٥٧

16. हज़रत हारिसा बिन वह्ब ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि जन्नती कौन हैं? (फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया) हर वह शख़्स जो कमज़ोर हो यानी मामला और बरताव में सख़्त न हो, बल्कि मुतवाज़े और नर्म तबीयत हो, लोग भी उसे कमज़ोर समझते हों (अल्लाह तआ़ला के साथ उसका तअ़ल्लुक़ ऐसा हो कि) अगर वह किसी बात पर अल्लाह तआ़ला की क़सम खा ले (कि फ़्लां बात यूँ होगी) तो अल्लाह तआ़ला उस कस की क़सम (की लाज रखकर उसकी बात को) ज़रूर पूरा कर दें और क्या मैं तुम्हें

न बताऊं दोज़ख़ी कौन हैं? (फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया) हर वह शख़्स जो माल जमा करके रखने वाला बख़ील, सख़्त मिज़ाज, मग़रूर हो। (बुख़ारी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ عِنْدَ ذِكْرِ النَّارِ: اَهْلُ النَّارِ كُلُّ جَعْظَرِيٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ جَمَّاعٍ مَنَّاعٍ وَاَهْلُ الْجَنَّةِ الضُّعَفَاءُ الْمَغْلُوْبُوْنَ۔ رواه احمد ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٧٢١/١٠

17. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दोज़ख़ के ज़िक्र के वक़्त इर्शाद फ़रमाया : दोज़ख़ी लोगों में हर सख़्त तबीयत, फ़रबा बदन, इतरा कर चलने वाला, मुतकब्बिर, माल व दौलत को ख़ूब जमा करने वाला और (फिर) उसको ख़ूब रोक कर रखने वाला, यानी साइल को न देने वाला है और जन्नती लोग वे हैं जो कमज़ोर हों, यानी उनका रवैया लोगों के साथ आजिज़ी का हो, वे दबाए जाते हों यानी लोग उन्हें कमज़ोर समझकर दबाते हों।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 18 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ نَشَرَ اللهُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ وَاَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ: رِفْقٌ بِالضَّعِيْفِ، وَالشَّفَقَةُ عَلَى الْوَالِدَيْنِ، وَالْاِحْسَانُ اِلَى الْمَمْلُوْكِ۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فيه اربعة احاديث......، رقم: ٢٤٩٤

18. हज़रत जाबिर ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन ख़ूबियां जिस शख़्स में पाई जाएं, अल्लाह तआ़ला (क़ियामत के दिन) उसको अपनी रहमत के साए में जगह अ़ता फ़रमाएंगे और उसे जन्नत में दाख़िल कर देंगे। कमज़ोर से नर्म बरताव करना, वालिदैन से मेहरबानी का मामला करना और गुलाम से अच्छा सुलूक करना। (तिर्मिज़ी)

﴿ 19 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُؤْتَى بِالشَّهِيْدِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُنْصَبُ لِلْحِسَابِ، ثُمَّ يُؤْتَى بِالْمُتَصَدِّقِ فَيُنْصَبُ لِلْحِسَابِ، ثُمَّ يُؤْتَى بِاَهْلِ الْبَلَاءِ فَلَا يُنْصَبُ لَهُمْ مِيْزَانٌ، وَلَا يُنْصَبُ لَهُمْ دِيْوَانٌ، فَيُصَبُّ عَلَيْهِمُ الْاَجْرُ صَبًّا حَتّٰى اِنَّ اَهْلَ الْعَافِيَةِ لَيَتَمَنَّوْنَ فِي الْمَوَاقِفِ اَنَّ اَجْسَادَهُمْ قُرِضَتْ بِالْمَقَارِيْضِ مِنْ حُسْنِ ثَوَابِ اللهِ لَهُمْ۔

رواه الطبراني في الكبير وفيه، مُجَّاعة بن الزبير وثقه احمد وضعفه الدارقطني، مجمع الزوائد ٣٠٨/٢، طبع مؤسسة المعارف

19. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ियामत के दिन शहीद को लाया जाएगा और उसको हिसाब-किताब के लिए खड़ा कर दिया जाएगा। फिर सदक़ा करने वाले को लाया जाएगा और उसको भी हिसाब किताब के लिए खड़ा कर दिया जाएगा। फिर उन लोगों को लाया जाएगा जो दुनिया की मुख़्तलिफ़ मुसीबतों और तकलीफ़ों में मुब्तला रहे, उनके लिए न मीज़ाने अद्ल क़ायम होगी और न उन के लिए कोई अ़दालत लगाई जाएगी। फिर उन पर अज्र व इनाम बरसाए जाएंगे कि वे लोग जो दुनिया में आ़फ़ियत से रहे (उस बेहतरीन अज्र व इनाम को देखकर) तमन्ना करने लगेंगे कि उनके जिस्म (दुनिया में) कैंचियों से काट दिए गए होते (और उस पर वे सब्र करते)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا اَحَبَّ اللّٰهُ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ، فَمَنْ صَبَرَ فَلَهُ الصَّبْرُ وَمَنْ جَزِعَ فَلَهُ الْجَزَعُ۔

رواه احمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣/١١

20. हज़रत महमूद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं तो उनको (मुसीबतों में डाल कर) आज़मते हैं, चुनांचे जो सब्र करता है उसके लिए सब्र (का अज्र) लिख दिया जाता है और जो बेसब्री करता है तो उसके लिए बेसब्री लिख दी जाती है (फिर वह रोता-पीटता ही रह जाता है)। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 21 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ الرَّجُلَ لَيَكُوْنُ لَهُ عِنْدَ اللّٰهِ الْمَنْزِلَةُ فَمَا يَبْلُغُهَا بِعَمَلِهِ، فَمَا يَزَالُ اللّٰهُ يَبْتَلِيْهِ بِمَا يَكْرَهُ حَتّٰى يُبَلِّغَهَا۔ رواه ابويعلى

وفي رواية له: يَكُوْنُ لَهُ عِنْدَ اللّٰهِ الْمَنْزِلَةُ الرَّفِيْعَةُ۔ ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣/١٣

21. हज़रत अबूहुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के यहां एक शख़्स के लिए एक बुलन्द दर्जा मुक़र्रर होता है, (लेकिन) वह अपने अ़मल के ज़रिए उस दर्जा तक नहीं पहुंच पाता, तो अल्लाह तआ़ला उसको ऐसी चीज़ों (मसलन बीमारियों व परेशानियों वग़ैरह) में मुब्तला करते रहते हैं, जो उसे नागवार होती हैं, यहां तक कि वह उन नागवारियों के ज़रिए उस दर्जा तक पहुंच जाता है। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ وَعَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا يُصِيْبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلَا وَصَبٍ وَلَا هَمٍّ وَلَا حَزَنٍ، وَلَا اَذًى، وَلَا غَمٍّ حَتّٰى الشَّوْكَةِ يُشَاكُهَا، اِلَّا كَفَّرَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ۔ رواه البخاري، باب ما جاء في كفارة المرض، رقم: ٥٦٤١

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान जब किसी थकावट, बीमारी, फ़िक्र, रंज व मलाल, तकलीफ़ और ग़म से दोचार होता है, यहां तक कि अगर उसे कोई कांटा भी चुभता है तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 23 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يُشَاكُ شَوْكَةً فَمَا فَوْقَهَا، اِلَّا كُتِبَتْ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ، وَمُحِيَتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةٌ.

رواه مسلم، باب ثواب المؤمن فيما يصيبه من مرض......، رقم: ٦٥٦١

23. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब किसी मुसलमान को कांटा चुभता है या उससे भी कोई कम तकलीफ़ पहुंचती है तो उसके बदले अल्लाह तआला की तरफ़ से उसके लिए एक दर्जा लिख दिया जाता है और उसका एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है। (मुस्लिम)

﴿ 24 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا يَزَالُ الْبَلَاءُ بِالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنَةِ فِىْ نَفْسِهٖ وَوَلَدِهٖ وَمَالِهٖ حَتّٰى يَلْقَى اللهَ وَمَا عَلَيْهِ خَطِيْئَةٌ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في الصبر على البلاء، رقم: ٢٣٩٩

24. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के बाज़ ईमान वाले बन्दे और ईमान वाली बन्दी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से मसाइब और हवादिस आते रहते हैं, कभी उसकी जान पर, कभी उसकी औलाद पर, कभी उसके माल पर (और उसके नतीजे में उसके गुनाह झड़ते रहते हैं) यहां तक कि वह मरने के बाद अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाक़ात करता है कि उसका एक गुनाह भी बाक़ी नहीं रहता। (तिर्मिज़ी)

﴿ 25 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا ابْتَلَى اللهُ عَزَّوَجَلَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ بِبَلَاءٍ فِىْ جَسَدِهٖ، قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لِلْمَلَكِ: اكْتُبْ لَهُ صَالِحَ عَمَلِهِ الَّذِىْ كَانَ يَعْمَلُهُ، فَاِنْ شَفَاهُ، غَسَلَهُ وَطَهَّرَهُ ، وَاِنْ قَبَضَهُ غَفَرَلَهُ وَرَحِمَهُ.

رواه ابويعلى واحمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣٣/٣

25. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को जिस्मानी बीमारी में मुब्तला करते हैं

तो अल्लाह तआला फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं कि इस बन्दे के वही सब नेक आमाल लिखते रहो जो यह (तंदुरुस्ती के ज़माने) में किया करता था। फिर अगर उसको शिफ़ा देते हैं तो उसे (गुनाहों से) धो कर पाक-साफ़ फ़रमा देते हैं और अगर उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं तो उसकी मग्फ़िरत फ़रमाते हैं और उस पर रहम फ़रमाते हैं।

(अबू याला, मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 26 ﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰهَ يَقُوْلُ: اِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدًا مِنْ عِبَادِيْ مُؤْمِنًا، فَحَمِدَنِيْ عَلٰى مَا ابْتَلَيْتُهُ فَاجْرُوا لَهُ كَمَا كُنْتُمْ تُجْرُوْنَ لَهُ وَ هُوَ صَحِيْحٌ۔

رواه احمد والطبرانی فی الکبیر والاوسط کلهم من روایة اسماعیل بن عیاش عن راشد الصنعانی وهو ضعیف فی غیر الشامیین وفی الحاشیة: راشدبن داؤد شامی فروایة اسماعیل عنه صحیحة، مجمع الزوائد ۳۳/۳

26. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद नक़्ल करते हैं : मैं अपने बन्दों में से किसी मोमिन बन्दे को (किसी मुसीबत, परेशानी, बीमारी वग़ैरह में) मुब्तला करता हूं और वह मेरी तरफ़ से इस भेजी हुई परेशानी पर (राज़ी रहते हुए) मेरी हम्द व सना करता है तो (मैं फ़रिश्तों को हुक्म देता हूं कि) उसके उन तमाम नेक आमाल का सवाब वैसे ही लिखते रहो जैसा कि तुम उसकी तन्दुरुस्ती की हालत में लिखा करते थे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَزَالُ الْمَلِيْلَةُ وَ الصُّدَاعُ بِالْعَبْدِ وَالْاَمَةِ وَاِنْ عَلَيْهِمَا مِنَ الْخَطَايَا مِثْلَ اُحُدٍ، فَمَا يَدَعُهُمَا وَعَلَيْهِمَا مِثْقَالُ خَرْدَلَةٍ۔

رواه ابویعلی ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ۲۹/۳

27. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसलमान बन्दे और बन्दी पर मुसलसल रहने वाला अन्दरूनी बुख़ार या सर का दर्द उनके गुनाहों में से राई के दाने के बराबर भी किसी गुनाह को नहीं छोड़ते, अगरचे उनके गुनाह उहुद पहाड़ के बराबर हों। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: صُدَاعُ الْمُؤْمِنِ وَشَوْكَةٌ يُشَاكُهَا اَوْشَيْءٌ يُؤْذِيْهِ يَرْفَعُهُ اللّٰهُ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ دَرَجَةً، وَيُكَفِّرُ عَنْهُ بِهَا ذُنُوْبَهُ۔

رواه ابن ابی الدنیا ورواته ثقات، الترغیب ۲۹۷/٤

28. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : मोमिन के सर का दर्द और वह कांटा जो उसे चुभता है या और कोई चीज़ जो उसे तकलीफ़ देती है अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी वजह से उस मोमिन का एक दर्जा बुलन्द फ़रमाएंगे और उस तकलीफ़ के बाइस उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमाएंगे। (इब्ने अबिदुन्या, तर्ग़ीब)

﴿ 29 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ تَضَرَّعَ مِنْ مَرَضٍ اِلَّا بَعَثَهُ اللهُ مِنْهُ طَاهِرًا۔ رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ۳۱/۳

29. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा बीमारी की वजह से (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह होकर) गिड़गिड़ाता है, तो अल्लाह तआ़ला उसको बीमारी से इस हाल में शिफ़ा अ़ता फ़रमाएंगे कि वह गुनाहों से बिल्कुल पाक-साफ़ होगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 30 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ مُرْسَلًا مَرْفُوْعًا قَالَ: اِنَّ اللهَ لَيُكَفِّرُ عَنِ الْمُؤْمِنِ خَطَايَاهُ كُلَّهَا بِحُمّٰى لَيْلَةٍ۔ رواه ابن ابي الدنيا وقال ابن المبارك عقب رواية له انه من جيد الحديث ثم قال وشواهده كثيرة يؤكد بعضها بعضا، اتحاف ۵۲۶/۹

30. हज़रत हसन रह० नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला एक रात के बुख़ार से मोमिन के सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं। (इब्न अबिदुन्या, इत्तहाफ़)

﴿ 31 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَالَ اللهُ تَعَالٰى: اِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدِيَ الْمُؤْمِنَ وَلَمْ يَشْكُنِيْ اِلٰى عُوَّادِهٖ اَطْلَقْتُهُ مِنْ اَسَارِيْ، ثُمَّ اَبْدَلْتُهُ لَحْمًا خَيْرًا مِنْ لَحْمِهٖ، وَدَمًا خَيْرًا مِنْ دَمِهٖ، ثُمَّ يَسْتَاْنِفُ الْعَمَلَ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ۳۴۹/۱

31. हज़रत अबूहुरैरह ﷛ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे कुदसी में अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नक़्ल फ़रमाते है : जब मैं अपने मोमिन बन्दे को (किसी बीमारी में) मुब्तिला करता हुँ, फिर वह अपनी इयादत करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता तो मैं उसे अपनी क़ैद से आज़ाद कर देता हँ यानी उस के गुनाह माफ़ कर देता हुँ। फिर उसे उसके गोश्त से बेहतर गोश्त देता हँ और उसके ख़ून से बेहतर ख़ून देता हुँ यानी उस को तन्दुरूस्ती दे देता हँ फिर अब वह दुबारा (बिमारी से उठने के बाद) नए सिरे से अ़मल करना शुरू करता हँ (क्योंकि पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो चुके होते हैं)। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 32 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ وُعِكَ لَيْلَةً فَصَبَرَ وَرَضِيَ بِهَا عَنِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهٖ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ.

رواه ابن ابی الدنیا فی کتاب الرضا وغیره، الترغیب ٤/٢٩٩

32. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ से रिवायत है किं नबी-ए- करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को एक रात बुख़ार आए और वह सब्र करे और उस बुख़ार के बावजूद अल्लाह तआला से राज़ी रहे, तो वह अपने गुनहों से इस तरह पाक साफ़ हो जाएगा जैसा कि उस दिन था, जिस दिन उस की माँ ने उस को जना था। (इब्न अबिद्दुनिया, तर्ग़ीब)

﴿ 33 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ رَفَعَهُ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: مَنْ اَذْهَبْتُ حَبِيْبَتَيْهِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ لَمْ اَرْضَ لَهٗ ثَوَابًا دُوْنَ الْجَنَّةِ.

رواه الترمذی وقال: هذاحدیث حسن صحیح،باب ماجاء فی ذهاب البصر، رقم: ٢٤٠١

33. हज़रत अबूहुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़्ल फ़रमाते हैं : जिस बन्दे की मैं दो महबूब तरीन चीजें यानी आँखें ले लूँ और वह सब्र करे और अज्र व सवाब की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिए जन्नत से कम बदला पर राजी नहीं हूँगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 34 ﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ اَوْ سَافَرَ كُتِبَ لَهٗ مِثْلُ مَاكَانَ يَعْمَلُ مُقِيْمًا صَحِيْحًا.

رواه البخاری،باب یکتب للمسافر ...، رقم: ٢٩٩٦

34. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा बीमार पड़ जाता है या सफ़र पर जाता है तो उसके लिए उस जैसे आमाल का अज्र व सवाब लिखा जाता है, जो आमाल वह तंदुरुस्ती या घर पर क़ियाम की हालत पर किया करता था। (बुख़ारी)

﴿ 35 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: التَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ، مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن، باب ماجاء فی التجار ...، رقم: ١٢٠٩

35. हज़रत अबू सईद ﷺ रिवायत कहते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : पूरी सच्चाई और अमानतदारी के साथ कारोबार करने वाला ताजिर अम्बिया, सिद्दीक़ीन

और शुहदा के साथ होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ رِفَاعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: إِنَّ التُّجَّارَ يُبْعَثُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا، إِلَّا مَنِ اتَّقَى اللهَ وَبَرَّ وَصَدَقَ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في التجار......، رقم ١٢١٠

36. हज़रत रिफ़ाअः ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताजिर लोग क़ियामत के दिन गुनाहगार उठाए जाएंगे, सिवाए उन ताजिरों के जिन्होंने अपनी तिजारत में परहेज़गारी अख़्तियार की, यानी ख़ियानत और फ़रेबदही वग़ैरह में मुब्तला नहीं हुए और नेकी की यानी अपने तिजारती मामलों में लोगों के साथ अच्छा सुलूक किया और सच पर क़ायम रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنْ أُمِّ عُمَارَةَ ابْنَةِ كَعْبٍ الْأَنْصَارِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَقَدَّمَتْ إِلَيْهِ طَعَامًا، فَقَالَ: كُلِي، فَقَالَتْ: إِنِّي صَائِمَةٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الصَّائِمَ تُصَلِّيْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ إِذَا أُكِلَ عِنْدَهُ حَتَّى يَفْرُغُوْا، وَرُبَّمَا قَالَ: حَتَّى يَشْبَعُوْا۔

رواه الترمذي وقال: هذاحديث حسن صحيح، باب ماجاء في فضل الصائم اذا اكل عنده، رقم: ٧٨٥

37. हज़रत काब ﷺ की साहबज़ादी उम्मे उमारा अन्सारिया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ उनके यहां तशरीफ़ लाए। उन्होंने आपकी ख़िदमत में खाना पेश किया। आप ﷺ ने उनसे फ़रमाया : तुम भी खाओ। उन्होंने अ़र्ज़ किया : मेरा रोज़ा है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है तो खाने वालों के फ़ारिग़ होने तक फ़रिश्ते उस रोज़ेदार के लिए रहमत की दुआ़ करते रहते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ شَجَرَةً كَانَتْ تُؤْذِي الْمُسْلِمِيْنَ، فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَطَعَهَا، فَدَخَلَ الْجَنَّةَ۔

رواه مسلم، باب فضل ازالة الاذى عن الطريق، رقم: ٦٦٧٢

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दरख़्त मुसलमानों को तकलीफ़ देता था। एक शख़्स ने आकर उसे काट दिया, तो (इस अ़मल की वजह से) जन्नत में दाख़िल हो गया। (मुस्लिम)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهُ: اُنْظُرْ فَاِنَّكَ لَسْتَ بِخَيْرٍ مِنْ اَحْمَرَ وَلَا اَسْوَدَ اِلَّا اَنْ تَفْضُلَهُ بِتَقْوَى. رواه احمد ١٥٨/٥

36. हज़रत अबूज़र ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : देखो! तुम अपनी ज़ात से न किसी गोरे से बेहतर हो, न किसी काले से, अलबत्ता तुम तक़्वा की वजह से अफ़ज़ल हो सकते हो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اُمَّتِي مَنْ لَوْ جَاءَ اَحَدُكُمْ يَسْاَلُهُ دِيْنَارًا لَمْ يُعْطِهِ، وَلَوْ سَاَلَهُ دِرْهَمًا لَمْ يُعْطِهِ، وَلَوْ سَاَلَهُ فِلْسًا لَمْ يُعْطِهِ، وَلَوْ سَاَلَ اللّٰهَ الْجَنَّةَ اَعْطَاهُ اِيَّاهَا، ذِيْ طِمْرَيْنِ لَا يُؤْبَهُ لَهُ لَوْ اَقْسَمَ عَلَى اللّٰهِ لَاَبَرَّهُ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجال الصحيح، مجمع الزوائد ٤٦٦/١٠

40. हज़रत सौबान ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे हैं कि उनमें से कोई शख़्स तुममें से किसी के पास आए और दीनार मांगे तो वह उसको न दे, अगर एक दिरहम मांगे तो वह भी न दे और अगर एक पैसा मांगे तो वह उसको एक पैसा तक न दे (लेकिन अल्लाह तआ़ला के यहां उसका यह मक़ाम है कि) अगर वह अल्लाह तआ़ला से जन्नत मांग ले तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत दे दें। (उस शख़्स के बदन पर सिर्फ़) दो पुरानी चादरें हों, उसकी बिल्कुल परवाह न की जाती हो (लेकिन) अगर वह अल्लाह तआ़ला (के भरोसे) पर क़सम खा बैठे तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसकी क़सम को पूरा कर दें।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

हुस्नो अख़्लाक़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الحجر: ٨٨]

अल्लाह तआला का अपने रसूल ﷺ से ख़िताब है : और मुसलमानों पर शफ़क़त रखिए। (हजर : 88)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ لا اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ [آل عمران ١٣٣-١٣٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई ऐसी है जैसे आसमानों का और ज़मीनों का फैलाव, जो अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए तैयार की गई है (यानी उन आला दर्जे के मुसलमानों के लिए हैं) जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती दोनों हालतों में नेक कामों में ख़र्च करते रहते हैं और गुस्सा को ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों को माफ़ करने वाले हैं और अल्लाह तआला ऐसे नेक लोगों को पसन्द करते हैं। (आले इमरान : 133)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا﴾

[الفرقان: ٦٣]

एक जगह इर्शाद है : और रहमान के (ख़ास) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ चलते हैं। (फ़ुरक़ान : 63)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ﴾ [الشورى: ٤٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (और बराबर का बदला लेने के लिए हमने इजाज़त दे रखी है कि) बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है (लेकिन इसके बावजूद) जो शख़्स दरगुज़र करे और (बाहमी मामले की) इस्लाह कर ले (जिससे दुश्मनी ख़त्म हो जाए और दोस्ती हो जाए कि यह माफ़ी से भी बढ़ कर है) तो उसका सवाब अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है (और जो बदला लेने में ज़्यादती करने लगे, तो सुन ले कि) वाक़ई अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करते। (शूरा : 40)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ﴾ [الشورى: ٣٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जब गुस्सा होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (शूरा : 37)

وَقَالَ تَعَالٰى حِكَايَةً عَنْ قَوْلِ لُقْمٰنَ: ﴿وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ وَاقْصِدْ فِىْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ﴾ [لقمٰن: ١٨-١٩]

हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत की : और (बेटा!) लोगों से बेरुख़ी का बरताव न किया करो और ज़मीन पर मुतकब्बिराना चाल से न चला करो। बेशक अल्लाह तआ़ला किसी तकब्बुर करने वाले, शेख़ी मारने वाले को पसन्द नहीं करते और अपनी चाल में एतदाल अख़्तियार करो और (बोलने में) अपनी आवाज़ को पस्त करो, यानी शोर मत मचाओ (अगर ऊंची आवाज़ से बोलना ही कोई कमाल होता तो गधे की आवाज़ अच्छी होती, जबकि) आवाज़ों में सबसे बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है। (लुक़मान : 16-19)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 41 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ الْمُؤْمِنَ لَيُدْرِكُ بِحُسْنِ خُلُقِهِ دَرَجَةَ الصَّائِمِ الْقَائِمِ. رواه ابو داؤد، باب فى حسن الخلق، رقم: ٤٧٩٨

41. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मोमिन अच्छे अख़्लाक़ की वजह से रोज़ा रखने वाले और रात भर इबादत करने वाले के दर्जे को हासिल कर लेता है। (अबूदाऊद)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَائِكُمْ. رواه احمد ٢/٤٧٢

42. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वालों में कामिलतरीन मोमिन वह है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों और तुम में से वे लोग सबसे बेहतर हैं जो अपनी बीवियों के साथ (बरताव में) सबसे अच्छे हों। (मुस्नद अहमद)

﴿ 43 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اَكْمَلِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَاَلْطَفُهُمْ بِاَهْلِهِ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب فى استكمال الايمان......، رقم: ٢٦١٢

43. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कामिलतरीन ईमान वालों में से वह शख़्स है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों और जिसका बरताव अपने घर वालों के साथ सबसे ज़्यादा नर्म हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 44 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: عَجِبْتُ لِمَنْ يَشْتَرِى الْمَمَالِيْكَ بِمَالِهِ، ثُمَّ يُعْتِقُهُمْ كَيْفَ لَا يَشْتَرِى الْاَحْرَارَ بِمَعْرُوْفِهِ؟ فَهُوَ اَعْظَمُ ثَوَابًا.

رواه ابو الغنائم النرسى فى قضاء الحوائج وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/١٤٩

44. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो अपने माल से तो गुलामों को ख़रीदता

है, फिर उनको आज़ाद करता है। वह भलाई का मामला करके आज़ाद आदमियों को क्यों नहीं खरीदता, जबकि उसका सवाब बहुत ज़्यादा है? यानी जब वह लोगों के साथ हुस्ने सुलूक करेगा तो लोग उसके ग़ुलाम बन जाएंगे।

(क़ज़ाउलहवाइज, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 45 ﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَنَا زَعِيْمٌ بِبَيْتٍ فِىْ رَبَضِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْمِرَاءَ وَاِنْ كَانَ مُحِقًّا، وَبِبَيْتٍ فِىْ وَسَطِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْكَذِبَ وَاِنْ كَانَ مَازِحًا، وَبِبَيْتٍ فِىْ اَعْلَى الْجَنَّةِ لِمَنْ حَسَّنَ خُلُقَهُ.

رواه ابوداؤد، باب فی حسن الخلق، رقم: ٤٨٠٠

45. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस शख़्स के लिए जन्नत के अतराफ़ में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं जो हक़ पर होने के बावजूद भी झगड़ा छोड़ दे और उस शख़्स के लिए जन्नत के दर्मियान में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं, जो मज़ाक़ में भी झूठ छोड़ दे और उस शख़्स के लिए जन्नत के बुलन्द तरीन दर्जा में एक घर (दिलाने) की ज़िम्मेदारी लेता हूं जो अपने अख़्लाक़ अच्छे बना ले। (अबूदाऊद)

﴿ 46 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ لَقِىَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ بِمَا يُحِبُّ اللّٰهُ لِيَسُرَّهُ بِذٰلِكَ سَرَّهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبرانی فی الصغیر واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣٥٣/٨

46. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को ख़ुश करने के लिए इस तरह मिलता है जिस तरह अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाते हैं (मसलन ख़न्दापेशानी के साथ) तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे ख़ुश कर देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 47 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ الْمُسْلِمَ الْمُسَدِّدَ لَيُدْرِكُ دَرَجَةَ الصَّوَّامِ الْقَوَّامِ بِآيَاتِ اللّٰهِ بِحُسْنِ خُلُقِهِ وَكَرَمِ ضَرِيْبَتِهِ.

رواه احمد ١٧٧/٢

47. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : वह मुसलमान जो शरीअ़त पर अ़मल करने

वाला हो, अपनी तबीयत की शराफ़त और अपने अच्छे अख़्लाक़ की वजह से उस शख़्स के दर्जे को पा लेता है जो रात को बहुत ज़्यादा क़ुरआन करीम को नमाज़ में पढ़ने वाला और बहुत रोज़े रखने वाला हो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 48 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ شَيْءٍ اَثْقَلُ فِي الْمِيْزَانِ مِنْ حُسْنِ الْخُلُقِ۔ رواه ابوداؤد، باب في حسن الخلق، رقم: ٤٧٩٩

48. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) मोमिन के तराज़ू में अच्छे अख़्लाक़ से ज़्यादा भारी कोई चीज़ नहीं होगी। (अबूदाऊद)

﴿ 49 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ مَا اَوْصَانِيْ بِهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حِيْنَ وَضَعْتُ رِجْلِيْ فِي الْغَرْزِ اَنْ قَالَ لِيْ: اَحْسِنْ خُلُقَكَ لِلنَّاسِ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ۔

رواه الامام مالك في الموطا، ماجاء في حسن الخلق ص ٧٠٤

49. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि आख़िरी नसीहत जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाई, जिस वक़्त मैंने अपना पांव रकाब में रख लिया था वह यह थी : मुआज़! अपने अख़्लाक़ को लोगों के लिए अच्छा बनाओ। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿ 50 ﴾ عَنْ مَالِكٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ بَلَغَهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ حُسْنَ الْاَخْلَاقِ۔ رواه الامام مالك في الموطا، ماجاء في حسن الخلق ص ٧٠٥

50. हज़रत मालिक रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मुझे यह हदीस पहुंची है कि आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अच्छे अख़्लाक़ को मुकम्मल करने के लिए भेजा गया हूं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

﴿ 51 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ مِنْ اَحَبِّكُمْ اِلَيَّ وَاَقْرَبِكُمْ مِنِّيْ مَجْلِسًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَحَاسِنَكُمْ اَخْلَاقًا (الحديث) رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في معالي الاخلاق، رقم: ٢٠١٨

51. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम सबमें मुझे ज़्यादा महबूब और क़ियामत के दिन मेरे सबसे क़रीब वे लोग होंगे जिनके अख़्लाक़ ज़्यादा अच्छे होंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 52 ﴾ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ عَنِ الْبِرِّ وَالْاِثْمِ؟ فَقَالَ: اَلْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ، وَالْاِثْمُ مَاحَاكَ فِيْ صَدْرِكَ، وَكَرِهْتَ اَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ۔

رواه مسلم، باب تفسير البرو الاثم، رقم: ٦٥١٦

52. हज़रत नव्वास बिन समआन अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी अच्छे अख़्लाक़ का नाम है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम्हें यह बात नापसन्द हो कि लोगों को उसकी ख़बर हो। (मुस्लिम)

﴿ 53 ﴾ عَنْ مَكْحُوْلٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُوْنَ هَيِّنُوْنَ لَيِّنُوْنَ كَالْجَمَلِ الْاَنِفِ اِنْ قِيْدَ انْقَادَ، وَاِنْ اُنِيْخَ عَلٰى صَخْرَةٍ اسْتَنَاخَ۔

رواه الترمذى مرسلا، مشكوة المصابيح، رقم: ٥٠٨٦

53. हज़रत मकहूल रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वाले लोग अल्लाह तआ़ला का बहुत हुक्म मानने वाले और निहायत नर्म तबीयत होते हैं जैसे ताबेदार ऊंट जिधर उसको चलाया जाता है, चला जाता है और उसको किसी चट्टान पर बिठा दिया जाता है तो उसी पर बैठ जाता है। (तिर्मिज़ी, मिश्कातलमसाबीह)

फ़ायदा : मतलब यह है कि चट्टान पर बैठना बहुत मुश्किल है मगर उसके बावजूद भी वह अपने मालिक की बात मान कर उस पर बैठ जाता है। (मजमअ़ बहारिअन्वार)

﴿ 54 ﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِمَنْ يَحْرُمُ عَلَى النَّارِ، وَبِمَنْ تَحْرُمُ عَلَيْهِ النَّارُ؟ عَلٰى كُلِّ قَرِيْبٍ هَيِّنٍ سَهْلٍ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب فضل كل قريب هين سهل، رقم: ٢٤٨٨

54. हज़रत अ़ब्दुलाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें न बताऊं कि वह शख़्स कौन है जो आग पर हराम होगा और जिस पर आग हराम होगी? (सुनो मैं बताता हूं) दोज़ख़ की आग हराम है हर ऐसे शख़्स पर जो लोगों के क़रीब होने वाला, निहायत नर्म मिज़ाज और नर्म तबीयत हो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : लोगों से क़रीब होने वाले से मुराद वह शख़्स है जो नर्मख़ूई की वजह से

लोगों से ख़ूब मिलता जुलता हो और लोग भी उसकी अच्छी ख़सलत की वजह से उससे बेतकल्लुफ़ और मुहब्बत से मिलते हों। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿ 55 ﴾ عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ اَخِيْ بَنِيْ مُجَاشِعٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ اَوْحٰى اِلَيَّ اَنْ تَوَاضَعُوْا حَتّٰى لَا يَفْخَرَ اَحَدٌ عَلٰى اَحَدٍ، وَلَا يَبْغِيَ اَحَدٌ عَلٰى اَحَدٍ۔ (و هو جزء من الحديث) ـ رواه مسلم، باب الصفات التى يعرف بها فى الدنيا......،رقم: ٧٢١٠

55. क़बीला बनी मुजाशिअ़ के हज़रत अ़याज़ बिन हिमार ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने मेरी तरफ़ इस बात की वह्य फ़रमाई है कि तुम लोग इस क़द्र तवाज़ो अख़्तियार करो, यहां तक कि कोई किसी पर फ़ख़्र न करे और कोई किसी पर ज़ुल्म न करे। (मुस्लिम)

﴿ 56 ﴾ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللهُ فَهُوَ فِيْ نَفْسِهٖ صَغِيْرٌ وَفِيْ اَعْيُنِ النَّاسِ عَظِيْمٌ وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللهُ فَهُوَ فِيْ اَعْيُنِ النَّاسِ صَغِيْرٌ وَفِيْ نَفْسِهٖ كَبِيْرٌ حَتّٰى لَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِمْ مِنْ كَلْبٍ اَوْ خِنْزِيْرٍ۔

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٦/٢٧٦

56. हज़रत उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो अल्लाह तआ़ला (की रज़ा हासिल करने) के लिए तवाज़ो को अख़्तियार करता है, अल्लाह तआ़ला उसको बुलन्द फ़रमाते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि वह अपने ख़्याल और अपनी निगाह में तो छोटा होता है लेकिन लोगों की निगाह में ऊंचा होता है और जो तकब्बुर करता है, अल्लाह तआ़ला उसको गिरा देते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि वह लोगों की निगाहों में छोटा होता है, अगरचे ख़ुद अपने ख़्याल में बड़ा होता है, लेकिन दूसरों की नज़रों में वह कुत्ते, ख़िन्ज़ीर से भी ज़्यादा ज़लील हो जाता है। (बैहक़ी)

﴿ 57 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ۔ رواه مسلم، باب تحريم الكبر وبيانه، رقم: ٢٦٧

57. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा, जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर हो। (मुस्लिम)

﴿ 58 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فی كراهية قيام الرَّجُلِ للرَّجُلِ،رقم: ٢٧٥٥

58. हज़रत मुआविया ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इस बात को पसन्द करता हो कि लोग उस (की ताज़ीम) के लिए खड़े रहें, वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस वईद का तअ़ल्लुक़ इस सूरत से है कि जब कोई आदमी ख़ुद यह चाहे कि लोग उसकी ताज़ीम के लिए खड़े हों, लेकिन अगर कोई ख़ुद बिल्कुल न चाहे, मगर दूसरे लोग इकराम और मुहब्बत के जज़्बे में उसके लिए खड़े हो जाएं, तो यह और बात है। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمْ يَكُنْ شَخْصٌ اَحَبَّ اِلَيْهِمْ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ: وَكَانُوْا اِذَا رَاَوْهُ لَمْ يَقُوْمُوْا لِمَا يَعْلَمُوْنَ مِنْ كَرَاهِيَّتِهٖ لِذٰلِكَ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ما جاء فی كراهية قيام الرجل للرجل، رقم: ٢٧٥٤

59. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि सहाबा के नज़दीक कोई शख़्स भी रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा महबूब नहीं था। उसके बावजूद रसूलुल्लाह ﷺ को देखकर खड़े नहीं होते थे, क्योंकि वे जानते थे कि आप ﷺ उसको नापसन्द फ़रमाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ رَجُلٍ يُصَابُ بِشَيْءٍ فِيْ جَسَدِهٖ فَيَتَصَدَّقُ بِهٖ اِلَّا رَفَعَهُ اللهُ بِهٖ دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْهُ بِهٖ خَطِيْئَةً۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب،باب ماجاء فی العفو رقم: ١٣٩٣

60. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स को भी (किसी की तरफ़ से) जिस्मानी तकलीफ़ पहुंचे, फिर वह उसको माफ़ कर दे, तो अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से एक दर्जा बुलन्द फ़रमा देते हैं और एक गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 61 ﴾ عَنْ جَوْدَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اعْتَذَرَ اِلٰى اَخِيْهِ بِمَعْذِرَةٍ، فَلَمْ يَقْبَلْهَا، كَانَ عَلَيْهِ مِثْلُ خَطِيْئَةِ صَاحِبِ مَكْسٍ۔

رواه ابن ماجه، باب المعاذير، رقم: ٣٧١٨

61. हज़रत जौदान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के सामने उ़ज़्र पेश करता है और वह उसके उज़्र को क़ुबूल नहीं करता, तो उसको ऐसा गुनाह होगा जैसा नाहक़ टैक्स वुसूल करने वाले का गुनाह होता है। (इब्ने माजा)

﴿ 62 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: قَالَ مُوْسَی بْنُ عِمْرَانَ عَلَیْهِ السَّلَامُ: یَا رَبِّ! مَنْ اَعَزُّ عِبَادِكَ عِنْدَكَ؟ قَالَ: مَنْ اِذَا قَدَرَ غَفَرَ۔

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٣١٩

62. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हज़रत मूसा बिन इमरान عليه السلام ने अल्लाह तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! आप के बन्दों में आपके नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन है? अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : वह बन्दा जो बदला ले सकता हो और फिर माफ़ कर दे। (बैहक़ी)

﴿ 63 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَمْ اَعْفُوْ عَنِ الْخَادِمِ؟ فَصَمَتَ عَنْهُ النَّبِیُّ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: یَارَسُوْلَ اللّٰهِ! كَمْ اَعْفُوْ عَنِ الْخَادِمِ؟ قَالَ: كُلَّ یَوْمٍ سَبْعِیْنَ مَرَّةً۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في العفو عن الخادم، رقم: ١٩٤٩

63. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि एक साहब नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं (अपने) ख़ादिम की ग़लती को कितनी मर्तबा माफ़ करूं? आप ﷺ ख़ामोश रहे। उन्होंने फिर वही अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं (अपने) ख़ादिम को कितनी मर्तबा माफ़ करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रोज़ाना सत्तर मर्तबा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 64 ﴾ عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ رَجُلًا كَانَ فِیْمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اَتَاهُ الْمَلَكُ لِیَقْبِضَ رُوْحَهُ فَقِیْلَ لَهُ: هَلْ عَمِلْتَ مِنْ خَیْرٍ؟ قَالَ: مَا اَعْلَمُ، قِیْلَ لَهُ: اُنْظُرْ، قَالَ: مَا اَعْلَمُ شَیْئًا غَیْرَ اَنِّیْ كُنْتُ اُبَایِعُ النَّاسَ فِی الدُّنْیَا وَاُجَازِیْهِمْ فَاُنْظِرُ الْمُوْسِرَ وَاَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ، فَاَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ۔

رواه البخاري، باب ماذكر عن بني اسرائيل، رقم: ٣٤٥١

64. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से पहले किसी उम्मत में एक आदमी था। जब मौत का फ़रिश्ता उसकी रूह क़ब्ज़ करने आया (और रूह क़ब्ज़ होने के बाद वह इस दुनिया से दूसरे आलम की तरफ़ मुन्तक़िल हो गया) तो उससे पूछा गया कि तूने दुनिया में कोई नेक अ़मल किया था? उसने अ़र्ज़ किया : मेरे इल्म में मेरा कोई (ऐसा) अ़मल नहीं है। उससे कहा गया कि (अपनी ज़िन्दगी पर) नज़र डाल (और ग़ौर कर!) उसने फिर अ़र्ज़ किया : मेरे इल्म में मेरा कोई (ऐसा) अ़मल नहीं है, सिवाए इसके कि मैं दुनिया में लोगों के साथ ख़रीद व फ़रोख़्त और लेन देन का मामला किया करता था, जिसमें मैं दौलतमंद को मुहलत देता था और तंगदस्तों को माफ़ कर देता था, तो अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया। (बुख़ारी)

﴿ 65 ﴾ عَنْ اَبِیْ قَتَادَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یُّنْجِیَہُ اللّٰہُ مِنْ کُرَبِ یَوْمِ الْقِیَامَةِ فَلْیُنَفِّسْ عَنْ مُعْسِرٍ اَوْ یَضَعْ عَنْہُ۔

رواہ مسلم، باب فضل انظار المعسر......، رقم: ٤٠٠٠

65. हज़रत अबू क़तादा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स यह चाहता है कि अल्लाह तआ़ला उसको क़ियामत के दिन की तकलीफ़ों से बचा लें, तो उसको चाहिए कि तंगदस्त को (जिस पर उसका क़र्ज़ वग़ैरह हो) मुहलत दे दे या (अपना पूरा मुतालबा या उसका कुछ हिस्सा) माफ़ कर दे। (मुस्लिम)

﴿ 66 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : خَدَمْتُ النَّبِیَّ ﷺ عَشْرَ سِنِیْنَ بِالْمَدِیْنَةِ وَاَنَا غُلَامٌ لَیْسَ کُلُّ اَمْرِیْ کَمَا یَشْتَھِیْ صَاحِبِیْ اَنْ یَکُوْنَ عَلَیْہِ، مَاقَالَ لِیْ فِیْھَا اُفٍّ قَطُّ، وَمَا قَالَ لِیْ لِمَ فَعَلْتَ ھٰذَا، اَمْ اَلَّا فَعَلْتَ ھٰذَا۔

رواہ ابوداؤد، باب فی الحلم واخلاق النبی ﷺ، رقم: ٤٧٧٤

66. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने मदीना में दस साल नबी करीम ﷺ की ख़िदमत की। मैं नौ उम्र लड़का था, इसलिए मेरे सारे काम रसूलुल्लाह ﷺ की मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं हो पाते थे, यानी नौउम्री की वजह से मुझ से बहुत-सी कोताहियां भी हो जाती थीं। (लेकिन दस साल की इस मुद्दत में) कभी आप ﷺ ने मुझे उफ़ तक नहीं फ़रमाया और न कभी यह फ़रमाया तुमने यह क्यों किया, या यह क्यों न किया। (अबूदाऊद)

﴿ 67 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِیِّ ﷺ: اَوْصِنِیْ، قَالَ: لَا تَغْضَبْ، فَرَدَّدَ مِرَارًا، قَالَ: لَاتَغْضَبْ۔ رواه البخاری،باب الحذرمن الغضب، رقم: ٦١١٦

67. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ से अ़र्ज़ किया कि मुझे कोई वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ुस्सा न किया करो। उस शख़्स ने अपनी (वही) दरख़्वास्त कई बार दुहराई। आप ﷺ ने हर मर्तबा यही फ़रमाया : ग़ुस्सा न किया करो। (बुख़ारी)

﴿ 68 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الشَّدِيْدُ بِالصُّرَعَةِ، اِنَّمَا الشَّدِيْدُ الَّذِیْ يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ۔ رواه البخاری، باب الحذر من الغضب، رقم: ٦١١٤

68. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ताक़तवर वह नहीं है जो (अपने मुक़ाबिल को) पछाड़ दे, बल्कि ताक़तवर वह है जो ग़ुस्से की हालत में अपने आप पर क़ाबू पा ले। (बुख़ारी)

﴿ 69 ﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ لَنَا: اِذَا غَضِبَ اَحَدُكُمْ وَهُوَ قَائِمٌ فَلْيَجْلِسْ، فَاِنْ ذَهَبَ عَنْهُ الْغَضَبُ وَاِلَّا فَلْيَضْطَجِعْ۔

رواه ابوداؤد،باب مايقال عند الغضب،رقم: ٤٧٨٢

69. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए और वह खड़ा हो तो उसको चाहिए कि बैठ जाए, अगर बैठने से ग़ुस्सा चला जाए (तो ठीक है), वरना उसको चाहिए कि लेट जाए। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जिस हालत की तब्दीली से ज़ेहन को सुकून मिले, उस हालत को अख़्तियार करना चाहिए, ताकि ग़ुस्से का नुक़सान कम-से-कम हो। बैठने की हालत में खड़े होने से कम और लेटने में बैठने से कम नुक़सान का इम्कान है। (मज़ाहिरुल हक़)

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: عَلِّمُوْا وَبَشِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا وَاِذَا غَضِبَ اَحَدُكُمْ فَلْيَسْكُتْ۔ رواه احمد ٢٣٩/١

70. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को (दीन) सिखाओ और ख़ुशख़बरियां सुनाओ और दुश्वारीयां पैदा न करो और

जब तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए तो उसे चाहिए कि ख़ामोशी अख़्तियार कर ले।
(मुस्नद अहमद)

﴿ 71 ﴾ عَنْ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْغَضَبَ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَإِنَّ الشَّيْطَانَ خُلِقَ مِنَ النَّارِ، وَإِنَّمَا تُطْفَأُ النَّارُ بِالْمَاءِ، فَإِذَا غَضِبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَوَضَّأْ۔

رواه ابو داؤد، باب مايقال عند الغضب، رقم: ٤٧٨٤

71. हज़रत अ़तीया ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ुस्सा शैतान (के असर से) होता है। शैतान की पैदाइश आग से हुई है और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को ग़ुस्सा आए तो उसको चाहिए कि वुज़ू कर ले। (अबूदाऊद)

﴿ 72 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا تَجَرَّعَ عَبْدٌ جُرْعَةً أَفْضَلَ عِنْدَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ مِنْ جُرْعَةِ غَيْظٍ يَكْظِمُهَا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ تَعَالٰى. رواه احمد ١٢٨/٢

72. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा (किसी चीज़ का) ऐसा कोई घूंट नहीं पीता जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ग़ुस्सा का घूंट पीने से बेहतर हो, जिसको वह महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए पी जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ قَادِرٌ عَلٰى أَنْ يُنَفِّذَهُ دَعَاهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلٰى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ حَتّٰى يُخَيِّرَهُ مِنْ أَيِّ الْحُوْرِ الْعِيْنِ شَاءَ۔

رواه ابو داؤد، باب من كظم غيظا، رقم: ٤٧٧٧

73. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ग़ुस्से को पी जाए, जबकि उसमें ग़ुस्सा के तक़ाज़ा को पूरा करने की ताक़त भी हो, (लेकिन उसके बावजूद जिस पर ग़ुस्सा है उसको कोई सज़ा न दे) अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसको सारी मख़्लूक़ के सामने बुलाएंगे और उसको अख़्तियार देंगे कि जन्नत की हूरों में से जिस हूर को चाहे अपने लिए पसन्द कर ले। (अबूदाऊद)

﴿ 74 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ خَزَنَ لِسَانَهُ سَتَرَ اللهُ عَوْرَتَهُ وَمَنْ كَفَّ غَضَبَهُ كَفَّ اللهُ عَنْهُ عَذَابَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنِ اعْتَذَرَ إِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ قَبِلَ عُذْرَهُ۔

رواه البيهقي في شعب الايمان ٣١٥/٦

74. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी ज़बान को रोके रखता है, अल्लाह तआ़ला उसके ऐबों को छुपाते हैं। जो शख़्स अपने गुस्से को रोकता है (और पी जाता है) अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उससे अपने अ़ज़ाब को रोकेंगे और जो शख़्स (अपने गुनाह पर नादिम होकर) अल्लाह तआ़ला से माज़रत करता है, यानी माफ़ी चाहता है, अल्लाह तआ़ला उसके उज़्र को क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। (बैहक़ी)

﴿ 75 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِلْاَشَجِّ. اَشَجِّ عَبْدِ الْقَيْسِ: اِنَّ فِيْكَ لَخَصْلَتَيْنِ يُحِبُّهُمَا اللهُ: الْحِلْمُ وَالْاَنَاةُ. (وهو جزء من الحديث)

رواه مسلم، باب الامر بالايمان بالله تعالىٰ......،رقم: ١١٧

75. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़बीला अ़ब्दे क़ैस के सरदार हज़रत अशज ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : तुममें दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो अल्लाह तआ़ला को महबूब हैं। एक हिल्म यानी नरमी और बरदाश्त, दूसरे जल्दबाज़ी से काम न करना। (मुस्लिम)

﴿ 76 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا عَائِشَةُ! اِنَّ اللهَ رَفِيْقٌ يُحِبُّ الرِّفْقَ، وَيُعْطِيْ عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِيْ عَلَى الْعُنْفِ، وَمَا لَا يُعْطِيْ عَلٰى مَا سِوَاهُ.

رواه مسلم، باب فضل الرفق،رقم: ٦٦٠١

76. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आ़इशा! अल्लाह तआ़ला (ख़ुद भी) नर्म व मेहरबान हैं (और बन्दों के लिए भी उनके आपस के मामलों में) नरमी और मेहरबानी करना उनको पसन्द है, नरमी पर अल्लाह तआ़ला जो कुछ (अज्र व सवाब और मक़ासिद में कामयाबी) अ़ता फ़रमाते हैं, वह सख़्ती पर अ़ता नहीं फ़रमाते और नरमी के अलावा किसी चीज़ पर भी अ़ता नहीं फ़रमाते। (मुस्लिम)

﴿ 77 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ يُحْرَمِ الرِّفْقَ، يُحْرَمِ الْخَيْرَ.

رواه مسلم، باب فضل الرفق، رقم: ٦٥٩٨

77. हज़रत जरीर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स नरमी (की सिफ़त) से महरूम रहा, वह (सारी) भलाई से महरूम रहा। (शर्हुस्सुन्नः)

﴾ 78 ﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اُعْطِيَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ اُعْطِيَ حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، وَمَنْ حُرِمَ حَظَّهُ مِنَ الرِّفْقِ حُرِمَ حَظَّهُ مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ۔

رواه البغوى فى شرح السنة ۱۳/۷٤

78. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को (अल्लाह तआला की तरफ़ से) नरमी में हिस्सा दिया गया, उसको दुनिया व आख़िरत की भलाइयों में से हिस्सा दिया गया और जो शख़्स नरमी के हिस्से से महरूम रहा, वह दुनिया व आख़िरत की भलाइयों से महरूम रहा। (शर्हुस्सुन्नः)

﴾ 79 ﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُرِيْدُ اللهُ بِاَهْلِ بَيْتٍ رِفْقًا اِلَّا نَفَعَهُمْ وَلَا يَحْرِمُهُمْ اِيَّاهُ اِلَّا ضَرَّهُمْ۔

رواه البيهقى فى شعب الايمان، مشكاة المصابيح، رقم: ۵۱۰۳

79. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला जिन घर वालों को नरमी की तौफ़ीक़ देते हैं उन्हें नरमी के ज़रिए नफ़ा पहुंचाते हैं और जिन घर वालों को नरमी से महरूम रखते हैं उन्हें उसके ज़रिए नुक़सान पहुंचाते हैं। (बैहक़ी, मिशकात)

﴾ 80 ﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ الْيَهُوْدَ اَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوْا: السَّامُ عَلَيْكُمْ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ: عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللهُ وَغَضِبَ اللهُ عَلَيْكُمْ، قَالَ: مَهْلًا يَا عَائِشَةُ! عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ، وَاِيَّاكِ وَالْعُنْفَ وَالْفُحْشَ، قَالَتْ: اَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوْا؟ قَالَ: اَوَلَمْ تَسْمَعِيْ مَا قُلْتُ؟ رَدَدْتُ عَلَيْهِمْ فَيُسْتَجَابُ لِيْ فِيْهِمْ، وَلَا يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِيَّ۔

رواه البخارى، باب لم يكن النبى ﷺ فاحشا ولا متفاحشا، رقم ۶۰۳۰

80. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि कुछ यहूदी नबी करीम ﷺ के पास आए और कहा, अस्सामुअलैकुम (जिसका मतलब यह है कि तुमको मौत आए), हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने जवाब में कहा : तुम ही को मौत आए और तुम पर अल्लाह की लानत और उसका ग़ुस्सा हो। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आइशा! ठहरो, नरमी अख़्तियार करो, सख़्ती और बदज़ुबानी से बचो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया : आपने नहीं सुना कि उन्होंने

क्या कहा? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुमने नहीं सुना कि मैंने उसके जवाब में क्या कहा? मैंने उनकी बात उन ही पर लौटा दी (कि तुम ही को आए) मेरी बद्दुआ उनके हक़ में क़ुबूल होगी और उनकी बद्दुआ मेरे बारे में क़ुबूल नहीं होगी। (बुख़ारी)

﴿ 81 ﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: رَحِمَ اللهُ رَجُلًا سَمْحًا اِذَا بَاعَ، وَاِذَا اشْتَرَى، وَاِذَا اقْتَضَى۔

رواه البخاری،باب السهولة والسماحة فی الشراء والبيع......، رقم: ٢٠٧٦

81. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की रहमत हो उस बन्दे पर जो बेचने, ख़रीदने और अपने हक़ का तक़ाज़ा करने और वुसूल करने में नरमी अख़्तियार करे। (बुख़ारी)

﴿ 82 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ الَّذِیْ يُخَالِطُ النَّاسَ، وَيَصْبِرُ عَلٰی اَذَاهُمْ، اَعْظَمُ اَجْرًا مِنَ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ لَا يُخَالِطُ النَّاسَ وَلَا يَصْبِرُ عَلٰی اَذَاهُمْ۔

رواه ابن ماجه، باب الصبر علی البلاء، رقم: ٤٠٣٢

82. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह मोमिन, जो लोगों से मिलता-जुलता हो और उनसे पहुंचने वाली तकलीफ़ों पर सब्र करता हो, वह उस मोमिन से अफ़ज़ल है, जो लोगों के साथ मेल-जोल न रखता हो और उनसे पहुंचने वाली तकलीफ़ों पर सब्र न करता हो। (इब्ने माजा)

﴿ 83 ﴾ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَجَبًا لِاَمْرِ الْمُؤْمِنِ اِنَّ اَمْرَهُ كُلَّهُ لَهُ خَيْرٌ، وَلَيْسَ ذٰلِكَ لِاَحَدٍ اِلَّا لِلْمُؤْمِنِ، اِنْ اَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ، وَاِنْ اَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ، فَكَانَ خَيْرًا لَهُ۔

رواه مسلم، باب المؤمن امره كله خير، رقم: ٧٥٠٠

83. हज़रत सुहैब ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन का मामला भी अजीब है, उसके हर मामला और हर हाल में उसके लिए ख़ैर ही ख़ैर है और यह बात सिर्फ़ मोमिन ही को हासिल है। अगर उसको कोई ख़ुशी पहुंचती है, उस पर वह अपने रब का शुक्र अदा करता है, तो यह शुक्र करना उसके लिए ख़ैर का सबब है, यानी उसमें अज्र है और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुंचती है,

उस पर वह सब्र करता है तो यह सब्र करना भी उसके लिए ख़ैर का सबब है, यानी उसमें भी अज्र है। (मुस्लिम)

﴿ 84 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِيْ فَاَحْسِنْ خُلُقِيْ. (رواه احمد ١/٤٠٣)

84. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ करते थे : 'या अल्लाह! आपने मेरे जिस्म की ज़ाहिरी बनावट अच्छी बनाई है, मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दीजिए।' (मुस्नद अहमद)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَقَالَ مُسْلِمًا اَقَالَهُ اللهُ عَثْرَتَهُ. رواه ابو داؤد، باب فى فضل الاقالة، رقم: ٣٤٦٠

85. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसलमान की बेची या ख़रीदी हुई चीज़ की वापसी पर राज़ी हो जाता है, अल्लाह तआ़ला उसकी लग्ज़िश को माफ़ फ़रमा देता है। (अबूदाऊद)

﴿ 86 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَقَالَ مُسْلِمًا عَثْرَتَهُ، اَقَالَهُ اللهُ عَثْرَتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١١/٤٠٥

86. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान की लग्ज़िश को माफ़ करे, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी लग्ज़िश को माफ़ फ़रमाएंगे। (इब्ने हब्बान)

मुसलमानों के हुक़ूक़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ﴾ [الحجرات: ١٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं।
(हुजुरात : 10)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ﴾ [الحجرات: ١١-١٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! न तो मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए शायद कि (जिन पर हँसा जाता है) वे उन (हंसने वालों) से (अल्लाह तआ़ला के नज़दीक) बेहतर हों और न औरतों को औरतों पर हँसना चाहिए, शायद कि (जिन पर हँसा जाता है) वे उन (हँसने वाली औरतों) से अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बेहतर हों और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखो (क्योंकि ये सब बातें गुनाह की हैं और) ईमान लाने के बाद (मुसलमानों पर) गुनाह का नाम लगना ही बुरा है और जो इन

हरकतों से बाज़ न आएंगे, तो वे ज़ुल्म करने वाले (और हुक़ूक़ुलइबाद को ज़ाया करने वाले) हैं (तो जो सज़ा ज़ालिमों को मिलेगी, वही उनको मिलेगी)। ईमान वालो! बहुत-सी बदगुमानियों से बचा करो, क्योंकि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं (और बाज़ जायज़ भी होते हैं जैसे अल्लाह तआ़ला के साथ अच्छा गुमान रखना, तो इसलिए तहक़ीक़ कर लो। हर मौक़ा और हर मामले में, बदगुमानी न करो) और (किसी के ऐब का) सुराग़ मत लगाया करो और एक दूसरे की ग़ीबत न किया करो, क्या तुममें कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, उसको तो तुम बुरा समझते हो और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो (और तौबा कर लो) बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े माफ़ करने वाले (और) मेहरबान हैं। ऐ लोगो! हम ने तुम (सब) को एक मर्द और एक औरत (यानी आदम व हव्वा) से पैदा किया (उसमें तो सब बराबर हैं और फिर जिस बात में फ़र्क़ रखा, वह यह कि) तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाए, (यह सिर्फ़ इसलिए) ताकि तुम्हें आपस में पहचान हो (जिसमें मुख़्तलिफ़ मसलहतें हैं, ये मुख़्तलिफ़ क़बाइल इसलिए नहीं कि एक दूसरे पर फ़ख़्र करो, क्योंकि) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तो तुम सबमें बड़ा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाले (और सबके हाल से) बाख़बर हैं। (हुजुरात : 11-13)

फ़ायदा : ग़ीबत को मरे हुए भाई के गोश्त को खाने की तरह फ़रमाया है। इसका मतलब यह है कि जैसे इंसान का गोश्त नोच-नोच कर खाने से उसको तकलीफ़ होती है, उसी तरह मुसलमान की ग़ीबत से उसको तकलीफ़ होती है, लेकिन जैसे मरे हुए इंसान को तकलीफ़ का असर नहीं होता है उसी तरह जिसकी ग़ीबत होती है उसको भी मालूम न होने तक तकलीफ़ नहीं होती।

وَقَالَ تَعَالٰى: يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ج اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا قف فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ج وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿

[النساء: ١٣٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ऐ ईमान वालो! इंसाफ़ पर क़ायम रहो और अल्लाह तआ़ला के लिए सच्ची गवाही दो, ख़्वाह (उसमें) तुम्हारा या तुम्हारे

बाप और रिश्तेदारों का नुक़सान ही हो और गवाही के वक़्त यह ख़्याल न करो (कि जिसके मुक़ाबले में हम गवाही दे रहे हैं) वह अमीर है (उसको नफ़ा पहुंचाना चाहिए) या वह ग़रीब है (उसका कैसे नुक़सान कर दें, तो तुम किसी की अमीरी-ग़रीबी को न देखो, क्योंकि) वह शख़्स अगर अमीर है तो भी और ग़रीब है तो भी दोनों के साथ अल्लाह तआ़ला को ज़्यादा ताल्लुक़ है (इतना ताल्लुक़ तुम को नहीं) लिहाज़ा तुम गवाही देने तक नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी न करना कि कहीं तुम हक़ और इंसाफ़ से हट जाओ और अगर तुम हेर फेर से गवाही दोगे या गवाही से बचना चाहोगे तो (याद रखना कि) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब आ़माल की पूरी ख़बर रखते हैं। (निसा : 135)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِأَحْسَنَ مِنْهَآ أَوْ رُدُّوْهَا ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا﴾ [النساء: ٨٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जब तुम को कोई सलाम करे तो तुम उससे बेहतर अल्फ़ाज़ में सलाम का जवाब दो या कम-अज़-कम जवाब में वही अल्फ़ाज़ कह दो जो पहले शख़्स ने कहे थे, बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का यानी हर अ़मल का हिसाब लेने वाले हैं। (निसा : 86)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَقَضٰى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۗ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَآ أَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ أُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا﴾ [بنى اسرائيل: ٢٣، ٢٤]

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आपके रब ने यह हुक्म दे दिया है कि उस माबूदे बरहक़ के सिवा किसी की इबादत न करो और तुम वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आओ, अगर उनमें से एक या दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उस वक़्त भी कभी उनको "हूं" मत कहना और न उनको झिड़कना और इन्तिहाई नर्मी और अदब के साथ उनसे बात करना और उनके सामने शफ़क़त से इंकिसारी के साथ झुके रहना और यूं दुआ़ करते रहना, ऐ मेरे रब! जिस तरह उन्होंने बचपने में मेरी परवरिश की है उसी तरह आप भी उन दोनों पर रहमत फ़रमाइए।

(बनी इस्राईल : 23-24)

नबी ﷺ की हदीसें

﴾ 87 ﴿ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لِلْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتَّةٌ بِالْمَعْرُوْفِ: يُسَلِّمُ عَلَيْهِ اِذَا لَقِيَهُ، وَيُجِيْبُهُ اِذَا دَعَاهُ، وَيُشَمِّتُهُ اِذَا عَطَسَ ، وَيَعُوْدُهُ اِذَا مَرِضَ، وَيَتْبَعُ جَنَازَتَهُ اِذَا مَاتَ، وَيُحِبُّ لَهُ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ ـ

رواه ابن ماجه،باب ماجاء فی عیادة المریض، رقم: ١٤٣٣

87. हज़रत अ़ली रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मसुलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हुक़ूक़ हैं : जब मुलाक़ात हो तो उसको सलाम करे, जब दावत दे तो उसकी दावत क़ुबूल करे, जब उसे छींक आए (और अल-हम्दु लिल्लाह) कहे तो उसके जवाब में यरहमुकल्लाह कहे, जब बीमार हो तो उसकी इयादत करे, जब इंतिक़ाल कर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाए और उसके लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है। (इब्ने माजा)

﴾ 88 ﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ، وَعِيَادَةُ الْمَرِيْضِ، وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ، وَاِجَابَةُ الدَّعْوَةِ، وَتَشْمِيْتُ الْعَاطِسِ ـ

رواه البخاری، باب الامر باتباع الجنائز، رقم: ١٢٤٠

88. हज़रत अबू हुरैरह رضی الله عنه से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं : सलाम का जवाब देना, बीमार की इयादत करना, जनाज़े के साथ जाना, दावत क़ुबूल करना और छींकने वाले के जवाब में 'यर्हमुकल्लाह' कहना। (बुख़ारी)

﴾ 89 ﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى تُؤْمِنُوْا، وَلَا تُؤْمِنُوْا حَتّٰى تَحَابُّوْا، اَوَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى شَيْءٍ اِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ اَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ ـ

رواه مسلم، باب بیان انه لا یدخل الجنة الا المؤمنون......،رقم: ١٩٤

89. हज़रत अबू हुरैरह رضی الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम जन्नत में नहीं जा सकते, जब तक मोमिन न हो जाओ (यानी तुम्हारी ज़िन्दगी ईमान वाली ज़िन्दगी न हो जाए) और तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें वह अ़मल न बता दूं जिसके

क़रने से तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत पैदा हो जाए? (वह यह है कि) सलाम को आपस में ख़ूब फैलाओ। (मुस्लिम)

﴿ 90 ﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَفْشُوا السَّلَامَ كَيْ تَعْلُوْا۔ رواه الطبرانی واسناده حسن، مجمع الزوائد٨/٦٥

90. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम को ख़ूब फैलाओ, ताकि तुम बुलन्द हो जाओ। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 91 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ يَعْنِي- ابْنَ مَسْعُوْدٍ- رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: السَّلَامُ اِسْمٌ مِنْ اَسْمَاءِ اللهِ تَعَالٰى وَضَعَهُ فِي الْاَرْضِ فَاَفْشُوْهُ بَيْنَكُمْ، فَاِنَّ الرَّجُلَ الْمُسْلِمَ اِذَا مَرَّ بِقَوْمٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ فَرَدُّوْا عَلَيْهِ، كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ فَضْلُ دَرَجَةٍ بِتَذْكِيْرِهِ اِيَّاهُمُ السَّلَامَ، فَاِنْ لَمْ يَرُدُّوْا عَلَيْهِ رَدَّ عَلَيْهِ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْهُمْ۔

رواه البزار والطبرانی واحداسنادی البزار جید قوی، الترغیب٣/٤٢٧

91. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है जिसको अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर उतारा है, लिहाज़ा उसको आपस में ख़ूब फैलाओ क्योंकि मुसलमान जब किसी क़ौम पर गुज़रता है और उनको सलाम करता है और वे उसको जवाब देते हैं, तो उनको सलाम याद दिलाने की वजह से सलाम करने वाले को उस क़ौम पर एक दर्जा फ़ज़ीलत हासिल होती है और अगर वह जवाब नहीं देते हैं तो फ़रिश्ते जो इंसानों से बेहतर हैं उसके सलाम का जवाब देते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 92 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اَشْرَاطِ السَّاعَةِ اَنْ يُسَلِّمَ الرَّجُلُ عَلَى الرَّجُلِ لَا يُسَلِّمُ عَلَيْهِ اِلَّا لِلْمَعْرِفَةِ۔ رواه احمد ١/٤٠٦

92. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत की निशानियों में से यह है कि एक शख़्स दूसरे शख़्स को सिर्फ़ जान-पहचान की बुनियाद पर सलाम करे (न कि मुसलमान होने की बुनियाद पर)।

﴿ 93 ﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ، فَرَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ ثُمَّ جَلَسَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَشْرٌ، ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ:

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ: عِشْرُوْنَ، ثُمَّ جَاءَ آخَرُ فَقَالَ: السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، فَرَدَّ عَلَيْهِ فَجَلَسَ، فَقَالَ: ثَلَاثُوْنَ۔

رواه ابوداؤد، باب كيف السلام، رقم: ٥١٩٥

93. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कि एक साहब नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने **अस्सलामु अ़लैकुम** कहा, आपने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह मज्लिस में बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस, यानी उनके लिए उनके सलाम की वजह से दस नेकियां लिखी गईं। फिर एक और साहब आए और उन्होंने **अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह** कहा, आप ﷺ ने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह साहब बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बीस यानी उनके लिए बीस नेकियां लिखी गईं। फिर एक तीसरे साहब आए और उन्होंने **अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु** कहा, आप ﷺ ने उनके सलाम का जवाब दिया, फिर वह मज्लिस में बैठ गए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीस यानी उनके लिए तीस नेकियां लिखी गईं। (अबूदाऊद)

﴿ 94 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاللهِ تَعَالٰى مَنْ بَدَاَهُمْ بِالسَّلَامِ۔

رواه ابوداؤد، باب فی فضل من بدا بالسلام، رقم: ٥١٩٧

94. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में अल्लाह तआला के क़ुर्ब का ज़्यादा मुस्तहिक़ वह है, जो सलाम करने में पहल करे। (अबूदाऊद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْبَادِي بِالسَّلَامِ بَرِيْءٌ مِنَ الْكِبْرِ۔

رواه البيهقي في شعب الايمان ٦/٤٣٣

95. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है। (बैहक़ी)

﴿ 96 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بُنَيَّ! اِذَا دَخَلْتَ عَلٰى اَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُوْنُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ماجاء في التسليم ......،رقم: ٢٦٩٨

96. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ प्यारे बेटे! जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो। यह तुम्हारे

लिए और तुम्हारे घर वालों के लिए बरकत का सबब होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 97 ﴾ عَنْ قَتَادَةَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا دَخَلْتُمْ بَيْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهِ وَإِذَا خَرَجْتُمْ فَاَوْدِعُوْا اَهْلَهُ السَّلَامَ۔

رواه عبد الرزاق فی مصنفه ١٠/٣٨٩

97. हज़रत क़तादा रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम किसी घर में दाख़िल हो तो उस घर वालों को सलाम करो और जब (घर से) जाने लगो, तो घर वालों से सलाम के साथ रुख़्सत हो।

(मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴿ 98 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا انْتَهٰى اَحَدُكُمْ إِلٰى مَجْلِسٍ فَلْيُسَلِّمْ، فَإِنْ بَدَا لَهُ اَنْ يَجْلِسَ فَلْيَجْلِسْ، ثُمَّ إِذَا قَامَ فَلْيُسَلِّمْ فَلَيْسَتِ الْاُوْلٰى بِاَحَقَّ مِنَ الْآخِرَةِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فی التسليم عند القيام......،رقم:٢٧٠٦

98. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई किसी मज्लिस में जाए तो सलाम करे, उसके बाद बैठना चाहे तो बैठ जाए। फिर जब मज्लिस से उठकर जाने लगे तो फिर सलाम करे क्योंकि पहला सलाम दूसरे सलाम से बढ़ा हुआ नहीं है, यानी जिस तरह मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना सुन्नत है ऐसे ही रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम करना सुन्नत है।

(तिर्मिज़ी)

﴿ 99 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُسَلِّمُ الصَّغِيْرُ عَلَى الْكَبِيْرِ، وَالْمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيْلُ عَلَى الْكَثِيْرِ۔

رواه البخاری، باب تسليم القليل على الكثير، رقم: ٦٢٣١

99. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : छोटा बड़े को सलाम करे, गुज़रने वाला बैठे हुए को सलाम करे और थोड़े आदमी ज़्यादा आदमी को सलाम करें। (बुख़ारी)

﴿100﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَرْفُوْعًا: يُجْزِئُ عَنِ الْجَمَاعَةِ إِذَا مَرُّوْا اَنْ يُسَلِّمَ اَحَدُهُمْ وَيُجْزِئُ عَنِ الْجُلُوْسِ اَنْ يَرُدَّ اَحَدُهُمْ۔

رواه البيهقی فی شعب الايمان ٦/٤٦٦

100. हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (रास्ते

से) गुज़रने वाली जमाअत में से अगर एक शख़्स सलाम कर ले, तो उन सब की तरफ़ से काफ़ी है और बैठे हुए लोगों में से एक जवाब दे दे तो सबकी तरफ़ से काफ़ी है। (बैहक़ी)

﴿101﴾ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْاَسْوَدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) فَيَجِيْءُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مِنَ اللَّيْلِ فَيُسَلِّمُ تَسْلِيْمًا لَايُوْقِظُ النَّائِمَ، وَيُسْمِعُ الْيَقْظَانَ۔

رواه الترمذی وقال: هذاحديث حسن صحيح، باب كيف السلام، رقم: ٢٧١٩

101. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को तशरीफ़ लाते तो इस तरह सलाम फ़रमाते कि सोने वाले न जागते और जागने वाले सुन लेते। (तिर्मिज़ी)

﴿102﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَعْجَزُ النَّاسِ مَنْ عَجِزَ فِي الدُّعَاءِ، وَاَبْخَلُ النَّاسِ مَنْ بَخِلَ فِي السَّلَامِ۔

رواه الطبرانی فی الاوسط، وقال لا يروی عن النبی ﷺ الابهذا الاسناد، ورجاله رجال الصحيح غير مسروق بن المرزبان وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٦١

102. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में सबसे ज़्यादा आजिज़ वह शख़्स है जो दुआ करने से आजिज़ हो यानी दुआ न करता हो। और लोगों में सबसे ज़्यादा बख़ील वह है जो सलाम में भी बुख़्ल करे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿103﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مِنْ تَمَامِ التَّحِيَّةِ الْاَخْذُ بِالْيَدِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فی المصافحة، رقم: ٢٧٣٠

103. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि सलाम की तकमील मुसाफ़ा है। (तिर्मिज़ी)

﴿104﴾ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ اِلَّا غُفِرَلَهُمَا قَبْلَ اَنْ يَفْتَرِقَا۔

رواه ابوداؤد، باب فی المصافحة، رقم: ٥٢١٢

104. हज़रत बरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़ा करते हैं तो जुदा होने से पहले दोनों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। (अबूदाऊद)

﴾105﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْمُؤْمِنَ اِذَا لَقِىَ الْمُؤْمِنَ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، وَاَخَذَ بِيَدِهٖ فَصَافَحَهُ، تَنَاثَرَتْ خَطَايَاهُمَا كَمَا يَتَنَاثَرُ وَرَقُ الشَّجَرِ۔

رواه الطبرانی فی الاوسط ويعقوب بن محمد بن طحلاء روى عنه غير واحد ولم يضعفه احد وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٧٥/٨

105. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन जब मोमिन से मिलता है, उसको सलाम करता है और उसका हाथ पकड़ कर मुसाफ़ा करता है तो दोनों के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾106﴿ عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْمُسْلِمَ اِذَا لَقِىَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ فَاَخَذَ بِيَدِهٖ تَحَاتَّتْ عَنْهُمَا ذُنُوْبُهُمَا كَمَا يَتَحَاتُّ الْوَرَقُ عَنِ الشَّجَرَةِ الْيَابِسَةِ فِيْ يَوْمِ رِيْحٍ عَاصِفٍ وَاِلَّا غُفِرَلَهُمَا وَلَوْ كَانَتْ ذُنُوْبُهُمَا مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ۔

رواه الطبرانی ورجاله رجال الصحيح غير سالم بن غيلان وهو ثقة، مجمع الزوائد ٧٧/٨

106. हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान जब अपने मसुलमान भाई से मिलता है उसका हाथ पकड़ता है यानी मुसाफ़ा करता है, तो दोनों के गुनाह ऐसे गिर जाते हैं, जैसे तेज़ हवा चलने के दिन सूखे दरख़्त से पत्ते गिरते हैं और उन दोनों के गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, अगरचे उनके गुनाह समुंदर के झाग के बराबर हों। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾107﴿ عَنْ رَجُلٍ مِنْ عَنَزَةَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ قَالَ لِاَبِيْ ذَرٍّ: هَلْ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَافِحُكُمْ اِذَا لَقِيْتُمُوْهُ؟ قَالَ: مَا لَقِيْتُهُ قَطُّ اِلَّا صَافَحَنِيْ وَبَعَثَ اِلَيَّ ذَاتَ يَوْمٍ وَلَمْ اَكُنْ فِيْ اَهْلِيْ، فَلَمَّا جِئْتُ اُخْبِرْتُ اَنَّهُ اَرْسَلَ اِلَيَّ، فَاَتَيْتُهُ وَهُوَ عَلٰى سَرِيْرِهٖ، فَالْتَزَمَنِيْ، فَكَانَتْ تِلْكَ اَجْوَدَ وَاَجْوَدَ۔ رواه ابو داؤد، باب فی المعانقة، رقم: ٥٢١٤

107. क़बीला अंज़ा के एक शख़्स से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत अबूज़र ﷺ से पूछा : क्या रसूलुल्लाह ﷺ मुलाक़ात के वक़्त आप लोगों से मुसाफ़ा भी किया करते थे? उन्होंने फ़रमाया : मैं जब भी रसूलुल्लाह ﷺ से मिला, आपने हमेशा मुझसे मुसाफ़ा फ़रमाया। एक दिन आपने मुझे घर से बुलवाया, मैं उस वक़्त अपने घर पर नहीं था। जब मैं घर आया और मुझे बताया गया कि आप ﷺ ने मुझे बुलवाया था, तो मैं आप ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप अपनी चारपाई पर

तशरीफ़ फ़रमा थे। आप ﷺ ने मुझे लिपटा लिया और आपका यह मुआनक़ा बहुत ख़ूब और बहुत ही ख़ूब था। (अबूदाऊद)

﴿108﴾ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ سَالَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَسْتَاْذِنُ عَلٰى اُمِّيْ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقَالَ الرَّجُلُ: اِنِّيْ مَعَهَا فِي الْبَيْتِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا، فَقَالَ الرَّجُلُ اِنِّيْ خَادِمُهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا، اَتُحِبُّ اَنْ تَرَاهَا عُرْيَانَةً؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَاسْتَاْذِنْ عَلَيْهَا.

رواه الامام مالك فى الموطا، باب فى الاستئذان ص ٧٢٥

108. हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : या रसूलुल्लाह! क्या मैं अपनी मां से उनकी रहने की जगह में दाख़िल होने की इजाज़त तलब करूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मैं मां के साथ ही घर में रहता हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इजाज़त लेकर ही जाओ। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : मैं ही उनका ख़ादिम हूं (इसलिए बार-बार जाना होता है) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इजाज़त लेकर ही जाओ। क्या तुम्हें अपनी मां को बरहना हालत में देखना पसन्द है? उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तो फिर इजाज़त लेकर ही जाओ।

(मुअत्ता, इमाम मालिक)

﴿109﴾ عَنْ هُزَيْلٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: جَاءَ سَعْدٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَوَقَفَ عَلٰى بَابِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْتَاْذِنُ فَقَامَ مُسْتَقْبِلَ الْبَابِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: هٰكَذَا عَنْكَ. اَوْ هٰكَذَا فَاِنَّمَا الْاِسْتِئْذَانُ مِنَ النَّظَرِ.

رواه ابو داؤد، باب فى الاستئذان، رقم: ٥١٧٤

109. हज़रत हुज़ैल रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि हज़रत साद رضي الله عنه आए और नबी करीम ﷺ के दरवाज़े पर (अन्दर जाने की) इजाज़त लेने के लिए रुके और दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़े हो गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : (दरवाज़े के सामने न खड़े हो, बल्कि) दाएं या बाएं तरफ़ खड़े हो (क्योंकि दरवाज़े के सामने खड़े होने से इस बात का इम्कान है कि कहीं नज़र अन्दर न पड़ जाए और) इजाज़त मांगना तो सिर्फ़ इसी वजह से है कि नज़र न पड़े। (अबूदाऊद)

﴿110﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اِذَا دَخَلَ الْبَصَرُ فَلَا اِذْنَ.

رواه ابو داؤد، باب فى الاستئذان، رقم: ٥١٧٣

110. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब निगाह घर में चली गई, तो फिर इजाज़त कोई चीज़ नहीं यानी इजाज़त का फिर कोई फ़ायदा नहीं। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ بِشْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا وَلٰكِنِ ائْتُوْهَا مِنْ جوانِبِهَا فَاسْتَاْذِنُوْا، فَاِنْ اُذِنَ لَكُمْ فادْخُلُوْا وَ اِلَّا فَارْجِعُوْا۔ قلت: له حديث رواه ابو داؤد غير هذا، رواه الطبراني من طرق ورجال هذا رجال الصحيح غير محمد بن عبد الرحمن بن عرق وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٨٧

111. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बिश्र ﷺ फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : (लोगों के) घरों (में दाख़िल होने की इजाज़त के लिए उन) के दरवाज़ों के सामने न खड़े हो (कि कहीं घर के अन्दर निगाह न पड़ जाए) बल्कि दरवाज़े के (दाएं-बाएं) किनारों पर खड़े होकर इजाज़त मांगो। अगर तुम्हें इजाज़त मिल जाए तो दाख़िल हो जाओ वरना वापस लौट जाओ। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿112﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُقِيْمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهٖ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيْهِ۔ رواه البخاري، باب لا يقيم الرجل الرجل ......، رقم: ٦٢٦٩

112. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी शख़्स को इस बात की इजाज़त नहीं कि किसी दूसरे को उसकी जगह से उठाकर ख़ुद उस जगह बैठ जाए। (बुख़ारी)

﴿113﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ مِنْ مَجْلِسِهٖ ثُمَّ رَجَعَ اِلَيْهِ، فَهُوَ اَحَقُّ بِهٖ۔ رواه مسلم، باب اذا قام من مجلسه ......، رقم: ٥٦٨٩

113. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी जगह से (किसी ज़रूरत से) उठा और वापस आ गया तो उस जगह (बैठने) का वही शख़्स ज़्यादा हक़दार है। (मुस्लिम)

﴿114﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يُجْلَسْ بَيْنَ رَجُلَيْنِ اِلَّا بِاِذْنِهِمَا۔ رواه ابو داؤد، باب في الرجل يجلس......، رقم: ٤٨٤٤

114. हज़रत उम्रू बिन शुऐब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दो आदमियों में उनकी इजाज़त के बग़ैर न बैठा जाए। (अबूदाऊद)

﴿115﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَعَنَ مَنْ جَلَسَ وَسْطَ الْحَلْقَةِ۔

رواه ابو داؤد، باب الجلوس وسط الحلقة، رقم: ٤٨٢٦

115. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हल्क़ा के बीच में बैठने वाले पर लानत फ़रमाई है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हल्क़ा के बीच में बैठने वाले से मुराद वह शख़्स है जो लोगों के कांधे फलांग कर हल्क़ा के दर्मियान में आकर बैठ जाए। दूसरा मतलब यह है कि कुछ लोग हल्क़ा बनाए बैठे हों और हर एक दूसरे के आमने सामने हो। एक आदमी आकर इस तरह हल्क़ा के दर्मियान में बैठ जाए कि बाज़ लोगों का एक दूसरे के आमने-सामने होना बाक़ी न रहे। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿116﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، قَالَهَا ثَلَاثًا قَالَ رَجُلٌ: وَمَا كَرَامَةُ الضَّيْفِ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: ثَلَاثَةُ اَيَّامٍ، فَمَا جَلَسَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَهُوَ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ۔ رواه احمد ٧٦/٣

116. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसको चाहिए कि अपने मेहमान का इकराम करे। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई। एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेहमान का इकराम क्या है? इर्शाद फ़रमाया : (मेहमान का इकराम) तीन दिन है। तीन दिन के बाद अगर मेहमान रहा तो मेज़बान का मेहमान को खिलाना उस पर एहसान है, यानी तीन दिन के बाद खाना न खिलाना बेमरव्वती में दाख़िल नहीं। (मुस्नद अहमद)

﴿117﴾ عَنِ الْمِقْدَامِ اَبِيْ كَرِيْمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيُّمَا رَجُلٍ اَضَافَ قَوْمًا فَاَصْبَحَ الضَّيْفُ مَحْرُوْمًا فَاِنَّ نَصْرَهُ حَقٌّ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ حَتّٰى يَاْخُذَ بِقِرٰى لَيْلَةٍ مِنْ زَرْعِهِ وَمَالِهِ۔

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في الضيافة، رقم: ٣٧٥١

117. हज़रत मिक़्दाम अबू करीमा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी क़ौम में (किसी के यहां) मेहमान हुआ और सुबह तक वह मेहमान (खाने से) महरूम रहा, यानी उसके मेज़बान ने रात में उसकी मेहमानदारी नहीं की, तो उसकी मदद करना हर मुसलमान के ज़िम्मा है, यहां तक कि यह

मेहमान अपने मेज़बान के माल और खेती से अपनी रात की मेहमानी की मिक़्दार वुसूल कर ले। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : यह इस सूरत में है जबकि मेहमान के पास खाने पीने का इंतज़ाम न हो और वह मजबूर हो और यह सूरत न हो तो मरव्वत और शराफ़त के दर्जे में मेहमाननवाज़ी मेहमान का हक़ है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿118﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: دَخَلَ عَلَيَّ جَابِرٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِي نَفَرٍ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَدَّمَ اِلَيْهِمْ خُبْزًا وَخَلًّا، فَقَالَ: كُلُوْا فَاِنِّي سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: نِعْمَ الْاِدَامُ الْخَلُّ، اِنَّهُ هَلَاكٌ بِالرَّجُلِ اَنْ يَدْخُلَ عَلَيْهِ النَّفَرُ مِنْ اِخْوَانِهِ فَيَحْتَقِرَ مَا فِيْ بَيْتِهِ اَنْ يُقَدِّمَهُ اِلَيْهِمْ، وَهَلَاكٌ بِالْقَوْمِ اَنْ يَحْتَقِرُوا مَا قُدِّمَ اِلَيْهِمْ.

رواه احمد والطبراني في الاوسط وابو يعلى الا انه قال: وَكَفٰى بِالْمَرْءِ شَرًّا اَنْ يَحْتَقِرَ مَا قُرِّبَ اِلَيْهِ وفي اسناد ابي يعلى ابو طالب القاص ولم اعرفه وبقية رجال ابي يعلى وثقوا، وفي الحاشية: ابوطالب القاص هو يحيٰ بن يعقوب بن مدرك ثقة، مجمع الزوائد ٣٢٨/٨

118. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत जाबिर ﷺ नबी करीम ﷺ के सहाबा की एक जमाअ़त के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए। हज़रत जाबिर ﷺ ने साथियों के सामने रोटी और सिरका पेश किया और फ़रमाया : इसे खा लो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सिरका बेहतरीन सालन है। आदमी के लिए हलाकत है कि उसके कुछ भाई उसके पास आएं तो जो चीज़ घर में हो उसे उनके सामने पेश करने को कम समझे और लोगों के लिए हलाकत है कि जो इन के सामने पेश किया जाए वह उसे हक़ीर और कम समझें। एक और रिवायत में है कि आदमी की बुराई के लिए यह काफ़ी है कि जो उसके सामने पेश किया जाए, वह उसको कम समझे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿119﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: اِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَاِذَا عَطَسَ اَحَدُكُمْ وَحَمِدَ اللهَ كَانَ حَقًّا عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ اَنْ يَقُوْلَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ، وَاَمَّا التَّثَاؤُبُ فَاِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَاِذَا تَثَاءَبَ اَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَاِنَّ اَحَدَكُمْ اِذَا تَثَاءَبَ ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ.

رواه البخاري، باب اذا تثاءب فليضع يده على فيه، رقم: ٦٢٢٦

119. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला छींक को पसन्द फ़रमाते हैं और जम्हाई को नापसन्द फ़रमाते हैं। जब तुम में से किसी को छींक आए और वह 'अल-हम्दु' कहे तो हर उस मुसलमान के लिए जो उसे सुने जवाब में 'यरहमुकल्लाह' कहना ज़रूरी है। और जम्हाई लेना शैतान की तरफ़ से होता है, लिहाज़ा जब तुममें से किसी को जम्हाई आए तो जितना हो सके उसको रोके, क्योंकि जब तुममें से कोई जम्हाई लेता है तो शैतान हँसता है। (बुख़ारी)

﴿120﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عَادَ مَرِیْضًا اَوْ زَارَ اَخًا لَهُ فِی اللّٰهِ نَادَاهُ مُنَادٍ اَنْ طِبْتَ وَطَابَ مَمْشَاكَ وَتَبَوَّأْتَ مِنَ الْجَنَّةِ مَنْزِلًا۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی زیارة الاخوان، رقم: ۲۰۰۸

120. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत के लिए या अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए जाता है, तो एक फ़रिश्ता पुकार कर कहता है तुम बरकत वाले हो, तुम्हारा चलना बाबरकत है और तुमने जन्नत में ठिकाना बना लिया। (तिर्मिज़ी)

﴿121﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ مَوْلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ عَادَ مَرِیْضًا لَمْ یَزَلْ فِیْ خُرْفَةِ الْجَنَّةِ قِیْلَ: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا خُرْفَةُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: جَنَاهَا۔

رواه مسلم، باب فضل عیادة المریض، رقم: ٦٥٥٤

121. रसूलुल्लाह ﷺ के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत करता है तो वह जन्नत के ख़ुरफ़ा में रहता है। दरयाफ़्त किया गया : या रसूलुल्लाह! जन्नत का ख़ुरफ़ा क्या है? इर्शाद फ़रमाया : जन्नत के तोड़े हुए फल। (मुस्लिम)

﴿122﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّاَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ وَعَادَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ مُحْتَسِبًا بُوْعِدَ مِنْ جَهَنَّمَ مَسِیْرَةَ سَبْعِیْنَ خَرِیْفًا قُلْتُ: یَا اَبَا حَمْزَةَ! وَمَا الْخَرِیْفُ؟ قَالَ: الْعَامُ۔ رواه ابوداؤد، باب فی فضل العیادة علی وضوء، رقم: ۳۰۹۷

122. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर अज्र व सवाब की उम्मीद रखते हुए अपने मुसलमान भाई की इयादत करता है उसको दोज़ख़ से सत्तर ख़रीफ़ दूर कर

दिया जाता है। हज़रत साबित बनानी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अनस ﷺ से पूछा : अबू हमज़ा! ख़रीफ़ किसे कहते हैं ? फ़रमाया : साल को कहते हैं यानी सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़द्र दोख़ज़ से दूर कर दिया जाता है। (अबूदाऊद)

﴿123﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَيُّمَا رَجُلٍ يَعُوْدُ مَرِيْضًا فَاِنَّمَا يَخُوْضُ فِي الرَّحْمَةِ، فَاِذَا قَعَدَ عِنْدَ الْمَرِيْضِ غَمَرَتْهُ الرَّحْمَةُ قَالَ: فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا لِلصَّحِيْحِ الَّذِىْ يَعُوْدُ الْمَرِيْضَ فَالْمَرِيْضُ مَا لَهُ؟ قَالَ: تُحَطُّ عَنْهُ ذُنُوْبُهُ. رواه احمد ۱۷٤/۳

123. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स बीमार की इयादत करता है वह रहमत में ग़ोता लगाता है और जब वह बीमार के पास बैठ जाता है तो रहमत उसको ढांप लेती है। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! यह फ़ज़ीलत तो उस तंदुरुस्त शख़्स के लिए आपने इर्शाद फ़रमाई है, जो बीमार की इयादत करता है, ख़ुद बीमार को क्या मिलता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿124﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ عَادَ مَرِيْضًا خَاضَ فِي الرَّحْمَةِ، فَاِذَا جَلَسَ عِنْدَهُ اسْتَنْقَعَ فِيْهَا. رواه احمد ٤٦٠/٣ وفى حديث عمرو بن حزم رضى الله عنه عند الطبرانى فى الكبير والاوسط: وَاِذَا قَامَ مِنْ عِنْدِهِ فَلاَ يَزَالُ يَخُوْضُ فِيْهَا حَتّٰى يَرْجِعَ مِنْ حَيْثُ خَرَجَ ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ۲۲/۳

124. हज़रत काब बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी बीमार की इयादत के लिए जाता है वह रहमत में ग़ोता लगाता है और (जब बीमारपुर्सी के लिए) उसके पास बैठता है तो रहमत में ठहर जाता है। (मुस्नद अहमद)

हज़रत उम्र बिन हज़्म ﷺ की रिवायत में है कि बीमार के पास से उठ जाने के बाद भी वह रहमत में ग़ोता लगाता रहता है, यहां तक कि जिस जगह से इयादत के लिए गया था वहां वापस लौट आए। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿125﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَعُوْدُ

مُسْلِمًا غُدْوَةً اِلَّا صَلّٰى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ اَلْفَ مَلَكٍ حَتّٰى يُمْسِيَ، وَاِنْ عَادَهُ عَشِيَّةً اِلَّا صَلّٰى عَلَيْهِ سَبْعُوْنَ اَلْفَ مَلَكٍ حَتّٰى يُصْبِحَ وَكَانَ لَهُ خَرِيْفٌ فِي الْجَنَّةِ.

رواه الترمذی وقال: هذاحدیث غریب حسن، باب ماجاء فی عیادة المریض، رقم: ۹٦۹

125. हज़रत अ़ली ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को इयादत करता है तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ़ करते रहते हैं और जो शाम को इयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ़ करते रहते हैं और उसे जन्नत में एक बाग़ मिल जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿126﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: اِذَا دَخَلْتَ عَلٰى مَرِيْضٍ فَمُرْهُ اَنْ يَدْعُوَلَكَ فَاِنَّ دُعَائَهُ كَدُعَاءِ الْمَلَائِكَةِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء فی عیادة المریض، رقم: ۱٤٤۱

126. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : जब तुम बीमार के पास जाओ तो उससे कहो कि वह तुम्हारे लिए दुआ़ करे, क्योंकि उसकी दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ की तरह (क़ुबूल होती) है। (इब्ने माजा)

﴿127﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، اِذْجَاءَهُ رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ، ثُمَّ اَدْبَرَ الْاَنْصَارِيُّ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا اَخَا الْاَنْصَارِ! كَيْفَ اَخِيْ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ؟ فَقَالَ: صَالِحٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَعُوْدُهُ مِنْكُمْ؟ فَقَامَ وَقُمْنَا مَعَهُ، وَنَحْنُ بِضْعَةَ عَشَرَ، مَا عَلَيْنَا نِعَالٌ وَلَا خِفَافٌ وَلَا قَلَانِسُ وَلَا قُمُصٌ نَمْشِيْ فِيْ تِلْكَ السِّبَاخِ حَتّٰى جِئْنَاهُ، فَاسْتَاْخَرَ قَوْمُهُ مِنْ حَوْلِهِ حَتّٰى دَنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَاَصْحَابُهُ الَّذِيْنَ مَعَهُ.

رواه مسلم، باب فی عیادة المرضی، رقم: ۲۱۳۸

127. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास बैठे हुए थे। एक अन्सारी सहाबी ने आकर आप ﷺ को सलाम किया, फिर वापस जाने लगे। आप ﷺ ने उनसे पूछा : अन्सारी भाई! मेरे भाई साद बिन उबादा की तबीयत कैसी है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : अच्छी है। आप ﷺ ने (साथ बैठे हुए सहाबा से) इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कौन उनकी इयादत करेगा? यह कहकर आप ﷺ खड़े हो गए, हम भी आपके साथ खड़े हो गए। हम दस से ज़ाइद अफ़राद थे। हमारे पास जूते थे न मोज़े, टोपियां थीं न कमीज़। हम उस पत्थरीली ज़मीन पर चलते

हुए हज़रत साद ﷺ के पास पहुंचे। (उस वक़्त) उनकी क़ौम के जो लोग उनके क़रीब थे, पीछे हट गए। रसूलुल्लाह ﷺ और आपके साथ जाने वाले सहाबा उनके क़रीब हो गए। (मुस्लिम)

﴿128﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: خَمْسٌ مَنْ عَمِلَھُنَّ فِیْ یَوْمٍ کَتَبَہُ اللّٰہُ مِنْ اَھْلِ الْجَنَّۃِ: مَنْ عَادَ مَرِیْضًا، وَشَھِدَ جَنَازَۃً، وَصَامَ یَوْمًا، وَرَاحَ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ وَاَعْتَقَ رَقَبَۃً۔ رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ قوی ۶/۷

128. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने पांच आमाल एक दिन में किए अल्लाह तआला उसे जन्नत वालों में लिख देते हैं। बीमार की इयादत की, जनाज़ा में शिरकत की, रोज़ा रखा, जुमे की नमाज़ के लिए गया और ग़ुलाम आज़ाद किया। (इब्ने हब्बान)

﴿129﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: مَنْ جَاھَدَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ عَادَ مَرِیْضًا کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ غَدَا اِلَی الْمَسْجِدِ اَوْرَاحَ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ دَخَلَ عَلٰی اِمَامٍ یُعَزِّرُہٗ کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ، وَمَنْ جَلَسَ فِیْ بَیْتِہٖ لَمْ یَغْتَبْ اِنْسَانًا کَانَ ضَامِنًا عَلَی اللّٰہِ۔ رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ حسن ۲/۹۵

129. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करता है, वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो बीमार की इयादत करता है वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो सुबह या शाम मस्जिद जाता है वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। जो किसी हाकिम के पास उसकी मदद के लिए जाता है, वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है और जो अपने घर में इस तरह रहता है कि किसी की ग़ीबत नहीं करता वह अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी में है। (इब्ने हब्बान)

﴿130﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ اَصْبَحَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ صَائِمًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنِ اتَّبَعَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ جَنَازَۃً؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنْ اَطْعَمَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ مِسْکِیْنًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا، قَالَ: فَمَنْ عَادَ مِنْکُمُ الْیَوْمَ مَرِیْضًا؟ قَالَ اَبُوْبَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: اَنَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَا اجْتَمَعْنَ فِیْ امْرِیءٍ اِلَّا دَخَلَ الْجَنَّۃَ۔

رواہ مسلم، باب من فضائل ابی بکر الصدیق رضی اللہ عنہ، رقم: ۶۱۸۲

130. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से किसने रोज़ा रखा? हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया : मैंने। फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से कौन जनाज़े के साथ गया? हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया : मैं। दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से मिस्कीन को किसने खाना खिलाया? हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया : मैंने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुममें से किसने बीमार की इयादत की? हज़रत अबू बक्र رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया : मैंने। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस आदमी में भी ये बातें जमा होंगी, वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा। (मुस्लिम)

﴿131﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهٗ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَعُوْدُ مَرِيْضًا لَمْ يَحْضُرْ اَجَلُهٗ فَيَقُوْلُ سَبْعَ مَرَّاتٍ: اَسْاَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَشْفِيَكَ اِلَّا عُوْفِيَ.

رواه الترمذي وقال هذا حديث حسن غريب، باب مايقول عند عيادة المريض، رقم: ٢٠٨٣

131. हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई मुसलमान बन्दा किसी मरीज़ की इयादत करे और सात मर्तबा यह दुआ़ पढ़े : **'अस् अलुल्लाहल अ़ज़ीमि रब्बल अ़र्शिल अज़ीम ऐंय्यशिफ़-य-क'** ''मैं अल्लाह तआ़ला से सवाल करता हूं जो बड़े हैं, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक हैं कि वह तुमको शिफ़ा दें'' तो उसको ज़रूर शिफ़ा होगी, अलबत्ता अगर उसकी मौत का वक़्त आ गया हो तो और बात है। (तिर्मिज़ी)

﴿132﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتّٰى يُصَلّٰى عَلَيْهَا فَلَهٗ قِيْرَاطٌ، وَمَنْ شَهِدَهَا حَتّٰى تُدْفَنَ فَلَهٗ قِيْرَاطَانِ، قِيْلَ: وَمَا الْقِيْرَاطَانِ؟ قَالَ: مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيْمَيْنِ. رواه مسلم، باب فضل الصلوة على الجنازة واتباعها، رقم: ٢١٨٩

وفي رواية له: اَصْغَرُهُمَا مِثْلُ اُحُدٍ رقم: ٢١٩٢

132. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स जनाज़ा में हाज़िर होता है और नमाज़े जनाज़ा के पढ़े जाने तक जनाज़े के साथ रहता है तो उसको एक क़ीरात सवाब मिलता है और जो शख़्स जनाज़े में हाज़िर होता है और दफ़न से फ़राग़त तक जनाज़े के साथ रहता है, तो उसको दो क़ीरात का सवाब मिलता है। रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : दो क़ीरात क्या है? इर्शाद फ़रमाया : (दो क़ीरात) दो बड़े पहाड़ों के बराबर हैं। एक और रिवायत में है कि दो पहाड़ों में से छोटा उहुद पहाड़ की तरह है। (मुस्लिम)

﴾133﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ مَيِّتٍ يُصَلِّيْ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ يَبْلُغُوْنَ مِائَةً، كُلُّهُمْ يَشْفَعُوْنَ لَهُ اِلَّا شُفِّعُوْا فِيْهِ۔

رواه مسلم، باب من صلى عليه مائة......،رقم: ٢١٩٨

133. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मैयत पर मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत नमाज़ पढ़े जिनकी तादाद सौ तक पहुंच जाए और वे सब अल्लाह तआला से मैयत के लिए सिफ़ारिश करें, यानी मग्फ़िरत व रहमत की दुआ करें तो उनकी सिफ़ारिश ज़रूर क़ुबूल होगी। (मुस्लिम)

﴾134﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَزّٰى مُصَابًا فَلَهُ مِثْلُ اَجْرِهٖ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في اجرمن عزى مصابا، رقم: ١٠٧٣

134. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसीबतज़दा को तसल्ली देता है, तो उसको मुसीबतज़दा की तरह सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

﴾135﴿ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ مُؤْمِنٍ يُعَزِّيْ اَخَاهُ بِمُصِيْبَةٍ اِلَّا كَسَاهُ اللهُ سُبْحَانَهُ مِنْ حُلَلِ الْكَرَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

رواه ابن ماجه، باب ما جاء في ثواب من عزى مصابا، رقم: ١٦٠١

135. हज़रत मुहम्मद बिन उम्रू बिन हज़्म ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमया : जो मोमिन अपने किसी मोमिन भाई की मुसीबत में उसे सब्र व सुकून की तल्क़ीन करेगा, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसे इज़्ज़त के लिबास पहनाएंगे। (इब्ने माजा)

﴾136﴿ عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلٰى اَبِيْ سَلَمَةَ وَقَدْ شَقَّ بَصَرُهُ، فَاَغْمَضَهُ، ثُمَّ قَالَ: اِنَّ الرُّوْحَ اِذَا قُبِضَ تَبِعَهُ الْبَصَرُ فَضَجَّ نَاسٌ مِنْ اَهْلِهٖ فَقَالَ: لَا تَدْعُوْا عَلٰى اَنْفُسِكُمْ اِلَّا بِخَيْرٍ، فَاِنَّ الْمَلَائِكَةَ يُؤَمِّنُوْنَ عَلٰى مَا تَقُوْلُوْنَ۔ ثُمَّ قَالَ: اَللّٰهُمَّ! اغْفِرْ لِاَبِيْ سَلَمَةَ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهٖ فِي الْغَابِرِيْنَ، وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ! وَافْسَحْ لَهُ فِيْ قَبْرِهٖ، وَنَوِّرْ لَهُ فِيْهِ۔

رواه مسلم، باب في اغماض الميت والدعاء له اذا حضر، رقم: ٢١٣٠

136. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अबू सलमा के इंतिक़ाल के बाद तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू सलमा ؓ की आंखें खुली हुई थीं। आप ﷺ ने उनकी आंखें बन्द फ़रमाईं और इर्शाद फ़रमाया : जब रूह क़ब्ज़ की जाती है तो निगाह जाती हुई रूह को देखने की वजह से ऊपर उठी रह जाती है (इसी वजह से रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी आंखों को बन्द फ़रमाया)। उनके घर के कुछ लोगों ने आवाज़ से रोना शुरू कर दिया। (मुम्किन है कि कुछ नामुनासिब अल्फ़ाज़ भी कह दिए हों) तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने लिए सिर्फ़ ख़ैर की दुआ करो, क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी दुआ पर आमीन कहते हैं। फिर आप ﷺ ने दुआ फ़रमाई।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! अबू सलमा की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए और हिदायत पाए हुए लोगों में शामिल फ़रमा कर उनका दर्जा बुलन्द फ़रमा दीजिए और उनके बाद उनके पीछे रहने वालों की निगहबानी फ़रमाइए। रब्बुल आलमीन हमारी और उनकी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए, उनकी क़ब्र को कुशादा फ़रमा दीजिए और उनकी क़ब्र को रौशन फ़रमा दीजिए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : जब कोई शख़्स किसी दूसरे मुसलमान के लिए यह दुआ पढ़े तो 'अबी सलमा' की जगह मरने वाले का नाम ले और नाम से पहले ज़ेर वाला लाम लगा दे मसलन लिज़ैदिन कहे।

﴿137﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِىُّ ﷺ يَقُوْلُ: دَعْوَةُ الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ لِاَخِيْهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ مُسْتَجَابَةٌ، عِنْدَ رَاْسِهِ مَلَكٌ مُوَكَّلٌ، كُلَّمَا دَعَا لِاَخِيْهِ بِخَيْرٍ، قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ: آمِيْنَ، وَلَكَ بِمِثْلٍ.

رواه مسلم، باب فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، رقم: ٦٩٢٩

137. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते थे : मुसलमान की दुआ अपने मुसलमान भाई के लिए पीठ पीछे क़ुबूल होती है। दुआ करने वाले के सर की जानिब एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जब भी यह दुआ करने वाला अपने भाई के लिए भलाई की दुआ करता है तो उस पर वह फ़रिश्ता आमीन कहता है और (दुआ करने वाले से कहता है) अल्लाह तआला तुम्हें भी उस जैसी भलाई दे, जो तुमने अपने भाई के लिए मांगी है। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى يُحِبَّ لِاَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهٖ. رواه البخاری، باب من الایمان أن یحب لاخیه......، رقم: ۱۳

38. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि अपने मुसलमान भाई के लिए वही पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है। (बुख़ारी)

﴿139﴾ عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ الْقَسْرِیِّ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: حَدَّثَنِیْ اَبِیْ عَنْ جَدِّیْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَتُحِبُّ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: قُلْتُ نَعَمْ! قَالَ: فَاَحِبَّ لِاَخِيْكَ مَا تُحِبُّ لِنَفْسِكَ. رواه احمد ۴/۷۰

39. हज़रत ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह क़ुसरी रह० अपने वालिद से और वह अपने दादा से नक़ल करते हैं कि उनसे रसूलुल्लाह ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुमको जन्नत पसन्द है यानी क्या तुम जन्नत में जाना पसन्द करते हो? मैंने अ़र्ज़ किया : जी हां! इर्शाद फ़रमाया : अपने भाई के लिए वही पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो। (मुस्नद अहमद)

﴿140﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الدِّيْنَ النَّصِيْحَةُ، اِنَّ الدِّيْنَ النَّصِيْحَةُ، اِنَّ الدِّيْنَ النَّصِيْحَةُ قَالُوْا: لِمَنْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: لِلّٰهِ، وَلِكِتَابِهٖ، وَلِرَسُوْلِهٖ، وَلِاَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامَّتِهِمْ. رواه النسائی، باب النصيحة للامام، رقم: ۴۲۰۴

140. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है। बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है, बेशक दीन ख़ुलूस और वफ़ादारी का नाम है। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! किसके साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के साथ, अल्लाह तआ़ला की किताब के साथ, अल्लाह तआ़ला के रसूल के साथ, मुसलमानों के हाकिमों के साथ और उनके अ़वाम के साथ। (नसाई)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी का मतलब यह है कि उन पर ईमान लाया जाए, उनके साथ इन्तिहाई मुहब्बत की जाए, उनसे डरा जाए, उनकी इताअ़त व इबादत की जाए और उनके साथ किसी को शरीक न किया जाए।

अल्लाह तआ़ला की किताब के साथ वफ़ादारी यह है कि उस पर ईमान लाया जाए, उसकी अ़ज़मत का हक़ अदा किया जाए, उसका इल्म हासिल किया जाए, उसका इल्म फैलाया जाए और उस पर अ़मल किया जाए।

अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ ख़ुलूस और वफ़ादारी यह है कि उनकी तस्दीक़ की जाए, उनकी ताज़ीम की जाए, उनसे और उनकी सुन्नतों से मुहब्बत की जाए और दिल व जान से उनकी इत्तबाअ़ में अपनी नजात समझी जाए।

मुसलमानों के हाकिमों के साथ ख़ुलूस व वफ़ादारी यह है कि उनकी ज़िम्मेदारियों की अदायगी में उनकी मदद की जाए, उनके साथ अच्छा गुमान रखा जाए, अगर उनसे कोई ग़लती होती नज़र आए तो बेहतर तरीक़े पर उसकी इस्लाह की कोशिश की जाए, उनको अच्छे मशवरे दिए जाएं और जायज़ कामों में उनकी बात मानी जाए। आम मुसलमानों के साथ ख़ुलूस व वफ़ादारी यह है कि उनकी हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही का पूरा-पूरा ख़्याल रखा जाए, जिसमें उनको दीन की तरफ़ मुतवज्जह करना भी शामिल है, उनका नफ़ा अपना नफ़ा और उनका नुक़सान अपना नुक़सान समझा जाए, जितना मुम्किन हो उनकी मदद की जाए, उनके हुक़ुक़ को अदा किया जाए।

(मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿141﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ حَوْضِيْ مَا بَيْنَ عَدَنَ اِلٰى عَمَّانَ اَكْوَابُهُ عَدَدُ النُّجُوْمِ مَاؤُهُ اَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ الثَّلْجِ، وَاَحْلٰى مِنَ الْعَسَلِ، اَوَّلُ مَنْ يَرِدُهُ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ، قُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! صِفْهُمْ لَنَا، قَالَ: شُعْثُ الرُّؤُوْسِ، دُنْسُ الثِّيَابِ الَّذِيْنَ لَا يَنْكِحُوْنَ الْمُتَنَعِّمَاتِ، وَلَا تُفْتَحُ لَهُمُ السُّدَدُ، الَّذِيْنَ يُعْطُوْنَ مَا عَلَيْهِمْ، لَا يُعْطَوْنَ مَا لَهُمْ.

رواه الطبراني، ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٤٥٧

141. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे हौज़ की जगह अ़दन से अ़म्मान तक की मुसाफ़त के बराबर है। उसके प्याले गिनती में आसमान के सितारों की तरह (बेशुमार) हैं, उसका पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। उस हौज़ पर जो लोग सबसे पहले आएंगे वह फ़ुक़रा-व मुहाजिरीन होंगे। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमें बताइए कि वे लोग कैसे होंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिखरे बालों वाले, मैले कपड़ों वाले, जो नाज़ व नेमत में रहने वाली औरतों से निकाह नहीं कर सकते, जिन के लिए

दरवाज़े नहीं खोले जाते, यानी जिनको ख़ुश आमदीद नहीं किया जाता और वे लोग उन तमाम हुक़ुक़ को अदा करते हैं जो उनके ज़िम्मे हैं जबकि उनके हुक़ूक़ अदा नहीं किए जाते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : अ़दन यमन का मशहूर मक़ाम है और अ़म्मान जॉर्डन का मशहूर शहर है। निशानी के लिए इस हदीस में अ़दन और अ़म्मान का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। मतलब यह है कि इस दुनिया में अ़दन और अ़म्मौन का जितना फ़ासला है, आख़िरत में हौज़ की लम्बाई-चौड़ाई इस मुसाफ़त के बराबर है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हौज़ की जगह ठीक इतनी ही मुसाफ़त के बराबर है, बल्कि यह समझाने के लिए है कि हौज़ की लम्बाई चौड़ाई सैंकड़ों मील पर फैली हुई है। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿142﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَكُوْنُوْا اِمَّعَةً تَقُوْلُوْنَ: اِنْ اَحْسَنَ النَّاسُ اَحْسَنَّا، وَاِنْ ظَلَمُوْا ظَلَمْنَا، وَ لٰكِنْ وَطِّنُوا اَنْفُسَكُمْ، اِنْ اَحْسَنَ النَّاسُ اَنْ تُحْسِنُوْا، وَ اِنْ اَسَاءُوْا فَلَا تَظْلِمُوْا۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في الاحسان والعفو، رقم: ٢٠٠٧

142. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम दूसरों की देखा देखी काम न किया करो, यूं कहने लगो अगर लोग हमारे साथ भलाई करें तो हम भी उनके साथ भलाई करें और अगर लोग हमारे ऊपर ज़ुल्म करें, तो हम भी उन पर ज़ुल्म करें बल्कि तुम अपने आपको इस बात पर क़ायम रखो कि अगर लोग भलाई करें तो तुम भी भलाई करो और अगर लोग बुरा सुलूक करें तब भी तुम ज़ुल्म न करो। (तिर्मिज़ी)

﴿143﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّهَا قَالَتْ: مَا انْتَقَمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهٖ فِيْ شَيْءٍ قَطُّ اِلَّا اَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ بِهَا لِلّٰهِ. (وهو بعض الحديث) رواه البخاري، باب قول النبي ﷺ: يسروا ولا تعسروا......، رقم: ٦١٢٦

143. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने ज़ाती मामले में कभी किसी से इंतिक़ाम नहीं लिया, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला की हराम की हुई चीज़ का इरतकाब किया जाता तो आप ﷺ अल्लाह तआ़ला का हुक्म टूटने की वजह से सज़ा देते थे। (बुख़ारी)

﴿144﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا نَصَحَ لِسَيِّدِهٖ، وَ اَحْسَنَ عِبَادَةَ اللهِ، فَلَهٗ اَجْرُهٗ مَرَّتَيْنِ۔ رواه مسلم، باب ثواب العبد......، رقم: ٤٣١٨

144. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : जो ग़ुलाम अपने आक़ा के साथ ख़ैरख़्वाही और वफ़ादारी करे और अल्लाह तआ़ला की इबादत भी अच्छी तरह करे, वह दोहरे सवाब का मुस्तहिक़ होगा।

(मुस्लिम)

﴿145﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ لَهٗ عَلٰى رَجُلٍ حَقٌّ فَمَنْ اَخَّرَهٗ كَانَ لَهٗ بِكُلِّ يَوْمٍ صَدَقَةٌ۔ رواه احمد ٤٤٢/٤

145. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : जिस शख़्स का किसी दूसरे शख़्स पर कोई हक़ (क़र्ज़ा वग़ैरह) हो और वह उस मक़रूज़ को अदा करने के लिए देर तक मोहलत दे दे, तो उसको हर दिन व बदले सदक़े का सवाब मिलेगा। (मुस्नद अहमद)

﴿146﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اِجْلَالِ اللهِ اِكْرَامَ ذِى الشَّيْبَةِ الْمُسْلِمِ، وَحَامِلِ الْقُرْآنِ غَيْرِ الْغَالِيْ فِيْهِ وَالْجَافِيْ عَنْهُ، وَاِكْرَامَ ذِى السُّلْطَانِ الْمُقْسِطِ۔ رواه ابوداؤد،باب فی تنزیل الناس منازلھم، رقم: ٤٨٤٣

146. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन क़िस्म के लोगों का इकराम करना अल्लाह तआ़ला की ताज़ीम कर में शामिल है। एक बूढ़ा मुसलमान, दूसरा वह हाफ़िज़े क़ुरआन, जो एतदाल पर रहे, तीसरा इंसाफ़ करने वाला हाकिम। (अबूदाऊद

फ़ायदा : एतदाल पर रहने का मतलब यह है कि क़ुरआन की तिलावत क एहतमाम भी करे और रियाकारों की तरह तज्वीद और हुरूफ़ की अदायगी में तजावुज़ न करे। (बज़्लुलमज्हूद

﴿147﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَكْرَمَ سُلْطَانَ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِى الدُّنْيَا اَكْرَمَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ اَهَانَ سُلْطَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ فِى الدُّنْيَا اَهَانَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

رواه احمد و الطبرانی باختصار ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٣٨٨/٥

147. हज़रत अबू बकरः ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दुनिया में मुक़र्रर किए हुए बादशाह का इकराम करता है, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसका इकराम फ़रमाएंगे और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दुनिया में मुक़र्रर किए हुए बादशाह की बेइज़्ज़ती करता है अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन ज़लील करेंगे।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾148﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْبَرَكَةُ مَعَ اَكَابِرِكُمْ.

رواه الحاكم وقال: صحيح على شرط البخاری ووافقه الذهبی ٦٢/١

148. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बरकत तुम्हारे बड़ों के साथ है। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिनकी उम्र बड़ी है और इस वजह से नेकियां भी ज़्यादा हैं, उनमें ख़ैर व बरकत है। (हाशियः अर्त्तग़ीब)

﴾149﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ مِنْ اُمَّتِیْ مَنْ لَمْ يُجِلَّ كَبِيْرَنَا، وَيَرْحَمْ صَغِيْرَنَا، وَيَعْرِفْ لِعَالِمِنَا حَقَّهُ.

رواه احمد والطبرانی فی الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣٣٨/١

149. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हमारे बड़ों की ताज़ीम न करे, हमारे बच्चों पर रहम न करे और हमारे आ़लिम का हक़ न पहचाने, वह मेरी उम्मत में से नहीं है।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾150﴿ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اُوْصِی الْخَلِيْفَةَ مِنْ بَعْدِیْ بِتَقْوَی اللّٰهِ، وَاُوْصِيْهِ بِجَمَاعَةِ الْمُسْلِمِيْنَ اَنْ يُعَظِّمَ كَبِيْرَهُمْ، وَيَرْحَمَ صَغِيْرَهُمْ، وَيُوَقِّرَ عَالِمَهُمْ، وَ اَنْ لَا يَضْرِبَهُمْ فَيُذِلَّهُمْ، وَلَا يُوْحِشَهُمْ فَيُكَفِّرَهُمْ، وَاَنْ لَا يُخْصِيَهُمْ فَيَقْطَعَ نَسْلَهُمْ، وَاَنْ لَا يُغْلِقَ بَابَهُ دُوْنَهُمْ فَيَاْكُلَ قَوِيُّهُمْ ضَعِيْفَهُمْ.

رواه البيهقی فی السنن الكبری ١٦١/٨

150. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अपने बाद वाले ख़लीफ़ा को अल्लाह तआ़ला से डरने की वसीयत करता हूं और उसे मुसलमानों की जमाअ़त के बारे में यह वसीयत करता हूं कि वह

मुसलमानों के बड़ों की ताज़ीम करे, उनके छोटों पर रहम करे, उनके उलमा की इज़्ज़त करे, उनको ऐसा न मारे कि उनको ज़लील कर दे, उनको ऐसा न डराए कि उनको काफ़िर बना दे, उनको ख़स्सी न करे कि उनकी नस्ल को ख़त्म कर दे और अपना दरवाज़ा उनकी फ़रयाद के लिए बन्द न करे कि उसकी वजह से क़वी लोग कमज़ोरों को खा जाएं यानी ज़ुल्म आ़म हो जाए। (बैहक़ी)

﴿151﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَقِيْلُوْا ذَوِى الْهَيْئَاتِ عَثَرَاتِهِمْ اِلَّا الْحُدُوْدَ۔ رواه ابوداؤد، باب فى الحد يشفع فيه، رقم: ٤٣٧٥

151. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेक लोगों की लग़ज़िशों को माफ़ कर दिया करो, अलबत्ता अगर वह कोई ऐसा गुनाह करें जिसकी वजह से उन पर हद जारी होती हो वह माफ़ नहीं की जाएगी। (अबूदाऊद)

﴿152﴾ عَنْ عَمْرِوبْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهٰى عَنْ نَتْفِ الشَّيْبِ وَقَالَ: اِنَّهٗ نُوْرُ الْمُسْلِمِ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى النهى عن نتف الشيب، رقم: ٢٨٢١

152. हज़रत उम्र बिन शुऐब अपने बाप दादा के हवाले से रिवायत करते है कि नबी करीम ﷺ ने सफ़ेद बालों को नोचने से मना फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि यह बुढ़ापा मुसलमान का नूर है। (तिर्मिज़ी)

﴿153﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا تَنْتِفُوا الشَّيْبَ، فَاِنَّهٗ نُوْرٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ شَابَ شَيْبَةً فِى الْاِسْلَامِ كُتِبَ لَهٗ بِهَا حَسَنَةٌ، وَحُطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيْئَةٌ، وَرُفِعَ لَهٗ بِهَا دَرَجَةٌ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٧/٢٥٣

153. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सफ़ेद बालों को न उखाड़ा करो, क्योंकि ये क़ियामत के दिन नूर का सबब होंगे। जो शख़्स इस्लाम की हालत में बूढ़ा होता है, यानी जबकि मुसलमान का एक बाल सफ़ेद होता है तो उसकी वजह से उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है, एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और एक दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है। (इब्ने हब्बान)

﴿154﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰى أَقْوَامًا يَخْتَصُّهُمْ بِالنِّعَمِ لِمَنَافِعِ الْعِبَادِ وَيُقِرُّهَا فِيْهِمْ مَا بَذَلُوْهَا، فَإِذَا مَنَعُوْهَا نَزَعَهَا مِنْهُمْ فَحَوَّلَهَا إِلٰى غَيْرِهِمْ. رواه الطبرانی فی الکبیر،وابو نعیم فی الحلیة وهوحدیث حسن، الجامع الصغیر ۱/۳۵۸

154. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों को ख़ास तौर पर नेमतें इसलिए देते हैं, ताकि वे लोगों को नफ़ा पहुंचाएं। जब तक वे लोगों को नफ़ा पहुंचाते रहते हैं उनको उन नेमतों में ही रखते हैं और जब वे ऐसा करना छोड़ देते हैं, तो अल्लाह तआ़ला उनसे नेमतें लेकर दूसरों को दे देते हैं।

(तबरानी, हिलयतुल औलिया, जामेअ़ सग़ीर)

﴿155﴾ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَبَسُّمُكَ فِيْ وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وَأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِيْ أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيْءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِيْ دَلْوِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب،باب ماجاء فی صنائع المعروف، رقم: ۱۹۵۶

155. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा अपने (मुसलमान) भाई के लिए मुस्कराना सदक़ा है, तुम्हारा किसी को नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना सदक़ा है, किसी भूले हुए को रास्ता बताना सदक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले को रास्ता दिखाना सदक़ा है, पत्थर, कांटा, हड्डी (वग़ैरह) का रास्ते से हटा देना सदक़ा है और तुम्हारा अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना सदक़ा है। (तिर्मिज़ी)

﴿156﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ مَشٰى فِيْ حَاجَةِ أَخِيْهِ كَانَ خَيْرًا لَهُ مِنِ اعْتِكَافِهِ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَمَنِ اعْتَكَفَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللهِ جَعَلَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ ثَلَاثَ خَنَادِقَ، كُلُّ خَنْدَقٍ أَبْعَدُ مَا بَيْنَ الْخَافِقَيْنِ.

رواه الطبرانی فی الاوسط واسناده جید، مجمع الزوائد ۸/۳۵۱

156. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने किसी भाई के काम के लिए चलकर जाता है, तो उसका यह अ़मल दस साल के एतिकाफ़ से अफ़ज़ल है। जो शख़्स एक दिन का एतिकाफ़ भी अल्लाह

तआ़ला की रिज़ा के लिए करता है अल्लाह तआ़ला उसके और जहन्नम के दर्मियान तीन ख़न्दक़ें आड़ फ़रमा देते हैं। हर ख़न्दक़ आसमान व ज़मीन की मुसाफ़त से ज़्यादा चौड़ी है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿157﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ وَاَبِیْ طَلْحَةَ بْنِ سَهْلٍ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ یَقُوْلَانِ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنِ امْرِیءٍ یَخْذُلُ امْرَءًا مُسْلِمًا فِی مَوْضِعٍ یُنْتَهَكُ فِیْهِ حُرْمَتُهُ وَیُنْتَقَصُ فِیْهِ مِنْ عِرْضِهٖ اِلَّا خَذَلَهُ اللهُ فِی مَوْطِنٍ یُحِبُّ فِیْهِ نُصْرَتَهُ، وَمَا مِنِ امْرِیءٍ یَنْصُرُ مُسْلِمًا فِیْ مَوْضِعٍ یُنْتَقَصُ فِیْهِ مِنْ عِرْضِهٖ وَیُنْتَهَكُ فِیْهِ مِنْ حُرْمَتِهٖ اِلَّا نَصَرَهُ اللهُ فِی مَوْطِنٍ یُحِبُّ نُصْرَتَهُ. رواه ابو داؤد، باب الرجل یذب عن عرض اخیه، رقم: ٤٨٨٤

157. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और हज़रत अबू तलहा बिन सहल अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान की मदद से ऐसे मौक़े पर हाथ खींच लेता है, जबकि उसकी इज़्ज़त पर हमला किया जा रहा हो और उसकी आबरू को नुक़सान पहुंचाया जा रहा हो, तो अल्लाह तआ़ला उसको ऐसे मौक़े पर अपनी मदद से महरूम रखेंगे, जब वह अल्लाह तआ़ला की मदद का ख़्वाहिशमन्द (और तलबगार) होगा और जो शख़्स किसी मुसलमान की ऐसे मौक़े पर मदद और हिमायत करता है, जबकि उसकी इज़्ज़त पर हमला किया जा रहा हो और आबरू को नुक़सान पहुंचाया जा रहा हो तो अल्लाह तआ़ला ऐसे मौक़े पर उसकी मदद फ़रमाएंगे, जब वह उसकी नुसरत का ख़्वाहिशमन्द (और तलबगार) होगा। (अबूदाऊद)

﴿158﴾ عَنْ حُذَیْفَةَ بْنِ الْیَمَانِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَا یَهْتَمُّ بِاَمْرِ الْمُسْلِمِیْنَ فَلَیْسَ مِنْهُمْ، وَمَنْ لَمْ یُصْبِحْ وَیُمْسِ نَاصِحًا لِلّٰهِ، وَلِرَسُوْلِهٖ، وَلِكِتَابِهٖ، وَلِاِمَامِهٖ، وَلِعَامَّةِ الْمُسْلِمِیْنَ فَلَیْسَ مِنْهُمْ. رواه الطبرانی من روایة عبد الله بن جعفر، الترغیب ٢/٥٧٧، وعبد الله بن جعفر وثقة ابو حاتم وابوزرعة وابن حبان، الترغیب ٤/٥٧٣

158. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुसलमानों के मसाइल व मामलात को अहमियत न दे और उनके लिए फ़िक्र न करे, वह मुसलमानों में से नहीं है। जो सुबह व शाम अल्लाह तआ़ला, उनके रसूल, उनकी किताब, उनके इमाम यानी वक़्त के ख़लीफ़ा और आम मुसलमानों का मुख़्लिस और वफ़ादार न हो, यानी जो शख़्स दिन रात में किसी वक़्त भी इस ख़ुलूस और ख़ैरख़्वाही से ख़ाली हो वह मुसलमानों में से नहीं है।

(तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿159﴾ عَنْ سَالِمٍ عَنْ اَبِيْهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ اَخِيْهِ كَانَ اللّٰهُ فِي حَاجَتِهِ۔ (وهو جزء من الحديث) رواه ابوداؤد، باب المؤاخاة، رقم:٤٨٩٣

159. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो कोई अपने भाई की हाजत पूरी करता है अल्लाह तआ़ला उसकी हाजत पूरी फ़रमाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿160﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الدَّالُّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ اِغَاثَةَ اللَّهْفَانِ۔

رواه البزار من رواية زيادبن عبد الله النميرى وقد وثق وله شواهد، الترغيب ١٢٠/١

160. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता है, उसको भलाई करने वाले के बराबर सवाब मिलता है और अल्लाह तआ़ला परेशान हाल की मदद को पसन्द फ़रमाते हैं। (बज़्ज़ार, तर्ग़ीब)

﴿161﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: الْمُؤْمِنُ يَاْلَفُ وَيُؤْلَفُ، وَلَا خَيْرَ فِيْ مَنْ لَا يَاْلَفُ وَلَا يُؤْلَفُ وَخَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ۔

رواه الدارقطنى وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٦٦١/٢

161. हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वाला मुहब्बत करता है और उससे मुहब्बत की जाती है। ऐसे शख़्स में कोई भलाई नहीं जो न मुहब्बत करे और न उससे मुहब्बत की जाए। और लोगों में बेहतरीन शख़्स वह है जो सबसे ज़्यादा लोगों को नफ़ा पहुंचाने वाला हो।
(दारेक़ुत्नी, जामेअ़ सग़ीर)

﴿162﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ قَالُوْا: فَاِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: فَيَعْمَلُ بِيَدَيْهِ فَيَنْفَعُ نَفْسَهُ وَيَتَصَدَّقُ قَالُوْا: فَاِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ اَوْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَيُعِيْنُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوْفَ قَالُوْا: فَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَلْيَاْمُرْ بِالْخَيْرِ اَوْقَالَ: بِالْمَعْرُوْفِ قَالَ: فَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: فَلْيُمْسِكْ عَنِ الشَّرِّ فَاِنَّهُ لَهُ صَدَقَةٌ۔

رواه البخارى، باب كل معروف صدقة، رقم:٦٠٢٢

162. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर मुसलमान को चाहिए कि सदक़ा दिया करे। लोगों ने दरयाफ़्त किया : अगर

उसके पास सदक़ा देने के लिए कुछ न हो तो क्या करे? इर्शाद फ़रमाया : अपने हाथों से मेहनत मज़दूरी करके अपने आप को भी फ़ायदा पहुंचाए और सदक़ा भी दे। लोगों ने अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न कर सके या (कर सकता हो, फिर भी) न करे? इर्शाद फ़रमाया : किसी ग़मज़दा मुहताज की मदद कर दे। अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न करे? इर्शाद फ़रमायां : तो किसी को भली बात बता दे। अ़र्ज़ किया : अगर यह भी न करे? इर्शाद फ़रमाया : तो (कम-से-कम) किसी को नुक़सान पहुंचाने से ही बाज़ रहे, क्योंकि यह भी उसके लिए सदक़ा है। (बुख़ारी)

﴿163﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ مِرْآةُ الْمُؤْمِنِ، وَالْمُؤْمِنُ اَخُو الْمُؤْمِنِ يَكُفُّ عَلَيْهِ ضَيْعَتَهُ وَيَحُوْطُهُ مِنْ وَرَائِهِ.

رواه ابو داؤد، باب في النصيحة والحياطة، رقم: ٤٩١٨

163. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है और एक मोमिन दूसरे मोमिन का भाई है, उसके नुक़्सान को उससे रोकता है और उसकी हर तरफ़ से हिफ़ाज़त करता है। (अबूदाऊद)

﴿164﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اُنْصُرْ اَخَاكَ ظَالِمًا اَوْ مَظْلُوْمًا، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَنْصُرُهُ اِذَا كَانَ مَظْلُوْمًا، اَفَرَاَيْتَ اِذَا كَانَ ظَالِمًا، كَيْفَ اَنْصُرُهُ؟ قَالَ: تَحْجُزُهُ اَوْ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ، فَاِنَّ ذٰلِكَ نَصْرُهُ.

رواه البخاري، باب يمين الرجل لصاحبه انه اخوه......، رقم: ٦٩٥٢

164. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने मुसलमान भाई की हर हालत में मदद किया करो, ख़्वाह वह ज़ालिम हो या मज़्लूम। एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! मज़्लूम होने की हालत में मैं उसकी मदद करूंगा यह बताइए कि ज़ालिम होने की सूरत में उसकी कैसे मदद करूं? अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको ज़ुल्म करने से रोक दो, क्योंकि ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकना ही उसकी मदद है। (बुख़ारी)

﴿165﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ: اَلرَّاحِمُوْنَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمٰنُ، اِرْحَمُوْا اَهْلَ الْاَرْضِ يَرْحَمْكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ.

رواه ابو داؤد، باب في الرحمة، رقم: ٤٩٤١

165. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : रहम

करने वालों पर रहमान रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। (अबूदाऊद)

﴾166﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمَجَالِسُ بِالْاَمَانَةِ اِلَّا ثَلَاثَةَ مَجَالِسَ: سَفْكُ دَمٍ حَرَامٍ، اَوْ فَرْجٌ حَرَامٌ، اَوِاقْتِطَاعُ مَالٍ بِغَيْرِ حَقٍّ۔

رواه ابوداؤد، باب في نقل الحديث، رقم: ٤٨٦٩

166. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज्लिसें अमानत हैं (उनमें की गई राज़ की बातें किसी को बताना जायज़ नहीं) सिवाए तीन मज्लिसों के (कि वे अमानत नहीं हैं बल्कि दूसरों तक उनका पहुंचा देना ज़रूरी है)। एक वह मज्लिस जिसका तअ़ल्लुक़ नाहक़ ख़ून बहाने की साज़िश से हो, दूसरी वह, जिसका तअ़ल्लुक़ ज़िनाकारी से हो, तीसरी वह जिसका तअ़ल्लुक़ नाहक़ किसी का माल छीनने से हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में इन तीनों बातों का ज़िक्र बतौर मिसाल के है। मकसद यह है कि अगर किसी मज्लिस में किसी मअ़्सियत और ज़ुल्म के लिए कोई मशवरा किया जाए और तुमको भी उसमें शरीक किया जाए, तो फिर हरगिज़ उसको राज़ में न रखो। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴾167﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ مَنْ اَمِنَهُ النَّاسُ، عَلٰى دِمَائِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ۔

رواه النسائي، باب صفة المؤمن، رقم ٤٩٩٨

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन वह है जिससे लोग अपनी जान और माल के बारे में अम्न में रहें। (नसाई)

﴾168﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهٖ وَيَدِهٖ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ۔

رواه البخاري، باب المسلم من سلم المسلمون......، رقم: ١٠

168. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहें और मुहाजिरीन यानी छोड़ने वाला वह है जो उन तमाम कामों को छोड़ दे, जिससे अल्लाह तआ़ला ने रोका है। (बुख़ारी)

﴾169﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ الْاِسْلَامِ اَفْضَلُ؟

قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهٖ وَيَدِهٖ۔ رواه البخاری،باب ای الاسلام افضل،رقم: ۱۱

169. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन से मुसलमान का इस्लाम अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : जिस (मुसलमान) की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (बुख़ारी)

फ़ायदा : ज़बान से तकलीफ़ पहुंचाने में किसी का मज़ाक़ उड़ाना, तोहमत लगाना, बुरा-भला कहना और हाथ से तकलीफ़ पहुंचाने में किसी को नाहक़ मारना, किसी का माल ज़ुलमन लेना वग़ैरह उमूर शामिल हैं।(फ़त्हुलबारी)

﴿170﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ نَصَرَ قَوْمَهُ عَلٰى غَيْرِ الْحَقِّ فَهُوَ كَالْبَعِيْرِ الَّذِىْ رُدِّىَ فَهُوَ يُنْزَعُ بِذَنَبِهٖ۔

رواه ابو داؤد،باب فی العصبية، رقم: ۵۱۱۷

170. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अपनी क़ौम की नाहक़ मदद करता है वह उस ऊंट की तरह है जो किसी कुएं में गिर गया हो और उसको दुम से पकड़ कर निकाला जा रहा हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस तरह कुएं में गिरे हुए ऊंट को दुम से पकड़ कर निकालने की कोशिश करना अपने आप को बेफ़ायदा मशक़्क़त में डालना है, क्योंकि इस तरीक़े से ऊंट को कुएं से नहीं निकाला जा सकता उसी तरह क़ौम की नाहक़ मदद करना भी बेफ़ायदा है, क्योंकि इस तरीक़े से क़ौम को सही रास्ते पर नहीं डाला जा सकता। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿171﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ دَعَا اِلٰى عَصَبِيَّةٍ، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ قَاتَلَ عَلٰى عَصَبِيَّةٍ، وَلَيْسَ مِنَّا مَنْ مَاتَ عَلٰى عَصَبِيَّةٍ۔

رواه ابو داؤد، باب فی العصبية ،رقم: ۵۱۲۱

171. हज़रत जुबैर बिन मुतइम ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अ़सबीयत की दावत दे, वह हम में से नहीं, जो अ़सबीयत की बिना पर लड़े, वह हम में से नहीं और जो अ़सबीयत (के जज़्बे) पर मरे, वह हम में से नहीं। (अबूदाऊद)

﴿172﴾ عَنْ فُسَيْلَةَ رَحِمَهَا اللهُ اَنَّهَا سَمِعَتْ اَبَاهَا يَقُوْلُ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَمِنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ قَوْمَهُ قَالَ: لَا، وَلٰكِنْ مِنَ الْعَصَبِيَّةِ اَنْ يَنْصُرَ

الرَّجُلُ قَوْمَهُ عَلَى الظُّلْمِ۔ رواه احمد ١٠٧/٤

172. हज़रत फ़ुसैलः रहमतुल्लाहि अ़लैहा फ़रमाती हैं कि मैंने अपने वालिद को यह फ़रमाते हुए सुना कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : क्या अपनी क़ौम से मुहब्बत करना भी अ़सबीयत में दाख़िल है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (अपनी क़ौम से मुहब्बत करना) अ़सबीयत नहीं है, बल्कि अ़सबीयत यह है कि क़ौम के नाहक़ होने के बावजूद आदमी अपनी क़ौम की मदद करे। (मुस्नद अहमद)

﴿173﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: اَيُّ النَّاسِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: كُلُّ مَخْمُوْمِ الْقَلْبِ، صَدُوْقِ اللِّسَانِ قَالُوْا: صَدُوْقُ اللِّسَانِ، نَعْرِفُهُ فَمَا مَخْمُوْمُ الْقَلْبِ؟ قَالَ: هُوَ التَّقِيُّ النَّقِيُّ لَا اِثْمَ فِيْهِ وَلَا بَغْيَ وَلَا غِلَّ وَلَا حَسَدَ۔

رواه ابن ماجه، باب الورع والتقوى، رقم: ٤٢١٦

173. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया कि लोगों में कौन-सा शख़्स सबसे बेहतर है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर वह शख़्स जो मख़मूम दिल और ज़बान का सच्चा हो। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : ज़बान का सच्चा तो हम समझते हैं, मख़मूम दिल से क्या मुराद है? इर्शाद फ़रमाया : मख़मूम दिल वह शख़्स है जो परहेज़गार हो, जिसका दिल साफ़ हो, जिसपर न तो गुनाहों का बोझ हो और न ज़ुल्म का, न उसके दिल में किसी के लिए कीना हो और न हसद। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : ''जिसका दिल साफ़ हो'' से मुराद वह शख़्स है जिसका दिल अल्लाह तआ़ला के ग़ैर के ग़ुबार और ग़लत अफ़कार व ख़यालात से पाक हो। (मज़ाहिरे हक़)

﴿174﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يُبَلِّغُنِيْ اَحَدٌ مِنْ اَصْحَابِيْ عَنْ اَحَدٍ شَيْئًا فَاِنِّيْ اُحِبُّ اَنْ اَخْرُجَ اِلَيْكُمْ وَاَنَا سَلِيْمُ الصَّدْرِ۔

رواه ابوداؤد، باب في رفع الحديث من المجلس، رقم: ٤٨٦٠

174. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे सहाबा में से कोई शख़्स मुझ तक किसी के बारे में कोई बात न पहुंचाया करे, क्योंकि मेरा दिल चाहता है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊं तो मेरा

दिल तुम सब की तरफ़ से साफ़ हो। (अबूदाऊद)

﴿175﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَطْلُعُ الْآنَ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَطَلَعَ رَجُلٌ مِنَ الْاَنْصَارِ تَنْطِفُ لِحْيَتُهُ مِنْ وُضُوْئِهِ، وَقَدْ تَعَلَّقَ نَعْلَيْهِ بِيَدِهِ الشِّمَالِ، فَلَمَّا كَانَ الْغَدُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَطَلَعَ الرَّجُلُ مِثْلَ الْمَرَّةِ الْاُوْلٰى، فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ الثَّالِثُ، قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ اَيْضًا، فَطَلَعَ ذٰلِكَ الرَّجُلُ مِثْلَ حَالِهِ الْاُوْلٰى، فَلَمَّا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ تَبِعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو فَقَالَ: اِنِّيْ لَاحَيْتُ اَبِيْ فَاَقْسَمْتُ اَنْ لَا اَدْخُلَ عَلَيْهِ ثَلَاثًا، فَاِنْ رَاَيْتَ اَنْ تُؤْوِيَنِيْ اِلَيْكَ حَتّٰى تَمْضِيَ فَعَلْتُ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ اَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَكَانَ عَبْدُاللهِ يُحَدِّثُ اَنَّهُ بَاتَ مَعَهُ تِلْكَ الثَّلَاثَ اللَّيَالِيَ، فَلَمْ يَرَهُ يَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ شَيْئًا، غَيْرَ اَنَّهُ اِذَا تَعَارَّ وَ تَقَلَّبَ عَلٰى فِرَاشِهِ ذَكَرَ اللهَ عَزَّوَجَلَّ، وَكَبَّرَ حَتّٰى يَقُوْمَ لِصَلَاةِ الْفَجْرِ، قَالَ عَبْدُ اللهِ: غَيْرَ اَنِّيْ لَمْ اَسْمَعْهُ يَقُوْلُ اِلَّا خَيْرًا، فَلَمَّا مَضَتِ الثَّلَاثُ اللَّيَالِيْ، وَكِدْتُ اَنْ اَحْتَقِرَ عَمَلَهُ، قُلْتُ: يَا عَبْدَ اللهِ! لَمْ يَكُنْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اَبِيْ غَضَبٌ وَلَا هُجْرٌ، وَلٰكِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ لَنَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: يَطْلُعُ عَلَيْكُمُ الْآنَ رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ، فَطَلَعْتَ اَنْتَ الثَّلَاثَ الْمَرَّاتِ، فَاَرَدْتُ اَنْ آوِيَ اِلَيْكَ فَاَنْظُرَ مَا عَمَلُكَ؟ فَاَقْتَدِيَ بِكَ، فَلَمْ اَرَكَ عَمِلْتَ كَثِيْرَ عَمَلٍ، فَمَا الَّذِيْ بَلَغَ بِكَ مَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: مَا هُوَ اِلَّا مَا رَاَيْتَ، قَالَ: فَلَمَّا وَلَّيْتُ دَعَانِيْ فَقَالَ: مَا هُوَ اِلَّا مَا رَاَيْتَ غَيْرَ اَنِّيْ لَا اَجِدُ فِيْ نَفْسِيْ لِاَحَدٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ غِشًّا وَلَا اَحْسُدُ اَحَدًا عَلٰى خَيْرٍ اَعْطَاهُ اللهُ اِيَّاهُ فَقَالَ عَبْدُاللهِ: هٰذِهِ الَّتِيْ بَلَغَتْ بِكَ وَهِيَ الَّتِيْ لَا نُطِيْقُ۔

رواه احمد والبزار بنحوه و رجال احمد رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/ ١٥٠

175. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठे हुए थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आएगा। इतने में एक अन्सारी आए, जिनकी दाढ़ी से वुज़ू के पानी के क़तरे गिर रहे थे और उन्होंने जूते बाएं हाथ में थाम रखे थे। दूसरे दिन भी रसूलुल्लाह ﷺ ने वही बात फ़रमाई और फिर वही अन्सारी उसी हाल में आए जिस हाल में पहली मर्तबा आए थे। तीसरे दिन फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने वही बात फ़रमाई और वही अन्सारी उसी हाल में आए। जब रसूलुल्लाह ﷺ (मज्लिस से) उठे तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ अन्सारी के पीछे गए और उनसे कहा कि वालिद साहब से मेरा झगड़ा हो गया है, जिसकी वजह से मैंने क़सम खा ली है कि तीन दिन उनके पास न जाऊंगा। अगर आप मुनासिब समझें तो मुझे अपने हां तीन दिन ठहरा लें। उन्होंने फ़रमाया : बहुत

अच्छा। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ ब्यान करते थे कि मैंने उनके पास तीन रातें गुज़ारीं। मैंने उनको रात में कोई इबादत करते हुए नहीं देखा। अलबत्ता जब रात को उनकी आंख खुल जाती और बिस्तर पर करवट बदलते तो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते और अल्लाहु अकबर कहते, यहां तक कि फ़ज्र की नमाज़ के लिए बिस्तर से उठते और एक बात यह भी थी कि मैंने उनसे ख़ैर के अलावा कुछ नहीं सुना। जब तीन रातें गुज़र गईं और मैं उनके अ़मल को मामूली ही समझ रहा था (और मैं हैरान था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उनके लिए बशारत तो इतनी बड़ी दी और उनका कोई ख़ास अ़मल तो है नहीं) तो मैंने उनसे कहा : अल्लाह के बन्दे! मेरे और मेरे बाप के दर्मियान न कोई नाराज़गी हुई और न जुदाई हुई, लेकिन (क़िस्सा यह हुआ कि) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को (आपके बारे में) तीन मर्तबा यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आने वाला है और तीनों मर्तबा आप ही आए। उस पर मैंने इरादा किया कि मैं आपके यहां रहकर आपका ख़ास अ़मल देखूं, ताकि (फिर उस अ़मल में) आपके नक़्शे क़दम पर चलूं। मैंने आप को ज़्यादा अ़मल करते हुए नहीं देखा (अब आप बताइए) कि आपका वह कौन-सा ख़ास अ़मल है जिसकी वजह से आप इस मर्तबे पर पहुंच गए जो रसूलुल्लाह ﷺ ने आपके लिए इर्शाद फ़रमाया? उन अन्सारी ने कहा : (मेरा कोई ख़ास अ़मल तो है नहीं) यही अ़मल है जो तुम ने देखे हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि (मैं यह सुनकर चल पड़ा) जब मैंने पुश्त फेरी तो उन्होंने मुझे बुलाया और कहा : मेरे आ़माल तो वही हैं जो तुमने देखे हैं अलबत्ता एक बात यह है कि मेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में खोट नहीं है और किसी को अल्लाह तआ़ला ने कोई ख़ास नेमत अ़ता फ़रमा रखी हो तो मैं उस पर उससे हसद नहीं करता। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : यही वह अ़मल है जिसकी वजह से तुम इस मर्तबे पर पहुंचे और यह ऐसा अ़मल है जिसको हम नहीं कर सकते। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿176﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ وَسَّعَ عَلٰی مَكْرُوْبٍ كُرْبَةً فِی الدُّنْيَا وَسَّعَ اللهُ عَلَيْهِ كُرْبَةً فِی الْاٰخِرَةِ، وَمَنْ سَتَرَ عَوْرَةَ مُسْلِمٍ فِی الدُّنْيَا سَتَرَ اللهُ عَوْرَتَهُ فِی الْاٰخِرَةِ، وَاللهُ فِیْ عَوْنِ الْمَرْءِ مَا كَانَ فِیْ عَوْنِ اَخِيْهِ. رواه احمد ٢/٢٧٤

176. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दुनिया में किसी परेशान हाल की परेशानी को दूर करता है अल्लाह तआ़ला उसकी आख़िरत की कोई एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो शख़्स दुनिया में किसी

मुसलमान के ऐबों पर पर्दा डालेगा, अल्लाह तआ़ला आख़िरत में उसके ऐबों पर पर्दा डालेगा। जब तक आदमी अपने भाई की मदद करता रहता है अल्लाह तआ़ला उसकी मदद फ़रमाता रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴿177﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَانَ رَجُلَانِ فِىْ بَنِىْ اِسْرَائِيْلَ مُتَوَاخِيَيْنِ، فَكَانَ اَحَدُهُمَا يُذْنِبُ وَالْآخَرُ مُجْتَهِدٌ فِى الْعِبَادَةِ، فَكَانَ لَا يَزَالُ الْمُجْتَهِدُ يَرَى الْآخَرَ عَلَى الذَّنْبِ فَيَقُوْلُ: اَقْصِرْ، فَوَجَدَهُ يَوْمًا عَلَى ذَنْبٍ فَقَالَ لَهُ: اَقْصِرْ، فَقَالَ: خَلِّنِىْ وَ رَبِّىْ اَبُعِثْتَ عَلَىَّ رَقِيْبًا؟ فَقَالَ: وَاللهِ! لَا يَغْفِرُ اللهُ لَكَ اَوْ لَا يُدْخِلُكَ اللهُ الْجَنَّةَ، فَقُبِضَ اَرْوَاحُهُمَا، فَاجْتَمَعَا عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، فَقَالَ لِهٰذَا الْمُجْتَهِدِ: اَكُنْتَ بِىْ عَالِمًا اَوْكُنْتَ عَلٰى مَا فِىْ يَدِىْ قَادِرًا؟ وَقَالَ لِلْمُذْنِبِ: اِذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِىْ، وَقَالَ لِلْآخَرِ: اِذْهَبُوْا بِهٖ اِلَى النَّارِ.

رواه ابو داؤد، باب فى النهى عن البغى، رقم: ٤٩٠١

177. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बनी इसराईल में दो दोस्त थे। एक उनमें गुनाह किया करता था और दूसरा ख़ूब इबादत किया करता था। आ़बिद जब भी गुनहगार को गुनाह करते हुए देखता तो उससे कहता कि गुनाह से रुक जा। एक दिन उसे गुनाह करते हुए देखा तो फिर कहा कि बाज़ आ जा। उसने कहा कि मुझे मेरे रब पर छोड़ दे (मैं जानूं, मेरा रब जाने) क्या तुझ को मुझ पर निगरां बनाकर भेजा गया है? आ़बिद ने (ग़ुस्से में आकर) कहा अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला तेरी मग़्फ़िरत नहीं करेंगे या यह कहा कि अल्लाह तआ़ला तुझे जन्नत में दाख़िल नहीं करेंगे। फिर दोनों का इंतिक़ाल हो गया और (आ़लमे अरवाह) में दोनों अल्लाह तआ़ला के सामने जमा हो गए। अल्लाह तआ़ला ने आ़बिद से पूछा : क्या तुम मेरे बारे में जानते थे (कि मैं माफ़ नहीं करूंगा) या जो माफ़ करना मेरे कब्ज़े में है क्या तुम्हें उस पर क़ुदरत हासिल थी (कि तुम मुझे माफ़ करने से रोक दो कि जो दावा किया कि अल्लाह तआ़ला तेरी मग़्फ़िरत नहीं करेंगे) और गुनहगार से इर्शाद फ़रमाया : मेरी रहमत से जन्नत में चला जा (इसलिए कि वह रहमत का उम्मीदवार था और आ़बिद के बारे में (फ़रिश्तों से) फ़रमाया कि इसे दोख़ज़ में ले जाओ। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का यह मतलब नहीं कि गुनाह पर जुर्रअत की जाए इसलिए कि उस गुनहगार की माफ़ी अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से हुई। ज़रूरी नहीं कि हर गुनहगार के साथ यही मामला हो क्योंकि उसूल तो यही है कि

गुनाह पर सज़ा हो और न यह मतलब है कि गुनाहों और नाजायज़ कामों से रोका न जाए। क़ुरआन व हदीस में सैकड़ों जगह गुनाहों से रोकने का हुक्म है और न रोकने पर वईद है।

﴿178﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُبْصِرُ اَحَدُكُمُ الْقَذَاةَ فِى عَيْنِ اَخِيْهِ وَيَنْسَى الْجِذْعَ فِى عَيْنِهِ.
رواه ابن حبان (ورجاله ثقات) ۷۳/۱۳

178. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी को अपने भाई की आंख का एक तिनका भी नज़र आ जाता है लेकिन अपनी आंख का शहतीर तक भी उसे नज़र नहीं आता। (इब्ने हब्बान)

फ़ायदा : मतलब यह है कि दूसरों के मामूली से मामूली ऐब नज़र आ जाते हैं और अपने बड़े-बड़े ऐबों पर नज़र नहीं जाती।

﴿179﴾ عَنْ اَبِىْ رَافِعٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ غَسَلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ غَفَرَ اللهُ لَهُ اَرْبَعِيْنَ كَبِيْرَةً، وَمَنْ حَفَرَ لِاَخِيْهِ قَبْرًا حَتّٰى يُجِنَّهُ فَكَاَنَّمَا اَسْكَنَهُ مَسْكَنًا حَتّٰى يُبْعَثَ.
رواه الطبرانى فى الكبير ورجاله رجال الصحيح،مجمع الزوائد ۱۱٤/۳

179. हज़रत अबू राफ़ेअ् ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मैय्यत को ग़ुस्ल देता है और उसके सतर को और अगर कोई ऐब पाए तो उसको छुपाता है, अल्लाह तआ़ला उसके चालीस बड़े गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं और जो अपने भाई (की मैय्यत) के लिए क़ब्र खोदता है और उसको उसमें दफ़न करता है तो गोया उसने (क़ियामत के दिन) दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने तक उसको एक मकान में ठहरा दिया, यानी उसको इस क़द्र अज्र मिलता है जितना कि उस शख़्स के लिए क़ियामत तक मकान देने का अज्र मिलता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿180﴾ عَنْ اَبِىْ رَافِعٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ غَسَلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ غُفِرَ لَهُ اَرْبَعِيْنَ مَرَّةً، وَمَنْ كَفَّنَ مَيِّتًا كَسَاهُ اللهُ مِنَ السُّنْدُسِ وَاِسْتَبْرَقِ الْجَنَّةِ.
(الحديث) رواه الحاكم وقال: هذاحديث صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبى ۳٥٤/۱

180. हज़रत अबू राफ़ेअ् ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मैय्यत को ग़ुस्ल देता है, फिर उसके सतर को और कोई ऐब पाए तो उसको छुपाता है तो चालीस मर्तबा उसकी मग़्फ़िरत की जाती है और जो शख़्स मैय्यत को कफ़न देता है अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत के बारीक और मोटे रेशम

का लिबास पहनाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿181﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّ رَجُلًا زَارَ اَخًا لَهُ فِیْ قَرْيَةٍ اُخْرٰی، فَاَرْصَدَ اللهُ لَهُ عَلٰی مَدْرَجَتِهِ مَلَكًا، فَلَمَّا اَتٰی عَلَيْهِ قَالَ: اَيْنَ تُرِيْدُ؟ قَالَ: اُرِيْدُ اَخًا لِیْ فِیْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ، قَالَ: هَلْ لَكَ عَلَيْهِ مِنْ نِعْمَةٍ تَرُبُّهَا؟ قَالَ: لَا، غَيْرَ اَنِّیْ اَحْبَبْتُهُ فِی اللهِ عَزَّوَجَلَّ، قَالَ: فَاِنِّیْ رَسُوْلُ اللهِ اِلَيْكَ، بِاَنَّ اللهَ قَدْ اَحَبَّكَ كَمَا اَحْبَبْتَهُ فِيْهِ۔

رواه مسلم، باب فضل الحب فی الله تعالی، رقم: ٦٥٤٩

181. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक शख़्स अपने (मुसलमान) भाई से दूसरी बस्ती में मुलाक़ात के लिए रवाना हुआ। अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स के रास्ते पर एक फ़रिश्ते को बिठा दिया (जब वह शख़्स उस फ़रिश्ते के क़रीब पहुंचा तो) फ़रिश्ते ने उससे पूछा : तुम्हारा कहां जाने का इरादा है? उस शख़्स ने कहा : मैं उस बस्ती में रहने वाले अपने एक भाई से मिलने जा रहा हूं। फ़रिश्ते ने पूछा : क्या तुम्हारा उस पर कोई हक़ है जिसको लेने के लिए जा रहे हो? उस शख़्स ने कहा : नहीं मेरे जाने की वजह सिर्फ़ यह है कि मुझे उससे अल्लाह तआ़ला के लिए मुहब्बत है। फ़रिश्ते ने कहा : मुझे अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे पास यह बताने के लिए भेजा है कि जिस तरह तुम इस भाई से महज़ अल्लाह तआ़ला की वजह से मुहब्बत करते हो अल्लाह तआ़ला भी तुम से मुहब्बत करते हैं। (मुस्लिम)

﴿182﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَجِدَ طَعْمَ الْاِيْمَانِ فَلْيُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ اِلَّا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ۔

رواه احمد والبزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١/٢٦٨

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह पसन्द करे कि उसे ईमान का ज़ायक़ा हासिल हो जाए तो उसे चाहिए कि महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी के लिए दूसरे (मुसलमान) से मुहब्बत करे। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿183﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ يَعْنِی ابْنَ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنَ الْاِيْمَانِ اَنْ يُحِبَّ الرَّجُلُ رَجُلًا لَا يُحِبُّهُ اِلَّا لِلّٰهِ مِنْ غَيْرِ مَالٍ اَعْطَاهُ فَذٰلِكَ الْاِيْمَانُ۔

رواه الطبرانی فی الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٤٨٥

183. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक ईमान (की निशानियों) में से है कि एक शख़्स दूसरे से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए मुहब्बत करे, जबकि दूसरे शख़्स ने उसको माल (व दुन्यावी फ़ायदा वग़ैरह कुछ) नहीं दिया हो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए मुहब्बत करना यह ईमान (का कामिल दर्जा) है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿184﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا تَحَابَّ رَجُلَانِ فِي اللّٰهِ تَعَالٰى اِلَّا كَانَ اَفْضَلُهُمَا اَشَدَّ حُبًّا لِصَاحِبِهٖ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١٧١/٤

184. हज़रत अनस ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो दो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए एक दूसरे से मुहब्बत करें, उनमें अफ़ज़ल वह शख़्स है जो अपने साथी से ज़्यादा मुहब्बत करता हो।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿185﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ رَجُلًا لِلّٰهِ فَقَالَ: اِنِّيْ اُحِبُّكَ لِلّٰهِ فَدَخَلَا جَمِيْعًا الْجَنَّةَ، فَكَانَ الَّذِيْ اَحَبَّ اَرْفَعَ مَنْزِلَةً مِنَ الْاٰخَرِ، وَاَحَقَّ بِالَّذِيْ اَحَبَّ لِلّٰهِ. رواه البزار باسناد حسن، الترغيب ١٧/٤

185. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए किसी शख़्स से मुहब्बत करे और (इस मुहब्बत का इज़्हार) यह कहकर करे, मैं अल्लाह तआ़ला के लिए तुम से मुहब्बत करता हूं, फिर वे दोनों जन्नत में दाख़िल हों, तो जिस शख़्स ने मुहब्बत की वह दूसरे के मुक़ाबले में ऊंचे दर्जे में होगा और उस दर्जे का ज़्यादा हक़दार होगा। (बज़्ज़ार, तर्ग़ीब)

﴿186﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَرْفَعُهُ قَالَ: مَامِنْ رَجُلَيْنِ تَحَابَّا فِي اللّٰهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ اِلَّا كَانَ اَحَبُّهُمَا اِلَى اللّٰهِ اَشَدَّهُمَا حُبًّا لِصَاحِبِهٖ. رواه الطبراني في الاوسط ورجاله رجال الصحيح غير المعافى بن سليمان وهو ثقة، مجمع الزوائد ٤٨٩/١٠

186. हज़रत अबुद्दर्दा ﷛ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : जो दो शख़्स आपस में एक दूसरे की ग़ैरमौजूदगी में अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए मुहब्बत करें तो उन दोनों में अल्लाह तआ़ला का ज़्यादा महबूब वह है जो अपने साथी

से ज़्यादा मुहब्बत करता हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿187﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ فِيْ تَوَادِّهِمْ وَتَرَاحُمِهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ، مَثَلُ الْجَسَدِ، إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى۔ رواه مسلم، باب تراحم المؤمنين......، رقم: ٦٥٨٦

187. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों की मिसाल एक दूसरे से मुहब्बत करने, एक दूसरे पर रहम करने और एक दूसरे पर शफ़क़त व मेहरबानी करने में बदन की तरह है। जब उसका एक उज़्व भी दुखता है तो उस दुखन की वजह से बदन के बाक़ी सारे आज़ा भी बुख़ार व बेख़्वाबी में उसके शरीक हाल हो जाते हैं। (मुस्लिम)

﴿188﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: الْمُتَحَابُّوْنَ فِي اللهِ فِيْ ظِلِّ الْعَرْشِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ، يَغْبِطُهُمْ بِمَكَانِهِمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ۔

رواه ابن حبّان، قال المحقق: اسناده جيد ٢/٣٣٨

188. हज़रत मुआज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिए आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले अर्श के साये में होंगे, जिस दिन अर्श के साए के अलावा कोई साया न होगा। अम्बिया और शुहदा उनके ख़ास मर्तबा और मक़ाम की वजह से उन पर रश्क करेंगे। (इब्ने हब्बान)

﴿189﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: حُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَحَابِّيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَنَاصِحِيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَزَاوِرِيْنَ فِيَّ، وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ عَلَى الْمُتَبَاذِلِيْنَ فِيَّ، وَهُمْ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالصِّدِّيْقُوْنَ بِمَكَانِهِمْ۔ رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده جيد ٢/٣٣٨، وعند احمد ٥/٢٣٩ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَحُقَّتْ مَحَبَّتِيْ لِلْمُتَوَاصِلِيْنَ فِيَّ۔ وعند مالك ص ٧٢٣ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَجَبَتْ مَحَبَّتِيْ لِلْمُتَجَالِسِيْنَ فِيَّ ۔ وعند الطبراني في الثلاثة عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَقَدْ حُقَّتْ مَحَبَّتِيْ لِلَّذِيْنَ يَتَصَادَقُوْنَ مِنْ أَجْلِيْ۔ مجمع الزوائد ١٠/٤٩٥

189. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से हदीसे क़ुदसी में अल्लाह तआला का यह इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब

है जो मेरी वजह से एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे की ख़ैरख़्वाही करते हैं, मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं और मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे पर ख़र्च करते हैं। वे नूर के मिम्बरों पर होंगे, उनके ख़ास मर्तबा की वजह से अम्बिया और सिद्दीक़ीन उन पर रश्क करेंगे। (इब्ने हब्बान)

हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे से ताल्लुक़ रखते हैं। (मुस्नद अहमद)

हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाजिब है जो मेरी वजह से एक दूसरे के साथ बैठते हैं। (मुअत्ता इमाम मालिक)

हज़रत अम्र बिन अबसा ﷺ की रिवायत में है कि मेरी मुहब्बत उन लोगों के लिए वाज़िब है जो मेरी वजह से एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿190﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: قَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: الْمُتَحَابُّوْنَ فِيْ جَلَالِيْ لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُوْرٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَاءُ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فی الحب فی الله، رقم: ٢٣٩٠

190. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह हदीसे क़ुदसी ब्यान करते हुए सुना : अल्लाह तआला फ़रमाते हैं वे बन्दे, जो मेरी अज़मत और जलाल की वजह से आपस में उलफ़त व मुहब्बत रखते हैं उनके लिए नूर के मिम्बर होंगे उन पर अम्बिया और शुहदा भी रशक करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿191﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ لِلّٰهِ جُلَسَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَنْ يَمِيْنِ الْعَرْشِ، وَكِلْتَا يَدَيِ اللهِ يَمِيْنٌ، عَلٰى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ وُجُوْهُهُمْ مِنْ نُوْرٍ، لَيْسُوْا بِاَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ وَلَا صِدِّيْقِيْنَ قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَنْ هُمْ؟ قَالَ: هُمُ الْمُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى.

رواه الطبرانی ورجاله وثقوا، مجمع الزوائد ٤٩١/١٠

191. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

बेशक क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के कुछ बन्दे अल्लाह तआ़ला के हमनशीन होंगे जो अ़र्श के दाएं जानिब होंगे और अल्लाह तआ़ला के दोनों हाथ दाहिने ही हैं। वह नूर के मेम्बरों पर बैठे होंगे उनके चेहरे नूर के होंगे, वें न अम्बिया होंगे न शुहदा और न सिद्दीक़ीन। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! वे कौन होंगे? इर्शाद फ़रमाया : ये वह लोग होंगे जो अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत व जलाल की वजह से एक दूसरे से मुहब्बत रखते थे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿192﴾ عَنْ اَبِیْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اسْمَعُوْا وَاعْقِلُوْا، وَاعْلَمُوْا اَنَّ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عِبَادًا لَیْسُوْا بِاَنْبِیَاءَ، وَلَاشُهَدَاءَ، یَغْبِطُهُمُ الْاَنْبِیَاءُ وَالشُّهَدَاءُ عَلٰی مَجَالِسِهِمْ وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللّٰهِ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْاَعْرَابِ مِنْ قَاصِیَةِ النَّاسِ وَاَلْوٰی بِیَدِهٖ اِلٰی نَبِیِّ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: یَا نَبِیَّ اللّٰهِ! نَاسٌ مِنَ النَّاسِ لَیْسُوا بِاَنْبِیَاءَ، وَلَا شُهَدَاءَ، یَغْبِطُهُمُ الْاَنْبِیَاءُ وَالشُّهَدَاءُ عَلٰی مَجَالِسِهِمْ وَقُرْبِهِمْ مِنَ اللّٰهِ اِنْعَتْهُمْ لَنَا یَعْنِیْ: صِفْهُمْ لَنَا، فَسُرَّ وَجْهُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ لِسُؤَالِ الْاَعْرَابِیِّ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: هُمْ نَاسٌ مِنْ اَفْنَاءِ النَّاسِ، وَنَوَازِعِ الْقَبَائِلِ لَمْ تَصِلْ بَیْنَهُمْ اَرْحَامٌ مُتَقَارِبَةٌ، تَحَابُّوْا فِی اللّٰهِ وَتَصَافَوْا یَضَعُ اللّٰهُ لَهُمْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ فَیُجْلِسُهُمْ عَلَیْهَا، فَیَجْعَلُ وُجُوْهَهُمْ نُوْرًا وَثِیَابَهُمْ نُوْرًا، یَفْزَعُ النَّاسُ یَوْمَ الْقِیَامَةِ وَلَا یَفْزَعُوْنَ، وَهُمْ اَوْلِیَاءُ اللّٰهِ الَّذِیْنَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ۔ رواه احمد ٥/٣٤٣

192. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! सुनो और समझो, और जान लो कि अल्लाह तआ़ला के कुछ बन्दे ऐसे हैं जो न नबी हैं और न शहीद हैं, उनके बैठने के ख़ास मक़ाम और अल्लाह तआ़ला से उनके ख़ास क़ुर्ब और ताल्लुक़ की वजह से अम्बिया और शुहदा उन पर रश्क करेंगे। एक देहाती आदमी ने जो मदीना मुनव्वरा से दूर (देहात का) रहने वाला आया हुआ था, (मुतवज्जह करने के लिए) अपने हाथ से रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ इशारा किया और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कुछ लोग ऐसे होंगे जो अम्बिया होंगे और न शुहदा। अम्बिया और शुहदा उनके बैठने के ख़ास मक़ाम और उनके अल्लाह तआ़ला से ख़ास क़ुर्ब और ताल्लुक़ की वजह से उन पर रश्क करेंगे। आप उनका हाल ब्यान फ़रमा दीजिए, यानी उनकी सिफ़ात ब्यान फ़रमा दीजिए। उस देहाती के सवाल से रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक चेहरे पर ख़ुशी के आसार ज़ाहिर हुए। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ये आम लोगों में से ग़ैर मारूफ़ अफ़राद और

मुख़्तलिफ़ क़बीलों के लोग होंगे जिनमें कोई क़रीबी रिश्तेदारियां भी नहीं होंगी। उन्होंने अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी के लिए एक दूसरे से ख़ालिस व सच्ची मुहब्बत की होगी। अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उनके लिए नूर के मिम्बर रखेंगे, जिन पर उनको बिठाएंगे। फिर अल्लाह तआ़ला उनके चेहरों और कपड़ों को नूर वाला बना देंगे। क़ियामत के दिन जब आम लोग घबरा रहे होंगे उन पर किसी क़िस्म की घबराहट न होगी। वह अल्लाह तआ़ला के दोस्त हैं उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा ओर न ही वह ग़मगीन होंगे। (मुस्नद्र अहमद)

﴿193﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَيْفَ تَقُوْلُ فِيْ رَجُلٍ اَحَبَّ قَوْمًا وَلَمْ يَلْحَقْ بِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ۔ رواه البخاری، باب علامة الحب فی الله...، رقم: ٦١٦٩

193. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷛ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपका उस शख़्स के बारे में क्या ख़्याल है जिसको एक जमाअ़त से मुहब्बत है लेकिन वह उनके साथ नहीं हो सका? यानी अ़मल और हसनात में बिल्कुल उनके क़दम-ब-क़दम न हो सका। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आदमी जिससे मुहब्बत रखता है उसके साथ ही होगा यानी आख़िरत में उसके साथ कर दिया जाएगा। (बुख़ारी)

﴿194﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا اَحَبَّ عَبْدٌ عَبْدًا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا اَكْرَمَ رَبَّهُ عَزَّوَجَلَّ۔ رواه احمد ٥/٢٥٩

194. हज़रत अबू उमामा ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस बन्दे ने अल्लाह तआ़ला के लिए किसी बन्दे से मुहब्बत की, उसने अपने रब ज़ुलजलाल की ताज़ीम की। (मुस्नद अहमद)

﴿195﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ. قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ الْحُبُّ فِی اللّٰهِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰهِ۔ رواه ابو داؤد، باب مجانبة اهل الاهواء وبغضهم، رقم: ٤٥٩٩

195. हज़रत अबूज़र ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे अफ़ज़ल अ़मल अल्लाह तआ़ला के लिए किसी से मुहब्बत करना और अल्लाह तआ़ला के लिए किसी से दुश्मनी करना है। (अबूदाऊद)

﴿196﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ اَتٰى اَخَاهُ يَزُوْرُهُ فِي اللهِ اِلَّا نَادَاهُ مَلَكٌ مِنَ السَّمَاءِ اَنْ طِبْتَ، وَطَابَتْ لَكَ الْجَنَّةُ، وَاِلَّا قَالَ اللهُ فِيْ مَلَكُوْتِ عَرْشِهِ: عَبْدِيْ زَارَ فِيَّ، وَعَلَيَّ قِرَاهُ، فَلَمْ يَرْضَ لَهُ بِثَوَابٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ۔

(الحديث) رواه البزار وابويعلى باسناد جيد، الترغيب٣/٣٦٤

196. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा अपने (मुसलमान) भाई से अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर मुलाक़ात के लिए आता है तो आसमान से एक फ़रिश्ता उसको पुकार कर कहता है, तुम ख़ुशहाली की ज़िन्दगी बसर करो, तुम्हें जन्नत मुबारक हो और अल्लाह तआला अर्श वाले फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी ख़ातिर मुलाक़ात की, मेरे ज़िम्मे उसकी मेहमानी है और वह यह है कि अल्लाह तआला उसे बदले में जन्नत से कम नहीं देते। (बज़्ज़ार, अबू याला, तर्ग़ीब)

﴿197﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِذَا وَعَدَ الرَّجُلُ اَخَاهُ وَمِنْ نِيَّتِهِ اَنْ يَفِيَ فَلَمْ يَفِ وَلَمْ يَجِئْ لِلْمِيْعَادِ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ۔

رواه ابوداؤد، باب في العدة، رقم: ٤٩٩٥

197. हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी ने अपने भाई से कोई वादा किया और उसकी नीयत उस वादा को पूरा करने की थी लेकिन वह पूरा न कर सका और वक़्त पर न आ सका तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। (अबूदाऊद)

﴿198﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنٌ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء ان المستشار مؤتمن، رقم: ٢٨٢٢

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिससे किसी मामले में मशवरा किया जाए उस मामले में उस पर भरोसा किया गया है (लिहाज़ा उसे चाहिए कि मशवरा लेने वाले का राज़ ज़ाहिर न करे और वही मशवरा दे जो मशवरा लेने वाले के लिए ज़्यादा मुफ़ीद हो)। (तिर्मिज़ी)

﴿199﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا حَدَّثَ الرَّجُلُ بِالْحَدِيْثِ ثُمَّ الْتَفَتَ فَهِيَ اَمَانَةٌ۔ رواه ابوداؤد، باب في نقل الحديث، رقم: ٤٨٦٨

199. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

इर्शाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपनी कोई बात कहे और फिर इधर-उधर देखे तो वह बात अमानत है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स तुम से बात करे और वह तुम से यह न कहे कि उसको राज़ में रखना, लेकिन अगर उसके किसी अन्दाज़ से तुम्हें यह महसूस हो कि वह यह नहीं चाहता कि उसकी यह बात किसी के इल्म में आए मसलन बात करते हुए इधर-उधर देखना वग़ैरह तो उसकी यह बात अमानत ही है और अमानत ही की तरह तुम्हें उसकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। (मआ़रिफ़ुलहदीस)

﴾200﴿ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: اِنَّ اَعْظَمَ الذُّنُوْبِ عِنْدَ اللهِ اَنْ يَلْقَاهُ بِهَا عَبْدٌ بَعْدَ الْكَبَائِرِ الَّتِي نَهَى اللهُ عَنْهَا اَنْ يَمُوْتَ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ لَا يَدَعُ لَهُ قَضَاءً۔ رواه ابو داؤد، باب فی التشدید فی الدین، رقم: ٣٣٤٢

200. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि उनके कबीरा गुनाहों (शिर्क, ज़िना वग़ैरह) के बाद जिनसे अल्लाह तआ़ला ने सख़्ती से मना फ़रमाया है, सबसे बड़ा गुनाह यह है कि आदमी इस हाल में मरे कि उस पर क़र्ज़ हो और उसने अदाइगी का इन्तज़ाम न किया हो। (अबूदाऊद)

﴾201﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ حَتَّى يُقْضَى عَنْهُ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء ان نفس المؤمن......، رقم: ١٠٧٩

201. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन की रूह उसके क़र्ज़े की वजह से लटकी रहती है (राहत व रहमत की उस मंज़िल तक नहीं पहुंचती, जिसका नेक लोगों से वादा है) जब तक कि उसका क़र्ज़ा न अदा कर दिया जाए। (तिर्मिज़ी)

﴾202﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يُغْفَرُ لِلشَّهِيْدِ كُلُّ ذَنْبٍ، اِلَّا الدَّيْنَ۔ رواه مسلم، باب من قتل فی سبيل الله......، رقم: ٤٨٨٣

202. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़र्ज़ के अलावा शहीद के सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। (मुस्लिम)

﴾203﴿ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَحْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا بِفِنَاءِ

الْمَسْجِدِ حَيْثُ تُوْضَعُ الْجَنَائِزُ وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَيْنَا، فَرَفَعَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَصَرَهُ قِبَلَ السَّمَاءِ، فَنَظَرَ ثُمَّ طَأْطَأَ بَصَرَهُ وَوَضَعَ يَدَهُ عَلٰى جَبْهَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ! سُبْحَانَ اللهِ! مَاذَا نَزَلَ مِنَ التَّشْدِيْدِ! قَالَ: فَسَكَتْنَا يَوْمَنَا وَلَيْلَتَنَا فَلَمْ نَرَهَا خَيْرًا حَتّٰى أَصْبَحْنَا، قَالَ مُحَمَّدٌ: فَسَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَا التَّشْدِيْدُ الَّذِیْ نَزَلَ؟ قَالَ: فِی الدَّيْنِ، وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْأَنَّ رَجُلًا قُتِلَ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِیْ سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ عَاشَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ مَا دَخَلَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يُقْضٰى دَيْنُهُ۔ رواه احمد ٥/٢٨٩

203. हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श ﷺ से रिवायत है कि हम लोग एक दिन मस्जिद के मैदान में जहां जनाज़े लाकर रखे जाते थे, बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ भी हमारे दर्मियान तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने आसमान की तरफ़ मुबारक निगाह उठाई और कुछ देखा फिर निगाह नीची फ़रमाई और (एक ख़ास फ़िक्रमन्दाना अन्दाज़ में) अपना हाथ पेशानी मुबारक पर रखा और फ़रमाया : सुब्हानल्लाह! सुब्हानअल्लाह! किस क़द्र सख़्त वईद नाज़िल हुई है! हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि उस दिन और उस रात सुबह तक हम सब खामोश रहे और उस ख़ामोशी को हमने अच्छा न जाना। फिर (सुबह को) मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : क्या सख़्त वईद नाज़िल हुई थी? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सख़्त वईद क़र्ज़े के बारे में नाज़िल हुई। क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है अगर कोई आदमी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में शहीद हो, फिर ज़िन्दा हो फिर शहीद हो फिर ज़िन्दा हो और उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वह जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकता, जब तक कि उसका क़र्ज़ अदा न कर दिया जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿204﴾ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِیَّ ﷺ أُتِیَ بِجَنَازَةٍ لِيُصَلِّیَ عَلَيْهَا فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟ فَقَالُوْا: لَا، فَصَلّٰى عَلَيْهِ، ثُمَّ أُتِیَ بِجَنَازَةٍ أُخْرٰى فَقَالَ: هَلْ عَلَيْهِ مِنْ دَيْنٍ؟ قَالُوْا: نَعَمْ، قَالَ: فَصَلُّوْا عَلٰى صَاحِبِكُمْ، قَالَ أَبُوْقَتَادَةَ: عَلَیَّ دَيْنُهُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَصَلّٰى عَلَيْهِ۔ رواه البخاری، باب من تكفل عن ميت ...، رقم: ٢٢٩٥

204. हज़रत सलमा बिन अकवअ़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ के पास एक जनाज़ा लाया गया ताकि आप ﷺ उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या इस मैय्यत पर किसी का क़र्ज़ है? लोगों ने अ़र्ज़ किया : नहीं, आप ﷺ ने उसके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा दी। फिर दूसरा जनाज़ा लाया गया। आप

ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : इस मैय्यत पर किसी का क़र्ज़ है? लोगों ने अर्ज़ किया : जी हां। आप ﷺ ने सहाबा से इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अपने साथी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ लो। हज़रत अबू क़तादा رضي الله عنه ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इसका क़र्ज़ मैंने अपने ज़िम्मे ले लिया। आप ﷺ ने उनके जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ा दी। (बुख़ारी)

﴿205﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَخَذَ اَمْوَالَ النَّاسِ یُرِیْدُ اَدَاءَ هَا اَدَّی اللّٰهُ عَنْهُ، وَمَنْ اَخَذَ یُرِیْدُ اِتْلَافَهَا اَتْلَفَهُ اللّٰهُ۔

رواه البخاری،باب من اخذ اموال الناس......،رقم: ٢٣٨٧

205. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स लोगों से माल (उधार) ले और उसकी नीयत अदा करने की हो, तो अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ से अदा कर देंगे और जो शख़्स किसी से (उधार) ले और उसका इरादा ही अदा न करने का हो तो अल्लाह तआ़ला उसके माल को ज़ाय कर देंगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : "अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ से अदा कर देंगे" का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला उधार की अदाइगी में उसकी मदद फ़रमाएंगे। "अल्लाह तआ़ला उसके माल को ज़ाय कर देंगे" का मतलब यह है कि इस बुरी नीयत की वजह से उसे जानी या माली नुक़सान उठाना पड़ेगा। (फ़त्हुलबारी)

﴿206﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ جَعْفَرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: كَانَ اللّٰهُ مَعَ الدَّائِنِ حَتّٰی یَقْضِیَ دَیْنَهُ مَا لَمْ یَكُنْ فِیْمَا یَكْرَهُ اللّٰهُ۔

رواه ابن ماجه، باب من اذان دينا وهو ينوى قضائه، رقم: ٢٤٠٩

206. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला मक़रूज़ के साथ हैं, यहां तक कि वह अपना क़र्ज़ा अदा करे बशर्ते कि यह कर्ज़ा किसी ऐसे काम के लिए न लिया गया हो जो अल्लाह तआ़ला को नापसन्द है। (इब्ने माजा)

﴿207﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اسْتَقْرَضَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ سِنًّا، فَاَعْطٰی سِنًّا فَوْقَهُ، وَقَالَ: خِیَارُكُمْ مَحَاسِنُكُمْ قَضَاءً۔ رواه مسلم، باب جواز اقتراض الحيوان......،رقم: ٤١١١

207. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक ऊंट क़र्ज़

लिया। फिर आप ﷺ ने क़र्ज़े की अदायगी में उससे बड़ी उम्र वाला ऊंट दिया और इर्शाद फ़रमाया : तुममें सबसे बेहतर लोग वे हैं जो क़र्ज़ की अदायगी में बेहतर हों। (मुस्लिम)

﴾208﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ اَبِىْ رَبِيْعَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اسْتَقْرَضَ مِنِّى النَّبِىُّ ﷺ اَرْبَعِيْنَ اَلْفًا، فَجَاءَهُ مَالٌ فَدَفَعَهُ اِلَىَّ وَقَالَ: بَارَكَ اللهُ لَكَ فِىْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ، اِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْاَدَاءُ. رواه النسائى، باب الاستقراض، رقم: ٤٦٨٧

208. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीया ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे चालीस हज़ार क़र्ज़ लिया। फिर आप ﷺ के पास माल आया तो आप ﷺ ने मुझे अ़ता फ़रमा दिया और साथ ही मुझे दुआ़ देते हुए इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला तुम्हारे अह्ल व अ़याल और माल में बरकत दें। क़र्ज़ का बदला यह है कि अदा किया जाए और (क़र्ज़ देने वाले की) तारीफ़ और शुक्र किया जाए। (नसाई)

﴾209﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْكَانَ لِىْ مِثْلُ اُحُدٍ ذَهَبًا مَا يَسُرُّنِىْ اَنْ لَا يَمُرَّ عَلَىَّ ثَلَاثٌ وَعِنْدِىْ مِنْهُ شَىْءٌ اِلَّا شَىْءٌ اُرْصِدُهُ لِدَيْنٍ.

رواه البخارى، باب اداء الديون......، رقم: ٢٣٨٩

209. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि अगर मेरे पास उहुद पहाड़ जितना भी सोना हो, तो मुझे इसमें ख़ुशी होगी कि तीन दिन भी मुझ पर इस हाल में न गुज़रें कि उसमें से मेरे पास कुछ भी बाक़ी बचे, सिवाए उस मामूली रक़म के जो मैं क़र्ज़ की अदाइगी के लिए रख लूं। (बुख़ारी)

﴾210﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَا يَشْكُرِ النَّاسَ لَا يَشْكُرِ اللهَ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء فى الشكر......، رقم: ١٩٥٤

210. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोगों का शुक्रगुज़ार नहीं होता, वह अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : बाज़ शरह लिखन वालों ने हदीस का यह मतलब ब्यान किया है कि जो एहसान करने वाले बन्दों का शुक्रगुज़ार नहीं होता वह नाशुक्री की इस आदत की वजह से अल्लाह तआ़ला का शुक्रगुज़ार भी नहीं होता।

(मआ़रिफ़ुलहदीस)

﴾211﴿ عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صُنِعَ اِلَيْهِ مَعْرُوْفٌ فَقَالَ لِفَاعِلِهِ: جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا فَقَدْ اَبْلَغَ فِي الثَّنَاءِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن جيد غريب،باب ماجاء فی الثناء بالمعروف، رقم: ٢٠٣٥

211. हज़रत उसामा बिन ज़ैद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स पर एहसान किया गया और उसने एहसान करने वाले को **'जज़ाकल्लाहु ख़ैरा०'** (अल्लाह तआला तुमको उसका बेहतर बदला अ़ता फ़रमाए) कहा तो उसने (इस दुआ के ज़रिए) पूरी तारीफ़ की और शुक्र अदा कर दिया।

(तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इन लफ़्ज़ों में दुआ करना गोया इस बात का इज़्हार करना है कि मैं उसका बदला देने से आजिज़ हूं, इसलिए मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि वह तुम्हारे इस एहसान का बेहतर बदला अ़ता फ़रमाएं। इस तरह इस दुआइया कलिमे में एहसान करने वाले की तारीफ़ है। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴾212﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِيْنَةَ اَتَاهُ الْمُهَاجِرُوْنَ فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ مَا رَاَيْنَا قَوْمًا اَبْذَلَ مِنْ كَثِيْرٍ وَلَا اَحْسَنَ مُوَاسَاةً مِنْ قَلِيْلٍ مِنْ قَوْمٍ نَزَلْنَا بَيْنَ اَظْهُرِهِمْ لَقَدْ كَفَوْنَا الْمُؤْنَةَ وَاَشْرَكُوْنَا فِي الْمَهْنَاِ، حَتّٰى لَقَدْ خِفْنَا اَنْ يَذْهَبُوْا بِالْاَجْرِ كُلِّهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا، مَادَعَوْتُمُ اللهَ لَهُمْ وَاَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِمْ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب ثناء المهاجرين...... رقم: ٢٤٨٧

212. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि जब नबी करीम ﷺ हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, तो (एक दिन) मुहाजिरीन ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! जिनके पास हम आए हैं हमने इन-जैसे लोग नहीं देखे, यानी मदीना के अन्सार कि अगर उनके पास फ़राख़ी हो तो ख़ूब ख़र्च करते हैं और अगर कमी हो तो भी हमारी ग़मख़्वारी और मदद करते हैं। उन्होंने मेहनत और मशक़्क़त का हमारा हिस्सा तो अपने ज़िम्मे ले लिया है और नफ़ा में हमको शरीक कर लिया है। (उनके इस ग़ैरमामूली ईसार से) हमको अन्देशा है कि सारा अज्र व सवाब उन्हीं के हिस्से में न आ जाए (और आख़िरत में हम ख़ाली हाथ रह जाएं) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं ऐसा नहीं होगा जब तक इस एहसान के बदले में तुम उनके लिए दुआ करते रहोगे और उनकी तारीफ़ यानी उनका शुक्रिया अदा करते रहोगे। (तिर्मिज़ी)

﴿213﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عُرِضَ عَلَیْهِ رَیْحَانٌ، فَلَا یَرُدُّهُ، فَاِنَّهُ خَفِیْفُ الْمَحْمِلِ طَیِّبُ الرِّیْحِ۔

رواه مسلم، باب استعمال المسك......، رقم: ٥٨٨٣

213. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको हदिए के तौर पर ख़ुशबूदार फूल पेश किया जाए तो उसे चाहिए कि वह उसे रद्द न करे, क्योंकि वह बहुत हल्की और कम क़ीमत चीज़ है और उसकी ख़ुशबू भी अच्छी होती है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : फूल-जैसी कम क़ीमत चीज़ क़ुबूल करने से अगर इन्कार किया जाए तो इसका भी अन्देशा है कि पेश करने वाले को ख़्याल हो कि मेरी चीज़ कम क़ीमत होने की वजह से क़ुबूल नहीं की गई और उससे उसकी दिल शिकनी हो। (मआ़रिफ़ुलहदीस)

﴿214﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: ثَلَاثٌ لَا تُرَدُّ: الْوَسَائِدُ وَ الدُّهْنُ وَاللَّبَنُ [الدُّهْنُ یَعْنِیْ بِهِ الطِّیْبَ]

رواه الترمذی وقال هذا حدیث غریب، باب ماجاء فی کراهیة رد الطیب، رقم: ٢٧٩٠

214. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन चीज़ों को रद्द नहीं करना चाहिए। तकिया, ख़ुशबू और दूध। (तिर्मिज़ी)

﴿215﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ شَفَعَ لِاَخِیْهِ شَفَاعَةً فَاَهْدٰی لَهُ هَدِیَّةً عَلَیْهَا فَقَبِلَهَا فَقَدْ اَتٰی بَابًا عَظِیْمًا مِنْ اَبْوَابِ الرِّبَا۔

رواه ابوداؤد، باب فی الهدیة لقضاء الحاجة، رقم: ٣٥٤١

215. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अपने मुसलमान भाई के लिए (किसी मामले में) सिफ़ारिश की, फिर अगर उस शख़्स ने उस सिफ़ारिश करने वाले को (सिफ़ारिश के एवज़ में) कोई हदिया पेश किया और उसने वह हदिया क़ुबूल कर लिया, तो वह सूद के दरवाज़ों में से एक बड़े दरवाज़े में दाख़िल हो गया। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इसको सूद इस एतबार से फ़रमाया गया है कि वह सिफ़ारिश करने वाले को बग़ैर किसी एवज़ के हासिल हुआ है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾216﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ لَهُ ابْنَتَانِ، فَيُحْسِنُ اِلَيْهِمَا مَا صَحِبَتَاهُ اَوْ صَحِبَهُمَا، اِلَّا اَدْخَلَتَاهُ الْجَنَّةَ۔

رواه ابن حبّان، قال المحقق: اسناده ضعيف وهو حديث حسن، بشواهده ٢٠٧/٧

216. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस मुसलमान की दो बेटियां हों, फिर जब तक वे उसके पास रहें या यह उनके पास रहे वह उनके साथ अछा बरताव करे तो वह दोनों बेटियां उसको ज़रूर जन्नत में दाख़िल करा देंगी। (इब्ने हब्बान)

﴾217﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ دَخَلْتُ اَنَا وَهُوَ الْجَنَّةَ كَهَاتَيْنِ، وَاَشَارَ بِاِصْبَعَيْهِ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء فی النفقة علی البنات والاخوات، رقم: ١٩١٤

217. हज़रत अनस ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दो लड़कियों की परवरिश और देखभाल की वह और मैं जन्नत में इस तरह इकट्ठे दाख़िल होंगे जैसे दो उंगलियां। (यह इर्शाद फ़रमा कर आप ﷺ ने अपनी दोनों उंगलियों से इशारा फ़रमाया।) (तिर्मिज़ी)

﴾218﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَلِيْ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ شَيْئًا، فَاَحْسَنَ اِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ۔

رواه البخاری،باب رحمة الولد......،رقم: ٥٩٩٥

218. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने उन बेटियों के किसी मामले की ज़िम्मेदारी ली और उनके साथ अच्छा सुलूक किया तो, ये बेटियां उसके लिए दोज़ख़ की आग से बचाव का सामान बन जाएंगी। (बुख़ारी)

﴾219﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَتْ لَهُ ثَلَاثُ بَنَاتٍ اَوْ ثَلَاثُ اَخَوَاتٍ اَوِ ابْنَتَانِ اَوْ اُخْتَانِ فَاَحْسَنَ صُحْبَتَهُنَّ وَاتَّقَى اللهَ فِيْهِنَّ فَلَهُ الْجَنَّةُ۔

رواه الترمذی،باب ماجاء فی النفقة علی البنات والاخوات،رقم: ١٩١٦

219. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों और वह उनके साथ अच्छा मामला रखे और उनके हुक़ूक़ के बारे में अल्लाह

तआला से डरता रहे तो उसके लिए जन्नत है। (तिर्मिज़ी)

﴿220﴾ عَنْ اَيُّوْبَ بْنِ مُوْسٰى رَحِمَهُ اللّٰهُ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَا نَحَلَ وَالِدٌ وَلَدًا مِنْ نَحْلٍ اَفْضَلَ مِنْ اَدَبٍ حَسَنٍ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فی ادب الولد، رقم: ١٩٥٢

220. हज़रत ऐय्यूब रहमतुल्लाह अ़लैह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी बाप ने अपनी औलाद को अच्छी तालीम व तर्बियत से बेहतर कोई तोहफ़ा नहीं दिया। (तिर्मिज़ी)

﴿221﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ وُلِدَتْ لَهُ اُنْثٰى فَلَمْ يَئِدْهَا وَلَمْ يُهِنْهَا وَلَمْ يُؤْثِرْ وَلَدَهُ يَعْنِى الذَّكَرَ عَلَيْهَا اَدْخَلَهُ اللّٰهُ بِهَا الْجَنَّةَ۔

رواه الحاكم وقال: هذاحديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١٧٧/٤

221. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के यहां लड़की पैदा हो, फिर वह न तो उसे ज़िन्दा दफ़न करे (जैसा कि जाहिलियत के ज़माने में होता था) और न उससे ज़िल्लत आमेज़ सुलूक करे और न (बरताव में) लड़कों को उस पर तर्जीह दे, यानी उसके साथ वैसा ही बरताव करे, जैसा कि लड़कों के साथ करता है तो अल्लाह तआला लड़की के साथ उस हुस्ने सुलूक के बदले उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿222﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ اَبَاهُ اَتٰى بِهٖ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ: اِنِّىْ نَحَلْتُ ابْنِىْ هٰذَا غُلَامًا، فَقَالَ: اَكُلَّ وَلَدِكَ نَحَلْتَ مِثْلَهُ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: فَارْجِعْهُ

رواه البخارى، باب الهبة للولد، رقم: ٢٥٨٦

222. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत है कि मेरे वालिद रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में मुझे लेकर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मैंने अपने इस बेटे को गुलाम हदिया किया है। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे पूछा : क्या तुमने अपने सब बच्चों को भी इतना ही दिया है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : गुलाम को वापस ले लो। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि औलाद को हदिया करने में बराबरी होनी चाहिए।

﴾223﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ وُلِدَ لَہٗ وَلَدٌ فَلْیُحْسِنِ اسْمَہٗ وَاَدَبَہٗ فَاِذَا بَلَغَ فَلْیُزَوِّجْہُ فَاِنْ بَلَغَ وَلَمْ یُزَوِّجْہُ فَاَصَابَ اِثْمًا فَاِنَّمَا اِثْمُہٗ عَلٰی اَبِیْہِ. رواہ البیھقی فی شعب الایمان ٦/٤٠١

223. हज़रत अबू सईद और हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसका कोई बच्चा पैदा हो तो उसका अच्छा नाम रखे और उसकी अच्छी तर्बियत करे। फिर जब वह बालिग़ हो जाए, तो उसका निकाह कर दे। अगर बालिग़ हो जाने के बाद भी (अपनी ग़फ़लत और लापरवाही से) उसका निकाह नहीं किया और वह गुनाह में मुब्तला हो गया तो उसका गुनाह उसके बाप पर होगा। (बैहक़ी)

﴾224﴿ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: جَاءَ اَعْرَابِیٌّ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: تُقَبِّلُوْنَ الصِّبْیَانَ؟ فَمَا نُقَبِّلُھُمْ، فَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اَوَ اَمْلِکُ لَکَ اَنْ نَزَعَ اللّٰہُ مِنْ قَلْبِکَ الرَّحْمَۃَ.

رواہ البخاری، باب رحمۃ الولد وتقبیلہ ومعانقتہ، رقم: ٥٩٩٨

224. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक देहात के रहने वाले शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि तुम लोग बच्चों को प्यार करते हो? हम तो उनको प्यार नहीं करते। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दिल से रहमत का माद्दा निकाल दिया है तो उसमें मेरा क्या अख़्तियार है। (बुख़ारी)

﴾225﴿ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: تَھَادَوْا فَاِنَّ الْھَدِیَّۃَ تُذْھِبُ وَحَرَ الصَّدْرِ، وَلَا تَحْقِرَنَّ جَارَۃٌ لِجَارَتِھَا وَلَوْ شِقَّ فِرْسِنِ شَاۃٍ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث غریب، باب فی حث النبی ﷺ علی الھدیۃ، رقم: ٢١٣٠

225. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे को हदिया दिया करो, हदिया दिलों की रंजिश को दूर करता है। कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के हदिया को हक़ीर न समझे, अगरचे वह बकरी के खुर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो (इसी तरह देने वाली भी इस हदिया को कम न समझे)। (तिर्मिज़ी)

﴾226﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: لَا یَحْقِرَنَّ اَحَدُکُمْ شَیْئًا مِنَ الْمَعْرُوْفِ، وَاِنْ لَمْ یَجِدْ فَلْیَلْقَ اَخَاہُ بِوَجْہٍ طَلِیْقٍ، وَاِنِ اشْتَرَیْتَ لَحْمًا اَوْ طَبَخْتَ قِدْرًا

فَاَكْثِرْ مَرَقَتَهٗ وَاغْرِفْ لِجَارِكَ مِنْهُ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح،باب ماجاء فی اکثار ماء المرقة، رقم: ۱۸۳۳

226. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई थोड़ी-सी नेकी को भी मामूली न समझे। अगर कोई दूसरी नेकी न हो सके तो यह भी नेकी है कि अपने भाई के साथ ख़न्दापेशानी से मिल लिया करे। जब तुम (पकाने की ग़रज़ से) गोश्त ख़रीदो या सालन की हांडी पकाओ, तो शोरबा बढ़ा दिया करो और उसमें से कुछ निकाल कर अपने पड़ोसी को दे दिया करो।

(तिर्मिज़ी)

﴿227﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَا یَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ لَا یَاْمَنُ جَارُهٗ بَوَائِقَهٗ۔

رواه مسلم،باب بيان تحريم ايذاء الجار، رقم: ۱۷۲

227. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी महफ़ूज़ न हो।

(मुस्लिम)

﴿228﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ كَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیُكْرِمْ جَارَهٗ قَالُوْا: یَارَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا حَقُّ الْجَارِ؟ قَالَ: اِنْ سَاَلَكَ فَاَعْطِهٖ، وَاِنِ اسْتَغَاثَكَ فَاَغِثْهُ، وَاِنِ اسْتَقْرَضَكَ فَاَقْرِضْهُ، وَاِنْ دَعَاكَ فَاَجِبْهُ، وَاِنْ مَرِضَ فَعُدْهُ، وَاِنْ مَاتَ فَشَیِّعْهُ، وَاِنْ اَصَابَتْهُ مُصِیْبَةٌ فَعَزِّهٖ، وَلَا تُؤْذِهٖ بِقُتَارِ قِدْرِكَ اِلَّا اَنْ تَغْرِفَ لَهٗ مِنْهَا، وَلَا تَرْفَعْ عَلَیْهِ الْبِنَاءَ لِتَسُدَّ عَلَیْهِ الرِّیْحَ اِلَّا بِاِذْنِهٖ۔

رواه الاصبهانی فی کتاب الترغيب ۱/۴۸۰،

وقال فی الحاشية: عزاه المنذری فی الترغيب ۳/۳۵۷ للمصنف بعد ان رواه من طرق اخری،ثم قال المنذری، لا يخفی ان كثرة هذه الطرق تكسبه قوة والله اعلم

228. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसके लिए लाज़िम है कि अपने पड़ोसी के साथ इकराम का मामला करे। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! पड़ोसी का हक़ क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वह तुम से कुछ मांगे तो उसे दो, अगर वह तुम से मदद चाहे, तो तुम उसकी मदद करो, अगर वह अपनी ज़रूरत के लिए क़र्ज़ मांगे उसे क़र्ज़ दो, अगर वह तुम्हारी दावत करे तो उसे क़ुबूल करो, अगर वह बीमार हो जाए तो उसकी बीमारपुर्सी करो

अगर उसका इंतिक़ाल हो जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ, अगर उसे कोई मुसीबत पहुंचे तो उसे तसल्ली दो, अपनी हांडी में गोश्त पकने की महक से उसे तकलीफ़ न पहुंचाओ (क्योंकि हो सकता है कि तंगदस्ती की वजह से वह गोश्त न पका सकता हो) मगर यह कि उसमें से कुछ उसके घर भी भेज दो और अपनी इमारत उसकी इमारत से इस तरह बुलन्द न करो कि उसके घर की हवा रुक जाए मगर यह कि उसकी इजाज़त से हो। (तर्ग़ीब)

﴿229﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ الْمُؤْمِنُ الَّذِيْ يَشْبَعُ وَجَارُهُ جَائِعٌ. رواه الطبراني وابو يعلى ورجاله ثقات،مجمع الزوائد ٨/٣٠٦

229. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जो ख़ुद तो पेट भर कर खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे। (तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿230﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنَّ فُلاَنَةَ يُذْكَرُ مِنْ كَثْرَةِ صَلاَتِهَا وَصِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا غَيْرَ اَنَّهَا تُؤْذِيْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا قَالَ: هِيَ فِي النَّارِ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَاِنَّ فُلاَنَةَ يُذْكَرُ مِنْ قِلَّةِ صِيَامِهَا وَصَدَقَتِهَا وَصَلاَتِهَا وَاِنَّهَا تَصَدَّقُ بِالْاَثْوَارِ مِنَ الْاَقِطِ وَلَا تُؤْذِيْ جِيْرَانَهَا بِلِسَانِهَا قَالَ: هِيَ فِي الْجَنَّةِ. رواه احمد ٢/٤٤٠

230. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फ़्लानी औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह कसरत से नमाज़, रोज़ा और सदक़ा ख़ैरात करने वाली है, (लेकिन) अपने पड़ोसियों को अपनी ज़ुबान से तकलीफ़ देती है, यानी बुरा-भला कहती हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह दोज़ख़ में है। फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फ़्लानी औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह नफ़्ली रोज़ा, सदक़ा ख़ैरात और नमाज़ तो कम करती है, बल्कि उसका सदक़ा व ख़ैरात पनीर के चन्द टुकड़ों से आगे नहीं बढ़ता, लेकिन अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से कोई तकलीफ़ नहीं देती। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह जन्नत में है। (मुस्नद अहमद)

﴿231﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ يَاْخُذُ عَنِّيْ هٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ فَيَعْمَلُ بِهِنَّ اَوْيُعَلِّمُ مَنْ يَعْمَلُ بِهِنَّ؟ فَقَالَ اَبُوْهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قُلْتُ: اَنَا يَارَسُوْلَ اللهِ! فَاَخَذَ بِيَدِيْ فَعَدَّ خَمْسًا وَقَالَ: اتَّقِ الْمَحَارِمَ تَكُنْ اَعْبَدَ النَّاسِ، وَارْضَ بِمَا

قَسَمَ اللهُ لَكَ تَكُنْ اَغْنَى النَّاسِ، وَاَحْسِنْ اِلٰى جَارِكَ تَكُنْ مُؤْمِنًا، وَاَحِبَّ لِلنَّاسِ مَاتُحِبُّ لِنَفْسِكَ تَكُنْ مُسْلِمًا وَلَا تُكْثِرِ الضَّحِكَ فَاِنَّ كَثْرَةَ الضَّحِكِ تُمِيْتُ الْقَلْبَ.

رواه الترمذي وقال: هذاحديث غريب،باب من اتقى المحارم فهو اعبد النّاس،رقم: ٢٣٠٥

231. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कौन है जो मुझसे ये बातें सीखे, फिर उन पर अ़मल करे या उन लोगों को सिखाए जो उन पर अ़मल करें? हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं तैयार हूं। आप ﷺ ने (मुहब्बत की वजह से) मेरा हाथ अपने मुबारक हाथ में ले लिया और गिन कर ये पांच बातें इर्शाद फ़रमाईं : हराम से बचो, तुम सबसे बड़े इबादत गुज़ार बन जाओगे। अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ तुम्हें दिया है उस पर राज़ी रहो तुम सबसे बड़े ग़नी बन जाओगे। अपने पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करो तुम मोमिन बन जाओगे। जो अपने लिए पसन्द करते हो वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो तुम (कामिल) मुसलमान बन जाओगे। ज़्यादा हँसा न करो, क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा कर देता है। (तिर्मिज़ी)

﴾232﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ لِيْ اَنْ اَعْلَمَ اِذَا اَحْسَنْتُ وَاِذَا اَسَاْتُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِذَا سَمِعْتَ جِيْرَانَكَ يَقُوْلُوْنَ قَدْ اَحْسَنْتَ فَقَدْ اَحْسَنْتَ، وَاِذَا سَمِعْتَهُمْ يَقُوْلُوْنَ قَدْ اَسَاْتَ فَقَدْ اَسَاْتَ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح،مجمع الزوائد ١٠/٤٨٠

232. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कैसे मालूम हो कि मैंने यह काम अच्छा किया है और यह काम बुरा किया है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने अच्छा किया तो यक़ीनन तुमने अच्छा किया और जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने बुरा किया, तो यक़ीनन तुमने बुरा किया। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾233﴿ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِيْ قُرَادٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّاَ يَوْمًا فَجَعَلَ اَصْحَابُهُ يَتَمَسَّحُوْنَ بِوَضُوْئِهٖ فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ: مَايَحْمِلُكُمْ عَلٰى هٰذَا؟ قَالُوْا: حُبُّ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ سَرَّهُ اَنْ يُحِبَّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ اَوْيُحِبَّهُ اللهُ وَرَسُوْلُهُ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهُ اِذَا حَدَّثَ وَلْيُؤَدِّ اَمَانَتَهُ اِذَا اؤْتُمِنَ وَلْيُحْسِنْ جِوَارَمَنْ جَاوَرَهُ.

رواه البيهقي في شعب الايمان،مشكوٰة المصابيح،رقم: ٤٩٩٠

233. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी क़ुराद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने एक दिन वुज़ू फ़रमाया तो आप ﷺ के सहाबा किराम ﷺ आप के वुज़ू का बचा हुआ पानी ले कर (अपने चेहरे और जिस्मों पर) मलने लगे। आप ﷺ ने फ़रमाया : कौन-सी चीज़ तुम्हें इस काम पर आमादा कर रही है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इस बात को पसन्द करता है कि वह अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल से मुहब्बत करे या अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल उससे मुहब्बत करें तो उसे चाहिए कि जब बात करे तो सच बोले, जब कोई अमानत उसके पास रखवाई जाए, तो उसको अदा करे और अपने पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक किया करे। (बैहक़ी, मिशकात)

﴾234﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوْصِيْنِي بِالْجَارِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ۔

رواه البخاري، باب الوصاءة بالجار، رقم: ٦٠١٤

234. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील अ़लैहिस्सलाम मुझे पड़ोसी के हक़ के बारे में इस क़द्र वसीयत करते रहे कि मुझे ख़्याल होने लगा कि वह पड़ोसी को वारिस बना देंगे। (बुख़ारी)

﴾235﴿ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَوَّلُ خَصْمَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جَارَانِ۔

رواه احمد باسناد حسن، مجمع الزوائد ١٠/٦٣٢

235. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन (झगड़ने वालों में) सबसे पहले दो झगड़ने वाले पड़ोसी पेश होंगे, यानी बन्दों के हुक़ूक़ में से सबसे पहला मामला दो पड़ोसियों का पेश होगा। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾236﴿ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يُرِيْدُ اَحَدٌ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ بِسُوْءٍ اِلَّا اَذَابَهُ اللهُ فِي النَّارِ ذَوْبَ الرَّصَاصِ، اَوْ ذَوْبَ الْمِلْحِ فِي الْمَاءِ۔

رواه مسلم، باب فضل المدينة......، رقم: ٣٣١٩

236. हज़रत साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मदीना वालों के साथ किसी क़िस्म की बुराई का इरादा करेगा, अल्लाह तआ़ला उसको (दोज़ख़ की) आग में इस तरह पिघला देंगे जिस तरह सीसा पिघल जाता है या जिस तरह पानी में नमक घुल जाता है। (मुस्लिम)

﴾237﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَخَافَ اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ فَقَدْ اَخَافَ مَابَيْنَ جَنْبَيَّ۔

رواه احمد ورجاله رجال الصحيح،مجمع الزوائد ٣/٦٥٨

237. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मदीना वालों को डराता है, वह मुझे डराता है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾238﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ، فَلْيَمُتْ بِالْمَدِيْنَةِ فَاِنِّيْ اَشْفَعُ لِمَنْ مَاتَ بِهَا۔

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٩/٥٧

238. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो इसकी कोशिश कर सके कि मदीना में उसको मौत आए, तो उसको चाहिए कि वह (इसकी कोशिश करे और) मदीना में मरे, मैं उन लोगों की ज़रूर शफ़ाअ़त करूंगा जो मदीना में मरेंगे (और वहां दफ़न होंगे)। (इब्ने हब्बान)

फ़ायदा : उलमा ने लिखा है शफ़ाअ़त से मुराद ख़ास क़िस्म की शफ़ाअ़त है वरना रसूलुल्लाह ﷺ की आ़म शफ़ाअ़त तो सारे ही मुसलमानों के लिए होगी, कोशिश करने और ताक़त रखने से मुराद यह है कि वहां आख़िर तक रहे।

﴾239﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَصْبِرُ عَلَى لَاْوَاءِ الْمَدِيْنَةِ وَشِدَّتِهَا اَحَدٌ مِنْ اُمَّتِيْ، اِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَوْ شَهِيْدًا۔

رواه مسلم،باب الترغيب في سكنى المدينة......،رقم: ٣٣٤٧

239. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरा जो उम्मती मदीना तैयबा के क़ियाम की मुशकिलात को बर्दाश्त करके यहां क़ियाम करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसका सिफ़ारशी या गवाह बनूंगा। (मुस्लिम)

﴾240﴿ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيْمِ فِي الْجَنَّةِ هٰكَذَا، وَاَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطٰى وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا۔

رواه البخاري،باب اللعان......،رقم: ٥٣٠٤

240. हज़रत सह्ल ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया, मैं

और यतीम की किफ़ालत करने वाला जन्नत में इस तरह (क़रीब) होंगे। नबी करीम ﷺ ने शहादत की और बीच की उंगली से इशारा फ़रमाया और उन दोनों के दर्मियान थोड़ी-सी कुशादगी रखी। (बुख़ारी)

﴿241﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَالِكٍ الْقُشَيْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ ضَمَّ يَتِيْمًا بَيْنَ اَبَوَيْنِ مُسْلِمَيْنِ اِلٰى طَعَامِهِ وَشَرَابِهِ حَتّٰى يُغْنِيَهُ اللّٰهُ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ۔ رواه احمد والطبراني وفيه: علي بن زيد وهو حسن الحديث وبقية رجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/٢٩٤

241. हज़रत अम्र बिन मालिक क़ुशैरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने ऐसे यतीम बच्चे को जिसके मां-बाप मुसलमान थे उसे अपने साथ खाने-पीने में शरीक किया यानी अपनी किफ़ालत में ले लिया, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने बच्चे को उन (की किफ़ालत से) बेनियाज़ कर दिया यानी वह अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी करने लगा, तो उस शख़्स के लिए जन्नत वाजिब हो गई। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿242﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْاَشْجَعِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَنَا وَامْرَاَةٌ سَفْعَاءُ الْخَدَّيْنِ كَهَاتَيْنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَاَوْمَا يَزِيْدُ بِالْوُسْطٰى وَالسَّبَّابَةِ، اِمْرَاَةٌ آمَتْ مِنْ زَوْجِهَا ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، حَبَسَتْ نَفْسَهَا عَلٰى يَتَامَاهَا حَتّٰى بَانُوْا اَوْمَاتُوا۔

رواه ابو داؤد، باب في فضل من عال يتامى، رقم: ٥١٤٩

242. हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं और वह औरत जिसका चेहरा (अपनी औलाद की परवरिश, देखभाल और मेहनत व मशक़्क़त की वजह से) स्याह पड़ गया हो, क़ियामत के दिन इस तरह होंगे। हदीस के रावी हज़रत यज़ीद रह० ने यह हदीस ब्यान करने के बाद शहादत की उंगली और बीच की उंगली से इशारा किया (मतलब यह था कि जिस तरह ये दोनों उंगलियां एक दूसरे के क़रीब हैं उसी तरह क़ियामत के दिन आप ﷺ और वह औरत क़रीब होंगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने स्याह चेहरे वाली औरत की तशरीह करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि इससे मुराद) वह औरत है जो बेवा हो गई हो और हुस्न व जमाल, इज़्ज़त व मनसब वाली होने के बावजूद अपने यतीम बच्चों (की परवरिश) की ख़ातिर दूसरा निकाह न करे, यहां तक कि वह बच्चे बालिग़ होने की वजह से अपनी मां के मुहताज न रहें या उन्हें मौत आ जाए। (अबूदाऊद)

﴿243﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا قَعَدَ یَتِیْمٌ مَعَ قَوْمٍ عَلٰی قَصْعَتِہِمْ فَیَقْرُبَ قَصْعَتَہُمْ شَیْطَانٌ۔

رواہ الطبرانی فی الا وسط، وفیہ: الحسن بن واصل،وھو الحسن بن دینار وھو ضعیف لسوء حفظہ، وھو حدیث حسن واللہ اعلم،مجمع الزّوائد ۲۹۳/۸

243. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन लोगों के साथ कोई यतीम उनके बरतन में खाने के लिए बैठे तो शैतान उनके बरतन के क़रीब नहीं आता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿244﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَجُلًا شَکَا اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ قَسْوَۃَ قَلْبِہٖ فَقَالَ: امْسَحْ رَاْسَ الْیَتِیْمِ وَاَطْعِمِ الْمِسْکِیْنَ۔

رواہ احمد ورجالہ رجال الصحیح،مجمع الزوائد ۲۹۳/۸

244. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से अपनी सख़्तदिली की शिकायत की। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यतीम के सिर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीनों को खाना खिलाया करो।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿245﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَیْمٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ یَرْفَعُہٗ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ: اَلسَّاعِیْ عَلَی الْاَرْمَلَۃِ وَالْمِسْکِیْنِ کَالْمُجَاھِدِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ اَوْ کَالَّذِیْ یَصُوْمُ النَّھَارَ وَیَقُوْمُ اللَّیْلَ۔

رواہ البخاری،باب الساعی علی الارملۃ، رقم: ۶۰۰۶

245. हज़रत सफ़्वान बिन सुलैम ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेवा औरत और मिस्कीन की ज़रूरत में दौड़-धूप करने वाले का सवाब अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने वाले के सवाब की तरह है या उसका सवाब उस शख़्स के सवाब की तरह है जो दिन को रोज़ा रखता हो और रात भर इबादत करता हो। (बुख़ारी)

﴿246﴾ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ وَاَنَا خَیْرُکُمْ لِاَھْلِیْ۔ (وھو جزء من الحدیث) رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ صحیح ۴۸۴/۹

246. हज़रत आइशा रज़ियलाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें बेहतर शख़्स वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे अच्छा

हो और मैं तुम सबमें अपने घर वालों के लिए ज़्यादा अच्छा हूं। (इब्ने हब्बान)

﴾247﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ عَجُوْزٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عِنْدِيْ فَقَالَ لَهَا: مَنْ اَنْتِ؟ فَقَالَتْ: اَنَا جُثَامَةُ الْمَدَنِيَّةُ قَالَ: كَيْفَ حَالُكُمْ:؟ كَيْفَ اَنْتُمْ بَعْدَنَا؟ قَالَتْ: بِخَيْرٍ بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! فَلَمَّا خَرَجَتْ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ تُقْبِلُ عَلٰى هٰذِهِ الْعَجُوْزِ هٰذَا الْاِقْبَالَ فَقَالَ: اِنَّهَا كَانَتْ تَاْتِيْنَا اَيَّامَ خَدِيْجَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا وَاِنَّ حُسْنَ الْعَهْدِ مِنَ الْاِيْمَانِ۔ اخرجه الحاكم بنحوه وقال حديث صحيح على شرط الشيخين وليس له علة ووافقه الذهبي ١/١٦-الاصابة ٤/٢٧٢

247. हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि एक बूढ़ी औरत नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुई, जबकि आप ﷺ मेरे पास थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम कौन हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : मैं जुसामा मदनीया हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा क्या हाल है? हमारे (मदीना आने के) बाद तुम्हारे हालात कैसे रहे? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान! सब ख़ैरियत रही। जब वह चली गई तो मैंने (हैरत से) अ़र्ज़ किया : इस बुढ़िया की तरफ़ आपने इतनी तवज्जोह फ़रमाई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह ख़दीजा की ज़िन्दगी में हमारे पास आया करती थीं और पुरानी जान पहचान की रियायत करना ईमान (की अ़लामत) है। (इसाबा)

﴾248﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً، اِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ اَوْ قَالَ غَيْرَهُ۔ رواه مسلم،باب الوصية بالنساء،رقم: ٣٦٤٥

248. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन मर्द की यह शान नहीं कि अपनी मोमिना बीवी से बुग़्ज़ रखे। अगर उसकी एक आदत उसे नापसन्द होगी तो दूसरी पसन्दीदा भी होगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने इस हदीस शरीफ़ में हुस्ने मुआ़शरत का एक मुख़्तसर उसूल बता दिया कि एक इंसान में अगर कोई बुरी आदत है तो उसमें कुछ ख़ूबियां भी होंगी, ऐसा कौन होगा जिसमें कोई बुराई न हो या कोई ख़ूबी न हो। लिहाज़ा बुराइयों से चश्मपोशी की जाए और ख़ूबियों को देखा जाए। (तर्जमानुस्सुन्नः)

﴿249﴾ عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كُنْتُ آمِرًا اَحَدًا اَنْ يَسْجُدَ لِاَحَدٍ لَاَمَرْتُ النِّسَاءَ اَنْ يَسْجُدْنَ لِاَزْوَاجِهِنَّ لِمَا جَعَلَ اللهُ لَهُمْ عَلَيْهِنَّ مِنَ الْحَقِّ۔

رواه ابوداؤد، باب فی حق الزوج علی المراة، رقم: ٢١٤٠

249. हज़रत क़ैस बिन साद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर मैं किसी को किसी के सामने सज्दा करने का हुक्म देता, तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सज्दा करें इस हक़ की वजह से जो अल्लाह तआला ने उनके शौहरों का उन पर मुक़र्रर फ़रमाया है। (अबूदाऊद)

﴿250﴾ عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيُّمَا امْرَاَةٍ مَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ، دَخَلَتِ الْجَنَّةَ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی حق الزوج علی المراة، رقم: ١١٦١

250. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियलाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस औरत का इस हाल में इंतिक़ाल हो कि उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नत में जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴿251﴾ عَنِ الْاَحْوَصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اَلَا وَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا، فَاِنَّمَا هُنَّ عَوَانٍ عِنْدَكُمْ لَيْسَ تَمْلِكُوْنَ مِنْهُنَّ شَيْئًا غَيْرَ ذٰلِكَ، اِلَّا اَنْ يَاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ، فَاِنْ فَعَلْنَ فَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ، وَاضْرِبُوْهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ، فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا، اَلَا اِنَّ لَكُمْ عَلٰى نِسَائِكُمْ حَقًّا، وَلِنِسَائِكُمْ عَلَيْكُمْ حَقًّا، فَاَمَّا حَقُّكُمْ عَلٰى نِسَائِكُمْ فَلَا يُوْطِئْنَ فُرُشَكُمْ مَنْ تَكْرَهُوْنَ، وَلَا يَاْذَنَّ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لِمَنْ تَكْرَهُوْنَ، اَلَا وَحَقُّهُنَّ عَلَيْكُمْ اَنْ تُحْسِنُوْا اِلَيْهِنَّ فِيْ كِسْوَتِهِنَّ وَطَعَامِهِنَّ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء فی حق المراة علی زوجها، رقم: ١١٦٣

251. हज़रत अह्वस ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ग़ौर से सुनो! औरतों के साथ अच्छा सुलूक किया करो, इसलिए कि वह तुम्हारे पास क़ैदी हैं। तुम उनसे अपनी इस्मत और तुम्हारे माल की हिफ़ाज़त वग़ैरह के अलावा और कुछ अख़्तियार नहीं रखते। हां, अगर वे किसी खुली बेहयाई का इरतिकाब करें तो फिर उनको उनके बिस्तरों पर तन्हा छोड़ दो, यानी उनके साथ सोना छोड़ दो लेकिन घर ही में रहो और हल्की मार मारो। फिर अगर वे तुम्हारी

फ़रमांबरदारी अख़्तियार कर लें तो उन पर (ज़्यादती करने के लिए) बहाना मत ढूंढो। ग़ौर से सुनो! तुम्हारा हक़ तुम्हारी बीवियों पर है (उसी तरह) तुम्हारी बीवीयों का तुम पर हक़ है। तुम्हारा हक़ उन पर यह है कि वे तुम्हारे बिस्तरों पर किसी ऐसे शख़्स को न आने दें, जिसका आना तुमको नागवार गुज़रे और न वे तुम्हारे घरों में तुम्हारी इजाज़त के बग़ैर किसी को आने दें। ग़ौर से सुनो! उन औरतों का तुम पर हक़ यह है कि तुम उनके साथ उनके लिबास और उनकी ख़ुराक में अच्छा सुलूक करो, यानी अपनी हैसियत के मुताबिक़ उनके लिए उन चीज़ों का इंतज़ाम किया करो।

(तिर्मिज़ी)

﴾252﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَعْطُوا الْاَجِیْرَ اَجْرَهٗ، قَبْلَ اَنْ یَجِفَّ عَرَقُهٗ۔ رواه ابن ماجه، باب اجر الاجراء رقم: ٢٤٤٣

252. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मज़दूर का पसीना ख़ुश्क होने से पहले उसकी मज़दूरी दे दिया करो।

(इब्ने माजा)

सिलारहमी

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا﴾ [النساء ٣٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और तुम सब अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो और मां-बाप के साथ नेक बरताव करो और क़राबतदारों के साथ भी और यतीमों के साथ भी और मिस्कीनों के साथ भी और क़रीब के पड़ोसी के साथ भी और दूर के पड़ोसी के साथ भी और पास के बैठने वाले के साथ भी (मुराद वह शख़्स है जो रोज़ का आने जाने वाला और साथ उठने-बैठने वाला हो) और मुसाफ़िर के साथ भी और उन ग़ुलामों के साथ भी, जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं, हुस्ने सुलूक से पेश आओ। बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करते जो अपने को बड़ा समझे और शेख़ी की बात करे। (निसा : 36)

फ़ायदा : क़रीब के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी है, जो पड़ोस में रहता हो और उससे रिश्तेदारी भी हो और दूर के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी है जिस से रिश्तेदारी न हो, दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि क़रीब के पड़ोसी से मुराद वह पड़ोसी जिसका दरवाज़ा अपने दरवाज़े के क़रीब हो और दूर का पड़ोसी वह है जिसका दरवाज़ा दूर हो।

मुसाफ़िर से मुराद रफ़ीक़े सफ़र, मुसाफ़िर मेहमान और ज़रूरत मन्द मुसाफ़िर है। (कशफ़ुर्रहमान)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿ إِنَّ اللهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴾ [النحل: ٩٠]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआला इन्साफ़ का और भलाई का और क़राबतदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देते हैं और बेहयाई और बुरी बात और ज़ुल्म से मना करते हैं, तुम लोगों को अल्लाह तआला इसलिए नसीहत करते हैं ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो। (नह्ल : 90)

नबी ﷺ की हदीसें

﴾253﴿ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: الْوَالِدُ أَوْسَطُ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ، فَإِنْ شِئْتَ فَاضِعْ ذٰلِكَ الْبَابَ أَوِ احْفَظْهُ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث صحيح،باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين، رقم: ١٩٠٠

253. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बाप जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतरीन दरवाज़ा है। चुनांचे तुम्हें अख़्तियार है ख़्वाह (उसकी नाफ़रमानी करके और दिल दुखा के) इस दरवाज़े को ज़ाया कर दो या (उसकी फ़रमांबरदारी और उसको राज़ी रख कर) इस दरवाज़े की हिफ़ाज़त करो। (तिर्मिज़ी)

﴾254﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رِضَا الرَّبِّ فِيْ رِضَا الْوَالِدِ وَسَخَطُ الرَّبِّ فِيْ سَخَطِ الْوَالِدِ.

رواه الترمذي،باب ماجاء من الفضل في رضا الوالدين،رقم: ١٨٩٩

254. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की रज़ामन्दी वालिद की रज़ामन्दी में है और अल्लाह तआला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है। (तिर्मिज़ी)

﴿255﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اَبَرَّ الْبِرِّ صِلَةُ الْوَلَدِ اَهْلَ وُدِّ اَبِيْهِ. رواه مسلم،باب فضل صلة اصدقاء الاب......،رقم:٦٥١٣

255. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सबसे बड़ी नेकी यह है कि बेटा (बाप के इंतिक़ाल के बाद) बाप से ताल्लुक़ रखने वालों के साथ अच्छा सुलूक करे। (मुस्लिम)

﴿256﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَحَبَّ اَنْ يَصِلَ اَبَاهُ فِيْ قَبْرِهٖ،فَلْيَصِلْ اِخْوَانَ اَبِيْهِ بَعْدَهٗ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٢/١٧٥

256. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अपने वालिद की वफ़ात के बाद उनके साथ सिलारहमी करना चाहे, जबकि वह क़ब्र में हैं तो उसको चाहिए कि अपने बाप के भाइयों के साथ अच्छा सुलूक करे। (इब्ने हब्बान)

﴿257﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُمَدَّ لَهٗ فِيْ عُمُرِهٖ وَيُزَادَ لَهٗ فِيْ رِزْقِهٖ فَلْيَبَرَّ وَالِدَيْهِ وَلْيَصِلْ رَحِمَهٗ. رواه احمد ٣/٢٦٦

257. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को यह पसन्द हो कि उसकी उम्र दराज़ की जाए और उसके रिज़्क़ को बढ़ा दिया जाए, उसको चाहिए कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा सूलुक करे और रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करे। (मुस्नद अहमद)

﴿258﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ بَرَّ وَالِدَيْهِ طُوْبٰى لَهٗ زَادَ اللّٰهُ فِيْ عُمُرِهٖ. رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٤/١٥٤

258. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक किया उसके लिए ख़ुशख़बरी हो कि अल्लाह तआ़ला उसकी उम्र में इज़ाफ़ा फ़रमाएंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿259﴾ عَنْ اَبِيْ اُسَيْدٍ مَالِكِ بْنِ رَبِيْعَةَ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اِذْجَاءَهٗ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ سَلَمَةَ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هَلْ بَقِيَ مِنْ بِرِّ اَبَوَيَّ شَيْءٌ اَبَرُّهُمَا بِهٖ بَعْدَ مَوْتِهِمَا؟ قَالَ: نَعَمْ، الصَّلٰوةُ عَلَيْهِمَا، وَالْاِسْتِغْفَارُ لَهُمَا، وَاِنْفَاذُ

عَهْدِهِمَا مِنْ بَعْدِ هِمَا، وَصِلَةُ الرَّحِمِ الَّتِيْ لَا تُوْصَلُ اِلَّا بِهِمَا، وَاِكْرَامُ صَدِيْقِهِمَا۔

رواه ابو داؤد، باب في بر الوالدين، رقم: ٥١٤٢

259. हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ़ साइदी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे। क़बीला बनू सलिमा के एक शख़्स नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मेरे लिए अपने वालिदैन के इंतिक़ाल के बाद उन दोनों के साथ हुस्ने सुलूक की कोई सूरत मुम्किन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! उनके लिए दुआ़एं करना, अल्लाह तआ़ला से उनके लिए मग़्फ़िरत तलब करना, उनके बाद उनकी वसीयत को पूरा करना, जिन लोगों से उनकी वजह से रिश्तेदारी है उनके साथ हुस्ने सुलूक करना और उनके दोस्तों का इकराम करना। (अबूदाऊद)

﴿260﴾ عَنْ مَالِكٍ اَوِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ اَدْرَكَ وَالِدَيْهِ اَوْ اَحَدَهُمَا ثُمَّ لَمْ يَبَرَّهُمَا، دَخَلَ النَّارَ فَاَبْعَدَهُ اللّٰهُ، وَاَيُّمَا مُسْلِمٍ اَعْتَقَ رَقَبَةً مُسْلِمَةً كَانَتْ فِكَاكَهُ مِنَ النَّارِ۔

(وهو بعض الحديث) رواه ابو يعلى والطبراني واحمد مختصرًا باسناد حسن، الترغيب ٣/٣٤٧

260. हज़रत मालिक या इब्ने मालिक ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने अपने वालिदैन या उनमें से एक को पाया, फिर उनके साथ बदसलूकी की, तो वह शख़्स दोज़ख़ में दाख़िल होगा और उसको अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से दूर कर देंगे और जो कोई मुसलमान किसी मुसलमान ग़ुलाम को आज़ाद कर दे, यह उसके लिए दोज़ख़ से बचाव का ज़रिया होगा। (अबू याला, मुस्नद अहमद, तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿261﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رَغِمَ اَنْفُ، ثُمَّ رَغِمَ اَنْفُ، ثُمَّ رَغِمَ اَنْفُ، قِيْلَ: مَنْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: مَنْ اَدْرَكَ اَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ، اَحَدَهُمَا اَوْ كِلَيْهِمَا فَلَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ۔

رواه مسلم، باب رغم من ادرك ابويه......، رقم: ٦٥١٠

261. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह आदमी ज़लील व ख़्वार हो, फिर ज़लील व ख़्वार हो, फिर ज़लील व ख़्वार हो। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! कौन (ज़लील व ख़्वार हो)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स जो अपने मां-बाप में से किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे की हालत में

पाए, फिर (उनकी ख़िदमत से उनका दिल ख़ुश करके) जन्नत में दाख़िल न हो।
(मुस्लिम)

﴿262﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ مَنْ اَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِيْ؟ قَالَ: اُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: اُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: اُمُّكَ، قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ اَبُوْكَ.

رواه البخاری، باب من احق الناس بحسن الصحبة، رقم: ٥٩٧١

262. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर दरयाफ़्त किया : मेरे हुस्ने सुलूक का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उसने पूछा फिर कौन? इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उसने पूछा, फिर कौन? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर तुम्हारा बाप।
(बुख़ारी)

﴿263﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: نِمْتُ فَرَاَيْتُنِيْ فِي الْجَنَّةِ فَسَمِعْتُ صَوْتَ قَارِئٍ يَقْرَاُ فَقُلْتُ: مَنْ هٰذَا؟ قَالُوْا: هٰذَا حَارِثَةُ بْنُ النُّعْمَانِ فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَذَاكَ الْبِرُّ كَذَاكَ الْبِرُّ وَكَانَ اَبَرَّ النَّاسِ بِاُمِّهٖ. رواه احمد ٦/١٥١

263. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं सोया तो मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में हूं। मैंने वहां किसी क़ुरआन पढ़ने वाले की आवाज़ सुनी तो मैंने कहा : यह कौन है (जो यहां जन्नत में क़ुरआन पढ़ रहा है)? फ़रिश्तों ने बताया कि यह हारिसा बिन नोमान हैं। उसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० से रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी ऐसी ही होती है, नेकी ऐसी ही होती है यानी नेकी का फल ऐसा ही होता है। हारिसा बिन नोमान अपनी वालिदा के साथ बहुत ही अच्छा सुलूक करने वाले थे। (मुस्नद अहमद)

﴿264﴾ عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ اَبِیْ بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَدِمَتْ عَلَيَّ اُمِّيْ وَهِيَ مُشْرِكَةٌ فِيْ عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاسْتَفْتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، قُلْتُ: اِنَّ اُمِّيْ قَدِمَتْ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، اَفَاَصِلُ اُمِّيْ؟ قَالَ: نَعَمْ، صِلِيْ اُمَّكِ. رواه البخاری، باب الهدية للمشركين، رقم: ٢٦٢٠

264. हज़रत अस्मा बिन्त अबीबक्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में मेरी वालिदा जो मुशरिका थीं (मक्का से सफ़र करके) मेरे पास (मदीना) आईं। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसला मालूम किया और पूछा : मेरी वालिदा आई हैं और वह

ुझसे मिलना चाहती हैं तो क्या मैं अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी कर सकती हूं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी करो।
(बुख़ारी)

﴿265﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! اَیُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الْمَرْاَةِ قَالَ: زَوْجُهَا، قُلْتُ: فَاَیُّ النَّاسِ اَعْظَمُ حَقًّا عَلَى الرَّجُلِ قَالَ: اُمُّهُ۔

رواه الحاكم في المستدرك ٤/١٥٠

65. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! औरत पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है? आप ﷺ ने इर्शाद ़रमाया : उसके शौहर का है। मैंने दरयाफ़्त किया कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी मां का है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿266﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَجُلًا اَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنِّیْ اَصَبْتُ ذَنْبًا عَظِيْمًا فَهَلْ لِیْ تَوْبَةٌ؟ قَالَ: هَلْ لَكَ مِنْ اُمٍّ؟ قَالَ: لَا، قَالَ: هَلْ لَكَ مِنْ خَالَةٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَبِرَّهَا۔

رواه الترمذي، باب في بر الخالة، رقم: ١٩٠٤

266. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि एक साहब रसूलुल्लाह ﷺ ी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैंने एक बहुत बड़ा गुनाह कर लिया है तो क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है? आप ﷺ ने इर्शाद रमाया : क्या तुम्हारी मां ज़िन्दा हैं? उन्होंने अर्ज़ किया : नहीं। आप ﷺ ने इर्शाद रमाया : क्या तुम्हारी कोई ख़ाला हैं? अर्ज़ किया : जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उनके साथ अच्छा सुलूक करो (अल्लाह तआला उसकी वजह से तुम्हारी बा क़ुबूल फ़रमा लेंगे)। (तिर्मिज़ी)

﴿267﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: صَنَائِعُ الْمَعْرُوْفِ تَقِیْ مَصَارِعَ السُّوْءِ، وَصَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ، وَصِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمُرِ۔

رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/٢٩٣

7. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकियों का करना बुरी मौत से बचा लेता है, छुप कर सदक़ा देना अल्लाह ाला के ग़ुस्सा को ठंडा करता है और सिलारहमी यानी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करना उम्र को बढ़ाता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : सिलारहमी में यह बात शामिल है कि आदमी अपनी कमाई से रिश्तेदारों की माली ख़िदमत करे या यह कि अपने वक़्त का कुछ हिस्सा उनके कामों में लगाए। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

﴾268﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْلِيَصْمُتْ۔ رواه البخاري، باب اكرام الضيف......، رقم: ٦١٣٨

268. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि अपने मेहमान का इकराम करे। जो शख़्स अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि वह सिलारहमी करे यानी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करे। जो शख़्स अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि भलाई की बात करे वरना ख़ामोश रहे।

(बुख़ारी)

﴾269﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحَبَّ اَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِيْ رِزْقِهِ، وَيُنْسَأَ لَهُ فِيْ اَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ۔

رواه البخاري، باب من بسط له في الرزق......، رقم: ٥٩٨٦

269. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यह चाहे कि उसके रिज़्क़ में फ़राख़ी की जाए और उसकी उम्र दराज़ की जाए, उसको चाहिए कि अपने रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करे।

(बुख़ारी)

﴾270﴿ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: اِنَّ هٰذِهِ الرَّحِمَ شُجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمٰنِ عَزَّوَجَلَّ فَمَنْ قَطَعَهَا حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ۔ (وهو بعض الحديث)

رواه احمد والبزار ورجال احمد رجال الصحيح غير نوفل بن مساحق وهو ثقة، مجمع الزوائد ٨/٢٧٤

270. हज़रत सईद बिन ज़ैद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक यह रहम यानी रिश्तेदारी का हक़ अल्लाह तआला के नाम रहमान से लिया गया है, यानी यह रिश्तेदारी रहमान की रहमत की एक शाख़ है जो इस रिश्तेदारी को तोड़ेगा, अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देंगे।

(मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾271﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِئِ، وَلٰكِنِ الْوَاصِلُ الَّذِيْ إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا۔

رواه البخاری، باب لیس الواصل بالمكافئ، رقم: ٥٩٩١

271. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स सिलारहमी करने वाला नहीं है जो बराबरी का मामला करे यानी दूसरे को अच्छे बरताव करने पर उससे अच्छा बरताव करे, बल्कि सिलारहमी करने वाला तो वह है जो दूसरे के क़तारहमी करने पर भी सिलारहमी करे।

(बुख़ारी)

﴾272﴿ عَنِ الْعَلَاءِ بْنِ خَارِجَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: تَعَلَّمُوْا مِنْ اَنْسَابِكُمْ مَا تَصِلُوْنَ بِهٖ اَرْحَامَكُمْ۔

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٤٥٦

272. हज़रत अ़ला बिन ख़ारिजा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने नसब का इल्म हासिल करो, जिसके ज़रिए से तुम अपने रिश्तेदारों से सिलारहमी कर सको। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾273﴿ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَمَرَنِيْ خَلِيْلِيْ ﷺ بِسَبْعٍ: اَمَرَنِيْ بِحُبِّ الْمَسَاكِيْنِ وَالدُّنُوِّ مِنْهُمْ وَاَمَرَنِيْ اَنْ اَنْظُرَ اِلٰى مَنْ هُوَ دُوْنِيْ وَلَا اَنْظُرَ اِلٰى مَنْ هُوَ فَوْقِيْ وَاَمَرَنِيْ اَنْ اَصِلَ الرَّحِمَ وَاِنْ اَدْبَرَتْ وَاَمَرَنِيْ اَنْ لَا اَسْاَلَ اَحَدًا شَيْئًا وَاَمَرَنِيْ اَنْ اَقُوْلَ بِالْحَقِّ وَاِنْ كَانَ مُرًّا وَ اَمَرَنِيْ اَنْ لَا اَخَافَ فِي اللهِ لَوْمَةَ لَائِمٍ وَاَمَرَنِيْ اَنْ اُكْثِرَ مِنْ قَوْلِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ فَاِنَّهُنَّ مِنْ كَنْزٍ تَحْتَ الْعَرْشِ۔

رواه احمد ٥/١٥٩

273. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे हबीब ﷺ ने सात बातों का हुक्म फ़रमाया : मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत रखूं और उनसे क़रीब रहूं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं दुनिया में उन लोगों पर नज़र रखूं जो (दुन्यावी साज़ व सामान में) मुझसे नीचे दर्जा के हैं और उन पर नज़र न करूं जो (दुन्यावी साज़ व सामान में) मुझ से ऊपर के दर्जा के हैं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं अपने रिश्तेदारों के साथ सिलारहमी करूं अगरचे वह मुझसे मुंह मोड़ें। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं किसी से कोई चीज़ न मांगूं। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं हक़ बात कहूं अगरचे वह (लोगों के लिए) कड़वी हो। मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआ़ला के दीन और उसके पैग़ाम को ज़ाहिर करने में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरूं

और मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह' कसरत से पढ़ा करूं क्योंकि यह कलिमा उस ख़ज़ाना से है जो अ़र्श के नीचे है।

(मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स इस कलिमा को पढ़ने का मामूल रखता है उसके लिए निहायत आला मर्तबे का अज्र व सवाब महफ़ूज़ कर दिया जाता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿274﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ.

رواه البخاری، باب اثم القاطع، رقم: ٥٩٨٤

274. हज़रत जुबैर बिन मुतइम ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़तारहमी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

(बुख़ारी)

फ़ायदा : क़तारहमी अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इतना सख़्त गुनाह है कि इस गुनाह की गन्दगी के साथ कोई जन्नत में न जा सकेगा, हां जब उसको सज़ा देकर पाक कर दिया जाए या किसी वजह से माफ़ कर दिया जाए तो जन्नत में जा सकेगा। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿275﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! اِنَّ لِىْ قَرَابَةً، اَصِلُهُمْ وَيَقْطَعُوْنِىْ، وَاُحْسِنُ اِلَيْهِمْ وَيُسِيْئُوْنَ اِلَىَّ، وَاَحْلُمُ عَنْهُمْ وَيَجْهَلُوْنَ عَلَىَّ، فَقَالَ: لَئِنْ كُنْتَ كَمَا قُلْتَ، فَكَاَنَّمَا تُسِفُّهُمُ الْمَلَّ، وَلَا يَزَالُ مَعَكَ مِنَ اللّٰهِ ظَهِيْرٌ عَلَيْهِمْ، مَادُمْتَ عَلٰى ذٰلِكَ.

رواه مسلم، باب صلة الرحم......، رقم: ٦٥٢٥

275. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं मैं उनसे ताल्लुक़ जोड़ता हूं वे मुझसे ताल्लुक़ तोड़ते हैं, मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करता हूं, वे मुझसे बदसुलूकी करते हैं और मैं उनकी ज़्यादतियों को बरदाश्त करता हूं, वे मेरे साथ जिहालत से पेश आते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जैसा तुम कह रहे हो अगर ऐसा ही है तो गोया तुम उनके मुंह में गर्म-गर्म राख झोंक रहे हो और जब तक तुम इस ख़ूबी पर क़ायम रहोगे तुम्हारे साथ हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक मददगार रहेगा। (मुस्लिम)

मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाना

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی: ﴿وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِیْنًا﴾ [الاحزاب: ٥٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो लोग मुसलमान मर्दों को और मुसलमान औरतों को बग़ैर उसके कि उन्होंने कोई (ऐसा) काम किया हो (जिससे वह सज़ा के मुस्तहिक़ हो जाएं) ईज़ा पहुंचाते हैं, तो वे लोग बुहतान और सरीह गुनाह का बोझ उठाते हैं। (अहज़ाब : 58)

फ़ायदा : अगर ईज़ा ज़बानी है तो बुहतान है और अगर अ़मल से है तो सरीह गुनाह है।

وَقَالَ تَعَالٰی: ﴿وَیْلٌ لِّلْمُطَفِّفِیْنَ ۝ الَّذِیْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ یَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ یُخْسِرُوْنَ ۝ اَلَا یَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۝ لِیَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝ یَّوْمَ یَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ [المطففين ١-٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बड़ी तबाही है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए कि जब लोगों से (अपना हक़) नाप कर लें तो पूरा ले लें और जब लोगों

को नाप कर या तौल कर दें तो कम कर दें। क्या उन लोगों को इसका यक़ीन नहीं है कि वह एक बड़े सख़्त दिन में ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे, जिस दिन तमाम लोग रब्बुल आ़लमीन के सामने खड़े होंगे (यानी उस दिन से डरना चाहिए और नाप-तौल में कमी से तौबा करनी चाहिए)। (मुतफ़्फ़िफ़ीन : 1-6)

وَقَالَ تَعَالَى : ﴿وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ﴾ [الهمزة: ١]

एक जगह इर्शाद है : हर ऐसे शख़्स के लिए बड़ी ख़राबी है जो ऐब निकालने वाला और ताना देने वाला हो। (हु म जः 1)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿276﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّكَ اِنِ اتَّبَعْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ اَفْسَدْتَهُمْ، اَوْكِدْتَ اَنْ تُفْسِدَهُمْ.

رواه ابوداؤد، باب في التجسس، رقم: ٤٨٨٨

276. हज़रत मुआ़विया ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अगर तुम लोगों के ऐब तलाश करोगे, तो तुम उनको बिगाड़ दोगे। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि लोगों में ऐबों को तलाश करने से उनमें नफ़रत, बुग़्ज़ और बहुत-सी बुराइयां पैदा होंगी और मुम्किन है कि लोगों के ऐबों के तलाश करने और उन्हें फैलाने से वे लोग ज़िद में गुनाहों पर जुर्रअत करने लगें। ये सारी बातें उनमें मज़ीद बीगाड़ का सबब होंगी। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿277﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تُؤْذُوا الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تُعَيِّرُوْهُمْ، وَلَا تَطْلُبُوْا عَثَرَاتِهِمْ. (وهو جزء من الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده قوي ١٣/٧٥

277. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों को सताया न करो, उनको आ़र न दिलाया करो और उनकी

लग़्ज़िशों को न तलाश किया करो। (इब्ने हब्बान)

﴿278﴾ عَنْ اَبِیْ بَرْزَةَ الْاَسْلَمِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: یَا مَعْشَرَ مَنْ آمَنَ بِلِسَانِہٖ وَلَمْ یَدْخُلِ الْاِیْمَانُ قَلْبَہٗ: لَا تَغْتَابُوا الْمُسْلِمِیْنَ وَلَا تَتَّبِعُوْا عَوْرَاتِہِمْ، فَاِنَّہٗ مَنِ اتَّبَعَ عَوْرَاتِہِمْ یَتَّبِعِ اللّٰہُ عَوْرَتَہٗ، وَمَنْ یَتَّبِعِ اللّٰہُ عَوْرَتَہٗ یَفْضَحْہُ فِیْ بَیْتِہٖ۔

رواہ ابو داؤد، باب فی الغیبۃ، رقم: ٤٨٨٠

278. हज़रत अबू बरज़ा असलमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ वो लोगो, जो सिर्फ़ ज़बानी इस्लाम लाए और ईमान उनके दिलों में दाख़िल नहीं हुआ! मुसलमानों की ग़ीबत न किया करो और उनके ऐबों के पीछे न पड़ा करो, क्योंकि जो मुसलमानों के ऐबों के पीछे पड़ता है, अल्लाह उसके ऐब के पीछे पड़ जाते हैं और अल्लाह तआला जिसके ऐब के पीछे पड़ जाते हैं उसे घर बैठे रुस्वा कर देते हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के पहले जुम्ले से इस बात पर तंबीह की गई है कि मुसलमानों की ग़ीबत करना मुनाफ़िक़ का काम हो सकता है मुसलमानों का नहीं। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿279﴾ عَنْ اَنَسٍ الْجُهَنِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ اَبِیْہِ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ نَبِیِّ اللّٰہِ ﷺ غَزْوَةَ كَذَا وَكَذَا فَضَیَّقَ النَّاسُ الْمَنَازِلَ وَقَطَعُوا الطَّرِیْقَ، فَبَعَثَ النَّبِیُّ ﷺ مُنَادِیًا یُنَادِیْ فِی النَّاسِ: اَنَّ مَنْ ضَیَّقَ مَنْزِلًا اَوْ قَطَعَ طَرِیْقًا فَلَا جِہَادَ لَہٗ۔

رواہ ابو داؤد، باب مایؤمر من انضمام العسکر وسعتہ، رقم: ٢٦٢٩

279. हज़रत अनस जुहनी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ के साथ एक ग़ज़वे में गया। वहां लोग इस तरह ठहरे कि आने-जाने के लिए रास्ते बन्द हो गए। आप ﷺ ने लोगों में एलान करने के लिए एक आदमी भेजा कि जो इस तरह ठहरा कि आने जाने का रास्ता बन्द कर दिया उसे जिहाद का सवाब नहीं मिलेगा। (अबूदाऊद)

﴿280﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: مَنْ جَرَّدَ ظَهْرَ امْرِیءٍ مُسْلِمٍ بِغَیْرِ حَقٍّ لَقِیَ اللّٰہَ وَهُوَ عَلَیْہِ غَضْبَانُ۔

رواہ الطبرانی فی الکبیر و الاوسط واسنادہ جید، مجمع الزوائد ٦/٣٨٤

280. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी मुसलमान की पीठ को नंगा करके नाहक़ मार अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर नाराज़ होंगे।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿281﴾ عَنْ اَبِی هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ؟ قَالُوْا: الْمُفْلِسُ فِيْنَا مَنْ لَا دِرْهَمَ لَهٗ وَلَا مَتَاعَ، فَقَالَ: اِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ اُمَّتِیْ، مَنْ يَّاْتِیْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصَلَاةٍ وَصِيَامٍ وَزَكوٰةٍ، وَيَاْتِیْ وَقَدْ شَتَمَ هٰذَا، وَقَذَفَ هٰذَا، وَاَكَلَ مَالَ هٰذَا، وَ سَفَكَ دَمَ هٰذَا، وَضَرَبَ هٰذَا فَيُعْطٰى هٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ، وَهٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهٖ، فَاِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهٗ، قَبْلَ اَنْ يُقْضٰى مَا عَلَيْهِ، اُخِذَ مِنْ خَطَايَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ، ثُمَّ طُرِحَ فِی النَّارِ۔

رواه مسلم،باب تحريم الظلم، رقم: ٦٥٧٩

281. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा ؓ से इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है? सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया : हमारे नज़दीक मुफ़्लिस वह शख़्स है जिसके पास कोई दिरहम (पैसा) और (दुनिया का) सामान न हो। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत का मुफ़्लिस वह शख़्स है जो क़ियामत के दिन बहुत-सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मक़बूल इबादतें) लेकर आएगा, मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा-पीटा होगा तो उसकी नेकियों में से एक हक़ वाले को (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियां दी जाएंगी ऐसे ही दूसरे हक़ वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियां दी जाएंगी। फिर अगर दूसरों के हुक़ूक़ चुकाए जाने से पहले उसकी सारी नेकियां ख़त्म हो जाएंगी तो (उन हुक़ूक़ के बक़द्र) हक़दारों और मज़्लूमों के गुनाह (जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे) उनसे लेकर उस शख़्स पर डाल दिए जाएंगे और फिर उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम)

﴿282﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ، وَقِتَالُهٗ كُفْرٌ۔

رواه البخاری،باب ماینهی من السباب واللعن، رقم: ٦٠٤٤

282. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान को गाली देना बेदीनी और क़त्ल करना कुफ़्र है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : जो मुसलमान किसी मुसलमान को क़त्ल करता है वह अपने इस्लाम के

कामिल होने की नफ़ी करता है और मुम्किन है कि क़त्ल करना कुफ़्र पर मरने का सबब भी बन जाए। (मज़ाहिरे हक़)

﴿283﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا رَفَعَهُ قَالَ: سَابُّ الْمُسْلِمِ كَالْمُشْرِفِ عَلَى الْهَلَكَةِ. رواه الطبرانی فی الکبیر وھو حدیث حسن، الجامع الصغیر ۳۸/۲

283. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमानों को गाली देने वाला उस आदमी की तरह है जो हलाकत व बरबादी के क़रीब हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿284﴾ عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ! اَلرَّجُلُ مِنْ قَوْمِيْ يَشْتِمُنِيْ وَهُوَ دُوْنِيْ، اَفَانْتَقِمُ مِنْهُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَلْمُسْتَبَّانِ شَيْطَانَانِ يَتَهَاتَرَانِ وَيَتَكَاذَبَانِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ۳۴/۱۳

284. हज़रत इयाज़ बिन हिमार ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह के नबी! मेरी क़ौम का एक शख़्स मुझे गाली देता है जबकि वह मुझ से कम दर्जे का है क्या मैं उससे बदला लूं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आपस में गाली-गलौच करने वाले दो शख़्स दो शैतान हैं जो आपस में फ़हश गोई करते हैं और एक दूसरे को झूठा कहते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿285﴾ عَنْ اَبِيْ جُرَيٍّ جَابِرِ بْنِ سُلَيْمٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ: اِعْهَدْ اِلَيَّ، قَالَ: لَا تَسُبَّنَّ اَحَدًا، قَالَ: فَمَا سَبَبْتُ بَعْدَهُ حُرًّا وَلَا عَبْدًا وَلَا بَعِيْرًا وَلَا شَاةً، قَالَ: وَلَا تَحْقِرَنَّ شَيْئًا مِنَ الْمَعْرُوْفِ وَاَنْ تُكَلِّمَ اَخَاكَ وَاَنْتَ مُنْبَسِطٌ اِلَيْهِ وَجْهُكَ، اِنَّ ذٰلِكَ مِنَ الْمَعْرُوْفِ وَارْفَعْ اِزَارَكَ اِلٰى نِصْفِ السَّاقِ، فَاِنْ اَبَيْتَ فَاِلَى الْكَعْبَيْنِ، وَاِيَّاكَ وَاِسْبَالَ الْاِزَارِ فَاِنَّهَا مِنَ الْمَخِيْلَةِ وَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمَخِيْلَةَ، وَاِنِ امْرُؤٌ شَتَمَكَ وَعَيَّرَكَ بِمَا يَعْلَمُ فِيْكَ فَلَا تُعَيِّرْهُ بِمَا تَعْلَمُ فِيْهِ فَاِنَّمَا وَبَالُ ذٰلِكَ عَلَيْهِ. (وھو بعض الحدیث) رواہ ابوداؤد، باب ماجاء فی اسبال الازار، رقم: ۴۰۸۴

285. हज़रत अबू जुरैय्य जाबिर बिन सुलैम ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : मुझे नसीहत फ़रमा दीजिए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कभी किसी को गाली न देना। हज़रत अबू जुरैय्य : फ़रमाते हैं कि उसके बाद से मैंने कभी किसी को गाली नहीं दी, न आज़ाद को, न ग़ुलाम को, न ऊंट को न बकरी को। नीज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी नेकी को भी मामूली समझ कर न छोड़ो

(यहां तक कि) तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दापेशानी से बात करना भी नेकी में दाख़िल है। अपना तहबन्द आधी पिन्डलियों तक ऊंचा रखा करो, अगर इतना ऊंचा न रख सको तो (कम-से-कम) टख़्नों तक ऊँचा रखा करो। तहबन्द को टख़्नों से नीचे लटकाने से बचो, क्योंकि यह तकब्बुर की बात है और अल्लाह तआ़ला को तकब्बुर नापसन्द है। अगर कोई तुम्हें गाली दे और तुम्हें किसी ऐसी बात पर आ़र दिलाए जो तुम में हो और वह उसे जानता हो तो उसको किसी ऐसी बात पर आ़र न दिलाना जो उसमें हो और तुम उसे जानते हो, इस सूरत में उस आ़र दिलाने का वबाल उसी पर होगा। (अबूदाऊद)

﴾286﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا شَتَمَ اَبَابَكْرٍ وَالنَّبِيُّ ﷺ جَالِسٌ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَعْجَبُ وَيَتَبَسَّمُ، فَلَمَّا اَكْثَرَ رَدَّ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهِ، فَغَضِبَ النَّبِيُّ ﷺ وَقَامَ فَلَحِقَهُ اَبُوْبَكْرٍ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَانَ يَشْتِمُنِيْ وَاَنْتَ جَالِسٌ فَلَمَّا رَدَدْتُ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهِ غَضِبْتَ وَقُمْتَ، قَالَ: اِنَّهُ كَانَ مَعَكَ مَلَكٌ يَرُدُّ عَنْكَ، فَلَمَّا رَدَدْتَ عَلَيْهِ بَعْضَ قَوْلِهِ وَقَعَ الشَّيْطَانُ فَلَمْ اَكُنْ لِاَقْعُدَ مَعَ الشَّيْطَانِ ثُمَّ قَالَ: يَا اَبَا بَكْرٍ ثَلَاثٌ كُلُّهُنَّ حَقٌّ، مَا مِنْ عَبْدٍ ظُلِمَ بِمَظْلَمَةٍ فَيُغْضِيْ عَنْهَا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا اَعَزَّ اللّٰهُ بِهَا نَصْرَهُ وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ عَطِيَّةٍ يُرِيْدُ بِهَا صِلَةً اِلَّا زَادَهُ اللّٰهُ بِهَا كَثْرَةً وَمَا فَتَحَ رَجُلٌ بَابَ مَسْاَلَةٍ يُرِيْدُ بِهَا كَثْرَةً اِلَّا زَادَهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ بِهَا قِلَّةً. رواه احمد ٢/٤٣٦

286. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ तशरीफ़ फ़रमा थे, आपकी मौजूदगी में एक शख़्स ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ को बुरा भला कहा। आप ﷺ (उस शख़्स के मुसलसल बुरा-भला कहने और हज़रत अबूबक्र ﷺ के सब्र करने और ख़ामोश रहने पर) खुश होते रहे और तबस्सुम फ़रमाते रहे। फिर जब उस आदमी ने बहुत ही ज़्यादा बुरा भला कहा तो हज़रत अबूबक्र ﷺ ने उसकी कुछ बातों का जवाब दे दिया। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ नाराज़ होकर वहां से चल दिए। हज़रत अबूबक्र ﷺ भी आपके पीछे-पीछे आपके पास पहुंचे और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! (जब तक) वह शख़्स मुझे बुरा भला कहता रहा, आप वहां तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर जब मैंने उसकी कुछ बातों का जवाब दिया, तो आप नाराज़ होकर उठ गए? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (जब तक तुम ख़ामोश थे और सब्र कर रहे थे) तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता था जो तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था। फिर जब तुमने उसकी कुछ बातों का जवाब दिया, तो (वह फ़रिश्ता चला गया और) शैतान बीच में आ गया और मैं शैतान के साथ नहीं बैठता (लिहाज़ा मैं उठकर चल दिया)। उसके

बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूबक्र! तीन बातें हैं जो सबकी सब बिल्कुल हक़ हैं। जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म या ज़्यादती की जाती है और वह सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए उससे दरगुज़र कर देता है (और इंतक़ाम नहीं लेता) तो बदले में अल्लाह तआला उसकी मदद करके उसको क़वी कर देते हैं, जो शख़्स सिलारहमी के लिए देने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआला उसके बदले उसको बहुत ज़्यादा देते हैं और जो शख़्स दौलत बढ़ाने के लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआला उसकी दौलत को और भी कम कर देते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿287﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مِنَ الْكَبَائِرِ شَتْمُ الرَّجُلِ وَالِدَيْهِ، قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ ! وَهَلْ يَشْتِمُ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ، يَسُبُّ اَبَا الرَّجُلِ، فَيَسُبُّ اَبَاهُ، وَيَسُبُّ اُمَّهُ، فَيَسُبُّ اُمَّهُ.

رواه مسلم،باب الكبائر واكبرها، رقم: ٢٦٣

287. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का अपने वालिदैन को गाली देना कबीरा गुनाहों में से है। सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या कोई अपने मां-बाप को भी गाली दे सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां! (वह इस तरह कि) आदमी गाली दे, फिर वह जवाब में उसकी मां को गाली दे (इस तरह गोया उसने दूसरे के मां-बाप को गाली देकर ख़ुद ही अपने मां-बाप को गाली दिलवाई)। (मुस्लिम)

﴿288﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَللّٰهُمَّ! اِنِّیْ اَتَّخِذُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيْهِ، فَاِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ، فَاَیُّ الْمُؤْمِنِيْنَ آذَيْتُهُ، شَتَمْتُهُ، لَعَنْتُهُ، جَلَدْتُهُ، فَاجْعَلْهَا لَهُ صَلَاةً وَزَكَاةً وَقُرْبَةً، تُقَرِّبُهُ بِهَا اِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه مسلم،باب من لعنه النبی ﷺ......،رقم: ٦٦١٩

288. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने यह दुआ़ फ़रमाई : या अल्लाह! मैं आपसे अ़हद लेता हूं आप उसके ख़िलाफ़ न कीजिएगा। वह यह है कि मैं एक इंसान ही हूं लिहाज़ा जिस किसी मोमिन को मैंने तकलीफ़ दी हो, उसको बुरा भला कह दिया हो, लानत की हो, मारा हो तो आप इन सब चीज़ों को उस मोमिन के लिए रहमत और गुनाहों से पाकी और अपनी ऐसी क़ुरबत का ज़रिया बना दीजिए कि उसकी वजह से आप उसको क़ियामत के दिन अपना क़ुर्ब अ़ता फ़रमा दें।

(मुस्लिम)

﴿289﴾ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَسُبُّوا الْاَمْوَاتَ فَتُؤْذُوا الْاَحْيَاءَ. رواه الترمذي، باب ماجاء فى الشتم، رقم: ١٩٨٢

289. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुर्दों को बुरा भला मत कहो कि उससे तुम ज़िन्दों को तकलीफ़ पहुंचाओगे। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि मरने वाले को बुरा-भला कहने से उसके अज़ीज़ों को तकलीफ़ होगी और जिसको बुरा भला कहा गया उसे कोई नुक़सान नहीं होगा।

﴿290﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اذْكُرُوْا مَحَاسِنَ مَوْتَاكُمْ وَكُفُّوْا عَنْ مَسَاوِيْهِمْ. رواه ابوداؤد، باب فى النهى عن سب الموتى، رقم: ٤٩٠٠

290. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने (मुसलनान) मुर्दों की ख़ूबियां ब्यान किया करो और उनकी बुराइयां न ब्यान करो। (अबूदाऊद)

﴿291﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلَمَةٌ لِاَخِيْهِ مِنْ عِرْضِهِ اَوْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ قَبْلَ اَنْ لَا يَكُوْنَ دِيْنَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ، اِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ اُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلَمَتِهِ، وَاِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ اُخِذَ مِنْ سَيِّاٰتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ. رواه البخارى، باب من كانت له مظلمة عند الرجل ...، رقم: ٢٤٤٩

291. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस आदमी पर भी अपने (दूसरे मुसलमान) भाई का उसकी इज़्ज़त व आबरू से मुताल्लिक़ या किसी और चीज़ से मुताल्लिक़ कोई हक़ हो तो उसे आज ही उस दिन के आने से पहले माफ़ करा ले, जिस दिन न दीनार होंगे, न दिरहम (उस दिन सारा हिसाब नेकियों और गुनाहों से होगा लिहाज़ा) अगर उस ज़ुल्म करने वाले के पास कुछ नेक अ़मल होंगे तो उसके ज़ुल्म के बक़द्र नेकियां लेकर मज़्लूम को दे दी जाएंगी। अगर उसके पास नेकियां नहीं होंगी, तो मज़्लूम के उतने ही गुनाह उस पर डाल दिए जाएंगे। (बुख़ारी)

﴿292﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَاَرْبَى الرِّبَا اسْتِطَالَةُ الرَّجُلِ فِىْ عِرْضِ اَخِيْهِ. (وهو بعض الحديث) رواه الطبرانى فى الاوسط وهو حديث صحيح، الجامع الصغير ٢٢/٢

92. हज़रत बरा बिन आज़िब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन सूद अपने मुसलमान भाई की आबरूरेज़ी करना है (यानी उसकी इज़्ज़त को नुक़सान पहुंचाना है चाहे किसी तरीक़े से हो, मसलन ग़ीबत करना, हक़ीर समझना, रुस्वा करना वग़ैरह-वग़ैरह)। (तबरानी, जामेअ़ सग़ीर)

फ़ायदा : मुसलमान की आबरूरेज़ी को बदतरीन सूद इस वजह से कहा गया है कि जिस तरह सूद में दूसरे के माल को नाजायज़ तरीक़े पर लेकर उसे नुक़सान पहुंचाया जाता है उसी तरह मुसलमान की आबरूरेज़ी करने में उसकी इज़्ज़त को नुक़सान पहुंचाया जाता है और चूंकि मुसलमान की इज़्ज़त उसके माल से ज़्यादा मोहतरम है इस वजह से आबरूरेज़ी को बदतरीन सूद फ़रमाया गया है। (फ़ैज़ुल क़दीर, बज़्लुलमज्हूद)

﴿293﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ اَكْبَرِ الْكَبَائِرِ اسْتِطَالَةَ الْمَرْءِ فِیْ عِرْضِ رَجُلٍ مُسْلِمٍ بِغَیْرِ حَقٍّ (الحديث) رواه ابوداؤد، باب فى الغيبة، رقم: ٤٨٧٧

93. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : कबीरा गुनाहों में से एक बड़ा गुनाह किसी मुसलमान की इज़्ज़त पर नाहक़ हमला करना है। (अबूदाऊद)

﴿294﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ احْتَكَرَ حُكْرَةً يُرِيْدُ اَنْ يُغْلِیَ بِهَا عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ فَهُوَ خَاطِیءٌ.

رواه احمد وفيه: ابو معشر وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ١٨١/٤

94. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मसुलमानों पर (ग़ल्ला को) महंगा करने के लिए रोके रखा तो वह गुनहगार है। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿295﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ طَعَامًا ضَرَبَهُ اللهُ بِالْجُذَامِ وَالْاِفْلَاسِ.

رواه ابن ماجه، باب الحكرة والجلب، رقم: ٢١٥٥

95. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मुसलमानों को ग़ल्ला (खाने पीने की चीज़ों को)

रोके रखे, यानी बावजूद ज़रूरत के फ़रोख़्त न करे अल्लाह तआ़ला उस पर कोढ़ औ तंगदस्ती को मुसल्लत फ़रमा देते हैं। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : रोकने वाले से वह शख़्स मुराद है जो लोगों की ज़रूरत के वक़्त महंगा के इंतज़ार में ग़ल्ले को रोके रखे, जबकि ग़ल्ला आ़म तौर पर न मिल रहा हो। (मज़ाहिरे हक़

﴿296﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الْمُؤْمِنُ أَخُو الْمُؤْمِنِ، فَلَا يَحِلُّ لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يَبْتَاعَ عَلَى بَيْعِ أَخِيْهِ، وَلَا يَخْطُبَ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيْهِ حَتَّى يَذَرَ. رواه مسلم، باب تحريم الخطبة على خطبة اخيه ......رقم: ٣٤٦٤

296. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शा फ़रमाया : मोमिन मोमिन का भाई है। ईमान वालों के लिए जायज़ नहीं कि अपने भाई के सौदे पर सौदा करे, और इसी तरह अपने भाई के निकाह के पैग़ाम पर अपने निकाह का पैग़ाम दे। अल्बत्ता पहला पैग़ाम भेजने के बाद अगर उनकी बात ख़त्म हो जाए, तो फिर पैग़ाम भेजने में कोई हर्ज नहीं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : सौदे पर सौदा करने के कई मतलब हैं, उनमें एक यह है कि दो आदमियो के दर्मियान सौदा हो चुका हो, फिर तीसरा शख़्स बेचने वाले से यह कहे कि उस शख़्स से सौदे को ख़त्म करके मुझसे सौदा कर लो। (नव्वी)

मामलों में अ़मल के लिए उलमा किराम से मसाइल मालूम किए जाएं।

निकाह के पैग़ाम पर पैग़ाम देने का मतलब यह है कि एक आदमी ने कहीं निकाह का पैग़ाम दिया हो और लड़की वाले उस पैग़ाम पर माइल हो चुके हों, अब दूसरे शख़्स को (अगर उस निकाह के पैग़ाम का इल्म है तो उस शख़्स को) उस लड़की के लिए निकाह का पैग़ाम नहीं देना चाहिए। (फ़त्हुलमुलहिम)

﴿297﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا. (الحديث) رواه مسلم، باب قول النبي ﷺ من حمل علينا السلاح......رقم: ٢٨٠

297. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हम पर हथियार उठाए वह हम में से नहीं। (मुस्लिम)

﴾298﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا یُشِیْرُ اَحَدُکُمْ عَلٰی اَخِیْهِ بِالسِّلَاحِ فَاِنَّهٗ لَا یَدْرِیْ لَعَلَّ الشَّیْطَانَ یَنْزِعُ فِیْ یَدِهٖ فَیَقَعُ فِیْ حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ۔

رواه البخاری،باب قول النبی ﷺ من حمل علینا السلاح فلیس منا، رقم: ٧٠٧٢

298. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, इसलिए कि उसको मालूम नहीं कि कहीं शैतान उसके हाथ से हथियार खींच ले और वह (हथियार इशारे-इशारे में मुसलमान भाई के जा लगे और उसकी सज़ा में वह इशारा करने वाला) जहन्नम में जा गिरे। (बुख़ारी)

﴾299﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: قَالَ اَبُوْ الْقَاسِمِ ﷺ: مَنْ اَشَارَ اِلٰی اَخِیْهِ بِحَدِیْدَةٍ، فَاِنَّ الْمَلَائِکَةَ تَلْعَنُهٗ حَتّٰی یَدَعَهٗ وَاِنْ کَانَ اَخَاهُ لِاَبِیْهِ وَاُمِّهٖ۔

رواه مسلم،باب النهی عن الاشارة بالسلاح الی مسلم، رقم: ٦٦٦٦

299. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि अबुलक़ासिम मुहम्मद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ लोहे यानी हथियार वग़ैरह से इशारा करता है उस पर फ़रिश्ते उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं, जब तक कि वह उस (लोहे से इशारा करने) को छोड़ नहीं देता, अगरचे वह उसका हक़ीक़ी भाई ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स अपने हक़ीक़ी भाई की तरफ़ लोहे से इशारा करता है तो उसका मतलब यह नहीं होता कि वह उसको क़त्ल करने या नुक़सान पहुंचाने का इरादा रखता है, बल्कि उसका तअ़ल्लुक़ मज़ाक़ से ही हो सकता है मगर उसके बावजूद फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते हैं। इस इर्शाद का मक़सद किसी मुसलमान पर इशारतन भी हथियार या लोहे उठाने से सख़्ती के साथ रोकना है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾300﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ عَلٰی صُبْرَةِ طَعَامٍ، فَاَدْخَلَ یَدَهٗ فِیْهَا، فَنَالَتْ اَصَابِعُهٗ بَلَلًا، فَقَالَ: مَا هٰذَا یَا صَاحِبَ الطَّعَامِ؟ قَالَ: اَصَابَتْهُ السَّمَاءُ یَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: اَفَلَا جَعَلْتَهٗ فَوْقَ الطَّعَامِ کَیْ یَرَاهُ النَّاسُ، مَنْ غَشَّ فَلَیْسَ مِنِّیْ۔

رواه مسلم،باب قول النبی ﷺ من غشنا فلیس منا، رقم: ٢٨٤

300. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक ग़ल्ला के ढेर

के पास से गुज़रे। आप ﷺ ने अपना हाथ मुबारक उस ढ़ेर के अन्दर डाला तो हाथ में कुछ तरी महसूस हुई। आप ﷺ ने ग़ल्ला बेचने वाले से पूछा, यह तरी कैसी है? उसने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ग़ल्ले पर बारिश का पानी पड़ गया था। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने भीगे हुए ग़ल्ले के ढेर के ऊपर क्यों नहीं रखा, ताकि ख़रीदने वाले उसको देख सकते। जिसने धोखा दिया, वह मेरा नहीं, (यानी मेरी इत्तिबा करने वाला नहीं)। (मुस्लिम)

﴾301﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ اَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: مَنْ حَمٰى مُؤْمِنًا مِنْ مُنَافِقٍ، أُرَاهُ قَالَ: بَعَثَ اللهُ مَلَكًا يَحْمِيْ لَحْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ، وَمَنْ رَمٰى مُسْلِمًا بِشَيْءٍ يُرِيْدُ شَيْنَهُ بِهٖ حَبَسَهُ اللهُ عَلٰى جِسْرِ جَهَنَّمَ حَتّٰى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ۔

رواه ابو داؤد، باب الرجل يذب عن عرض اخيه، رقم: ٤٨٨٣

301. हज़रत मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी ﷺ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि जो शख़्स किसी मुसलमान (की इज़्ज़त व आबरू) को मुनाफ़िक़ के शर से बचाता है तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमाएंगे, जो उसके गोश्त यानी जिस्म को (दोज़ख़ की आग से) बचाएगा और जो किसी मुसलमान को बदनाम करने के लिए उस पर कोई इलज़ाम लगाता है तो अल्लाह तआ़ला उसको जहन्नम के पुल पर क़ैद करेगा, यहां तक कि (सज़ा पाकर) अपने इलज़ाम (के गुनाह की गन्दगी) से पाक-साफ़ हो जाए। (अबूदाऊद)

﴾302﴿ عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ ذَبَّ عَنْ عِرْضِ اَخِيْهِ بِالْغَيْبَةِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ اَنْ يُعْتِقَهُ مِنَ النَّارِ۔

رواه احمد والطبراني واسناد احمد حسن، مجمع الزوائد ١٧٩/٨

302. हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ग़ैरमौजूदगी में उसकी इज़्ज़त व आबरू का बचाव करता है (मसलन ग़ीबत करने वाले को इस हरकत से रोकता है) तो अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसको जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा दें। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾303﴿ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ رَدَّ عَنْ عِرْضِ اَخِيْهِ الْمُسْلِمِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ اَنْ يَرُدَّ عَنْهُ نَارَ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ رواه احمد ٤٤٩/٦

303. हज़रत अबुद्दर्दा ﵁ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की आबरू की हिफ़ाज़त के लिए बचाव करता है, तो अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उससे क़ियामत के दिन जहन्नम की आग को हटा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿304﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُوْنَ حَدٍّ مِنْ حُدُوْدِ اللهِ، فَقَدْ ضَادَّ اللهَ، وَمَنْ خَاصَمَ فِيْ بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُهُ لَمْ يَزَلْ فِيْ سَخَطِ اللهِ حَتّٰى يَنْزِعَ عَنْهُ، وَمَنْ قَالَ فِيْ مُؤْمِنٍ مَالَيْسَ فِيْهِ اَسْكَنَهُ اللهُ رَدْغَةَ الْخَبَالِ حَتّٰى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ۔ رواه ابو داؤد، باب في الرجل يعين على خصومة......،رقم: ٣٥٩٧

304. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﵄ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स की सिफ़ारिश अल्लाह तआ़ला की हदों में से किसी हद के जारी होने में रोक बन गई (मसलन उसकी सिफ़ारिश की वजह से चोर का हाथ न काटा जा सका) उसने अल्लाह तआ़ला से मुक़ाबला किया। जो शख़्स यह जानते हुए कि वह नाहक़ पर है, झगड़ा करता है तो जब तक वह उस झगड़े को छोड़ न दे अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी में रहता है और जो शख़्स मोमिन के बारे में ऐसी बुरी बात कहता है जो उसमें नहीं है अल्लाह तआ़ला उसको दोज़ख़ियों की पीप और ख़ून की कीचड़ में रखेंगे, यहां तक कि वह अपने बोहतान की सज़ा पाकर उस गुनाह से पाक हो जाए। (अबूदाऊद)

﴿305﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تَحَاسَدُوْا، وَلَا تَنَاجَشُوا، وَلَا تَبَاغَضُوْا، وَلَا تَدَابَرُوْا، وَلَا يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَيْعِ بَعْضٍ، وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللهِ اِخْوَانًا، اَلْمُسْلِمُ اَخُو الْمُسْلِمِ، لَا يَظْلِمُهُ، وَلَا يَخْذُلُهُ، وَلَا يَحْقِرُهُ، اَلتَّقْوٰى هٰهُنَا، وَيُشِيْرُ اِلٰى صَدْرِهِ ثَلَاثَ مِرَارٍ: بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ اَنْ يَحْقِرَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ، كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ، دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ۔

رواه مسلم، باب تحريم ظلم المسلم، رقم: ٦٥٤١

305. हज़रत अबू हुरैरह ﵁ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे से हसद न करो, ख़रीद व फ़रोख़्त में ख़रीदारी की नीयत के बग़ैर महज़ धोखा देने के लिए बोली में इज़ाफ़ा न करो, एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो, एक दूसरे से बेरुख़ी अख़्तियार न करो और तुम में से कोई दूसरे के सौदे पर सौदा न करे। अल्लाह के बन्दे बनकर भाई-भाई हो जाओ। मुसलमान-मुसलमान का भाई है, न उस पर

ज़्यादती करता है और (अगर कोई दूसरा उस पर ज़्यादती करे) तो उसको बे यार व मददगार नहीं छोड़ता और न उसको हक़ीर समझता है (इस मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने मुबारक सीने की तरफ़ इशारा करके तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया) तक़्वा यहां होता है। इंसान के बुरा होने के लिए इतना काफ़ी है कि वह अपने मसुलमान भाई को हक़ीर समझे। मुसलमान का ख़ून उसका माल, उसकी इज़्ज़त व आबरू दूसरे मुसलमान के लिए हराम है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इस इर्शाद "तक़्वा यहां होता है" का मतलब यह है कि तक़्वा जो अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और आख़िरत के हिसाब की फ़िक्र का नाम है वह दिल के अन्दर की एक कैफ़ियत है, ऐसी चीज़ नहीं है जिसे कोई दूसरा आदमी आंखों से देखकर मालूम कर सके कि उस आदमी में तक़्वा है या नहीं है। इसलिए किसी मुसलमान को हक़ नहीं कि वह दूसरे मुसलमान को हक़ीर समझे। क्या ख़बर जिसको ज़ाहिरी मालूमात से हक़ीर समझा जा रहा है, उसके दिल में तक़्वा हो और वह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बड़ी इज़्ज़त वाला हो। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿306﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِیَّاکُمْ وَالْحَسَدَ، فَاِنَّ الْحَسَدَ یَاْکُلُ الْحَسَنَاتِ کَمَا تَاْکُلُ النَّارُ الْحَطَبَ، اَوْ قَالَ: الْعُشْبَ.

رواہ ابو داؤد، باب فی الحسد، رقم: ٤٩٠٣

306. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हसद से बचो। हसद आदमी की नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है, या फ़रमाया घास को खा जाती है। (अबूदाऊद)

﴿307﴾ عَنْ اَبِیْ حُمَیْدٍ السَّاعِدِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: لَا یَحِلُّ لِامْرِیءٍ اَنْ یَاْخُذَ عَصَا اَخِیْهِ بِغَیْرِ طِیْبِ نَفْسٍ مِنْهُ. رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ صحیح ٣١٦/١٣

307. हज़रत अबू हुमैद साइदी ؓ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी शख़्स के लिए अपने भाई की लाठी (जैसी छोटी चीज़ भी) उसकी रज़ामन्दी के बग़ैर लेना जायज़ नहीं। (इब्ने हब्बान)

﴿308﴾ عَنْ یَزِیْدَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: لَا یَاْخُذَنَّ اَحَدُکُمْ مَتَاعَ اَخِیْهِ لَاعِبًا وَلَا جَادًّا. (الحدیث) رواہ ابو داؤد، باب من یاخذ الشیء من مزاح، رقم: ٥٠٠٣

308. हज़रत यज़ीद ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से कोई शख़्स अपने भाई के सामान को न मज़ाक़ में ले और न हक़ीक़त में (बिला इजाज़त) ले। (अबूदाऊद)

﴾309﴿ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِیْ لَیْلٰی رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: حَدَّثَنَا اَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَسِيْرُوْنَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَنَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَانْطَلَقَ بَعْضُهُمْ اِلٰی حَبْلٍ مَعَهُ فَاَخَذَهُ فَفَزِعَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يُرَوِّعَ مُسْلِمًا۔

رواہ ابوداؤد، باب من یاخذ الشیء من مزاح، رقم: ٥٠٠٤

309. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हमें नबी करीम ﷺ के सहाबा ने यह क़िस्सा सुनाया कि वह एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जा रहे थे कि उनमें से एक सहाबी को नींद आ गई। दूसरे आदमी ने जाकर (मज़ाक़ में) उसकी रस्सी ले ली (जब सोने वाले की आंख खुली और उसे अपनी रस्सी नज़र नहीं आई) तो वह परेशान हो गया। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसलमान को यह हलाल नहीं है कि वह किसी मुसलमान को डराए। (अबूदाऊद)

﴾310﴿ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَتْلُ الْمُؤْمِنِ اَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنْ زَوَالِ الدُّنْيَا۔

رواہ النسائی، باب تعظیم الدم، رقم: ٣٩٩٥

310. हज़रत बुरैदा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन का क़त्ल किया जाना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सारी दुनिया के ख़त्म हो जाने से ज़्यादा बड़ी बात है। (नसाई)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जैसे दुनिया का ख़त्म हो जाना लोगों के नज़दीक बहुत बड़ी बात है अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मोमिन का क़त्ल करना उससे भी ज़्यादा बड़ी बात है।

﴾311﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ وَ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَذْكُرَانِ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: لَوْ اَنَّ اَهْلَ السَّمَاءِ وَاَهْلَ الْاَرْضِ اشْتَرَكُوْا فِیْ دَمِ مُؤْمِنٍ لَاَكَبَّهُمُ اللهُ فِی النَّارِ۔

رواہ الترمذی، وقال: ھذا حدیث غریب، باب الحکم فی الدماء، رقم: ١٣٩٨

311. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी और हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद

नक़ल फ़रमाते हैं कि अगर आसमान व ज़मीन वाले सबके सब किसी मोमिन के क़त्ल करने में शरीक हो जाएं, तो भी अल्लाह तआला इन सबको औंधे मुंह जहन्नम में डाल देंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿312﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : كُلُّ ذَنْبٍ عَسَى اللهُ اَنْ يَغْفِرَهُ اِلَّا مَنْ مَاتَ مُشْرِكًا، اَوْ مُؤْمِنٌ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا۔

رواه ابوداؤد،باب فی تعظیم قتل المؤمن،رقم: ٤٢٧٠

312. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हर गुनाह के बारे में यह उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देंगे सिवाए उस शख़्स के (गुनाह के), जो शिर्क की हालत में मरा हो या उस मुसलमान के (गुनाह के) जिसने किसी मुसलमान को जान-बूझ कर क़त्ल किया हो। (अबूदाऊद)

﴿313﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا فَاغْتَبَطَ بِقَتْلِهِ لَمْ يَقْبَلِ اللهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا۔ رواه ابوداؤد، باب فی تعظیم قتل المؤمن،رقم: ٤٢٧٠ سنن ابی داؤد، طبع دار الباز،مکة المکرمة

313. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी मोमिन को क़त्ल किया और उसके क़त्ल पर ख़ुशी का इज़्हार किया अल्लाह तआला उसके न फ़र्ज़ क़ुबूल फ़रमाएंगे, न नफ़्ल। (अबूदाऊद)

﴿314﴾ عَنْ اَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : اِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا، فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُوْلُ فِي النَّارِ قَالَ: فَقُلْتُ اَوْقِيْلَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا الْقَاتِلُ، فَمَا بَالُ الْمَقْتُوْلِ؟ قَالَ: اِنَّهُ قَدْ اَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ۔

رواه مسلم،باب اذاتواجه المسلمان بسیفیهما،رقم: ٧٢٥٢

314. हज़रत अबूबक्र: ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर एक दूसरे के सामने आएं (और उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर दे) तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों (दोज़ख़ की) आग में होंगे। हज़रत अबूबक्र: ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने या किसी और ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़ातिल का दोज़ख़ में जाना तो ज़ाहिर है, लेकिन मक़्तूल (दोज़ख़ में

क्यों जाएगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इसलिए कि उसने भी तो अपने साथी को क़त्ल करने का इरादा किया था। (मुस्लिम)

﴿315﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْكَبَائِرِ قَالَ: الْإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوْقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَشَهَادَةُ الزُّوْرِ.

رواه البخاری، باب ماقیل فی شهادة الزور، رقم: ٢٦٥٣

315. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ से कबीरा गुनाहों के बारे में दरयाफ़्त किया गया (कि वह कौन-कौन से हैं?) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना, मां-बाप की नाफ़रमानी करना, क़त्ल करना और झूठी गवाही देना। (बुख़ारी)

﴿316﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوْبِقَاتِ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ! وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِيْ حَرَّمَ اللهُ اِلَّا بِالْحَقِّ، وَاَكْلُ الرِّبَا، وَ اَكْلُ مَالِ الْيَتِيْمِ، وَ التَّوَلِّيْ يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ.

رواه البخاری،باب قول الله تعالىٰ: ان الذين ياكلون اموال اليتامیٰ......،رقم: ٢٧٦٦

316. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो। सहाबा किराम : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वे सात गुनाह कौन से हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक करना, जादू करना,नाहक़ किसी को क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, (अपनी जान बचाने के लिए) जिहाद में इस्लामी लशकर का साथ छोड़कर भाग जाना और पाक दामन, ईमान वाली और बुरी बातों से बेख़बर औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाना। (बुख़ारी)

﴿317﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تُظْهِرِ الشَّمَاتَةَ لِاَخِيْكَ، فَيَرْحَمَهُ اللهُ وَيَبْتَلِيكَ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب،باب لا تظهر الشماتة لاخيك،رقم: ٢٥٠٦

317. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने भाई की किसी मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार न किया करो। हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उस पर रहम फ़रमा कर उसको उस मुसीबत से नजात दे दें और तुम को मुसीबत में मुब्तला कर दें। (तिर्मिज़ी)

﴿318﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ عَيَّرَ اَخَاهُ بِذَنْبٍ لَمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهُ، قَالَ اَحْمَدُ: قَالُوْا: مِنْ ذَنْبٍ قَدْ تَابَ مِنْهُ۔

رواه الترمذی وقال: حديث حسن غريب،باب فی وعيد من عَيَّرَ اخاهُ بذنب، رقم:٢٥٠٥

318. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने (मुसलमान) भाई को किसी ऐसे गुनाह पर आ़र दिलाई, जिससे वह तौबा कर चुका हो तो वह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक ख़ुद उस गुनाह में मुब्तला न हो जाए। (तिर्मिज़ी)

﴿319﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَيُّمَا امْرِیءٍ قَالَ لِاَخِيْهِ: يَا كَافِرُ! فَقَدْ بَاءَ بِهَا اَحَدُهُمَا، اِنْ كَانَ كَمَا قَالَ، وَاِلَّا رَجَعَتْ عَلَيْهِ۔

رواه مسلم،باب بيان حال ايمان......،رقم: ٢١٦

319. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने मुसलमान भाई को "ऐ काफ़िर" कहा तो कुफ़्र उन दोनों में से एक की तरफ़ ज़रूर लौटेगा। अगर वह शख़्स वाक़ई काफ़िर हो गया था जैसा कि उसने कहा तो ठीक है वरना कुफ़्र कहने वाले की तरफ़ लौट जाएगा। (मुस्लिम)

﴿320﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: وَمَنْ دَعَا رَجُلًا بِالْكُفْرِ اَوْقَالَ: عَدُوَّ اللّٰهِ! وَلَيْسَ كَذٰلِكَ اِلَّا حَارَ عَلَيْهِ۔

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم،باب بيان حال ايمان......،رقم: ٢١٧

320. हज़रत अबूज़र رضي الله عنه से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने किसी शख़्स को काफ़िर या "अल्लाह का दुश्मन" कहकर पुकारा, हालांकि वह ऐसा नहीं है तो उसका कहा हुआ ख़ुद उस पर लौट आता है। (मुस्लिम)

﴿321﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا قَالَ الرَّجُلُ لِاَخِيْهِ: يَا كَافِرُ! فَهُوَ كَقَتْلِهِ۔

رواه البزار و رجاله ثقات،مجمع الزوائد ١٤١/٨

321. हज़रत इमरान बिन हुसैन رضي الله عنهما रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी शख़्स ने अपने भाई को "ऐ काफ़िर" कहा तो यह उसको क़त्ल करने की तरह है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾322﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَنْبَغِيْ لِلْمُؤْمِنِ اَنْ يَكُوْنَ لَعَّانًا. رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في اللعن والطعن، رقم: ٢٠١٩

322. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के लिए मुनासिब नहीं कि वह लानत-मलामत करने वाला हो। (तिर्मिज़ी)

﴾323﴿ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَايَكُوْنُ اللَّعَّانُوْنَ شُفَعَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه مسلم، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، رقم: ٦٦١٠

323. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़्यादा लानत करने वाले क़ियामत के दिन न (गुनहगारों के) सिफ़ारशी बन सकेंगे और न (अम्बिया अ़लैहिस्सलाम की तब्लीग़ के) गवाह बन सकेंगे। (मुस्लिम)

﴾324﴿ عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ.

(وهو جزء من الحديث) رواه مسلم، باب بيان غلظ تحريم قتل الانسان نفسه ......، رقم: ٣٠٣

324. हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन पर लानत करना (गुनाह के एतबार से) उसको क़त्ल करने की तरह है। (मुस्लिम)

﴾325﴿ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ غَنْمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ: خِيَارُ عِبَادِ اللهِ الَّذِيْنَ اِذَا رُؤُوْا ذُكِرَ اللهُ، وَشِرَارُ عِبَادِ اللهِ الْمَشَّاءُوْنَ بِالنَّمِيْمَةِ، الْمُفَرِّقُوْنَ بَيْنَ الْاَحِبَّةِ الْبَاغُوْنَ لِلْبُرَآءِ الْعَنَتَ.

رواه احمد وفيه: شهر بن حوشب و بقية رجاله رجال الصحيح مجمع الزوائد ٨/١٧٦

325. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ग़न्म ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के बेहतरीन बन्दे वे हैं जिनको देखकर अल्लाह तआ़ला याद आए और बदतरीन बन्दे चुग़लियां खाने वाले, दोस्तों में जुदाई डालने वाले और अल्लाह तआ़ला के पाक दामन बन्दों को किसी गुनाह या किसी परेशानी में मुब्तला करने की कोशिश में लगे रहने वाले हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾326﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلٰى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: اِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِيْ كَبِيْرٍ، اَمَّا هٰذَا فَكَانَ لَا يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَاَمَّا هٰذَا فَكَانَ

يَمْشِيْ بِالنَّمِيْمَةِ. (الحديث) رواه البخارى،باب الغيبة......،رقم: ٦٠٥٢

326. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ दो क़ब्रों के पास से गुज़रे, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : इन दोनों क़ब्र वालों को अ़ज़ाब हो रहा है और अ़ज़ाब भी किसी बड़ी चीज़ पर नहीं हो रहा (कि जिससे बचना मुश्किल हो) उनमें से एक तो पेशाब की छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़लख़ोरी करता था। (बुख़ारी)

﴾327﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَمَّا عُرِجَ بِيْ مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَهُمْ اَظْفَارٌ مِنْ نُحَاسٍ يَخْمِشُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَصُدُوْرَهُمْ، فَقُلْتُ: مَنْ هٰؤُلَاءِ يَا جِبْرِيْلُ؟ قَالَ: هٰؤُلَاءِ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ وَيَقَعُوْنَ فِيْ اَعْرَاضِهِمْ.

رواه ابوداؤد،باب فى الغيبة، رقم: ٤٨٧٨

327. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मैं म'राज पर गया तो मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुआ जिनके नाख़ून तांबे के थे, जिनसे वे अपने चेहरों और सीनों को नोच-नोच कर ज़ख़्मी कर रहे थे। मैंने जिबरील से पूछा कि ये कौन लोग हैं? जिबरील ने बताया कि ये लोग इंसानों का गोश्त खाया करते थे, यानी उनकी ग़ीबतें करते थे और उनकी आबरूरेज़ी किया करते थे। (अबूदाऊद)

﴾328﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَارْتَفَعَتْ رِيْحٌ مُنْتِنَةٌ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَتَدْرُوْنَ مَا هٰذِهِ الرِّيْحُ؟ هٰذِهِ رِيْحُ الَّذِيْنَ يَغْتَابُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ.

رواه احمد ورجاله ثقات،مجمع الزوائد٨/١٧٢

328. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि हम नबी करीम ﷺ के साथ थे कि एक बदबू उठी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जानते हो यह बदबू किसकी है? यह बदबू उन लोगों की है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾329﴿ عَنْ اَبِيْ سَعْدٍ وَجَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ الْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا؟ قَالَ: اِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِيْ فَيَتُوْبُ فَيَتُوْبُ اللهُ عَلَيْهِ وَاِنَّ صَاحِبَ الْغِيْبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتّٰى يَغْفِرَهَا لَهُ صَاحِبُهُ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٥/٣٠٦

329. हज़रत अबू साद और हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ग़ीबत करना ज़िना से ज़्यादा (बुरा) है। सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ग़ीबत करना ज़िना से ज़्यादा (बुरा) कैसे है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी अगर ज़िना कर लेता है तो तौबा कर लेता है अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। मगर ग़ीबत करने वाले को जब तक वह शख़्स माफ़ न कर दे, जिसकी उसने ग़ीबत की है उस वक़्त तक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसे माफ़ नहीं किया जाता। (बैहक़ी)

﴿330﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: حَسْبُكَ مِنْ صَفِيَّةَ كَذَا وَكَذَا. تَعْنِي قَصِيْرَةً. فَقَالَ: لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَوْ مُزِجَ بِهَا الْبَحْرُ لَمَزَجَتْهُ، قَالَتْ: وَحَكَيْتُ لَهُ اِنْسَانًا، فَقَالَ: مَا اُحِبُّ اَنِّيْ حَكَيْتُ اِنْسَانًا وَاِنَّ لِيْ كَذَا وَكَذَا.

رواه ابوداؤد، باب في الغيبة، رقم: ٤٨٧٥

330. हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ से कहा : बस आपको तो सफ़ीया का पस्ता क़द होना काफ़ी है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने ऐसा जुम्ला कहा कि अगर इस जुम्ले को समुंदर में मिला दिया जाए तो इस जुम्ले की कड़वाहट समुंदर की नमकीनी पर ग़ालिब आ जाए। हज़रत आ़इशा : यह भी फ़रमाती हैं कि एक मौक़ा पर मैंने आप ﷺ के सामने एक शख़्स की नक़ल उतारी तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे इतना-इतना यानी बहुत ज़्यादा माल भी मिले तब भी मुझे पसन्द नहीं कि किसी की नक़ल उतारूं। (अबूदाऊद)

﴿331﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اَتَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ؟ قَالُوا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ قَالَ: ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ قِيْلَ: اَفَرَاَيْتَ اِنْ كَانَ فِيْ اَخِيْ مَا اَقُوْلُ؟ قَالَ: اِنْ كَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ، فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وَاِنْ لَمْ يَكُنْ فِيْهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ.

رواه مسلم، باب تحريم الغيبة، رقم: ٦٥٩٣

331. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत किसको कहते हैं? सहाबा : ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने (मुसलमान) भाई (की ग़ैरमौजूदगी में उस) के बारे में ऐसी बात कहना, जो उसे नागवार गुज़रे (बस यही ग़ीबत है) किसी ने अ़र्ज़ किया : अगर मैं अपने भाई की कोई ऐसी बुराई ज़िक्र करूं जो वाक़ई उसमें हो (तो क्या यह भी ग़ीबत है)? आप ﷺ

ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वह बुराई जो तुम ब्यान कर रहे हो उसमें मौजूद है तो तुमने उसकी ग़ीबत की, और अगर वह बुराई (जो तुम ब्यान कर रहे हो) उसमें मौजूद ही न हो तो फिर तुमने उस पर बोहतान बांधा। (मुस्लिम)

﴾332﴿ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: مَنْ ذَکَرَ امْرَاً بِشَیْءٍ لَیْسَ فِیْہِ لِیَعِیْبَہُ بِہٖ حَبَسَہُ اللّٰہُ فِیْ نَارِ جَھَنَّمَ حَتّٰی یَاْتِیَ بِنَفَاذِ مَا قَالَ فِیْہِ۔

رواہ الطبرانی فی الکبیر ورجالہ ثقات،مجمع الزوائد ٤/٣٦٣

332. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी को बदनाम करने के लिए उसमें ऐसी बुराई ब्यान करे जो उसमें न हो तो अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ की आग में क़ैद रखेगा, यहां तक कि वह उस बुराई को साबित कर दे (और कैसे साबित कर सकेगा?)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾333﴿ عَنْ عُقْبَۃَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اِنَّ اَنْسَابَکُمْ ھٰذِہٖ لَیْسَتْ بِسِبَابٍ عَلٰی اَحَدٍ، وَاِنَّمَا اَنْتُمْ وُلْدُ آدَمَ طَفُّ الصَّاعِ لَمْ تَمْلَؤُوْہُ لَیْسَ لِاَحَدٍ فَضْلٌ اِلَّا بِالدِّیْنِ، اَوْ عَمَلٍ صَالِحٍ حَسْبُ الرَّجُلِ اَنْ یَکُوْنَ فَاحِشًا بَذِیًّا بَخِیْلًا جَبَانًا۔

رواہ احمد ٤/١٤٥

333. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नसब कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिसकी वजह से तुम किसी को बुरा कहो और आर दिलाओ। तुम सबके सब आदम की औलाद हो। तुम्हारी मिसाल उस साअ़ (यानी पैमाने) की तरह है, जिसको तुमने भरा न हो, यानी कोई भी तुम में कामिल नहीं है, हर एक में कुछ न कुछ नुक़्स है। (तुममें से) किसी को किसी पर फ़ज़ीलत नहीं है अलबत्ता दीन या नेक अ़मल की वजह से एक दूसरे पर फ़ज़ीलत है। आदमी (के बुरा होने) के लिए यह बहुत है कि वह फ़ह्श, बेहूदा बातें करने वाला, बख़ील और बुज़दिल हो। (मुस्नद अहमद)

﴾334﴿ عَنْ عَائِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا قَالَتْ: اسْتَاْذَنَ رَجُلٌ عَلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: بِئْسَ ابْنُ الْعَشِیْرَۃِ، اَوْ بِئْسَ رَجُلُ الْعَشِیْرَۃِ، ثُمَّ قَالَ: ائْذَنُوْا لَہٗ، فَلَمَّا دَخَلَ اَلَانَ لَہُ الْقَوْلَ، فَقَالَتْ عَائِشَۃُ: یَارَسُوْلَ اللّٰہِ! اَلَنْتَ لَہُ الْقَوْلَ وَقَدْ قُلْتَ لَہٗ مَاقُلْتَ، قَالَ: اِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْزِلَۃً عِنْدَ اللّٰہِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مَنْ وَدَعَہٗ۔ اَوْ تَرَکَہٗ۔ النَّاسُ لِاتِّقَاءِ فُحْشِہٖ۔

رواہ ابوداؤد، باب فی حسن العشرۃ، رقم: ٤٧٩١

334. हज़रत आइशा ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह अपनी क़ौम का बुरा आदमी है, फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसको आने की इजाज़त दे दो। जब वह आ गया तो आप ﷺ ने उससे नर्मी से गुफ़्तगू फ़रमाई। उसके जाने के बाद हज़रत आइशा : ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपने तो उस शख़्स से बड़ी नर्मी से बात की, जबकि पहले आपने उसी के बारे में फ़रमाया था (कि वह अपने क़बीले का बहुत बुरा आदमी है) आप ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बदतरीन दर्जे वाला वह शख़्स होगा जिसकी बदकलामी की वजह से लोग उससे मिलना जुलना छोड़ दें। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने आने वाले शख़्स के हक़ में मज़म्मत के जो अल्फ़ाज़ फ़रमाए उसका मक़सद हक़ीक़ते हाल से बाख़बर फ़रमा कर उस शख़्स के फ़रेब से लोगों को बचाना मक़सूद था लिहाज़ा यह ग़ीबत में दाख़िल नहीं और आप ﷺ का उस शख़्स के आने पर नर्मी से गुफ़्तगू करना इस बात की तालीम के लिए था कि ऐसे लोगों के साथ सुलूक किस तरह करना चाहिए, उसमें उसकी इस्लाह का पहलू भी आता है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿335﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْمُؤْمِنُ غِرٌّ كَرِيْمٌ، وَالْفَاجِرُ خَبٌّ لَئِيْمٌ. رواه ابوداؤد، باب في حسن العشرة، رقم: ٤٧٩٠

335. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन भोला भाला शरीफ़ होता है और फ़ासिक़ धोखेबाज़ कमीना होता है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि मोमिन की तबीयत में चालबाज़ी और मक्कारी नहीं होती, वह लोगों को तकलीफ़ पहुंचाने और उसके बारे में बदगुमानी करने से अपनी तबई शराफ़त की वजह से दूर रहता है। उसके बरख़िलाफ़ फ़ासिक़ की तबीयत ही में धोखादही और मक्कारी होती है, फ़ित्ना-फ़साद फैलाना ही उसकी आदत होती है। (तर्जमानुस्सुन्नः)

﴿336﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ آذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ آذَانِيْ، وَمَنْ آذَانِيْ فَقَدْ آذَى اللهَ. رواه الطبراني في الاوسط وهو حديث حسن فيض القدير ١٩/٦

336. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

जिसने किसी मुसलमान को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी, उसने यक़ीनन अल्लाह तआला को तकलीफ़ दी, यानी अल्लाह तआला को नाराज़ किया। (तबरानी, जामेअ् सग़ीर)

﴿337﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اَبْغَضَ الرِّجَالِ اِلَى اللهِ الْاَلَدُّ الْخَصِمُ۔ رواه مسلم، باب فى الالد الخصم، رقم: ٦٧٨٠

337. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा शख़्स वह है जो सख़्त झगड़ालू हो। (मुस्लिम)

﴿338﴾ عَنْ اَبِيْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَلْعُوْنٌ مَنْ ضَارَّ مُؤْمِنًا اَوْ مَكَرَ بِهِ۔

رواه الترمذى وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فى الخيانة والغش، رقم: ١٩٤١

338. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान को नुक़सान पहुंचाए या उसको धोखा दे, वह मलऊन है। (तिर्मिज़ी)

﴿339﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَقَفَ عَلٰى اُنَاسٍ جُلُوْسٍ فَقَالَ: اَلَا اُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِكُمْ مِنْ شَرِّكُمْ؟ قَالَ: فَسَكَتُوْا، فَقَالَ ذٰلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَالَ رَجُلٌ، بَلٰى يَارَسُوْلَ اللهِ! اَخْبِرْنَا بِخَيْرِنَا مِنْ شَرِّنَا، قَالَ: خَيْرُكُمْ مَنْ يُرْجٰى خَيْرُهُ وَيُؤْمَنُ شَرُّهُ، وَشَرُّكُمْ مَنْ لَا يُرْجٰى خَيْرُهُ وَلَا يُؤْمَنُ شَرُّهُ۔ رواه الترمذى وقال: هذاحديث حسن صحيح، باب حديث خيركم من يرجى خيره......، رقم: ٢٢٦٣

339. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि कुछ लोग बैठे हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ उनके पास आकर खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम में भला शख़्स कौन है और बुरा कौन? हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं, सहाबा : ख़ामोश रहे। आपने तीन मर्तबा यही इर्शाद फ़रमाया। उस पर एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बताइए कि हम में भला कौन है और बुरा कौन? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम में सबसे भला शख़्स वह है जिससे भलाई की उम्मीद की जाए और उससे बुराई का ख़तरा न हो और तुम में सबसे बुरा शख़्स वह है

जिससे भलाई की उम्मीद न हो और बुराई का हर वक़्त ख़तरा लगा रहे। (तिर्मिज़ी)

﴿340﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِثْنَتَانِ فِی النَّاسِ هُمَا بِهِمْ کُفْرٌ: اَلطَّعْنُ فِی النَّسَبِ وَالنِّیَاحَةُ عَلَی الْمَیِّتِ۔

رواه مسلم، باب اطلاق اسم الكفر على الطعن......، رقم: ٢٢٧

340. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों में दो बातें कुफ़्र की हैं : नसब में तान करना और मुर्दों पर नौहा करना। (मुस्लिम)

﴿341﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا تُمَارِ اَخَاكَ وَلَا تُمَازِحْهُ وَلَا تَعِدْهُ مَوْعِدًا فَتُخْلِفَهُ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فی المراء، رقم: ١٩٩٥

341. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपने भाई से झगड़ा न करो और न उससे (ऐसा) मज़ाक़ करो (जिससे उसको तकलीफ़ पहुंचे) और न ऐसा वादा करो जिसको पूरा न कर सको। (तिर्मिज़ी)

﴿342﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: آیَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ: اِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَاِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ، وَاِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ۔ رواه مسلم، باب خصال المنافق، رقم: ٢١١

342. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं। जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो उसको पूरा न करे और जब उसके पास अमानत रखवाई जाए, तो ख़्यानत करे। (मुस्लिम)

﴿343﴾ عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ یَقُوْلُ: لَا یَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ۔ رواه البخاری، باب مایكره من النميمة، رقم: ٦٠٥٦

343. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि चुग़लख़ोरी की आदत उन संगीन गुनाहों में से है, जो जन्नत के दाख़िले में रुकावट बनने वाले हैं। कोई आदमी इस गन्दी आदत के साथ जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। हां, अगर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से किसी को माफ़ करके या इस जुर्म की सज़ा देकर

उसको पाक कर दें, तो उसके बाद जन्नत में दाख़िला हो सकेगा।

(मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿344﴾ عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلّٰى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ صَلَاةَ الصُّبْحِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا فَقَالَ: عُدِلَتْ شَهَادَةُ الزُّوْرِ بِالْإِشْرَاكِ بِاللهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَرَأَ: "فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ"

[الحج: ٣٠-٣١] - رواه ابوداؤد، باب فی شهادة الزّور، رقم: ٣٥٩٩

344. हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़ी। जब आप ﷺ (नमाज़ से) फ़ारिग़ हुए, तो उठकर खड़े हो गए और इर्शाद फ़रमाया : झूठी गवाही अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क के बराबर कर दी गई है। यह बात आप ﷺ ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई। फिर आप ﷺ ने यह आयत पढ़ी जिसका तर्जुमा यह है : बुतपरस्ती की गन्दगी से बचो और झूठी गवाही से बचो, यक्सूई के साथ बस अल्लाह ही के होकर उसके साथ किसी को शरीक करने वाले न हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि झूठी गवाही शिर्क व बुतपरस्ती की तरह गन्दा गुनाह है और ईमान वालों को इससे ऐसे ही परहेज़ करना चाहिए, जैसा कि शिर्क व बुतपरस्ती से परहेज़ किया जाता है। (मआ़रिफ़ुल हदीस)

﴿345﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنِ اقْتَطَعَ حَقَّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ بِيَمِيْنِهٖ، فَقَدْ اَوْجَبَ اللهُ لَهُ النَّارَ، وَحَرَّمَ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: وَاِنْ كَانَ شَيْئًا يَسِيْرًا يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ وَاِنْ قَضِيْبٌ مِنْ اَرَاكٍ.

رواه مسلم،باب وعيد من اقتطع حق مسلم......،رقم: ٣٥٣

345. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने (झूठी) क़सम खाकर किसी मुसलमान का कोई हक़ ले लिया, तो अल्लाह तआ़ला ने ऐसे शख़्स के लिए दोज़ख़ वाजिब कर दी है और जन्नत को उस पर हराम कर दिया है। एक शख़्स ने सवाल किया : या रसूलुल्लाह! अगरचे वह कोई मामूली ही चीज़ हो (तब भी यही सज़ा होगी)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगरचे पीलू (के दरख़्त) की एक टहनी ही क्यों न हो। (मुस्लिम)

﴿346﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مَنْ اَخَذَ مِنَ الْاَرْضِ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهٖ خُسِفَ بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلٰى سَبْعِ اَرَضِيْنَ۔

رواه البخاری، باب اثم من ظلم شیئا من الارض، رقم: ٢٤٥٤

346. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने थोड़ी-सी ज़मीन भी नाहक़ ले ली, तो क़ियामत के दिन वह उसकी वजह से सात ज़मीनों तक धंसा दिया जाएगा। (बुख़ारी)

﴿347﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنِ انْتَهَبَ نُهْبَةً فَلَيْسَ مِنَّا۔ (وهو جزء من الحديث)۔ رواه الترمذی وقال: هذاحديث حسن صحيح، باب ماجاء فی النهی عن نكاح الشغار، رقم: ١١٢٣

347. हज़रत इमरान बिन हुसैन ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने लूट-मार की वह हम में से नहीं है। (तिर्मिज़ी)

﴿348﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ، وَلَا يُزَكِّيْهِمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ، قَالَ: فَقَرَاَهَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، قَالَ اَبُوْذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: خَابُوْا وَخَسِرُوْا، مَنْ هُمْ يَارَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: الْمُسْبِلُ اِزَارَهٗ وَالْمَنَّانُ وَالْمُنَفِّقُ سِلْعَتَهٗ بِالْحَلِفِ الْكَاذِبِ۔

رواه مسلم، باب بيان غلظ تحريم اسبال الازار...... رقم: ٢٩٣

48. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन न उनसे बात फ़रमाएंगे, न उनको रहमत की नज़र से देखेंगे, न उनको गुनाहों से पाक करेंगे और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देंगे। यह आयत रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन मर्तबा पढ़ी। हज़रत अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : ये तो सब नाकाम हुए और ख़सारे में रहे। या रसूलुल्लाह! ये लोग कौन हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपना तहबन्द (टख़नों से नीचे) लटकाने वाला, एहसान जताने वाला और झूठी क़समें खाकर अपना सौदा फ़रोख़्त करने वाला। (मुस्लिम)

﴿349﴾ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ ضَرَبَ مَمْلُوْكَهٗ ظُلْمًا اُقِيْدَ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔ رواه الطبرانی ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٤/٤٣٦

349. हज़रत अम्मार बिन यासिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आक़ा अपने ग़ुलाम को नाहक़ मारेगा क़ियामत के दिन उससे बदला लिया जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद

फ़ायदा : मुलाज़मीन (नौकर, ख़ादिम, कारिंदों) को मारना भी इस वईद में दाख़िल है। (मआरिफ़ुल हदीस)

मुसलमानों के आपसी इख़्तिलाफ़ात को दूर करना

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى : ﴿ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّ لَا تَفَرَّقُوْا ﴾ [آل عمران: ١٠٣]

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है : और तुम सब मिलकर अल्लाह तआ़ला की रस्सी (दीन) को मज़बूत पकड़े रहो और बाहम नाइत्तिफ़ाक़ी मत करो।

(आले इमरान : 103)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿350﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلاَ اُخْبِرُكُمْ بِاَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّيَامِ وَالصَّلٰوةِ وَالصَّدَقَةِ؟ قَالُوْا: بَلٰى، قَالَ: صَلَاحُ ذَاتِ الْبَيْنِ، فَاِنَّ فَسَادَ ذَاتِ الْبَيْنِ هِىَ الْحَالِقَةُ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث صحيح،باب فى فضل صلاح ذات البين،رقم: ٢٥٠٩

350. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको रोज़ा, नमाज़ और सदक़ा ख़ैरात से अफ़ज़ल दर्जा वाली चीज़ न बताऊं? सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया : ज़रूर इरशाद फ़रमाइए। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बाहमी इत्तिफ़ाक़ सबसे अफ़ज़ल है, क्योंकि आपस में नाइत्तिफ़ाक़ी (दीन को) मूंढने

वाली है, यानी जैसे उस्तरे से सर के बाल एक दम साफ़ हो जाते हैं ऐसे ही आपस में लड़ाई से दीन ख़त्म हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿351﴾ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ عَنْ اُمِّهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَمْ يَكْذِبْ مَنْ نَمٰى بَيْنَ اثْنَيْنِ لِيُصْلِحَ۔ رواه ابو داؤد،باب فى اصلاح ذات البين،رقم: ٤٩٢٠

351. हज़रत हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान अपनी वालिदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने सुलह कराने के लिए एक फ़रीक़ की तरफ़ से दूसरे को (फ़र्ज़ी बातें) पहुंचाईं, उसने झूठ नहीं बोला, यानी उसे झूठ बोलने का गुनाह नहीं होगा। (अबूदाऊद)

﴿352﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُوْلُ: وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ مَا تَوَادَّ اثْنَانِ فَيُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا اِلَّا بِذَنْبٍ يُحْدِثُهٗ اَحَدُهُمَا۔ (وهو طرف من الحديث)

رواه احمد واسناده حسن ،مجمع الزوائد ٣٣٦/٨

352. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ इरशाद फ़रमाया करते थे : क़सम है उस ज़ाते आ़ली की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले दो मुसलमानों में फूट पड़ने की वजह इसके अ़लावा कोई नहीं होती कि उनमें से किसी एक से गुनाह सरज़द हो जाए। (मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿353﴾ عَنْ اَبِيْ اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ، يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِيْ يَبْدَاُ بِالسَّلَامِ۔ رواه مسلم، باب تحريم الهجر فوق ثلاثة ايام ......،رقم: ٦٥٣٢

353. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मसुलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से तीन रातों से ज़्यादा (क़ताताल्लुक़ी करके) उसे छोड़े रखे कि दोनों मिलें तो यह इधर को मुंह फेर ले और वह उधर को मुंह फेर ले और दोनों में अफ़ज़ल वह है जो (मेल-जोल करने के लिए) सलाम में पहल करे। (मुस्लिम)

﴿354﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَهْجُرَ اَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ، فَمَنْ هَجَرَ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَمَاتَ دَخَلَ النَّارَ۔

رواه ابو داؤد،باب فى هجرة الرجل اخاه، رقم: ٤٩١٤

354. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मसुलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़ताताल्लुक़ी करे। जिस शख़्स ने तीन दिन से ज़्यादा क़ताताल्लुक़ रखा और मर गया तो जहन्नम में जाएगा। (अबूदाऊद)

﴿355﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: لَا يَحِلُّ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَهْجُرَ مُؤْمِنًا فَوْقَ ثَلَاثٍ، فَاِنْ مَرَّتْ بِهٖ ثَلَاثٌ فَلْيَلْقَهُ فَلْيُسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَاِنْ رَدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ فَقَدِ اشْتَرَكَا فِى الْاَجْرِ، وَاِنْ لَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ فَقَدْ بَاءَ بِالْاِثْمِ. زَادَ اَحْمَدُ: وَخَرَجَ الْمُسَلِّمُ مِنَ الْهِجْرَةِ.

رواه ابو داؤد، باب فى هجرة الرجل اخاه، رقم: ٤٩١٢

355. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से (क़ताताल्लुक़ करके) उसे तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे, लिहाज़ा अगर तीन दिन गुज़र जाएं तो अपने भाई से मिल कर सलाम कर लेना चाहिए। अगर उसने सलाम का जवाब दे दिया तो अज्र व सवाब में दोनों शरीक हो गए और अगर सलाम का जवाब न दिया तो वह गुनहगार हुआ और सलाम करने वाला क़ताताल्लुक़ (के गुनाह) से निकल गया। (अबूदाऊद)

﴿356﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا يَكُوْنُ لِمُسْلِمٍ اَنْ يَهْجُرَ مُسْلِمًا فَوْقَ ثَلَاثَةٍ، فَاِذَا لَقِيَهُ سَلَّمَ عَلَيْهِ ثَلَاثَ مِرَارٍ كُلُّ ذٰلِكَ لَا يَرُدُّ عَلَيْهِ، فَقَدْ بَاءَ بِاِثْمِهٖ.

رواه ابو داؤد باب فى هجرة الرجل اخاه، رقم: ٤٩١٣

356. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिए दुरुस्त नहीं कि अपने मसुलमान भाई (से क़ता ताल्लुक़ी करके) उसे तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे, लिहाज़ा जब उससे मुलाक़ात हो तो तीन मर्तबा उसको सलाम करे, अगर वह एक मर्तबा भी सलाम का जवाब न दे तो सलाम करने वाले का (तीन दिन क़ताताल्लुक़ी का) गुनाह भी सलाम का जवाब न देने वाले के ज़िम्मे हो गया। (अबूदाऊद)

﴿357﴾ عَنْ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ اَنْ يُصَارِمَ مُسْلِمًا فَوْقَ ثَلَاثٍ، وَاِنَّهُمَا نَاكِبَانِ عَنِ الْحَقِّ مَا كَانَا عَلٰى صِرَامِهِمَا، وَاِنَّ اَوَّلَهُمَا فَيْئًا يَكُوْنُ سَبْقُهُ بِالْفَيْءِ كَفَّارَةً لَهُ، وَاِنْ سَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَقْبَلْ سَلَامَهُ، رَدَّتْ

عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ، وَرَدَّ عَلَى الْآخَرِ الشَّيْطَانُ، وَإِنْ مَاتَا عَلَى صِرَامِهِمَا لَمْ يَدْخُلَا الْجَنَّةَ وَلَمْ يَجْتَمِعَا فِي الْجَنَّةِ. رواه ابن حبّان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط الشيخين ١٢/٤٨٠

357. हज़रत हिशाम बिन आ़मिर ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि अपने मुसलमान भाई से तीन दिनों से ज़्यादा क़तातााल्लुक़ रखे और जब तक वह उस क़ता ताल्लुक़ी पर क़ायम रहेंगे हक़ से हटे रहेंगे और उन दोनों में से जो (सुलह करने में) पहल करेगा उसका पहल करना उसके क़ताताल्लुक़ी के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। फिर अगर उस पहल करने वाले ने सलाम किया और दूसरे ने सलाम को क़ुबूल न किया और उसका जवाब न दिया तो सलाम करने वाले को फ़रिश्ते जवाब देंगे और दूसरे को शैतान जवाब देगा। अगर उसी (पहली) क़ताताल्लुक़ी की हालत में दोनों मर गए तो न जन्नत में दाख़िल होंगे, न जन्नत में इकट्ठे होंगे।

(इब्ने हब्बान)

﴿358﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ هَجَرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثٍ فَهُوَ فِي النَّارِ إِلَّا أَنْ يَتَدَارَكَهُ اللهُ بِرَحْمَتِهِ.

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٨/١٣١

358. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़ताताल्लुक़ करे (अगर इस हाल में मर गया) तो जहन्नम में जाएगा, मगर यह कि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से उसकी मदद फ़रमाएंगे (तो दोज़ख़ से बच जाएगा)।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿359﴾ عَنْ أَبِي خِرَاشٍ السُّلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ هَجَرَ أَخَاهُ سَنَةً، فَهُوَ كَسَفْكِ دَمِهِ. رواه ابو داؤد، باب في هجرة الرجل اخاه، رقم: ٤٩١٥

359. हज़रत अबू ख़िराश सुलमी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने (नाराज़गी की वजह से) अपने मुसलमान भाई से एक साल तक मिलना-जुलना छोड़े रखा, उसने गोया उसका ख़ून किया यानी साल भर क़ताताल्लुक़ी का गुनाह और नाहक़ क़त्ल करने का गुनाह क़रीब-क़रीब है।

(अबूदाऊद)

﴾360﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ اَيِسَ اَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّوْنَ فِىْ جَزِيْرَةِ الْعَرَبِ، وَلٰكِنْ فِى التَّحْرِيْشِ بَيْنَهُمْ۔

رواه مسلم،باب تحريش الشيطان ......،رقم: ٧١٠٣

360. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : शैतान इस बात से तो मायूस हो गया है कि जज़ीरा अरब में मुसलमान उसकी परस्तिश यानी कुफ़्र व शिर्क करें लेकिन उनके दर्मियान फ़ित्ना व फ़साद फैलाने और उनको आपस में भड़काने से मायूस नहीं हुआ। (मुस्लिम)

﴾361﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تُعْرَضُ الْاَعْمَالُ فِىْ كُلِّ يَوْمِ خَمِيْسٍ وَاثْنَيْنِ، فَيَغْفِرُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ فِىْ ذٰلِكَ الْيَوْمِ لِكُلِّ امْرِئٍ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا اِلَّا امْرَاً كَانَتْ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اَخِيْهِ شَحْنَاءُ، فَيُقَالُ: ارْكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَصْطَلِحَا، ارْكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَصْطَلِحَا۔

رواه مسلم،باب النهى عن الشحناء، رقم: ٦٥٤٦

361. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : हर पीर और जुमारात के दिन अल्लाह तआ़ला के सामने बन्दों के आ़माल पेश किए जाते हैं। चुनांचे अल्लाह तआ़ला उस दिन हर उस शख़्स की जो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं, अलबत्ता वह शख़्स उस बख़्शिश से महरूम रहता है कि जिसकी अपने किसी (मुसलमान) भाई से दुश्मनी हो। (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से फ़रिश्तों) को कहा जाएगा : उन दोनों को रहने दो, जब तक आपस में सुलह व सफ़ाई न कर लें, उन दोनों को रहने दो जब तक आपस में सुलह व सफ़ाई न कर लें। (मुस्लिम)

﴾362﴿ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَطَّلِعُ اللهُ اِلٰى جَمِيْعِ خَلْقِهٖ لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَيَغْفِرُ لِجَمِيْعِ خَلْقِهٖ اِلَّا لِمُشْرِكٍ اَوْ مُشَاحِنٍ۔

رواه الطبرانى فى الكبير والاوسط ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ١٢٦/٨

362. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : पन्द्रह शाबान की रात अल्लाह तआ़ला सारी मख़्लूक़ की तरफ़ मतवज्जोह फ़रमाते हैं और तमाम मख़्लूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं, मगर दो शख़्सों की मग़्फ़िरत नहीं होती, एक शिर्क करने वाला या वह शख़्स जो किसी से कीना रखे।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿363﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: تُعْرَضُ الْاَعْمَالُ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ وَالْخَمِيْسِ، فَمِنْ مُسْتَغْفِرٍ فَيُغْفَرُلَهُ، وَمِنْ تَائِبٍ فَيُتَابُ عَلَيْهِ، وَيُرَدُّ اَهْلُ الضَّغَائِنِ بِضَغَائِنِهِمْ حَتّٰى يَتُوْبُوْا۔ رواه الطبرانى فى الاوسط ورواته ثقات، الترغيب ٣/٤٥٨

363. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमारात के दिन (अल्लाह तआला की बारगाह में बन्दों के) आमाल पेश किए जाते हैं। मग़्फ़िरत तलब करने वालों की मग़्फ़िरत की जाती है, तौबा करने वालों की तौबा क़ुबूल की जाती है (लेकिन) कीना रखने वालों को उनके कीना की वजह से छोड़े रखा जाता है, यानी उनका इस्तग़्फ़ार क़ुबूल नहीं होता, जब तक कि वे उस (कीना से) तौबा न कर लें। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿364﴾ عَنْ اَبِىْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا وَشَبَّكَ بَيْنَ اَصَابِعِهِ۔ رواه البخارى، باب نصر المظلوم، رقم: ٢٤٤٦

364. हज़रत अबू मूसा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान से तअल्लुक़ एक इमारत की तरह है, जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत करता है। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में डालीं (और इस अमल से यह समझाया कि मुसलमानों को इस तरह आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े रहना चाहिए और एक दूसरे की क़ुव्वत का ज़रिया होना चाहिए)। (बुख़ारी)

﴿365﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ امْرَاَةً عَلٰى زَوْجِهَا اَوْ عَبْدًا عَلٰى سَيِّدِهٖ۔ رواه ابوداؤد، باب فيمن خبب امراة على زوجها، رقم: ٢١٧٥

365. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी औरत को उसके शौहर के ख़िलाफ़ या किसी ग़ुलाम को उसके आक़ा के ख़िलाफ़ भड़काए, वह हम में से नहीं। (अबूदाऊद)

﴿366﴾ عَنِ الزُّبَيْرِبْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: دَبَّ اِلَيْكُمْ دَاءُ الْاُمَمِ قَبْلَكُمْ: الْحَسَدُ وَالْبَغْضَاءُ، هِيَ الْحَالِقَةُ، لَا اَقُوْلُ تَحْلِقُ الشَّعْرَ وَلٰكِنْ تَحْلِقُ الدِّيْنَ۔

(الحديث) رواه الترمذى، باب فى فضل صلاح ذات البين، رقم: ٢٥١٠

366. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुमसे पहली उम्मतों की बीमारी तुम्हारे अन्दर सरायत कर गई। वह

बीमारी हसद और बुग़्ज़ है जो मूंड देने वाली है। मैं यह नहीं कहता कि बालों के मूंडने वाली है बल्कि यह दीन का सफ़ाया कर देती है (कि इस बीमारी की वजह से इंसान के अख़्लाक़ तबाह व बरबाद हो जाते हैं)। (तिर्मिज़ी)

﴾367﴿ عَنْ عَطَاءِ بْنِ عَبْدِاللهِ الْخُرَاسَانِيِّ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَصَافَحُوْا يَذْهَبِ الْغِلُّ تَهَادُوْا تَحَابُّوْا وَتَذْهَبِ الشَّحْنَاءُ.

رواه الامام مالك فى الموطا، ماجاء فى المهاجرة ص ٧٠٦

367. हज़रत अ़ता बिन अ़ब्दुल्लाह ख़ुरासानी रह० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : आपस में मुसाफ़ा किया करो, (इससे) कीना ख़त्म हो जाता है। आपस में एक दूसरे को हदिया दिया करो, आपस में मुहब्बत होती है और दुश्मनी दूर होती है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

मुसलमानों की माली मदद

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ط وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ﴾ [البقرة: ٢٦١]

अल्लाह तआला का इरशाद है : जो लोग अपना माल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है जिससे सात बालें उगीं और हर एक-एक बाल में सौ-सौ दाने हों और अल्लाह तआला जिस (के माल) को चाहता है ज़्यादा करता है और अल्लाह तआला बड़ा फ़ैय्याज़ और बड़ा इल्म वाला है। (बक़र: 261)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ [البقرة: ٢٧٤]

अल्लाह तआला का इरशाद है : जो लोग अपने माल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते हैं, रात को और दिन को, छुपा कर और ज़ाहिर में उन्हीं के लिए अपने रब के हां सवाब है और उन पर न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (बक़र: 274)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ [ال عمران: ٩٢]

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है : हरगिज़ नेकी में कमाल हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि अपनी प्यारी चीज़ से कुछ ख़र्च करो।(आले इमरान : 92)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا﴾ [الدهر:٨-٩]

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है : और वे लोग बावजूद खाने की रग़बत और एहतियाज के मिस्कीन को और यतीम को और क़ैदी को खाना खिला देते हैं। कहते हैं हम तो तुम को महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ाजूई की ग़रज़ से खाना खिलाते हैं, हम तुमसे किसी बदला और शुक्रिया के ख़्वाहिशमन्द नहीं हैं। (दह्र : 8)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿368﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ اَطْعَمَ اَخَاهُ خُبْزًا حَتّٰى يُشْبِعَهُ وَسَقَاهُ مَاءً حَتّٰى يَرْوِيَهُ بَعَّدَهُ اللّٰهُ عَنِ النَّارِ سَبْعَ خَنَادِقَ، بُعْدُ مَا بَيْنَ خَنْدَقَيْنِ مَسِيْرَةُ خَمْسِمِائَةِ سَنَةٍ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١٢٩/٤

368. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू बिन आ़स رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने (मुसलमान) भाई को पेट भर कर खाना खिलाता है और पानी पिलाता है अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम से सात ख़न्दक़ें दूर फ़रमा देते हैं। दो ख़न्दक़ों का दर्मियानी फ़ासला पांच सौ साल की मुसाफ़त है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿369﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ مِنْ مُوْجِبَاتِ الْمَغْفِرَةِ اِطْعَامَ الْمُسْلِمِ السَّغْبَانِ۔ رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢١٧/٣

369. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद

फ़रमाया : भूखे मुसलमान को खाना खिलाना मग़फ़िरत को वाजिब करने वाले आमाल में से है। (बैहक़ी)

﴿370﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اَیُّمَا مُسْلِمٍ کَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا عَلٰی عُرْیٍ، کَسَاہُ اللّٰہُ مِنْ خُضْرِ الْجَنَّۃِ، وَاَیُّمَا مُسْلِمٍ اَطْعَمَ مُسْلِمًا عَلٰی جُوْعٍ، اَطْعَمَہُ اللّٰہُ مِنْ ثِمَارِ الْجَنَّۃِ، وَاَیُّمَا مُسْلِمٍ سَقٰی مُسْلِمًا عَلٰی ظَمَاءٍ، سَقَاہُ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ مِنَ الرَّحِیْقِ الْمَخْتُوْمِ۔ رواہ ابوداؤد، باب فی فضل سقی الماء، رقم: ١٦٨٢

370. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान को नंगेपन की हालत में कपड़ा पहनाता है, अल्लाह तआला उसको जन्नत के सब्ज़ लिबास पहनाएंगे। जो शख़्स किसी मुसलमान को भूख की हालत में खाना खिलाता है अल्लाह तआला उसको जन्नत के फलों में से खिलाएंगे। जो शख़्स किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाता है अल्लाह तआला उसको ऐसी ख़ालिस शराब पिलाएंगे, जिस पर मुहर लगी होगी। (अबूदाऊद)

﴿371﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا اَنَّ رَجُلًا سَاَلَ النَّبِیَّ ﷺ: اَیُّ الْاِسْلَامِ خَیْرٌ؟ فَقَالَ: تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَاُ السَّلَامَ عَلٰی مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ۔

رواہ البخاری، باب اطعام الطعام من الاسلام، رقم: ١٢

371. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया : इस्लाम में सबसे बेहतर अमल कौन-सा है? इरशाद फ़रमाया : खाना खिलाना और (हर एक को) सलाम करना, ख़्वाह उससे तुम्हारी जान-पहचान हो या न हो। (बुख़ारी)

﴿372﴾ عَنْ عَبْدِاللّٰہِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اُعْبُدُوا الرَّحْمٰنَ، وَاَطْعِمُوا الطَّعَامَ، وَاَفْشُوا السَّلَامَ تَدْخُلُوا الْجَنَّۃَ بِسَلَامٍ۔ رواہ الترمذی وقال

ھذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء فی فضل اطعام الطعام، رقم: ١٨٥٥

372. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : रहमान की इबादत करते रहो, खाना खिलाते रहो और सलाम फैलाते रहो (इन आमाल की वजह से) जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे। (तिर्मिज़ी)

﴾373﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ اِلَّا الْجَنَّةُ۔ قَالُوْا: يَا نَبِيَّ اللهِ! مَا الْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ؟ قَالَ: اِطْعَامُ الطَّعَامِ وَاِفْشَاءُ السَّلَامِ۔

رواه احمد ٣/٣٢٥

373. हज़रत जाबिर ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मबरूर हज का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं। सहाबा किराम ﷡ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह के नबी! मबरूर हज क्या है? इरशाद फ़रमाया : (जिस हज में) खाना खिलाया जाए और सलाम फैलाया जाए। (मुस्नद अहमद)

﴾374﴿ عَنْ هَانِئٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ لَمَّا وَفَدَ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَيُّ شَيْءٍ يُوْجِبُ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: عَلَيْكَ بِحُسْنِ الْكَلَامِ وَبَذْلِ الطَّعَامِ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث مستقيم وليس له علة ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ١/٢٣

374. हज़रत हानी ﷛ से रिवायत है कि जब वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन-सा अ़मल जन्नत को वाजिब करने वाला है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुम अच्छी तरह बात करने और खाना खिलाने को लाज़िम पकड़ो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾375﴿ عَنِ الْمَعْرُوْرِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَقِيْتُ اَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِالرَّبَذَةِ وَعَلَيْهِ حُلَّةٌ وَعَلٰى غُلَامِهِ حُلَّةٌ فَسَاَلْتُهُ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ: اِنِّيْ سَابَبْتُ رَجُلًا فَعَيَّرْتُهُ بِاُمِّهِ، فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا اَبَا ذَرٍّ! اَعَيَّرْتَهُ بِاُمِّهِ؟ اِنَّكَ امْرُؤٌ فِيْكَ جَاهِلِيَّةٌ، اِخْوَانُكُمْ خَوَلُكُمْ جَعَلَهُمُ اللهُ تَحْتَ اَيْدِيْكُمْ، فَمَنْ كَانَ اَخُوْهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَاْكُلُ، وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلَا تُكَلِّفُوْهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ، فَاِنْ كَلَّفْتُمُوْهُمْ فَاَعِيْنُوْهُمْ۔

رواه البخارى،باب المعاصى من امر الجاهلية......رقم: ٣٠

375. हज़रत मारूर रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मेरी हज़रत अबूज़र ﷛ से मक़ामे रबज़ा में मुलाक़ात हुई। (वह और उनके ग़ुलाम एक ही क़िस्म का लिबास पहने हुए थे, मैंने उनसे इस बारे में पूछा (कि क्या बात है आप के और ग़ुलाम के कपड़ों में कोई फ़र्क़ नहीं है) उस पर उन्होंने यह वाक़िआ ब्यान किया कि एक मर्तबा मैंने अपने ग़ुलाम को बुरा-भला कहा और उसी सिलसिले में उसको मां की ग़ैरत दिलाई। (यह ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ को पहुंची) तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अबूज़र! क्या तुमने उसको मां की ग़ैरत दिलाई है? तुममें अभी जाहिलियत का असर

बाक़ी है। तुम्हारे मातहत (लोग) तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह तआला ने उनको तुम्हारा मातहत बनाया है, लिहाज़ा जिसका मातहत उसका भाई हो, उसको वही खिलाए जो ख़ुद खाए और वही पहनाए जो खुद पहने। मातहतों से वह काम न लो जो उन पर बोझ बन जाए और अगर कोई ऐसा काम लो तो उनका हाथ बटाओ। (बुख़ारी)

﴿376﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَاسُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ: لَا۔

رواه مسلم،باب في سخائه ﷺ، رقم: ٦٠١٨

376. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि ऐसा कभी नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह ﷺ से किसी चीज़ का सवाल किया गया हो और आप ﷺ ने इंकार कर दिया हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि आप ﷺ किसी भी हालत में साइल के सामने अपनी ज़बान पर साफ़ इंकार का लफ़्ज़ नहीं लाते थे। अगर आपके पास कुछ होता तो फ़ौरन इनायत फ़रमा देते और अगर देने को न होता तो वादा फ़रमा लेते या ख़ामोशी अख़्तियार कर लेते या मुनासिब अल्फ़ाज़ में उज़्र फ़रमा देते या दुआ वाले जुम्ले इरशाद फ़रमा देते। (मज़ाहिरे हक़)

﴿377﴾ عَنْ اَبِيْ مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اَطْعِمُوا الْجَائِعَ، وَعُوْدُوا الْمَرِيْضَ، وَفُكُّوا الْعَانِيَ۔

رواه البخاري،باب قول الله تعالى: كلوا من طيبات مارزقنكم......،رقم: ٥٣٧٣

377. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : भूखे को खाना खिलाओ, बीमार की इयादत करो और (नाहक़) क़ैदी को रिहाई दिलाने की कोशिश करो। (बुख़ारी)

﴿378﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: يَا ابْنَ آدَمَ! مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِيْ، قَالَ: يَا رَبِّ! كَيْفَ اَعُوْدُكَ؟ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ اَنَّ عَبْدِيْ فُلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ، اَمَا عَلِمْتَ اَنَّكَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِيْ عِنْدَهُ، يَا ابْنَ آدَمَ! اسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِيْ، قَالَ: يَارَبِّ! وَكَيْفَ اُطْعِمُكَ؟ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اَمَا عَلِمْتَ اَنَّهُ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِيْ فُلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ، اَمَا عَلِمْتَ اَنَّكَ لَوْ اَطْعَمْتَهُ لَوَجَدْتَ ذٰلِكَ عِنْدِيْ؟ يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَسْقَيْتُكَ فَلَمْ تَسْقِنِيْ، قَالَ: يَارَبِّ!

كَيْفَ اَسْقِيْكَ؟ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ، قَالَ: اسْتَسْقَاكَ عَبْدِيْ فُلاَنٌ فَلَمْ تَسْقِهِ، اَمَا اِنَّكَ لَوْ اَسْقَيْتَهُ وَجَدْتَ ذٰلِكَ عِنْدِيْ. رواه مسلم،باب فضل عيادة المريض، رقم: ٦٥٥٦

378. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे : आदम के बेटे! मैं बीमार हुआ तुमने मेरी बीमारपुर्सी नहीं की? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं कैसे आपकी बीमारपुर्सी करता आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं (बीमार होने के ऐब से पाक हैं)? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरा फ़्लां बन्दा बीमार था, तुमने उसकी बीमारपुर्सी न की। क्या तुम्हें मालूम नहीं था तुम अगर उसकी बीमारपुर्सी करते तो मुझे उसके पास पाते? आदम के बेटे! मैंने तुमसे खाना मांगा तो तुमने मुझे नहीं खिलाया? बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं आपको कैसे खाना खिलाता, आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मेरे फ़्लां बन्दे ने तुमसे खाना मांगा, तुमने उसको खाना नहीं खिलाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि तुम अगर उसको खाना खिलाते तो तुम उसका सवाब मेरे पास पाते? आदम के बेटे! मैंने तुमसे पानी मांगा था तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब! मैं आपको कैसे पानी पिलाता, आप तो रब्बुल आ़लमीन हैं? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : मेरे फ़्लां बन्दे ने तुमसे पानी मांगा तो तुमने उसको नहीं पिलाया, अगर तुम उसको पानी पिलाते तो तुम उसका सवाब मेरे पास पाते। (मुस्लिम)

﴿379﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا صَنَعَ لِاَحَدِكُمْ خَادِمُهُ طَعَامَهُ ثُمَّ جَائَهُ بِهِ، وَقَدْ وَلِيَ حَرَّهُ وَدُخَانَهُ، فَلْيُقْعِدْهُ مَعَهُ، فَلْيَاْكُلْ، فَاِنْ كَانَ الطَّعَامُ مَشْفُوْهًا قَلِيْلًا، فَلْيَضَعْ فِيْ يَدِهِ مِنْهُ اُكْلَةً اَوْ اُكْلَتَيْنِ.

رواه مسلم،باب اطعام المملوك مما ياكل......،رقم: ٤٣١٧

379. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी का ख़ादिम उसके लिए खाना तैयार करे, फिर वह उसके पास लेकर आए जबकि उसने उसके पकाने में गर्मी और धुएं की तकलीफ़ उठाई है तो मालिक को चाहिए कि उस ख़ादिम को भी खाने में अपने साथ बिठाए और वह भी खाए। अगर वह खाना थोड़ा हो (जो दोनों के लिए काफ़ी न हो सके) तो मालिक को चाहिए कि खाने में से एक दो लुक़्मे ही उस ख़ादिम को दे दे। (मुस्लिम)

﴾380﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ : مَا مِنْ مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا إِلَّا كَانَ فِيْ حِفْظِ اللهِ مَا دَامَ مِنْهُ عَلَيْهِ خِرْقَةٌ. رواه الترمذى وقال:

هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء فى ثواب من كسامسلما، رقم: ٢٤٨٤

380. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाता है तो जब तक पहनने वाले के बदन पर उस कपड़े का एक टुकड़ा भी रहता है, पहनाने वाला अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहता है। (तिर्मिज़ी)

﴾381﴿ عَنْ حَارِثَةَ بْنِ النُّعْمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مُنَاوَلَةُ الْمِسْكِيْنِ تَقِيْ مِيْتَةَ السُّوْءِ. رواه الطبرانى فى الكبير والبيهقى فى شعب الايمان والضياء وهو حديث

صحيح، الجامع الصغير ٦٥٧/٢

381. हज़रत हारिसा बिन नोमान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मिस्कीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है।

(तबरानी, बैहक़ी, ज़िया, जामेअ़ सग़ीर)

﴾382﴿ عَنْ أَبِيْ مُوْسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْخَازِنَ الْمُسْلِمَ الْأَمِيْنَ الَّذِيْ يُنْفِذُ. وَ رُبَّمَا قَالَ يُعْطِيْ. مَا أُمِرَ بِهِ، فَيُعْطِيْهِ كَامِلًا مُوَفَّرًا، طَيِّبَةً بِهِ نَفْسُهُ، فَيَدْفَعُهُ إِلَى الَّذِيْ أُمِرَ لَهُ بِهِ أَحَدُ الْمُتَصَدِّقِيْنِ. رواه مسلم، باب اجر الخازن الامين......، رقم: ٢٣٦٣

382. हज़रत अबू मूसा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : वह मुसलमान अमानतदार ख़ज़ान्ची जो मालिक के हुक्म के मुताबिक़ ख़ुशदिली से जितना माल जिसे देने को कहा गया है उतना उसे पूरा-पूरा दे तो उसे भी मालिक की तरह सदक़ा करने का सवाब मिलेगा। (मुस्लिम)

﴾383﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا إِلَّا كَانَ مَا أُكِلَ مِنْهُ لَهُ صَدَقَةٌ، وَمَاسُرِقَ مِنْهُ لَهُ صَدَقَةٌ، وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ مِنْهُ فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ، وَمَا أَكَلَتِ الطَّيْرُ فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ ،وَلَا يَرْزَؤُهُ أَحَدٌ إِلَّا كَانَ لَهُ صَدَقَةٌ.

رواه مسلم، باب فضل الغرس والزرع، رقم: ٣٩٦٨

383. हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो मसुलमान दरख़्त लगाता है, उसमें से जितना हिस्सा खा लिया जाए वह दरख़्त लगाने वाले के लिए सदक़ा हो जाता है और जो उसमें से चुरा लिय जाए वह भी

सदक़ा हो जाता है, यानी उस पर भी मालिक को सदक़े का सवाब मिलता है और जितना हिस्सा उसमें से दरिन्दे खा लेते हैं वह भी उसके लिए सदक़ा हो जाता है और जितना हिस्सा उसमें से परिन्दे खा लेते हैं वह भी उसके लिए सदक़ा हो जाता है। (ग़रज़ यह कि) जो कोई उस दरख़्त में से कुछ (भी फल वग़ैरह) कम कर देता है, तो वह उस (दरख़्त लगाने वाले) के लिए सदक़ा हो जाता है। (मुस्लिम)

﴿384﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ اَحْيٰى اَرْضًا مَيْتَةً، فَلَهُ فِيْهَا اَجْرٌ. (الحديث) رواه ابن حبّان، قال المحقق: اسناده على شرط مسلم ٦١٥/١١

384. हज़रत जाबिर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स बन्जर ज़मीन को काश्त के क़ाबिल बनाता है तो उसे उसका अज्र मिलता है। (इब्ने हब्बान)

﴿385﴾ عَنِ الْقَاسِمِ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا مَرَّ بِهِ وَهُوَ يَغْرِسُ غَرْسًا بِدِمَشْقَ فَقَالَ لَهُ: اَتَفْعَلُ هٰذَا وَاَنْتَ صَاحِبُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: لَا تَعْجَلْ عَلَيَّ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ غَرَسَ غَرْسًا لَمْ يَاْكُلْ مِنْهُ آدَمِيٌّ وَلَا خَلْقٌ مِنْ خَلْقِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ اِلَّا كَانَ لَهُ صَدَقَةً. رواه احمد ٤٤٤/٦

385. हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि दमिश्क़ में हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ के पास से एक शख़्स गुज़रे। उस वक़्त हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ कोई पौधा लगा रहे थे। उस शख़्स ने अबुद्दर्दा ﷺ से कहा : क्या आप भी ये (दुन्यावी) काम कर रहे हैं, हालांकि आप तो रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी हैं। हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ ने फ़रमाया : मुझे मलामत करने में जल्दी न करो। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स पौधा लगाता है और उसमें से कोई इंसान या अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में से कोई मख़्लूक़ खाती है तो वह उस (पौदा लगाने वाले) के लिए सदक़ा होता है। (मुस्नद अहमद)

﴿386﴾ عَنْ اَبِي اَيُّوْبَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَغْرِسُ غَرْسًا اِلَّا كَتَبَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ قَدْرَمَا يَخْرُجُ مِنْ ثَمَرِ ذٰلِكَ الْغِرَاسِ.

رواه احمد ٤١٥/٥

386. हज़रत अबू ऐय्यूब अन्सारी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स पौधा लगता है फिर उस दरख़्त से जितना फल पैदा होता

है अल्लाह तआ़ला फल की पैदावार के बक़द्र पौधा लगाने वाले के लिए अज्र लिख देते हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿387﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَقْبَلُ الْهَدِيَّةَ وَيُثِيْبُ عَلَيْهَا۔

رواه البخاري، باب المكافاة في الهبة، رقم: ٢٥٨٥

387. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हदिया क़ुबूल फ़रमाते थे और उसके जवाब में (ख़्वाह उसी वक़्त या दूसरे वक़्त) ख़ुद भी अ़ता फ़रमाते थे। (बुख़ारी)

﴿388﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أُعْطِيَ عَطَاءً فَوَجَدَ فَلْيَجْزِ بِهِ، فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُثْنِ بِهِ، فَمَنْ أَثْنَى بِهِ فَقَدْ شَكَرَهُ وَمَنْ كَتَمَهُ فَقَدْ كَفَرَهُ۔

رواه ابوداؤد، باب في شكر المعروف، رقم: ٤٨١٣

388. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स को हदिया दिया जाए, अगर उसके पास भी देने के लिए कुछ हो तो उसको बदले में हदिया देने वाले को दे देना चाहिए और अगर कुछ न हो तो (बतौर शुक्रिया) देने वले की तारीफ़ करनी चाहिए क्योंकि जिसने तारीफ़ की, उसने शुक्रिया अदा कर दिया। और जिसने (तारीफ़ नहीं की बल्कि एहसान के मामले को) छुपाया उसने नाशुक्री की। (अबूदाऊद)

﴿389﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيْمَانُ فِيْ قَلْبِ عَبْدٍ أَبَدًا۔ (وهو جزء من الحديث) رواه النسائي، باب فضل من عمل في سبيل الله......، رقم: ٣١١٢

389. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : बन्दे के दिल में कभी बुख़्ल और ईमान जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿390﴾ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ خَبٌّ وَلَا بَخِيْلٌ وَلَا مَنَّانٌ۔

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما جاء في البخل، رقم: ١٩٦٣

390. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : धोखेबाज़, बख़ील और एहसान जताने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। (तिर्मिज़ी)

इख़्लासे नीयत यानी तस्हीहे नीयत

अल्लाह तआला के अवामिर को महज़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिए पूरा करना।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿بَلٰى ق مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ص وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ [البقرة:١١٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : हां, जिसने अपना चेहरा अल्लाह तआला के सामने झुका दिया और वह मुख़्लिस भी हो तो ऐसे शख़्स को उसका अज्र उसके रब के पास मिलता है। ऐसे लोगों पर न कोई ख़ौफ़ होगा न वह ग़मगीन होंगे। (बक़र: 112)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ﴾ [البقره:٢٨٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी ही के लिए ख़र्च किया करो। (बक़र: 282)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ج وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ط وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ﴾ [ال عمران:١٤٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो शख़्स दुनिया में अपने अ़मल का बदला

चाहेगा उसे दुनिया ही में दे देंगे (और आख़िरत में उसके लिए हिस्सा नहीं होगा) और जो शख़्स आख़िरत का बदला चाहेगा हम उसको आख़िरत का सवाब अ़ता फ़रमाएंगे (और दुनिया में भी देंगे) और हम बहुत जल्द शुक्रगुज़ारों को बदला देंगे यानी उन लोगों को बहुत जल्द बदला देंगे जो आख़िरत के सवाब की नीयत से अ़मल करते हैं। (आले इमरान : 145)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

[الشعراء:١٤٥]

(हज़रत सालेह ﷺ ने अपनी क़ौम से फ़रमाया) मैं तुमसे इस तब्लीग़ पर कोई बदला नहीं चाहता। मेरा बदला तो रब्बुलआ़लमीन ही के ज़िम्मे है।
(शुअ़रा : 145)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ﴾

[الروم:٣٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो सदक़ा महज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ाजूई के इरादे से देते हो तो, जो लोग ऐसा करते हैं वही लोग अपना माल और सवाब बढ़ाने वाले हैं। (रूम : 39)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ﴾ [الاعراف:٢٩]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और ख़ास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। (आराफ़ : 29)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ﴾

[الحج:٣٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला के पास न तो उन क़ुरबानियों का गोश्त पहुंचता है और न ही उनका ख़ून, बल्कि उनके पास तो तुम्हारी परहेगज़ारी पहुंचती है यानी उनके यहां तो तुम्हारे दिली जज़्बात देखे जाते हैं। (हज : 37)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 1 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ وَاَمْوَالِكُمْ، وَلٰكِنْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ وَاَعْمَالِكُمْ.

رواه مسلم، باب تحريم ظلم المسلم......،رقم:٦٥٤٣

1. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखते, बल्कि तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आमाल को देखते हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : यानी अल्लाह तआला के यहां रज़ामन्दी का फ़ैसला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों की बुनयाद पर नहीं होगा, बल्कि तुम्हारे दिलों और आमाल को देखकर होगा कि दिल में कितना इख़्लास था।

﴿ 2 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَاِنَّمَا لِامْرِئٍ مَانَوٰى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهٗ اِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهٖ فَهِجْرَتُهٗ اِلَى اللهِ وَرَسُوْلِهٖ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهٗ اِلٰى دُنْيَا يُصِيْبُهَا اَوِامْرَاَةٍ يَتَزَوَّجُهَا، فَهِجْرَتُهٗ اِلٰى مَا هَاجَرَ اِلَيْهِ.

رواه البخاری، باب النية فی الايمان، رقم:٦٦٨٩

2. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : सारे आमाल का दारो मदार नीयत ही पर है और आदमी को वही मिलेगा, जिसकी उसने नीयत की होगी लिहाज़ा जिस शख़्स ने अल्लाह तआला और उसके रसूल की लिए हिजरत की, यानी अल्लाह तआला और उसके रसूल की ख़ुशनूदी के सिवा उसकी हिजरत की कोई और वजह न थी, तो उसकी हिजरत अल्लाह तआला और उसके रसूल ही के लिए होगी यानी उसको उस हिजरत का सवाब मिलेगा और जिस शख़्स ने किसी दुन्यावी ग़रज़ या किसी औरत से निकाह करने के लिए हिजरत की, तो (उसकी हिजरत अल्लाह तआला और उसके रसूल के लिए न होगी, बल्कि) जिस दूसरी ग़रज़ और नीयत से उसने हिजरत की है (अल्लाह तआला के नज़दीक भी) उसकी हिजरत उसी (ग़रज़) के लिए समझी जाएगी। (बुख़ारी)

﴿ 3 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّمَا يُبْعَثُ النَّاسُ عَلَى نِيَّاتِهِمْ.

رواه ابن ماجه، باب النية،رقم:٤٢٢٩

3. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (क़ियामत के दिन) लोगों को उनको नीयतों के मुताबिक़ उठाया जाएगा यानी हर एक के साथ उसकी नीयत के मुताबिक़ मामला होगा। (इब्ने माजा)

﴿ 4 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَغْزُوْ جَيْشُ الْكَعْبَةَ، فَإِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الْأَرْضِ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، قَالَتْ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! كَيْفَ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، وَفِيْهِمْ أَسْوَاقُهُمْ وَمَنْ لَيْسَ مِنْهُمْ؟ قَالَ : يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ، ثُمَّ يُبْعَثُوْنَ عَلَى نِيَّاتِهِمْ.

رواه البخاری، باب ماذکر فی الاسواق،رقم:٢١١٨

4. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक लश्कर ख़ाना काबा पर चढ़ाई की नीयत से निकलेगा, जब वह एक चटयल मैदान में पहुंचेगा तो उन सबको ज़मीन में धंसा दिया जाएगा। हज़रत आइशा ﷺ फ़रमाती हैं, मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! सब को कैसे धंसा दिया जाएगा जबकि वहीं बाज़ार वाले भी होंगे और वे लोग भी होंगे जो उस लश्कर में शामिल नहीं होंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबको धंसा दिया जाएगा, फिर अपनी-अपनी नीयतों के मुताबिक़ उनका हश्र होगा यानी क़ियामत वाले दिन उनकी नीयतों के मुताबिक़ उनसे मामला किया जाएगा। (बुख़ारी)

﴿ 5 ﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَقَدْ تَرَكْتُمْ بِالْمَدِيْنَةِ أَقْوَامًا مَا سِرْتُمْ مَسِيْرًا، وَلَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ، وَلَا قَطَعْتُمْ مِنْ وَادٍ إِلَّا وَهُمْ مَعَكُمْ فِيْهِ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! وَكَيْفَ يَكُوْنُوْنَ مَعَنَا وَهُمْ بِالْمَدِيْنَةِ؟ قَالَ: حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ.

رواه ابوداؤد، باب الرخصة فی القعود من العذر، رقم٢٥٠٨

5. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुमने मदीना में कुछ ऐसे लोगों को छोड़ा है कि जिस रास्ते पर भी तुम चले, जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया और जिस वादी से भी तुम गुज़रे वह उन आमाल (के अज्र व सवाब) में तुम्हारे साथ शरीक रहे। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वे कैसे हमारे साथ शरीक रहे, हालांकि वह मदीना में हैं? नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (वह तुम्हारे साथ निकलना चाहते थे, लेकिन) उज्र ने उनको रोक दिया। (अबूदाऊद)

﴿ 6 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا يَرْوِيْ عَنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ قَالَ: قَالَ: اِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ كَتَبَ الْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ ثُمَّ بَيَّنَ ذٰلِكَ، فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَاِنْ هَمَّ بِهَا وَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ اِلٰى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ اِلٰى اَضْعَافٍ كَثِيْرَةٍ، وَمَنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَاِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً.

رواه البخاری، باب من هم بحسنة او بسيئة، رقم: ٦٤٩١

6. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने नेकियों और बुराइयों के बारे में एक फ़ैसला फ़रिश्तों को लिखवा दिया, उसकी तफ़्सील यूं ब्यान फ़रमाई कि जो शख़्स नेकी का इरादा करे और फिर (किसी वजह से) न कर सके तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देते हैं, और अगर इरादा करने के बाद उस नेकी को कर ले तो उसके लिए अल्लाह तआ़ला दस नेकियों से सात सौ तक बल्कि उससे भी आगे कई गुना तक लिख देते हैं और जो शख़्स किसी बुराई का इरादा करे और फिर उसके करने से रुक जाए, तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए एक पूरी नेकी लिख देते हैं (क्योंकि उसका बुराई से रुकना अल्लाह तआ़ला के डर की वजह से है) और अगर इरादा करने के बाद उसने वह गुनाह कर लिया, तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए एक (ही) गुनाह लिखते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 7 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: لَاَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِيْ يَدِ سَارِقٍ فَاَصْبَحُوْا يَتَحَدَّثُوْنَ: تُصُدِّقَ عَلٰى سَارِقٍ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، لَاَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِيْ يَدِ زَانِيَةٍ، فَاَصْبَحُوْا يَتَحَدَّثُوْنَ: تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلٰى زَانِيَةٍ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، عَلٰى زَانِيَةٍ، لَاَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ، فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهٖ فَوَضَعَهَا فِيْ يَدِ غَنِيٍّ، فَاَصْبَحُوْا يَتَحَدَّثُوْنَ: تُصُدِّقَ عَلٰى غَنِيٍّ، فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى سَارِقٍ، وَعَلٰى زَانِيَةٍ، وَعَلٰى غَنِيٍّ، فَاُتِيَ فَقِيْلَ لَهُ: اَمَّا صَدَقَتُكَ عَلٰى سَارِقٍ، فَلَعَلَّهُ اَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهٖ، وَاَمَّا الزَّانِيَةُ فَلَعَلَّهَا اَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زِنَاهَا، وَاَمَّا الْغَنِيُّ فَلَعَلَّهُ اَنْ يَعْتَبِرَ فَيُنْفِقَ مِمَّا اَعْطَاهُ اللهُ.

رواه البخاری، باب إذا تصدق على غنی..... ،رقم: ١٤٢١

7. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

(बनी इसराईल) के एक आदमी ने (अपने दिल में) कहा कि मैं (आज रात चुपके से) सदक़ा करूंगा। चुनांचे (रात को चुपके से सदक़े का माल लेकर निकला और बेख़बरी में) एक चोर के हाथ में दे दिया। सुबह लोगों में चर्चा हुआ (कि रात) चोर को सदक़ा दिया गया। सदक़ा करने वाले ने कहा : या अल्लाह! (चोर को सदक़ा देने में भी) आपके लिए ही तारीफ़ है (कि उससे भी ज़्यादा बुरे आदमी को दिया जाता तो मैं क्या कर सकता था) फिर उसने अ़ज़्म किया कि आज रात (भी) ज़रूर सदक़ा करूंगा (कि पहला तो ज़ाय हो गया) चुनांचे रात को सदक़ा का माल लेकर निकला और (बेख़बरी में) सदक़ा एक बदकार औरत को दे दिया। सुबह चर्चा हुआ कि आज रात बदकार औरत को सदक़ा दिया गया। उसने कहा : ऐ अल्लाह! बदकार औरत (को सदक़ा देने) में भी आपही के लिए तारीफ़ है (कि मेरा माल तो इस क़ाबिल भी न था) फिर (तीसरी मर्तबा) इरादा किया कि आज रात ज़रूर सदक़ा करूंगा। चुनांचे रात को सदक़े का माल लेकर निकला और उसे एक मालदार के हाथ में दे दिया। सुबह चर्चा हुआ कि रात मालदार को सदक़ा दिया गया। सदक़ा देने वाले ने कहा : या अल्लाह! चोर, बदकार औरत और मालदार को सदक़ा देने पर आप ही के लिए तारीफ़ है (कि मेरा माल तो ऐसे लोगों को देने के क़ाबिल भी न था) ख़्वाब में बताया गया कि (तेरा सदक़ा क़ुबूल हो गया है) तेरा सदक़ा चोर पर (इसलिए कराया गया) कि शायद वह अपनी चोरी की आ़दत से तौबा कर ले और बदकार औरत पर इसलिए कि शायद वह बदकारी से तौबा कर ले (जब वह देखेगी कि बदकारी के बग़ैर भी अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमाते हैं तो उसको ग़ैरत आएगी) और मालदार पर इसलिए, ताकि उसे इबरत हासिल हो (कि अल्लाह तआ़ला के बन्दे किस तरह छुप कर सदक़ा करते हैं, उसकी वजह से) शायद वह भी उस माल में से जो अल्लाह तआ़ला ने उसे अ़ता फ़रमाया है (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) ख़र्च करने लगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : उस शख़्स के इख़्लास की वजह से तीनों सदक़े अल्लाह तआ़ला ने क़ुबूल फ़रमा लिए।

﴿ 8 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنْطَلَقَ ثَلَاثَةُ رَهْطٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَتّٰى اَوَوُا الْمَبِيْتَ اِلٰى غَارٍ فَدَخَلُوْهُ، فَانْحَدَرَتْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ فَسَدَّتْ عَلَيْهِمَا الْغَارَ، فَقَالُوْا: اِنَّهٗ لَا يُنْجِيْكُمْ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ اِلَّا اَنْ تَدْعُوا اللهَ بِصَالِحِ اَعْمَالِكُمْ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ: اَللّٰهُمَّ! كَانَ لِيْ اَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيْرَانِ،

وَكُنْتُ لَا اَغْبِقُ قَبْلَهُمَا اَهْلًا وَلَا مَالًا فَنَاَى بِيْ فِيْ طَلَبِ شَيْءٍ يَوْمًا فَلَمْ أُرِحْ عَلَيْهِمَا حَتّٰى نَامَا فَحَلَبْتُ لَهُمَا غَبُوْقَهُمَا فَوَجَدْتُهُمَا نَائِمَيْنِ، فَكَرِهْتُ اَنْ اَغْبِقَ قَبْلَهُمَا اَهْلًا اَوْمَالًا، فَلَبِثْتُ وَالْقَدَحُ عَلٰى يَدَيَّ اَنْتَظِرُ اسْتِيْقَاظَهُمَا حَتّٰى بَرَقَ الْفَجْرُ فَاسْتَيْقَظَا فَشَرِبَا غَبُوْقَهُمَا، اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيْهِ مِنْ هٰذِهِ الصَّخْرَةِ، فَانْفَرَجَتْ شَيْئًا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ الْخُرُوْجَ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَقَالَ الْآخَرُ: اَللّٰهُمَّ! كَانَتْ لِيْ بِنْتُ عَمٍّ، كَانَتْ اَحَبَّ النَّاسِ اِلَيَّ فَاَرَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا، فَامْتَنَعَتْ مِنِّيْ حَتّٰى اَلَمَّتْ بِهَا سَنَةٌ مِنَ السِّنِيْنَ فَجَاءَتْنِيْ فَاَعْطَيْتُهَاعِشْرِيْنَ وَمِائَةَ دِيْنَارٍ عَلٰى اَنْ تُخَلِّيَ بَيْنِيْ وَبَيْنَ نَفْسِهَا فَفَعَلَتْ، حَتّٰى اِذَا قَدَرْتُ عَلَيْهَا قَالَتْ: لَااُحِلُّ لَكَ اَنْ تَفُضَّ الْخَاتَمَ اِلَّا بِحَقِّهٖ، فَتَحَرَّجْتُ مِنَ الْوُقُوْعِ عَلَيْهَا فَانْصَرَفْتُ عَنْهَا وَهِيَ اَحَبُّ النَّاسِ اِلَيَّ فَتَرَكْتُ الذَّهَبَ الَّذِيْ اَعْطَيْتُهَا، اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيْهِ، فَانْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ غَيْرَ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ الْخُرُوْجَ مِنْهَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: وَقَالَ الثَّالِثُ: اَللّٰهُمَّ! اِنِّيْ اسْتَاْجَرْتُ اُجَرَاءَ فَاَعْطَيْتُهُمْ اَجْرَهُمْ غَيْرَ رَجُلٍ وَاحِدٍ، تَرَكَ الَّذِيْ لَهٗ وَذَهَبَ، فَثَمَّرْتُ اَجْرَهٗ حَتّٰى كَثُرَتْ مِنْهُ الْاَمْوَالُ فَجَاءَنِيْ بَعْدَ حِيْنٍ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ! اَدِّ اِلَيَّ اَجْرِيْ، فَقُلْتُ لَهٗ: كُلُّ مَا تَرٰى مِنْ اَجْرِكَ مِنَ الْاِبِلِ وَالْبَقَرِ وَالْغَنَمِ وَالرَّقِيْقِ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ! لَا تَسْتَهْزِئْ بِيْ، فَقُلْتُ: اِنِّيْ لَااَسْتَهْزِئُ بِكَ، فَاَخَذَهٗ كُلَّهٗ فَاسْتَاقَهٗ فَلَمْ يَتْرُكْ مِنْهُ شَيْئًا، اَللّٰهُمَّ! فَاِنْ كُنْتُ فَعَلْتُ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيْهِ، فَانْفَرَجَتِ الصَّخْرَةُ فَخَرَجُوْا يَمْشُوْنَ.

رواه البخاري، باب من استاجر اجيراً فترك اجره .....، رقم:٢٢٧٢

8. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुमसे पहले किसी उम्मत के तीन शख़्स (एक साथ सफ़र पर) निकले। (चलते-चलते रात हो गई) रात गुज़ारने के लिए वे एक ग़ार में दाख़िल हो गए। उसी दौरान पहाड़ से एक चट्टान गिरी, जिसने ग़ार के मुंह को बन्द कर दिया। (यह देखकर) उन्होंने कहा कि चट्टान से नजात की यही सूरत है कि सबके सब अपने आ़माले सालिहा के ज़रिए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें (चुनांचे उन्होंने अपने-अपने अ़मल के वास्ते से दुआएं कीं) उनमें से एक ने कहा : या अल्लाह! (आप जानते हैं कि) मेरे मां-बाप बहुत बूढ़े थे। मैं अह्ल व अ़याल और ग़ुलामों को उनसे पहले दूध नहीं पिलाता था। एक दिन मैं एक चीज़ की तलाश में दूर निकल गया, जब वापस लौट कर आया तो वालिदैन सो चूके थे। (फिर भी) मैंने उनके लिए शाम का दूध दूहा (और उसे प्याले में लेकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ) तो देखा

कि वह (उस वक़्त भी) सो रहे हैं। मैंने उनको जगाना पसन्द नहीं किया और उनसे पहले अह्ल व अ़याल या ग़ुलामों को दूध पिलाना भी गवारा न किया। मैं दूध का प्याला हाथ में लिए उनके सिरहाने खड़ा उनके जागने का इंतज़ार करता रहा, यहां तक कि सुबह हो गई और वे बेदार हुए, (तो मैंने उन्हें दूध दिया) उस वक़्त उन्होंने अपने शाम के हिस्से का दूध पिया। या अल्लाह! अगर मैंने ये काम सिर्फ़ आपकी ख़ुशनूदी के लिए किया था तो हम इस चट्टान की वजह से जिस मुसीबत में फंस गए हैं, उससे हमें नजात अ़ता फ़रमा दे। इस दुआ़ के नतीजे में वह चट्टान थोड़ी-सी सरक गई लेकिन बाहर निकलना मुम्किन न हुआ।

रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाते हैं कि दूसरे शख़्स ने दुआ़ की, या अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने (एक मर्तबा) उससे अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का इरादा किया, लेकिन वह आमादा नहीं हुई, यहां तक कि एक वक़्त आया कि क़हतसाली ने उसे (मेरे पास) आने पर मजबूर कर दिया। मैंने उसे इस शर्त पर एक सौ बीस दीनार दिए कि वह तन्हाई में मुझसे मिले। वह आमादा हो गई, यहां तक कि जब मैं उस पर क़ाबू पा चुका (और क़रीब था कि मैं अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करूं) तो उसने कहा कि मैं तुम्हारे लिए इस बात को हलाल नहीं समझती कि तुम इस मुहर को नाहक़ तोड़ो (यह सुनकर) मैं अपने बुरे इरादे से बाज़ आ गया और मैं उससे दूर हो गया हालांकि मुझे उससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी और मैंने वे सोने के दीनार भी छोड़ दिए जो उसे दिए थे। या अल्लाह! अगर मैंने यह काम आपकी रज़ा के लिए किया था तो हमारी इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे, चुनांचे वह चट्टान कुछ और सरक गई, लेकिन (फिर भी) निकलना मुम्किन न हुआ।

तीसरे ने दुआ़ की या अल्लाह! कुछ मज़दूरों को मैंने मज़दूरी पर रखा था, सबको मैंने मज़दूरी दे दी, सिर्फ़ एक मज़दूर अपनी मज़दूरी लिए बग़ैर चला गया था। मैंने उसकी मज़दूरी की रक़म को कारोबार में लगा दिया यहां तक कि माल में बहुत कुछ इज़ाफ़ा हो गया। कुछ अ़र्से बाद वह एक दिन आया और आकर कहा : अल्लाह के बन्दे! मुझे मेरी मज़दूरी दे मैंने कहा, ये ऊंट, गाय, बकरियां और ग़ुलाम जो तुम्हें नज़र आ रहे हैं, ये तुम्हारी मज़दूरी हैं, यानी तुम्हारी मज़दूरी को कारोबार में लगाकर ये मुनाफ़े हासिल हुए हैं। उसने कहा : अल्लाह के बन्दे! मज़ाक़ न कर। मैंने कहा, मज़ाक़ नहीं कर रहा,

(हक़ीक़त ब्यान कर रहा हूं) चुनांचे (मेरी वज़ाहत के बाद) वह सारा माल ले गया, कुछ न छोड़ा। या अल्लाह! अगर मैंने यह काम सिर्फ़ आपकी रज़ा की ख़ातिर किया था तो यह मुसीबत जिसमें हम फंसे हुए हैं, दूर फ़रमा दें, चुनांचे वह चट्टान बिल्कुल सरक गई (और ग़ार का मुंह खुल गया) और सब बाहर निकल आए। (बुख़ारी)

﴿9﴾ عَنْ اَبِیْ كَبْشَةَ الْاَ نْمَارِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: ثَلَاثٌ اُقْسِمُ عَلَيْهِنَّ وَ اُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا فَاحْفَظُوْهُ، قَالَ: مَا نَقَصَ مَالُ عَبْدٍ مِنْ صَدَقَةٍ، وَلَا ظُلِمَ عَبْدٌ مَظْلَمَةً صَبَرَ عَلَيْهَا اِلَّا زَادَهُ اللّٰهُ عِزًّا، وَلَا فَتَحَ عَبْدٌ بَابَ مَسْئَلَةٍ اِلَّا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْهِ بَابَ فَقْرٍ۔ اَوْ كَلِمَةٍ نَحْوَهَا۔ وَاُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا فَاحْفَظُوْهُ، قَالَ: اِنَّمَا الدُّنْيَا لِاَرْبَعَةِ نَفَرٍ: عَبْدٍ رَزَقَهُ اللّٰهُ مَالًا وَعِلْمًا فَهُوَ يَتَّقِیْ رَبَّهُ فِيْهِ وَيَصِلُ بِهٖ رَحِمَهُ وَيَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيْهِ حَقًّا فَهٰذَا بِاَفْضَلِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللّٰهُ عِلْمًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ مَالًا فَهُوَ صَادِقُ النِّيَّةِ، يَقُوْلُ: لَوْ اَنَّ لِیْ مَالًا لَعَمِلْتُ فِيْهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهٖ فَاَجْرُهُمَا سَوَاءٌ، وَعَبْدٍ رَزَقَهُ اللّٰهُ مَالًا وَلَمْ يَرْزُقْهُ عِلْمًا فَهُوَ يَخْبِطُ فِیْ مَالِهٖ بِغَيْرِ عِلْمٍ لَا يَتَّقِیْ فِيْهِ رَبَّهُ وَلَا يَصِلُ فِيْهِ رَحِمَهُ، وَلَا يَعْلَمُ لِلّٰهِ فِيْهِ حَقًّا فَهٰذَا بِاَخْبَثِ الْمَنَازِلِ، وَعَبْدٍ لَمْ يَرْزُقْهُ اللّٰهُ مَالًا وَلَا عِلْمًا فَهُوَ يَقُوْلُ: لَوْ اَنَّ لِیْ مَالًا لَعَمِلْتُ فِيْهِ بِعَمَلِ فُلَانٍ فَهُوَ بِنِيَّتِهٖ فَوِزْرُهُمَا سَوَاءٌ.

رواه الترمذی وقال:هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء مثل الدنيا مثل أربعة نفر،رقم:٢٣٢٥

9. हज़रत अबू कब्शा अन्मारी ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं क़सम खाकर तीन चीज़ें ब्यान करता हूं और उसके बाद एक बात ख़ास तौर से तुम्हें बताऊंगा उसको अच्छी तरह महफ़ूज़ रखना। (वे तीन बातें जिन पर मैं क़सम खाता हूं उनमें से पहली यह है कि) किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता। (दूसरी यह कि) जिस शख़्स पर ज़ुल्म किया जाए और वह उस पर सब्र करे तो अल्लाह तआ़ला उस सब्र की वजह से उसकी इज़्ज़त बढ़ाते हैं। (तीसरी यह है कि) जो शख़्स लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआ़ला उस पर फ़क्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक बात तुम्हें बताता हूं, उसे याद रखो। दुनिया में चार क़िस्म के लोग होते हैं। एक वह शख़्स जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल और इल्म अ़ता फ़रमाया हो, वह (अपने इल्म की वजह से) अपने माल के बारे में अल्लाह तआ़ला से डरता

है (कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ ख़र्च नहीं करता बल्कि) सिलारहमी (में ख़र्च) करता है और यह भी जानता है कि इस माल में अल्लाह तआ़ला का हक़ है (इसलिए माल नेक कामों में ख़र्च करता है) यह शख़्स क़ियामत में सबसे बेहतरीन दर्जों में होगा। दूसरा वह शख़्स है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने इल्म अ़ता फ़रमाया और माल नहीं दिया वह सच्ची नीयत रखता है और यह तमन्ना करता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी फ़्लां की तरह से (नेक कामों में) ख़र्च करता तो (अल्लाह तआ़ला) उसकी नीयत की वजह से (उसको भी वही सवाब देते हैं जो पहले शख़्स का है) इस तरह उन दोनों का सवाब बराबर हो जाता है। तीसरा वह शख़्स है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया, मगर इल्म अ़ता नहीं किया, वह अपने माल में इल्म न होने की वजह से गड़बड़ करता है (बेजा ख़र्च करता है) न उस माल में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ करता है, न सिलारहमी करता है और न यह जानता है कि अल्लाह तआ़ला का इस माल में हक़ है, यह शख़्स क़ियामत में बदतरीन दर्जों में होगा। चौथा वह शख़्स है कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने न माल दिया, न इल्म अ़ता किया, वह तमन्ना करता है कि अगर मेरे पास माल होता, मैं भी फ़्लाँ यानी तीसरे आदमी की तरह (बेजा ख़र्च) करता तो उसको उस नीयत का गुनाह होता है और उसका और तीसरे आदमी का गुनाह बराबर हो जाता है, यानी अच्छे या बुरे अ़ज़्म पर उसी जैसा सवाब और गुनाह होता है जो अच्छे या बुरे अ़मल पर होता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ رَجُلٍ مِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ قَالَ: كَتَبَ مُعَاوِيَةُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اِلٰى عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنِ اكْتُبِيْ اِلَيَّ كِتَابًا تُوْصِيْنِيْ فِيْهِ وَلَا تُكْثِرِيْ عَلَيَّ، قَالَ: فَكَتَبَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اِلٰى مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: سَلَامٌ عَلَيْكَ اَمَّا بَعْدُ فَاِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: "مَنِ الْتَمَسَ رِضَا اللّٰهِ بِسَخَطِ النَّاسِ كَفَاهُ اللّٰهُ مُؤْنَةَ النَّاسِ، وَمَنِ الْتَمَسَ رِضَا النَّاسِ بِسَخَطِ اللّٰهِ وَكَلَهُ اللّٰهُ اِلَى النَّاسِ" وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ.

رواه الترمذی، باب منه عاقبة من التمس رضا الناس... رقم: ٢٤١٤

10. मदीना मुनव्वरा के एक साहब फ़रमाते हैं कि हज़रत मुआ़विया ﷺ ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ख़त लिखा कि आप मुझको कोई नसीहत लिखकर भेज दें, जो मुख़्तसर हो, ज़्यादा लम्बी न हो। हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने सलाम मस्नून और हम्द व सलात के बाद लिखा। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी की तलाश में लोगों की नाराज़गी से बेफ़िक्र होकर लगा रहा, अल्लाह तआ़ला लोगों की नाराज़गी के नुक़सान

से उसकी किफ़ायत फ़रमा देंगे और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी से बेफिक्र होकर लोगों को ख़ुश करने में लगा रहा, अल्लाह तआ़ला उसे लोगों के हवाले कर देंगे। ''वस्सलामु अ़लैक'' (तुम पर अल्लाह तआ़ला का सलाम हो)।

(तिर्मिज़ी)

﴿ 11 ﴾ عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ لَايَقْبَلُ مِنَ الْعَمَلِ اِلَّا مَا كَانَ لَهُ خَالِصًا وَابْتُغِىَ بِهِ وَجْهُهُ.

رواه النسائی، باب من غزا یلتمس الاجر والذکر، رقم: ٣١٤٢

11. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला आमाल में से सिर्फ़ उसी अ़मल को क़ुबूल फ़रमाते हैं, जो ख़ालिस उन्हीं के लिए हो और उसमें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की ख़ुशनूदी मक़सूद हो। (नसाई)

﴿ 12 ﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ ﷺ قَالَ: اِنَّمَا يَنْصُرُ اللهُ هٰذِهِ الْاُمَّةَ بِضَعِيْفِهَا بِدَعْوَتِهِمْ وَصَلَاتِهِمْ وَاِخْلَاصِهِمْ.

رواه النسائی، باب الاستنصار بالضعیف، رقم: ٣١٨٠

12. हज़रत साद ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला इस उम्मत की मदद (उसकी क़ाबलियत और सलाहियत की बुनयाद पर नहीं फ़रमाते बल्कि) कमज़ोर और ख़स्ताहाल लोगों की दुआ़ओं, नमाज़ों और उनके इख़्लास की वजह से फ़रमाते हैं। (नसाई)

﴿ 13 ﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِىَّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَتٰى فِرَاشَهُ وَهُوَ يَنْوِىْ اَنْ يَقُوْمَ يُصَلِّىْ مِنَ اللَّيْلِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ حَتّٰى اَصْبَحَ، كُتِبَ لَهُ مَا نَوٰى وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ.

رواه النسائی، باب من اتی فراشه ...، رقم: ١٧٨٨

13. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स (सोने के लिए) अपने बिस्तर पर आए और उसकी नीयत यह हो कि रात को उठकर तहज्जुद पढ़ूंगा, फिर नींद का ऐसा ग़लबा हो जाए कि सुबह ही आंख खुले तो उसके लिए तहज्जुद का सवाब लिख दिया जाता है, और उसका सोना उसके रब की तरफ़ से उसके लिए अ़तीया होता है। (नसाई)

﴿ 14 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ كَانَتِ الدُّنْيَا هَمَّهُ، فَرَّقَ اللهُ عَلَيْهِ اَمْرَهُ، وَجَعَلَ فَقْرَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا اِلَّا مَا كُتِبَ

لَـهُ، وَمَـنْ كَـانَـتِ الْآخِرَةُ نِيَّتَهُ، جَمَعَ اللّٰهُ لَهُ أَمْرَهُ، وَجَعَلَ غِنَاهُ فِيْ قَلْبِهِ، وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ.
رواه ابن ماجه، باب الهم بالدنيا،رقم:٤١٠٥

14. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स का मक़सद दुनिया बन जाए अल्लाह तआ़ला उसके कामों को बिखेर देते हैं, यानी हर काम में उसको परेशान कर देते हैं, फ़क़्र (का ख़ौफ़) उसकी आंखों के सामने कर देते हैं और दुनिया उसे इतनी ही मिलती है जितनी उसके लिए पहले से मुक़द्दर थी और जिस शख़्स की नीयत आख़िरत की हो, तो अल्लाह तआ़ला उसके कामों को आसान फ़रमा देते हैं, उसके दिल को ग़नी फ़रमा देते हैं और दुनिया ज़लील होकर उसके पास आती है। (इब्ने माजा)

﴿ 15 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ثَلَاثُ خِصَالٍ لَا يَغِلُّ عَلَيْهِنَّ قَلْبُ مُسْلِمٍ: إِخْلَاصُ الْعَمَلِ لِلّٰهِ، وَمُنَاصَحَةُ أُولَاةِ الْأَمْرِ، وَلُزُوْمُ الْجَمَاعَةِ، فَإِنَّ دَعْوَتَهُمْ تُحِيْطُ مِنْ وَرَائِهِمْ.
(وهو بعض الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١/٢٧٠

15. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन आदतें ऐसी हैं कि उनकी वजह से मोमिन का दिल कीना, ख़ियानत (और हर क़िस्म की बुराई) से पाक रहता है, 1. अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिए अ़मल करना, 2. हाकिमों की ख़ैरख़्वाही करना, 3. मुसलमानों की जमाअ़त के साथ चिमटे रहना, क्योंकि जमाअ़त के साथ रहने वालों को जमाअ़त के लोगों की दुआएं हर तरफ़ से घेरे रहती हैं (जिनकी वजह से शैतान के शर से हिफ़ाज़त रहती है)। (इब्ने हब्बान)

﴿ 16 ﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: طُوْبٰى لِلْمُخْلِصِيْنَ، أُولٰئِكَ مَصَابِيْحُ الدُّجٰى، تَتَجَلّٰى عَنْهُمْ كُلُّ فِتْنَةٍ ظَلْمَاءَ.
رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٣٤٣

16. हज़रत सौबान ﷺ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इख़्लास वालों के लिए खुशख़बरी हो कि वे अंधेरों में चिराग़ हैं, उनकी वजह से सख़्त से सख़्त फ़ित्ने दूर हो जाते हैं। (बैहक़ी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ أَبِيْ فِرَاسٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ۔ رَجُلٌ مِنْ أَسْلَمَ۔ قَالَ: نَادٰى رَجُلٌ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! مَا الْإِيْمَانُ؟ قَالَ: الْإِخْلَاصُ. (وهو جزء من الحديث) رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٣٤٢

17. क़बीला असलम के हज़रत अबू फ़िरास रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक

शख़्स ने पुकार कर पूछा : या रसूलुल्लाह! ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान इख़्लास है। (बैहक़ी)

﴿ 18 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ. (وهو طرف من الحديث)

رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/٢٩٣

18. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं : पोशीदा तौर पर सदक़ा करना अल्लाह तआ़ला के ग़ुस्सा को ठंडा करना है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: اَرَاَيْتَ الرَّجُلَ يَعْمَلُ الْعَمَلَ مِنَ الْخَيْرِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَيْهِ؟ قَالَ: تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَى الْمُؤْمِنِ.

رواه مسلم، باب اذا اثنى على الصالح......،رقم:٦٧٢١

19. हज़रत अबूज़र رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से दरयाफ़्त किया गया : ऐसे शख़्स के बारे में फ़रमाइए कि जो नेक अ़मल करता है और उसकी वजह से लोग उसकी तारीफ़ करते हैं (क्या उसे नेक अ़मल करने का सवाब मिलेगा, लोगों का उसकी तारीफ़ करना रियाकारी में तो दाख़िल नहीं होगा?) आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह तो मोमिन को जल्द मिलने वाली बशारत है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि एक बशारत तो वह है जो आख़िरत में मिलेगी और एक बशारत यह है कि जो दुनिया में मिल गई कि लोगों ने उसकी तारीफ़ की। यह इस सूरत में है जब उसकी नीयत अ़मल से महज़ अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी ही हो, तारीफ़ कराना मक़सूद न हो।

﴿ 20 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ عَنْ هٰذِهِ الْاٰيَةِ "وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ" [المؤمنون:٦٠] قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: اَهُمُ الَّذِيْنَ يَشْرَبُوْنَ الْخَمْرَ وَيَسْرِقُوْنَ؟ قَالَ: لَا، يَا بِنْتَ الصِّدِّيْقِ! وَلٰكِنَّهُمُ الَّذِيْنَ يَصُوْمُوْنَ وَيُصَلُّوْنَ وَيَتَصَدَّقُوْنَ وَهُمْ يَخَافُوْنَ اَنْ لَا يُقْبَلَ مِنْهُمْ "اُولٰئِكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُوْنَ".

رواه الترمذي، باب ومن سورة المؤمنون ،رقم:٣١٧٥

20. उम्मुलमोमिनीन हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ब्यान करती हैं कि मैंने

रसूलुल्लाह ﷺ से आयत का मतलब दरयाफ़्त किया, जिसमें अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, "और जो लोग देते हैं जो कुछ भी देते हैं और उस पर भी उनके दिल डरते रहते हैं" हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ किया : क्या इस आयत में वे लोग मुराद हैं, जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं? (यानी क्या उनका डरना गुनाहों के इरतिकाब की वजह से है?) नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सिद्दीक़ की बेटी! यह मुराद नहीं, बल्कि आयते करीमा में उन लो... का ज़िक्र है जो रोज़ा रखने और नमाज़ पढ़ने वाले और सदक़ा व ख़ैरात करने वाले हैं और वे इस बात से डरते हैं कि (किसी ख़राबी की वजह से) उनके नेक आमाल क़ुबूल न हों। यही वे लोग हैं जो दौड़-दौड़ कर भलाइयां हासिल कर रहे हैं और यही लोग उन भलाइयों की तरफ़ बढ़ जाने वाले हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 21 ﴾ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْعَبْدَ التَّقِيَّ، الْغَنِيَّ، الْخَفِيَّ.

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن....،رقم:٧٤٣٢

21. हज़रत साद ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला परहेज़गार, मख़्लूक़ से बेनियाज़, गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाते हैं। (मुस्लिम)

﴿ 22 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَوْ اَنَّ رَجُلًا عَمِلَ عَمَلًا فِيْ صَخْرٍ لَا بَابَ لَهَا وَلَا كُوَّةَ، خَرَجَ عَمَلُهُ اِلَى النَّاسِ كَائِنًا مَا كَانَ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٥/٣٥٩

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स ऐसी चट्टान के अन्दर बैठकर जिसमें न कोई दरवाज़ा हो, न कोई सुराख़ हो, कोई भी अ़मल करे तो वह लोगों पर ज़ाहिर होकर रहेगा, चाहे वह अ़मल अच्छा हो या बुरा। (बैहक़ी)

फ़ायदा : जब हर क़िस्म का अ़मल ख़ुद ज़ाहिर होकर रहेगा तो फिर दीनी अ़मल मे लगने वाले को रियाकारी की नीयत करके अपना अ़मल बरबाद करने से क्या फ़ायदा? और किसी बुरे को अपनी बुराई के छुपाने से क्या फ़ायदा? दोनों की शोहरत होकर रहेगी। (तर्जमानुस्सुन्नः)

﴿ 23 ﴾ عَنْ مَعْنِ بْنِ يَزِيْدَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ اَبِيْ يَزِيْدُ اَخْرَجَ دَنَانِيْرَ يَتَصَدَّقُ بِهَا، فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَجُلٍ فِي الْمَسْجِدِ، فَجِئْتُ فَاَخَذْتُهَا فَاَتَيْتُهُ بِهَا، فَقَالَ: وَاللّٰهِ! مَا اِيَّاكَ

اَرَدْتُ، فَخَاصَمْتُهُ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَكَ مَا نَوَيْتَ، يَا يَزِيْدُ! وَلَكَ مَا اَخَذْتَ، يَا مَعْنُ!

رواه البخاري، باب اذا تصدق على ابنه وهو لا يشعر، رقم:١٤٢٢

23. हज़रत मान बिन यज़ीद ﷺ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद हज़रत यज़ीद ﷺ ने कुछ दीनार सदक़े की नीयत से निकाले और उन्हें मस्जिद में एक आदमी के पास रख आए, (ताकि वह आदमी किसी ज़रूरतमन्द को दे दे।) मैं मस्जिद में आया (और मैं ज़रूरतमन्द था, इसलिए) मैंने उस आदमी से वह दीनार ले लिए और घर ले आया। वालिद साहब ने फ़रमाया : अल्लाह तआला की क़सम! तुम्हें तो देने का मैंने इरादा नहीं किया था। मैं अपने वालिद को नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में ले आया और यह मामला आपके सामने पेश कर दिया। आपने फ़रमाया : यज़ीद! जो तुमने (सदक़ा की) नीयत की थी उसका सवाब तुम्हें मिल गया और मान! जो तुमने ले लिया, वह तुम्हारा हो गया (तुम इसे अपने इस्तेमाल में ला सकते हो)। (बुख़ारी)

﴿ 24 ﴾ عَنْ طَاوُوْسٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّيْ اَقِفُ الْمَوَاقِفَ اُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، وَاُحِبُّ اَنْ يُرٰى مَوْطِنِيْ، فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ شَيْئًا حَتّٰى نَزَلَتْ عَلَيْهِ هٰذِهِ الْاٰيَةُ ﴿فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْ لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖ اَحَدًا﴾

تفسير ابن كثير ١١٤/٣

24. हज़रत ताऊस रह० फ़रमाते हैं कि एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं कभी-कभी किसी नेक काम के लिए खड़ा होता हूं और मेरा इरादा उससे अल्लाह तआ़ला ही की रज़ा होती है और उसके साथ दिल में यह ख़्वाहिश भी होती है कि लोग मेरे अ़मल को देखें। आपने यह सुनकर ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, यहां तक कि यह आयत नाज़िल हुई तर्जुमा : जो शख़्स अपने रब से मिलने की आरज़ू रखता हो (और उसका महबूब बनना चाहता हो) तो उसे चाहिए कि वह नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

फ़ायदा : इस आयत में जिस शिर्क से मना किया गया है वह रियाकारी है। और इस बात से भी मना किया गया है कि अगरचे अल्लाह तआ़ला ही के लिए हो, मगर उसके साथ अगर कोई नफ़्सानी ग़रज़ भी शामिल हो तो यह भी एक क़िस्म का शिर्क ख़फ़ी है जो इंसान के अ़मल को ज़ाय कर देता है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन के साथ और अज्र व इनाम के शौक़ में अ़मल करना

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 25 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَرْبَعُوْنَ خَصْلَةً اَعْلَاهُنَّ مَنِيْحَةُ الْعَنْزِ، مَامِنْ عَامِلٍ يَعْمَلُ بِخَصْلَةٍ مِنْهَا رَجَاءَ ثَوَابِهَا وَتَصْدِيْقَ مَوْعِدِهَا اِلَّا اَدْخَلَهُ اللهُ بِهَا الْجَنَّةَ. رواه البخاری، باب فضل المنيحة، رقم: ٢٦٣١

25. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : चालीस नेकियां हैं जिनमें आ़ला दर्जा की नेकी यह है कि (अपनी) बकरी किसी को दे दे कि वह उसके दूध से फ़ायदा उठा कर मालिक को वापस कर दे। फिर जो शख़्स उनमें से किसी बात पर भी इस अ़मल के सवाब की उम्मीद में और उस पर जो अल्लाह तआ़ला का वादा है उस पर यक़ीन के साथ अ़मल करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी वजह से उसको जन्नत में दाख़िल करेंगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने चालीस नेकियों की वज़ाहत बज़ाहिर इस वजह से नहीं फ़रमाई कि आदमी हर नेकी को यह समझ कर करने लगे कि शायद यह नेकी भी उन चालीस में शामिल हो जिनकी फ़ज़ीलत हदीस में ज़िक्र की गई है। (फ़त्हुलबारी)

मक़सूद यह है कि इंसान हर अ़मल को ईमान और एहतिसाब की सिफ़त के साथ करे, यानी उस अ़मल पर अल्लाह तआ़ला के वादों का यक़ीन रखते हुए

और उस अ़मल पर बताए गए फ़ज़ाइल के ध्यान के साथ करे।

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ : مَنِ اتَّبَعَ جَنَازَةَ مُسْلِمٍ اِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا وَكَانَ مَعَهُ حَتّٰى يُصَلّٰى عَلَيْهَا، وَيُفْرَغَ مِنْ دَفْنِهَا فَاِنَّهُ يَرْجِعُ مِنَ الْاَجْرِ بِقِيْرَاطَيْنِ كُلُّ قِيْرَاطٍ مِثْلُ اُحُدٍ، وَمَنْ صَلّٰى عَلَيْهَا ثُمَّ رَجَعَ قَبْلَ اَنْ تُدْفَنَ فَاِنَّهُ يَرْجِعُ بِقِيْرَاطٍ. رواه البخاری، باب اتباع الجنائز من الایمان،رقم:٤٧

26. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में किसी मुसलमान के जनाज़े के साथ जाए और उस वक़्त तक जनाज़े के साथ रहे जब तक कि उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए और उसके दफ़न से फ़ारिग़ हो तो वह सवाब के दो क़ीरात लेकर वापस होगा, जिनमें हर क़ीरात गोया उहुद पहाड़ के बराबर होगा और जो शख़्स सिर्फ़ नमाज़े जनाज़ा पढ़कर वापस आ जाए (दफ़न होने तक साथ न रहे) तो वह सवाब का एक क़ीरात लेकर वापस होगा।

(बुख़ारी)

फ़ायदा : क़ीरात दिरहम का बारहवां हिस्सा होता है। चुनांचे उस ज़माने में मज़दूरों को उनके काम की उजरत क़ीरात के हिसाब से दी जाती थी इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने भी इस मौक़ा पर क़ीरात का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया और यह भी वाज़ेह फ़रमा दिया कि उसको दुनिया का क़ीरात न समझा जाए, बल्कि यह सवाब आख़िरत के क़ीरात का होगा, जो दुनिया के क़ीरात के मुक़ाबले में इतना बड़ा होगा जितना उहुद पहाड़ उसके मुक़ाबले में बड़ा और अ़ज़ीमुश्शान है। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰهَ قَالَ يَا عِيْسٰى اِنِّیْ بَاعِثٌ مِنْ بَعْدِكَ اُمَّةً اِنْ اَصَابَهُمْ مَا يُحِبُّوْنَ حَمِدُوا اللّٰهَ وَاِنْ اَصَابَهُمْ مَا يَكْرَهُوْنَ احْتَسَبُوْا وَصَبَرُوْا وَلَا حِلْمَ وَلَا عِلْمَ فَقَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ يَكُوْنُ هٰذَا لَهُمْ وَلَا حِلْمَ وَلَا عِلْمَ؟ قَالَ: اُعْطِيْهِمْ مِنْ حِلْمِیْ وَعِلْمِیْ. رواه الحاکم وقال: هذا حدیث صحیح علی شرط البخاری ولم یخرجاه ووافقه الذهبی ١/٣٤٨

27. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा ؑ से फ़रमाया : ईसा! मैं

तुम्हारे बाद ऐसी उम्मत भेजने वाला हूं, जब उन्हें कोई पसन्दीदा चीज़ यानी नेमत और राहत मिलेगी तो वे उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करेंगे और जब उन्हें कोई नागवार चीज़ यानी मुसीबत और तकलीफ़ पहुंचेगी तो उसके बरदाश्त करने पर जो अल्लाह तआला ने सवाब के वादे फ़रमाए हैं उनकी उम्मीद रखेंगे और सब्र करेंगे, जबकि उनमें न हिल्म यानी नर्मी और बरदाश्त होगी न इल्म होगा। हज़रत ईसा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! जब उनमें हिल्म और इल्म नहीं होगा तो उनके लिए सब्र और सवाब की उम्मीद रखना कैसे मुमकिन होगा? अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : मैं उनको अपने हिल्म में से हिल्म और इल्म में से इल्म दूंगा।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ : یَقُوْلُ اللّٰہُ سُبْحَانَهٗ: ابْنَ آدَمَ اِنْ صَبَرْتَ وَاحْتَسَبْتَ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْاُوْلٰی، لَمْ اَرْضَ لَكَ ثَوَابًا دُوْنَ الْجَنَّةِ.

رواه ابن ماجه، باب ما جاء فی الصبر علی المصیبة، رقم:١٥٩٧

28. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक हदीसे क़ुदसी ब्यान करते हुए इरशाद फ़रमाया : आदम के बेटे! अगर तू (किसी चीज़ के चले जाने पर) पहली मर्तबा में ही सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे, तो मैं तेरे लिए जन्नत से कम बदले पर राज़ी नहीं हूंगा। (इब्ने माजा)

﴿ 29 ﴾ عَنْ اَبِیْ مَسْعُوْدٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ : اِذَا اَنْفَقَ الرَّجُلُ عَلٰی اَهْلِهٖ یَحْتَسِبُهَا فَهُوَ لَهٗ صَدَقَةٌ.

رواه البخاری، باب ماجاء ان الاعمال بالنیة والحسبة، رقم:٥٥

29. हज़रत अबू मस्ऊद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी अपने घर वालों पर सवाब की नीयत से ख़र्च करता है (उस ख़र्च करने से) उसको सदक़ा का सवाब मिलता है। (बुख़ारी)

﴿ 30 ﴾ عَنْ سَعْدِ بْنِ اَبِیْ وَقَّاصٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِیْ بِهَا وَجْهَ اللّٰہِ اِلَّا اُجِرْتَ عَلَیْهَا حَتّٰی مَا تَجْعَلُ فِیْ فَمِ امْرَاَتِكَ.

رواه البخاری، باب ماجاء ان الاعمال بالنیة والحسبة، رقم:٥٦

30. हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : तुम जो कुछ अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए ख़र्च करते हो, तुम्हें उसका ज़रूर सवाब दिया जाएगा, यहां तक कि जो लुक़्मा तुम अपनी बीवी

के मुंह में डालते हो (उस पर भी तुम्हें सवाब मिलेगा)। (बुख़ारी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ اِذْ جَاءَهُ رَسُوْلُ اِحْدٰى بَنَاتِهِ وَعِنْدَهُ سَعْدٌ وَاُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَمُعَاذٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُم اَنَّ ابْنَهَا يَجُوْدُ بِنَفْسِهِ فَبَعَثَ اِلَيْهَا: لِلّٰهِ مَا اَخَذَ، وَلِلّٰهِ مَا اَعْطٰى، كُلٌّ بِاَجَلٍ، فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ.

رواه البخاري، باب و كان امر الله قدرا مقدورا، رقم:٦٦٠٢

31. हज़रत उसामा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं और साद, उबई बिन काब और मुआज़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आपकी साहबज़ादियों में से किसी एक का क़ासिद यह पैग़ाम लेकर आया कि उनका बच्चा नज़ा की हालत में है। उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने (साहबज़ादी को) कहला भेजा : अल्लाह तआला ही के लिए है जो उन्होंने ले लिया और अल्लाह तआला ही का है जो उन्होंने अ़ता फ़रमाया है और अल्लाह तआला के यहां हर चीज़ का वक़्त मुक़र्रर है, इसलिए वह सब्र करें और (इस सदमा और इस सब्र पर जो अल्लाह तआला के वादे हैं उनकी) उम्मीद रखें। (बुख़ारी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِنِسْوَةٍ مِنَ الْاَنْصَارِ: لَا يَمُوْتُ لِاِحْدَاكُنَّ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ فَتَحْتَسِبَهُ، اِلَّا دَخَلَتِ الْجَنَّةَ: فَقَالَتِ امْرَاَةٌ مِنْهُنَّ: اَوِ اثْنَانِ؟ يَارَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: اَوِاثْنَانِ. رواه مسلم، باب فضل من يموت له ولد فيحتسبه، رقم:٦٦٩٨

32. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अन्सार की औरतों से इरशाद फ़रमाया : तुममें से जिसके भी तीन बच्चे मर जाएं और वह उस पर अल्लाह तआला से सवाब की उम्मीद रखे तो यक़ीनन वह जन्नत में दाख़िल होगी। उनमें से एक औरत ने पूछा : या रसूलुल्लाह! अगर दो बच्चे मर जाएं? आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अगर दो बच्चे मर जाएं तो भी यही सवाब होगा। (मुस्लिम)

﴿ 33 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اللهَ لَا يَرْضٰى لِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ، اِذَا ذَهَبَ بِصَفِيِّهِ مِنْ اَهْلِ الْاَرْضِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ وَقَالَ مَاأُمِرَ بِهِ بِثَوَابٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ. رواه النسائي، باب ثواب من صبر واحتسب، رقم:١٨٨٢

33. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला मोमिन बन्दे के किसी महबूब को ले

लेते हैं और वह उस पर सब्र करते हुए सवाब की उम्मीद रखता है और जिस बा का हुक्म दिया गया है वही कहता है (मसलन इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलै राजिऊन०) तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत से कम बदले पर राज़ी नहीं होंगे। (नसा

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَخْبِرْنِيْ عَنِ الْجِهَادِ وَالْغَزْوِ، فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو! اِنْ قَاتَلْتَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا بَعَثَكَ اللهُ صَابِرًا مُحْتَسِبًا، وَاِنْ قَاتَلْتَ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا بَعَثَكَ اللهُ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا، يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو! عَلٰى اَيِّ حَالٍ قَاتَلْتَ اَوْ قُتِلْتَ بَعَثَكَ اللهُ عَلٰى تِيْلِكَ الْحَالِ.

رواه ابوداؤد، باب من قاتل لتكون كلمة الله هى العليا، رقم:٢٥١٩

34. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : र रसूलुल्लाह! मुझे जिहाद और ग़ज़्वा के बारे में बतलाइए? आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र! अगर तुम इस तरह लड़ो कि सब्र करने वाले औ सवाब की उम्मीद रखने वाले हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें क़ियामत के दिन सब्र करन वाला और सवाब की उम्मीद रखने वाला शुमार करके उठाएंगे और अगर तु दिखलावे, माले ग़नीमत ज़्यादा-से-ज़्यादा लेने के लिए लड़ोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम क़ियामत के दिन दिखलावा करने वाला, माले ग़नीमत ज़्यादा-से-ज़्यादा लेने के लिए लडने वाला शुमार करके उठाएंगे (यानी हश्र के मैदान में यह एलान किया जाएग कि यह शख़्स दिखलावे और ज़्यादा माल हासिल करने के लिए लड़ा था)। अ़ब्दुल्लाह! जिस हाल (और नीयत) पर तुम लड़ोगे या मारे जाओगे, अल्लाह तआ़ला उसी हाल (और नीयत) पर क़ियामत में तुम्हें उठाएंगे। (अबूदाऊद,

रियाकारी

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى لا يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا﴾ [النساء: ١٤٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और ये मुनाफ़िक़ जब नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो सुस्त बन कर खड़े होते हैं, लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह तआ़ला को बहुत कम याद करते हैं। (निसा : 142)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ﴾ [الماعون: ٤-٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं, जो ऐसे हैं कि (जब नमाज़ पढ़ते हैं, तो) दिखलावा करते हैं। (माऊन : 4-6)

फ़ायदा : नमाज़ से ग़ाफ़िल होने में क़ज़ा करके पढ़ना या बेध्यानी से पढ़ना या कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना सब शामिल है। (कश्फ़ुर्रहमान)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 35 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنَ الشَّرِّ اَنْ يُشَارَ اِلَيْهِ بِالْاَصَابِعِ فِيْ دِيْنٍ اَوْ دُنْيَا اِلَّا مَنْ عَصَمَهُ اللّٰهُ.

رواه الترمذی، باب منه حديث ان لكل شیء شرة، رقم:٢٤٥٣

35. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि इंसान के बुरा होने के लिए इतना काफ़ी है कि दीन या दुनिया के बारे में उसकी तरफ़ उंगलियों से इशारा किया जाए, मगर यह कि किसी को अल्लाह तआला ही महफ़ूज़ रखें। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : उंगलियों से इशारा करने का मतलब मशहूर होना है। हदीस में मुराद यह है कि दीन के मामले में शोहरत का होना दुनिया के बारे में मशहूर होने से ज़्यादा ख़तरनाक है क्योंकि शोहरत हासिल होने के बाद अपनी बड़ाई के एहसास से बचना हर एक के बस का काम नहीं। अलबत्ता अगर किसी की शोहरत ग़ैरअख़्तियारी तौर पर अल्लाह तआला की तरफ़ से हो और अल्लाह तआला उसे महज़ अपने फ़ज़्ल से नफ़्स और शैतान से महफ़ूज़ रखें तो ऐसे मुख़्लिसीन के हक़ में शोहरत ख़तरनाक नहीं है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 36 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ خَرَجَ يَوْمًا اِلَى مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، فَوَجَدَ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَاعِدًا عِنْدَ قَبْرِ النَّبِيِّ ﷺ يَبْكِيْ، فَقَالَ: مَا يُبْكِيْكَ؟ قَالَ: يُبْكِيْنِيْ شَيْءٌ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ يَسِيْرَ الرِّيَاءِ شِرْكٌ، وَاِنَّ مَنْ عَادَى لِلّٰهِ وَلِيًّا، فَقَدْ بَارَزَ اللّٰهَ بِالْمُحَارَبَةِ، اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْاَبْرَارَ الْاَتْقِيَاءَ الْاَخْفِيَاءَ، الَّذِيْنَ اِذَا غَابُوْا لَمْ يُفْتَقَدُوْا، وَاِذَا حَضَرُوْا لَمْ يُدْعَوْا وَلَمْ يُعْرَفُوْا، قُلُوْبُهُمْ مَصَابِيْحُ الْهُدَى، يَخْرُجُوْنَ مِنْ كُلِّ غَبْرَاءَ مُظْلِمَةٍ.

رواه ابن ماجه، باب من ترجی له السلامة من الفتن، رقم:٣٩٨٩

36. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि वह एक दिन मस्जिदे नब्वी तशरीफ़ ले गए तो देखा हज़रत मुआज़ ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र मुबारक के पास बैठे रो रहे हैं। हज़रत उमर ﷺ ने पूछा : आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने कहा : मुझे एक बात की वजह से रोना आ रहा है जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था : थोड़ा-सा दिखावा भी शिर्क है और जिस शख़्स ने अल्लाह तआला के किसी दोस्त से दुश्मनी की, तो उसने अल्लाह तआला को जंग की दावत दी और बेशक अल्लाह तआला ऐसे लोगों से मुहब्बत फ़रमाते हैं, जो नेक हों, मुत्तक़ी हों और ऐसे छुपे हुए हों कि जब मौजूद न हों तो उनको तलाश न किया जाए और अगर मौजूद हों तो न उन्हें बुलाया जाए और न उन्हें पहचाना जाए, उनके दिल हिदायत के रौशन चिराग़ हैं, वे फ़ित्नों की काली आंधियों से (दिल की रौशनी की वजह से अपने दीन को बचाते हुए) निकल जाते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿ 37 ﴾ عَنْ مَالِكٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ اُرْسِلَا فِىْ غَنَمٍ بِاَفْسَدَ لَهَا مِنْ حِرْصِ الْمَرْءِ عَلَى الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِيْنِهٖ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح،باب حديث: ماذئبان جائعان ارسلافى غنم......،رقم:٢٣٧٦

37. हज़रत मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे दो भूखे भेड़िये जिन्हें बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिया जाए बकरियों को इतना नुक़सान नहीं पहुंचाते, जितना आदमी के दीन को, माल का हिर्स और बड़ा बनने की चाहत नुक़सान पहुंचाती है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا مُفَاخِرًا مُكَاثِرًا مُرَائِيًا لَقِىَ اللّٰهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ، وَمَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا اِسْتِعْفَافًا عَنِ الْمَسْاَلَةِ وَسَعْيًا عَلٰى عِيَالِهٖ وَ تَعَطُّفًا عَلٰى جَارِهٖ لَقِىَ اللّٰهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَ وَجْهُهٗ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ. رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢٩٨/٧

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दूसरों पर फ़ख़्र करने के लिए, मालदार बनने के लिए, नाम व नुमूद के लिए दुनिया तलब करे, अगरचे हलाल तरीक़े से हो, वह अल्लाह तआला के सामने इस हालत में हाज़िर होगा कि अल्लाह तआला उससे सख़्त नाराज़ होंगे और जो शख़्स दुनिया हलाल तरीक़े से इसलिए हासिल करे, ताकि उसको दूसरों से सवाल न करना पड़े और अपने घर वालों के लिए रोज़ी हासिल कर सके और अपने पड़ोसी के साथ

एहसान कर सके, तो वह क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चांद की तरह चमकता हुआ होगा। (बैहक़ी)

﴿ 39 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَخْطُبُ خُطْبَةً إِلاَّ اللهُ عَزَّوَجَلَّ سَائِلُهُ عَنْهَا: مَا أَرَادَ بِهَا؟ قَالَ جَعْفَرٌ: كَانَ مَالِكُ بْنُ دِيْنَارٍ إِذَا حَدَّثَ هٰذَا الْحَدِيْثَ بَكَى حَتّٰى يَنْقَطِعَ ثُمَّ يَقُوْلُ: يَحْسَبُوْنَ أَنَّ عَيْنِيْ تَقَرُّ بِكَلَامِيْ عَلَيْكُمْ فَأَنَا أَعْلَمُ أَنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ سَائِلِيْ عَنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا أَرَدْتَ بِهِ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٢/٢٨٧

39. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा ब्यान (वाज़ व तक़रीर) करता है तो अल्लाह तआला ज़रूर उससे इस ब्यान के बारे में पूछेंगे कि इस ब्यान करने से उसका क्या मक़सद और क्या नीयत थी? हज़रत जाफ़र रह० ने फ़रमाया कि हज़रत मालिक बिन दीनार रह० जब इस हदीस को ब्यान फ़रमाते तो इस क़द्र रोते कि उनकी आवाज़ बन्द हो जाती, फिर फ़रमाते : लोग समझते हैं कि तुम्हारे सामने बात करने से मेरी आंखें ठंडी होती हैं, यानी मैं ब्यान करने से ख़ुश होता हूं, मुझे मालूम है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन यक़ीनन मुझसे पूछेंगे कि इस ब्यान करने से तेरा क्या मक़सद था।(बैहक़ी)

﴿ 40 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ أَسْخَطَ اللهَ فِيْ رِضَى النَّاسِ سَخِطَ اللهُ عَلَيْهِ، وَأَسْخَطَ عَلَيْهِ مَنْ أَرْضَاهُ فِيْ سَخَطِهِ، وَمَنْ أَرْضَى اللهَ فِيْ سَخَطِ النَّاسِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَأَرْضٰى عَنْهُ مَنْ أَسْخَطَهُ فِيْ رِضَاهُ حَتّٰى يُزَيِّنَهُ وَيُزَيِّنَ قَوْلَهُ وَعَمَلَهُ فِيْ عَيْنِهِ. رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح غير يحي بن سليمان الجعفي، وقد وثقه الذهبي في آخر ترجمة يحي بن سليمان الجعفي، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٦

40. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स लोगों को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआला को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआला उस पर नाराज़ होते हैं और उन लोगों को भी नाराज़ कर देते हैं जिन्हें अल्लाह तआला को नाराज़ करके ख़ुश किया था और जो शख़्स अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए लोगों को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआला उससे ख़ुश हो जाते हैं और उन लोगों को भी ख़ुश कर देते हैं जिनको अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए नाराज़ कियाा था, यहां तक कि उन नाराज़ होने वाले लोगों की निगाह में उस शख़्स को अच्छा फ़रमा देते हैं, और उस शख़्स के क़ौल और अ़मल को उन लोगों की निगाह में मुज़ैय्यन कर देते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿41﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ اَوَّلَ النَّاسِ یُقْضٰی یَوْمَ الْقِیَامَةِ عَلَیْهِ، رَجُلٌ اسْتُشْهِدَ، فَاُتِیَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعْمَتَهٗ، فَعَرَفَهَا، قَالَ: فَمَا عَمِلْتَ فِیْهَا؟ قَالَ: قَاتَلْتُ فِیْكَ حَتّٰی اسْتُشْهِدْتُ، قَالَ: كَذَبْتَ، وَلٰكِنَّكَ قَاتَلْتَ لِاَنْ یُقَالَ جَرِیْءٌ، فَقَدْ قِیْلَ، ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰی وَجْهِهٖ حَتّٰی اُلْقِیَ فِی النَّارِ، وَرَجُلٌ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ وَ عَلَّمَهٗ وَقَرَاَ الْقُرْآنَ، فَاُتِیَ بِهٖ، فَعَرَّفَهٗ نِعَمَهٗ، فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِیْهَا؟ قَالَ: تَعَلَّمْتُ الْعِلْمَ و عَلَّمْتُهٗ وَقَرَاْتُ فِیْكَ الْقُرْآنَ،قَالَ: كَذَبْتَ وَلٰكِنَّكَ تَعَلَّمْتَ الْعِلْمَ لِیُقَالَ عَالِمٌ، وَقَرَاْتَ الْقُرْآنَ لِیُقَالَ هُوَ قَارِیٌ، فَقَدْ قِیْلَ، ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰی وَجْهِهٖ حَتّٰی اُلْقِیَ فِی النَّارِ، وَرَجُلٌ وَسَّعَ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاَعْطَاهُ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ كُلِّهٖ، فَاُتِیَ بِهٖ فَعَرَّفَهٗ نِعَمَهٗ، فَعَرَفَهَا، قَالَ: فَمَا عَمِلْتَ فِیْهَا؟ قَالَ: مَاتَرَكْتُ مِنْ سَبِیْلٍ تُحِبُّ اَنْ یُنْفَقَ فِیْهَا اِلَّا اَنْفَقْتُ فِیْهَا لَكَ، قَالَ: كَذَبْتَ، وَلٰكِنَّكَ فَعَلْتَ لِیُقَالَ هُوَجَوَادٌ، فَقَدْ قِیْلَ، ثُمَّ اُمِرَ بِهٖ فَسُحِبَ عَلٰی وَجْهِهٖ ثُمَّ اُلْقِیَ فِی النَّارِ.

رواه مسلم، باب من قاتل للرياء و السمعة استحق النار، رقم:٤٩٢٣

41. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन सबसे पहले जिनके खिलाफ़ फ़ैसला किया जाएगा, उनमें एक वह शख़्स भी होगा जो शहीद हो गया होगा। यह शख़्स अल्लाह तआला के सामने लाया जाएगा, अल्लाह तआला अपनी उस नेमत का इज़्हार फ़रमाएंगे जो उस पर की गई थी वह उसका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : तूने उस नेमत से क्या काम लिया? वह अ़र्ज़ करेगा : मैंने आपकी रज़ा के लिए क़िताल किया यहां तक कि शहीद कर दिया गया। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने जिहाद इसलिए किया था कि लोग बहादुर कहें, चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। दूसरा वह शख़्स होगा जिसने इल्मे दीन सीखा और दूसरों को सिखाया और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। उसको अल्लाह तआला के सामने लाया जाएगा, अल्लाह तआला उस पर अपनी दी हुई नेमतों का इज़हार फ़रमाएंगे और वह उनका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : तूने उन नेमतों से क्या काम लिया? वह अ़र्ज़ करेगा : मैंने तेरी रज़ा के लिए इल्म सीखा और दूसरों को सिखाया और तेरी ही रज़ा के लिए क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने इल्मे दीन इसलिए सीखा था कि लोग आ़लिम कहें और क़ुरआन इसलिए पढ़ा था कि लोग क़ारी कहें, चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक

दिया जाएगा। तीसरा शख़्स वह मालदार होगा जिसको अल्लाह तआला ने दुनिया में भरपूर दौलत दी होगी और हर क़िस्म का माल अ़ता फ़रमाया होगा। उसको अल्लाह तआला के सामने लाया जाएगा। अल्लाह तआला उसको अपनी नेमतें बताएंगे और वह उनका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : तूने उन नेमतों से क्या काम लिया? वह अ़र्ज़ करेगा : जिन रास्तों में ख़र्च करना तुझे पसन्द है मैंने तेरा दिया हुआ माल उन सब ही में तेरी रज़ा के लिए ख़र्च किया था। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे : झूठ बोलता है, तूने माल इसलिए ख़र्च किया था कि लोग सख़ी कहें चुनांचे कहा जा चुका। फिर उसको हुक्म सुना दिया जाएगा और वह मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا، مِمَّا يُبْتَغٰى بِهٖ وَجْهُ اللّٰهِ، لَايَتَعَلَّمُهٗ اِلَّا لِيُصِيْبَ بِهٖ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا، لَمْ يَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَعْنِیْ رِيْحَهَا.

رواه ابو داؤد، باب فی طلب العلم لغير الله، رقم: ٣٦٦٤

42\. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियलाुह अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने वह इल्म जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए सीखना चाहिए था दुनिया का माल व मताअ़् हासिल करने के लिए सीखा वह क़यामत के दिन जन्नत की ख़ुशबू भी न सूंघ सकेगा। (अबूदाऊद)

﴿ 43 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَخْرُجُ فِیْ اٰخِرِ الزَّمَانِ رِجَالٌ يَخْتِلُوْنَ الدُّنْيَا بِالدِّيْنِ، يَلْبَسُوْنَ لِلنَّاسِ جُلُوْدَ الضَّاْنِ مِنَ اللِّيْنِ، اَلْسِنَتُهُمْ اَحْلٰى مِنَ السُّكَّرِ، وَقُلُوْبُهُمْ قُلُوْبُ الذِّئَابِ يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: اَبِیْ يَغْتَرُّوْنَ اَمْ عَلَیَّ يَجْتَرِئُوْنَ؟ فَبِیْ حَلَفْتُ لَاَبْعَثَنَّ عَلٰى اُولٰئِكَ مِنْهُمْ فِتْنَةً تَدَعُ الْحَلِيْمَ مِنْهُمْ حَيْرَانًا.

رواه الترمذی، باب حديث خاتلی الدنيا بالدين و عقوبتهم، رقم: ٢٤٠٤

الجامع الصحيح وهو سنن الترمذی۔ دار الباز مكة المكرمة

43\. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे जो दीन की आड़ में दुनिया का शिकार करेंगे, भेड़ियों की नर्म खाल का लिबास पहनेंगे (ताकि लोग उन्हें दुनिया से बेरग़बत समझें) उनकी ज़बानें शक्कर से ज़्यादा मीठी होंगी मगर उनके दिल भेड़ियों-जैसे होंगे। (उनके बारे में) अल्लाह तआला का फ़रमान है : क्या ये लोग मेरे

ढील देने से धोखा खा रहे हैं या मुझसे निडर हो कर मेरे मुक़ाबले में दिलेर बन रहे हैं? मुझे अपनी क़सम है कि मैं उन लोगों में उन्हीं में से ऐसा फ़ित्ना खड़ा करूंगा जो उनके अक़्लमन्द को भी हैरान (व परेशान) बनाकर छोड़ेगा, यानी उन्हीं लोगों में से ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दूंगा जो उनको तरह-तरह के नुक़सान में मुब्तला करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 44 ﴾ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدِ بْنِ اَبِىْ فَضَالَةَ الْاَنْصَارِيِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ وَكَانَ مِنَ الصَّحَابَةِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا جَمَعَ اللّٰهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيْهِ، نَادٰى مُنَادٍ: مَنْ كَانَ اَشْرَكَ فِىْ عَمَلٍ عَمِلَهُ لِلّٰهِ اَحَدًا، فَلْيَطْلُبْ ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ، فَاِنَّ اللّٰهَ اَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة الكهف،رقم:٣١٥٤

44. हज़रत अबू सईद बिन अबी फ़ज़ाला अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन जिसके आने में कोई शक नहीं है सब लोगों को जमा फ़रमाएंगे, तो एक पुकारने वाला पुकारेगा : जिस शख़्स ने अपने किसी ऐसे अ़मल में जो उसने अल्लाह तआ़ला के लिए किया था किसी और को शरीक किया तो वह उसका सवाब उसी दूसरे से जाकर मांग ले, क्योंकि अल्लाह तआ़ला शिरकत में सब शुरका से ज़्यादा बेनियाज़ हैं। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : "अल्लाह तआ़ला शिरकत में सब शरका से ज़्यादा बेनियाज़ हैं" इसका मतलब यह है कि जिस तरह और शुरका अपने साथ किसी की शिरकत क़ुबूल कर लेते हैं अल्लाह तआ़ला इस तरह हरगिज़ किसी की शिरकत गवारा नहीं करते।

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا لِغَيْرِ اللّٰهِ اَوْ اَرَادَ بِهِ غَيْرَ اللّٰهِ فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب في من يطلب بعلمه الدنيا، رقم:٢٦٥٥

45. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने इल्म अल्लाह की रज़ा के अलावा किसी और मक़सद (मसलन इज़्ज़त, शोहरत, माल वग़ैरह हासिल करने) के लिए सीखा, तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (तिर्मिज़ी)

﴾ 46 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: تَعَوَّذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ جُبِّ الْحَزَنِ قَالُوْا: یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا جُبُّ الْحَزَنِ؟ قَالَ: وَادٍ فِیْ جَهَنَّمَ یَتَعَوَّذُ مِنْهُ جَهَنَّمُ کُلَّ یَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ قِیْلَ: یَارَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَنْ یَدْخُلُهُ؟ قَالَ: اَلْقُرَّاءُ الْمُرَاؤُوْنَ بِاَعْمَالِهِمْ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن غریب، باب ماجاء فی الریاء والسمعة، رقم:۲۳۸۳

46. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग जुब्बुल हज़न से पनाह मांगा करो। सहाबा रज़ि० ने पूछा : जुब्बुल हज़न क्या चीज़ है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम में एक वादी है कि ख़ुद जहन्नम रोज़ाना सौ मर्तबा उससे पनाह मांगती है। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! उसमें कौन लोग जाएंगे? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वे क़ुरआन पढ़ने वाले, जो दिखलावे के लिए आ़माल करते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴾ 47 ﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اُنَاسًا مِنْ اُمَّتِیْ سَیَتَفَقَّهُوْنَ فِی الدِّیْنِ، وَیَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ، وَیَقُوْلُوْنَ: نَاْتِی الْاُمَرَاءَ فَنُصِیْبُ مِنْ دُنْیَاهُمْ وَنَعْتَزِلُهُمْ بِدِیْنِنَا، وَلَا یَکُوْنُ ذٰلِكَ، کَمَا لَا یُجْتَنٰی مِنَ الْقَتَادِ اِلَّا الشَّوْكُ، کَذٰلِكَ لَا یُجْتَنٰی مِنْ قُرْبِهِمْ اِلَّا. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ: کَاَنَّهُ یَعْنِیْ: اَلْخَطَایَا.

رواه ابن ماجه، ورواته ثقات، الترغیب ۳/۱۹٦

47. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अ़क़रीब मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे होंगे, जो दीन की समझ हासिल करेंगे और क़ुरआन पढ़ेंगे (फिर हुक्काम के पास अपनी ज़ाती ग़रज़ से जाएंगे) और कहेंगे, हम उन हुक्काम के पास जाकर उनकी दुनिया से फ़ायदा तो उठा लेते हैं, (लेकिन) अपने दीन की वजह से उनके शर से महफ़ूज़ रहते हैं, हालांकि ऐसा कभी नहीं हो सकता (कि उन हुक्काम के पास ज़ाती ग़रज़ के लिए जाएं और उनसे मुतअस्सिर न हों) जिस तरह ख़ारदार दरख़्त से सिवाए कांटे के और कुछ नहीं मिल सकता, उसी तरह उन हुक्काम की नज़दीकी से सिवाए बुराइयों के और कुछ नहीं मिल सकता।

(इब्ने माजा, तर्ग़ीब)

﴾ 48 ﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ وَنَحْنُ نَتَذَاکَرُ الْمَسِیْحَ الدَّجَّالَ، فَقَالَ: اَلَا اُخْبِرُکُمْ بِمَا هُوَ اَخْوَفُ عَلَیْکُمْ عِنْدِیْ مِنَ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ؟ قَالَ، قُلْنَا: بَلٰی، فَقَالَ: اَلشِّرْكُ الْخَفِیُّ: اَنْ یَقُوْمَ الرَّجُلُ یُصَلِّیْ فَیُزَیِّنُ صَلَاتَهُ لِمَا یَرٰی مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ.

رواه ابن ماجه، باب الریاء والسمعة، رقم:٤٢٠٤

48. हज़रत अबू सईद ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ (अपने मुबारक हुजरे से) निकलकर हमारे पास तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हम लोग आपस में मसीह दज्जाल का तज़्किरा कर रहे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुमको वह चीज़ न बताऊं जो मेरे नज़दीक तुम्हारे लिए दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शिर्के ख़फ़ी है (जिसकी एक मिसाल यह है) कि आदमी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हुआ और नमाज़ को संवार कर इसलिए पढ़े कि कोई दूसरा उसको नमाज़ पढ़ते देख रहा है। (इब्ने माजा)

﴿ 49 ﴾ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بَشِّرْ هٰذِهِ الْاُمَّةَ بِالسَّنَاءِ وَالرِّفْعَةِ وَالنَّصْرِ وَالتَّمْكِيْنِ فِي الْاَرْضِ، وَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ عَمَلَ الْاٰخِرَةِ لِلدُّنْيَا لَمْ يَكُنْ لَهُ فِي الْاٰخِرَةِ نَصِيْبٌ. رواه احمد ٥/١٣٤

49. हज़रत उबई बिन काब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस उम्मत को इज़्ज़त, सरबुलन्दी, नुस्रत और रूए-ज़मीन में ग़लबा की ख़ुशख़बरी दे दो (ये इनामात तो मज्मूई तौर पर उम्मत को मिल कर रहेंगे फिर हर एक का मामला अल्लाह तआ़ला के साथ उसकी नीयत के मुताबिक़ होगा) चुनांचे जिसने आख़िरत का काम दुन्यवी मुनाफ़ा हासिल करने के लिए क्या होगा, आख़िरत में उसका कोई हिस्सा न होगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 50 ﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ صَلّٰى يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ صَامَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ، وَمَنْ تَصَدَّقَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ.

(وهو بعض الحديث) رواه احمد ٤/١٢٦

50. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने दिखलाने के लिए नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया, जिसने दिखलाने के लिए रोज़ा रखा, उसने शिर्क किया और जिसने दिखलाने के लिए सदक़ा किया, उसने शिर्क किया। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिन लोगों को दिखलाने के लिए ये अ़मल किए हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला का शरीक बना लिया, इस हालत में ये आ़माल अल्लाह तआ़ला के लिए नहीं रहते, बल्कि उन लोगों के लिए बन जाते हैं जिनको दिखलाने के लिए किए जाते हैं और उनका करने वाला बजाए सवाब के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है।

﴿ 51 ﴾ عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ بَكَى، فَقِيْلَ لَهُ: مَا يُبْكِيْكَ؟ قَالَ: شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُهُ، فَذَكَرْتُهُ، فَاَبْكَانِيْ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَتَخَوَّفُ عَلٰى اُمَّتِي الشِّرْكَ وَالشَّهْوَةَ الْخَفِيَّةَ، قَالَ: قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَتُشْرِكُ اُمَّتُكَ مِنْ بَعْدِكَ؟ قَالَ: نَعَمْ، اَمَا اِنَّهُمْ لَا يَعْبُدُوْنَ شَمْسًا، وَلَا قَمَرًا، وَلَا حَجَرًا، وَلَا وَثَنًا، وَلٰكِنْ يُرَاؤُوْنَ بِاَعْمَالِهِمْ، وَالشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ اَنْ يُصْبِحَ اَحَدُهُمْ صَائِمًا فَتَعْرِضُ لَهُ شَهْوَةٌ مِنْ شَهَوَاتِهِ فَيَتْرُكُ صَوْمَهُ.

رواه احمد ٤/١٢٤

51. हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ के बारे में ब्यान किया गया कि एक मर्तबा वह रोने लगे। लोगों ने उनसे रोने की वजह पूछी, तो उन्होंने जवाब दिया कि मुझे एक बात याद आ गई, जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुनी थी उस बात ने मुझे रुला दिया। मैंने आप ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि मुझे अपनी उम्मत के बारे में शिर्क और शहवते ख़फ़ीया का डर है। हज़रत शद्दाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या आपके बाद आपकी उम्मत शिर्क में मुब्तला हो जाएगी? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, (लेकिन) वह न तो सूरज और चांद की इबादत करेगी और न किसी पत्थर और बुत की, बल्कि अपने आमाल में रियाकरी करेगी। शहवते ख़फ़ीया यह है कि कोई शख़्स तुममें से सुबह रोज़ादार हो, फिर उसके सामने कोई ऐसी चीज़ आ जाए जो उसको पसन्द हो, जिसकी वजह से वह अपना रोज़ा तोड़ डाले (और इस तरह अपनी ख़्वाहिश पूरी कर ले)।

(मुस्नद अहमद)

﴿ 52 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: يَكُوْنُ فِيْ آخِرِ الزَّمَانِ اَقْوَامٌ اِخْوَانُ الْعَلَانِيَةِ اَعْدَاءُ السَّرِيْرَةِ، فَقِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَكَيْفَ يَكُوْنُ ذٰلِكَ؟ قَالَ: ذٰلِكَ بِرَغْبَةِ بَعْضِهِمْ اِلٰى بَعْضٍ وَرَهْبَةِ بَعْضِهِمْ اِلٰى بَعْضٍ.

رواه احمد ٥/٢٣٥

52. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आख़िर ज़माने में ऐसे लोग होंगे जो ज़ाहिर में तो दोस्त होंगे, मगर अन्दरूनी तौर पर दुश्मन होंगे। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलुल्लाह! यह किस वजह से होगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक दूसरे से ग़रज़ की वजह से ज़ाहिरी दोस्ती होगी और अन्दरूनी दुश्मनी की वजह से वही एक दूसरे से ख़ौफ़ज़दा भी रहेंगे। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि लोगों की दोस्ती और दुश्मनी की बुनयाद ज़ाती अग़राज़ पर होगी। अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए नहीं होगी।

﴾ 53 ﴿ عَنْ اَبِیْ مُوسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ ذَاتَ یَوْمٍ، فَقَالَ: یَاۤاَیُّھَا النَّاسُ اتَّقُوْا ھٰذَا الشِّرْکَ، فَاِنَّہٗ اَخْفٰی مِنْ دَبِیْبِ النَّمْلِ، فَقَالَ لَہٗ مَنْ شَاءَ اللّٰہُ اَنْ یَقُوْلَ: وَکَیْفَ نَتَّقِیْہِ، وَھُوَ اَخْفٰی مِنْ دَبِیْبِ النَّمْلِ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ؟ قَالَ: قُوْلُوْا: اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِکَ مِنْ اَنْ نُشْرِکَ شَیْئًا نَعْلَمُہٗ، وَنَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَا نَعْلَمُ. رواہ احمد ٤/٤٠٣

53. हज़रत अबू मूसा अशअ़री ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ब्यान किया, जिसमें यह इर्शाद फ़रमाया : लोगो! इस शिर्क (रियाकारी) से बचते रहो कि यह चींटी के रेंगने की आवाज़ से भी ज़्यादा पोशीदा होता है। एक शख़्स के दिल में सवाल पैदा हुआ, उसने पूछा : या रसूलुल्लाह! हम उससे कैसे बचें जबकि यह चींटी के रेंगने से भी ज़्यादा पोशीदा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह पढ़ा करो 'अल्लाहुम-म इन्ना नऊज़ु बि-क मिन अन नुश्रि-क शैइन नालमुहू व नस्तग़्फ़िरु-क लिमा ला नालमुहू' तर्जुमा : ऐ अल्लाह! हम आप से पनाह मांगते हैं उस शिर्क से जिसको हम जानते हैं और आपसे माफ़ी मांगते हैं उस शिर्क से जिसको हम नहीं जानते। (मुस्नद अहमद)

﴾ 54 ﴿ عَنْ اَبِیْ بَرْزَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّمَا اَخْشٰی عَلَیْکُمْ شَھَوَاتِ الْغَیِّ فِیْ بُطُوْنِکُمْ وَ فُرُوْجِکُمْ، وَمُضِلَّاتِ الْھَوٰی. رواہ احمد والبزار والطبرانی فی الثلاثۃ

و رجالہ رجال الصحیح لان ابا الحکم البنانی الراوی عن أبی برزۃ بینہ الطبرانی، فقال: عن أبی الحکم، ھو علی بن الحکم، وقد روی لہ البخاری، وأصحاب السنن، مجمع الزوائد ١/٤٤٦

54. हज़रत अबू बरज़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तुम पर इस बात का अन्देशा है कि तुम ऐसी गुमराहकुन ख़्वाहिशात में पड़ जाओ, जिनका तअ़ल्लुक़ तुम्हारे पेटों और शर्मगाहों से है (जैसे हराम खाना, बदकारी वग़ैरह) और ऐसी ख़्वाहिशात में पड़ जाओ, जो (तुम्हें हक़ के रास्ते से हटा कर) गुमराही की तरफ़ ले जाएं। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴾ 55 ﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰہِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ سَمَّعَ النَّاسَ بِعَمَلِہٖ سَمَّعَ اللّٰہُ بِہٖ سَامِعَ خَلْقِہٖ، وَصَغَّرَہٗ، وَحَقَّرَہٗ. رواہ الطبرانی فی الکبیر

واحد اسانید الطبرانی فی الکبیر رجال الصحیح، مجمع الزوائد ١٠/٣٨١

55. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अपने अ़मल को लोगों के दर्मियान मशहूर करेगा,

तो अल्लाह तआ़ला उसके इस रिया वाले अ़मल को अपनी मख़्लूक़ के कानों तक पहुंचा देंगे (कि यह शख़्स रियाकार है) और उसको लोगों की निगाह में छोटा और ज़लील कर देंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿56﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُوْمُ فِي الدُّنْيَا مَقَامَ سُمْعَةٍ وَرِيَاءٍ إِلَّا سَمَّعَ اللهُ بِهِ عَلٰى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه الطبراني و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٣٨٣

56. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा दुनिया में शोहरत और दिखलाने के लिए कोई नेक अ़मल करेगा, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन इस बात को तमाम मख़्लूक़ के सामने शोहरत देंगे (कि इस शख़्स ने नेक अ़मल लोगों को दिखलाने के लिए किए थे जिसकी वजह से उसकी रुसवाई होगी)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿57﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يُؤْتٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصُحُفٍ مُخَتَّمَةٍ، فَتُنْصَبُ بَيْنَ يَدَيِ اللهِ تَبَارَكَ و تَعَالٰى، فَيَقُوْلُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى: اَلْقُوْا هٰذِهٖ، وَاقْبَلُوْا هٰذِهٖ، فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: وَعِزَّتِكَ وَ جَلَالِكَ، مَا رَاَيْنَا اِلَّا خَيْرًا، فَيَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: اِنَّ هٰذَا كَانَ لِغَيْرِ وَجْهِيْ، وَاِنِّيْ لَا اَقْبَلُ الْيَوْمَ اِلَّا مَا ابْتُغِيَ بِهٖ وَجْهِيْ. وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَتَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ: وَ عِزَّتِكَ، مَا كَتَبْنَا اِلَّا مَا عَمِلَ، قَالَ: صَدَقْتُمْ، اِنَّ عَمَلَهٗ كَانَ لِغَيْرِ وَجْهِيْ.

رواه الطبراني فى الاوسط بإسنادين، ورجال أحدهما رجال الصحيح،

ورواه البزار، مجمع الزوائد ١٠/٦٣٥

57. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन मोहरशुदा आ़मालनामे लाए जाएंगे और वे अल्लाह तआ़ला के सामने पेश किए जाएंगे। अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों के आ़मालनामे के बारे में फ़रमाएंगे, उनको क़ुबूल कर लो और कुछ लोगों के आमालनामे के बारे में फ़रमाएंगे, उनको फेंक दो। फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : आपकी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम! हमने उन आ़मालनामों में भलाई के अलावा तो कुछ और देखा नहीं? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : वे आ़माल मेरे लिए नहीं किए थे और मैं आज के दिन उन्हीं आ़माल को क़ुबूल करूंगा जो सिर्फ़ मेरी रज़ा के लिए किए गए थे।

एक रिवायत में है कि फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे : आपकी इ़ज़्ज़त की क़सम! हम

ने तो वही लिखा जो उसने अ़मल किया (और वे सब आ़माल नेक और अच्छे ही हैं) अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे : फ़रिश्तो! तुम सच कहते हो (लेकिन) उसके आ़माल मेरी रज़ा के अलावा किसी और ग़रज़ के लिए थे।

(तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 58 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: وَاَمَّا الْمُهْلِكَاتُ: فَشُحٌّ مُطَاعٌ، وَهَوًى مُتَّبَعٌ، وَاِعْجَابُ الْمَرْءِ بِنَفْسِهٖ. (وهو طرف من الحديث) رواه البزار واللفظ له والبيهقي وغيرهما مروى عن جماعة من الصحابة واسانيده وان كان لا يسلم شيئ منها من مقال فهو بمجموعها حسن ان شاءَ الله تعالىٰ، الترغيب ١/٢٨٦

58. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हलाक करने वाली चीज़ें ये हैं : वह बुख़्ल, जिसकी इताअ़त की जाए यानी बुख़्ल किया जाए, वह ख़्वाहिशे नफ़्स, जिस पर चला जाए और आदमी का अपने आपको बेहतर समझना। (बज़्ज़ार, बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مِنْ اَسْوَءِ النَّاسِ مَنْزِلَةً مَنْ اَذْهَبَ آخِرَتَهٗ بِدُنْيَا غَيْرِهٖ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٣٥٨/٣

59. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन शख़्स वह है जो दूसरे की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत को बरबाद करे, यानी दूसरे को दुन्यावी फ़ायदा पहुंचाने के लिए अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाला काम करके अपनी आख़िरत को बरबाद करे। (बैहक़ी)

﴿ 60 ﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنِّيْ اَخْوَفَ مَا اَخَافُ عَلٰى هٰذِهِ الْاُمَّةِ مُنَافِقٌ عَلِيْمُ اللِّسَانِ. رواه البيهقي في شعب الإيمان ٢٨٤/٢

60. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस उम्मत पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ का है, जो ज़बान का आ़लिम हो (इल्म की बातें करता हो, लेकिन ईमान और अ़मल से ख़ाली हो)। (बैहक़ी)

फ़ायदा : मुनाफ़िक़ से मुराद रियाकार या फ़ासिक़ है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 61 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ الْخُزَاعِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ رِيَاءً وَسُمْعَةً لَمْ يَزَلْ فِيْ مَقْتِ اللهِ حَتّٰى يَجْلِسَ. تفسير ابن كثير ١١٦/٣

61. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन कै़स ख़ुज़ाई ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी नेक काम में दिखलावे और शोहरत की नीयत से लगे तो जब तक वह उस नीयत को छोड़ न दे अल्लाह तआ़ला की सख़्त नाराज़गी में रहता है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

﴿ 62 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ لَبِسَ ثَوْبَ شُهْرَةٍ فِي الدُّنْيَا، أَلْبَسَهُ اللهُ ثَوْبَ مَذَلَّةٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ أَلْهَبَ فِيْهِ نَارًا.

رواه ابن ماجه، باب من لبس شهرة من الثياب، رقم: ٣٦٠٧

62. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने दुनिया में शोहरत का लिबास पहना, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसको ज़िल्लत का लिबास पहना कर उसमें आग भड़का देंगे। (इब्ने माजा)

दावत व तब्लीग़

अपने यक़ीन व अ़मल को दुरुस्त करने और सारे इंसानों को सही यक़ीन व अ़मल पर लाने के लिए रसूलुल्लाह ﷺ वाले मेहनत के तरीक़े को सारे आ़लम में ज़िन्दा करने की कोशिश करना।

दावत और उसके फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ط وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴾ [يونس:٢٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और अल्लाह तआ़ला सलामती के घर यानी जन्नत की तरफ़ दावत देते हैं और जिसे चाहते हैं, सीधा रास्ता दिखाते हैं। (यूनुस : 25)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ق وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴾ [الجمعة:٢]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला वह हैं, जिन्होंने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल मबऊस फ़रमाया, यानी वह रसूल उम्मी और अनपढ़ है, वह रसूल उनको अल्लाह तआ़ला की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं यानी क़ुरआन

करीम के ज़रिए उनको दावत देते हैं, नसीहत करते हैं और ईमान लाने के लिए उनको आमादा करते हैं (जिससे उनको हिदायत हासिल होती है) और उनकी अख़्लाक़ी इस्लाह करते और उनको सवांरते हैं, उनको क़ुरआन पाक की तालीम देते हैं और सुन्नत और सही समझ-बूझ की तालीम देते हैं। यक़ीनन रसूल की बेसत से पहले ये लोग खुली गुमराही में थे। (जुमा : 2)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا﴾ [الفرقان:٥١،٥٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : अगर हम चाहते तो (आपके अलावा उसी ज़माने में) हर बस्ती में एक-एक पैग़म्बर भेज देते (और तन्हा आप पर तमाम काम न डालते लेकिन, चूंकि आपका अज्र बढ़ाना मक़सूद है इसलिए हमने ऐसा नहीं किया तो इस तरह सारा काम तन्हा आपके सुपुर्द करना अल्लाह तआला की नेमत है) (लिहाज़ा इस नेमत के शुक्रिया में) आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए यानी काफ़िर तो उससे खुश होंगे कि आप तब्लीग़ न करें या कम करें और क़ुरआन (में जो हक़ की दलीलें हैं उन) से उन कुफ़्फ़ार का ज़ोर व शोर से मुक़ाबला कीजिए (यानी आम और ताम तब्लीग़ कीजिए, सबसे कहिए और बार-बार कहिए और हिम्मत क़वी रखिए)। (फ़ुरक़ान : 51-52)

وقَالَ تَعَالٰى: ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ [النحل:١٢٥]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के ज़रिए दावत दीजिए। (नहल : 125)

وقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [الذاريات:٥٥]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और समझाते रहिए, क्योंकि समझाना ईमान वालों को नफ़ा देता है। (ज़ारियात : 55)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ﴾ [المدثر:١-٣]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले! अपनी जगह से उठिए और डराइए और अपने रब की बड़ाइयां ब्यान कीजिए। (मुद्दस्सिर : 1-3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴾ [الشعراء:٣]

रसूल ﷺ से ख़िताब है : शायद आप उनके ईमान न लाने पर ग़म खाते-खाते अपनी जान दे देंगे। (शुअ़रा : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴾ [التوبة: ١٢٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बिलाशुबहा तुम्हारे पास एक ऐसे रसूल तशरीफ़ लाए हैं, जो तुम ही में से हैं, तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ़ का पहुंचना उन पर बहुत गिरां गुज़रता है, वह तुम्हारी भलाई के इन्तिहाई ख़्वाहिशमन्द हैं (उनकी यह हालत तो सबके साथ है) बिल्ख़ुसूस मुसलमानों पर बड़े शफ़ीक़ और निहायत मेहरबान हैं। (तौबा : 128)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ﴾ [فاطر:٨]

अल्लाह तआ़ला ने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : उनके ईमान न लाने पर पछता-पछता कर, कहीं आपकी जान न जाती रहे। (फ़ातिर : 8)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا ۝ وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝ ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ

لَكُمْ اَنْهٰرًا ۝ مَالَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴾ [نوح:١-٢٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : बेशक हमने नूह ﷺ को उनकी क़ौम के पास यह हुक्म देकर भेजा था कि अपनी क़ौम को डराइए, इससे पहले कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आए। चुनांचे उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें साफ़ तौर पर नसीहत करता हूं कि अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उनसे डरते रहो और मेरा कहना मानो (ऐसा करने पर) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे और मौत के मुक़र्रर वक़्त तक अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र रखेंगे, यानी दुनिया में भी अ़ज़ाब से हिफ़ाज़त रहेगी और आख़िरत में अ़ज़ाब का न होना तो ज़ाहिर है। जब अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो फिर उसको पीछे नहीं हटाया जा सकता, यानी ईमान और तक़्वा की बरकत से अ़ज़ाब से तो हिफ़ाज़त हो जाएगी मगर मौत बहरहाल आकर रहेगी। काश! तुम यह बात समझते (जब एक लम्बी मुद्दत तक उन बातों का असर क़ौम पर न हुआ, तो) नूह ﷺ ने दुआ़ की : मेरे रब! मैं अपनी क़ौम को रात दिन, दावत देता रहा। मगर वह मेरे बुलाने पर दीन से और भी ज़्यादा भागने लगे। जब भी मैं उनको ईमान की दावत देता ताकि उनके ईमान के सबब आप उनको बख़्श दें, तो वे लोग कानों में अपनी उंगलियां ठूंस लेते और अपने कपड़े अपने ऊपर लपेट लेते (ताकि वह मुझको न देखें और मैं उनको न देखूं) और (शरारत पर) अड़ गए और बेहद तकब्बुर किया। फिर (भी मैं उनको मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से नसीहत करता रहा, चुनांचे) मैंने उन्हें बरमला भी बुलाया, फिर मैंने उनको एलानिया समझाया और पोशीदा तौर पर समझाया यानी जो तरीक़ा भी उनकी हिदायत का हो सकता था, उसको छोड़ा नहीं। आम मजमों में मैंने उनको दावत दी, फिर ख़ास तौर पर उनके घरों पर जाकर भी एलानिया खोल-खोल कर ब्यान किया और ख़ामोशी के साथ चुपके-चुपके उनको नफ़ा-नुक़सान से आगाह किया और (उसी समझाने के सिलसिले में) मैंने उनसे कहा कि तुम अपने रब के सामने इस्तिग़फ़ार करो, बेशक वह बड़े

बख़्शने वाले हैं। इस इस्तग़फ़ार पर अल्लाह तआ़ला कसरत से तुम पर बारिशें बरसाएंगे और तुम्हारे माल और औलाद में बरकत देंगे और तुम्हारे लिए बहुत से बाग़ लगा देंगे और तुम्हारे लिए नहरें जारी कर देंगे। तुम्हें क्या हो गया कि तुम अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत व जलाल का ख़्याल नहीं रखते, हालांकि उन्होंने तुम्हें कई मरहलों में बनाया है। क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह ऊपर तले सात आसमान बनाए हैं और उन आसमानों में चांद को चमकता हुआ बनाया और सूरज को चिराग़ (की तरह रौशन) बना दिया और अल्लाह तआ़ला ही ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, फिर तुम्हें (मरने के बाद) ज़मीन में ही लौटा देंगे और (क़ियामत में) इस ज़मीन से तुमको बाहर ले आएंगे और अल्लाह तआ़ला ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया, ताकि तुम उसके कुशादा रास्तों में चलो-फिरो यानी ज़मीन पर चलने फिरने में रास्ता की कोई रुकावट नहीं। (नूह : 1-20)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۞ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۞ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۞ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ﴾ [الشعراء: ٢٣-٢٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : फ़िरऔन ने कहा कि रब्बुल आलमीन क्या चीज़ है? मूसा عليه السلام ने फ़रमाया कि वह आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान है, सब के रब हैं, अगर तुम्हें यक़ीन आए। फ़िरऔन ने अपने इर्द-गिर्द बैठने वालों से कहा कि क्या तुम सुन रहे हो? (कैसी बेकार बातें कर रहा है, लेकिन मूसा عليه السلام ने अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात का ब्यान जारी रखा और) फ़रमाया कि वही तुम्हारे रब हैं और वही तुम्हारे पिछले बाप-दादों के रब हैं। फ़िरऔन अपने लोगों से कहने लगा, यह तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बिलाशुबहा कोई दीवाना है। मूसा عليه السلام ने फ़रमाया कि वही मश्रिक़ व मग़्रिब और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, उन सबके रब हैं, अगर तुम कुछ समझ रखते हो। (शुअ़रा : 23-28)

وَقَالَ تَعَالٰى فِيْ مَوْضِعٍ آخَرَ: ﴿قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۞ قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى

كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدٰى قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ﴾ [طٰهٰ: ٤٩-٥٣]

दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने मूसा ﷺ की दावत को इस तरह ज़िक्र फ़रमाया : फ़िरऔन ने कहा, मूसा (यह बताओ कि) तुम दोनों का रब कौन है? मूसा ﷺ ने जवाब दिया, हम दोनों का (बल्कि सबका) रब वह है जिसने हर चीज़ को उसके मुनासिब सूरत व शक्ल अ़ता फ़रमाई (फिर तमाम मख़्लूक़ात को हर क़िस्म के फ़ायदे हासिल करने की) समझ अ़ता फ़रमाई। (फ़िरऔन ने मूसा ﷺ का माक़ूल जवाब सुनकर बेहूदा सवालात शुरू कर दिए और) कहा अच्छा पिछले लोगों के हालात बताइए। मूसा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उन लोगों का इल्म मेरे रब के पास लौहे महफ़ूज़ में है। मेरे रब (ऐसे जानने वाले हैं कि) न ग़लती करते हैं और न भूलते हैं (उन लोगों के आ़माल का सही-सही इल्म मेरे रब को हासिल है। फिर हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह तआ़ला की ऐसी आ़म सिफ़ात ब्यान फ़रमाईं, जिसे हर आ़मी आदमी भी समझ सकता है। चुनांचे फ़रमाया) वह रब ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और इस ज़मीन में तुम्हारे लिए रास्ते बनाए और आसमान से पानी बरसाया। (ताहा : 49-54)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴾ [ابراهيم: ٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और हमने मूसा ﷺ को यह हुक्म देकर भेजा कि अपनी क़ौम को (कुफ़्र की) तारीकियों से (ईमान की) रौशनी की तरफ़ लाओ और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुसीबत और राहत के जो वाक़िआ़त उनको पेश आते रहे हैं, वे वाक़िआ़त उनको याद दिलाओ, क्योंकि उन वाक़िआ़त में हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए बड़ी निशानियां हैं। (इब्राहीम : 5)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴾ [الاعراف: ٦٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : (नूह ﷺ) ने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं

तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुंचाता हूं और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूं।
(आराफ़ : 68)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَقَالَ الَّذِىْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۞ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ الْقَرَارِ ۞ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ج وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۞ وَيٰقَوْمِ مَالِىْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَى النَّارِ ۞ تَدْعُوْنَنِىْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۞ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِى الدُّنْيَا وَلَا فِى الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۞ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۞ فَوَقٰهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴾ [المؤمن:٣٨-٤٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : (फ़िरऔन की क़ौम में से) वह आदमी जो (मूसा ﷺ पर) ईमान लाया था (और उसने अपना ईमान छुपाया हुआ था) अपनी क़ौम से कहा : मेरे भाइयो! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें नेकी का रास्ता बताऊंगा। मेरे भाइयो! दुनिया की ज़िन्दगी महज़ चन्द रोज़ा है और ठहरने का मक़ाम तो आख़िरत ही है। जो बुरे काम करेगा उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जिसने नेक काम किया, चाहे मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, जहां उन्हें बेहिसाब रोज़ी मिलेगी। मेरे भाइयो! आख़िर क्या बात है कि मैं तुमको नजात की दावत देता हूं और तुम मुझे दोज़ख़ की दावत देते हो। तुम मुझे इस बात की तरफ़ दावत देते हो कि मैं अल्लाह तआला का मुंकिर हो जाऊं और उनके साथ उसे शरीक करूं जिसे मैं जानता भी नहीं और मैं तुम्हें ज़बरदस्त, गुनाह बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं और सच्ची बात तो यह है कि तुम मुझे जिसकी तरफ़ बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है, न आख़िरत में और यक़ीनन हम सबको अल्लाह तआला के पास वापस जाना है और बेशक बन्दगी की हद से निकलने वाले ही दोज़ख़ी हैं। मैं तुमसे जो कुछ कह रहा हूं, तुम मेरी इस बात को आगे चल कर याद करोगे और मैं तो अपना मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूं, बेशक तमाम बन्दे अल्लाह

तआला की निगाह में हैं। (नतीजा यह हुआ कि) अल्लाह तआला ने उस मोमिन को उन लोगों की बुरी चालों से महफ़ूज़ रखा और ख़ुद फ़िरऔनियों पर बदतरीन अज़ाब नाज़िल हुआ। (मोमिन : 38-45)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴾ [لقمٰن:١٧]

(हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत की, जिसको अल्लाह तआला ने ज़िक्र फ़रमाया) मेरे प्यारे बेटे! नमाज़ पढ़ा करो, अच्छे कामों की नसीहत किया करो, बुरे कामों से मना किया करो और जो मुसीबत तुम पर आए, उसको बरदाश्त किया करो, बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (लुक़मान : 17)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا نِۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۞ فَلَمَّا نَسُوْا مَاذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴾ [الاعراف:١٦٤-١٦٥]

(बनी इसराईल को हफ़्ता के दिन मछली के शिकार से मना किया गया था, कुछ लोगों ने उस हुक्म पर अमल किया, कुछ लोगों ने नाफ़रमानी की और कुछ लोगों ने नाफ़रमानों को नसीहत की। इस वाक़िआ को इन आयतों में ब्यान किया है, अल्लाह तआला का इर्शाद है) और वह वक़्त ज़िक्र के क़ाबिल है, जब बनी इसराईल की एक जमाअत जो कि नाफ़रमानी नहीं करती थी, (और न ही नाफ़रमानी करने वालों को रोकती थी) उसने उन लोगों से कहा जो नसीहत किया करते थे कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत कर रहे हो जिनको अल्लाह तआला हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं। उस पर नसीहत करने वालों ने जवाब दिया कि हम इसलिए नसीहत कर रहे हैं ताकि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने अपनी ज़िम्मेदारी से सुब्कदोश हो सकें (यानी अल्लाह तआला के सामने यह कह सकें कि ऐ अल्लाह, हमने तो कहा था, मगर उन्होंने न सुना, हम माज़ूर हैं) और इस उम्मीद पर भी कि शायद ये बाज़ आ जाएं (और हफ़्ता के दिन शिकार करना छोड़ दें) फिर जब उन लोगों ने इस हुक्म को छोड़े ही रखा जिस हुक्म पर अमल करने की उनको नसीहत की जाती रही हो, हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो उस

बुरे काम से मना किया करते थे और नाफ़रमानों को नाफ़रमानी की वजह से जो वह किया करते थे शदीद अ़ज़ाब में मुब्तला कर दिया।

(आराफ़ : 164-166)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ﴾

[هود: ١١٦-١١٧]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो क़ौमें तुम से पहले हलाक हो चुकी हैं, उनमें ऐसे समझदार लोग क्यों न हुए जो लोगों को मुल्क में फ़साद फैलाने से मना करते अल्बत्ता चन्द आदमी ऐसे थे जो फ़साद से रोकते थे जिन्हें हमने अ़ज़ाब से बचा लिया था (यानी पिछली उम्मतों की हलाकत के जो क़िस्से मज्क़ूर हुए हैं उसकी वजह यह हुई कि उनमें ऐसे समझदार लोग न थे जो उनको अम्र बिल्मारूफ़ और नह्यि अ़निलमुन्कर करते, चन्द लोग ये काम करते रहे तो वे अ़ज़ाब से बचा लिए गए) और जो नाफ़रमान थे वे जिस नाज़ व नेमत में थे, उसके पीछे पड़ रहे और वे जराइम के आ़दी हो चुके थे, और आपके रब की यह शान नहीं है कि वह उन बस्तियों को जिनके रहने वाले (अपनी और दूसरों की) इस्लाह में लगे हों, नाहक़ (बिला वजह) तबाह व बरबाद कर दें। (हूद : 116-117)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾ [العصر: ١-٣]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जमाने की क़सम! बेशक इन्सान बड़े ख़सारे में है मगर वे लोग जो ईमान लाए और नेक आ़माल के पाबन्द रहे और एक दूसरे को (हक़) पर क़ायम रहने और एक दूसरे को आमाल की पाबन्दी की ताकीद करते रहे (ये लोग अलबत्ता पूरे-पूरे कामयाब हैं)। (अ़स्र)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ﴾ [آل عمران: ١١٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों के फ़ायदे के लिए भेजी गई हो। तुम नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हो। (आले इमरान : 110)

وَقَالَ تَعَالٰی :﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْ اَدْعُوْا اِلَى اللّٰهِ قف عَلٰی بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ﴾

[يوسف:١٠٨]

रसूल ﷺ से ख़िताब है : आप फ़रमा दीजिए मेरा रास्ता तो यही है कि मैं पूरी बसीरत के साथ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देता रहूं और जो मेरी पैरवी करने वाले हैं वे भी (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देते हैं)।(यूसुफ़ : 108)

وَقَالَ تَعَالٰی:﴿ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ﴾ [التوبة:٧١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में एक दूसरे के दीनी मददगार हैं, जो नेक कामों का हुक्म देते हैं और बुरे कामों से मना करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल ﷺ के हुक्म पर चलते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला ज़रूर रहम फ़रमाएंगे। बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त हैं, हिकमत वाले हैं। (तौबा : 71)

وَقَالَ تَعَالٰی :﴿ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰی ص وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾

[المائدة:٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और नेकी और तक़्वा के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म के कामों में एक दूसरे की मदद न किया करो। (माइदा : 2)

وَقَالَ تَعَالٰی :﴿ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ط اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ج وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ﴾ [حم السجدة:٣٣-٣٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाए और ख़ुद भी नेक अ़मल करे और (फ़रमांबरदारी के इज़हार के लिए) कहे कि मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। नेकी और बुराई बराबर नहीं होती (बल्कि हर एक का असर जुदा है) तो आप (और आप के मानने वाले) बुराई का जवाब भलाई से दें (मसलन ग़ुस्सा के जवाब में बुर्दबारी, सख़्ती के जवाब में नर्मी) चुनांचे इस बेहतरीन बरताव का असर यह होगा कि जिस शख़्स को आपसे दुश्मनी थी वह एक दम ऐसा हो जाएगा जैसा कोई हमदर्द दोस्त होता है, और यह बात बरदाश्त करने वालों ही को नसीब होती है, और यह बात बड़ी क़िस्मत वाले ही को मिलती है (इस आयत से मालूम हुआ कि दाई इलल्लाह को बहुत ज़्यादा सब्र व इस्तिक़्लाल और उम्दा अख़्लाक़ की ज़रूरत है)। (हामीम सज्दा : 33-35)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ﴾ [التحريم:٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। उस आग पर ऐसे सख़्त दिल और ज़ोरआवर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं कि उनको जो हुक्म भी अल्लाह तआ़ला देते हैं वह उसकी नाफ़रमानी नहीं करते और वह वही करते हैं जिसका उनको हुक्म दिया जाता है। (तहरीम : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ط وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ﴾ [الحج:٤١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : ये मुसलमान लोग ऐसे हैं कि अगर हम उनको दुनिया में हुकूमत दे दें तब भी ये लोग (ख़ुद भी) नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और (दूसरों को भी) नेक काम करने को कहें और बुरे कामों से मना करें और हर काम का अंजाम तो अल्लाह तआ़ला ही के अख़्तियार में है। (हज : 41)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ط هُوَاجْتَبٰكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ط مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرَاهِيْمَ ط هُوَ سَمّٰكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ لا مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ﴾ [الحج:٧٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और अल्लाह तआ़ला के दीन के लिए मेहनत किया करो जैसा मेहनत करने का हक़ है। उन्होंने तमाम दुनिया में अपना पैग़ाम पहुंचाने के लिए तुम को चुन लिया है और दीन में तुम पर किसी तरह सख़्ती नहीं की (लिहाज़ा दीन का काम आसान है। और जो इस्लाम के अह्काम तुम को दिए गए हैं, वह दीने इब्राहीमी के मुताबिक़ हैं इसलिए) तुम अपने बाप इब्राहीम के दीन पर क़ायम रहो। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा लक़ब क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले भी और इस क़ुरआन में भी मुसलमान रखा है, यानी फ़रमांबरदार और वफ़ाशुआ़र। तुम को हमने इसलिए मुंतख़ब किया है, ताकि मुहम्मद ﷺ तुम्हारे लिए गवाह हों और तुम दूसरे लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनो। (हज : 78)

फ़ायदा : मतलब यह है कि क़ियामत के दिन जब दूसरी उम्मतें इंकार करेंगी कि अम्बिया ने हमको तब्लीग़ नहीं की, तो वह अम्बिया उम्मते मुहम्मदिया को बतौरे गवाह पेश करेंगे। यह उम्मत गवाही देगी कि बेशक पैग़म्बरों ने दावत व तब्लीग़ की, जब सवाल होगा कि तुम को कैसे मालूम हुआ? जवाब देंगे कि हमको हमारे नबी ने बताया था और फिर रसूलुल्लाह ﷺ अपनी उम्मत की गवाही के मोतबर होने की तस्दीक़ फ़रमाएंगे।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत का मफ़हूम यह ब्यान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : हमने तुम्हें इसलिए चुन लिया है ताकि रसूल तुम को बताएं और सिखाएं और तुम दूसरे लोगों को बताओ और सिखाओ।

(कश्फ़ुर्रहमान)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّمَا اَنَا مُبَلِّغٌ وَاللهُ يَهْدِىْ وَاِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللهُ يُعْطِىْ. رواه الطبرانى فى الكبير وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٢٩٥/١

1. हज़रत मुआविया رضي الله عنه रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : मैं तो अल्लाह तआला का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाने वाला हूं और हिदायत तो अल्लाह तआला ही देते हैं, मैं तो माल तक़सीम करने वाला हूं और अता करने वाले तो अल्लाह तआला ही हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿2﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِعَمِّهِ: قُلْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، اَشْهَدُ لَكَ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، قَالَ: لَوْلَا اَنْ تُعَيِّرَنِىْ قُرَيْشٌ يَقُوْلُوْنَ: اِنَّمَا حَمَلَهُ عَلٰى ذٰلِكَ الْجَزَعُ لَاَقْرَرْتُ بِهَا عَيْنَكَ، فَاَنْزَلَ اللهُ: "اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ" الآية. رواه مسلم، باب الدليل على صحة اسلام......، رقم: ١٣٥

2. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने चचा (अबू तालिब से उनकी वफ़ात के वक़्त) इर्शाद फ़रमाया : ला इला-ह इल्लल्लाह कह लीजिए, ताकि मैं क़ियामत के दिन आपका गवाह बन जाऊं। अबू तालिब ने जवाब दिया : अगर क़ुरैश के इस ताने का डर न होता कि अबू तालिब ने सिर्फ़ मौत की घबराहट से कलिमा पढ़ा है तो में कलिमा पढ़ कर ज़रूर आपकी आंखों को ठंडा कर देता। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई : तर्जुमा : आप जिसको चाहें हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह तआला जिसको चाहें हिदायत दे दें। (मुस्लिम)

﴿3﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجَ اَبُوْ بَكْرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ يُرِيْدُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، وَكَانَ لَهُ صَدِيْقًا فِى الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَقِيَهُ، فَقَالَ: يَا اَبَا الْقَاسِمِ، فُقِدْتَ مِنْ مَجَالِسِ قَوْمِكَ، وَاتَّهَمُوْكَ بِالْعَيْبِ لِآبَائِهَا وَ اُمَّهَاتِهَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: "اِنِّىْ رَسُوْلُ اللهِ، اَدْعُوْكَ اِلَى اللهِ "فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ كَلَامِهِ اَسْلَمَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ، فَانْطَلَقَ عَنْهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَمَا بَيْنَ الْاَخْشَبَيْنِ اَحَدٌ اَكْثَرَ سُرُوْرًا مِنْهُ بِاِسْلَامِ اَبِىْ بَكْرٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ، وَمَضَى اَبُوْبَكْرٍ فَرَاحَ لِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ وَطَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ وَسَعْدِ بْنِ اَبِىْ وَقَّاصٍ

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ، فَاَسْلَمُوا، ثُمَّ جَاءَ الْغَدَ بِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنٍ وَاَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ وَعَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ وَاَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الْاَسَدِ وَالْاَرْقَمِ بْنِ اَبِي الْاَرْقَمِ، فَاَسْلَمُوْا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ. البداية والنهاية ٣/ ٨٠

3. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र ﷺ जाहिलियत के ज़माने में रसूलुल्लाह ﷺ के दोस्त थे। एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ की मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले। आप ﷺ से मुलाक़ात हुई तो अ़र्ज़ किया : अबुलक़ासिम! (यह रसूलुल्लाह ﷺ की कुन्नियत है) आप अपनी क़ौम की मज्लिसों में दिखाई नहीं देते और लोग आप पर यह इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि आप उनके बाप-दादा में ऐब निकालते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूं तुमको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ की बात ख़त्म होते ही हज़रत अबूबक्र ﷺ मुसलमान हो गए। रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत अबूबक्र ﷺ के पास से वापस हुए और आप ﷺ हज़रत अबूबक्र ﷺ के इस्लाम लाने पर जितने ख़ुश थे मक्का के दो पहाड़ों के दर्मियान कोई शख़्स किसी बात की वजह से इतना ख़ुश न था। हज़रत अबूबक्र ﷺ वहां से हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह, हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के पास (दावत देने के लिए) तशरीफ़ ले गए, ये हज़रात भी मुसलमान हो गए (ﷺ)। दूसरे रोज़ हज़रत अबूबक्र ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के पास हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुल असद और हज़रत अरक़म बिन अबी अरक़म को लेकर हाज़िर हुए और ये सब हज़रात भी मसुलमान हो गए (ﷺ) (दो दिन में हज़रत अबूबक्र ﷺ की दावत से नौ हज़रात ने इस्लाम क़ुबूल किया)। (अल-बिदायः वन्निहायः)

﴿4﴾ عَنْ اَسْمَاءَ بِنْتِ اَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ (فِي قِصَّةِ اِسْلَامِ اَبِي قُحَافَةَ): فَلَمَّا دَخَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ (مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ) وَدَخَلَ الْمَسْجِدَ اَتَى اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ بِاَبِيْهِ يَقُوْدُهُ، فَلَمَّا رَآهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: هَلَّا تَرَكْتَ الشَّيْخَ فِي بَيْتِهِ حَتّٰى اَكُوْنَ اَنَا آتِيْهِ فِيْهِ؟ فَقَالَ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! هُوَاَحَقُّ اَنْ يَمْشِيَ اِلَيْكَ مِنْ اَنْ تَمْشِيَ اِلَيْهِ، قَالَ: فَاَجْلَسَهُ بَيْنَ يَدَيْهِ، ثُمَّ مَسَحَ صَدْرَهُ، ثُمَّ قَالَ لَهُ: اَسْلِمْ، فَاَسْلَمَ، وَدَخَلَ بِهِ اَبُوْبَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ وَرَاْسُهُ كَاَنَّهَا ثَغَامَةٌ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: غَيِّرُوْا هٰذَا مِنْ شَعْرِهِ. رواه احمد والطبراني ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ٦/ ٢٥٤

हज़रत असमा बिन्त अबीबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं (फ़त्हे मक्का के ..न) जब रसूलुल्लाह ﷺ मक्का में दाख़िल हुए और मस्जिदे हराम तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अबूबक्र ﷺ अपने वालिद अबू क़हाफ़ा का हाथ पकड़ कर आपकी ख़िदमत में लाए। जब आप ﷺ ने उन्हें देखा तो इर्शाद फ़रमाया : अबूबक्र! इन बड़े मियां को घर में क्यों नहीं रहने दिया कि मैं ख़ुद उनके पास घर आ जाता? उन्होंने र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इन पर ज़्यादा हक़ बनता है कि यह आपके पास चलकर ..ाएं, बजाए इसके कि आप इनके पास तशरीफ़ ले जाएं। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनको अपने सामने बिठाया और उनके सीने पर हाथ मुबारक फेर कर इर्शाद फ़रमाया : ाप मुसलमान हो जाएं। चुनांचे हज़रत अबू क़हाफ़ा ﷺ मुसलमान हो गए। जब हज़रत अबूबक्र ﷺ अपने वालिद को रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाए तो उनके सर के ाल, सग़ामा दरख़्त की तरह सफ़ेद थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इन बालों की ..फ़ेदी को (मेंहदी वग़ैरह लगाकर) बदल दो। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

ायदा : सग़ामा एक दरख़्त है जो बर्फ़ के मानिन्द सफ़ेद होता है।

﴾5﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا اَنْزَلَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: "وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ" اَتَى النَّبِيُّ ﷺ الصَّفَا فَصَعِدَ عَلَيْهِ، ثُمَّ نَادٰى: يَا صَبَاحَاه، فَاجْتَمَعَ النَّاسُ اِلَيْهِ بَيْنَ رَجُلٍ يَجِيءُ اِلَيْهِ وَبَيْنَ رَجُلٍ يَبْعَثُ رَسُوْلَهُ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا بَنِيْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، يَا بَنِيْ فِهْرٍ، يَا بَنِيْ كَعْبٍ، اَرَاَيْتُمْ لَوْ اَخْبَرْتُكُمْ اَنَّ خَيْلًا بِسَفْحِ هٰذَا الْجَبَلِ تُرِيْدُ اَنْ تُغِيْرَ عَلَيْكُمْ صَدَّقْتُمُوْنِي؟ قَالُوا: نَعَمْ! قَالَ: فَاِنِّيْ نَذِيْرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ فَقَالَ اَبُوْ لَهَبٍ - لَعَنَهُ اللهُ - تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ! اَمَا دَعَوْتَنَا اِلَّا لِهٰذَا؟ وَاَنْزَلَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: "تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ". رواه احمد ١٧/٥

हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं : जब अल्लाह तआला ने 'व अन्ज़िर अशीरतकल अक़्रबीन०' आयत नाज़िल फ़रमाई ''और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों ो डराइए'' तो आप ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ कर ज़ोर से पुकारा, या सबाहाह! यानी लोगो! सुबह दुश्मन हमला करने वाला है'' इसलिए यहां जमा हो जाओ। ..नांचे सब लोग आप ﷺ के पास जमा हो गए। कोई ख़ुद आया, किसी ने अपना ासिद भेज दिया। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनू अब्दुल मुत्तलिब, बनू फ़िह्र, बनू काब! ज़रा यह तो बताओ, अगर मैं तुम्हें ख़बर दूं कि इस पहाड़ के ामन में घुड़सवारों का एक लश्कर है, जो तुम पर हमला करना चाहता है, क्या तुम

मुझे सच्चा मान लोगे? सबने कहा, जी हां। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें ए.. सख़्त अ़ज़ाब आने से पहले उससे डराने वाला हूं। अबू लहब मलऊन बोला (नऊज़ु बिल्लाह) तू हमेशा के लिए बरबाद हो जाए, हमें महज़ इसलिए बुलाया था? इस ' अल्लाह तआ़ला ने सूरत नाज़िल फ़रमाई जिसमें फ़रमाया : अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएं और वह बरबाद हो जाए। (मुस्नद अहमद, अल-बिदायः वन्निहाय

﴿ 6 ﴾ عَنْ مُنِيْبِ الْاَزْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَهُوَ يَقُوْلُ : يٰاَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا " لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ تُفْلِحُوْا " فَمِنْهُمْ مَنْ تَفَلَ فِيْ وَجْهِهٖ، وَمِنْهُمْ مَنْ حَثَا عَلَيْهِ التُّرَابَ، وَمِنْهُمْ مَنْ سَبَّهُ حَتّٰى انْتَصَفَ النَّهَارُ، فَاَقْبَلَتْ جَارِيَةٌ بِعُسٍّ مِنْ مَاءٍ، فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ، وَقَالَ: يَا بُنَيَّةُ! لَا تَخْشَيْ عَلٰى اَبِيْكِ غَيْلَةً وَلَا ذِلَّةً، فَقُلْتُ: مَنْ هٰذِهٖ؟ قَالُوْا : زَيْنَبُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَهِيَ جَارِيَةٌ وَضِيْئَةٌ. رواه الطبرانى وفيه: منيب بن مدرك ولم اعرفه، وبقيه رجاله ثقات مجمع الزوائد ١٨/٦ وفى الحاشية: منيب بن مدرك ترجمه البخارى فى تاريخه وابن ابى حاتم ولم يذكرا فيه جرحاً ولا تعديلاً.

6. हज़रत मुनीब अज़दी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को अपने ज़म जाहिलयत में देखा, आप फ़रमा रहे थे : लोगो! **ला इला-ह इल्लल्लाह** कहो, कामयाब हो जाओगे। मैंने देखा कि उनमें से कोई तो आपके चेहरे पर थूक रहा और कोई आप पर मिट्टी डाल रहा था और कोई आपको गालियां दे रहा था (अ.. यूं ही होता रहा) यहां तक कि आधा दिन गुज़र गया। फिर एक लड़की पानी का प्याला लेकर आई जिससे आपने अपने चेहरे और दोनों हाथों को धोया और फ़रमाया : मे बेटी! न तो तुम अपने बाप के अचानक क़त्ल होने से डरो और न किसी क़िस्म की ज़िल्लत का ख़ौफ़ रखो। मैंने पूछा, यह लड़की कौन है? लोगों ने बताया रसूलुल्लाह ﷺ की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं। वह एक खुबसूरत बच्ची थीं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 7 ﴾ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُثْمَانَ بْنِ حَوْشَبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا اَنْ اَظْهَرَ اللهُ مُحَمَّدًا اَرْسَلْتُ اِلَيْهِ اَرْبَعِيْنَ فَارِسًا مَعَ عَبْدِ شَرٍّ فَقَدِمُوْا عَلَيْهِ بِكِتَابِيْ فَقَالَ لَهُ: مَا اسْمُكَ؟ قَالَ: عَبْدُ شَرٍّ قَالَ: بَلْ اَنْتَ عَبْدُ خَيْرٍ، فَبَايَعَهُ عَلَى الْاِسْلَامِ وَكَتَبَ مَعَهُ الْجَوَابَ اِلٰى حَوْشَبٍ ذِيْ ظُلَيْمٍ فَاٰمَنَ حَوْشَبٌ. الاصابة ١/٣٨٢

7. हज़रत मुहम्मद बिन उस्मान अपने दादा हज़रत हौशब ﷺ से रिवायत करत

कि जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह को ग़लबा दे दिया तो मैंने अ़ब्दे शर्र के साथ आपकी ख़िदमत में चालीस सवारों की एक जमाअ़त भेजी। वह मेरा ख़त लेकर सूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे। रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? न्होंने कहा, (मेरा नाम) अ़ब्दे शर्र (यानी बुराई वाला) है। आपने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि अ़ब्दे ख़ैर (भलाई वाला) हो (फिर आप ﷺ ने उन्हें इस्लाम की दावत ी। वह मसुलमान हो गए) आप ﷺ ने उनको इस्लाम पर बैअ़त फ़रमा लिया। रावी कहते हैं कि आप ﷺ ने ख़त का जवाब लिखा और उनके हाथ हौशब को भेजा, जिसमें इस्लाम क़ुबूल करने की दावत थी) हौशब (इस ख़त को पढ़कर) ईमान ले आए। (इसाबा)

﴿ 8 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ رَاٰی مِنْکُمْ مُنْکَرًا فَلْیُغَیِّرْہُ بِیَدِہٖ، فَاِنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِہٖ، فَاِنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِہٖ، وَذٰلِکَ اَضْعَفُ الْاِیْمَانِ۔ رواہ مسلم، باب بیان کون النھی عن المنکر من الایمان……، رقم:۱۷۷

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद रमाते हुए सुना : जो शख़्स तुममें से किसी बुराई को देखे तो उसको चाहिए कि पने हाथ से बदल दे, अगर (हाथ से बदलने की) ताक़त न हो, तो ज़बान से उसको बदल दे और अगर उसकी भी ताक़त न हो, तो दिल से उसे बुरा जाने यानी इस बुराई ा दिल में ग़म हो और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है। (मुस्लिम)

﴿ 9 ﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِیْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الْقَائِمِ عَلٰی حُدُوْدِ اللّٰہِ وَالْوَاقِعِ فِیْہَا کَمَثَلِ قَوْمٍ اسْتَہَمُوْا عَلٰی سَفِیْنَۃٍ، فَاَصَابَ بَعْضُہُمْ اَعْلَاھَا وَبَعْضُہُمْ اَسْفَلَہَا، فَکَانَ الَّذِیْنَ فِیْ اَسْفَلِہَا اِذَا اسْتَقَوْا مِنَ الْمَاءِ مَرُّوْا عَلٰی مَنْ فَوْقَہُمْ فَقَالُوْا: لَوْ اَنَّا خَرَقْنَا فِیْ نَصِیْبِنَا خَرْقًا وَلَمْ نُؤْذِ مَنْ فَوْقَنَا، فَاِنْ یَتْرُکُوْھُمْ وَمَا اَرَادُوْا ھَلَکُوْا جَمِیْعًا، وَاِنْ اَخَذُوْا عَلٰی اَیْدِیْہِمْ نَجَوْا وَنَجَوْا جَمِیْعًا۔

رواہ البخاری، باب ھل یقرع فی القسمۃ والاستھام فیہ؟ رقم:۲۴۹۳

9. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो अल्लाह तआला का फ़रमांबरदार है और उस शख़्स की जो अल्लाह तआला का नाफ़रमान है, उन लोगों की तरह है (जो एक बड़ी कश्ती पर सवार हों)। क़ुरआ से किश्ती की मंज़िलें मुक़र्रर हो गई हों कि बाज़ लोग

किश्ती के ऊपर के हिस्से में हों और बाज़ लोग नीचे के हिस्से में हों। नीचे की मंज़िल वालों को जब पानी लेने की ज़रूरत होती है तो वह ऊपर आते हैं और ऊपर की मंज़िल पर बैठने वालों के पास से गुज़रते हैं। उन्होंने सोचा कि अगर हम अपने (नीचे के) हिस्से में सुराख़ कर लें (ताकि ऊपर जाने के बजाए सुराख़ से पानी ले लें) और अपने ऊपर वालों को तकलीफ़ न दें (तो क्या ही अच्छा हो)। अब अगर ऊपर वाले नीचे वालों को उनके हाल पर छोड़ दें और उनको उनकी इस इरादे से न रोकें (और वे सुराख़ कर लें) तो सबके सब हलाक हो जाएंगे और अगर वह उनके हाथों को पकड़ लेंगे (सुराख़ नहीं करने देंगे) तो वे ख़ुद भी और दूसरे तमाम मुसाफ़िर भी बच जाएंगे। (बुख़ारी)

फ़ायदा : इस हदीस में दुनिया की मिसाल एक किश्ती से दी गई है, जिसमें सब जमाअत एक दूसरे की ग़लती से मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकती। सारी दुनिया के इंसान एक क़ौम की तरह एक किश्ती में सवार हैं। इस किश्ती में फ़रमांबरदार भी हैं और नाफ़रमान भी हैं। अगर नाफ़रमानी आ़म हुई तो उससे सिर्फ़ वही तबक़ा मुतअस्सिर नहीं होगा जो इस नाफ़रमानी में मुब्तला है, बल्कि पूरी क़ौम, पूरी दुनिया मुतअस्सिर होगी, इसलिए इंसानी मुआ़शरा को तबाही से बचाने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियों को रोका जाए। अगर ऐसा नहीं हो तो सारा मुआ़शरा अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो सकता है।

﴿ 10 ﴾ عَنِ الْعُرْسِ بْنِ عَمِيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ لَا يُعَذِّبُ الْعَامَّةَ بِعَمَلِ الْخَاصَّةِ حَتّٰى تَعْمَلَ الْخَاصَّةُ بِعَمَلٍ تَقْدِرُ الْعَامَّةُ اَنْ تُغَيِّرَهُ، وَلَا تُغَيِّرُهُ، فَذَاكَ حِيْنَ يَاْذَنُ اللّٰهُ فِىْ هَلَاكِ الْعَامَّةِ وَالْخَاصَّةِ۔ رواه الطبرانى ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٥٢٨/٧

10. हज़रत उर्स बिन अ़मीरा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बाज़ लोगों की ग़लतियों पर सबको (जो इस ग़लती में मुब्तला न हैं) अ़ज़ाब नहीं देते, अलबत्ता सबको इस सूरत में अ़ज़ाब देते हैं जब कि फ़रमांबरदार बावजूद क़ुदरत के नाफ़रमानी करने वालों को न रोकें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 11 ﴾ عَنْ اَبِى بَكْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ (فِىْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ) عَنِ الرَّسُوْلِ ﷺ قَالَ: اَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟ قُلْنَا: نَعَمْ! قَالَ: اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَاِنَّهُ رُبَّ مُبَلَّغٍ يُبَلِّغُهُ مَنْ هُوَ اَوْعٰى لَهُ. رواه البخارى، باب قول النبى ﷺ لاترجعوا بعدى كفارا ... ، رقم: ٧٠٧٨

11. हज़रत अबू बकरः ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (हज के मौक़े पर दस ज़िलहिज्जा को मिना में ख़ुत्बा के आख़िर में) इर्शाद फ़रमाया : क्या मैंने तुम्हें अल्लाह तआला के अहकाम नहीं पहुंचा दिए? (सहाबा ﷺ फ़रमाते हैं) हमने अर्ज़ किया : जी हां, आपने पहुंचा दिए। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग यहां मौजूद हैं वे उन लोगों तक पहुंचा दें जो यहां मौजूद नहीं हैं, इसलिए कि कभी-कभी दीन की बातें जिसको पहुंचाई जाए, वह पहुंचाने वाले से ज़्यादा याद रखने वाला होता है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में इस बात की ताकीद फ़रमाई गई है कि अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ की जो बात सुनी जाए उसे सुनने वाला अपनी ज़ात तक महदूद न रखे, बल्कि उसे दूसरे लोगों तक पहुंचाए, मुम्किन है वे लोग उसे ज़्यादा याद रखने वाले हों। (फ़त्हुलबारी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ اَوْ لَيُوْشِكَنَّ اللهُ اَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِنْهُ ثُمَّ تَدْعُوْنَهٗ فَلَا يَسْتَجِيْبُ لَكُمْ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى الامر بالمعروف والنهى عن المنكر، رقم: ٢١٦٩

12. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम ज़रूर अम्र बिल्मारूफ़ और नह्य अनिलमुन्कर करते रहो वर्ना अल्लाह तआला अंक़रीब तुम पर अपना अज़ाब भेज देंगे, फिर तुम दुआ भी करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारी दुआ क़ुबूल न करेंगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 13 ﴾ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَفَنَهْلِكُ وَفِيْنَا الصَّالِحُوْنَ؟ قَالَ: نَعَمْ اِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ. رواه البخارى، باب ياجوج وماجوج، رقم: ٧١٣٥

13. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा, या रसूलुल्लाह! क्या हम लोग ऐसी हालत में भी हलाक हो जाएंगे जबकि हम में नेक लोग भी हों? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, जब बुराई आम हो जाए। (बुख़ारी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ غُلَامٌ يَهُوْدِىٌّ يَخْدُمُ النَّبِىَّ ﷺ فَمَرِضَ فَاَتَاهُ النَّبِىُّ ﷺ يَعُوْدُهٗ، فَقَعَدَ عِنْدَ رَاْسِهٖ فَقَالَ لَهٗ: اَسْلِمْ، فَنَظَرَ اِلٰى اَبِيْهِ وَهُوَ عِنْدَهٗ فَقَالَ لَهٗ: اَطِعْ

اَبَا الْقَاسِمِ ﷺ، فَاَسْلَمَ فَخَرَجَ النَّبِیُّ ﷺ وَهُوَ يَقُوْلُ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْقَذَهٗ مِنَ النَّارِ۔

رواه البخاری، باب اذا اسلم الصبی فمات.....،رقم:١٣٥٦

14. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि एक यहूदी लड़का रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत किया करता था। वह बीमार हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ उसकी बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ ले गए। आप ﷺ उसके सरहाने बैठ गए और फ़रमाया कि मुसलमान हो जाओ। उसने अपने बाप को देखा जो वहीं था। उसने कहा अबुलक़ासिम ﷺ की बात मान लो। चुनांचे वह मसुलमान हो गया। जब रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ फ़रमा रहे थे कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं, जिन्होंने इस लड़के को (जहन्नम की) आग से बचा लिया)। (बुख़ारी)

﴿ 15 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ هٰذَا الْخَيْرَ خَزَائِنُ، وَلِتِلْكَ الْخَزَائِنِ مَفَاتِيْحُ فَطُوْبٰى لِعَبْدٍ جَعَلَهُ اللّٰهُ مِفْتَاحًا لِلْخَيْرِ مِغْلَاقًا لِلشَّرِّ وَوَيْلٌ لِعَبْدٍ جَعَلَهُ اللّٰهُ مِفْتَاحًا لِلشَّرِّ مِغْلَاقًا لِلْخَيْرِ۔ رواه ابن ماجه، باب من كان مفتاحا للخير،رقم:٢٣٨

15. हज़रत सहल बिन साद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दीन नेमतों के ख़ज़ाने हैं। इन नेमतों के ख़ज़ानों के लिए कुंजियां हैं। ख़ुशख़बरी हो उस बन्दे के लिए जिसको अल्लाह तआला भलाई की चाबी (और) बुराई का ताला बना दें, यानी हिदायत का ज़रिया बना दें और तबाही है उस बन्दे के लिए, जिसको अल्लाह तआला बुराई की चाबी (और) भलाई का ताला बना दें, यानी गुमराही का ज़रिया बने। (इब्ने माजा)

﴿ 16 ﴾ عَنْ جَرِيْرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: وَلَقَدْ شَكَوْتُ اِلَى النَّبِیِّ ﷺ اَنِّیْ لَا اَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ بِيَدِهٖ فِیْ صَدْرِیْ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا.

رواه البخاری، باب من لا يثبت على الخيل ٣/١١٠٤ دار ابن كثير، دمشق

16. हज़रत जरीर ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने आप ﷺ से शिकायत की कि मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता तो आप ﷺ ने मेरे सीने पर हाथ मार कर दुआ दी, ऐ अल्लाह! इसे अच्छा घुड़सवार बना दीजिए और ख़ुद सीधे रास्ते पर चलते हुए दूसरों को भी सीधा रास्ता बताने वाला बना दीजिए। (बुख़ारी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِيْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَحْقِرْ اَحَدُكُمْ نَفْسَهٗ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَيْفَ يَحْقِرُ اَحَدُنَا نَفْسَهٗ؟ قَالَ: يَرٰى اَمْرًا لِلّٰهِ عَلَيْهِ فِيْهِ مَقَالٌ،

ثُمَّ لَا يَقُوْلُ فِيْهِ، فَيَقُوْلُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: مَا مَنَعَكَ اَنْ تَقُوْلَ فِيْ كَذَا وَكَذَا؟ فَيَقُوْلُ: خَشْيَةُ النَّاسِ، فَيَقُوْلُ: فَإِيَّايَ، كُنْتَ اَحَقَّ اَنْ تَخْشٰى.

رواه ابن ماجه، باب الامر بالمعروف والنهى عن المنكر، رقم: ٤٠٠٨

17. हज़रत अबू सईद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कोई अपने आप को घटिया न समझे। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : अपने आपको घटिया समझने का क्या मतलब है? इर्शाद फ़रमाया : कोई ऐसी बात देखे जिसकी इस्लाह की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस पर हो, लेकिन यह उस मामला में कुछ न बोले, तो अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन फ़रमाएंगे कि तुम्हें किस चीज़ ने फ़्लां-फ़्लां मामले में बात करने से रोका था? वह अ़र्ज़ करेगा : लोगों के डर की वजह से नहीं बोला था कि वे मुझे तकलीफ़ पहुंचाएंगे। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएंगे कि मैं इस बात का ज़्यादा हक़दार था कि तुम मुझ ही से डरते। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बुराई को रोकने की जो ज़िम्मेदारी डाली गई है, लोगों के डर की वजह से उस ज़िम्मेदारी को पूरा न करना अपनों को घटिया समझना है।

﴿18﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ اَوَّلَ مَا دَخَلَ النَّقْصُ عَلٰى بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ كَانَ الرَّجُلُ يَلْقَى الرَّجُلَ فَيَقُوْلُ: يَا هٰذَا! اتَّقِ اللهَ وَدَعْ مَا تَصْنَعُ، فَاِنَّهُ لَا يَحِلُّ لَكَ، ثُمَّ يَلْقَاهُ مِنَ الْغَدِ، فَلَا يَمْنَعُهُ ذٰلِكَ اَنْ يَكُوْنَ اَكِيْلَهُ وَشَرِيْبَهُ وَقَعِيْدَهُ، فَلَمَّا فَعَلُوْا ذٰلِكَ ضَرَبَ اللهُ قُلُوْبَ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ، ثُمَّ قَالَ: "لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ". اِلٰى قَوْلِهِ. "فٰسِقُوْنَ" [المائدة: ٧٨-٨١] ثُمَّ قَالَ: كَلَّا وَاللهِ! لَتَاْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَلَتَاْخُذُنَّ عَلٰى يَدَيِ الظَّالِمِ، وَلَتَاْطِرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ اَطْرًا، وَلَتَقْصُرُنَّهُ عَلَى الْحَقِّ قَصْرًا.

رواه ابوداؤد، باب الامر والنهى، رقم: ٤٣٣٦

18. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बनी इसराईल में सबसे पहली कमी यह पैदा हुई कि जब एक शख़्स किसी दूसरे से मिलता और उससे कहता, फ़्लाने! अल्लाह तआ़ला से डरो, जो काम तुम कर रहे हो उसे छोड़ दो, इसलिए कि वह काम तुम्हारे लिए जायज़ नहीं। फिर दूसरे दिन उससे मिलता तो उसके न मानने पर भी अपने ताल्लुक़ात की वजह से उसके साथ

खाने-पीने में उठने-बैठने में वैसा ही मामला करता, जैसा कि उससे पहले था। जब आम तौर पर ऐसा होने लगा और अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर करना छोड़ दिया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमांबरदारों के दिल नाफ़रमानों की तरह सख़्त कर दिए। रसूलुल्लाह ﷺ ने لُعِنَ الَّذِيْنَ الخ तक पढ़ा (पहली दो आयतों का तर्जुमा यह है) "बनी इसराईल पर हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा ﷺ की ज़बानी लानत की गई, यह इस वजह से कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से निकल जाते थे। जिस बुराई में वह मुब्तला थे, उससे एक दूसरे को मना नहीं करते थे। वाक़ई उनका यह काम बेशक बुरा था"। इसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने बड़ी ताकीद से यह हुक्म फ़रमाया कि तुम ज़रूर नेकी का हुक्म करो और बुराई से रोको, ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकते रहो और उसको हक़ बात की तरफ़ खींच कर लाते रहो और उसे हक़ पर रोके रखो। (अबूदाऊद)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ قَالَ: یٰٓاَیُّھَا النَّاسُ ! اِنَّکُمْ تَقْرَءُوْنَ ھٰذِہِ الْاٰیَۃَ: ﴿یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلَیْکُمْ اَنْفُسَکُمْ لَا یَضُرُّکُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اھْتَدَیْتُمْ﴾ [المائدة:١٠٥]، وَاِنِّیْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: اِنَّ النَّاسَ اِذَا رَاَوُا الظَّالِمَ فَلَمْ یَاْخُذُوْا عَلٰی یَدَیْہِ اَوْشَکَ اَنْ یَّعُمَّھُمُ اللّٰہُ بِعِقَابٍ مِّنْہُ. رواہ الترمذی وقال: حدیث صحیح، باب ماجاء فی نزول العذاب إذا لم یغیر المنکر، رقم:٢١٦٨

19. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ ने फ़रमाया : लोगो तुम यह आयत पेश करते हो "ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम सीधी राह पर चल रहे हो तो जो शख़्स गुमराह है उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं" और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जब लोग ज़ालिम को ज़ुल्म करते हुए देखें और उसे ज़ुल्म से न रोकें, तो वह वक़्त दूर नहीं कि अल्लाह तआ़ला उन सबको अपने उमूमी अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दें। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ का मतलब यह था कि तुम आयत का मफ़हूम यह समझते हो कि जब इंसान खुद हिदायत पर हो, तो उसके लिए अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर करना ज़रूरी नहीं, क्योंकि दूसरों के बारे में उससे पूछ-गूछ नहीं होगी। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ﷺ ने हदीस ब्यान फ़रमा कर आयत के इस ग़लत मफ़हूम की तरदीद फ़रमाई है, जिससे यह वाज़ेह हुआ कि हत्तलइम्कान बुराई से रोकना उम्मत की ज़िम्मेदारी और हर-हर फ़र्द का काम है। आयत का सही मफ़हूम यह है

कि ऐ ईमान वालो! अपनी इस्लाह की फ़िक्र करो। तुम्हारा दीन के रास्ते पर चलना इस तरह हो कि अपनी भी इस्लाह कर रहे हो और दूसरों की इस्लाह की भी कोशिश कर रहे हो, फिर अगर कोई शख़्स तुम्हारी इस्लाह की कोशिश के बावजूद भी गुमराह रहे तो उसके गुमराह रहने से तुम्हारा कोई नुक़्सान नहीं। (ब्यानुल क़ुरआन)

﴿20﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: تُعْرَضُ الْفِتَنُ عَلَى الْقُلُوْبِ كَالْحَصِيْرِ عُوْدًا عُوْدًا، فَاَيُّ قَلْبٍ اُشْرِبَهَا نُكِتَ فِيْهِ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ، وَاَيُّ قَلْبٍ اَنْكَرَهَا نُكِتَ فِيْهِ نُكْتَةٌ بَيْضَاءُ، حَتّٰى تَصِيْرَ عَلٰى قَلْبَيْنِ، عَلٰى اَبْيَضَ مِثْلَ الصَّفَا، فَلَا تَضُرُّهُ فِتْنَةٌ مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ، وَالْآخَرُ اَسْوَدُ مِرْبَادًّا كَالْكُوْزِ مُجَخِّيًا لَا يَعْرِفُ مَعْرُوْفًا وَلَا يُنْكِرُ مُنْكَرًا اِلَّا مَا اُشْرِبَ مِنْ هَوَاهُ.

رواه مسلم، باب رفع الامانة والايمان من بعض القلوب ....، رقم: ٣٦٩

20. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोगों के दिलों पर ऐसे आगे पीछे फ़ित्ने आएंगे जिस तरह चटाई के तिनके आगे पीछे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। लिहाज़ा जो दिल उन फ़ित्नों में से किसी एक फ़ित्ने को क़ुबूल कर लेगा तो उस दिल में एक स्याह नुक़्ता लग जाएगा और जो दिल उसको क़ुबूल नहीं करेगा उस दिल में एक सफ़ेद निशान लग जाएगा, यहां तक कि दिल दो क़िस्म के हो जाएंगे। एक सफ़ेद संगमरमर की तरह जिस को कोई फ़ित्ना नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा, जब तक ज़मीन व आसमान क़ायम हैं (यानी जिस तरह संगमरमर पर उसके चिकने होने की वजह से कोई चीज़ नहीं ठहर सकती उसी तरह उसके दिल में ईमान के मज़बूत होने की वजह से कोई फ़ित्ना असर अन्दाज़ नहीं होगा)। दूसरी क़िस्म का दिल स्याह ख़ाकी रंग के उलटे प्याले की तरह होगा, यानी गुनाहों की कसरत से दिल स्याह हो जाएगा और जिस तरह उलटे प्याला में कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती उसी तरह उस दिल में गुनाहों की नफ़रत और ईमान का नूर बाक़ी नहीं रहेगा, जिसकी वजह से जो न नेकी को नेकी और न बुराई को बुराई समझेगा सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात पर अमल करेगा जो उसके दिल में रच बस गई होंगी। (मुस्लिम)

﴿21﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَيَّةَ الشَّعْبَانِيِّ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سَاَلْتُ اَبَا ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَقُلْتُ: يَا اَبَا ثَعْلَبَةَ! كَيْفَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذِهِ الْآيَةِ؟ (عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ) قَالَ: اَمَا وَاللهِ لَقَدْ سَاَلْتَ

عَنْهَا خَبِيْرًا،سَاَلْتُ عَنْهَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: بَلِ ائْتَمِرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ، وَتَنَاهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ، حَتّٰى اِذَا رَاَيْتَ شُحًّا مُطَاعًا، وَهَوًى مُتَّبَعًا، وَدُنْيَا مُؤْثَرَةً، وَاِعْجَابَ كُلِّ ذِيْ رَاْيٍ بِرَاْيِهٖ، فَعَلَيْكَ يَعْنِيْ بِنَفْسِكَ، وَدَعْ عَنْكَ الْعَوَامَّ، فَاِنَّ مِنْ وَّرَآئِكُمْ اَيَّامَ الصَّبْرِ، الصَّبْرُ فِيْهِ مِثْلُ قَبْضٍ عَلَى الْجَمْرِ، لِلْعَامِلِ فِيْهِمْ مِثْلُ اَجْرِ خَمْسِيْنَ رَجُلًا يَعْمَلُوْنَ مِثْلَ عَمَلِهٖ فَقَالَ (اَبُوْثَعْلَبَةَ) : يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَجْرُ خَمْسِيْنَ مِنْهُمْ، قَالَ: اَجْرُ خَمْسِيْنَ مِنْكُمْ

رواه ابو داؤد، باب الامرو النهى، رقم:٤٣٤١

21. हज़रत अबू उमैया शाबानी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अबू सालबा ख़ुशनी ﷺ से पूछा कि आप अल्लाह तआ़ला के इर्शाद : "तुम अपनी फ़िक्र करो" के बारे में क्या फ़रमाते हैं? उन्होंने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! तुम ने ऐसे शख़्स से यह बात पूछी है जो उसके बारे में ख़ूब जानता है। मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ से इस आयत का मतलब पूछा था तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था (कि यह मतलब नहीं कि सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र करो) बल्कि एक दूसरे को भलाई का हुक्म करते रहो और बुरे कामों से रोकते रहो, यहां तक कि जब देखो कि लोग आम तौर पर बुख़्ल कर रहे हैं, ख़्वाहिशात को पूरा किया जा रहा है, दुनिया को दीन पर तरजीह दी जा रही है और हर शख़्स अपनी राए को पसन्द कर रहा है (दूसरे की नहीं मान रहा) तो उस वक़्त अ़वाम को छोड़कर अपनी इस्लाह की फ़िक्र में लग जाओ, क्योंकि आख़िरी ज़माने में ऐसे दिन आने वाले हैं जिनमें दीन के अह्कामात पर इस्तिक़ामत के साथ अ़मल करना इतना मुश्किल होगा जैसे अंगारे को पकड़ना। उन दिनों में अ़मल करने वाले को उसके एक अ़मल पर इतना सवाब मिलेगा, जितना पचास अफ़राद को उस अ़मल के करने पर मिलता। हज़रत अबू सालबा ﷺ फ़रमाते हैं, मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उनमें से पचास का अज्र मिलेगा (या हममें से पचास? क्योंकि सहाबा के अ़मल का अज्र व सवाब ज़्यादा है) इर्शाद फ़रमाया : तुममें से पचास का अज्र उस एक शख़्स को मिलेगा। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आख़िरी ज़माने में अ़मल करने वाला शख़्स अपनी इस ख़ालिस फ़ज़ीलत की वजह से सहाबा किराम ﷺ से दर्जे में बढ़ जाएगा, क्योंकि सहाबा किराम बहरहाल बाक़ी सारी उम्मत से अफ़ज़ल ही हैं।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अम्रबिलमारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर करते रहना ज़रूरी है अल्बत्ता अगर ऐसा वक़्त आ जाए जिसमें हक़ बात को

क़ुबूल करने की इस्तेदाद बिल्कुल ख़त्म हो जाए तो इस सूरत में यक्सू रहने का हुक्म है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अभी वह वक़्त नहीं आया है, क्योंकि इस वक़्त उम्मत में हक़ को क़ुबूल करने की इस्तेदाद मौजूद है।

﴾ 22 ﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِیَّاکُمْ وَالْجُلُوْسَ بِالطُّرُقَاتِ فَقَالُوْا: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! مَا لَنَا مِنْ مَجَالِسِنَا بُدٌّ نَتَحَدَّثُ فِیْھَا، فَقَالَ: فَاِذَا اَبَیْتُمْ اِلَّا الْمَجْلِسَ فَاَعْطُوْا الطَّرِیْقَ حَقَّہٗ قَالُوْا: وَمَا حَقُّ الطَّرِیْقِ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ؟ قَالَ: غَضُّ الْبَصَرِ، وَکَفُّ الْاَذٰی، وَرَدُّ السَّلَامِ، وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ، وَالنَّھْیُ عَنِ الْمُنْکَرِ.

رواہ البخاری، باب قول اللہ تعالیٰ: یاایھا الذین آمنوا لا تدخلوا بیوتا......،رقم:٦٢٢٩

22. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम रास्तों में न बैठा करो। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमारे लिए उन रास्तों पर बैठना ज़रूरी है, हम वहां बैठकर बातें करते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर बैठना ही है तो रास्ते के हुक़ूक़ अदा किया करो। सहाबा ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! रास्ते के हुक़ूक़ क्या हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : निगाहों को नीचे रखना, तकलीफ़देह चीज़ों को रास्ते से हटा देना (या ख़ुद तकलीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहना) सलाम का जवाब देना, नेकी की नसीहत करना और बुराई से रोकना। (बुख़ारी)

फ़ायदा : सहाबा ﷺ की मुराद यह थी कि रास्तों में बैठने से बचना हमारे लिए मुम्किन नहीं है, क्योंकि हमारे पास कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां हम अपनी मज्लिस रखा करें। इसलिए जब हम चन्द लोग कहीं मिल जाते हैं तो वहीं रास्ते में बैठ जाते हैं और अपने दीनी व दुन्यवी उमूर के बारे में आपस में राय-मशवरा करते हैं। एक दूसरे की हालत दरयाफ़्त करते हैं, अगर कोई बीमार होता है तो उसके लिए इलाज मुआलजा तज्वीज़ करते हैं, अगर आपस में कोई रंजिश हो तो सुलह व सफ़ाई करते हैं। (मज़ाहिरे हक़)

﴾ 23 ﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: لَیْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ یَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَیُوَقِّرْ کَبِیْرَنَا وَیَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْہَ عَنِ الْمُنْکَرِ.

رواہ الترمذی وقال: ھذا حدیث حسن غریب،باب ماجاء فی رحمۃ الصبیان،رقم:١٩٢١

23. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स हमारी इत्तिबा करने वालों में से नहीं है जो हमारे छोटों पर शफ़क़त न करे, हमारे बड़ों का एहतराम न करे, नेकी का हुक्म न करे और बुराई से मना न करे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 24 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِيْ اَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلَاةُ وَالصَّدَقَةُ وَالْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ.

(الحديث)۔ رواه البخاری، باب الفتنه التی تموج كموج البحر،رقم:٧٠٩٦

24. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी का बीवी, माल, औलाद और पड़ोसी के मुतअ़ल्लिक़ अह्कामात के पूरा करने के सिलसिले में जो कोताहियां और गुनाह हो जाते हैं, उनका नमाज़, सदक़ा, अम्र बिल्मारूफ़ और नह्य अ़निलमुन्कर कफ़्फ़ारा बन जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿ 25 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : اَوْحَى اللهُ عَزَّوَجَلَّ اِلٰى جِبْرِيْلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ اَنِ اقْلِبْ مَدِيْنَةَ كَذَا وَكَذَا بِاَهْلِهَا قَالَ: يَارَبِّ اِنَّ فِيْهِمْ عَبْدَكَ فُلَانًا لَمْ يَعْصِكَ طَرْفَةَ عَيْنٍ قَالَ : فَقَالَ: اِقْلِبْهَا عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهُ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ.

مشكاة المصابيح،رقم:٥١٥٢

25. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरील عليه السلام को हुक्म दिया कि फ़्लां शहर को शहर वालों समेत उलट दो। हज़रत जिबरील عليه السلام ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब! इस शहर में आपका फ़्लां बन्दा भी है, जिसने एक लम्हा भी आपकी नाफ़रमानी नहीं की। रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरील عليه السلام से इर्शाद फ़रमाया कि तुम उस शहर को उस शख़्स समेत सारे शहर वालों पर उलट दो, क्योंकि शहर वालों को मेरी नाफ़रमानी करता हुआ देखकर उस शख़्स के चेहरे का रंग एक घड़ी के लिए भी नहीं बदला। (मिशकातुलमसाबीह)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के इर्शाद का हासिल यह है कि बेशक मेरे उस बन्दे ने कभी भी मेरी नाफ़रमानी नहीं की, मगर उसका यह जुर्म ही क्या कम है कि लोग उसके सामने गुनाह करते रहे और वह इत्मीनान के साथ उनको देखता रहा, बुराई फैलती रही और लोग अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी करते रहे, मगर उन बुराइयों और नाफ़रमानी करने वालों को देखकर

उसके चेहरे पर कभी भी नागवारी के आसार महसूस नहीं हुए।(मिरक़ात)

﴿ 26 ﴾ عَنْ دُرَّةَ ابْنَةِ اَبِىْ لَهَبٍ قَالَتْ: قَامَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَىُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ قَالَ: خَيْرُ النَّاسِ اَقْرَؤُهُمْ وَاَتْقَاهُمْ وَآمَرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاَوْصَلُهُمْ لِلرَّحِمِ. رواه احمد وهذا لفظه، والطبرانى ورجالهما ثقات وفى بعضهم كلام لا يضر، مجمع الزوائد٧/٥٢٠

26. हज़रत दुर्रा बिन्त अबी लहब रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने खड़े होकर सवाल किया : या रसूलुल्लाह! लोगों में बेहतरीन शख़्स कौन-सा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेहतरीन शख़्स वह है जो लोगों में सबसे ज़्यादा क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ने वाला, सबसे ज़्यादा तक़्वे वाला, सबसे ज़्यादा नेकी के करने और बुराई से बचने को कहने वाला और सबसे ज़्यादा सिलारहमी करने वाला हो। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 27 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَتَبَ اِلٰى كِسْرٰى، وَاِلٰى قَيْصَرَ، وَاِلَى النَّجَاشِيِّ، وَاِلٰى كُلِّ جَبَّارٍ، يَدْعُوْهُمْ اِلَى اللهِ تَعَالٰى، وَلَيْسَ بِالنَّجَاشِيِّ الَّذِىْ صَلّٰى عَلَيْهِ النَّبِىُّ ﷺ. رواه مسلم، باب كتب النبى ﷺ الى ملوك الكفار ......رقم: ٤٦٠٩

27. हज़रत अनस ؓ फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने किसरा, क़ैसर, नजाशी और हर बड़े हाकिम को ख़त लिखा। (उन ख़तों में) उन्हें अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाया। यह नजाशी वह नहीं हैं (जो मसुलमान हो गए थे और) रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई थी (बल्कि यह दूसरा शख़्स था। हब्शा के हर बादशाह का लक़ब नजाशी होता था)। (मुस्लिम)

﴿ 28 ﴾ عَنِ الْعُرْسِ بْنِ عَمِيْرَةَ الْكِنْدِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: اِذَا عُمِلَتِ الْخَطِيْئَةُ فِى الْاَرْضِ كَانَ مَنْ شَهِدَهَا فَكَرِهَهَا كَانَ كَمَنْ غَابَ عَنْهَا، وَمَنْ غَابَ عَنْهَا فَرَضِيَهَا كَانَ كَمَنْ شَهِدَهَا. رواه ابوداؤد باب الامر و النهى، رقم: ٤٣٤٥

28. हज़रत उर्स बिन अमीरा किन्दी ؓ फ़रमाते हैं कि जब ज़मीन में कोई गुनाह किया जाता है तो जिसने उसे देखा और बुरा समझा वह गुनाह के वबाल से उस शख़्स की तरह महफ़ूज़ रहेगा जो गुनाह की जगह पर मौजूद न था और जो गुनाह की जगह पर मौजूद न था लेकिन उस गुनाह के होने को बुरा न समझा वह उस गुनाह के वबाल में उस शख़्स की तरह शरीक रहेगा जो गुनाह की जगह पर मौजूद था। (अबूदाऊद)

﴾ 29 ﴿ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الْجَنَادِبُ وَالْفَرَاشُ يَقَعْنَ فِيْهَا، وَهُوَ يَذُبُّهُنَّ عَنْهَا، وَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَأَنْتُمْ تُفْلَتُوْنَ مِنْ يَدِيْ.

رواه مسلم، باب شفقته ﷺ على امته...، رقم: ٥٩٥٨

29. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी और तुम्हारी मिसाल उस शख़्स की-सी है जिसने आग जलाई तो पतिंगे और परवाने उसमें गिरने लगे और वह उन को आग से हटाने लगा। मैं भी तुम्हारी कमरों से पकड़-पकड़ कर तुम्हें जहन्नम की आग से बचा रहा हूं, लेकिन तुम मेरे हाथों से निकले चले जा रहे हो, यानी जहन्नम की आग में गिरे जा रहे हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में नबी करीम ﷺ की बेइन्तहा शफ़क़त और हिर्स का ब्यान है जो अपनी उम्मत को जहन्नम की आग से बचाने के लिए आप ﷺ के दिल में थी। (नब्वी)

﴾ 30 ﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَأَنِّيْ أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِيْ نَبِيًّا مِنَ الْأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ.

رواه البخاري، كتاب احاديث الانبياء، رقم: ٣٤٧٧

30. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं गोया रसूलुल्लाह ﷺ को देख रहा हूं कि वह एक नबी का वाक़िआ ब्यान फ़रमा रहे हैं कि उनकी क़ौम ने उनको इतना मारा कि लहूलुहान कर दिया और वह अपने चेहरे से ख़ून पोंछ रहे थे और फ़रमा रहे थे : ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को माफ़ फ़रमा दीजिए, क्योंकि जानते नहीं हैं (इसी तरह का वाक़िआ ख़ुद नबी करीम ﷺ के साथ भी ग़ज़्वा उहुद के मौक़े पर पेश आया)। (बुख़ारी)

﴾ 31 ﴿ عَنْ هِنْدِ بْنِ أَبِيْ هَالَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مُتَوَاصِلَ الْأَحْزَانِ دَائِمَ الْفِكْرَةِ لَيْسَتْ لَهُ رَاحَةٌ طَوِيْلَ السَّكْتِ لَا يَتَكَلَّمُ فِيْ غَيْرِ حَاجَةٍ.

(وهو طرف من الرواية) الشمائل المحمدية والخصائل المصطفوية، رقم: ٢٢٦

31. हज़रत हिन्द बिन अबी हाला ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ात ब्यान करते हुए फ़रमाया कि आप ﷺ (उम्मत के बारे में) मुसलसल ग़मगीन और हमेशा फ़िक्रमन्द रहते थे। किसी घड़ी आपको चैन नहीं आता था। अक्सर औक़ात ख़ामोश रहते, बिला ज़रूरत गुफ़्तगू न फ़रमाते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَحْرَقَتْنَا نِبَالُ ثَقِيْفٍ فَادْعُ اللهَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن صحيح غريب، باب فى ثقيف و بنى حنيفة،رقم:٣٩٤٢

32. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़बीला सक़ीफ़ के तीरों ने तो हमें हलाक कर दिया। आप उनके लिए बद-दुआ़ फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अल्लाह! क़बीला सक़ीफ़ को हिदायत अ़ता फ़रमा दीजिए। (तिर्मिज़ी)

﴿ 33 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَلَا قَوْلَ اللهِ تَعَالٰى فِيْ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ ﴿ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ﴾ [ابراهيم:٣٦] وَقَالَ عِيْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ ﴿ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴾ [المائدة:١١٨] فَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ، وَبَكٰى، فَقَالَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ اِلٰى مُحَمَّدٍ، وَرَبُّكَ اَعْلَمُ، فَاسْاَلْهُ مَا يُبْكِيْكَ؟ فَاَتَاهُ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَسَاَلَهٗ: فَاَخْبَرَهٗ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِمَا قَالَ، وَهُوَ اَعْلَمُ، فَقَالَ اللهُ: يَا جِبْرِيْلُ! اِذْهَبْ اِلٰى مُحَمَّدٍ فَقُلْ: اِنَّا سَنُرْضِيْكَ فِيْ اُمَّتِكَ وَلَا نَسُوْءُكَ.

رواه مسلم، باب دعاء النبى ﷺ لامته......،رقم:٤٩٩

33. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ुरआन करीम की वह आयत तिलावत फ़रमाई, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम ﷺ की दुआ़ ज़िक्र फ़रमाई है "ऐ मेरे रब! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया (इसलिए अपने और अपनी औलाद के लिए बुतों की इबादत से बचने की दुआ़ करता हूं, उसी तरह क़ौम को भी उनकी इबादत से रोकता हूं) फिर (मेरे कहने-सुनने के बाद) जिसने मेरी बात मान ली, वह तो मेरा है ही (और उसके लिए मग़्फ़िरत का वादा है) और जिसने मेरी बात न मानी तो (उसको आप हिदायत अ़ता फ़रमाइए, क्योंकि) आप बहुत माफ़ करने वाले और बहुत रहम करने वाले हैं। (हज़रत इब्राहीम ﷺ का इस दुआ़ से मक़सद मोमिनीन के हक़ में शफ़ाअ़त करना और ग़ैर मोमिनीन के लिए हिदायत मांगना है)"।

और रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत भी तिलावत फ़रमाई, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा ﷺ की दुआ़ का ज़िक्र फ़रमाया है -------- "अगर

आप उनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं (और आप उनके मालिक हैं और मालिक को हक़ है कि बन्दों को उनके गुनाहें पर सज़ा दे) और अगर आप उनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त (क़ुदरत वाले) हैं (लिहाज़ा माफ़ करने पर भी क़ादिर हैं और) हिकमत वाले (भी) हैं (लिहाज़ा आपकी माफ़ी भी हिकमत के मुवाफ़िक़ होगी)"। ये दोनों आयतें तिलावत फ़रमा कर (रसूलुल्लाह ﷺ को अपनी उम्मत याद आ गई और) रसूलुल्लाह ﷺ ने दुआ के लिए हाथ उठाए और अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत! और आप रोने लगे। इस पर अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हुआ : जिबरील! मुहम्मद के पास जाओ अगरचे तुम्हारा रब सब कुछ जानता है, मगर फिर भी तुम उनसे पूछो कि उनके रोने का सबब क्या है? चुनांचे हज़रत जिबरील عليه السلام मुहम्मद ﷺ के पास आए और आप से पूछा। आप ﷺ ने जिबरील को बताया कि मुझे अपनी उम्मत के बारे में इस फ़िक्र ने रुलाया कि उनका आख़िरत में क्या होगा? (जिबरील عليه السلام) ने जाकर अल्लाह तआ़ला से इस बात को अ़र्ज़ किया) अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : जिबरील! मुहम्मद के पास जाओ, और उनसे कहो कि तुम्हारी उम्मत के बारे में हम तुम्हें ख़ुश कर देंगे और तुम्हें ग़मगीम नहीं करेंगे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : बाज़ रिवायात में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने जिबरील عليه السلام से अल्लाह तआ़ला का यह पैग़ाम सुनकर फ़रमाया, मैं तो तब मुतमइन और ख़ुश हूंगा जब मेरा कोई उम्मती भी दोज़ख़ में न रहे।

अल्लाह तआ़ला को सब कुछ मालूम होने के बावजूद रोने का सबब पूछने के लिए जिबरील عليه السلام को रसूलुल्लाह ﷺ के पास भेजना सिर्फ़ आपके इकराम और एज़ाज़ के तौर पर था। (मआ़रिफ़ुलहदीस)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا رَأَيْتُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ طِيْبَ نَفْسٍ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! أُدْعُ اللهَ لِيْ، قَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَائِشَةَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهَا وَمَا تَأَخَّرَ، وَمَا أَسَرَّتْ وَمَا أَعْلَنَتْ فَضَحِكَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَتّٰى سَقَطَ رَأْسُهَا فِيْ حِجْرِهَا مِنَ الضِّحْكِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَيَسُرُّكِ دُعَائِيْ؟ فَقَالَتْ: وَمَا لِيْ لَا يَسُرُّنِيْ دُعَاؤُكَ؟ فَقَالَ: وَاللهِ إِنَّهَا لَدَعْوَتِيْ لِأُمَّتِيْ فِيْ كُلِّ صَلَاةٍ. رواه البزار و رجاله رجال الصحيح غير احمد بن منصور الرمادى وهو ثقة، مجمع الزوائد ٩/ ٣٩٠

34. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को एक मर्तबा ख़ुश देखा तो अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे लिए अल्लाह तआला से दुआ फ़रमा दें। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अल्लाह! आइशा के अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा दीजिए और उन गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए जो उसने छुपकर किए और ऐलानिया किए''। इस दुआ को सुनकर मैं ख़ुशी में इतना हंसी कि मेरा सर मेरी गोद से जा लगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें मेरी दुआ से बहुत ख़ुशी हो रही है? मैंने कहा : मुझे आपकी दुआ से ख़ुशी क्यों न हो? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! यह दुआ तो मैं अपनी उम्मत के लिए हर नमाज़ में मांगता हूं। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الدِّيْنَ بَدَأَ غَرِيْبًا وَيَرْجِعُ غَرِيْبًا فَطُوْبٰى لِلْغُرَبَاءِ الَّذِيْنَ يُصْلِحُوْنَ مَا اَفْسَدَ النَّاسُ مِنْ بَعْدِيْ مِنْ سُنَّتِيْ.

(وهو بعض الحديث). رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ما جاء ان الاسلام بدا غريبا ...، رقم: ٢٦٣٠

35. हज़रत अम्र बिन औफ़ ؓ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि दीन शुरू में अजनबी था और अंक़रीब फिर पहले की तरह अजनबी हो जाएगा, लिहाज़ा उन मुसलमानों के लिए ख़ुशख़बरी है जिनको दीनी वजह से अजनबी समझा जाएगा। ये वह लोग होंगे जो मेरे इस तरीक़े को दुरुस्त करेंगे, जिसको मेरे बाद लोगों ने बिगाड़ दिया होगा। (तिर्मिज़ी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اُدْعُ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ، قَالَ: اِنِّيْ لَمْ اُبْعَثْ لَعَّانًا وَاِنَّمَا بُعِثْتُ رَحْمَةً.

رواه مسلم، باب النهي عن لعن الدواب وغيرها، رقم: ٦٦١٣

36. हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से मुशरिकीन के लिए बद-दुआ करने की दरख़्वास्त की गई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे लानत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया, मुझे सिर्फ़ रहमत बनाकर भेजा गया है। (मुस्लिम)

﴿ 37 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا، وَسَكِّنُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا.

رواه مسلم، باب في الامر بالتيسير ...، رقم: ٤٥٢٨

37. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : आसानियां पैदा करो और मुश्किलात पैदा न करो, लोगों को तसल्ली दो और नफ़रत न दिलाओ। (मुस्लिम)

﴿ 38 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَنْعَشُ لِسَانَهُ حَقًّا يُعْمَلُ بِهِ بَعْدَهُ اِلَّا اَجْرَى اللهُ عَلَيْهِ اَجْرَهُ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ وَفَّاهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ثَوَابَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه احمد ٣/٢٦٦

38. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अपनी ज़बान से कोई हक़ बात कहे, जिस पर उसके बाद अमल किया जाता रहे, तो क़ियामत तक के लिए अल्लाह तआला उसका अज्र जारी फ़रमा देते हैं, फिर अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसका पूरा-पूरा सवाब अ़ता फ़रमाएंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِیْ مَسْعُوْدِ الْبَدْرِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ دَلَّ عَلٰى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ اَجْرِ فَاعِلِهِ. (وهو جزء من الحديث) رواه ابو داؤد، باب فى الدال على الخير، رقم: ٥١٢٩

39. हज़रत अबू मस्ऊद बदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने भलाई की तरफ़ रहनुमाई की, उसे भलाई करने वाले के बराबर सवाब मिलता है। (अबूदाऊद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ دَعَا اِلٰى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ اُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْئًا، وَمَنْ دَعَا اِلٰى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْاِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا.

رواه مسلم، باب من سن سنة حسنة ...، رقم: ٦٨٠٤

40. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हिदायत और ख़ैर के कामों की दावत दे, उसको उन तमाम लोगों के अमल के बराबर अज्र मिलता रहेगा, जो इस ख़ैर की पैरवी करेंगे और पैरवी करने वालों के अपने सवाब में कोई कमी न होगी। इसी तरह जो गुमराही के कामों की तरफ़ बुलाएगा उसको उन सबके अ़मल का गुनाह मिलता रहेगा जो उस गुमराही की पैरवी करेंगे और उसकी वजह से उन पैरवी करने वालों के गुनाहों में कोई कमी न होगी। (मुस्लिम)

﴾41﴿ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ فَاَثْنٰى عَلٰى طَوَائِفَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ خَيْرًا، ثُمَّ قَالَ: مَا بَالُ اَقْوَامٍ لَا يُفَقِّهُوْنَ جِيْرَانَهُمْ، وَلَا يُعَلِّمُوْنَهُمْ، وَلَا يَعِظُوْنَهُمْ، وَلَا يَاْمُرُوْنَهُمْ، وَلَا يَنْهَوْنَهُمْ، وَمَا بَالُ اَقْوَامٍ لَا يَتَعَلَّمُوْنَ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَلَا يَتَفَقَّهُوْنَ، وَلَا يَتَّعِظُوْنَ وَاللهِ لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَيَتَفَقَّهُوْنَ، وَيَتَّعِظُوْنَ اَوْ لَاُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ، ثُمَّ نَزَلَ فَقَالَ قَوْمٌ: مَنْ تَرَوْنَهُ عَنٰى بِهٰؤُلَاءِ؟ قَالُوا: الْاَشْعَرِيِّيْنَ، هُمْ قَوْمٌ فُقَهَاءُ، وَلَهُمْ جِيْرَانٌ جُفَاةٌ مِنْ اَهْلِ الْمِيَاهِ وَالْاَعْرَابِ فَبَلَغَ ذٰلِكَ الْاَشْعَرِيِّيْنَ، فَاَتَوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَقَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ! ذَكَرْتَ قَوْمًا بِخَيْرٍ، وَذَكَرْتَنَا بِشَرٍّ، فَمَا بَالُنَا؟ فَقَالَ: لَيُعَلِّمَنَّ قَوْمٌ جِيْرَانَهُمْ، وَلَيَعِظُنَّهُمْ، وَلَيَاْمُرُنَّهُمْ، وَلَيَنْهَوُنَّهُمْ، وَلَيَتَعَلَّمَنَّ قَوْمٌ مِنْ جِيْرَانِهِمْ، وَيَتَّعِظُوْنَ، وَيَتَفَقَّهُوْنَ اَوْ لَاُعَاجِلَنَّهُمُ الْعُقُوْبَةَ فِي الدُّنْيَا، فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا، فَاَعَادَ قَوْلَهُ عَلَيْهِمْ وَاَعَادُوْا قَوْلَهُمْ، اَنُفَطِّنُ غَيْرَنَا، فَقَالَ ذٰلِكَ اَيْضًا، فَقَالُوْا: اَمْهِلْنَا سَنَةً، فَاَمْهَلَهُمْ سَنَةً لِيُفَقِّهُوْهُمْ، وَيُعَلِّمُوْهُمْ، وَيَعِظُوْهُمْ ثُمَّ قَرَاَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ هٰذِهِ الْاٰيَةَ: ﴿لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ﴾ الْاٰيَةَ. رواه الطبراني في الكبير عن بكير بن معروف عن علقمة،

الترغيب ١/١٢٢. بكير بن معروف صدوق فيه لين، تقريب التهذيب

41. हज़रत अलक़मा बिन सईद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने बयान फ़रमाया, जिसमें कुछ मसुलमान क़ौमों की तारीफ़ फ़रमाई, फिर इर्शाद फ़रमाया : यह क्या बात है कि कुछ क़ौमें अपने पड़ोसियों में न दीन की समझ पैदा करती हैं, न उनको दीन सिखाती हैं, न उनको नसीहत करती हैं, न उनको अच्छी बातों का हुक्म करती हैं और न उनको बुरी बातों से रोकती हैं और क्या बात है कि कुछ क़ौमें अपने पड़ोसियों से न इल्म सीखती हैं, न दीन की समझ हासिल करती हैं और न नसीहत क़ुबूल करती हैं। अल्लाह की क़सम! ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखाएं, उनमें दीन की समझ पैदा करें, उनको नसीहत करें, उन्हें अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से रोकें और दूसरे लोग अपने पड़ोसियों से दीन सीखें, उनसे दीन की समझ हासिल करें और उनकी नसीहत क़ुबूल करें, अगर ऐसा न हुआ तो मैं उन सब को दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूंगा। उसके बाद रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए। लोगों में उसका चर्चा हुआ कि उससे रसूलुल्लाह ﷺ ने कौन-सी क़ौमें मुराद लीं हैं? लोगों ने कहा : अशअ़री क़ौम के लोग मुराद हैं कि वह इल्म वाले हैं और उनके आस-पास के देहाती दीन से नावाक़िफ़ हैं। यह ख़बर अशअ़री लोगों

को पहुंची। वह रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपने कुछ क़ौमों की तारीफ़ फ़रमाई और हम पर नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाया, हमारा क्या क़ुसूर है? रसूलुल्लाह ﷺ ने (दोबारा) इर्शाद फ़रमाया : या ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखाएं, उनको नसीहत करें, उनको अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से मना करें और ऐसे ही दूसरे लोगों को चाहिए कि वे अपने पड़ोसियों से सीखें, उनसे नसीहत हासिल करें, दीन की समझ-बूझ लें, वरना मैं उन सबको दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूंगा। अशअरी लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या हम दूसरों को समझदार बनाएं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया। उन्होंने तीसरी दफ़ा फिर यही अ़र्ज़ किया! नबी करीम ﷺ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया, फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक साल की मोहलत हम को दे दें। नबी करीम ﷺ ने उनको उनके पड़ोसियों की तालीम के लिए एक साल की मोहलत दे दी, ताकि उनमें दीन की समझ पैदा करें, उन्हें सिखाएं और उन्हें नसीहत करें। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई : तर्जुमा बनी इसराईल में जो लोग काफ़िर थे उन पर हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा عليه السلام की ज़बान से लानत की गई थी और यह लानत इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालफ़त की और हद से निकल गए। जिस बुराई में वह मुब्तला थे उससे एक दूसरे को मना नहीं करते थे, उनका यह काम वाक़ई बुरा था। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿ 42 ﴾ عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: يُجَاءُ بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُلْقَى فِي النَّارِ فَتَنْدَلِقُ اَقْتَابُهُ فِي النَّارِ فَيَدُوْرُ كَمَا يَدُوْرُ الْحِمَارُ بِرَحَاهُ، فَيَجْتَمِعُ اَهْلُ النَّارِ عَلَيْهِ فَيَقُوْلُوْنَ: يَا فُلاَنُ! مَا شَاْنُكَ، اَلَيْسَ كُنْتَ تَاْمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَانَا عَنِ الْمُنْكَرِ؟ قَالَ: كُنْتُ آمُرُكُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَلَا آتِيْهِ وَاَنْهَاكُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَآتِيْهِ.

رواه البخاري، باب صفة النار وانها مخلوقة، رقم: ٣٢٦٧

42. हज़रत उसामा बिन ज़ैद رضي الله عنه से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और उसको जहन्नम में फ़ेंक दिया जाएगा, जिससे उसकी अंतड़ियां निकल पड़ेंगी। वह अंतड़ियों के इर्द गिर्द इस तरह घूमेगा जैसा कि चक्की का गधा चक्की के गिर्द घूमता है यानी जैसे जानवर को आटे की चक्की चलाने के लिए चक्की के चारों तरफ़ घुमाया जाता है, उसी तरह यह शख़्स अपनी अंतड़ियों के चारों तरफ़ घूमेगा, जहन्नम के लोग उसके चारों तरफ़ जमा हो जाएंगे और उससे पूछेंगे, फ़लाने! तुम्हें क्या हुआ? क्या तुम

अच्छी बातों का हुक्म नहीं करते थे और बुरी बातों से हमको नहीं रोकते थे? वह जवाब देगा : मैं तुमको अच्छी बातों का हुक्म करता था लेकिन ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करता था, और बुरी बातों से रोकता था लेकिन उन्हें किया करता था।

(बुख़ारी)

﴿ 43 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَرَرْتُ لَيْلَةَ اُسْرِيَ بِيْ عَلٰى قَوْمٍ تُقْرَضُ شِفَاهُهُمْ بِمَقَارِيْضَ مِنْ نَارٍ قَالَ: قُلْتُ: مَنْ هٰؤُلَاءِ؟ قَالُوْا: خُطَبَاءُ مِنْ اَهْلِ الدُّنْيَا كَانُوْا يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَيَنْسَوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتَابَ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ. رواه احمد ٣/١٢٠

43. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : शबे मे'राज में मेरा गुज़र ऐसी जमाअ़त पर हुआ कि उनके होंठ जहन्नम की आग की क़ैंचियों से कुतरे जा रहे थे। मैंने जिबरील ﷺ से दरयाफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया : ये वह वाइज़ हैं जो दूसरों को नेकी करने के लिए कहते थे और ख़ुद अपने को भुला देते थे, यानी ख़ुद अ़मल नहीं करते थे, हालांकि वे अल्लाह तआ़ला की किताब पढ़ते थे, क्या वे समझदार नहीं थे? (मुस्नद अहमद)

अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴾ [الانفال:٧٤]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जो लोग ईमान लाए और अपने घर छोड़े और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने उन मुहाजिरीन को अपने यहां ठहराया और उनकी मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं। उनके लिए मग़्फ़िरत और इज़्ज़त की रोज़ी है। (अन्फ़ाल : 74)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ‌ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ‌ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴾

[التوبة:٢٠-٢٢]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने घर छोड़े और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में अपने माल व जान से जिहाद किया, अल्लाह तआ़ला के यहां उनके लिए बड़ा दर्जा है, और यही लोग पूरे कामयाब हैं। उन्हें उनके रब ख़ुशख़बरी देते हैं अपनी रहमत और रज़ामन्दी

और जन्नत के ऐसे बाग़ों की, जिनमें उन्हें हमेशा की नेमतें मिलेंगी, उन जन्नतों में ये लोग हमेशा-हमेशा रहेंगे। बिलाशुब्हा अल्लाह तआला के पास बड़ा अज्र है। (तौबा : 20-22)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ [العنكبوت:٦٩]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जो लोग हमारे (दीन के) लिए मशक़्क़तें बरदाश्त करते हैं, हम उनको ज़रूर अपने तक पहुंचने की राहें सुझा देंगे (कि उन्हें वे बातें समझाएंगे कि दूसरों को उन बातों का एहसास तक नहीं होगा) और बेशक अल्लाह तआला इख़्लास से अमल करने वालों के साथ हैं। (अंकबूत)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَمَنْ جٰهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ﴾ [العنكبوت:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : जो शख़्स मेहनत करता है वह अपने नफ़ा के लिए मेहनत करता है (वरना) अल्लाह तआला को तो तमाम जहान वालों में से किसी की हाजत नहीं। (अंकबूत : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ﴾ [الحجرات:١٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कामिल ईमान वाले तो वही लोग हैं जो अल्लाह तआला और उनके रसूल ﷺ पर ईमान लाए, फिर (उम्र भर कभी) शक नहीं किया (यानी अल्लाह तआला और उनके रसूल की हर बात को दिल की गहराई से तस्लीम किया और उसमें कभी शक न किया) और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह तआला के रास्ते में मशक़्क़तें बरदाश्त कीं। यही लोग ईमान में सच्चे हैं। (हुजुरात : 15)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰي تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۭ

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۙ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾

[الصف:١٠-١٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बताऊं, जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले (और वह यह है कि) तुम अल्लाह तआला और उनके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह तआला के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो। ये तुम्हारे हक़ में बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो। इस पर अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और तुमको जन्नत के ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और उम्दा मकानों में दाख़िल करेंगे जो दाइमी होंगे। यह बहुत बड़ी कामयाबी है। (सफ़ : 10-12)

وَقَالَ تَعَالٰى:﴿ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ نِ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ﴾

[التوبة:٢٤]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मसुलमानों से कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और बीवियां और तुम्हारी बिरादरी और वह माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बन्द होने से तुम डरते हो और वे मकानात जिनमें रहना तुम पसन्द करते हो, अगर ये सब चीज़ें तुमको अल्लाह तआला से और उनके रसूल से और अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं, तो इंतज़ार करो, यहां तक कि अल्लाह तआला सज़ा का हुक्म भेज दें और अल्लाह तआला हुक्म न मानने वालों की रहबरी नहीं फ़रमाते। (तौबा : 24)

وَقَالَ تَعَالٰى:﴿ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ﴾

[البقرة:١٩٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और तुम लोग जान के साथ माल भी अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च किया करो (और जिहाद से जी चुरा कर) अपने

आपको अपने हाथों से हलाकत में न डालो, और जो काम भी करो अच्छी तरह किया करो, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह काम करने वालों को पसन्द फ़रमाते हैं। (बक़रः 195)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 44 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَقَدْ اُخِفْتُ فِي اللّٰهِ وَمَا يُخَافُ اَحَدٌ، وَلَقَدْ اُوْذِيْتُ فِي اللّٰهِ مَالَمْ يُؤْذَ اَحَدٌ، وَلَقَدْ اَتَتْ عَلَيَّ ثَلَاثُوْنَ مِنْ بَيْنِ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ وَمَالِيْ وَلِبِلَالٍ طَعَامٌ يَاْكُلُهُ ذُوْكَبِدٍ اِلَّاشَيْءٌ يُوَارِيْهِ اِبِطُ بِلَالٍ. رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب احاديث عائشة وانس......،رقم:٢٤٧٢

44. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दीन (की दावत) के सिलसिले में मुझे इतना डराया गया कि किसी को उतना नहीं डराया गया और अल्लाह तआला के रास्ते में मुझे इतना सताया गया कि किसी और को इतना नहीं सताया गया। मुझ पर तीस दिन और तीस रातें मुसलसल इस हाल में गुज़री हैं कि मेरे और बिलाल के लिए खाने की कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसको कोई जानदार खा सके। सिर्फ़ इतनी चीज़ होती जिसको बिलाल की बग़ल छुपा ले, यानी बहुत थोड़ी मिक़्दार में होती थी। (तिर्मिज़ी)

﴿ 45 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يَبِيْتُ اللَّيَالِيَ الْمُتَتَابِعَةَ طَاوِيًا وَاَهْلُهُ لَا يَجِدُوْنَ عَشَاءً، وَكَانَ اَكْثَرُ خُبْزِهِمْ خُبْزَ الشَّعِيْرِ. رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في معيشة النبي ﷺ واهله،رقم:٢٣٦٠

45. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ और आपके घर वाले बहुत-सी रातें मुसलसल ख़ाली पेट (फ़ाक़े से) गुज़ारते थे, उनके पास रात का खाना नहीं होता था और उनका खाना आम तौर से जौ की रोटी होती थी। (तिर्मिज़ी)

﴿ 46 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اَنَّهَا قَالَتْ: مَاشَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِنْ خُبْزِ شَعِيْرٍ، يَوْمَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ حَتّٰى قُبِضَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ.

رواه مسلم، باب الدنيا سجن للمؤمن و جنة للكافر،رقم:٧٤٠٠

46. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के वफ़ात पा जाने तक आपके घर वालों ने जौ की रोटी भी कभी दो दिन मुसलसल पेट भर कर नहीं खाई। (मुस्लिम)

﴿ 47 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنَّ فَاطِمَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهَا نَاوَلَتِ النَّبِىَّ ﷺ كِسْرَةً مِنْ خُبْزِ شَعِيْرٍ فَقَالَ: هٰذَا اَوَّلُ طَعَامٍ اَكَلَهُ اَبُوْكِ مُنْذُ ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ رواه احمد والطبرانى وزاد فَقَالَ: مَاهٰذِهٖ؟ فَقَالَتْ: قُرْصٌ خَبَزْتُهُ، فَلَمْ تَطِبْ نَفْسِىْ حَتّٰى اَتَيْتُكَ بِهٰذِهِ الْكِسْرَةِ. ورجالهما ثقات، مجمع الزوائد ١٠/٥٦٢

47. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह ﷺ को जौ की रोटी का एक टुकड़ा पेश किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन दिन में यह पहला खाना है जिसको तुम्हारे वालिद ने खाया है। (मुस्नद अहमद)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने साहबज़ादी से पूछा, यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया : एक रोटी मैंने पकाइ थी, मुझे अच्छा नहीं लगा कि मैं आपके बग़ैर खाऊं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 48 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ نِ السَّاعِدِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِالْخَنْدَقِ وَهُوَ يَحْفِرُ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ، وَبَصُرَ بِنَا فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْاٰخِرَةِ فَاغْفِرْ لِلْاَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةِ. رواه البخارى، باب الصحة والفراغ ...، رقم: ٦٤١٤

48. हज़रत सह्ल बिन साद साइदी ؓ फ़रमाते हैं कि हम ग़ज़्वा-ए-ख़न्दक़ में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे। आप ﷺ ख़न्दक़ खोद रहे थे और हम ख़न्दक़ से मिट्टी निकाल कर दूसरी जगह डाल रहे थे। आप ﷺ ने हमें (इस हाल में) देखकर फ़रमाया : ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत ही की ज़िन्दगी है, आप अन्सार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए। (बुख़ारी)

﴿ 49 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اَخَذَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِمَنْكِبِىْ فَقَالَ: كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ اَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ

رواه البخارى، باب قول النبى ﷺ كن فى الدنيا كانك غريب ...، رقم: ٦٤١٦

49. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (बात की

अहमियत की वजह से मुतवज्जह करने के लिए) मेरे कांधे को पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया : तुम दुनिया में मुसाफ़िर की तरह या रास्ता चलने वाले की तरह हो।

(बुख़ारी)

﴿ 50 ﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَوَاللهِ مَا الْفَقْرَ اَخْشٰى عَلَيْكُمْ، وَلٰكِنْ اَخْشٰى عَلَيْكُمْ اَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلٰى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، فَتَنَافَسُوْهَا كَمَا تَنَافَسُوْهَا وَتُلْهِيَكُمْ كَمَا اَلْهَتْهُمْ. (وهو بعض الحديث) رواه البخاري، باب ما يحذر من زهرة الدنيا......، رقم: ٦٤٢٥

50. हज़रत अम्र बिन औफ़ ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे बारे में फ़क्र व फ़ाक़ा का डर नहीं, बल्कि इस बात से डरता हूँ कि दुनिया को तुम पर फैला दिया जाए जिस तरह तुम से पहले लोगों पर दुनिया को फैला दिया गया था, फिर तुम भी दुनिया को हासिल करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने लगो, जिस तरह तुम से पहले लोग दुनिया को हासिल करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ते थे, फिर दुनिया तुमको उसी तरह ग़ाफ़िल कर दे जिस तरह उनको ग़ाफ़िल कर दिया। (बुख़ारी)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद "तुम्हारे बारे में फ़क्र व फ़ाक़ा का डर नहीं" का मतलब यह है कि तुम पर फ़क्र व फ़ाक़ा नहीं आएगा या यह मतलब है कि अगर फ़क्र व फ़ाक़ा की नौबत आई तो उससे तुम्हारे दीन को नुक़सान नहीं पहुंचेगा।

﴿ 51 ﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَوْ كَانَتِ الدُّنْيَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللهِ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ مَا سَقٰى كَافِرًا مِنْهَا شَرْبَةَ مَاءٍ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث صحيح غريب، باب ماجاء في هوان الدنيا على الله عزوجل، رقم: ٢٣٢٠

51. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर दुनिया की क़द्र व क़ीमत अल्लाह तआला के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो अल्लाह तआला किसी काफ़िर को उसमें से एक घूंट पानी न पिलाते (क्योंकि दुनिया की क़ीमत अल्लाह तआला के नज़दीक इतनी भी नहीं है, इसलिए काफ़िर फ़ाजिर को भी दुनिया बेहिसाब दी हुई है)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 52 ﴾ عَنْ عُرْوَةَ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّهَا كَانَتْ تَقُوْلُ: وَاللهِ! يَا ابْنَ أُخْتِيْ! إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلَالِ ثُمَّ الْهِلَالِ ثُمَّ الْهِلَالِ، ثَلَاثَةَ أَهِلَّةٍ فِيْ شَهْرَيْنِ، وَمَا أُوْقِدَ فِيْ أَبْيَاتِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَارٌ، قَالَ: قُلْتُ: يَاخَالَةُ! فَمَا كَانَ يُعَيِّشُكُمْ؟ قَالَتِ: الْأَسْوَدَانِ: التَّمْرُ وَالْمَاءُ.

(وهو طرف من الرواية) رواه مسلم، باب الدنياسجن للمؤمن......،رقم:٧٤٥٢

52. हज़रत उरवा रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं : मेरे भांजे! हम एक चांद देखते फिर दूसरा चांद देखते फिर तीसरा चांद देखते, यूं दो महीने में तीन चांद देखते, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ के घरों में आग नहीं जलती थी। मैंने कहा ख़ाला जान! फिर आपका गुज़ारा किस चीज़ पर होता था? उन्होंने फ़रमाया : खुजूर और पानी पर। (मुस्लिम)

﴿ 53 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَاخَالَطَ قَلْبَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ رَهْجٌ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ إِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ.

رواه احمد والطبرانى فى الاوسط ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٥/٢٠٥

53. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस के जिस्म के अन्दर अल्लाह तआला के रास्ते का ग़ुबार दाख़िल हो जाए अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग को ज़रूर हराम फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 54 ﴾ عَنْ أَبِيْ عَبْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ حَرَّمَهُمَا اللهُ عَزَّوَجَلَّ عَلَى النَّارِ.

رواه احمد ٣/٤٧٩

54. हज़रत अबू अब्स ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के दोनों क़दम अल्लाह तआला के रास्ते में ग़ुबार आलूद हो जाएं, अल्लाह तआला उन्हें दोज़ख़ की आग पर हराम फ़रमा देंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿ 55 ﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَدُخَانُ جَهَنَّمَ فِيْ جَوْفِ عَبْدٍ أَبَدًا وَلَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيْمَانُ فِيْ قَلْبِ عَبْدٍ أَبَدًا.

رواه النسائى، باب فضل من عمل فى سبيل الله على قدمه،رقم:٣١١٢

55. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते का गर्द व ग़ुबार और जहन्नम का धुवां कभी किसी बन्दे

के पेट में जमा नहीं हो सकते और बुख़्ल और (कामिल) ईमान किसी बन्दे के दिल में कभी जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿ 56 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَا يَجْتَمِعُ غُبَارٌ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، وَدُخَانُ جَهَنَّمَ فِیْ مَنْخَرَیْ مُسْلِمٍ اَبَدًا.

رواه النسائی، باب فضل من عمل فی سبیل اللّٰه علی قدمه، رقم:٣١١٥

56. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते का गर्द व ग़ुबार और जहन्नम का धुवां कभी किसी मुसलमान के नथुनों में जमा नहीं हो सकते। (नसाई)

﴿ 57 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ: اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَغْبَارُ وَجْهُهُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِلَّا اٰمَنَ اللّٰهُ وَجْهَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَا مِنْ رَجُلٍ يَغْبَارُ قَدَمَاهُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِلَّا اٰمَنَ اللّٰهُ قَدَمَيْهِ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه البيهقی فی شعب الايمان ٤٣/٤

57. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स का चेहरा अल्लाह तआ़ला की राह में ग़ुबार आलूद हो जाए, अल्लाह तआ़ला उसके चेहरे को क़ियामत के दिन ज़रूर (दोज़ख़ की आग से) महफ़ूज़ फ़रमाएंगे और जिस शख़्स के दोनों क़दम अल्लाह तआ़ला की राह में ग़ुबार आलूद हो जाएं अल्लाह तआ़ला उसके क़दमों को क़ियामत के दिन दोज़ख़ की आग से ज़रूर महफ़ूज़ फ़रमाएंगे। (बैहक़ी)

﴿ 58 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: يَوْمٌ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ خَيْرٌ مِنْ اَلْفِ يَوْمٍ فِيْمَا سِوَاهُ. رواه النسائی، باب فضل الرباط، رقم:٣١٧٢

58. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला के रास्ते का एक दिन उसके अलावा के हज़ार दिनों से बेहतर है। (नसाई)

﴿ 59 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: غَدْوَةٌ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا.

(وهو بعض الحديث) رواه البخاری، باب صفة الجنة والنار، رقم:٦٥٦٨

59. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह

तआला के रास्ते में एक सुबह या शाम दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि दुनिया और दुनिया में जो कुछ है वह सब अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर दिया जाए, तब भी अल्लाह तआला के रास्ते की एक शाम उससे ज़्यादा अज्र दिलाने वाली है।

﴿ 60 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ رَاحَ رَوْحَةً فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، كَانَ لَهُ بِمِثْلِ مَا اَصَابَهُ مِنَ الْغُبَارِ مِسْكًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

رواه ابن ماجه، باب الخروج في النفير، رقم: ٢٧٧٥

60. हज़रत अनस बिन मालिक ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के रास्ते में एक शाम भी निकले, तो जितना गर्द व ग़ुबार उसे लगेगा, उसके बक़द्र क़ियामत में उसे मुश्क मिलेगा। (इब्ने माजा)

﴿ 61 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ بِشِعْبٍ فِيْهِ عُيَيْنَةٌ مِنْ مَاءٍ عَذْبَةٌ فَاَعْجَبَتْهُ لِطِيْبِهَا، فَقَالَ: لَوِ اعْتَزَلْتُ النَّاسَ فَاَقَمْتُ فِيْ هٰذَا الشِّعْبِ وَلَنْ اَفْعَلَ حَتّٰى اَسْتَاْذِنَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ، فَذَكَرَ ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَاتَفْعَلْ، فَاِنَّ مَقَامَ اَحَدِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاتِهِ فِيْ بَيْتِهِ سَبْعِيْنَ عَامًا، اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَكُمْ، وَيُدْخِلَكُمُ الْجَنَّةَ؟ اغْزُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ مَنْ قَاتَلَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فُوَاقَ نَاقَةٍ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في الغدو......، رقم: ١٦٥٠

61. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ फ़रमाते हैं कि (एक सफ़र के दौरान) रसूलुल्लाह ﷺ के एक सहाबी किसी पहाड़ी रास्ते में मीठे पानी के एक छोटे से चश्मा पर से गुज़रे। वह चश्मा उम्दा होने की वजह से उनको बहुत अच्छा लगा। उन्होंने (अपने जी में) कहा कि (कैसा अच्छा चश्मा है) क्या ही अच्छा हो कि मैं लोगों से किनाराकश होकर इस घाटी में ही ठहर जाऊं, लेकिन मैं यह काम नबी करीम ﷺ से इजाज़त लिए बग़ैर हरगिज़ न करूंगा। चुनांचे इस ख़्याल का ज़िक्र उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के सामने किया, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : ऐसा न करना, क्योंकि तुममें से किसी भी शख़्स का अल्लाह तआला के रास्ते में (थोड़ी देर) खड़े रहना उसके अपने घर में रहकर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। क्या तुम लोग नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दें और तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा दें। अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करो, जो शख़्स इतनी देर भी अल्लाह तआला के रास्ते में लड़ा जितना वक़्फ़ा एक ऊंटनी के दूध दूहने में दोबारा थन दबाने के दर्मियान होता है,

तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई। (तिर्मिज़ी)

﴿ 62 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ صُدِعَ رَاْسُهُ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ فَاحْتَسَبَ، غُفِرَلَهُ مَاكَانَ قَبْلَ ذٰلِكَ مِنْ ذَنْبٍ.

رواه الطبرانى فى الكبير و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٣/ ٣٠

62. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिस शख़्स के सर में दर्द हो और वह उस पर सवाब की नीयत रखे तो उसके पहले के तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 63 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا يَحْكِىْ عَنْ رَبِّهٖ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى قَالَ: اَيُّمَا عَبْدٍ مِنْ عِبَادِىْ خَرَجَ مُجَاهِدًا فِىْ سَبِيْلِى ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِىْ ضَمِنْتُ لَهُ اَنْ اَرْجِعَهُ بِمَا اَصَابَ مِنْ اَجْرٍ وَغَنِيْمَةٍ، وَاِنْ قَبَضْتُهُ اَنْ اَغْفِرَ لَهُ، وَاَرْحَمَهُ، وَاُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ.

رواه احمد ٢/ ١١٧

63. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक हदीसे क़ुदसी में अपने रब का यह इर्शाद मुबारक नक़ल फ़रमाते हैं : मेरा जो बन्दा सिर्फ़ मेरी ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए मेरे रास्ते में मुजाहिद बनकर निकले तो मैं ज़िम्मेदारी उठाता हूं कि मैं उसे अज्र और माले ग़नीमत के साथ वापस लौटाऊंगा और अगर मैंने उसको अपने पास बुला लिया तो उसकी मग़्फ़िरत करूंगा, उस पर रहम करूंगा और उसको जन्नत में दाख़िल करूंगा। (मुस्नद अहमद)

﴿ 64 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَضَمَّنَ اللهُ لِمَنْ خَرَجَ فِىْ سَبِيْلِهٖ، لَا يُخْرِجُهُ اِلَّا جِهَادًا فِىْ سَبِيْلِىْ، وَاِيْمَانًا بِىْ وَتَصْدِيْقًا بِرُسُلِىْ، فَهُوَ عَلَىَّ ضَامِنٌ اَنْ اُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ اَوْ اَرْجِعَهُ اِلٰى مَسْكَنِهِ الَّذِىْ خَرَجَ مِنْهُ، نَائِلًا مَا نَالَ مِنْ اَجْرٍ اَوْ غَنِيْمَةٍ، وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ! مَامِنْ كَلْمٍ يُكْلَمُ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ تَعَالٰى، اِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَهَيْئَتِهٖ حِيْنَ كُلِمَ، لَوْنُهُ لَوْنُ دَمٍ وَرِيْحُهُ مِسْكٌ، وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ لَوْلَا اَنْ يَشُقَّ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ، مَا قَعَدْتُ خِلَافَ سَرِيَّةٍ تَغْزُوْ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ اَبَدًا، وَلٰكِنْ لَا اَجِدُ سَعَةً فَاَحْمِلُهُمْ، وَلَا يَجِدُوْنَ سَعَةً وَيَشُقُّ عَلَيْهِمْ اَنْ يَتَخَلَّفُوْا عَنِّىْ، وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ! لَوَدِدْتُ اَنِّىْ اَغْزُوْ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ فَاُقْتَلُ، ثُمَّ اَغْزُوْ فَاُقْتَلُ، ثُمَّ اَغْزُوْ فَاُقْتَلُ.

رواه مسلم، باب فضل الجهاد ...، رقم: ٤٨٥٩

64. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के रास्ते में निकले (और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) उसको घर से निकालने वाली चीज़ मेरे रास्ते में जिहाद करने, मुझ पर ईमान लाने, मेरे रसूलों की तस्दीक़ के अलावा कुछ और न हो, तो मैं इस बात का ज़िम्मेदार हूं कि उसे जन्नत में दाख़िल करूं या उसे अज्र या ग़नीमत के साथ घर वापस लौटाऊं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है अल्लाह तआला के रास्ते में (किसी को) जो कोई भी ज़ख़्म लगता है तो क़ियामत के दिन वह इस हालत में आएगा कि गोया उसे आज ही ज़ख़्म लगा है उसका रंग तो ख़ून का रंग होगा और उसकी महक मुश्क की महक होगी। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है अगर मुसलमानों पर मशक़्क़त का अन्देशा न होता, तो मैं कभी अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने वाले किसी लशकर में शरीक होने से पीछे न रहता, लेकिन मैं इस बात की गुंजाइश नहीं पाता कि तमाम लोगों के लिए सवारी का इंतज़ाम करूं, न वे ख़ुद उसकी गुंजाइश पाते हैं और उन पर यह बात बड़ी गिरां गुज़रती है कि वे मेरे साथ न जाएं (कि मैं तो चला जाऊं और वे घरों में रहें) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद ﷺ की जान है, मैं तो चाहता हूं कि अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करूं और क़त्ल कर दिया जाऊं, फिर जिहाद करूं फिर क़त्ल कर दिया जाऊं, फिर जिहाद करूं फिर क़त्ल कर दिया जाऊं। (मुस्लिम)

﴿65﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِذَا تَبَايَعْتُمْ بِالْعِيْنَةِ وَاَخَذْتُمْ اَذْنَابَ الْبَقَرِ وَرَضِيْتُمْ بِالزَّرْعِ وَتَرَكْتُمُ الْجِهَادَ، سَلَّطَ اللهُ عَلَيْكُمْ ذُلًّا لَايَنْزِعُهُ حَتّٰى تَرْجِعُوْا اِلٰى دِيْنِكُمْ.

رواه ابوداؤد، فى النهى عن العينة، رقم: ٣٤٦٢

65. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जब तुम लोग ख़रीद व फ़रोख़्त और कारोबार में हमातन मशग़ूल हो जाओगे अैर गाय बैल की दुमों को पकड़ कर खेती बाड़ी में मगन हो जाओगे और जिहाद को छोड़ बैठोगे तो अल्लाह तआला तुम पर ऐसी ज़िल्लत मुसल्लत कर देंगे जो उस वक़्त तक दूर नहीं होगी जब तक तुम अपने दीन की तरफ़ न लौट आओ (जिसमें अल्लाह तआला के रास्ते का जिहाद भी शामिल है)।

(अबूदाऊद)

﴾ 66 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ لَقِیَ اللّٰهَ بِغَیْرِ اَثَرٍ مِنْ جِهَادٍ لَقِیَ اللّٰهَ وَفِیْهِ ثُلْمَةٌ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث غریب، باب ماجاء فی فضل المرابط،رقم:١٦٦٦

66. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआला के पास इस हाल में हाज़िर हो कि उस पर जिहाद का कोई निशान न हो तो वह अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि उसमें यानी उसके दीन में ख़लल होगा। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : जिहाद की निशानी यह है कि मसलन उसके जिस्म पर कोई ज़ख़्म हो, या अल्लाह तआला के रास्ते का गर्द व ग़ुबार या ख़िदमत वग़ैरह करने की वजह से जिस्म पर पड़ने वाले निशान हों। (शर्हुत्तैय्यिबी)

﴾ 67 ﴿ عَنْ سُهَیْلٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: مَقَامُ اَحَدِكُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ سَاعَةً خَیْرٌ لَهُ مِنْ عَمَلِهٖ عُمُرَهُ فِیْ اَهْلِهٖ. رواه الحاكم ٢٨٢/٣

67. हज़रत सुहैल ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से किसी का एक घड़ी अल्लाह तआला के रास्ते में खड़ा रहना उसके अपने घर वालों में रहते हुए सारी उम्र के नेक आमाल से बेहतर है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾ 68 ﴿ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ النَّبِیُّ ﷺ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ رَوَاحَةَ فِیْ سَرِیَّةٍ فَوَافَقَ ذٰلِكَ یَوْمَ الْجُمُعَةِ، فَغَدَا اَصْحَابُهٗ فَقَالَ: اَتَخَلَّفُ فَاُصَلِّیْ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ ثُمَّ اَلْحَقُهُمْ، فَلَمَّا صَلّٰى مَعَ النَّبِیِّ ﷺ رَآهُ فَقَالَ لَهُ: مَا مَنَعَكَ اَنْ تَغْدُوَ مَعَ اَصْحَابِكَ؟ فَقَالَ: اَرَدْتُ اَنْ اُصَلِّیَ مَعَكَ ثُمَّ اَلْحَقَهُمْ، فَقَالَ: لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مَا اَدْرَكْتَ فَضْلَ غَدْوَتِهِمْ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث غریب، باب ماجاء فی السفر یوم الجمعة،رقم:٥٢٧

68. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ﷺ को एक जमाअत में भेजा और वह जुमा का दिन था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ﷺ के साथी सुबह रवाना हो गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ﷺ ने फ़रमाया, मैं ठहर जाता हूं ताकि रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ लूं, फिर अपने साथियों से जा मिलूंगा। जब उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के

साथ जुमा की नमाज़ पढ़ी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें देखकर फ़रमाया : तुम अपने साथियों के साथ सुबह जाने से क्यों ठहर गए? उन्होंने अ़र्ज़ किया, मैंने चाहा कि आपके साथ जुमा पढ़ लूं, फिर उनसे जा मिलूंगा। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम ज़मीन में जो कुछ सबका सब ख़र्च कर दो तो भी सुबह के वक़्त जाने वाले साथियों के बराबर सवाब हासिल नहीं कर सकोगे। (तिर्मिज़ी)

﴿ 69 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَمَرَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِسَرِيَّةٍ تَخْرُجُ، فَقَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَنَخْرُجُ اللَّيْلَةَ اَمْ نَمْكُثُ حَتّٰى نُصْبِحَ؟ فَقَالَ: اَوَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ تَبِيْتُوْا فِيْ خَرِيْفٍ مِنْ خَرَائِفِ الْجَنَّةِ وَالْخَرِيْفُ الْحَدِيْقَةُ. السنن الكبرى ٩/١٥٨

69. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक जमाअ़त को अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने का हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या हम अभी रात को चले जाएं या ठहर कर सुबह चले जाएं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम यह नहीं चाहते हो कि तुम जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में यह रात गुज़ारो, यानी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में रात गुज़ारना जन्नत के बाग़ में रात गुज़रना है। (सुननेकुबरा)

﴿ 70 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا سَاَلَ النَّبِيَّ ﷺ: اَيُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: الصَّلَاةُ لِوَقْتِهَا، وَبِرُّ الْوَالِدَيْنِ، ثُمَّ الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ.

رواه البخاري، باب و سمّى النبي ﷺ الصلاة عملا، رقم: ٧٥٣٤

70. हज़रत इब्ने मस्ऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि कौन-सा अ़मल सबसे अफ़ज़ल है? आप ﷺने इर्शाद फ़रमाया : वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना और फिर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करना। (बुख़ारी)

﴿ 71 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ كُلُّهُمْ ضَامِنٌ عَلَى اللهِ، اِنْ عَاشَ رُزِقَ وَكُفِيَ، وَاِنْ مَاتَ اَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ: مَنْ دَخَلَ بَيْتَهُ فَسَلَّمَ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللهِ، وَمَنْ خَرَجَ اِلَى الْمَسْجِدِ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللهِ، وَمَنْ خَرَجَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللهِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: الحديث صحيح ٢/٢٥٢

71. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जो अल्लाह तआ़ला की ज़िम्मेदारी में हैं। अगर ज़िन्दा रहें तो उन्हें रोज़ी

दी जाएगी और उनके कामों में मदद की जाएगी और अगर उन्हें मौत आ गई तो अल्लाह तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। एक वह जो अपने घर में दाख़िल हो कर सलाम करे; दूसरा वह जो मस्जिद जाए; तीसरा वह जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले। (इब्ने हब्बान)

﴿ 72 ﴾ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلَالٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الطُّفَاوَةِ، طَرِيْقُهُ عَلَيْنَا، يَأْتِيْ عَلَى الْحَيِّ، فَيُحَدِّثُهُمْ، قَالَ: أَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ فِيْ عِيْرٍ لَنَا، فَبِعْنَا بِضَاعَتَنَا، ثُمَّ قُلْتُ: لَأَنْطَلِقَنَّ إِلَى هٰذَا الرَّجُلِ، فَلَآتِيَنَّ مَنْ بَعْدِيْ بِخَبَرِهِ، قَالَ: فَانْتَهَيْتُ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، فَإِذَا هُوَ يُرِيْنِيْ بَيْتًا، قَالَ: إِنَّ امْرَأَةً كَانَتْ فِيْهِ، فَخَرَجَتْ فِيْ سَرِيَّةٍ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، وَتَرَكَتْ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ عَنْزَةً وَ صِيْصَتَهَا الَّتِيْ تَنْسِجُ بِهَا، فَفَقَدَتْ عَنْزًا مِنْ غَنَمِهَا وَ صِيْصَتَهَا، قَالَتْ: يَا رَبِّ! (إِنَّكَ) قَدْ ضَمِنْتَ لِمَنْ خَرَجَ فِيْ سَبِيْلِكَ أَنْ تَحْفَظَ عَلَيْهِ، وَإِنِّيْ قَدْ فَقَدْتُ عَنْزًا مِنْ غَنَمِيْ وَصِيْصَتِيْ، وَإِنِّيْ أَنْشُدُكَ عَنْزِيْ وَ صِيْصَتِيْ، قَالَ: فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ لَهُ شِدَّةَ مُنَاشَدَتِهَا لِرَبِّهَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى، قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَأَصْبَحَتْ عَنْزُهَا وَمِثْلُهَا، وَصِيْصَتُهَا وَمِثْلُهَا، وَهَاتِيْكَ، فَأْتِهَا، فَاسْأَلْهَا إِنْ شِئْتَ، قَالَ: قُلْتُ: بَلْ أُصَدِّقُكَ.

رواه احمد، ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٥/٤٠٥

72. हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि क़बीला तुफ़ावा के एक शख़्स थे। उनके रास्ते में हमारा क़बीला पड़ता था (वह आते जाते हुए) हमारे क़बीले से मिलते और उनको हदीसें सुनाया करते थे। उन्होंने कहा, एक मर्तबा मैं अपने तिजारती क़ाफ़िला के साथ मदीना मुनव्वरा गया। वहां हम ने अपना सामान बेचा। फिर मैंने अपने जी में कहा कि मैं उस शख़्स यानी रसूलुल्लाह ﷺ के पास ज़रूर जाऊंगा और उनके हालात लेकर अपने क़बीले वालों को जाकर बताऊंगा। जब मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास पहुंचा तो आप ﷺ ने मुझे एक घर दिखाकर फ़रमाया कि इस घर में एक औरत थी। वह मुसलमानों की एक जमाअ़त के साथ अल्लाह तआ़ला के रास्ते में गई, और वह घर में बारह बकरियां और अपना एक कपड़ा बुनने का कांटा जिससे वह कपड़ा बुना करती थी, छोड़ कर गई। इस की एक बकरी और कांटा गुम हो गया। वह औरत कहने लगी, या रब! जो आदमी आप के रास्ते में निकले उसकी हर तरह हिफ़ाज़त का आपने ज़िम्मा लिया हुआ है (और मैं आपके रास्ते में गई थी और मेरी ग़ैर मौजूदगी में) मेरी बकरियों में से एक बकरी और कपड़ा बुनने वाला कांटा गुम हो गया है। मैं आपको अपनी बकरी और कांटे के बारे में

क़सम देती हूं (कि मुझे वापस मिल जाए) रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ उस तुफ़ावी आदमी को बताने लगे कि उस औरत ने किस तरह अपने रब से इंतिहाई आजिज़ी से दुआ की। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसकी बकरी और उस जैसी एक और बकरी और उसका कांटा और उस-जैसा एक और कांटा उसको (अल्लाह तआला के ग़ैबी ख़ज़ाने से) मिल गया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह है वह औरत, अगर तुम चाहो तो जाकर उससे पूछ लो। उस तुफ़ावी आदमी ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, नहीं (मुझे इस औरत से पूछने की ज़रूरत नहीं है) बल्कि मैं आपसे सुनकर इसकी तस्दीक़ करता हूं (मुझे आपकी बात पर पूरा यक़ीन है)। (मुस्नद अहमद, मजज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 73 ﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِالْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، فَإِنَّهُ بَابٌ مِنْ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ، يُذْهِبُ اللهُ بِهِ الْهَمَّ وَالْغَمَّ (وَزَادَ فِيْهِ غَيْرُهُ:) وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ، وَاَقِيْمُوْا حُدُوْدَ اللهِ فِي الْقَرِيْبِ وَالْبَعِيْدِ، وَلَا تَاْخُذْكُمْ فِي اللهِ لَوْمَةُ لَائِمٍ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه، ووافقه الذهبي ٢/٧٤

73. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद ज़रूर किया करो, क्योंकि ये जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है, अल्लाह तआला उसके ज़रिए से रंज व ग़म दूर फ़रमा देते हैं। एक रिवायत में यह इज़ाफ़ा भी है कि अल्लाह तआला की राह में दूर और क़रीब जाकर जिहाद करो, और क़रीब और दूर वालों में अल्लाह तआला की हदों को क़ायम करो और अल्लाह तआला के मामले में किसी की मुलामत का कुछ भी असर न लो। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 74 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! ائْذَنْ لِيْ بِالسِّيَاحَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اِنَّ سِيَاحَةَ اُمَّتِي الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ.

رواه ابو داؤد، باب فى النهى عن السياحة، رقم:٢٤٨٦

74. हज़रत अबू उमामा ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे सैयाहत की इजाज़त मरहमत फ़रमा दें, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी उम्मत की सैयाहत तो अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करना है।

(अबूदाऊद)

﴿ 75 ﴾ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَقْرَبُ الْعَمَلِ اِلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَلَا يُقَارِبُهُ شَيْءٌ.

رواه البخاری فی التاریخ وهو حدیث حسن، الجامع الصغیر: ۱/۲۰۱

75. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के सबसे ज़्यादा क़ुर्ब का ज़रिया अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद है। कोई अ़मल अल्लाह तआ़ला के क़ुर्ब का ज़रिया होने में जिहाद के अ़मल के क़रीब भी नहीं हो सकता। (बुख़ारी फ़ित्तारीख़, जामेअ़ सग़ीर)

﴿ 76 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَيُّ النَّاسِ اَفْضَلُ؟ قَالَ: رَجُلٌ يُجَاهِدُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَالُوْا: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ مُؤْمِنٌ فِيْ شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ يَتَّقِيْ رَبَّهُ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهٖ.

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث حسن صحیح، باب ماجاء ای الناس افضل، رقم: ۱۶۶۰

76. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : लोगों में सबसे अफ़ज़ल शख़्स कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वह शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करता हो। लोगों ने पूछा, फिर कौन? इर्शाद फ़रमाया : फिर वह शख़्स है जो किसी घाटी यानी तन्हाई में रहता हो, अपने रब से डरता हो और लोगों को अपने शर से महफ़ूज़ रखता हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 77 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ سُئِلَ: اَيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ اَكْمَلُ اِيْمَانًا؟ قَالَ: رَجُلٌ يُجَاهِدُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِنَفْسِهٖ وَ مَالِهٖ، وَرَجُلٌ يَعْبُدُ اللّٰهَ فِيْ شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ، قَدْ كَفَى النَّاسَ شَرَّهٗ.

رواه ابو داؤد، باب فی ثواب الجهاد، رقم: ۲۴۸۵

77. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला कौन है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान वालों में सबसे कामिल ईमान वाला वह शख़्स है जो अपनी जान और माल से अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करता हो और दूसरा वह शख़्स है जो किसी घाटी में रहकर अल्लाह तआ़ला की इबादत करता हो और लोगों को अपने शर से बचाए हुए हो। (अबूदाऊद)

﴿ 78 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَوْقِفُ سَاعَةٍ

فِىْ سَبِيْلِ اللهِ خَيْرٌ مِنْ قِيَامِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ عِنْدَ الْحَجَرِ الْاَسْوَدِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٠/ ٤٦٣

78. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में थोड़ी देर खड़ा रहना शबे क़द्र में हज्रे अस्वद के सामने इबादत करने से बेहतर है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 79 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لِكُلِّ نَبِيٍّ رَهْبَانِيَّةٌ، وَرَهْبَانِيَّةُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ الْجِهَادُ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ. رواه احمد ٣/ ٢٦٦

79. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर नबी के लिए कोई रहबानियत होती है और मेरी उम्मत की रहबानीयत अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद है। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : दुनिया और उसकी लज़्ज़तों से लातअल्लुक़ होने को रहबानियत कहते हैं।

﴿ 80 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ، وَاللهُ اَعْلَمُ بِمَنْ يُجَاهِدُ فِىْ سَبِيْلِهِ كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ الْخَاشِعِ الرَّاكِعِ السَّاجِدِ. رواه النسائى، باب مثل المجاهد فى سبيل الله عزوجل، رقم: ٣١٢٩

80. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले मुजाहिद की मिसाल, और अल्लाह तआ़ला ही ख़ूब जानते हैं कि कौन (उनकी रज़ा के लिए) उनकी राह में जिहाद करता है, उस शख़्स की-सी है जो रोज़ा रखने वाला, रात को इबादत करने वाला, अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से अल्लाह के सामने आजिज़ी करने वाला रुकूअ्-सज्दा करने वला हो। (नसाई)

﴿ 81 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ، كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ الْقَانِتِ بِاٰيَاتِ اللهِ لَا يَفْتُرُ مِنْ صَوْمٍ وَلَا صَدَقَةٍ حَتّٰى يَرْجِعَ الْمُجَاهِدُ اِلٰى اَهْلِهِ. (وهو بعض الحديث) رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ١٠/ ٤٨٦

81. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए मुजाहिद की मिसाल उस शख़्स की तरह है जो रोज़ा रखने वाला, रात भर नमाज़ में क़ुरआन पाक की तिलावत करने वाला हो

और उस वक़्त तक रोज़े-सदक़े में मुसलसल मशगूल रहे जब तक अल्लाह तआला की राह का मुजाहिद वापस आए यानी ऐसी इबादत करने वाले शख़्स के सवाब के बराबर मुजाहिद को सवाब मिलता है। (इब्ने हब्बान)

﴿ 82 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوْا.

رواه ابن ماجه، باب الخروج في النفير، رقم: ٢٧٧٣

82. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम से अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने को कहा जाए, तो तुम निकल जाया करो। (इब्ने माजा)

﴿ 83 ﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا أَبَا سَعِيْدٍ مَنْ رَضِيَ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ فَعَجِبَ لَهَا أَبُوْ سَعِيْدٍ فَقَالَ: أَعِدْهَا عَلَيَّ، يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَفَعَلَ ثُمَّ قَالَ: وَأُخْرٰى يُرْفَعُ بِهَا الْعَبْدُ مِائَةَ دَرَجَةٍ فِي الْجَنَّةِ، مَابَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قَالَ: وَمَا هِيَ؟ يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، الْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ.

رواه مسلم، باب بيان ما اعده الله تعالى للمجاهد......، رقم: ٤٨٧٩

83. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबू सईद! जो अल्लाह तआला को रब मानने और इस्लाम को दीन बनाने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर राज़ी हो तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। हज़रत अबू सईद ﷺ को यह बात बहुत अच्छी लगी। उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! दोबारा इर्शाद फ़रमाइए। आप ﷺ ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया। फिर फ़रमाया : एक दूसरी चीज़ भी है जिसकी वजह से बन्दे को जन्नत में सौ दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है, दो दर्जों का दर्मियानी फ़ासला आसमान व ज़मीन के दर्मियानी फ़ासले के बराबर है। उन्होंने पूछा : या रसूलुल्लाह! वह क्या चीज़ है? इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद है, अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद है। (मुस्लिम)

﴿ 84 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَاتَ رَجُلٌ بِالْمَدِيْنَةِ مِمَّنْ وُلِدَ بِهَا فَصَلّٰى عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: يَا لَيْتَهُ مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ قَالُوا: وَلِمَ ذَاكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ؟ قَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ قِيْسَ لَهُ مِنْ مَوْلِدِهِ إِلٰى مُنْقَطَعِ أَثَرِهِ فِي الْجَنَّةِ.

رواه النسائي، باب الموت بغير مولده، رقم: ١٨٣٣

84. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि एक साहिब का मदीना मुनव्वरा में इंतिक़ाल हुआ, जो मदीना मुनव्वरा में ही पैदा हुए थे। नबी करीम ﷺ ने उनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई फिर इर्शाद फ़रमाया, काश! ये शख़्स अपनी पैदाइश की जगह के अलावा किसी और जगह वफ़ात पाता। सहाबा ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप ने ऐसा क्यों इर्शाद फ़रमाया? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब अपनी पैदाइश की जगह के अलावा कहीं और वफ़ात पाता है तो पैदाइश की जगह से वफ़ात की जगह तक के फ़ासले की जगह को नाप कर उसे जन्नत में जगह दी जाती है। (नसाई)

﴿ 85 ﴾ عَنْ اَبِی قِرْصَافَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يٰاَيُّهَا النَّاسُ هَاجِرُوْا وَتَمَسَّكُوْا بِالْاِسْلَامِ، فَاِنَّ الْهِجْرَةَ لَا تَنْقَطِعُ مَا دَامَ الْجِهَادُ.

رواه الطبرانی ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٦٥٨/٩

85. हज़रत अबू क़िरसाफ़ा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) हिजरत करो और इस्लाम को मज़बूती से थामे रखो, क्योंकि जब तक जिहाद रहेगा (अल्लाह तआ़ला के रास्ते की) हिजरत भी ख़त्म नहीं होगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : यानी जैसे जिहाद क़ियामत तक बाक़ी रहेगा उसी तरह हिजरत भी बाक़ी रहेगी, जिसमें दीन फैलाने, दीन सीखने और दीन की हिफ़ाज़त के लिए अपने वतन वग़ैरह को छोड़ना मुश्किल है।

﴿ 86 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ وَ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ وَ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: الْهِجْرَةُ خَصْلَتَانِ، اِحْدَاهُمَا: هَجْرُ السَّيِّئَاتِ، وَالْاُخْرٰی: يُهَاجِرُ اِلَی اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ، وَلَا تَنْقَطِعُ الْهِجْرَةُ مَا تُقُبِّلَتِ التَّوْبَةُ، وَلَا تَزَالُ التَّوْبَةُ مَقْبُوْلَةً حَتّٰی تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنَ الْمَغْرِبِ، فَاِذَا طَلَعَتْ طُبِعَ عَلٰی كُلِّ قَلْبٍ بِمَا فِيْهِ، وَكُفِیَ النَّاسُ الْعَمَلَ.

رواه احمد و الطبرانی فی الاوسط والصغيرورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٤٥٦/٥

86. हज़रत मुआ़विया, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हिजरत की दो क़िस्में हैं : एक हिजरत बुराइयों को छोड़ना है दूसरी हिजरत अल्लाह तआ़ला और उनके रसूल की तरफ़ हिजरत करना है (यानी अपनी चीज़ों छोड़ कर) अल्लाह

तआला और उनके रसूल के रास्ते में हिजरत करना है। हिजरत उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक तौबा क़ुबूल होगी; तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल होगी जब तक सूरज मग़्रिब से तुलू न हो जाए। जब सूरज मग़्रिब से तुलू हो जाएगा तो उस वक़्त दिल जिस हालत (ईमान या कुफ़्र) पर होंगे उसी पर मुहर लगा दी जाएगी और लोगों के (पिछले) अ़मल ही (हमेशा के लिए कामयाब होने या नाकाम होने के लिए) काफ़ी होंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 87 ﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَيُّ الْهِجْرَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: أَنْ تَهْجُرَ مَا كَرِهَ رَبُّكَ عَزَّوَجَلَّ وَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْهِجْرَةُ هِجْرَتَانِ هِجْرَةُ الْحَاضِرِ وَهِجْرَةُ الْبَادِيْ، فَأَمَّا الْبَادِيْ فَيُجِيْبُ إِذَا دُعِيَ وَيُطِيْعُ إِذَا أُمِرَ، وَأَمَّا الْحَاضِرُ فَهُوَ أَعْظَمُهُمَا بَلِيَّةً وَأَعْظَمُهُمَا أَجْرًا. رواه النسائي باب هجرة البادى، رقم: ٤١٧٠

87. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स ने पूछा : या रसूलुल्लाह! सबसे अफ़ज़ल कौन-सी हिजरत है? इर्शाद फ़रमाया : तुम अपने रब की नापसन्दीदा चीज़ों को छोड़ दो और इर्शाद फ़रमाया : हिजरत दो क़िस्म की है। शहर में रहने वाले की हिजरत, देहात में रहने वाले की हिजरत। देहात में रहने वाले की हिजरत यह है कि जब उसको (अपनी जगह से) बुलाया जाए तो आ जाए और जब उसे कोई हुक्म दिया जए तो उसको माने (और शहरी की हिजरत भी यही है लेकिन) शहरी की हिजरत आज़माइश के एतबार से बड़ी है और अज्र मिलने के एतबार से भी अफ़ज़ल है। (नसाई)

फ़ायदा : क्योंकि शहर में रहने वाला बावजूद कसरते मशाग़िल और कसरते सामान के सब कुछ छोड़ कर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में हिजरत करता है लिहाज़ा उसका अल्लाह तआ़ला की राह में हिजरत करना बड़ी आज़माइश है इसलिए ज़्यादा अज्र मिलने का ज़रिया है।

﴾ 88 ﴿ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَتُهَاجِرُ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: هِجْرَةُ الْبَادِيَةِ أَوْهِجْرَةُ الْبَاتَّةِ؟ قُلْتُ: أَيُّهُمَا أَفْضَلُ؟ قَالَ: هِجْرَةُ الْبَاتَّةِ: أَنْ تَثْبُتَ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، وَهِجْرَةُ الْبَادِيَةِ: أَنْ تَرْجِعَ إِلَى بَادِيَتِكَ، وَعَلَيْكَ السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ فِي عُسْرِكَ وَيُسْرِكَ وَمَكْرَهِكَ وَمَنْشَطِكَ، وَأَثَرَةٍ عَلَيْكَ.

(وهو بعض الحديث) رواه الطبراني و رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٥/٤٥٨

88. हज़रत वासिला बिन असक़अ़ ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे

पूछा : तुम हिजरत करोगे? मैंने कहा : जी हां! इर्शाद फ़रमाया : हिजरते बादिया या हिजरत बात्ता (कौन-सी हिजरत करोगे?) मैंने अ़र्ज़ किया : उन दोनों में से कौन-सी अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : हिजरत बात्ता। और हिजरत बात्ता यह है कि तुम (मुस्तक़िल तौर पर अपने वतन को छोड़ कर) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ क़ियाम करो (यह हिजरत नबी करीम ﷺ के ज़माने में फ़त्हे मक्का से पहले मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ थी) और हिजरत बादिया यह है कि तुम (वक़्ती तौर पर दीनी मक़सद के लिए अपने वतन को छोड़ कर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलो और फिर) वापस अपने इलाक़े में लौट जाओ। तुम पर (हर हाल में) तंगी हो या आसानी, दिल चाहे या न चाहे और दूसरे को तुम से आगे किया जाए अमीर की बात को सुनना और मानना ज़रूरी है। (तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿ 89 ﴾ عَنْ اَبِی فَاطِمَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: عَلَيْكَ بِالْهِجْرَةِ فَاِنَّهُ لَا مِثْلَ لَهَا.

رواه النسائی، باب الحث علی الهجرة، رقم: ٤١٧٢

89. हज़रत अबू फ़ातिमा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ज़रूर हिजरत करते रहो, क्योंकि हिजरत जैसा कोई अ़मल नहीं यानी हिजरत सबसे अफ़ज़ल अ़मल है। (नसाई)

﴿ 90 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَفْضَلُ الصَّدَقَاتِ ظِلُّ فُسْطَاطٍ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَمَنِيْحَةُ خَادِمٍ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، اَوْ طَرُوْقَةُ فَحْلٍ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ.

رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب ماجاء فی فضل الخدمة فی سبيل اللّٰه، رقم: ١٦٢٧

90. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बेहतरीन सदक़ा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़ेमा के साये का इंतज़ाम करना है और अल्लाह तआ़ला के रास्ते में काम देने वाला ख़ादिम देना है और जवान ऊंटनी अल्लाह तआ़ला की राह में देना है (ताकि वह सवारी वग़ैरह के काम आ सके)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 91 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ لَمْ يَغْزُ اَوْ يُجَهِّزْ غَازِيًا اَوْ يَخْلُفْ غَازِيًا فِیْ اَهْلِهٖ بِخَيْرٍ، اَصَابَهُ اللّٰهُ بِقَارِعَةٍ. قَالَ يَزِيْدُ بْنُ عَبْدِ رَبِّهٖ فِیْ حَدِيْثِهٖ: قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

رواه ابو داؤد، باب كراهية ترك الغزو، رقم: ٢٥٠٣

91. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : जिस शख़्स ने न जिहाद किया और न किसी मुजाहिद का सामान तैयार किया और न ही किसी मुजाहिद के अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने के बाद उसके घर वालों की ख़बरगीरी की, तो वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से किसी-न-किसी मुसीबत में मुब्तला होगा। हदीस के रावी यज़ीद बिन अ़ब्दे रब्बिही कहते हैं कि इससे मुराद क़ियामत से पहले की मुसीबत है। (अबूदाऊद)

﴿ 92 ﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ بَعَثَ اِلٰی بَنِیْ لِحْیَانَ فَقَالَ: لِیَخْرُجْ مِنْ کُلِّ رَجُلَیْنِ رَجُلٌ ثُمَّ قَالَ لِلْقَاعِدِ: اَیُّکُمْ خَلَفَ الْخَارِجَ فِیْ اَھْلِہٖ وَمَالِہٖ بِخَیْرٍ، کَانَ لَہٗ مِثْلُ نِصْفِ اَجْرِ الْخَارِجِ.

رواہ مسلم، باب فضل اعانۃ الغازی فی سبیل اللّٰہ، رقم: ۴۹۰۷

92. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने क़बीला बनू लिह्यान के पास पैग़ाम भेजा कि हर दो आदमियों में से एक आदमी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले। फिर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में (इस मौक़े पर) न जाने वालों से इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों के अह्ल व अ़याल और माल की उनकी ग़ैर मौजूदगी में अच्छी तरह देखभाल करे, तो उसको अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के अज्र का आधा अज्र मिलता है। (मुस्लिम)

﴿ 93 ﴾ عَنْ زَیْدِ بْنِ خَالِدِ الْجُھَنِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ جَھَّزَ حَاجًّا، اَوْ جَھَّزَ غَازِیًا، اَوْ خَلَفَہٗ فِیْ اَھْلِہٖ، اَوْ فَطَّرَ صَائِمًا، فَلَہٗ مِثْلُ اَجْرِہٖ مِنْ غَیْرِ اَنْ یَنْقُصَ مِنْ اَجْرِہٖ شَیْئًا.

رواہ البیھقی فی شعب الایمان ۳/ ۴۸۰

93. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स हज पर जाने या अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के सफ़र की तैयारी कराए या उसके पीछे उसके घर वालों की देखभाल रखे या किसी रोज़ेदार को इफ़तार कराए, तो उसको अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने वाले और हज पर जाने वाले और रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलता है और उनके सवाब में कुछ कमी नहीं होती। (बैहक़ी)

﴿ 94 ﴾ عَنْ زَیْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ جَھَّزَ غَازِیًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ فَلَہٗ مِثْلُ اَجْرِہٖ وَمَنْ خَلَفَ غَازِیًا فِیْ اَھْلِہٖ بِخَیْرٍ، وَاَنْفَقَ عَلٰی اَھْلِہٖ فَلَہٗ مِثْلُ اَجْرِہٖ.

رواہ الطبرانی فی الاوسط و رجالہ رجال الصحیح، مجمع الزوائد ۵/ ۵۱۵

94. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के सफ़र की तैयारी कराए उसको अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वाले के बराबर सवाब मिलता है तो जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों के घर वालों की अच्छी तरह देखभाल करे और उन पर ख़र्च करे, उसको भी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों के बराबर सवाब मिलता है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 95 ﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: حُرْمَةُ نِسَاءِ الْمُجَاهِدِيْنَ عَلَى الْقَاعِدِيْنَ كَحُرْمَةِ اُمَّهَاتِهِمْ، وَاِذَا خَلَفَهُ فِيْ اَهْلِهِ فَخَانَهُ قِيْلَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: هٰذَا خَانَكَ فِيْ اَهْلِكَ فَخُذْ مِنْ حَسَنَاتِهِ مَاشِئْتَ، فَمَا ظَنُّكُمْ؟

رواه النسائی، باب من خان غازيا فی اهله،رقم:۳۱۹۲

95. हज़रत बुरैदा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकले हुए लोगों की औरतों की इ़ज़्ज़त अल्लाह तआ़ला के रास्ते में न जाने वालों पर ऐसी है जैसी खुद उनकी मांओं की इ़ज़्ज़त उनके लिए है, (लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकलने वालों की औरतों की इ़ज़्ज़त व आबरू का ख़ास तौर पर ख़्याल रखा जाए) अगर अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जाने वाले ने किसी शख़्स को अपने अह्ल व अ़याल का निगरां बनाया फिर उसने उसके अह्ल व अ़याल (की इ़ज़्ज़त व आबरू) में ख़ियानत की तो क़ियामत के दिन उससे कहा जाएगा कि यह है वह शख़्स जिसने (तुम्हारे पीछे) तुम्हारे अह्ल व अ़याल के साथ बुरा मामला किया था, लिहाज़ा उसकी नेकियों में से जितना चाहे ले लो। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐसी हालत में तुम्हारा क्या ख़्याल है (क्या वह उसकी नेकियों में से कुछ नेकियां छोड़ देगा क्योंकि उस वक़्त आदमी एक-एक नेकी को तरस रहा होगा)। (नसाई)

﴿ 96 ﴾ عَنْ اَبِيْ مَسْعُوْدٍ الْاَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ بِنَاقَةٍ مَخْطُوْمَةٍ فَقَالَ: هٰذِهِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَكَ بِهَا، يَوْمَ الْقِيَامَةِ، سَبْعُ مِائَةِ نَاقَةٍ، كُلُّهَا مَخْطُوْمَةٌ.

رواه مسلم، باب فضل الصدقة فی سبيل الله...،رقم:۴۸۹۷

96. हज़रत मस्ऊद अन्सारी ﷺ फ़रमाते हैं कि एक आदमी नकेल पड़ी हुई ऊंटनी लेकर आया और रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मैं यह ऊंटनी अल्लाह तआ़ला के रास्ते में (देता हूं)। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें

क़ियामत के दिन उसके बदले में ऐसी सात सौ ऊंटनियां मिलेंगी कि उन सब में नकेल पड़ी हुई होगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नकेल पड़े होने की वजह से ऊंटनी क़ाबू में रहती है और उस पर सवारी आसान होती है।

﴿ 97 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ فَتًى مِنْ اَسْلَمَ قَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّيْ اُرِيْدُ الْغَزْوَ وَلَيْسَ مَعِيَ مَا اَتَجَهَّزُ، قَالَ: اِئْتِ فُلاَنًا فَاِنَّهُ قَدْ كَانَ تَجَهَّزَ فَمَرِضَ، فَاَتَاهُ فَقَالَ: اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يُقْرِئُكَ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ: اَعْطِنِي الَّذِيْ تَجَهَّزْتَ بِهِ، قَالَ: يَا فُلاَنَةُ! اَعْطِيْهِ الَّذِيْ تَجَهَّزْتُ بِهِ، وَلَا تَحْبِسِيْ عَنْهُ شَيْئًا، فَوَاللهِ! لَا تَحْبِسِيْ مِنْهُ شَيْئًا فَيُبَارَكَ لَكِ فِيْهِ.

رواه مسلم، باب فضل اعانة الغازي......،رقم:٤٩٠١

97. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि क़बीला अस्लम के एक नौजवान ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं जिहाद में जाना चाहता हूं लेकिन मेरे पास तैयारी के लिए कोई सामान नहीं है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फ़्लां शख़्स के पास जाओ। उन्होंने जिहाद की तैयारी की हुई थी अब वह बीमार हो गए हैं (उनसे कहना कि अल्लाह के रसूल ﷺ तुम्हें सलाम कह रहे हैं और उनसे यह भी कहना कि तुमने जिहाद के लिए जो सामान तैयार किया था वह मुझे दे दो) चुनांचे वह नौजवान उन अन्सारी के पास गए और कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें सलाम कहलवाया है और फ़रमाया है कि आप मुझे वह सामान दे दें जो आपने जिहाद के लिए तैयार किया है। उन्होंने (अपनी बीवी से) कहा फ़्लांनी! मैंने जो सामान तैयार किया था वह इनको दे दो और उस सामान में से कोई चीज़ रोक कर न रखना। अल्लाह तआ़ला की क़सम! तुम इसमें से जो चीज़ भी रोक कर रखोगी उसमें तुम्हारे लिए बरकत नहीं होगी। (मुस्लिम)

﴿ 98 ﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ حَبَسَ فَرَسًا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كَانَ سِتْرَهُ مِنْ نَارٍ.

رواه عبد بن حميد، المسند الجامع ٥/٥٤٧

98. हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में घोड़ा वक़्फ़ किया तो उसका यह अ़मल जहन्नम की आग से आड़ बनेगा। (अब्द बिन हुमैद, मुस्नद जामेअ़)

अल्लाह तआला के रास्ते में निकलने के आदाब व आमाल

कुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۝ اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْيَخْشٰى ۝ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴾

[طه: ٤٢-٤٦]

अल्लाह तआला ने जब मूसा ﷺ व हारून ﷺ को फ़िरऔन के पास दावत के लिए भेजा तो फ़रमाया : अब तुम और तुम्हारे भाई दोनों मेरी निशानियां लेकर जाओ और तुम दोनों मेरे ज़िक्र में सुस्ती न करना। तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ वह सरकश हो गया है। फिर वहां जाकर उससे नर्म बात करना शायद वह नसीहत मान ले या अ़ज़ाब से डर जाए। दोनों भाइयों ने अ़र्ज़ किया : ऐ हमारे रब! हम इस बात से डरते हैं कि कहीं वह हम पर ज़्यादती न कर बैठे या वह और ज़्यादा सरकशी न करने लगे (कि जिस ज़्यादती और सरकशी की वजह से हम तब्लीग़ न कर सकें) अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : बेशक मैं तुम दोनों के साथ हूं, सब कुछ सुनता और देखता हूं, यानी तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगा और फ़िरऔन पर रोब डाल दूंगा, ताकि तुम

पूरी तब्लीग़ कर सको। (ताहा : 42-46)

وَقَالَ تَعَالٰى : ﴿ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ج وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ص فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ج فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴾ [آل عمران:١٥٩]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : ऐ नबी! यह अल्लाह तआ़ला की बड़ी मेहरबानी है कि आप उनके हक़ में नर्म दिल वाक़े हुए और अगर कहीं आप तुन्दख़ू और दिल के सख़्त होते तो ये लोग कभी के आपके पास से मुंतशिर हो चुके होते। सो अब आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनके लिए अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब कीजिए और उनसे अहम कामों में मश्विरा करते रहा कीजिए। फिर जब आप किसी चीज़ का पुख़्ता इरादा कर लें तो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा कीजिए। बेशक अल्लाह तआ़ला तवक्कुल करने वालों को महबूब रखता है। (आले इमरान : 159)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ط اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴾ [الاعراف: ١٩٩-٢٠٠]

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : दरगुज़र करने को आप अपनी आदत बनाइए और नेकी का हुक्म करते रहिए (और जो इस नेकी के हुक्म के बाद भी जिहालत की वजह से न माने, तो ऐसे) जाहिलों से एराज़ कीजिए, यानी उनसे उलझने की ज़रूरत नहीं और अगर (उनकी जिहालत पर इत्तिफ़ाक़न) आपको शैतान की तरफ़ से (ग़ुस्से का) कोई वस्वसा आने लगे, तो इस हालत में फ़ौरन अल्लाह तआ़ला की पनाह मांग लिया कीजिए। बिलाशुब्हा वह ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (आराफ़ : 199-200)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴾ [المزمل:١٠]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और ये लोग जो तकलीफ़देह बातें करते हैं आप उन बातों पर सब्र कीजिए और ख़ुशउस्लूबी के साथ उनसे इलाहिदा हो जाइए, यानी न तो शिकायत कीजिए और न ही इंतक़ाम की फ़िक्र कीजिए। (मुज़्ज़म्मिल : 10)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿ 99 ﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حَدَّثَتْ أَنَّهَا قَالَتْ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! هَلْ أَتَى عَلَيْكَ يَوْمٌ كَانَ أَشَدَّ مِنْ يَوْمِ أُحُدٍ؟ فَقَالَ: لَقَدْ لَقِيْتُ مِنْ قَوْمِكِ، وَكَانَ أَشَدُّ مَا لَقِيْتُ مِنْهُمْ يَوْمَ الْعَقَبَةِ، إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِيْ عَلَى ابْنِ عَبْدِ يَالِيْلَ بْنِ عَبْدِ كُلَالٍ، فَلَمْ يُجِبْنِيْ إِلَى مَا أَرَدْتُ، فَانْطَلَقْتُ وَأَنَا مَهْمُوْمٌ عَلَى وَجْهِيْ، فَلَمْ أَسْتَفِقْ إِلَّا بِقَرْنِ الثَّعَالِبِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِيْ فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِيْ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِيْهَا جِبْرَئِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ، فَنَادَانِيْ، فَقَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ وَمَا رَدُّوْا عَلَيْكَ، وَقَدْ بَعَثَ إِلَيْكَ مَلَكَ الْجِبَالِ لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ فِيْهِمْ، قَالَ: فَنَادَانِيْ مَلَكُ الْجِبَالِ وَسَلَّمَ عَلَيَّ، ثُمَّ قَالَ: يَامُحَمَّدُ! إِنَّ اللهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ لَكَ، وَأَنَا مَلَكُ الْجِبَالِ، وَقَدْ بَعَثَنِيْ رَبُّكَ إِلَيْكَ لِتَأْمُرَنِيْ بِأَمْرِكَ، فَمَاشِئْتَ؟ (إِنْ شِئْتَ) أَطْبَقْتُ عَلَيْهِمُ الْأَخْشَبَيْنِ، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: بَلْ أَرْجُوْ أَنْ يُخْرِجَ اللهُ تَعَالَى مِنْ أَصْلَابِهِمْ مَنْ يَعْبُدُ اللهَ وَحْدَهُ، لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا. رواه مسلم، باب مالقى النبى ﷺ من اذى المشركين والمنافقين، رقم: ٤٦٥٣

99. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप पर उहुद के दिन से भी ज़्यादा सख़्त कोई दिन गुज़रा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे तुम्हारी क़ौम से बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं। सबसे ज़्यादा तकलीफ़ अक़बा (ताइफ़) के दिन उठानी पड़ीं। मैंने (अह्ले ताइफ़ के सरदार) इब्ने अ़ब्द यालील बिन अ़ब्दे कुलाल के सामने अपने आपको पेश किया (कि मुझ पर ईमान लाओ, मेरी नुस्रत करो और मुझे अपने यहां ठहरा कर दावत का काम आज़ादी से करने दो) लेकिन उसने मेरी बात न मानी। मैं (ताइफ़ से) बहुत ग़मगीन और परेशान होकर अपने रास्ते पर (वापस) चल पड़ा। क़रने सआ़लिब मक़ाम पर पहुंचकर (मेरे इस ग़म और परेशानी में) कुछ कमी आई तो मैंने अपना सर उठाया तो देखा कि एक बादल का टुकड़ा मुझ पर सांया किए हुए है। मैंने ग़ौर से देखा तो उसमें हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम थे। उन्होंने मुझे पुकारा और अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू जो आपसे हुई सुनी और उनके जवाबात सुने और पहाड़ों पर मुतऐय्यन फ़रिश्तों को आपके पास भेजा है कि आप उन कुफ़्फ़ार के बारे में जो चाहें उसे हुक्म दें। उसके बाद पहाड़ों के फ़रिश्त ने मुझे

आवाज़ देकर सलाम किया और अ़र्ज़ किया : ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआ़ला ने आपकी क़ौम की वह गुफ़्तगू जो आपसे हुई, सुनी। मैं पहाड़ों का फ़रिश्ता हूं, मुझे आपके रब ने आपके पास इसलिए भेजा है कि आप मुझे जो चाहें हुक्म फ़रमाएं। आप क्या चाहते हैं? अगर आप चाहें तो मैं मक्का के दोनों पहाड़ों (अबू क़बीस और अहमर) को मिला दूं (जिससे ये सब दर्मियान में कुचल जाएं) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला उनकी पुशतों में से ऐसे लोगों को पैदा फ़रमाएंगे जो अल्लाह तआ़ला की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगे। (मुस्लिम)

﴿ 100 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِيْ سَفَرٍ فَاَقْبَلَ اَعْرَابِيٌّ فَلَمَّا دَنَا قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: اَيْنَ تُرِيْدُ؟ قَالَ: اِلٰى اَهْلِيْ قَالَ: هَلْ لَكَ فِيْ خَيْرٍ؟ قَالَ: وَمَاهُوَ؟ قَالَ: تَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، قَالَ: مَنْ شَاهِدٌ عَلٰى مَاتَقُوْلُ؟ قَالَ: هٰذِهِ الشَّجَرَةُ فَدَعَا هَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَهِيَ بِشَاطِئِ الْوَادِي فَاَقْبَلَتْ تَخُدُّ الْاَرْضَ خَدًّا حَتّٰى جَاءَتْ بَيْنَ يَدَيْهِ فَاسْتَشْهَدَهَا ثَلَاثًا فَشَهِدَتْ اَنَّهُ كَمَا قَالَ، ثُمَّ رَجَعَتْ اِلٰى مَنْبَتِهَا وَرَجَعَ الْاَعْرَابِيُّ اِلٰى قَوْمِهٖ وَقَالَ: اِنْ يَتَّبِعُوْنِيْ آتِيْكَ بِهِمْ وَاِلَّا رَجَعْتُ اِلَيْكَ فَكُنْتُ مَعَكَ۔

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، رواه ابويعلى ايضا والبزار، مجمع الزوائد ٨/١٧٥

100. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, सामने से एक देहाती शख़्स आते हुए नज़र आए। जब वह रसूलुल्लाह ﷺ के क़रीब पहुंचे तो उनसे रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा, कहां का इरादा है? उन्होंने कहा, अपने घर जा रहा हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें कोई भली बात चाहिए? उन्होंने कहा, वह भली बात क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम कलिमा-ए-शहादत 'अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह॰ पढ़ लो। उन्होंने कहा जो बात आप कह रहे हैं उस पर कौन गवाह है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह दरख़्त गवाह है, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने उस दरख़्त को बुलाया जो वादी के किनारे पर था। वह दरख़्त ज़मीन को फाड़ता हुआ आप ﷺ के सामने आकर खड़ा हो गया। आप ﷺ ने उससे तीन मर्तबा गवाही तलब फ़रमाई, उसने तीन मर्तबा गवाही दी कि रसूलुल्लाह ﷺ जैसा फ़रमा रहे हैं वैसा ही है, फिर वह दरख़्त अपनी जगह वापस चला गया (यह

सब कुछ देखकर देहात के रहने वाले वह शख़्स बड़े मुतास्सिर हुए) और अपनी क़ौम के पास वापस जाते हुए उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया कि अगर मेरी क़ौम वालों ने मेरी बात मान ली, तो मैं उन सबको आपके पास ले आऊंगा, वरना मैं ख़ुद आपके पास वापस आऊंगा और आपके साथ रहूंगा।

(तबरानी, अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿101﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِعَلِيٍّ يَوْمَ خَيْبَرَ: اُنْفُذْ عَلٰى رِسْلِكَ، حَتّٰى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ، وَاَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللهِ فِيْهِ، فَوَاللهِ! لَاَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلًا وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ اَنْ يَكُوْنَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ۔ (وهو جزء من الحديث) رواه مسلم،باب من فضائل على بن ابى طالب رضى الله عنه، رقم: ٦٢٢٣

101. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ज़्वा ख़ैबर के दिन हज़रत अ़ली ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : तुम इत्मीनान से चलते रहो यहां तक कि ख़ैबर वालों के मैदान में पड़ाव डालो। फिर उनको इस्लाम की दावत दो और अल्लाह तआ़ला के जो हुक़ूक़ उन पर हैं उनको बताना। अल्लाह तआ़ला की क़सम! अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ज़रिए से एक आदमी को भी हिदायत दे दें ये तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊंटों के मिल जाने से बेहतर है। (मुस्लिम)

फ़ायदा : अरबों में सुर्ख़ ऊंट बहुत क़ीमती माल समझा जाता था।

﴿102﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ آيَةً۔ (الحديث) رواه البخارى،باب ماذكر عن بنى اسرائيل، رقم: ٣٤٦١

102. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी तरफ़ से पहुंचाओ अगरचे एक ही आयत हो। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस का मक़सद यह है कि जहां तक हो सके दीन की बात पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए। हो सकता है कि तुम जिस बात को दूसरों तक पहुंचा रहे हो गो वह बहुत मुख़्तसर हो मगर उससे दूसरे को हिदायत मिल जाए जिसका अज्र तुम्हें भी मिलेगा और बेशुमार नेकियों से नवाज़े जाओगे। (मज़ाहिरे हक़)

﴿103﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَائِذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا بَعَثَ بَعْثًا قَالَ: تَاَلَّفُوا النَّاسَ، وَتَاَنَّوْا بِهِمْ، وَلَا تُغِيْرُوْا عَلَيْهِمْ حَتّٰى تَدْعُوْهُمْ فَمَا عَلَى الْاَرْضِ مِنْ اَهْلِ بَيْتِ

مَـدَرٍ وَلَا وَبَـرٍ اِلَّا وَاَنْ تَـاْتُـوْنِـيْ بِهِـمْ مُسْلِمِيْنَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ اَنْ تَقْتُلُوْا رِجَالَهُمْ، وَتَاْتُوْنِيْ بِنِسَائِهِمْ۔

المطالب العالية ٢/١٦٦، وذكر صاحب الاصابة بنحوه ٣/١٥٢

103. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन आइज़ ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ कोई लशकर रवाना करते तो उनको फ़रमाते कि लोगों से उल्फ़त पैदा करो, यानी उनको अपने से मानूस करो, उनके साथ नर्मी का बरताव करो और जब तक उनको दावत न दे दो उन पर हमला न करो क्योंकि रुए ज़मीन पर जितने कच्चे और पक्के मकान हैं यानी जितने शहर और देहात हैं उनके रहने वालों को अगर तुम मुसलमान बना कर मेरे पास ले आओ यह मुझे उससे ज़्यादा महबूब है कि तुम उनके मर्दों को क़त्ल करो और उनकी औरतों को मेरे पास (बांदियां बना कर) ले आओ।

(मतालिब आलिया, इसाबा)

﴿104﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَسْمَعُوْنَ وَيُسْمَعُ مِنْكُمْ، وَيُسْمَعُ مِمَّنْ يَسْمَعُ مِنْكُمْ۔

رواه ابوداؤد، باب فضل نشر العلم، رقم: ٣٦٥٩

104. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आज तुम मुझ से दीन की बातें सुनते हो, कल तुम से दीन की बातें सुनी जाएंगी। फिर उन लोगों से दीन की बातें सुनी जाएंगी जिन लोगों ने तुम से दीन की बातें सुनी थीं (लिहाज़ा तुम ख़ूब ध्यान से सुनो और उसको अपने बाद वालों तक पहंचाओ, फिर वे लोग अपने बाद वालों तक पहुंचाएंगे और यह सिलसिला चलता रहे)।

(अबूदाऊद)

﴿105﴾ عَنِ الْاَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا اَنَا اَطُوْفُ بِالْبَيْتِ فِيْ زَمَنِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اِذْ جَاءَ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ لَيْثٍ وَاَخَذَ بِيَدِيْ فَقَالَ: اَلَا اُبَشِّرُكَ؟ قُلْتُ: بَلٰى! فَقَالَ: هَلْ تَذْكُرُ اِذْ بَعَثَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِلٰى قَوْمِكَ بَنِيْ سَعْدٍ فَجَعَلْتُ اَعْرِضُ عَلَيْهِمُ الْاِسْلَامَ وَ اَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ فَقُلْتَ اَنْتَ اِنَّكَ تَدْعُوْ اِلَى الْخَيْرِ وَتَاْمُرُ بِالْخَيْرِ وَاِنَّهُ لَيَدْعُوْ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُ بِالْخَيْرِ فَبَلَّغْتُ ذٰلِكَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْاَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ، فَكَانَ الْاَحْنَفُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَمَلِيْ شَيْءٌ اَرْجٰى لِيْ مِنْهُ۔

رواه الحاكم في المستدرك ٣/٦١٤

105. हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उस्मान ﷺ के ज़माने में बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा था कि इतने में क़बीला बनू लैस के एक आदमी

आए। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कहा, क्या मैं तुमको एक ख़ुशख़बरी न सुना दूं? मैंने कहा, ज़रूर सुना दें। उन्होंने कहा, क्या तुम्हें याद है जबकि रसूलुल्लाह ने मुझे तुम्हारी क़ौम बनी साद के पास (इस्लाम की दावत देने के लिए) भेजा था तो मैंने उन पर इस्लाम को पेश करना शुरू किया और उनको इस्लाम की दावत देने लगा। उस वक़्त तुम ने कहा था कि तुम हमें भलाई की दावत दे रहे हो और भली बात का हुक्म कर रहे हो और वह (रसूलुल्लाह ﷺ) भी भलाई की दावत दे रहे हैं और भली बात का हुक्म कर रहे हैं, यानी तुमने रसूलुल्लाह ﷺ की दावत की तस्दीक़ की तो मैंने तुम्हारी यह बात रसूलुल्लाह ﷺ को पहुंचा दी थी। आप ﷺ ने (तुम्हारी) इस (तस्दीक़) पर फ़रमाया था : "या अल्लाह अहनफ़ बिन क़ैस की मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए"। हज़रत अहनफ़ رحمه الله फ़रमाया करते थे मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की इस दुआ़ से ज़्यादा अपने किसी अ़मल पर उम्मीद नहीं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿106﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اَرْسَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ رَجُلاً مِنْ اَصْحَابِهٖ اِلٰی رَاْسٍ مِنْ رُؤُوْسِ الْمُشْرِكِیْنَ یَدْعُوْهُ اِلَی اللّٰهِ فَقَالَ: هٰذَا الْاِلٰهُ الَّذِیْ تَدْعُوْ اِلَیْهِ اَمِنْ فِضَّةٍ هُوَ؟ اَمْ مِنْ نُحَاسٍ هُوَ؟ فَتَعَاظَمَ مَقَالَتُهٗ فِیْ صَدْرِ رَسُوْلِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَرَجَعَ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَاَخْبَرَهٗ فَقَالَ: ارْجِعْ اِلَیْهِ فَادْعُهٗ اِلَی اللّٰهِ، فَرَجَعَ فَقَالَ لَهٗ مِثْلَ مَقَالَتِهٖ فَاَتٰی رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ فَاَخْبَرَهٗ فَقَالَ: ارْجِعْ اِلَیْهِ فَادْعُهٗ اِلَی اللّٰهِ، وَرَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ فِی الطَّرِیْقِ لَا یَعْلَمُ فَاَتَی النَّبِیَّ ﷺ فَاَخْبَرَهٗ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ صَاحِبَهٗ وَنَزَلَتْ عَلَی النَّبِیِّ ﷺ "وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ". رواه ابو یعلی، قال المحقق: اسناده حسن ٣/٣٥١

106. हज़रत अनस رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक सहाबी को मुशिरकीन के सरदारों में से एक सरदार के पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत देने के लिए भेजा (चुनांचे उन्होंने जाकर उसको दावत दी) उस मुशिरक ने कहा कि जिस माबूद की तरफ़ तुम मुझे दावत दे रहे हो, वह चांदी का बना हुआ है या तांबे का? उस मुशिरक की बात रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ से भेजे हुए क़ासिद को बहुत नागवार गुज़री। वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और आपको मुशिरक की यह बात बताई। आप ﷺ ने सहाबी से इर्शाद फ़रमाया : तुम दोबारा उस मुशिरक को जाकर दावत दो। चुनांचे उन्होंने दोबारा जाकर दावत दी। मुशिरक ने अपनी पहली बात दोहराई। वह सहाबी रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और मुशिरक की बात बताई। आप ﷺ ने फिर इर्शाद फ़रमाया : जाओ उसको दावत दो (चुनांचे वह सहाबी तीसरी मर्तबा

दावत देने के लिए तशरीफ़ ले गए) फिर वापस आकर रसूलुल्लाह ﷺ को बताया कि अल्लाह तआ़ला ने तो उस मुश्रिक को (बिजली की कड़क भेजकर) हलाक कर दिया है। रसूलुल्लाह ﷺ रास्ते में थे आपको इस वाक़िआ का इल्म नहीं था, उस मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ पर अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नाज़िल हुआ। तर्जुमा : और अल्लाह तआ़ला ज़मीन की तरफ़ बिजलियां भेजते हैं, फिर जिस पर चाहे गिरा देते हैं और ये लोग अल्लाह तआ़ला के बारे में झगड़ते हैं। (मुस्नद अहमद, अबूयाला)

﴿107﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ لِمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حِيْنَ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ: إِنَّكَ سَتَأْتِيْ قَوْمًا أَهْلَ كِتَابٍ، فَإِذَا جِئْتَهُمْ فَادْعُهُمْ إِلَى أَنْ يَشْهَدُوْا أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ،فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوْا لَكَ بِذٰلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوْا لَكَ بِذٰلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً تُؤْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ فَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ، فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوْا لَكَ بِذٰلِكَ فَإِيَّاكَ وَكَرَائِمَ أَمْوَالِهِمْ، وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ، فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللهِ حِجَابٌ۔

رواه البخاري،باب اخذ الصدقة من الاغنياء......،رقم: ١٤٩٦

107. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल ﷺ को यमन भेजा, तो उनको यह हिदायत दी कि तुम ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो अह्ले किताब हैं। जब तुम उनके पास पहुंच जाओ तो उनको इस बात की दावत देना कि वे यह गवाही दें कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं है और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। अगर वे तुम्हारी बात मान लें, तो फिर उनको बताना कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर उनको बताना कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ की है, जो उनके मालदारों से लेकर उनके गरीबों को दी जाएगी। अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर उनके उम्दा मालों के लेने से बचना यानी ज़कात में दर्मियाना दर्जे का माल लेना उम्दा माल न लेना और मज़्लूम की बद-दुआ़ से बचना, क्योंकि उसकी बद-दुआ़ और अल्लाह तआ़ला के दर्मियान कोई आड़ नहीं। (बुख़ारी)

﴿108﴾ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَعَثَ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيْدِ إِلَى أَهْلِ الْيَمَنِ يَدْعُوْهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ، قَالَ الْبَرَاءُ: فَكُنْتُ فِيْمَنْ خَرَجَ مَعَ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيْدِ فَأَقَمْنَا

سِتَّةَ اَشْهُرٍ يَدْعُوْهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ فَلَمْ يُجِيْبُوْهُ، ثُمَّ اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَعَثَ عَلِيَّ بْنَ اَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَاَمَرَهُ اَنْ يُقْفِلَ خَالِدًا اِلَّا رَجُلًا كَانَ مِمَّنْ مَعَ خَالِدٍ فَاَحَبَّ اَنْ يُعَقِّبَ مَعَ عَلِيٍّ فَلْيُعَقِّبْ مَعَهُ، قَالَ الْبَرَاءُ: فَكُنْتُ فِيْمَنْ عَقَّبَ مَعَ عَلِيٍّ فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنَ الْقَوْمِ خَرَجُوْا اِلَيْنَا ثُمَّ تَقَدَّمَ فَصَلّٰى بِنَا عَلِيٌّ ثُمَّ صَفَّنَا صَفًّا وَاحِدًا ثُمَّ تَقَدَّمَ بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَقَرَاَ عَلَيْهِمْ كِتَابَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاَسْلَمَتْ هَمْدَانُ جَمِيْعًا، فَكَتَبَ عَلِيٌّ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِاِسْلَامِهِمْ، فَلَمَّا قَرَاَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْكِتَابَ خَرَّ سَاجِدًا ثُمَّ رَفَعَ رَاْسَهُ فَقَالَ: "اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ، اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ" قال البيهقى: رواه البخارى مختصرا من وجه آخر عن ابراهيم بن يوسف، البداية والنهاية ١٠١/٥

108. हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ को इस्लाम की दावत देने के लिए यमन भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साथ जाने वाली जमाअ़त में मैं भी था। हम छ : महीने वहां ठहरे। हज़रत ख़ालिद उनको दावत देते रहे लेकिन उन्होंने इस दावत को क़ुबूल न किया। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ को वहां भेजा और उनसे फ़रमाया कि हज़रत ख़ालिद को तो वापस भेज दें और उनके साथियों में से जो तुम्हारे साथ वहा रहना चाहें वे रह जाएं। चुनांचे हज़रत बरा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं भी उन लोगों में था जो हज़रत अ़ली ﷺ के साथ ठहर गए। जब हम यमन वालों के बिल्कुल क़रीब पहुंचे तो वह भी निकल कर हमारे सामने आ गए। हज़रत अ़ली ﷺ ने आगे बढ़कर हमें नमाज़ पढ़ाई, फिर हमारी एक सफ़ बनाई और हम से आगे बढ़कर उनको रसूलुल्लाह ﷺ का ख़त सुनाया। ख़त सुनकर क़बीला हमदान सारा ही मुसलमान हो गया। हज़रत अ़ली ﷺ ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में क़बीला हमदान के मुसलमान होने की ख़ुशख़बरी का ख़त भेजा। जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वह ख़त पढ़ा तो (ख़ुशी की वजह से) सज्दा में गिर गए, फिर आप ﷺ ने सज्दा से सर उठाकर क़बीला हमदान को दुआ दी कि हमदान पर सलामती हो, हमदान पर सलामती हो।

(बुख़ारी, बैहक़ी, अलबिदायः वन्निहायः)

﴿109﴾ عَنْ خُرَيْمِ بْنِ فَاتِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ اَنْفَقَ نَفَقَةً فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كُتِبَتْ لَهُ سَبْعُمِائَةِ ضِعْفٍ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء فى فضل النفقة فى سبيل الله، رقم: ١٦٢٥

109. हज़रत ख़ुरैम बिन फ़ातिक ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के रास्ते में कुछ ख़र्च करता है वह उसके आ़मालनामा में सात सौ गुना लिखा जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿110﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الصَّلَاةَ وَالصِّيَامَ وَالذِّكْرَ يُضَاعَفُ عَلَى النَّفَقَةِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ۔

رواه ابو داؤد، باب في تضعيف الذكر في سبيل الله عزّوجلّ رقم: ٢٤٩٨

110. हज़रत मुआ़ज़ ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में नमाज़, रोज़ा और ज़िक्र का सवाब अल्लाह तआ़ला की राह में माल ख़र्च करने के सवाब से सात सौ गुना बढ़ा दिया जाता है। (अबूदाऊद)

﴿111﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الذِّكْرَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ يُضَعَّفُ فَوْقَ النَّفَقَةِ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ۔ قال يحيى في حديثه: بِسَبْعِمِائَةِ أَلْفِ ضِعْفٍ.

رواه احمد ٣/٤٣٨

111. हज़रत मुआ़ज़ ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ज़िक्र का सवाब (अल्लाह तआ़ला के रास्ते में) ख़र्च करने के सवाब से सात सौ गुना बढ़ा दिया जाता है। एक रिवायत में है कि सात लाख गुना सवाब बढ़ा दिया जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿112﴾ عَنْ مُعَاذِ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَاَ اَلْفَ آيَةٍ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ كَتَبَهُ اللهُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ، وَ الصِّدِّيْقِيْنَ، وَ الشُّهَدَاءِ، وَالصَّالِحِيْنَ۔

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ٢/٨٧

112. हज़रत मुआ़ज़ जुहनी ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में हज़ार आयतें तिलावत कीं अल्लाह तआ़ला उसे अम्बिया अलैहि०, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोगों की जमाअत में लिख देंगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿113﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَاكَانَ فِيْنَا فَارِسٌ يَوْمَ بَدْرٍ غَيْرَ الْمِقْدَادِ وَلَقَدْ رَاَيْتُنَا وَمَا فِيْنَا اِلاَّ نَائِمٌ اِلَّا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ تَحْتَ شَجَرَةٍ يُصَلِّيْ وَ يَبْكِيْ حَتّٰى اَصْبَحَ

رواه احمد ١/١٢٥

113. हज़रत अ़ली ﷺ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन हज़रत मिक़दाद ﷺ के अलावा हम में और कोई घोड़े पर सवार नहीं था। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह ﷺ के अलावा हम सब सोए हुए थे। रसूलुल्लाह ﷺ एक दरख़्त के नीचे नमाज़ पढ़ते रहे और रोते रहे, यहां तक कि सुबह हो गई। (मुस्नद अहमद)

﴾114﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ بَاعَدَ اللّٰہُ بَیْنَہٗ وَبَیْنَ النَّارِ بِذٰلِکَ الْیَوْمِ سَبْعِیْنَ خَرِیْفًا۔

رواه النسائى، باب ثواب من صام...، رقم: ۲۲۴۷

114. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स एक दिन अल्लाह तआ़ला के रास्ते में रोज़ा रखे, अल्लाह तआ़ला उस एक दिन के बदले दोज़ख़ और उस शख़्स के दरमियान सत्तर साल का फ़ासला कर देंगे। (नसाई)

﴾115﴿ عَنْ عَمْرِوبْنِ عَبَسَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ بَعُدَتْ مِنْہُ النَّارُ مَسِیْرَۃَ مِائَۃِ عَامٍ۔

رواه الطبرانى فى الكبير والاوسط ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ۳/۴۴۴

115. हज़रत उम्र बिन अ़बसा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने एक दिन अल्लाह तआ़ला के रास्ते में रोज़ा रखा उससे जहन्नम की आग सौ साल की मुसाफ़त के बक़द्र दूर हो जाएगी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾116﴿ عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ الْبَاہِلِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ صَامَ یَوْمًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ جَعَلَ اللّٰہُ بَیْنَہٗ وَبَیْنَ النَّارِ خَنْدَقًا کَمَا بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ۔ رواه الترمذى، وقال: هذا حديث غريب، باب ماجاء فى فضل الصوم فى سبيل الله، رقم: ۱۶۲۴

116. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने अल्लाह तआ़ला के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखा, अल्लाह तआ़ला उसके और दोज़ख़ के दर्मियान इतनी बड़ी ख़न्दक़ को आड़ बना देते हैं जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान फ़ासला है। (तिर्मिज़ी)

﴾117﴿ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: کُنَّا مَعَ النَّبِیِّ ﷺ اَکْثَرُنَا ظِلًّا مَنْ یَسْتَظِلُّ بِکِسَائِہٖ، وَاَمَّا الَّذِیْنَ صَامُوْا فَلَمْ یَعْمَلُوْا شَیْئًا، وَاَمَّا الَّذِیْنَ اَفْطَرُوْا فَبَعَثُوا الرِّکَابَ وَامْتَہَنُوْا وَعَالَجُوْا،

فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ذَهَبَ الْمُفْطِرُوْنَ الْيَوْمَ بِالْأَجْرِ۔

رواه البخاری، باب فضل الخدمة فی الغزو، رقم: ۲۸۹۰

117. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, हममें सबसे ज़्यादा साए वाला शख़्स वह था जिसने अपनी चादर से साया किया हुआ था। जिन्होंने रोज़ा रखा हुआ था वह तो कुछ न कर सके और जिन्होंने रोज़ा नहीं रखा था उन्होंने सवारियों को (पानी पीने और चरने के लिए) भेजा और ख़िदमत के काम मेहनत और मशक़्क़त से किए। यह देखकर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन लोगों ने रोज़ा नहीं रखा, वे आज सारा सवाब ले गए। (बुख़ारी)

﴿118﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَغْزُوْ مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِي رَمَضَانَ، فَمِنَّا الصَّائِمُ وَمِنَّا الْمُفْطِرُ، فَلَا يَجِدُ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ، وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ، يَرَوْنَ أَنَّ مَنْ وَجَدَ قُوَّةً فَصَامَ، فَإِنَّ ذٰلِكَ حَسَنٌ، وَيَرَوْنَ أَنَّ مَنْ وَجَدَ ضَعْفًا فَأَفْطَرَ، فَإِنَّ ذٰلِكَ حَسَنٌ۔

رواه مسلم، باب جواز الصوم والفطر فی شهر رمضان......، رقم: ۲۶۱۸

118. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग रमज़ान के महीने में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ग़ज़्वा में जाया करते थे, तो हमारे कुछ साथी रोज़ा रख लेते और कुछ साथी रोज़ा न रखते। रोज़ेदार रोज़ा न रखने वालों पर नाराज़ न होते और रोज़ा न रखने वाले रोज़दारों पर नाराज़ न होते। सब यह जानते थे कि जो अपने में हिम्मत महसूस करता है और उसने रोज़ा रख लिया, उसके लिए ऐसा करना ही ठीक है और जो अपने में कमज़ोरी महसूस करता है और उसने रोज़ा नहीं रखा, उसने भी ठीक किया। (मुस्लिम)

﴿119﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ الْخَطْمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَسْتَوْدِعَ الْجَيْشَ قَالَ: أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِيْنَكُمْ وَأَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ أَعْمَالِكُمْ۔

رواه ابو داؤد، باب فی الدعاء عند الوداع، رقم: ۲۶۰۱

119. हज़रत अब्दुल्लाह ख़त्मी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी लश्कर को रवाना फ़रमाने का इरादा करते तो इर्शाद फ़रमाते : तर्जुमा : मैं तुम्हारे दीन को, तुम्हारी अमानतों को और तुम्हारे आमाल के ख़ात्मों को अल्लाह तआला के हवाले करता हूं (जिसकी हिफ़ाज़त में दी हुई चीज़ें ज़ाय नहीं होतीं)। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अमानतों से मुराद अह्ल व अयाल, माल व दौलत, साज़ व सामान है कि

ये सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बन्दे के पास अमानत के तौर पर रखवाई गई हैं, इस तरह वे अमानतें भी मुराद हैं, जो जाने वाले मुसाफ़िर के पास लोगों की रखी हुई हों या लोगों के पास उस मुसाफ़िर ने रखवाई हों। इस मुख़्तसर जुम्ले में कैसी जामेअ़ दुआ दी गई है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दीन की, अह्ल व अ़याल की, माल व दौलत की हिफ़ाज़त फ़रमाए और तुम्हारे आ़माल का ख़ात्मा बख़ैर फ़रमाए।

([illegible])

(١٢٠) عَنْ عَلِيِّ بْنِ رَبِيْعَةَ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: شَهِدْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَاُتِيَ بِدَابَّةٍ لِيَرْكَبَهَا، فَلَمَّا وَضَعَ رِجْلَهُ فِي الرِّكَابِ قَالَ: بِسْمِ اللّٰهِ، فَلَمَّا اسْتَوٰى عَلٰى ظَهْرِهَا قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، ثُمَّ قَالَ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ قَالَ: اَللّٰهُ اَكْبَرُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَكَ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْلِيْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ، ثُمَّ ضَحِكَ، فَقِيْلَ: يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! مِنْ اَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ؟ قَالَ: رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ فَعَلَ كَمَا فَعَلْتُ، ثُمَّ ضَحِكَ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! مِنْ اَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ؟ قَالَ: اِنَّ رَبَّكَ تَعَالٰى يَعْجَبُ مِنْ عَبْدِهٖ اِذَا قَالَ: اِغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ، يَعْلَمُ اَنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ غَيْرِيْ.

رواه ابو داؤد، باب مايقول الرجل اذا ركب، رقم: ٢٦٠٢

120. हज़रत अ़ली बिन रबीया रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत करते हैं कि मैं हज़रत अ़ली ﵁ के पास हाज़िर हुआ। आपके सामने सवारी के लिए एक जानवर लाया गया। जब आपने अपना पांव रकाब में रखा तो फ़रमाया 'बिस्मिल्लाह' फिर जब सवारी की पुश्त पर बैठ गए तो फ़रमाया 'अल-हम्दु लिल्लाह' फिर फ़रमाया :

तर्जुमा : पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारे क़ाबू में कर दिया जबकि हम तो इसको क़ाबू में करने वाले न थे और बिला शुब्हा हम अपने ही रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। फिर तीन मर्तबा 'अल-हम्दु लिल्लाह' और तीन मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' कहने के बाद फ़रमाया : तर्जुमा : आप पाक हैं, बेशक मैंने (नाफ़रमानी करके) अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया, आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए आपके सिवा कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता। फिर हज़रत अ़ली ﵁ हँसे। आप से पूछा गया : आप किस वजह से हँसे? आपने फ़रमाया : मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह करते हुए देखा, जैसे मैंने किया (कि आप ﷺ ने दुआ पढ़ी) फिर हँसे।

मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप किस बात पर हंसे? तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे रब अपने बन्दे से ख़ुश होते हैं जब वह कहता है मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए इसलिए कि बन्दा जानता है कि मेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : रकाब लोहे से बने हुए हल्क़े को कहते हैं जो घोड़े की ज़ीन में दोनों तरफ़ लटकता रहता है और सवार उस पर पांव रखकर घोड़ों पर चढ़ता है।

﴿121﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا اسْتَوٰى عَلٰى بَعِيْرِهٖ خَارِجًا اِلٰى سَفَرٍ، كَبَّرَ ثَلاَثًا، قَالَ: سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ، وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اِنَّا نَسْاَلُكَ فِىْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ! هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ، وَاِذَا رَجَعَ قَالَهُنَّ، وَزَادَ فِيْهِنَّ: آئِبُوْنَ، تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ، لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ۔

رواه مسلم، باب استحباب الذكر اذا ركب دابته.....، رقم: ٣٢٧٥

121. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़र में जाने के लिए सवारी पर बैठ जाते तो तीन मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' फ़रमाते, फिर यह दुआ पढ़ते :

سُبْحَانَ الَّذِى سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ، وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَللّٰهُمَّ! اِنَّا نَسْاَلُكَ فِىْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ! هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ، وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ! اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ۔

तर्जुमा : पाक है वह ज़ात, जिसने इस सवारी को हमारे क़ाबू में कर दिया जबकि हम तो इसको क़ाबू में करने वाले न थे और बिलाशुब्हा हम अपने रब ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम अपने इस सफ़र में आप से नेकी और तक़्वा और ऐसे अ़मल का सवाल करते हैं, जिससे आप राज़ी हों। ऐ अल्लाह! हमारे इस सफ़र को हमारे लिए आसान फ़रमा दें और उसकी दूरी को हमारे लिए मुख़्तसर फ़रमा दें। ऐ अल्लाह! आप ही हमारे इस सफ़र में हमारे साथी हैं और हमारे पीछे आप ही हमारे घर वालों के निगहबान हैं। ऐ अल्लाह! मैं आपसे सफ़र की मशक़्क़त

से, सफ़र में किसी तकलीफ़देह मंज़र को देखने से और वापसी पर माल और अह्ल व अ़याल में किसी तकलीफ़देह चीज़ के पाने से पनाह चाहता हूं।

और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो यही दुआ़ पढ़ते और इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाते : "हम सफ़र से वापस आने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं और अपने रब की तारीफ़ करने वाले हैं।" (मुस्लिम)

﴿122﴾ عَنْ صُهَيْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَرَ قَرْيَةً يُرِيْدُ دُخُوْلَهَا إِلاَّ قَالَ حِيْنَ يَرَاهَا: اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الْأَرْضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ فَإِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيْهَا.

رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح الإسناد ووافقه الذهبي ٢/ ١٠٠

122. हज़रत सुहैब ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब भी किसी बस्ती में दाख़िल होने का इरादा फ़रमाते तो उसे देख कर यह दुआ़ पढ़ते। तर्जुमाः ऐ अल्लाह! जो रब हैं सातों आसमानों के और उन तमाम चीजों के जिन पर सातों आसमान साया किये हुए हैं; और जो रब हैं सातों ज़मीनों के और उन तमाम चीजों के जिनको सातों ज़मीनों ने उठाया हुआ है; और जो रब हैं तमाम शयातिन के और उन सब के जिनको शयातिन ने गुमराह किया है; और जो रब हैं हवाओं के और उन चीजों के जिन्हें हवाओं ने उड़ाया है। हम आपसे इस बस्ती की ख़ैर और इस बस्ती वालों की ख़ैर मांगते हैं; और आपसे इस बस्ती के शर और इस बस्ती वालों के शर और इस बस्ती में जो कुछ है उसके शर से पनाह मांगते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿123﴾ عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيْمٍ السُّلَمِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا ثُمَّ قَالَ: أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ، حَتّٰى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذٰلِكَ.

رواه مسلم، باب في التعوذ من سوء القضاء......، رقم: ٦٨٧٨

123. हज़रत ख़ौला बिन्ते हकीम सुलमीय्या रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स किसी जगह पर उतर कर पढ़े : "मैं अल्लाह तआ़ला के सारे (नफ़ा देने वाले, शिफ़ा देने वाले) कलिमात के ज़रिए उसकी तमाम मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूं" तो उसे कोई चीज़ उस जगह से रवाना होने तक नुक़सान नहीं पहुंचाएगी। (मुस्लिम)

﴿124﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قُلْنَا یَوْمَ الْخَنْدَقِ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! ھَلْ مِنْ شَیْءٍ نَقُوْلُہُ فَقَدْ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ قَالَ: نَعَمْ! اَللّٰھُمَّ اسْتُرْعَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا قَالَ: فَضَرَبَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ وُجُوْہَ اَعْدَائِہٖ بِالرِّیْحِ فَھَزَمَھُمُ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ بِالرِّیْحِ۔

رواہ احمد ۳/۳

124. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वा-ए- ख़न्दक़ के दिन हम लोगों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या इस मौक़े पर पढ़ने के लिए कोई दुआ़ है जिसे हम पढ़ें क्योंकि कलेजे मुंह को आ चुके हैं यानी सख़्त घबराहट का हाल है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हां, यह दुआ़ पढ़ो तर्जुमा : या अल्लाह! (दुश्मन के मुक़ाबले में) जो हमारी कमज़ोरियां हैं उन पर पर्दा डाल दें और हमें ख़ौफ़ की चीज़ों से अम्न अ़ता फ़रमाएं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं (कि हम ने यह दुआ़ पढ़नी शुरू कर दी जिसकी बरकत से) अल्लाह तआ़ला ने सख़्त हवा भेजकर दुश्मनों के चेहरों को फेर दिया (और यूं) अल्लाह तआ़ला ने उनको हवा के ज़रिए शिकस्त दे दी। (मुस्नद अहमद)

﴿125﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ اَنْفَقَ زَوْجَیْنِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ دَعَاہُ خَزَنَۃُ الْجَنَّۃِ، کُلُّ خَزَنَۃِ بَابٍ: اَیْ فُلُ ھَلُمَّ، قَالَ اَبُوْبَکْرٍ: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ اِذَاکَ الَّذِیْ لَاتَوٰی عَلَیْہِ، فَقَالَ النَّبِیُّ ﷺ: اِنِّیْ لَاَرْجُوْ اَنْ تَکُوْنَ مِنْھُمْ۔

رواہ البخاری، باب فضل النفقۃ فی سبیل اللّٰہ، رقم: ۲۸۴۱

125. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी चीज़ का जोड़ा (मसलन दो घोड़े, दो कपड़े, दो दिरहम, दो ग़ुलाम वग़ैरह) अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करेगा, तो उसे जन्नत के दारोग़े बुलाएंगे. (जन्नत के) हर दरवाज़े का दारोग़ा (अपनी तरफ़ बुलाएगा) कि ऐ फ़्लां! इस दरवाज़े से (इस पर) हज़रत अबूबक्र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! फिर तो उस शख़्स को कोई ख़ौफ़ नहीं रहेगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम भी उन्हीं में से होगे (जिन्हें हर दरवाज़े से बुलाया जाएगा)। (बुख़ारी)

﴿126﴾ عَنْ ثَوْبَانَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَفْضَلُ دِیْنَارٍ دِیْنَارٌ یُنْفِقُہُ الرَّجُلُ عَلٰی عِیَالِہٖ، وَدِیْنَارٌ یُنْفِقُہُ عَلٰی فَرَسِہٖ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ، وَدِیْنَارٌ یُنْفِقُہُ الرَّجُلُ عَلٰی اَصْحَابِہٖ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ۔

رواہ ابن حبان، قال المحقق: اسنادہ صحیح ۱۰/۵۰۳

126. हज़रत सौबान ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़ज़ल दीनार वह है जिसे आदमी अपने घर वालों पर ख़र्च करता है, और वह दीनार अफ़ज़ल है जिसे आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में अपने घोड़े पर ख़र्च करता है, और वह दीनार अफ़ज़ल है जिसे आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में अपने साथियों पर ख़र्च करता है (दीनार सोने के सिक्के का नाम है)। (इब्ने हब्बान)

﴿127﴾ وَيُرْوٰى عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا رَاَيْتُ اَحَدًا اَكْثَرَ مَشْوَرَةً لِاَصْحَابِهٖ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ۔ رواه الترمذى،باب ماجاء فى المشورة، رقم: ١٧١٤

127. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज़्यादा अपने साथियों से मशवरा करने वाला कोई नहीं देखा, यानी आप बहुत ज़्यादा मशवरा फ़रमाया करते थे। (तिर्मिज़ी)

﴿128﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَارَسُوْلَ اللهِ! اِنْ نَزَلَ بِنَا اَمْرٌ لَيْسَ فِيْهِ بَيَانُ اَمْرٍ وَلَا نَهْيٍ فَمَا تَاْمُرُنَا؟ قَالَ: شَاوِرُوْا فِيْهِ الْفُقَهَاءَ وَالْعَابِدِيْنَ وَلَا تُمْضُوْا فِيْهِ رَاْىَ خَاصَّةٍ۔

رواه الطبرانى فى الاوسط ورجاله موثقون من اهل الصحيح،مجمع الزوائد١/٤٢٨

128. हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अगर हमारे साथ कोई ऐसा मामला पेश आ जाए, जिसमें हमारे लिए आपकी तरफ़ से कोई वाज़ेह हुक्म करने या न करने का न हो तो उस बारे में आप हमें क्या हुक्म फ़रमाते हैं? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस सूरत में दीन की समझ रखने वालों और इबादत गुज़ारों से मशवरा कर लिया करो और किसी की इन्फ़िरादी राय पर फ़ैसला न करना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿129﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ ﴿وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ﴾ الآية قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَمَا اِنَّ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ غَنِيَّانِ عَنْهَا وَلٰكِنْ جَعَلَهَا اللهُ رَحْمَةً لِاُمَّتِىْ، فَمَنْ شَاوَرَ مِنْهُمْ لَمْ يَعْدِمْ رُشْدًا وَمَنْ تَرَكَ الْمَشْوَرَةَ مِنْهُمْ لَمْ يَعْدِمْ عَنَاءً۔

رواه البيهقى ٧٦/٦

129. हज़रत इब्न अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई "और उनसे अहम कामों में मश्विरा करते रहा कीजिए" तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला और उसके रसूल को तो मशवरा की ज़रूरत नहीं है,

अलबत्ता अल्लाह तआ़ला ने उसको मेरी उम्मत के लिए रहमत की चीज़ बना दिया। चुनांचे मेरी उम्मत में से जो शख़्स मशवरा करता है वह सीधी राह पर रहता है और मेरी उम्मत में से जो मशवरा नहीं करता वह परेशान ही रहता है। (बैहक़ी)

﴿130﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: حَرْسُ لَيْلَةٍ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ تَعَالٰى اَفْضَلُ مِنْ اَلْفِ لَيْلَةٍ يُقَامُ لَيْلُهَا وَيُصَامُ نَهَارُهَا. رواه احمد ١/٦١

130. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में एक रात का पहरा देना उन हज़ार रातों से बेहत्तर है जिनमें रात भर खड़े होकर अल्लाह तआ़ला की इबादत की जाए और दिन में रोज़ा रखा जाए। (मुस्नद अहमद)

﴿131﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ (يَوْمَ حُنَيْنٍ): مَنْ يَحْرُسُنَا اللَّيْلَةَ؟ قَالَ اَنَسُ بْنُ اَبِيْ مَرْثَدٍ الْغَنَوِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: اَنَا يَا رَسُوْلَ اللهِ! قَالَ: فَارْكَبْ، فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ وَجَاءَ اِلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْتَقْبِلْ هٰذَا الشِّعْبَ حَتّٰى تَكُوْنَ فِيْ اَعْلَاهُ، وَلَا نُغَرَّنَّ مِنْ قِبَلِكَ اللَّيْلَةَ، فَلَمَّا اَصْبَحْنَا خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِلٰى مُصَلَّاهُ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ قَالَ: هَلْ اَحْسَسْتُمْ فَارِسَكُمْ؟ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! مَا اَحْسَسْنَاهُ، فَثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ، فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ وَهُوَ يَلْتَفِتُ اِلَى الشِّعْبِ حَتّٰى اِذَا قَضٰى صَلَاتَهُ وَسَلَّمَ فَقَالَ: اَبْشِرُوْا فَقَدْ جَاءَكُمْ فَارِسُكُمْ، فَجَعَلْنَا نَنْظُرُ اِلٰى خِلَالِ الشَّجَرِ فِي الشِّعْبِ فَاِذَا هُوَ قَدْ جَاءَ حَتّٰى وَقَفَ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَسَلَّمَ وَقَالَ: اِنِّي انْطَلَقْتُ حَتّٰى كُنْتُ فِيْ اَعْلٰى هٰذَا الشِّعْبِ حَيْثُ اَمَرَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا اَصْبَحْتُ اطَّلَعْتُ الشِّعْبَيْنِ كِلَيْهِمَا، فَنَظَرْتُ فَلَمْ اَرَ اَحَدًا، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: هَلْ نَزَلْتَ اللَّيْلَةَ؟ قَالَ: لَا، اِلَّا مُصَلِّيًا اَوْ قَاضِيًا حَاجَةً، فَقَالَ لَهُ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: قَدْ اَوْجَبْتَ فَلَا عَلَيْكَ اَنْ لَا تَعْمَلَ بَعْدَهَا

رواه ابوداؤد، باب فی فضل الحرس فی سبیل الله عزوجل، رقم: ٢٥٠١

131. हज़रत सह्ल बिन हनज़लीया ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (हुनैन के मौक़े पर) इर्शाद फ़रमाया : आज रात हमारा पहरा कौन देगा? हज़रत अनस बिन अबी मरसद गन्वी ﷺ ने फ़रमाया : या रसूलुल्लाह! मैं (पहरा दूंगा) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सवार हो जाओ। चुनांचे वह अपने घोड़े पर सवार होकर

रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आए। आप ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया : सामने उस घाटी की तरफ़ चले जाओ और उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच जाओ। (वहां पहरा देना और ख़ूब चौकन्ना होकर रहना) कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़लत और लापरवाही की वजह से आज रात हम दुश्मन के धोखे में आ जाएं (हज़रत सह्ल ؓ फ़रमाते हैं कि) जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ अपनी नमाज़ की जगह पर तशरीफ़ ले गए और दो रकअ़त (फ़ज्र की सुन्नतें) पढ़ीं। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें अपने सवार का कुछ पता लगा? सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमें तो उनका कुछ पता नहीं। फिर नमाज़ (फ़ज्र) की इक़ामत हुई, नमाज़ के दौरान रसूलुल्लाह ﷺ की तवज्जोह घाटी की तरफ़ रही। जब रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ पूरी फ़रमा कर सलाम फेरा, तो इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें ख़ुशख़बरी हो तुम्हारा सवार आ गया है। हम लोगों ने घाटी के दरख़्तों के दर्मियान देखना शुरू किया तो हज़रत अनस बिन अबी मरसद आ रहे थे। चुनांचे उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अ़र्ज़ किया कि मैं (यहां से) चला और चलते-चलते उस घाटी की सबसे ऊंची जगह पहुंच गया, जहां जाने का मुझको रसूलुल्लाह ﷺ ने हुक्म दिया था (मैं रात भर वहां पहरा देता रहा) जब सुबह हुई तो मैंने दोनों घाटियों पर चढ़कर देखा, मुझे कोई नज़र न आया। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे पूछा : क्या तुम रात को किसी वक़्त अपनी सवारी से नीचे उतरे? उन्होंने कहा नहीं, सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने और ज़रूरत पूरी करने के लिए उतरा था। आप ﷺ ने उनसे इर्शाद फ़रमाया कि तुमने (आज रात पहरा देकर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अपने लिए जन्नत) वाजिब कर ली है, लिहाज़ा (पहरे के) इस अ़मल के बाद अगर तुम कोई भी (नफ़्ली) अ़मल न करो, तो तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं। (अबूदाऊद)

﴿132﴾ عَنِ ابْنِ عَائِذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فِي جَنَازَةِ رَجُلٍ فَلَمَّا وُضِعَ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: لَا تُصَلِّ عَلَيْهِ يَارَسُوْلَ اللهِ فَإِنَّهُ رَجُلٌ فَاجِرٌ، فَالْتَفَتَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِلَى النَّاسِ فَقَالَ: هَلْ رَآهُ اَحَدٌ مِنْكُمْ عَلٰى عَمَلِ الْاِسْلَامِ، فَقَالَ رَجُلٌ: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ، حَرَسَ لَيْلَةً فِيْ سَبِيْلِ اللهِ، فَصَلّٰى عَلَيْهِ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَحَثَى التُّرَابَ عَلَيْهِ وَقَالَ: اَصْحَابُكَ يَظُنُّوْنَ اَنَّكَ مِنْ اَهْلِ النَّارِ وَاَنَا اَشْهَدُ اَنَّكَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ، وَقَالَ: يَا عُمَرُ! اِنَّكَ لَا تُسْاَلُ عَنْ اَعْمَالِ النَّاسِ وَلٰكِنْ تُسْاَلُ عَنِ الْفِطْرَةِ. رواه البيهقى فى شعب الايمان ٤/٤٣

132. हज़रत इब्ने आइज़ ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक शख़्स के जनाज़े

के लिए बाहर तशरीफ़ लाए। जब वह जनाज़ा रखा गया तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें, क्योंकि यह फ़ासिक़ शख़्स था (यह सुनकर) रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : क्या तुममें से किसी ने इसको इस्लाम का कोई काम करते देखा है? शख़्स ने अर्ज़ किया : जी हां, या रसूलुल्लाह! उन्होंने एक रात अल्लाह तआला के रास्ते में पहरा दिया है। चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और उनकी क़ब्र में मिट्टी भी डाली। उसके बाद (मैयत को मुख़ातब करके) फ़रमाया : तुम्हारे साथियों का तो गुमान यह है कि तुम दोज़ख़ी हो और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तुम जन्नती हो। फिर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उमर! तुम से लोगों के बुरे आमाल के बारे में नहीं पूछा जा रहा है, बल्कि नेक आमाल के बारे में पूछा जा रहा है। (बैहक़ी)

﴿133﴾ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ جُمْهَانَ قَالَ: سَأَلْتُ سَفِيْنَةَ عَنِ اسْمِهِ، فَقَالَ: اِنِّيْ مُخْبِرُكَ بِاسْمِيْ، سَمَّانِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ سَفِيْنَةَ، قُلْتُ: لِمَ سَمَّاكَ سَفِيْنَةَ؟ قَالَ: خَرَجَ وَمَعَهُ اَصْحَابُهُ، فَثَقُلَ عَلَيْهِمْ مَتَاعُهُمْ فَقَالَ: اُبْسُطْ كِسَاءَكَ فَبَسَطْتُهُ فَجَعَلَ فِيْهِ مَتَاعَهُمْ، ثُمَّ حَمَلَهُ عَلَيَّ فَقَالَ: احْمِلْ مَا اَنْتَ اِلَّا سَفِيْنَةٌ قَالَ: فَلَوْ حَمَلْتُ يَوْمَئِذٍ وِقْرَ بَعِيْرٍ اَوْ بَعِيْرَيْنِ اَوْ خَمْسَةٍ اَوْ سِتَّةٍ، مَا ثَقُلَ عَلَيَّ. حلية الاولياء ١/٣٦٩ وذكره فى الاصابة بنحوه ٢/٥٨

133. हज़रत सईद बिन जुम्हान रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मैंने हज़रत सफ़ीना से उनके नाम के बारे में पूछा (कि यह नाम किसने रखा है?) उन्होंने कहा : मैं तुम्हें अपने नाम के बारे में बताता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा नाम सफ़ीना रखा। मैंने पूछा : आपका नाम सफ़ीना क्यों रखा? उन्होंने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा सफ़र में तशरीफ़ ले गए और आपके साथ सहाबा भी थे। उनका सामान उन पर भारी हो गया था। रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अपनी चादर बिछाओ, मैंने बिछा दी। आपने इस चादर में सहाबा का सामान बांधकर मेरे ऊपर रख दिया और फ़रमाया : इसे उठा लो तुम तो सफ़ीना (यानी किश्ती ही) हो। हज़रत सफ़ीना फ़रमाते हैं कि अगर उस दिन मैं एक या दो तो क्या पांच या छ : ऊंटों का बोझ उठा लेता तो वह मुझ पर भारी न होता। (हुलीया, इसाबा)

﴿134﴾ عَنْ اَحْمَرَ مَوْلٰى اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا فِيْ غَزَاةٍ فَجَعَلْتُ اُعَبِّرُ النَّاسَ فِيْ وَادٍ اَوْ نَهْرٍ فَقَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: مَا كُنْتَ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ اِلَّا سَفِيْنَةً. الاصابة ١/٢٣

134. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत अ र ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग एक ग़ज़्वा में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, (एक वादी या नहर पर से हम लोगों का गुज़र हुआ) तो मैं लोगों को वादी या नहर पार कराने ल । यह देखकर नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : तुम तो आज सफ़ीना (किश्ती) बन गए हो। (इस)

﴿135﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ بَدْرٍ كُلُّ ثَلَاثَةٍ عَلٰى بَعِيْرٍ الَ: فَكَانَ اَبُوْلُبَابَةَ وَعَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ زَمِيْلَيْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: فَكَانَتْ اِذَا جَاءَتْ عُقْبَةُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَا: نَحْنُ نَمْشِيْ عَنْكَ، قَالَ: مَا اَنْتُمَا بِاَقْوٰى مِنِّيْ وَمَا اَنَا بِاَغْنٰى عَنِ الْاَجْرِ مِنْكُمَا.

رواه البغوى فى شرح السنة، قال المحق: اسناده حسن ١١/٣٥

135. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि बद्र के दिन हमारी यह हालत थी कि हम में से हर तीन आदमियों के दर्मियान एक ऊंट था, जिस पर बारी-बारी सवार होते थे। हज़रत अबू लुबाबा और हज़रत अली बिन अबी तालि ब रसूलुल्लाह ﷺ के ऊंट के शरीके सफ़र थे। हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ के उतरने की बारी आती तो हज़रत अबू लुबाबा और हज़ । अली ﷺ अर्ज़ करते कि आपके बदले हम पैदल चलेंगे (आप ऊंट पर ही सवार रहें) रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते, तुम दोनों मुझसे ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और मैं अज्र व सवाब का तुमसे कम मुहताज नहीं हूं। (शर्हुस्सुन

﴿136﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيِّدُ الْقَوْمِ فِي السَّفَرِ خَادِمُهُمْ فَمَنْ سَبَقَهُمْ بِخِدْمَةٍ لَمْ يَسْبِقُوْهُ بِعَمَلٍ اِلَّا الشَّهَادَةُ.

رواه البيهقى فى شعب الايمان ٦/٣٣٤

136. हज़रत सह्ल बिन साद ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺने इर्शाद फ़रमाया सफ़र में जमाअत का ज़िम्मेदार उनका ख़ादिम है। जो शख़्स ख़िदमत करने में साथियों से आगे बढ़ गया तो उसके साथी शहादत के अलावा किसी और अमल ज़रिए उससे आगे नहीं बढ़ सकते, यानी सबसे बड़ा अमल शहादत है, उसके बाद ख़िदमत है। (बैहक़ी)

﴿137﴾ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْجَمَاعَةُ رَحْمَةٌ وَالْفُرْقَةُ عَذَابٌ.

(وهو بعض الحديث) رواه عبد الله بن احمد والبزار والطبرانى ورجالهم ثقات، مجمع الزوائد ٥/٩٢

137. हज़रत नोमान बिन बशीर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जमाअ़त (के साथ मिलकर चलना) रहमत है और जमाअ़त से अलग होना अ़ज़ाब है। (मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾138﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ، مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ. رواه البخاري، باب السير وحده، رقم: ٢٩٩٨

138. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर लोगों को तन्हा सफ़र करने में उन (दीनी और दुन्यावी) नुक़सानों का इल्म हो जाए जो मुझे मालूम हैं, तो कोई सवार रात में तन्हा सफ़र करने की हिम्मत न करे। (बुख़ारी)

﴾139﴿ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِالدُّلْجَةِ، فَإِنَّ الْأَرْضَ تُطْوَى بِاللَّيْلِ. رواه ابو داؤد، باب في الدلجة، رقم: ٢٥٧١

139. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम जब सफ़र करो तो रात को भी ज़रूर कुछ सफ़र कर लिया करो, क्योंकि रात के वक़्त ज़मीन लपेट दी जाती है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब तुम किसी सफ़र के लिए घर से निकलो तो महज़ दिन के चलने पर क़नाअत न करो, बल्कि थोड़ा-सा रात के वक़्त भी चला करो, क्योंकि रात के वक़्त, दिन जैसी रुकावटें नहीं होतीं तो सफ़र आसानी के साथ जल्दी तय हो जाता है। इस मफ़हूम को ज़मीन के लपेट दिए जाने से ताबीर फ़रमाया है। (मज़ाहिरे हक़)

﴾140﴿ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: الرَّاكِبُ شَيْطَانٌ وَالرَّاكِبَانِ شَيْطَانَانِ وَالثَّلَاثَةُ رَكْبٌ. رواه الترمذي وقال: حديث عبدالله بن عمرو احسن، باب ماجاء في كراهية ان يسافر وحده، رقم: ١٦٧٤

140. हज़रत उम्रू बिन शोऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक सवार एक शैतान है, दो सवार दो शैतान हैं और तीन सवार जमाअ़त हैं। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस पाक में सवार से मुराद मुसाफ़िर है। मतलब यह है कि तन्हा सफ़र करने वाला हो या दो सफ़र करने वाले हों, शैतान उनको बड़ी आसानी से

बुराई में मुब्तला कर सकता है। इस बात को वाज़ेह करने के लिए तन
सफ़र करने वाले या दो सफ़र करने वालों को शैतान फ़रमाया। इसलिए
सफ़र में कम-से-कम तीन आदमी होने चाहिएं, ताकि शैतान से महफ़ू
रहें और नमाज़ बाजमाअ़त अदा करने और दूसरे कामों में एक दूसरे क
मददगार हों। (मज़ाहिरे हक़)

﴿141﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الشَّیْطَانُ یَهُمُّ بِالْوَاحِدِ وَالِاثْنَیْنِ فَاِذَا کَانُوْا ثَلَاثَةً لَمْ یَهُمَّ بِهِمْ.

رواه البزار وفيه عبد الرحمن بن ابی الزناد وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ۳/۱۹۱

141. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया
शैतान एक दो के साथ बुराई का इरादा करता है, यानी नुक़सान पहुंचाना चाहता है,
लेकिन जब तीन हों तो उनके साथ बुराई का इरादा नहीं करता।(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿142﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِثْنَانِ خَیْرٌ مِنْ وَاحِدٍ وَثَلَاثٌ خَیْرٌ مِنِ اثْنَیْنِ وَاَرْبَعَةٌ خَیْرٌ مِنْ ثَلَاثَةٍ فَعَلَیْکُمْ بِالْجَمَاعَةِ فَاِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ لَنْ یَجْمَعَ اُمَّتِیْ اِلَّا عَلٰی هُدًی. رواه احمد ۵/۱۴۵

142. हज़रत अबूज़र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया
एक शख़्स से दो बेहतर हैं और दो से तीन बेहतर हैं और तीन से चार बेहतर है,
लिहाज़ा तुम जमाअ़त (के साथ रहने) को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि अल्लाह तआला
मेरी उम्मत को हिदायत पर ही जमा फ़रमाएंगे, (यानी सारी उम्मत गुमराही पर कभी
मुज्तमा नहीं हो सकती लिहाज़ा जमाअ़त के साथ रहने वाला गुमराही से महफ़ूज़
रहेगा।) (मुस्नद अहमद)

﴿143﴾ عَنْ عَرْفَجَةَ بْنِ شُرَیْحٍ الْاَشْجَعِیِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ یَدَ اللهِ عَلَی الْجَمَاعَةِ، فَاِنَّ الشَّیْطَانَ مَعَ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ یَرْکُضُ. (وهو بعض الحديث)

رواه النسائی، باب قتل من فارق الجماعة......رقم: ۴۰۲۵

143. हज़रत अरफ़जा बिन शुरैह अशजई ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ
ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का हाथ जमाअ़त पर होता है, यानी अल्लाह
तआला की ख़ास मदद जमाअ़त के साथ होती है लिहाज़ा जो शख़्स जमाअ़त से
अलाहिदा हो जाता है, शैतान उसके साथ होता है और उसे उकसाता रहता है।

(नसाई)

﴿144﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَتَخَلَّفُ فِي الْمَسِيْرِ فَيُزْجِي الضَّعِيْفَ وَيُرْدِفُ وَيَدْعُوْلَهُمْ. رواه ابو داؤد، باب لزوم الساقة، رقم:٢٦٣٩

144. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र में (तवाज़ो, दूसरों की मदद और ख़बरगीरी के लिए) क़ाफ़िला से पीछे चला करते थे। चुनांचे आप ﷺ कमज़ोर (की सवारी) को हांका करते और जो शख़्स पैदल चल रहा होता उसको अपने पीछे सवार कर लेते और उन (क़ाफ़िला वालों) के लिए दुआ़ फ़रमाते रहते। (अबूदाऊद)

﴿145﴾ عَنْ اَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا خَرَجَ ثَلَاثَةٌ فِيْ سَفَرٍ فَلْيُؤَمِّرُوْا اَحَدَهُمْ. رواه ابوداؤد، باب في القوم يسافرون......رقم:٢٦٠٨

145. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तीन शख़्स सफ़र में निकलें, तो अपने में से किसी एक को अमीर बना लें। (अबूदाऊद)

﴿146﴾ عَنْ اَبِيْ مُوسٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ اَنَا وَرَجُلَانِ مِنْ بَنِيْ عَمِّيْ، فَقَالَ اَحَدُ الرَّجُلَيْنِ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَمِّرْنَا عَلٰى بَعْضِ مَا وَلَّاكَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ، وَقَالَ الْاٰخَرُ مِثْلَ ذٰلِكَ، فَقَالَ: اِنَّا وَاللهِ لَا نُوَلِّيْ عَلٰى هٰذَا الْعَمَلِ اَحَدًا سَاَلَهُ، وَلَا اَحَدًا حَرِصَ عَلَيْهِ. رواه مسلم، باب النهي عن طلب الامارة والحرص عليها، رقم:٤٧١٧

146. हज़रत अबू मूसा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरे साथ मेरे दो चचाज़ाद भाई रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनमें से एक ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आपको जिन इलाक़ों का वाली बनाया है उनमें से किसी इलाक़े का हमें अमीर मुक़र्रर फ़रमा दीजिए, दूसरे शख़्स ने भी इसी तरह की ख़्वाहिश का इज़्हार किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की क़सम! हम उन उमूर में किसी भी ऐसे शख़्स को ज़िम्मेदार नहीं बनाते जो ज़िम्मेदारी का सवाल करे या उसका ख़्वाहिशमन्द हो। (मुस्लिम)

﴿147﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ وَاسْتَذَلَّ الْاِمَارَةَ لَقِيَ اللهَ وَلَا وَجْهَ لَهُ عِنْدَهُ.

رواه احمد ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٥/٤٠١

147. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स मुसलमानों की जमाअ़त से अलग हुआ और अमीर की इमारत को हक़ीर जाना, तो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला के यहां उसका कोई रुत्बा न होगा, यानी अल्लाह तआ़ला की निगाह से गिर जाएगा।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿148﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ سَائِلٌ كُلَّ رَاعٍ عَمَّا اسْتَرْعَاهُ أَحَفِظَ أَمْ ضَيَّعَ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرطهما ١٠/٣٤٤

148. हज़रत अनस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला हर निगरां से उसकी ज़िम्मेदारी में दी हुई चीज़ों के बारे में पूछेंगे कि उसने अपनी ज़िम्मेदारी की हिफ़ाज़त की या उसे ज़ाय किया, यानी उस ज़िम्मेदारी को पूरे तौर पर अदा किया या नहीं। (इब्ने हब्बान)

﴿149﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّكُمْ رَاعٍ، وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، الْإِمَامُ رَاعٍ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِيْ أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِيْ بَيْتِ زَوْجِهَا وَمَسْئُوْلَةٌ عَنْ رَعِيَّتِهَا، وَالْخَادِمُ رَاعٍ فِيْ مَالِ سَيِّدِهِ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ فِيْ مَالِ أَبِيْهِ وَهُوَ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَمَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ.

رواه البخاري، باب الجمعة في القرى والمدن، رقم:٨٩٣

149. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम सब ज़िम्मेदार हो, तुममें से हर एक से उसकी अपनी रईय्यत (मातहतों) के बारे में पूछा जाएगा। हाकिम ज़िम्मेदार है उससे अपनी रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा। आदमी अपने घर वालों का ज़िम्मेदार है उससे उसके घर वालों के बारे में पूछा जाएगा। औरत पर अपने शौहर के घर की ज़िम्मेदारी है, उससे उसके घर में रहने वाले बच्चों वग़ैरह के बारे में पूछा जाएगा। मुलाज़िम अपने मालिक के माल का ज़िम्मेदार है, उससे मालिक के माल व अस्बाब के बारे में पूछा जाएगा। बेटा अपने बाप के माल का ज़िम्मेदार है, उससे बाप के माल के बारे में पूछा जाएगा। तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है हर एक से उसके मातहतों के बारे में पूछा जाएगा।

(बुख़ारी)

﴿150﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَا يَسْتَرْعِي اللهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى عَبْدًا رَعِيَّةً قَلَّتْ اَوْ كَثُرَتْ اِلَّا سَاَلَهُ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عَنْهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ : اَقَامَ فِيْهِمْ اَمْرَ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى اَمْ اَضَاعَهُ حَتّٰى يَسْاَلَهُ عَنْ اَهْلِ بَيْتِهِ خَاصَّةً. رواه احمد ٢/١٥

150. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला जिसको भी किसी रईय्यत का निगरान बनाते हैं, ख़्वाह रईय्यत थोड़ी हो, या ज़्यादा तो अल्लाह तआ़ला उसे उसकी रईय्यत के बारे में क़ियामत के दिन ज़रूर पूछेंगे कि उसने उनमें अल्लाह तआ़ला के हुक्म को क़ायम किया था या बरबाद किया था। यहां तक कि ख़ास तौर पर उससे उसके घर वालों के मुतअ़ल्लिक पूछेंगे। (मुस्नद अहमद)

﴿151﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَا اَبَا ذَرٍّ! اِنِّيْ اَرَاكَ ضَعِيْفًا، وَاِنِّيْ اُحِبُّ لَكَ مَا اُحِبُّ لِنَفْسِيْ، لَا تَاَمَّرَنَّ عَلَى اثْنَيْنِ وَلَا تَوَلَّيَنَّ مَالَ يَتِيْمٍ.

رواه مسلم، باب كراهة الامارة بغير ضرورة، رقم: ٤٧٢٠

151. हज़रत अबूज़र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (शफ़क़त के तौर पर हज़रत अबूज़र ﷺ से) इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! मैं तुम्हें कमज़ोर समझता हूं (कि तुम इमारत की ज़िम्मेदारी को पूरा न कर पाओगे) और मैं तुम्हारे लिए वह चीज़ पसन्द करता हूं जो अपने लिए पसन्द करता हूं, तुम दो आदमियों पर भी हरगिज़ अमीर न बनना और किसी यतीम के माल की ज़िम्मेदारी क़ुबूल न करना।

(मुस्लिम)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अबूज़र ﷺ से जो इर्शाद फ़रमाया, उसका मतलब यह है कि अगर मैं तुम्हारी तरह कमज़ोर होता तो दो पर भी कभी अमीर न बनता।

﴿152﴾ عَنْ اَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اَلَا تَسْتَعْمِلُنِيْ؟ قَالَ: فَضَرَبَ بِيَدِهٖ عَلٰى مَنْكِبِيْ، ثُمَّ قَالَ : يَا اَبَاذَرٍّ! اِنَّكَ ضَعِيْفٌ، وَاِنَّهَا اَمَانَةٌ، وَاِنَّهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ خِزْيٌ وَنَدَامَةٌ، اِلَّا مَنْ اَخَذَهَا بِحَقِّهَا وَاَدَّى الَّذِيْ عَلَيْهِ فِيْهَا.

رواه مسلم، باب كراهة الامارة بغير ضرورة، رقم: ٤٧١٩

152. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप मुझे अमीर क्यों नहीं बनाते? रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे कांधे पर हाथ मारकर इर्शाद

फ़रमाया : अबूज़र! तुम कमज़ोर हो और यह इमारत एक अमानत है (कि जिसके साथ बन्दों के हुक़ूक़ मुतअल्लिक़ हैं) और यह (इमारत) क़ियामत के दिन रुस्वाई और नदामत का सबब होगी, लेकिन जिस शख़्स ने इस इमारत को सही तरीक़े से लिया और उसकी ज़िम्मेदारियों को पूरा किया (तो फिर यह इमारत क़ियामत के दिन रुसवाई और नदामत का ज़रिया न होगी)। (मुस्लिम)

﴿153﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ (لِیَ) النَّبِیُّ ﷺ: يَا عَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ سَمُرَةَ: لاَ تَسْاَلِ الْاِمَارَةَ فَاِنَّكَ اِنْ اُوْتِيْتَهَا عَنْ مَسْئَلَةٍ وُكِلْتَ اِلَيْهَا، وَاِنْ اُوْتِيْتَهَا مِنْ غَيْرِ مَسْئَلَةٍ اُعِنْتَ عَلَيْهَا.

(الحديث) رواه البخاری، باب قول اللّٰه تبارك وتعالیٰ 'لا يؤاخذ كم اللّٰه ....'، رقم: ٦٦٢٢

153. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : ऐ अब्दुर्रहमान बिन समुरा! इमारत को तलब न करो, अगर तुम्हारे तलब करने पर तुम्हें अमीर बना दिया गया तो तुम उसके हवाले कर दिए जाओगे (अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारी कोई मदद और रहनुमाई न होगी) और अगर तुम्हारी तलब के बग़ैर तुम्हें अमीर बना दिया गया, तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसमें तुम्हारी मदद की जाएगी। (बुख़ारी)

﴿154﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّكُمْ سَتَحْرِصُوْنَ عَلَى الْاِمَارَةِ، وَسَتَكُوْنُ نَدَامَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَنِعْمَ الْمُرْضِعَةُ وَبِئْسَتِ الْفَاطِمَةُ.

رواه البخاری،باب مايكره من الحرص على الامارة، رقم: ٧١٤٨

154. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक वक़्त ऐसा आने वाला है जबकि तुम अमीर बनने की हिर्स करोगे, हांलाकि इमारत तुम्हारे लिए नदामत का ज़रिया होगी। इमारत की मिसाल ऐसी है जैसे कि एक दूध। पिलाने वाली औरत कि इब्तिदा में तो बड़ी अच्छी लगती है और जब दूध छुड़ाने लगती है तो वही बहुत बुरी लगने लगती है। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के आख़िरी जुम्ले का मतलब यह है कि जब इमारत किसी को मिलती है तो अच्छी लगती है, जैसे बच्चे को दूध पिलाने वाली अच्छी लगती है और जब इमारत हाथ से जाती है तो यह बहुत बुरा लगता है, जैसे दूध छोड़ना बच्चे को बहुत बुरा लगता है।

﴿155﴾ عَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنْ شِئْتُمْ اَنْبَأْتُكُمْ عَنِ الْإِمَارَةِ، وَمَا هِيَ؟ فَنَادَيْتُ بِاَعْلٰى صَوْتِيْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. وَمَا هِيَ يَارَسُوْلَ اللهِ ؟ قَالَ: اَوَّلُهَا مَلَامَةٌ، وَثَانِيْهَا نَدَامَةٌ، وَثَالِثُهَا عَذَابٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا مَنْ عَدَلَ، وَكَيْفَ يَعْدِلُ مَعَ قَرَابَتِهِ؟. رواه البزار والطبراني في الكبير والاوسط باختصار ورجال الكبير رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٥/٣٦٣

155. हज़रत औफ़ बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें इस इमारत की हक़ीक़त बताऊं? मैंने बुलन्द आवाज़ से तीन मर्तबा पूछा : या रसूलुल्लाह! इसकी हक़ीक़त क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इसका पहला मरहला मलामत है, दूसरा मरहला नदामत है, तीसरा मरहला क़ियामत के दिन अ़ज़ाब है, अल्बत्ता जिस शख़्स ने इंसाफ़ किया, वह महफ़ूज़ रहेगा, (लेकिन) आदमी अपने क़रीबी (रिश्तेदार वग़ैरह) के मामलों में अद्ल व इंसाफ़ कैसे कर सकता है यानी बावजूद अद्ल व इंसाफ़ को चाहते हुए भी तबीयत से मग़लूब होकर अद्ल व इंसाफ़ नहीं कर पाता और रिश्तेदारों की तरफ़ झुकाव हो जाता है। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स अमीर बनता है, उसको हर तरफ़ से मलामत की जाती है कि उसने ऐसा किया, वैसा किया। उसके बाद वह लोगों की इस मलामत से परेशान होकर नदामत में मुब्तला हो जाता है और कहता है, मैंने इस मनसब को क्यों क़ुबूल किया। फिर आख़िरी मरहला इंसाफ़ न करने की सूरत में क़ियामत के दिन अ़ज़ाब की शक्ल में ज़ाहिर होगा, ग़रज़ यह कि दुनिया में भी ज़िल्लत व रुस्वाई और आख़िरत में भी हिसाब की सख़्ती होगी।

﴿156﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنِ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا مِنْ عِصَابَةٍ وَفِيْ تِلْكَ الْعِصَابَةِ مَنْ هُوَ اَرْضٰى لِلّٰهِ مِنْهُ فَقَدْ خَانَ اللهَ وَخَانَ رَسُوْلَهُ وَخَانَ الْمُؤْمِنِيْنَ. رواه الحاكم في المستدرك وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ٤/٩٢

156. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी को जमाअ़त का अमीर बनाया, जबकि जमाअ़त के अफ़राद में उससे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने वाला शख़्स हो, तो उसने अल्लाह तआ़ला से ख़ियानत की और उनके रसूल से ख़ियानत की और ईमान वालों

से ख़ियानत की। (मुस्तदरक हाकिम)

फ़ायदा : अगर अफ़ज़ल के होते हुए किसी दूसरे को अमीर बनाने में कोई दीनी मस्लहत हो तो फिर इस वईद में दाख़िल नहीं। चुनांचे एक मौक़े पर रसूलुल्लाह ﷺ ने एक वफ़्द भेजा जिसमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श ؓ को अमीर बनाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि यह तुममें ज़्यादा अफ़ज़ल नहीं हैं, लेकिन भूख और प्यास पर ज़्यादा सब्र करने वाले हैं। (मुस्नद अहमद)

﴿157﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ اَمِيْرٍ يَلِيْ اَمْرَ الْمُسْلِمِيْنَ ثُمَّ لَا يَجْهَدُلَهُمْ وَيَنْصَحُ، اِلَّا لَمْ يَدْخُلْ مَعَهُمُ الْجَنَّةَ۔

رواہ مسلم،باب فضیلۃ الامیر العادل، رقم: ٤٧٣١

157. हज़रत माक़िल बिन यसार ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो अमीर मुसलमानों के मामलों का ज़िम्मेदार बनकर मसुलमानों की ख़ैरख़्वाही में कोशिश न करे वह मुसलमानों के साथ जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकेगा। (मुस्लिम)

﴿158﴾ عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَامِنْ وَالٍ يَلِيْ رَعِيَّةً مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَيَمُوْتُ وَهُوَ غَاشٌّ لَهُمْ اِلَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ۔

رواہ البخاری،باب من استُرعِی رعیۃ فلم ینصح،رقم: ٧١٥١

158. हज़रत माक़िल बिन यसार ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान रईय्यत का ज़िम्मेदार बने, फिर उनके साथ धोखे का मामला करे और इसी हालत पर उसकी मौत आ जाए तो अल्लाह तआ़ला जन्नत को उस पर हराम कर देंगे। (बुख़ारी)

﴿159﴾ عَنْ اَبِيْ مَرْيَمَ الْاَزْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ وَلَّاهُ اللهُ عَزَّوَجَلَّ شَيْئًا مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ فَاحْتَجَبَ دُوْنَ حَاجَتِهِمْ وَخَلَّتِهِمْ وَفَقْرِهِمْ احْتَجَبَ اللهُ عَنْهُ دُوْنَ حَاجَتِهِ وَخَلَّتِهِ وَفَقْرِهِ۔

رواہ ابو داؤد،باب فیما یلزم الامام من امر الرعیۃ، رقم: ٢٩٤٨

159. हज़रत अबू मरयम अज़दी ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के किसी

काम का ज़िम्मेदार बनाया और वह मुसलमानों के हालात, ज़रूरियात और उनकी तंगदस्ती से मुंह फेरे यानी उनकी ज़रूरत को पूरा न करे और न उनकी तंगदस्ती के दूर करने की कोशिश करे, तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसके हालात, ज़रूरियात और तंगदस्ती से मुंह फेर लेंगे, यानी क़ियामत के दिन उसकी ज़रूरत और परेशानी को दूर नहीं फ़रमाएंगे। (अबूदाऊद)

﴾160﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا مِنْ اَحَدٍ يُؤَمَّرُ عَلٰى عَشَرَةٍ فَصَاعِدًا لَا يُقْسِطُ فِيْهِمْ اِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِى الْاَصْفَادِ وَالْاَغْلَالِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح الاسناد ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٨٩/٤

160. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दस या दस से ज़ाइद अफ़राद पर अमीर बनाया जाए और वह उनके साथ अदल व इंसाफ़ का मामला न करे, तो क़ियामत के दिन बेड़ियों और हथकड़ियों में (बंधा हुआ) आएगा। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾161﴿ عَنْ اَبِیْ وَائِلٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ عُمَرَ اسْتَعْمَلَ بِشْرَبْنَ عَاصِمٍ عَلٰى صَدَقَاتِ هَوَازِنَ فَتَخَلَّفَ بِشْرٌ فَلَقِيَهُ عُمَرُ، فَقَالَ: مَاخَلَّفَكَ، اَمَا لَنَا عَلَيْكَ سَمْعٌ وَطَاعَةٌ، قَالَ: بَلٰى! وَلٰكِنْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ وُلِّىَ مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِيْنَ شَيْئًا اُتِىَ بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُوْقَفَ عَلٰى جِسْرِ جَهَنَّمَ. (الحديث) اخرجه البخارى من طريق سويد، الاصابة ١٥٢/١

161. हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर ﷺ ने हज़रत बिश्र बिन आ़सिम ﷺ को (क़बीला) हवाज़िन के सदक़ात (वसूल करने के लिए) आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया लेकिन हज़रत बिश्र न गए। हज़रत उमर ﷺ की उनसे मुलाक़ात हुई। हज़रत उमर ﷺ ने उनसे पूछा, तुम क्यों नहीं गए क्या हमारी बात को सुनना और मानना तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है? हज़रत बिश्र ने अ़र्ज़ किया, क्यों नहीं! लेकिन मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जिसे मुसलमानों के किसी काम का ज़िम्मेदार बनाया गया उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा (अगर ज़िम्मेदारी को सही तौर पर अंजाम दिया होगा तो नजात होगी, वरना दोज़ख़ की आग होगी)। (इसाबा)

﴾162﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ اَمِيْرِ عَشَرَةٍ اِلَّا يُؤْتٰى بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَغْلُوْلًا حَتّٰى يَفُكَّهُ الْعَدْلُ اَوْيُوْبِقَهُ الْجَوْرُ.

رواه البزار والطبرانى فى الاوسط ورجال البزار رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٣٧٠/٥

162. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हर अमीर चाहे दस आदमियों का ही क्यों न हो क़ियामत के दिन इस तरह लाया जाएगा कि उसकी गर्दन में तौक़ होगा, यहां तक कि उसको तौक़ से उसका अद्ल छुड़वाएगा या उसका ज़ुल्म उसको हलाक कर देगा। (बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿163﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: سَيَلِيْكُمْ أُمَرَاءُ يُفْسِدُوْنَ وَمَا يُصْلِحُ اللهُ بِهِمْ أَكْثَرُ، فَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِطَاعَةِ اللهِ فَلَهُمُ الْأَجْرُ وَعَلَيْكُمُ الشُّكْرُ، وَمَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِمَعْصِيَةِ اللهِ فَعَلَيْهِمُ الْوِزْرُ وَعَلَيْكُمُ الصَّبْرُ.

رواه البيهقي في شعب الإيمان ٦/١٥

163. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे कुछ अमीर ऐसे होंगे जो फ़साद और बिगाड़ करेंगे (लेकिन) अल्लाह तआ़ला उनके ज़रिए जो इस्लाह फ़रमाएंगे। वह इस्लाह उनके बिगाड़ से ज़्यादा होगी, लिहाज़ा उन अमीरों में से जो अमीर अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी वाले काम करेगा तो उसे अज्र मिलेगा और उस पर तुम्हारे लिए शुक्र करना ज़रूरी होगा। इसी तरह उन अमीरों में से जो अमीर अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी वाले काम करेगा तो उसका गुनाह उसके सर होगा और तुम्हें इस हालत में सब्र करना होगा। (बैहक़ी)

﴿164﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ فِيْ بَيْتِيْ هٰذَا: اَللّٰهُمَّ مَنْ وَلِيَ مِنْ أَمْرِ أُمَّتِيْ شَيْئًا فَشَقَّ عَلَيْهِمْ، فَاشْقُقْ عَلَيْهِ وَ مَنْ وَلِيَ مِنْ أَمْرِ أُمَّتِيْ شَيْئًا فَرَفَقَ بِهِمْ، فَارْفُقْ بِهٖ.

رواه مسلم، باب فضيلة الامير العادل ... رقم: ٤٧٢٢

164. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को अपने उस घर में यह दुआ करते हुए सुना, "ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत के (दीनी व दुन्यावी) मामलों में से किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बने, फिर वह लोगों को मुशक़्क़त में डाले तो आप भी उस शख़्स को मुशक़्क़त में डालिए और जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बने और लोगों के साथ नर्मी का बरताव करे, आप भी उस शख़्स के साथ नर्मी का मामला फ़रमाइए"। (मुस्लिम)

﴿165﴾ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ وَكَثِيْرِ بْنِ مُرَّةَ وَعَمْرِو بْنِ الْأَسْوَدِ وَالْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِ يْكَرِبَ وَأَبِيْ أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ الْأَمِيْرَ إِذَا ابْتَغَى الرِّيْبَةَ فِي النَّاسِ أَفْسَدَهُمْ.

رواه ابو داؤد، باب في التجسس، رقم: ٤٨٨٩

165. हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर, हज़रत कसीर बिन मुर्रह, हज़रत अम्र बिन अस्वद, हज़रत मिक़दाम बिन मादीकर्ब और हज़रत उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर जब लोगों में शक व शुब्हा की बात ढूंढता है तो लोगों को ख़राब कर देता है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब अमीर लोगों पर एतमाद के बजाए उनके ऐब तलाश करने लगे और उन पर बदगुमानी करने लगे, तो वह ख़ुद ही लोगों में फ़साद और इंतिशार का ज़रिया बनेगा, इसलिए अमीर को चाहिए कि लोगों के ऐबों पर पर्दा डाले और उनके साथ अच्छा गुमान रखे। (बज़्लुलमज्हूद)

﴿166﴾ عَنْ أُمِّ الْحُصَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنْ أُمِّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدَّعٌ أَسْوَدُ يَقُوْدُكُمْ بِكِتَابِ اللهِ فَاسْمَعُوْا لَهُ وَأَطِيْعُوْا.

رواه مسلم، باب وجوب طاعة الامراء......، رقم: ٤٧٦٢

165. हज़रत उम्मुल हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर तुम पर किसी नाक, कान कटे हुए काले ग़ुलाम को भी अमीर बनाया जाए तो तुम्हें अल्लाह तआला की किताब के ज़रिए यानी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ चलाए तो तुम उसका हुक्म सुनो और मानो। (मुस्लिम)

﴿167﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْمَعُوْا وَأَطِيْعُوْا، وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيْبَةٌ.

رواه البخاری، باب السمع والطاعة للامام......، رقم: ٧١٤٢

167. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर की बात सुनते और मानते रहो, अगरचे तुम पर हब्शी ग़ुलाम ही अमीर क्यों न बनाया गया हो, जिसका सर गोया (छोटे होने में) किशमिश की तरह हो। (बुख़ारी)

﴿168﴾ عَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِسْمَعُوْا وَأَطِيْعُوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِمْ مَا حُمِّلُوْا وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ.

رواه مسلم، باب فی طاعة الامراء وان منعوا الحقوق، رقم: ٤٧٨٣

168. हज़रत वाइल हज़रमी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम

अमीरों की बात सुनो और मानो, क्योंकि उनकी जिम्मेदारियों के बारे में उनसे पूछा जाएगा (मसलन इंसाफ़ करना) और तुम्हारी ज़िम्मेदारियों के बारे में तुम से पूछा जाएगा (मसलन अमीर की बात मानना, लिहाज़ा हर एक अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने में लगा रहे ख़्वाह दूसरा पूरा करे या न करे)। (मुस्लिम)

﴾169﴿ عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اُعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَاَطِيْعُوْا مَنْ وَلَّاهُ اللّٰهُ اَمْرَكُمْ وَلَا تُنَازِعُوا الْاَمْرَ اَهْلَهٗ وَلَوْ كَانَ عَبْدًا اَسْوَدَ، وَعَلَيْكُمْ بِمَا تَعْرِفُوْنَ مِنْ سُنَّةِ نَبِيِّكُمْ وَالْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ، وَعَضُّوْا عَلٰى نَوَاجِذِكُمْ بِالْحَقِّ۔ رواه الحاكم وقال: هذا اسناد صحيح على شرطهما جميعا ولا اعرف له علة ووافقه الذهبي ١/٩٦

169. हज़रत इरबाज़ बिन सारिया ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला की इबादत करो, उनके साथ किसी को शरीक मत ठहराओ और जिन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारे कामों का ज़िम्मेदार बनाया है उनकी मानो और अमीर से इमारत के बारे में न झगड़ो, चाहे अमीर स्याह ग़ुलाम ही हो और तुम अपने नबी ﷺ की सुन्नत और हिदायतयाफ़्ता खुलफ़ा राशिदीन अजमईन के तरीक़े को लाज़िम पकड़ो, हक़ को इंतिहाई मज़बूती से थामे रहो।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴾170﴿ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِنَّ اللّٰهَ يَرْضٰى لَكُمْ ثَلَاثًا وَيَسْخَطُ لَكُمْ ثَلَاثًا، يَرْضٰى لَكُمْ اَنْ تَعْبُدُوْهُ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَاَنْ تَعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَلَا تَفَرَّقُوْا وَاَنْ تَنَاصَحُوْا مَنْ وَلَّاهُ اللّٰهُ اَمْرَكُمْ وَيَسْخَطُ لَكُمْ قِيْلَ وَقَالَ وَاِضَاعَةَ الْمَالِ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ۔ رواه احمد ٢/٣٦٧

170. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला तुम्हारी तीन चीज़ों को पसन्द फ़रमाते हैं और तीन चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते हैं। तुम्हारी इस बात को पसन्द फ़रमाते हैं कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो, उनके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और सब मिलकर अल्लाह तआला की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहो (अलग-अलग होकर) बिखर न जाओ, और जिन्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारा ज़िम्मेदार बनाया है उनके लिए ख़ुलूस, वफ़ादारी और ख़ैरख़्वाही रखो और तुम्हारी उन बातों को नापसन्द फ़रमाते हैं कि तुम फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा करो, माल ज़ाय करो और ज़्यादा सवालात करो। (मुस्नद अहमद)

﴿171﴾ عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: مَنْ اَطَاعَنِیْ فَقَدْ اَطَاعَ اللہَ، وَمَنْ عَصَانِیْ فَقَدْ عَصَی اللہَ، وَمَنْ اَطَاعَ الْاِمَامَ فَقَدْ اَطَاعَنِیْ، وَمَنْ عَصَی الْاِمَامَ فَقَدْ عَصَانِیْ۔

رواہ ابن ماجہ، باب طاعۃ الامام، رقم: ۲۸۵۹

171. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने मेरी इताअ़त की, उसने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी की और जिसने मुसलमानों के अमीर की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने मुसलमानों के अमीर की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की। (इब्ने माजा)

﴿172﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللہُ عَنْھُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: مَنْ رَأٰی مِنْ اَمِیْرِہٖ شَیْئًا یَکْرَھُہٗ فَلْیَصْبِرْ، فَاِنَّہٗ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَۃَ شِبْرًا فَمَاتَ، فَمِیْتَۃٌ جَاھِلِیَّۃٌ۔

رواہ مسلم، باب وجوب ملازمۃ جماعۃ المسلمین......، رقم: ۴۷۹۰

172. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स अपने अमीर की ऐसी बात देखे जो उसे नागवार हो, तो उसे चाहिए कि उस पर सब्र करे, क्योंकि जो शख़्स मुसमलानों की जमाअ़त यानी इज्तिमाइयत से बालिश्त भर भी जुदा हुआ (और तौबा किए बग़ैर) उसी हालत में मर गया तो वह जाहिलियत की मौत मरा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : ''जाहिलियत की मौत मरा'' से मुराद यह है कि ज़माना जाहिलियत में लोग आज़ाद रहते थे, न वह अपने सरदार की इताअ़त करते थे, न अपने रहनुमा की बात मानते थे। (नव्वी)

﴿173﴾ عَنْ عَلِیٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: لَاطَاعَۃَ فِیْ مَعْصِیَۃِ اللہِ، اِنَّمَا الطَّاعَۃُ فِی الْمَعْرُوْفِ۔

(وھو بعض الحدیث) رواہ ابو داؤد، باب فی الطاعۃ، رقم: ۲۶۲۵

173. हज़रत अ़ली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में किसी की इताअ़त न करो, इताअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है। (अबूदाऊद)

﴿174﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ اَنَّ رَسُوْلَ اللہِ ﷺ قَالَ: السَّمْعُ وَالطَّاعَۃُ حَقٌّ عَلَی الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِیْمَا اَحَبَّ اَوْ کَرِہَ اِلَّا اَنْ یُّؤْمَرَ بِمَعْصِیَۃٍ فَاِنْ اُمِرَ بِمَعْصِیَۃٍ فَلَا سَمْعَ عَلَیْہِ وَلَا طَاعَۃَ۔

رواہ احمد ۱۴۲/۲

174. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अमीर की बात सुनना और मानना मुसलमान पर वाजिब है, उन चीज़ों में जो उसे पसन्द हों या नापसन्द हों, मगर यह कि उसे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का हुक्म दिया जाए तो जायज़ नहीं, लिहाज़ा अगर किसी गुनाह के करने का हुक्म दिया जाए तो उसका सुनना और मानना उसके ज़िम्मे नहीं। (मुस्नद अहमद)

﴿175﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِذَا سَافَرْتُمْ فَلْیَؤُمَّكُمْ اَقْرَأُكُمْ، وَاِنْ كَانَ اَصْغَرَكُمْ، وَاِذَا اَمَّكُمْ فَهُوَ اَمِیْرُكُمْ۔

رواه البزار واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٠٦

175. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम सफ़र करो तो तुम्हारा इमाम वह होना चाहिए जिसको क़ुरआन करीम ज़्यादा याद हो (और मसाइल को ज़्यादा जानने वाला हो) अगरचे वह तुम में सबसे छोटा हो और जब वह तुम्हारा नमाज़ में इमाम बना तो वह तुम्हारा अमीर भी है।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : कुछ दूसरी रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि आप ﷺ ने कभी किसी ख़ास सिफ़त की वजह से ऐसे शख़्स को भी अमीर बनाया जिनके साथी उनसे अफ़ज़ल थे, जैसा कि हदीस नम्बर 156 के फ़ायदे में गुज़र चुका है।

﴿176﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: مَنْ عَبَدَ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی لَایُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا فَاَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَی الزَّكَاةَ وَسَمِعَ وَاَطَاعَ فَاِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی یُدْخِلُهٗ مِنْ اَیِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ وَلَهَا ثَمَانِیَةُ اَبْوَابٍ وَمَنْ عَبَدَ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی لَایُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا وَاَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَی الزَّكَاةَ وَسَمِعَ وَعَصٰی فَاِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی مِنْ اَمْرِهٖ بِالْخِیَارِ اِنْ شَاءَ رَحِمَهٗ وَاِنْ شَاءَ عَذَّبَهٗ۔ رواه احمد والطبراني ورجال احمد ثقات، مجمع الزوائد ٥/٣٨٩

176. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने अल्लाह तबारक व तआला की इस तरह इबादत की कि उनके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया, नमाज़ को क़ायम किया, ज़कात अदा की और अमीर की बात को सुना और माना अल्लाह तआला उसको जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से वह चाहेगा जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे। जन्नत के आठ दरवाज़े हैं और जिसने अल्लाह तआला की इस तरह इबादत की कि उनके साथ

किसी को शरीक न ठहराया, नमाज़ क़ायम की, ज़कात अदा की और अमीर की बात
को सुना (लेकिन) उसे न माना तो उसका मामला अल्लाह के सुपुर्द है, चाहे उस पर
रहम फ़रमाएं, चाहे उसको अज़ाब दें। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿177﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: الْغَزْوُ غَزْوَانِ فَاَمَّا مَنِ ابْتَغَى وَجْهَ اللّٰهِ، وَاَطَاعَ الْاِمَامَ، وَاَنْفَقَ الْكَرِيْمَةَ، وَيَاسَرَ الشَّرِيْكَ، وَاجْتَنَبَ الْفَسَادَ، فَاِنَّ نَوْمَهُ وَنَبْهَهُ اَجْرٌ كُلُّهُ، وَاَمَّا مَنْ غَزَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَسُمْعَةً وَعَصَى الْاِمَامَ، وَاَفْسَدَ فِي الْاَرْضِ، فَاِنَّهُ لَمْ يَرْجِعْ بِالْكَفَافِ۔ رواه ابوداؤد، باب فيمن يغزو ويلتمس الدنيا، رقم: ٢٥١٥

177. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद में निकलना दो क़िस्म पर है : जिसने जिहाद के लिए निकलने में अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी को मक़सूद बनाया, अमीर की फ़रमांबरदारी की, अपने उम्दा माल को ख़र्च किया, साथी के साथ नर्मी का मामला किया और (हर क़िस्म के) फ़साद से बचा, तो ऐसे शख़्स का सोना-जागना सबका सब सवाब है और जो जिहाद में फ़ख़ और दिखलाने और लोगों में अपने चर्चे कराने के लिए निकला, अमीर की बात न मानी और ज़मीन में फ़साद फैलाया, तो वह जिहाद से ख़सारे के साथ लौटेगा। (अबूदाऊद)

﴿178﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! رَجُلٌ يُرِيْدُ الْجِهَادَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَهُوَ يَبْتَغِيْ عَرَضًا مِنْ عَرَضِ الدُّنْيَا؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لَا اَجْرَ لَهُ، فَاَعْظَمَ ذٰلِكَ النَّاسُ وَقَالُوْا لِلرَّجُلِ: عُدْ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَلَعَلَّكَ لَمْ تُفَهِّمْهُ، فَقَالَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! رَجُلٌ يُرِيْدُ الْجِهَادَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَهُوَ يَبْتَغِيْ عَرَضًا مِنْ عَرَضِ الدُّنْيَا؟ قَالَ: لَا اَجْرَ لَهُ. فَقَالُوا لِلرَّجُلِ: عُدْ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ فَقَالَ لَهُ الثَّالِثَةَ، فَقَالَ لَهُ: لَا اَجْرَ لَهُ.

رواه ابوداؤد، باب فيمن يغدو ويلتمس الدنيا، رقم: ٢٥١٦

178. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया : या रसूलुल्लाह! एक आदमी अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद के लिए इस नीयत से जाता है कि उसे दुनिया का कुछ सामान मिल जाए? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसे कोई सवाब न मिलेगा। लोगों ने उसको बहुत बड़ी बात समझा और उस शख़्स से कहा तुम इस बात को रसूलुल्लाह ﷺ से दोबारा पूछो, शायद तुम अपनी बात रसूलुल्लाह ﷺ को समझा नहीं सके। उस शख़्स ने दोबारा अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! एक आदमी जिहाद में इस नीयत से जाता है कि उसे दुनिया का कुछ

सामान मिल जाएगा? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उसे कोई सवाब नहीं मिलेग... लोगों ने उस शख़्स से कहा अपना सवाल फिर से दोहराओ, चुनांचे उस शख़्स ने तीसरी मर्तबा पूछा, आप ﷺ ने तीसरी मर्तबा भी उससे यही फ़रमाया कि उसे क सवाब नहीं मिलेगा। (अबूदाऊद)

﴿179﴾ عَنْ اَبِىْ ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَانَ النَّاسُ اِذَا نَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْزِلًا تَفَرَّقُوْا فِى الشِّعَابِ وَالْاَوْدِيَةِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ تَفَرُّقَكُمْ فِىْ هٰذِهِ الشِّعَابِ وَالْاَوْدِيَةِ اِنَّمَا ذٰلِكُمْ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَلَمْ يَنْزِلْ بَعْدَ ذٰلِكَ مَنْزِلًا اِلَّا انْضَمَّ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ حَتّٰى يُقَالَ: لَوْ بُسِطَ عَلَيْهِمْ ثَوْبٌ لَعَمَّهُمْ۔

رواه ابو داؤد، باب ما يؤمر من انضمام العسكر وسعته، رقم: ٢٦٢٨

179. हज़रत अबू सालबा ख़ुशनी ﷺ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी जगह ठहरने के लिए पड़ाव डाला करते थे, तो सहाबा ﷺ घाटियों और वादियों में बिखकर द ठहरते थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा यह घाटियों और वादियों में बिख जाना शैतान की तरफ़ से है (जो तुमको एक दूसरे से जुदा रखना चाहता है) इस इर्शाद के बाद रसूलुल्लाह ﷺ जहां भी ठहरते तमाम सहाबा इकट्ठे मिल- जुलकर ठहरते, यहां त कि उन्हें (एक दूसरे से क़रीब-क़रीब देखकर) यूं कहा जाने लगा कि अगर उन सब पर एक कपड़ा डाला जाए तो वह उन सबको ढांप ले। (अबूदाऊ

﴿180﴾ عَنْ صَخْرٍ الْغَامِدِىِّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ ﷺ: اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِاُمَّتِىْ فِىْ بُكُوْرِهَا وَكَانَ اِذَا بَعَثَ سَرِيَّةً اَوْجَيْشًا بَعَثَهَا مِنْ اَوَّلِ النَّهَارِ، وَكَانَ صَخْرٌ رَجُلًا تَاجِرًا، وَكَانَ يَبْعَثُ تِجَارَتَهُ مِنْ اَوَّلِ النَّهَارِ، فَاَثْرٰى وَكَثُرَ مَالُهُ۔ رواه ابو داؤد، باب فى الابتكار فى السفر، رقم: ٢٦٠٦

180. हज़रत सख़्र ग़ामिदी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया "या अल्लाह! मेरी उम्मत के लिए दिन के इब्तिदाई हिस्से में बरकत अता फ़रमा दे रसूलुल्लाह ﷺ जब कोई छोटा या बड़ा लशकर रवाना फ़रमाते, तो उसको दिन के इब्तिदाई हिस्से में रवाना फ़रमाते। हज़रत सख़्र ﷺ जो एक ताजिर थे अप तिजारती माल दिन के इब्तिदाई हिस्से में मुलाज़िमीन के ज़रिए फ़रोख़्त के लिए भेजते थे, चुनांचे वह ग़नी हो गए और उनका माल बढ़ गया। (अबूदाऊ

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह ﷺ की इस दुआ का मक़्सद यह है कि मेरी उम्मत के लोग दिन के इब्तिदाई हिस्से में सफ़र करें या कोई दीनी दुनयावी काम करें तो उसमें उन्हें बरकत हासिल हो।

﴾181﴿ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِاَكْثَمَ بْنِ الْجَوْنِ الْخُزَاعِيِّ: يَا اَكْثَمُ! اغْزُ مَعَ غَيْرِ قَوْمِكَ يَحْسُنْ خُلُقُكَ، وَتَكْرُمْ عَلٰى رُفَقَائِكَ، يَا اَكْثَمُ! خَيْرُ الرُّفَقَاءِ اَرْبَعَةٌ، وَخَيْرُ السَّرَايَا اَرْبَعُمِائَةٍ، وَخَيْرُ الْجُيُوْشِ اَرْبَعَةُ آلَافٍ وَلَنْ يُغْلَبَ اِثْنَا عَشَرَ اَلْفًا مِنْ قِلَّةٍ۔ رواه ابن ماجه، باب السرايا، رقم: ٢٨٢٧

181. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अकसम बिन जौन ख़ुज़ाई ﷺ को इर्शाद फ़रमाया : अकसम! अपनी क़ौम के लावा दूसरों के साथ मिलकर भी जिहाद किया करो, उससे तुम्हारे अख़्लाक़ अच्छे जाएंगे और उन अख़्लाक की वजह से तुम अपने रुफ़क़ा और साथियों की नज़र में इज़्ज़त वाले हो जाओगे। अकसम! (सफ़र के लिए) बेहतरीन साथी (कम-से-कम) र हैं और बेहतरीन सरीया (छोटा लश्कर) वह है जो चार सौ अफ़राद पर मुशतमिल हो और बेहतरीन जैश (बड़ा लश्कर) चार हज़ार का है। बारह हज़ार अफ़राद अपनी दाद की कमी की वजह से शिकस्त नहीं खा सकते (अल्बत्ता दूसरी कोई वजह शिकस्त की हो तो और बात है जैसे अल्लाह तआला की किसी नाफ़रमानी में मुब्तला जाना वग़ैरह)। (इब्ने माजा)

﴾182﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِيْ سَفَرٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، اِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ عَلٰى رَاحِلَةٍ لَهُ، قَالَ: فَجَعَلَ يَصْرِفُ بَصَرَهُ يَمِيْنًا وَشِمَالًا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ مَعَهُ فَضْلُ ظَهْرٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلٰى مَنْ لَا ظَهْرَ لَهُ، وَمَنْ كَانَ لَهُ فَضْلٌ مِنْ زَادٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلٰى مَنْ لَا زَادَ لَهُ، قَالَ: فَذَكَرَ مِنْ اَصْنَافِ الْمَالِ مَاذَكَرَ، حَتّٰى رَاَيْنَا اَنَّهُ لَا حَقَّ لِاَحَدٍ مِنَّا فِيْ فَضْلٍ۔ رواه مسلم، باب استحباب المؤاساة بفضول المال، رقم: ٤٥١٧

182. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मौक़े पर हम रसूलुल्लाह ﷺ साथ सफ़र में थे कि अचानक एक साहब सवारी पर आए और (अपनी ज़रूरत के इज़हार के लिए) दाएं-बाएं देखने लगे (ताकि किसी ज़रिए से उनकी ज़रूरत पूरी सके) उस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसके पास (अपनी ज़रूरत से) ज़ाइद सवारी हो वह उसको दे दे, जिसके पास सवारी न हो और जिसके पास (अपनी ज़रूरत से) ज़ाइद खाने पीने का सामान हो, उसको दे दे, जिसके पास खाने पीने का मान न हो। रावी कहते हैं कि इस तरह आप ﷺ ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मालों का ज़िक्र किया, यहां तक (आप ﷺ की तरग़ीब से) हमें यह एहसास होने लगा कि हम से किसी का अपनी ज़ाइद चीज़ पर कोई हक़ नहीं है (बल्कि उस चीज़ का हक़ीक़ी मुस्तहिक़ वह शख़्स है जिसके पास वह चीज़ नहीं है)। (मुस्लिम)

﴿183﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ اَرَادَ اَنْ يَغْزُوَ قَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ! اِنَّ مِنْ اِخْوَانِكُمْ قَوْمًا لَيْسَ لَهُمْ مَالٌ وَلَا عَشِيْرَةٌ فَلْيَضُمَّ اَحَدُكُمْ اِلَيْهِ الرَّجُلَيْنِ اَوِالثَّلَاثَةَ.

(الحديث)۔ رواه ابو داؤد، باب الرجل يتحمل بمال غيره يغزو، رقم:٢٥٣٤

183. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक ग़ज़्वा पर जाने लगे, तो इर्शाद फ़रमाया : मुहाजिरीन व अन्सार की जमाअ़त! तुम्हारे भाइयों में से कुछ लोग ऐसे हैं जिनके पास न माल है न उनके रिश्तेदार हैं, इसलिए तुममें से हर एक उनमें से दो या तीन को अपने साथ मिला ले। (अबूदाऊद

﴿184﴾ عَنِ الْمُطْعِمِ بْنِ الْمِقْدَامِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا خَلَّفَ عَبْدٌ عَلٰى اَهْلِهِ اَفْضَلَ مِنْ رَكْعَتَيْنِ يَرْكَعُهُمَا عِنْدَهُمْ حِيْنَ يُرِيْدُ سَفَرًا.

رواه ابن شيبة حديث ضعيف، الجامع الصغير٢/٤٩٥، وردعليه

صاحب الاتحاف وملخص كلامه ان الحديث ليس بضعيف، اتحاف السادة ٣/٤٦٥

184. हज़रत मुतइम बिन मिक़दाम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब सफ़र पर जाने लगे तो सबसे बेहतर नायब जिसे वह अपने अह्ल व अ़याल के पास छोड़कर जाए, वह दो रकअ़तें हैं, जो उनके पास पढ़कर जाए। (जामेअ़ सग़ीर

﴿185﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا، وَبَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا.

رواه البخاري، باب ما كان النبي ﷺ يتخولهم بالموعظة...، رقم: ٦٩

185. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों के साथ आसानी का बरताव करो और उनके साथ सख़्ती का बरताव न करो, ख़ुशख़बरियां सुनाओ और नफ़रत न दिलाओ। (बुख़ारी)

यानी लोगों को नेक काम करने पर अज्र व सवाब की ख़ुशख़बरियां सुनाओ और उनके गुनाहों पर ऐसा मत डराओ कि वे अल्लाह तआ़ला की रहमत से मायूस होकर दीन से दूर हो जाएं।

﴿186﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ هُوَ ابْنُ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: قَفْلَةٌ كَغَزْوَةٍ.

رواه ابو داؤد، باب في فضل القفل في الغزو، رقم: ٢٤٨٧

186. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिहाद से लौट कर आना भी जिहाद में जाने की तरह है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने पर जो अज्र व सवाब मिलता है, वही अज्र व सवाब अल्लाह तआ़ला के रास्ते से वापस आने के बाद मक़ाम पर रहते हुए भी मिलता है जबकि नीयत यह हो कि जिस ज़रूरत की वजह से वापस लौटा था, ज्यों ही ज़रूरत पूरी हो जाएगी या जब अल्लाह तआ़ला के रास्ते का बुलावा आएगा, फ़ौरन अल्लाह तआ़ला के रास्ते में निकल जाऊंगा। (मज़ाहिरे हक़)

﴿187﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَرَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ اِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ اَوْحَجٍّ اَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الْاَرْضِ ثَلَاثَ تَكْبِيْرَاتٍ وَيَقُوْلُ: لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهُ۔

رواه ابوداؤد،باب فى التكبير على كل شرف فى المسير،رقم: ٢٧٧٠

187. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब जिहाद, हज या उमरे से लौटते तो हर बुलन्दी पर तीन मर्तबा तकबीर कहते, उसके बाद ये कलिमे पढ़ते :

तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, उनका कोई शरीक नहीं, उन्हीं के लिए बादशाही है, उन्हीं के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर हैं। हम वापस होने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं और सज्दा करने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने अपना वादा सच्चा कर दिया और अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और उन्होंने तन्हा दुश्मनों को शिकस्त दी। (अबूदाऊद)

﴿188﴾ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَعَاهُ اِلَى الْاِسْلَامِ، وَقَالَ لَهُ: يَاعَمْرَوبْنَ مُرَّةَ: اَنَا النَّبِيُّ الْمُرْسَلُ اِلَى الْعِبَادِ كَافَّةً اَدْعُوْهُمْ اِلَى الْاِسْلَامِ وَآمُرُهُمْ بِحَقْنِ الدِّمَاءِ، وَصِلَةِ الْاَرْحَامِ، وَعِبَادَةِ اللهِ، وَرَفْضِ الْاَصْنَامِ، وَحَجِّ الْبَيْتِ وَصِيَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ، شَهْرٍ مِنَ اثْنَىْ عَشَرَ شَهْرًا، فَمَنْ اَجَابَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَمَنْ عَصٰى فَلَهُ النَّارُ فَآمِنْ بِاللهِ يَاعَمْرُو يُؤَمِّنْكَ اللهُ مِنْ هَوْلِ جَهَنَّمَ، قُلْتُ: اَشْهَدُ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ، وَآمَنْتُ بِكُلِّ مَا جِئْتَ بِهِ بِحَلَالٍ وَحَرَامٍ، وَاِنْ اَرْغَمَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا مِنَ الْاَقْوَامِ، فَقَالَ النَّبِيُّ

ﷺ: مَرْحَبًا بِكَ يَاعَمْرَوبْنَ مُرَّةَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ بِأَبِيْ أَنْتَ وَأُمِّيْ، اِبْعَثْنِيْ إِلَى قَوْمِيْ لَعَلَّ اللهَ أَنْ يَمُنَّ بِيْ عَلَيْهِمْ كَمَا مَنَّ بِكَ عَلَيَّ فَبَعَثَنِيْ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: عَلَيْكَ بِالرِّفْقِ وَالْقَوْلِ السَّدِيْدِ، وَلَا تَكُنْ فَظًّا وَلَا مُتَكَبِّرًا وَلَا حَسُوْدًا، فَأَتَيْتُ قَوْمِيْ فَقُلْتُ: يَابَنِيْ رِفَاعَةَ، يَا مَعْشَرَ جُهَيْنَةَ، إِنِّيْ رَسُوْلُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ إِلَيْكُمْ، أَدْعُوْكُمْ إِلَى الْجَنَّةِ وَأُحَذِّرُكُمُ النَّارَ، وَآمُرُكُمْ بِحَقْنِ الدِّمَاءِ، وَصِلَةِ الْأَرْحَامِ، وَعِبَادَةِ اللهِ، وَرَفْضِ الْأَصْنَامِ، وَحَجِّ الْبَيْتِ، وَصِيَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ، شَهْرٍ مِنَ اثْنَيْ عَشَرَ شَهْرًا، فَمَنْ أَجَابَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَمَنْ عَصَى فَلَهُ النَّارُ، يَامَعْشَرَ جُهَيْنَةَ، إِنَّ اللهَ -عَزَّوَجَلَّ- جَعَلَكُمْ خِيَارَمَنْ أَنْتُمْ مِنْهُ، وَبَغَّضَ إِلَيْكُمْ فِيْ جَاهِلِيَّتِكُمْ مَا حُبِّبَ إِلَى غَيْرِكُمْ، مِنْ أَنَّهُمْ كَانُوْا يَجْمَعُوْنَ بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ، وَيَخْلُفُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ عَلَى امْرَأَةِ أَبِيْهِ، وَالْغَزَاةِ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ، فَأَجِيْبُوْا هٰذَا النَّبِيَّ الْمُرْسَلَ مِنْ بَنِيْ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبٍ، تَنَالُوْا شَرَفَ الدُّنْيَا وَكَرَامَةَ الْآخِرَةِ، وَسَارِعُوْا فِيْ ذٰلِكَ يَكُنْ لَكُمْ فَضِيْلَةٌ عِنْدَ اللهِ، فَأَجَابُوْهُ إِلَّا رَجُلًا وَاحِدًا. رواه الطبراني مختصرا من مجمع الزوائد ٨/٤٤١

188. हज़रत अम्र बिन मुर्रा जुहनी ﷺ को रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्लाम की दावत दी और फ़रमाया : अम्र बिन मुर्रा! मैं अल्लाह तआला के तमाम बन्दों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा गया हूं। मैं उन्हें इस्लाम की दावत देता हूं और मैं उनको हुक्म देता हूं कि वे ख़ून की हिफ़ाज़त करें (किसी को नाहक़ क़त्ल न करें) सिलारहमी करें, एक अल्लाह तआला की इबादत करें, बुतों को छोड़ दें, बैतुल्लाह का हज करें और बारह महीनों में से एक माह रमज़ान में रोज़े रखें जो इन बातों को मान लेगा उसे जन्नत मिलेगी और जो उन्हें नहीं मानेगा उसके लिए जहन्नम होगी। अम्र! अल्लाह तआला पर ईमान लाओ, वह तुम्हें जहन्नम की हौलनाकियों से अम्न अता फ़रमाएंगे। हज़रत अम्र ﷺ ने अर्ज़ किया, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है और बेशक आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और जो आप हलाल व हराम लेकर आए हैं, मैं उस पर ईमान लाया, अगरचे यह बात बहुत-सी क़ौमों को नागवार गुज़रेगी। आप ﷺ ने ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाया और कहा, अम्र! तुम्हें मरहबा हो।

फिर हज़रत अम्र ﷺ ने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप मुझे मेरी क़ौम की तरफ़ भेज दें, हो सकता है कि अल्लाह तआला उन पर भी मेरे ज़रिए से फ़ज़्ल फ़रमा दें, जैसे आपके ज़रिए से मुझ पर फ़ज़्ल फ़रमाया है। चुनांचे आप ﷺ ने मुझे भेजा और यह हिदायात दी कि नर्मी से पेश आना, सही और सीधी बात कहना, सख़्त कलामी और

बदख़ुल्क़ी से पेश न आना, तकब्बुर और हसद न करना। मैं अपनी क़ौम के पास आया, मैंने कहा : बनी रिफ़ाआ! जुहैना के लोगो! मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह तआला के रसूल ﷺ का क़ासिद हूं। मैं तुम्हें जन्नत की दावत देता हूं और तुम को जहन्नम से डराता हूं। और मैं तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूं कि तुम ख़ून की हिफ़ाज़त करो, यानी किसी को नाहक़ क़त्ल न करो, सिला रहमी करो, एक अल्लाह तआला की इबादत करो, बुतों को छोड़ दो, बैतुल्लाह का हज करो और बारह महीनों में से एक माह रमज़ान में रोज़े रखो। जो इन बातों को मान लेगा उसे जन्नत मिलेगी और जो नहीं माने उसके लिए दोज़ख़ होगी। क़बीला जुहैना वालो! अल्लाह तआला ने तुम्हें अरबों में से बेहतरीन क़बीला बनाया है और जो बुरी बातें अरब के दूसरे क़बीलों को अच्छी लगती थीं अल्लाह तआला ने ज़माना जाहिलियत में भी तुम्हारे दिलों में उनकी नफ़रत डाली हुई थी, मसलन दूसरे क़बीला वाले दो बहनों से इकट्ठी शादी कर लेते थे और अपने बाप की बीवी से शादी कर लेते थे और अदब व अज़्मत वाले महीने में जंग कर लेते थे (और तुम ये ग़लत काम ज़माना ज़ाहिलियत में भी नहीं करते थे) लिहाज़ा अल्लाह तआला की तरफ़ से इस भेजे हुए रसूल की बात मान लो, जिनका तअल्लुक़ बनी लूवी बिन ग़ालिब क़बीला से है तो तुम दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की इज़्ज़त पा लोगे। तुम उनकी बात क़ुबूल करने में जल्दी करो तुम्हें अल्लाह तआला के यहां से (इस्लाम में पहल करने की) फ़ज़ीलत हासिल होगी, चुनांचे उनकी दावत पर एक आदमी के अलावा सारी क़ौम मुसलमान हो गई।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : अदब व अज़्मत वाले महीने चार थे, जिनमें अरब जंग नहीं करते थे—मुहर्रम, रज्जब, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

﴿189﴾ عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ لَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ اِلَّا نَهَارًا فِى الضُّحٰى، فَاِذَا قَدِمَ، بَدَاَ بِالْمَسْجِدِ، فَصَلّٰى فِيْهِ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ جَلَسَ فِيْهِ.

رواه مسلم،باب استحباب ركعتين فى المسجد ....رقم: ١٦٥٩

189. हज़रत काब बिन मालिक رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल था कि दिन में चाश्त के वक़्त सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते और आने के बाद पहले मस्जिद जाते, दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते, फिर मस्जिद में बैठते। (मुस्लिम)

﴾190﴿ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُوْلُ: فَلَمَّا اَتَيْنَا الْمَدِيْنَةَ قَالَ (لِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ) :اِئْتِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ.

رواه البخاري باب الهبة المقبوضة وغير المقبوضة رقم: ٢٦٠٤

190. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि जब हम (सफ़र से वापस) मदीना आ गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने (मुझसे) इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद जाओ और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो। (बुख़ारी)

﴾191﴿ عَنْ شِهَابِ بْنِ عَبَّادٍ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّهُ سَمِعَ بَعْضَ وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ وَهُمْ يَقُوْلُوْنَ: قَدِمْنَا عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَاشْتَدَّ فَرْحُهُمْ بِنَا، فَلَمَّا انْتَهَيْنَا اِلَى الْقَوْمِ اَوْسَعُوْالَنَا فَقَعَدْنَا، فَرَحَّبَ بِنَا النَّبِيُّ ﷺ وَدَعَا لَنَا، ثُمَّ نَظَرَ اِلَيْنَا، فَقَالَ: مَنْ سَيِّدُكُمْ وَزَعِيْمُكُمْ؟ فَاشَرْنَا بِاَجْمَعِنَا اِلَى الْمُنْذِرِ بْنِ عَائِذٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: اَهٰذَا الْاَشَجُّ؟ فَكَانَ اَوَّلَ يَوْمٍ وُضِعَ عَلَيْهِ هٰذَا الْاِسْمُ بِضَرْبَةٍ لِوَجْهِهٖ بِحَافِرِ حِمَارٍ، قُلْنَا: نَعَمْ يَا رَسُوْلَ اللهِ! فَتَخَلَّفَ بَعْدَ الْقَوْمِ، فَعَقَلَ رَوَاحِلَهُمْ وَضَمَّ مَتَاعَهُمْ، ثُمَّ اَخْرَجَ عَيْبَتَهُ فَاَلْقٰى عَنْهُ ثِيَابَ السَّفَرِ وَلَبِسَ مِنْ صَالِحِ ثِيَابِهٖ، ثُمَّ اَقْبَلَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ بَسَطَ النَّبِيُّ ﷺ رِجْلَهُ وَاتَّكَاَ، فَلَمَّا دَنَامِنْهُ الْاَشَجُّ اَوْسَعَ الْقَوْمُ لَهُ، وَقَالُوْا: هٰهُنَا يَا اَشَجُّ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتَوٰى قَاعِدًا وَقَبَضَ رِجْلَهُ: هٰهُنَا يَا أَشَجُّ فَقَعَدَ عَنْ يَمِيْنِ النَّبِيِّ ﷺ فَرَحَّبَ بِهٖ وَالْطَفَهُ، وَسَاَلَهُ عَنْ بِلَادِهٖ، وَسَمّٰى لَهُ قَرْيَةً قَرْيَةَ الصَّفَا وَالْمُشَقَّرِ وَغَيْرَ ذٰلِكَ مِنْ قُرٰى هَجَرَ، فَقَالَ: بِاَبِيْ وَاُمِّيْ يَا رَسُوْلَ اللهِ! لَاَنْتَ اَعْلَمُ بِاَسْمَاءِ قُرَانَا مِنَّا، فَقَالَ: اِنِّيْ قَدْ وَطِئْتُ بِلَادَكُمْ وَفُسِحَ لِيْ فِيْهَا قَالَ: ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَى الْاَنْصَارِ فَقَالَ: يَامَعْشَرَ الْاَنْصَارِ! اَكْرِمُوْا اِخْوَانَكُمْ فَاِنَّهُمْ اَشْبَاهُكُمْ فِي الْاِسْلَامِ، اَشْبَهُ شَيْءٍ بِكُمْ اَشْعَارًا، وَاَبْشَارًا، اَسْلَمُوْا طَائِعِيْنَ غَيْرَ مُكْرَهِيْنَ وَلَا مَوْتُوْرِيْنَ اِذْ اَبٰى قَوْمٌ اَنْ يُسْلِمُوْا حَتّٰى قُتِلُوْا، قَالَ: فَلَمَّا اَنْ اَصْبَحُوْا قَالَ: كَيْفَ رَاَيْتُمْ كَرَامَةَ اِخْوَانِكُمْ لَكُمْ وَضِيَافَتَهُمْ اِيَّاكُمْ؟ قَالُوْا: خَيْرُ اِخْوَانٍ، اَلَانُوْا فِرَاشَنَا، وَاَطَابُوْا مَطْعَمَنَا، وَبَاتُوْا وَاَصْبَحُوْا يُعَلِّمُوْنَنَا كِتَابَ رَبِّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالٰى وَسُنَّةَ نَبِيِّنَا ﷺ، فَاَعْجَبَتِ النَّبِيَّ ﷺ وَفَرِحَ بِهَا، ثُمَّ اَقْبَلَ عَلَيْنَا رَجُلًا رَجُلًا، فَعَرَضْنَا عَلَيْهِ مَا تَعَلَّمْنَا وَعُلِّمْنَا فَمِنَّا مَنْ عُلِّمَ التَّحِيَّاتِ وَاُمَّ الْكِتَابِ وَالسُّوْرَةَ وَالسُّوْرَتَيْنِ وَالسُّنَنَ.

(الحديث)۔ رواه احمد ٣/٤٣٢

191. हज़रत शिहाब बिन अ़ब्बाद रह० फ़रमाते हैं क़बीला अ़ब्दे क़ैस का जो वफ़्द रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में गया था, उसमें से एक साहब को अपने सफ़र की तफ़सील बताते हुए इस तरह सुना कि जब हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हमारे आने की वजह से मुसलमानों को इंतिहाई ख़ुशी हुई। जिस वक़्त हम रसूलुल्लाह ﷺ की मज्लिस में पहुंचे, लोगों ने हमारे लिए जगह कुशादा कर दी, हम वहां बैठ गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ख़ुश आमदीद कहा और दुआ़ दी। फिर हमारी तरफ़ देखकर इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा सरदार और ज़िम्मेदार कौन है? हम सब ने मुंज़िर बिन आ़इद की तरफ़ इशारा किया। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या अशज यानी ज़ख़्म के निशान वाले तुम्हारे सरदार हैं? हमने अ़र्ज़ किया : जी हां, (अशज उसे कहते हैं जिसके सर या चेहरे पर किसी ज़ख़्म का निशान हो) उसके चेहरे पर गधे के खुर लगने के ज़ख़्म का निशान था और यह सबसे पहला दिन था जिसमें उनका नाम अशज पड़ा। ये साथियों से पीछे ठहर गए थे उन्होंने साथियों की सवारियों को बांधा और उनका सामान संभाला। फिर अपनी गठरी निकाली और सफ़र के कपड़े उतार कर साफ़ कपड़े पहने, फिर रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ चल दिए। (उस वक़्त) रसूलुल्लाह ﷺ पैर मुबारक फैलाकर टेक लगाए हुए थे। जब हज़रत अशज رضي الله عنه आपके क़रीब आए तो लोगों ने उनके लिए जगह बना दी और कहा! अशज! यहां बैठिए। रसूलुल्लाह ﷺ पांव समेट कर सीधे बैठ गए और फ़रमाया : अशज! यहां आ जाओ। चुनांचे वह रसूलुल्लाह ﷺ की दाएं तरफ़ बैठ गए। आप ﷺ ने उन्हें ख़ुशआमदीद फ़रमाया और शफ़क़त का मामला फ़रमाया। उनसे उनके इलाक़ों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया और हजर की एक-एक बस्ती सफ़ा, मुशक़र वग़ैरह का ज़िक्र किया। हज़रत अशज رضي الله عنه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान, आप तो हमारी बस्तियों के नाम हम से ज़्यादा जानते हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे लिए तुम्हारे इलाक़े खोल दिए गए, मैं उनमें चला फिरा हूं फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अन्सार की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया : ऐ अन्सार! अपने भाइयों का इकराम करो, क्योंकि ये तुम्हारी तरह मुसलमान हैं, इनके बालों और खालों की रंगत तुमसे बहुत ज़्यादा मिलती-जुलती भी है। अपनी ख़ुशी से इस्लाम लाए हैं उन पर ज़बरदस्ती नहीं की गई और यह भी नहीं कि (मुसलमानों के लश्कर ने हमला करके उन पर ग़लबा पा लिया हो और) उनका तमाम माल, ग़नीमत का माल बना लिया हो या उन्होंने इस्लाम से इंकार किया हो और उन्हें क़त्ल किया गया हो। (वह वफ़्द अन्सार के यहां रहा) फिर जब सुबह हुई तो आप ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : तुमने अपने भाइयों के इकराम और मेहमाननवाज़ी को कैसा पाया? उन्होंने कहा : बहुत अच्छे भाई हैं, हमें नर्म बिस्तर पेश किए, उम्दा खाने खिलाए और सुबह व शाम हमें हमारे रब की किताब और हमारे नबी ﷺ की सुन्नतें सिखाईं। आप ﷺ को यह बात पसन्द आई और उससे आप ﷺ ख़ुश हुए। फिर आप ﷺ ने हममें से एक-एक आदमी की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई। जो हमने सीखा था और जो हमें सिखाया गया था वह हम ने आप ﷺ को बताया। हम में से किसी को अत्तहीय्यात, किसी को सूरा फ़ातिहा, किसी को एक सूरत, किसी को दो सूरतें और किसी को कई सुन्नतें सिखाई गई थीं। (मुस्नद अहमद)

﴿192﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ اَحْسَنَ مَا دَخَلَ الرَّجُلُ عَلٰى اَهْلِهٖ اِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ اَوَّلَ اللَّيْلِ۔ رواه ابو داؤد، باب فی الطروق، رقم: ٢٧٧٧

192. हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सफ़र से वापस आने वाले मर्द के लिए अपने घर वालों के पास पहुंचने का बेहतरीन वक़्त रात का इब्तिदाई हिस्सा है (यह इस सूरत में है कि घर वालों को आने के बारे में पहले से इल्म हो या क़रीब का सफ़र हो)। (अबूदाऊद)

﴿193﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهٰى رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اِذَا اَطَالَ الرَّجُلُ الْغَيْبَةَ، اَنْ يَاْتِيَ اَهْلَهٗ طُرُوْقًا۔ رواه مسلم، باب كراهة الطروق... رقم: ٤٩٦٧

193. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब किसी इंसान की घर से ग़ैर हाज़िरी का ज़माना ज़्यादा हो जाए, यानी उसको सफ़र में ज़्यादा दिन लग जाएं तो वह (अचानक) रात को अपने घर न जाए। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि तवील सफ़र के बाद अचानक रात के वक़्त घर जाना मुनासिब नहीं कि इस सूरत में घर वाले पहले से ज़ेहनी तौर पर इस्तिक़बाल के लिए तैयार न होंगे, अलबत्ता अगर आने का इल्म पहले से हो तो रात के वक़्त जाने में कोई हर्ज नहीं। (नब्वी)

लायानी से बचना

कुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَقُلْ لِّعِبَادِیْ يَقُوْلُوا الَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا﴾ [بنی اسرائیل: ٥٣]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और आप मेरे बन्दों से फ़रमा दीजिए कि वे ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो (उसमें किसी की दिलआज़ारी न होती हो) क्योंकि शैतान दिलआज़ार बात की वजह से आपस में लड़ा देता है, वाक़ई शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (बनी इसराईल : 53)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ﴾ [المؤمنون:٣]

अल्लाह तआला ने ईमान वालों की एक सिफ़त यह इर्शाद फ़रमाई कि वे लोग बेकार, लायानी बातों से ऐराज़ करते हैं। (मोमिनून : 3)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾ [النور: ١٥-١٧]

(मुनाफ़िक़ों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा) पर एक मर्तबा तोहमत

लगाई, बाज़ भोले-भाले मुसलमान भी सुनी सुनाई इस अफ़वाह का तज़्किरा करने लगे, इस पर यह आयत नाज़िल हुई) अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तुम उस वक़्त अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो जाते जबकि तुम अपनी ज़बानों से इस ख़बर को एक दूसरे से नक़ल कर रहे थे और अपने मुंह से ऐसी बातें कह रहे थे जिनकी हक़ीक़त का तुमको बिल्कुल इल्म न था और तुम उसको मामूली बात समझ रहे थे (कि इसमें कोई गुनाह नहीं है), हालांकि वह अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बड़ी सख़्त बात थी और जब तुमने इस बुहतान को सुना था तो उस बुहतान को सुनते ही यूं क्यों न कहा कि हमें तो ऐसी बात का ज़बान से निकालना भी मुनासिब नहीं। अल्लाह की पनाह! यह तो बड़ा बुहतान है। मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला तुमको नसीहत करते हैं कि अगर तुम ईमान वाले हो तो आइन्दा फिर कभी ऐसी हरकत न करना (कि बग़ैर तहक़ीक़ के ग़लत ख़बरें उड़ाते फिरो।) (नूर : 15-17)

وقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ لَايَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ لا وَاِذَامَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا﴾

[الفرقان: ٧٢]

अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई है : और वे बेहूदा बातों में शामिल नहीं होते अगर इत्तिफ़ाक़न बेहूदा मज्लिसों के पास से गुज़रें, तो संजीदगी और शराफ़त के साथ गुज़र जाते हैं। (फ़ुरक़ान : 72)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ﴾ [القصص: ٥٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : और जब कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुंह फेर लेते हैं। (क़सस : 55)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنْ جَآءَ كُمْ فَاسِقٌ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْآ اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ﴾ [الحجرات: ٦]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : मुसलमानो! अगर कोई शरीर तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए (जिसमें किसी की शिकायत हो) तो इस ख़बर की खूब छान-बीन कर लिया करो कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उसकी बात पर एतमाद करके किसी क़ौम को नादानी से कोई नुक़सान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। (हुजुरात : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ﴾ [ق:١٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : इंसान जो भी कोई लफ़्ज़ ज़बान से निकालता है, तो उसके पास एक फ़रिश्ता इंतज़ार में तैयार बैठा है (जो उसे फ़ौरन लिख लेता है)। (क़ाफ़ : 18)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مِنْ حُسْنِ اِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَالَا يَعْنِيْهِ. رواه الترمذى وقال: هذاحديث غريب، باب حديث من حسن اسلام المرء، رقم: ٢٣١٧

1. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के इस्लाम की ख़ूबी और कमाल यह है कि वह फ़ुज़ूल कामों और बातों को छोड़ दे। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि बेज़रूरत बातें न करना और फ़ुज़ूल मशग़लों से बचना कमाले ईमान की निशानी है और आदमी के इस्लाम की रौनक़ व ज़ीनत है।

﴿2﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ يَضْمَنْ لِىْ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ اَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ. رواه البخارى، باب حفظ اللسان، رقم: ٦٤٧٤

2. हज़रत सह्ल बिन साद ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मुझे अपने दोनों जबड़ों और दोनों टांगों के दर्मियान वाले आज़ा की ज़िम्मेदारी दे दे (कि वह ज़बान और शर्मगाहों को ग़लत इस्तेमाल नहीं करेगा) तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी देता हूं। (बुख़ारी)

﴿3﴾ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ: اَخْبِرْنِىْ بِاَمْرٍ اَعْتَصِمُ بِهِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَمْلِكْ هٰذَا وَاَشَارَ اِلٰى لِسَانِهِ.

رواه الطبرانى باسنادين واحدهما جيد، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٦

3. हज़रत हारिस बिन हिशाम ؓ से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से

अ़र्ज़ किया : मुझे कोई ऐसी चीज़ बता दें जिसे मैं मज़बूती से पकड़े रहूं। आप ﷺ ने अपनी ज़बान मुबारक की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया : उसको अपने क़ाबू में रखो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद

﴿ 4 ﴾ عَنْ اَبِیْ جُحَیْفَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَیُّ الْاَعْمَالِ اَحَبُّ اِلَی اللّٰہِ؟ قَالَ: فَسَکَتُوْا فَلَمْ یُجِبْہُ اَحَدٌ قَالَ: ھُوَ حِفْظُ اللِّسَانِ۔ رواہ البیھقی فی شعب الایمان ٤/٢٤٥

4. हज़रत अबू जुहैफ़ा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा से पूछा : अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसन्दीदा अ़मल कौन-सा है? सब ख़ामोश रहे किसी ने जवाब न दिया, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सबसे ज़्यादा पसन्दीदा अ़मल ज़बान की हिफ़ाज़त करना है। (बैहक़ी

﴿ 5 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: لَا یَبْلُغُ الْعَبْدُ حَقِیْقَةَ الْاِیْمَانِ حَتّٰی یَخْزُنَ مِنْ لِسَانِہٖ۔ رواہ الطبرانی فی الصغیر والاوسط وفیہ داؤدبن ھلال ذکرہ ابن ابی الحاتم ولم یذکر فیہ ضعفاوبقیة رجالہ رجال الصّحیح غیرزھیر بن عباد وقد وثقہ جماعة، مجمع الزوائد ١٠/٥٤٣

5. हज़रत अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा जब तक अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त न कर ले ईमान की हक़ीक़त को हासिल नहीं कर सकता। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 6 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قُلْتُ: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! مَا النَّجَاةُ؟ قَالَ: اَمْلِكْ عَلَیْكَ لِسَانَكَ، وَلْیَسَعْكَ بَیْتُكَ، وَابْكِ عَلٰی خَطِیْئَتِكَ۔

رواہ الترمذی وقال: ھذاحدیث حسن، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم: ٢٤٠٦

6. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! नजात हासिल करने का तरीक़ा क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो, अपने घर में रहो (फ़ुज़ूल बाहर न फिरो) और अपने गुनाहों पर रोया करो। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने का मतलब यह है कि उसका ग़लत इस्तेमाल न हो मसलन ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, बेहूदा बातें करना, बिला ज़रूरत बोलना, बग़ैर एहतियात के हर क़िस्म की बातें करना,

बेहयाई की बातें करना, लड़ाई झगड़ा करना, गाली देना, इंसान या जानवर पर लानत करना, शे'र व शायरी में हर वक़्त लगे रहना, मज़ाक़ उड़ाना, राज़ ज़ाहिर करना, झूठा वादा करना, झूठी क़सम खाना, दो रंग की बातें करना, बिला वजह किसी की तारीफ़ करना और बिला वजह सवालात करना। (एत्तिहाफ़)

﴾ 7 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ وَقَاهُ اللّٰهُ شَرَّ مَا بَیْنَ لَحْیَیْهِ وَشَرَّ مَا بَیْنَ رِجْلَیْهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ۔

رواه الترمذی وقال: هذاحدیث حسن صحیح،باب ماجاء فی حفظ اللسان،رقم: ۲٤۰۹

7. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसको अल्लाह तआला ने उन आज़ा की बुराइयों से बचा लिया, जो दोनों जबड़ों और टांगों के दर्मियान हैं (यानी ज़बान और शर्मगाह) तो वह जन्नत में दाख़िल होगा। (तिर्मिज़ी)

﴾ 8 ﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَی النَّبِیِّ ﷺ فَقَالَ: یَارَسُوْلَ اللّٰهِ ! اَوْصِنِیْ، فَقَالَ (فِیْمَا اَوْصٰی بِهٖ): وَاخْزُنْ لِسَانَكَ اِلَّا مِنْ خَیْرٍ فَاِنَّكَ بِذٰلِكَ تَغْلِبُ الشَّیْطَانَ ۔(وهو بعض الحدیث) رواه ابویعلی وفی اسناده لیث بن ابی سلیم وهو مدلس،

قال المحقق: الحدیث حسن مجمع الزوائد ٤/۳۹۲

8. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने चन्द वसीयतें फ़रमाईं, जिनमें से एक यह है कि अपनी ज़बान को सिवाए ख़ैर के हर क़िस्म की बात से महफ़ूज़ रखो, इससे तुम शैतान पर क़ाबू पा लोगे।

(अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 9 ﴿ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ رَفَعَهُ قَالَ: اِذَا اَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَاِنَّ الْاَعْضَاءَ كُلَّهَا تُكَفِّرُ اللِّسَانَ فَتَقُوْلُ: اتَّقِ اللّٰهَ فِیْنَا فَاِنَّمَا نَحْنُ بِكَ، فَاِنِ اسْتَقَمْتَ اسْتَقَمْنَا، وَاِنِ اعْوَجَجْتَ اعْوَجَجْنَا۔ رواه الترمذی،باب ماجاء فی حفظ اللسان،رقم:۲٤۰۷

9. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान जब सुबह करता है तो उसके जिस्म के तमाम आज़ा ज़बान से निहायत आजिज़ी के साथ कहते हैं कि तू हमारे रब के बारे में अल्लाह तआला से

डर, क्योंकि हमारा मामला तेरे ही साथ (जुड़ा हुआ) है। अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे (और फिर उसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ اَكْثَرِ مَا یُدْخِلُ النَّاسَ الْجَنَّةَ، قَالَ: تَقْوَی اللهِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ، وَسُئِلَ عَنْ اَكْثَرِ مَا یُدْخِلُ النَّاسَ النَّارَ، قَالَ: الْفَمُ وَالْفَرْجُ۔

رواه الترمذی وقال: هذا حدیث صحیح غریب،باب ماجاء فی حسن الخلق، رقم:٢٠٠٤

10. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया कि किस अ़मल की वजह से लोग जन्नत में ज़्यादा दाख़िल होंगे? इर्शाद फ़रमाया : तक़्वा (अल्लाह तआ़ला का डर) और अच्छे अख़्लाक़। और आप ﷺ से पूछा गया कि किस अ़मल की वजह से लोग जहन्नम में ज़्यादा जाएंगे? इर्शाद फ़रमाया : मुंह और शर्मगाह (का ग़लत इस्तेमाल)। (तिर्मिज़ी)

﴿ 11 ﴾ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ اَعْرَابِیٌّ اِلٰی رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: یَارَسُوْلَ اللهِ! عَلِّمْنِیْ عَمَلًا یُدْخِلُنِی الْجَنَّةَ فَذَكَرَ الْحَدِیْثَ فِیْ اَمْرِهٖ اِیَّاهُ بِالْاِعْتَاقِ وَفَكِّ الرَّقَبَةِ وَالْمِنْحَةِ وَغَیْرِ ذٰلِكَ ثُمَّ قَالَ: فَاِنْ لَمْ تُطِقْ ذٰلِكَ فَكُفَّ لِسَانَكَ اِلَّا مِنْ خَیْرٍ۔

رواه البیهقی فی شعب الایمان ٤/٢٣٩

11. हज़रत बरा बिन आ़ज़िब ﷺ से रिवायत है कि एक देहात के रहने वाले (सहाबी) ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे कोई ऐसा अ़मल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे? रसूलुल्लाह ﷺ ने चन्द आ़माल इर्शाद फ़रमाए, जिसमें ग़ुलाम का आज़ाद करना, क़र्ज़दार को क़र्ज़ के बोझ से आज़ाद कराना और जानवर के दूध से फ़ायदा उठाने के लिए दूसरे को देना था, इसके अलावा दूसरे काम भी बतलाए। फिर इर्शाद फ़रमाया : अगर यह न हो सके तो अपनी ज़बान को भली बात के अलावा बोलने से रोके रखो। (बैहक़ी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ اَسْوَدَ بْنِ اَصْرَمَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: یَارَسُوْلَ اللهِ اَوْصِنِیْ، قَالَ: تَمْلِكُ یَدَكَ، قُلْتُ: فَمَاذَا اَمْلِكُ اِذَا لَمْ اَمْلِكْ یَدِیْ؟ قَالَ: تَمْلِكُ لِسَانَكَ، قُلْتُ: فَمَاذَا اَمْلِكُ اِذَا لَمْ اَمْلِكْ لِسَانِیْ؟ قَالَ: لَا تَبْسُطْ یَدَكَ اِلَّا اِلٰی خَیْرٍ وَلَا تَقُلْ بِلِسَانِكَ اِلَّا مَعْرُوْفًا۔

رواه الطبرانی و اسناده حسن، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

12. हज़रत अस्वद बिन असरम ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए! इर्शाद फ़रमाया : अपने हाथ को क़ाबू में रखो (कि इससे किसी को तकलीफ़ न पहुंचे) मैंने अ़र्ज़ किया : अगर मेरा हाथ ही मेरे क़ाबू में न रहे तो फिर और क्या चीज़ क़ाबू में रह सकती है? यानी हाथ तो मेरे क़ाबू में रह सकता है। इर्शाद फ़रमाया : अपनी ज़बान को अपने क़ाबू में रखो। मैंने अ़र्ज़ किया : अगर मेरी ज़बान ही मेरे क़ाबू में न रहे तो फिर और किया चीज़ क़ाबू में रह सकती है यानी ज़बान तो मेरे क़ाबू में रह सकती है। इर्शाद फ़रमाया : तो फिर तुम अपने हाथ को भले काम के लिए ही बढ़ाओ और अपनी ज़बान से भली बात ही कहो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 13 ﴾ عَنْ اَسْلَمَ رَحِمَهُ اللهُ اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اِطَّلَعَ عَلٰى اَبِىْ بَكْرٍ وَهُوَ يَمُدُّ لِسَانَهٗ قَالَ، مَا تَصْنَعُ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللهِ؟ قَالَ: اِنَّ هٰذَا الَّذِىْ اَوْرَدَنِى الْمَوَارِدَ، اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَيْسَ شَىْءٌ مِنَ الْجَسَدِ اِلَّا يَشْكُوْ ذَرَبَ اللِّسَانِ عَلٰى حِدَّتِهٖ.

رواه البيهقي في شعب الايمان ٤/٢٤٤

13. हज़रत असलम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर ﷺ की नज़र हज़रत अबूबक्र ﷺ पर पड़ी तो (देखा कि) हज़रत अबूबक्र ﷺ अपनी ज़बान को खींच रहे हैं। हज़रत उमर ﷺ ने पूछा : अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा! आप यह क्या कर रहे हैं? इर्शाद फ़रमाया : यही ज़बान मुझे हलाकत की जगहों में ले आई है। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था कि जिस्म का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो ज़बान की बदगोई और तेज़ी की शिकायत न करता हो। (बैहक़ी)

﴿ 14 ﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رَجُلاً ذَرِبَ اللِّسَانِ عَلٰى اَهْلِىْ فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ قَدْ خَشِيْتُ اَنْ يُدْخِلَنِىْ لِسَانِى النَّارَ قَالَ: فَاَيْنَ اَنْتَ مِنَ الْاِسْتِغْفَارِ؟ اِنِّى لَاَسْتَغْفِرُ اللهَ فِى الْيَوْمِ مِائَةً.

رواه احمد ٥/٣٩٧

14. हज़रत हुज़ैफ़ा ﷺ फ़रमाते हैं मेरी ज़बान मेरे घर वालों पर बहुत चलती थी, यानी मैं उनको बहुत बुरा-भला कहता था। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे डर है कि मेरी ज़बान मुझको जहन्नम में दाख़िल कर देगी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : फिर इस्तग़फ़ार कहां गया? (यानी इस्तग़फ़ार क्यों नहीं करते, जिससे तुम्हारी ज़बान की इस्लाह हो जाए)। मैं तो दिन में सौ मर्तबा इस्तग़फ़ार करता हूं। (मुस्नद अहमद)

﴿ 15 ﴾ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَيْمَنُ امْرِئٍ وَاَشْاَمُهُ مَابَيْنَ لَحْيَيْهِ۔ رواه الطبرانی ورجاله رجال الصحیح،مجمع الزّوائد ١٠/٥٣٨

15. हज़रत अदी बिन हातिम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी की नेकबख़्ती और बदबख़्ती उसके दोनों जबड़ों के दर्मियान है यानी ज़बान का सही इस्तिमाल नेकबख़्ती और ग़लत इस्तेमाल बदबख़्ती का ज़रिया है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 16 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ يَقُوْلُ: بَلَغَنَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: رَحِمَ اللهُ عَبْدًا تَكَلَّمَ فَغَنِمَ اَوْسَكَتَ فَسَلِمَ۔ رواه البیهقی فی شعب الایمان ٤/٢٤١

16. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हमें यह हदीस पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाएंगे जो अच्छी बात करे और दुनिया व आख़िरत में उसका फ़ायदा उठाए या ख़ामोश रहे और ज़बान की लग़्ज़िशों से बच जाए। (बैहक़ी)

﴿ 17 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَمَتَ نَجَا۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب،باب حديث من كان يؤمن بالله ......،رقم: ٢٥٠١

17. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो चुप रहा वह नजात पा गया। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जिस शख़्स ने बुरी और फ़ुज़ूल बातों से ज़बान को रोके रखा, उसे दुनिया और आख़िरत की बहुत सी आफ़तों, मुसीबतों और नुक़सानों से नजात मिल गई, क्योंकि आम तौर पर इंसान जिन आफ़तों में मुब्तला होता है, उनमें से अक्सर का ज़रिया ज़बान ही होती है। (मिरक़ात)

﴿ 18 ﴾ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حَطَّانَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: لَقِيْتُ اَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَوَجَدْتُهُ فِي الْمَسْجِدِ مُحْتَبِيًا بِكِسَاءٍ اَسْوَدَ وَحْدَهُ فَقَالَ: يَا اَبَاذَرٍّ مَا هٰذِهِ الْوَحْدَةُ؟ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلْوَحْدَةُ خَيْرٌ مِنْ جَلِيْسِ السُّوْءِ وَالْجَلِيْسُ الصَّالِحُ خَيْرٌ مِنَ الْوَحْدَةِ وَاِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِنَ السُّكُوْتِ وَالسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِنْ اِمْلَاءِ الشَّرِّ۔

رواه البیهقی فی شعب الایمان ٤/٢٥٦

18. हज़रत इमरान बिन हत्तान रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि मैं हज़रत

अबूज़र ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने उनको मस्जिद में इस हालत में देखा कि एक काली कमली लपेटे हुए अकेले बैठे हैं। मैंने अ़र्ज़ किया : अबूज़र! यह तन्हाई और यक्सूई कैसी है, यानी आपने बिल्कुल अकेले और सबसे अलग-थलग रहना क्यों अख़्तियार फ़रमाया है? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : बुरे साथी के साथ बैठने से अकेले रहना अच्छा है और अच्छे साथी के साथ बैठना तन्हाई से बेहतर है और किसी को अच्छी बातें बताना ख़ामोशी से बेहतर और बुरी बातें बताने से बेहतर ख़ामोश रहना है। (बैहक़ी)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِىْ ذَرٍّ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ اَوْصِنِىْ، فَذَكَرَ الْحَدِيْثَ بِطُوْلِهِ اِلٰى اَنْ قَالَ: عَلَيْكَ بِطُوْلِ الصَّمْتِ فَاِنَّهُ مَطْرَدَةٌ لِلشَّيْطَانِ وعَوْنٌ لَكَ عَلٰى اَمْرِ دِيْنِك، قُلْتُ: زِدْنِىْ، قَالَ: اِيَّاكَ وَ كَثْرَةَ الضِّحْكِ فَاِنَّهُ يُمِيْتُ الْقَلْبَ وَيَذْهَبُ بِنُوْرِ الْوَجْهِ. (وهو بعض الحديث) رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢٤٢/٤

19. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे वसीयत फ़रमा दीजिए। आप ﷺ ने फ़रमाया : ज़्यादा वक़्त खामोश रहा करो (कि बिला ज़रूरत कोई बात न हो) यह बात शैतान को दूर करती है और दीन के कामों में मददगार होती है। हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं मैंने अ़र्ज़ किया : मुझे कुछ और वसीयत फ़रमाइए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ज़्यादा हंसने से बचते रहना, क्योंकि यह आदत दिल को मुर्दा कर देती है और चेहरे के नूर को ख़त्म कर देती है। (बैहक़ी)

﴿ 20 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ لَقِىَ اَبَاذَرٍّ فَقَالَ: يَا اَبَا ذَرٍّ! اَلاَ أَدُلُّكَ عَلٰى خَصْلَتَيْنِ هُمَا اَخَفُّ عَلَى الظَّهْرِ وَاَثْقَلُ فِى الْمِيْزَانِ مِنْ غَيْرِهِمَا؟ قَالَ: بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: عَلَيْكَ بِحُسْنِ الْخُلُقِ وَطُوْلِ الصَّمْتِ وَالَّذِىْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ مَا عَمِلَ الْخَلاَئِقُ بِمِثْلِهِمَا. (الحديث) رواه البيهقى ٢٤٢/٤

20. हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ की हज़रत अबूज़र ﷺ से मुलाक़ात हुई। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! क्या मैं तुम्हें दो ऐसी ख़सलतें न बता दूं जिन पर अ़मल करना बहुत आसान है और आ़माल के तराज़ू में दूसरे आ़माल की बनिस्बत ज़्यादा भारी हैं? अबूज़र ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ज़रूर बतला दीजिए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अच्छे अख़्लाक़ और ज़्यादा ख़ामोश रहने की आ़दत बना लो। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद

की जान है, तमाम मख़्लूक़ात के आमाल में उन दो अमलों जैसे अच्छे कोई अमल नहीं।

(बैहक़ी)

﴿ 21 ﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! أَكُلُّ مَا نَتَكَلَّمُ بِهِ يُكْتَبُ عَلَيْنَا؟ فَقَالَ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ، وَهَلْ يَكُبُّ النَّاسَ عَلٰى مَنَاخِرِهِمْ فِي النَّارِ إِلَّا حَصَائِدُ أَلْسِنَتِهِمْ، إِنَّكَ لَنْ تَزَالَ سَالِمًا مَا سَكَتَّ فَإِذَا تَكَلَّمْتَ كُتِبَ لَكَ أَوْ عَلَيْكَ. قُلْتُ: رواه الترمذي، باختصار من قوله: إِنَّكَ لَنْ تَزَالَ إِلٰى آخِرِهِ

رواه الطبراني باسنادين ورجال احدهما ثقات، مجمع الزّوائد ١٠/٥٣٨

21. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा : जो बात भी हम करते हैं क्या ये सब हमारे आमालनामे में लिखी जाती हैं (और क्या उन पर भी पकड़ होगी)? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुझको तेरी मां रोए! (अच्छी तरह जान लो कि) लोगों के नाक के बल दोज़ख़ में गिराने वाली उनकी ज़बान ही की बुरी बातें होंगी और जब तक तुम ख़ामोश रहोगे (ज़बान की आफ़त से) बचे रहोगे और जब कोई बात करोगे तो तुम्हारे लिए अज्र या गुनाह लिखा जाएगा।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : तुझको तेरी मां रोए अरबी मुहावरे के मुताबिक़ यह प्यार का कलिमा है, बददुआ नहीं है।

﴿ 22 ﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: أَكْثَرُ خَطَايَا ابْنِ آدَمَ فِي لِسَانِهِ. (وهو طرف من الحديث)

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٨

22. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : इंसान की अक्सर ग़लतियां उसकी ज़बान से होती हैं।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 23 ﴾ عَنْ أَمَةِ بِنْتِ أَبِي الْحَكَمِ الْغِفَارِيَّةِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَدْنُوْ مِنَ الْجَنَّةِ حَتّٰى مَا يَكُوْنُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا قِيْدُ ذِرَاعٍ فَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ فَيَتَبَاعَدُ مِنْهَا أَبْعَدَ مِنْ صَنْعَاءَ. رواه احمد ورجاله رجال الصحيح غير محمد بن اسحاق وقد وثق، مجمع الزوائد ١٠/٥٣٣

23. हज़रत अबुलहकम की साहबज़ादी की बांदी रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि

मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : एक शख़्स जन्नत के इतने क़रीब हो जाता है कि उसके और जन्नत के दर्मियान एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर कोई ऐसा बोल बोल देता है जिसकी वजह से जन्नत से उससे भी ज़्यादा दूर हो जाता है जितना मदीना से (यमन का शहर) सनआ़ दूर है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 24 ﴾ عَنْ بِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ الْمُزَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ مَايَظُنُّ اَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ فَيَكْتُبُ اللهُ لَهُ بِهَا رِضْوَانَهُ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ، وَاِنَّ اَحَدَكُمْ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ مَا يَظُنُّ اَنْ تَبْلُغَ مَا بَلَغَتْ فَيَكْتُبُ اللهُ عَلَيْهِ بِهَا سَخَطَهُ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في قلة الكلام، رقم: ٢٣١٩

24. हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें से कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को खुश करने वाली ऐसी बात कह देता है जिसको वह बहुत ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन इस बात की वजह से अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक के लिए उससे राज़ी होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं और तुम में से कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाली ऐसी बात कह देता है, जिसको वह बहुत ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन इस बात की वजह से अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक के लिए उससे नाराज़ होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 25 ﴾ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَرْفَعُهُ قَالَ: اِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ لَا يُرِيْدُ بِهَا بَأْسًا اِلَّا لِيُضْحِكَ بِهَا الْقَوْمَ فَاِنَّهُ لَيَقَعُ مِنْهَا اَبْعَدَ مِنَ السَّمَاءِ. رواه احمد ٣/٣٨

25. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी सिर्फ़ लोगों को हँसाने के लिए कोई ऐसी बात कह देता है जिसमें कोई हर्ज नहीं समझता, लेकिन इसकी वजह से जहन्नम में ज़मीन आसमान के दर्मियानी फ़ैसले से भी ज़्यादा गहराई में पहुंच जाता है। (मुस्नद अहमद)

﴿ 26 ﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ لَا يُلْقِيْ لَهَا بَالًا يَرْفَعُ اللهُ بِهَا دَرَجَاتٍ، وَاِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ لَا يُلْقِيْ لَهَا بَالًا يَهْوِيْ بِهَا فِيْ جَهَنَّمَ. رواه البخاري، باب حفظ اللسان، رقم: ٦٤٧٨

26. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा अल्लाह तआला की रज़ामंदी की कोई ऐसी बात कह देता है जिस को वह अहम भी नहीं समझता लेकिन उसकी वजह से अल्लाह तआला उसके दर्जात बुलन्द फ़रमा देते हैं और बन्दा अल्लाह तआला की नाराज़गी की कोई ऐसी बात कह देता है जिस की वह परवाह भी नहीं करता लेकिन उसकी वजह से जहन्नम में गिर जाता है। (बुख़ारी)

﴾ 27 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ لَیَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مَا یَتَبَیَّنُ مَا فِیْهَا یَهْوِیْ بِهَا فِی النَّارِ اَبْعَدَ مَابَیْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ۔

رواه مسلم،باب حفظ اللسان، رقم: ٧٤٨٢

27. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा कभी बे-सोचे-समझे कोई ऐसी बात कह देता है जिसकी वजह से मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियानी फ़ासले से भी ज़्यादा दोज़ख़ में गिर जाता है। (मुस्लिम)

﴾ 28 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الرَّجُلَ لَیَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ لَا یَرٰی بِهَا بَاْسًا یَهْوِیْ بِهَا سَبْعِیْنَ خَرِیْفًا فِی النَّارِ۔ رواه الترمذی وقال: هذا حديث حسن غريب،باب ماجاء من تكلم بالكلمة......،رقم: ٢٣١٤

28. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इंसान कोई बात कह देता है और उसके कहने में कोई हर्ज नहीं समझता, लेकिन इसकी वजह से जहन्नम में सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर (नीचे) गिर जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴾ 29 ﴿ عَنْ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ یَقُوْلُ: لَقَدْ اُمِرْتُ اَنْ اَتَجَوَّزَ فِی الْقَوْلِ فَاِنَّ الْجَوَازَ هُوَ خَیْرٌ۔

(رواه ابوداؤد، باب ماجاء فی التشدق فی الكلام، رقم:٥٠٠٨)

29. हज़रत अम्र बिन आस ﷛ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मुझे मुख़्तसर बात करने का हुक्म दिया गया है, क्यों मुख़्तसर बात करना ही बेहतर है। (अबूदाऊद)

﴾ 30 ﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ كَانَ یُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْیَقُلْ خَیْرًا اَوْلِیَصْمُتْ۔ (الحديث) رواه البخاری،باب حفظ اللسان،رقم ٦٤٧٥

30. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसको चाहिए कि ख़ैर की बात कहे या ख़ामोश रहे। (बुख़ारी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ أُمِّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَلَامُ ابْنِ آدَمَ عَلَيْهِ لَا لَهُ إِلَّا أَمْرٌ بِمَعْرُوْفٍ، أَوْ نَهْيٌ عَنْ مُنْكَرٍ أَوْ ذِكْرُ اللهِ. رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب،باب منه حديث كل كلام ابن آدم عليه لا له، الجامع الصحيح لسنن الترمذى، رقم: ٢٤١٢

31. रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा मुहतर्मा हज़रत उम्मे हबीबा ﷺ फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नेकी का हुक्म करने या बुराई से रोकने या अल्लाह तआला का ज़िक्र करने के अलावा इंसान की तमाम बातें उस पर वबाल हैं यानी पकड़ का ज़रिया हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَا تُكْثِرِ الْكَلَامَ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللهِ، فَإِنَّ كَثْرَةَ الْكَلَامِ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللهِ قَسْوَةٌ لِلْقَلْبِ، وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللهِ الْقَلْبُ الْقَاسِيْ. رواه الترمذى وقال : هذا حديث حسن غريب، باب منه النهى عن كثرة الكلام الا بذكر الله،رقم ٢٤١١

32. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बातें न करो, क्योंकि इससे दिल में सख़्ती (और बेहिसी) पैदा होती है और लोगों में अल्लाह तआला से ज़्यादा दूर वह आदमी है जिसका दिल सख़्त हो। (तिर्मिज़ी)

﴿ 33 ﴾ عَنِ الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ كَرِهَ لَكُمْ ثَلَاثًا: قِيْلَ وَقَالَ، وَإِضَاعَةَ الْمَالِ، وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ.

رواه البخارى،باب قول الله عزوجل لا يسالون الناس الحافا، رقم: ١٤٧٧

33. हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तीन चीज़ों को नापसन्द फ़रमाया है। एक (बेफ़ायदा) इधर उधर की बातें करना, दूसरे माल को ज़ाया करना, तीसरे ज़्यादा सवालात करना। (बुख़ारी)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عَمَّارٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ كَانَ لَهُ وَجْهَانِ فِي الدُّنْيَا، كَانَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِسَانَانِ مِنْ نَارٍ. رواه ابوداؤد،باب فى ذى الوجهين،رقم: ٤٨٧٣

34. हज़रत अ़म्मार ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दुनिया में जिस शख़्स के दो रुख़ हों (यानी मुनाफ़िक़ की तरह मुख़्तलिफ़ लोगों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें करे) तो क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की दो ज़बानें होंगी। (अबूदाऊद)

﴿ 35 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: يَارَسُوْلَ اللهِ مُرْنِيْ بِعَمَلٍ يُدْخِلْنِي الْجَنَّةَ قَالَ: آمِنْ بِاللهِ وَقُلْ خَيْرًا، يُكْتَبُ لَكَ وَلَا تَقُلْ شَرًّا فَيُكْتَبُ عَلَيْكَ۔

رواه الطبراني في الاوسط، مجمع الزوائد ۵۳۹/۱۰

35. हज़रत मुआ़ज़ ﷺ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे ऐसा अ़मल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाओ और भली बात कहो, तुम्हारे लिए अज्र लिखा जाएगा और बुरी बात न कहो, तुम्हारे लिए गुनाह लिखा जाएगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 36 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ حَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: وَيْلٌ لِلَّذِيْ يُحَدِّثُ بِالْحَدِيْثِ لِيُضْحِكَ بِهِ الْقَوْمَ فَيَكْذِبُ، وَيْلٌ لَهُ وَيْلٌ لَهُ۔ رواه الترمذي وقال:

هذا حديث حسن، باب ماجاء من تكلم بالكلمة ليضحك الناس، رقم: ۲۳۱۵

36. हज़रत मुआ़विया बिन हीदा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : उस शख़्स के लिए बरबादी है जो लोगों को हँसाने के लिए झूठ बोले। उसके लिए तबाही है, उसके लिए तबाही है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ الْمَلَكُ مِيْلًا مِنْ نَتْنِ مَا جَاءَ بِهِ۔ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن جيد غريب، باب ماجاء

في الصدق والكذب، رقم: ۱۹۷۲

37. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता उसके झूठ की बदबू की वजह से एक मील दूर चला जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 38 ﴾ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ اَسِيْدٍ الْحَضْرَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ اَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَ لَكَ بِهِ مُصَدِّقٌ وَاَنْتَ لَهُ بِهِ كَاذِبٌ۔

رواه ابوداؤد، باب في المعاريض، رقم: ۴۹۷۱

38. हज़रत सुफ़ियान बिन असीद हज़रमी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ

को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : यह बहुत बड़ी ख़्यानत है कि तुम अपने भाई से कोई झूठी बात ब्यान करो, हालांकि वह तुम्हारी इस बात को सच्चा समझता हो। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि झूठ अगरचे बहुत संगीन गुनाह है लेकिन बाज़ सूरतों में उसकी संगीनी और भी ज़्यादा बढ़ जाती है। उनमें से एक सूरत यह भी है कि एक शख़्स तुम पर पूरा एतमाद करे और तुम उसके एतमाद से नाजायज़ फ़ायदा उठाकर उससे झूठ बोलो और उसको धोखा दो।

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: یُطْبَعُ الْمُؤْمِنُ عَلَی الْخِلَالِ كُلِّهَا اِلَّا الْخِيَانَةَ وَالْكَذِبَ.

رواه احمد ٥/٢٥٢

39. हज़रत अबू उमामा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन में पैदाइशी तौर पर सारी ख़स्लतें हो सकती हैं (ख़्वाह अच्छी हों या बुरी) अलबत्ता ख़यानत और झूठ की (बुरी) आदत नहीं हो सकती। (मुस्नद अहमद)

﴿ 40 ﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ اَنَّهُ قَالَ: قِيْلَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ جَبَانًا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقِيْلَ لَهُ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ بَخِيْلًا ؟ فَقَالَ: نَعَمْ، فَقِيْلَ لَهُ اَيَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ كَذَّابًا؟ قَالَ: لَا.

رواه الامام مالك فى الموطا،ماجاء فى الصدق والكذب ص ٧٣٢

40. हज़रत सफ़्वान बिन सुलैम रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया : क्या मोमिन बुज़दिल हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हो सकता है। फिर पूछा गया : क्या बख़ील हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : हो सकता है। पूछा गया : क्या झूठा हो सकता है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : झूठा नहीं हो सकता। (मुअत्ता)

﴿ 41 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: تَقَبَّلُوْا لِیْ سِتًّا، اَتَقَبَّلُ لَكُمْ بِالْجَنَّةِ قَالُوْا: مَا هِیَ؟ قَالَ: اِذَا حَدَّثَ اَحَدُكُمْ فَلَا يَكْذِبْ، وَاِذَا وَعَدَ فَلَا يُخْلِفْ، وَاِذَا اؤْتُمِنَ فَلَا يَخُنْ، وَغُضُّوْا اَبْصَارَكُمْ وَكُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ، وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ.

رواه ابويعلى ورجاله رجال الصحيح الا ان يزيد بن سنان لم يسمع من انس، وفى الحاشية: رواه ابويعلى وفيه سعيد اوسعد بن سنان وليس فيه يزيد بن سنان وهو حسن الحديث، مجمع الزوائد ١٠/٥٤١

41. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग अपने बारे में मुझे छ : चीज़ों की ज़मानत दे दो, मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी लेता हूं, 1. जब तुम में से कोई बोले तो झूठ न बोले, 2. जब

वादा करे तो वादाख़िलाफ़ी न करे, 3. जब किसी के पास अमानत रखी जाए, तो ख़यानत न करे, 4. अपनी निगाहों को नीचे रखो, यानी जिन चीज़ों को देखने से मना फ़रमाया गया है उन पर नज़र न पड़े, 5. अपने हाथों को (नाहक़ मारने वग़ैरह से) रोके रखो, 6. अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो। (अबू'याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾ 42 ﴿ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِىْ اِلَى الْبِرِّ، وَاِنَّ الْبِرَّ يَهْدِىْ اِلَى الْجَنَّةِ، وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ صِدِّيْقًا، وَاِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِىْ اِلَى الْفُجُوْرِ، وَاِنَّ الْفُجُوْرَ يَهْدِىْ اِلَى النَّارِ، وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ كَذَّابًا۔ رواه مسلم باب قبح الكذب......رقم: ٦٦٣٧

42. हज़रत अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बिलाशुब्हा सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी जन्नत तक पहुंचा देती है। आदमी सच बोलता रहता है, यहां तक कि उसे अल्लाह तआ़ला के यहां सिद्दीक़ (बहुत सच्चा) लिख दिया जाता है। बिलाशुब्हा झूठ बुराई के रास्ते पर डाल देता है और बुराई उसको दोज़ख़ तक पहुंचा देती है। आदमी झूठ बोलता रहता है यहां तक कि अल्लाह तआ़ला के यहां उसे कज़्ज़ाब (बहुत झूठा) लिख दिया जाता है। (मुस्लिम)

﴾ 43 ﴿ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِبًا اَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ۔ رواه مسلم،باب النهى عن الحديث بكل ماسمع، رقم:٧

43. हज़रत हफ़्स बिन आ़सिम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के झूठा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह जो कुछ सुने, उसे (बग़ैर तह्क़ीक़) के ब्यान करे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : मतलब यह है कि किसी सुनी-सुनाई बात को बग़ैर तहक़ीक़ के ब्यान करना भी एक दर्जे का झूठ है जिसकी वजह से लोगों का उस आदमी पर से एतमाद उठ जाता है।

﴾ 44 ﴿ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كَفٰى بِالْمَرْءِ اِثْمًا اَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ۔ رواه ابو داؤد، باب التشديد فى الكذب،رقم: ٤٩٩٢

44. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी के गुनहगार होने के लिए यही काफ़ी है कि वह हर सुनी सुनाई बात को बग़ैर तहक़ीक़ के ब्यान करे। (अबूदाऊद)

﴿ 45 ﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِىْ بَكْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: اَثْنٰى رَجُلٌ عَلٰى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِىِّ ﷺ فَقَالَ: وَيْلَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ اَخِيْكَ. ثَلَاثًا. مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا لَا مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: اَحْسِبُ فُلَانًا وَاللّٰهُ حَسِيْبُهُ، وَلَا اُزَكِّىْ عَلَى اللّٰهِ اَحَدًا ،اِنْ كَانَ يَعْلَمُ.

رواه البخاری،باب ماجاء فی قول الرجل ویلك، رقم: ٦١٦٢

45. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकरः ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने एक शख़्स ने दूसरे आदमी की तारीफ़ की (और जिसकी तारीफ़ की जा रही थी वह भी वहां मौजूद था) रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़सोस है तुम पर, तुमने तो अपने भाई की गरदन तोड़ दी। आप ﷺ ने यह बात तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाई (फिर फ़रमाया कि) अगर तुम में से कोई शख़्स किसी की तारीफ़ करना ही ज़रूरी समझे और उसको यक़ीन भी हो कि वह अच्छा आदमी है, फिर भी यूं कहे कि फ़्लां आदमी को मैं अच्छा समझता हूं, अल्लाह तआ़ला ही उसका हिसाब लेने वाले हैं (और वही उसको हक़ीक़त में जानने वाले हैं कि अच्छा है या बुरा) मैं तो अल्लाह तआ़ला के सामने किसी की तारीफ़ यक़ीन के साथ नहीं करता। (बुख़ारी)

﴿ 46 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: كُلُّ اُمَّتِىْ مُعَافًى اِلَّا الْمُجَاهِرِيْنَ، وَاِنَّ مِنَ الْمُجَاهَرَةِ اَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلًا، ثُمَّ يُصْبِحُ وَقَدْ سَتَرَهُ اللّٰهُ فَيَقُوْلُ: يَا فُلَانُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا، وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللّٰهِ عَنْهُ.

رواه البخاری،باب ستر المؤمن علی نفسه،رقم: ٦٠٦٩

46. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी सारी उम्मत माफ़ी के क़ाबिल है, सिवाए उन लोगों के जो खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वाले होंगे और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल है कि आदमी रात में कोई बुरा काम करे और फिर सुबह को बावजूद इस बात के कि अल्लाह तआ़ला ने उसके गुनाह पर पर्दा डाल दिया (उसे लोगों पर ज़ाहिर न होने दिया) वह कहे फ़्लाने! मैंने गुज़श्ता रात फ़्लां-फ़्लां (ग़लत) काम किया था। हालांकि उसने रात इस तरह गुज़ारी थी कि उसके रब ने उसकी पर्दापोशी कर दी थी और यह सुबह को वह पर्दा हटा रहा है जो (रात) अल्लाह तआ़ला ने उस पर डाल दिया था। (बुख़ारी)

﴿ 47 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ الرَّجُلُ: هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ اَهْلَكُهُمْ.

رواه مسلم،باب النهی عن قول هلك الناس،رقم: ٦٦٨٣

47. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स यह कहे कि लोग तबाह हो गए, वह शख़्स उनमें सबसे ज़्यादा तबाह होने वाला है (क्योंकि यह कहने वाला दूसरों को हक़ीर समझने की वजह से तकब्बुर के गुनाह में मुब्तला है)। (मुस्लिम)

﴿ 48 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: تُوُفِّيَ رَجُلٌ مِنْ اَصْحَابِهِ فَقَالَ يَعْنِيْ رَجُلًا: اَبْشِرْ بِالْجَنَّةِ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَوَ لَا تَدْرِيْ، فَلَعَلَّهُ تَكَلَّمَ فِيْمَا لَا يَعْنِيْهِ اَوْ بَخِلَ بِمَا لَا يَنْقُصُهُ. رواه الترمذی وقال: هذاحديث غريب، باب حديث من حسن اسلام المرء......رقم: ٢٣١٦

48. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा में से एक शख़्स का इंतक़ाल हो गया तो एक दूसरे शख़्स ने (मरहूम को मुख़ातब करके) कहा, तुम्हें जन्नत की बशारत हो। आप ﷺ ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : यह बात तुम किस तरह कह रहे हो जबकि हक़ीक़ते हाल का तुम्हें इल्म नहीं है। हो सकता है कि इस शख़्स ने कोई ऐसी बात कही हो, जो बेफ़ायदा हो या किसी ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो जो दिए जाने के बावजूद कम नहीं होती (मसलन इल्म का सीखना या कोई चीज़ आ़रयतन देना या अल्लाह तआ़ला की मरज़ीयात में माल का ख़र्च करना कि ये चीज़ें इल्म और माल को कम नहीं करतीं।) (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि किसी के जन्नती होने का हुक्म लगाने की जुर्रअत नहीं करनी चाहिए अलबत्ता आ़माले सलिहा की वजह से उम्मीद रखनी चाहिए।

﴿ 49 ﴾ عَنْ حَسَّانَ بْنِ عَطِيَّةَ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: كَانَ شَدَّادُ بْنُ اَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِيْ سَفَرٍ فَنَزَلَ مَنْزِلًا فَقَالَ لِغُلَامِهِ: ائْتِنَا بِالسُّفْرَةِ نَعْبَثْ بِهَا، فَاَنْكَرْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَا تَكَلَّمْتُ بِكَلِمَةٍ مُنْذُ اَسْلَمْتُ اِلَّا وَاَنَا اَخْطِمُهَا وَاَزُمُّهَا غَيْرَ كَلِمَتِيْ هٰذِهِ فَلَا تَحْفَظُوْهَا عَلَيَّ وَاحْفَظُوْا مَا اَقُوْلُ لَكُمْ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِذَا كَنَزَ النَّاسُ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ فَاكْنِزُوْا هٰؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْاَمْرِ، وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ، وَاَسْئَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ، وَاَسْئَلُكَ حُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَاَسْئَلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا، وَاَسْئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا، وَاَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ. رواه احمد ٣٣٨/٢٨

49. हज़रत हस्सान बिन अ़तीया रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस ﷺ एक सफ़र में थे। एक जगह पर पड़ाव डाला और अपने ग़ुलाम से कहा : दस्तरख़्वान लाओ, ताकि कुछ शग़ल रहे। (हज़रत हस्सान फ़रमाते हैं) मेरे लिए उनकी यह बात अजीब थी, फिर उन्होंने इर्शाद फ़रमाया : मैं जब से मुसलमान हुआ हूं जो बात भी मैंने कही, हमेशा सोच-समझ कर ही कही (बस आज चूक हो गई) इस बात को याद न रखना, बल्कि अब जो मैं तुमसे कहूंगा उसे याद रखना। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : लोग जब सोने और चांदी के ख़ज़ाने जमा करने लग जाएं तो तुम इन कलिमों को ख़ज़ाना बना लेना यानी इन्हें कसरत से पढ़ते रहना : तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे हर काम में साबित क़दमी और रुश्द व हिदायत पर पुख़्तगी मांगता हूं और आपकी नेमतों का शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं और आपकी अच्छी तरह इबादत करने की तौफ़ीक़ मांगता हूं और आपसे (कुफ़्र व शिर्क से) पाक दिल का सवाल करता हूं और आपसे सच्ची ज़बान का सवाल करता हूं और आपके इल्म में जितनी ख़ैर है उसे मांगता हूं और आपके इल्म में जितने शर हैं, उनसे पनाह मांगता हूं और मेरे जितने गुनाहों को आप जानते हैं, मैं आपसे उन तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत चाहता हूं। बेशक आप ही ग़ैब की तमाम बातों को जानने वाले हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

रमज़ान किस तरह गुज़ारें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	8/-
शबे बरात की हक़ीक़त	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
क़ुरआन करीम की दौलत की क़द्र व अज़मत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	10/-
नबी करीम सल्ल० की सीरत और हमारी ज़िन्दगी	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
बारिशे रहमत (मजमूआ नातिया कलाम)	इरशाद अहमद	8/-
तोहफ़तुन निकाह यानी निकाह का तोहफ़ा	मौलाना मुहम्मद इब्राहीम पालनपुरी	12/-
मेरी नमाज़ बा तस्वीर	इरशाद अहमद	6/-
मीलादे अकबर (असली और बड़ी)	ख़्वाजा मुहम्मद अकबर वारसी	35/-
क़ब्र की एक रात	मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी	15/-
टी.वी और अज़ाबे क़ब्र	मौलाना अब्दुर्रऊफ़ सखरवी	8/-
मेरी नमाज़	मौलाना इदरीस अंसारी	21/-
रसूलुल्लाह सल्ल० की सुन्नतें	मौलाना हकीम अख़्तर साहब	10/-
मुसलमान बीवी	मौलाना इदरीस अंसारी	15/-
दिल की बीमारियाँ और रूहानी तबीब की ज़रूरत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
मुसलमान बच्चों के दिलकश इस्लामी नाम	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	20/-
नूर नामा (कलिमा नामा, शमाइल नामा, अहद नामा)	मुहम्मद नसीम अहमद	10/-
मियां बीवी के हुक़ूक़	मौलाना मुफ़्ती अब्दुल ग़नी	10/-
पंज सूरह (कलां, मुतर्जिम)		30/-
आसान नमाज़	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	12/-
आसान सच्ची नमाज़ मअ़ नियत नामा	मौलाना अबुल कलाम अहसनुल क़ादरी	10/-
छः गुनाहगार औरतें	मौलाना अब्दुर्रऊफ़ सखरवी	9/-
मौत को याद रखें मअ़ मुराक़बा मौत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-